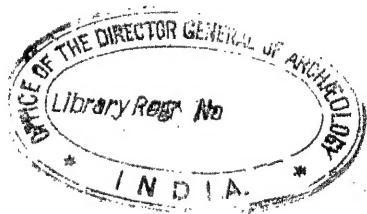
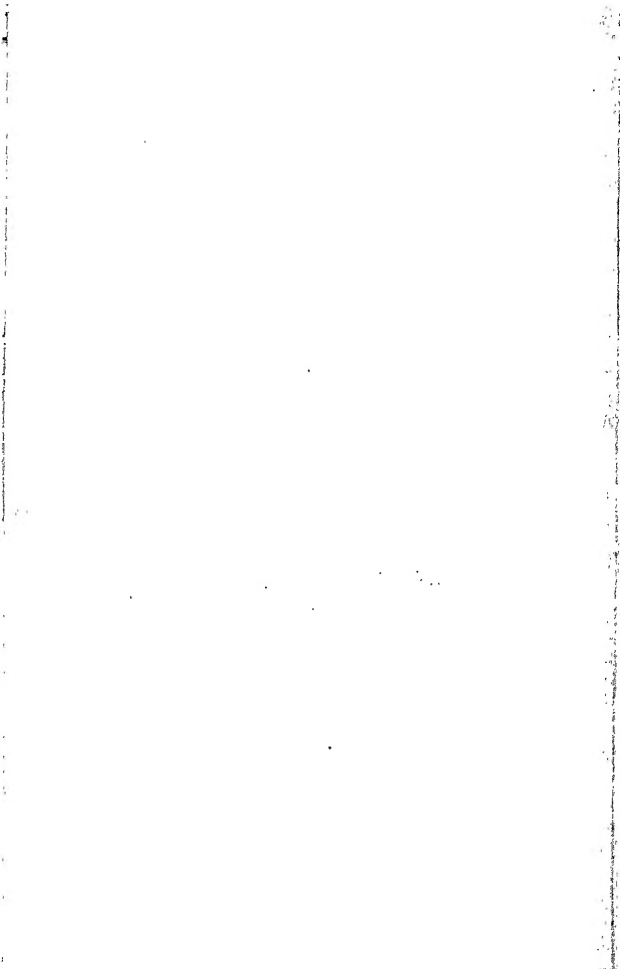


GOVERNMENT OF INDIA
ARCHÆOLOGICAL SURVEY OF INDIA
ARCHÆOLOGICAL
LIBRARY

SION NO. 13471

No. 910/st2





NOT TO BE ISSUED

STRABONIS
GEOGRAPHICA Vol. 2

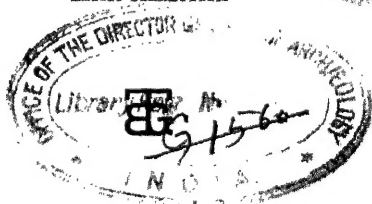
RECOGNÖVIT

AUGUSTUS MEINEKE

13471

VOLUMEN SECUNDUM

EDITIO STEREO-TYPA



LIPSIAE

IN AEDIBUS B. G. TEUBNERI

MDCCCXCLX

1899

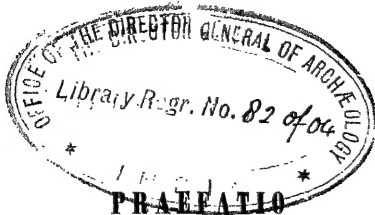
910
Slr.

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL
LIBRARY, NEW DELHI.

Acc. No.....13471.....

Date.....14.7.1962.....

Call No.....910.....val (2)
Str.



1100

Nostrae lectionis a Krameriana in iis, quos secundum volumen Strabonis complectitur, libris haec est discrepantia:

397, 28. λέγονεν 398, 8. 9. διὸ δίκαιά μοι 31. μέρη
 399, 8. Λούλους 9. Σιβινούς 26. Γαμαβρόλουι 400, 17.
 διεύχον 29. Ουάρον 401, 1. 2. Οὐκρομίρου 9. Καθύλκιον καὶ
 Ἀμφάνων 22. † τριακοσίων 402, 2. Οὐνδολικὸι † καὶ ἡ Βοίων
 5. Ἀλπίων 8. ἐπὶ τὰδε] Rectius ἐπίταδε 15. ἐξελασθεῖεν 31. 32.
 τοσαντάς 403, 13. Ταῦτα δὲ δικάως 16. καὶ ἡ 19. Βοίους] Ita ubi-
 que scripsi vel scribere volui pro Βοίους 404, 7. ἀναβάσα ὑπερπετής
 16. παρήκουσι 21. οὐδένα 21. 22. πεποιημένον 405, 28. Φόιβον
 τε παλαιόν 30. Σουράτης] Fort. add. ἔα 406, 11. [δὲ] ὀρθῶς
 19. Τρωάδι 25. τοὺς † μὴ ὀπισθεν 407, 25. 26. χρημάτων †
 ἐκτίμῃσιν 410, 10. ἀποθεν 411, 10. Παγχαίαν 11. ἄμμου,
 ἐκ δὲ 15. εἰ γάρ, αὐτὸ χρῆναι 412, 7. τὰ ὑπὸ] τὰ delet Spenge-
 lius 23. πρότερον 28. πλὴν ἢ φόρτον 413, 15. 16. κακο-
 τεχνίας εἰς πλεονεξίας 414, 9. ἐς 20. οὐδένα 415, 28. γενεᾷ
 19. [δὲ] ἐν 27. ἦν ἔξενξε Δαρεῖος] Haec suspectat Kramerus, fort.
 recte 416, 3. καὶ ἐπὶ τὰ σοφῶν ἕνα τελεία 4. εὐρέματα 7. οὔτε
 ἀληθέστατα 8. εὐρεμα 11. ὕστερον 17. πλάσματα 417, 27.
 τέσσαρας 418, 4. Δάοι 24. Μυσοῖς 27. ἐς 419, 2. εἴκοσι
 μυριάδας ἐκπέμπειν † στρατείας 24. εἴκοσι 420, 2. ἐννακόςιοι
 7. τεσσαράκοντα 422, 3. Φαναγορίαν 4. καὶ † πηλὸν εἶναι
 4. Νεοπτόλεμον — i τὸ μέγεθος 10. 25. τεσ-
 σάρων 423, 1. τοῦ 4. 5. σταδίων τεσσαρά-
 κοντα 16. καὶ ἄλλος ori. ἅμα 424, 2. αὐτῇ
 15. Παρισάδου, et sic etiam in sqq. 425, 11. εὐχαιον 14. εὐ-
 γαιος 17. στάδιοι περὶ πεντακόςιοι 19. Νυνφαιὸν 31. ὅς om.
 426, 9. Φαναγορίαν 29. ἐννανισχυλλών 427, 15. 16. † τριά-
 κοντα γούν ἀποδίδωσι 428, 11. καθίσταιντο Spengelius 12.
 στάδιον δέκα 22. Διοφάντου, Μιθριδάτου στρατηγοῦντα 430,
 14. 15. ἐφ' ἐκάτερα δ' αὐτῆς, ἐπὶ μὲν τὰ Θράκεια ἢ Ῥοδόπη, ὁμο-
 ρον ὑψηλὸν ὄρος 21. Παιτούς καὶ Τοινίους 431, 6. πολὺν]
 Recte Coraes πολλοὶ 8. ὑπερθεῖσι 18. Σαῦον 20. Νόαρος πλη-
 θει 433, 4. Φάριος. καὶ ἡ τῶν 8. Περιάμων 10. Δάλμιον
 17. μέσον 29. τὸ ἔθνος om. 434, 1. Αὐταριάται et hic et
 in sqq. 6. ὁ † Ῥιζαίων κόλπος 13. 14. Θουνάται] Rectius

fort. *Θουνᾶται* 435, 29. τὰ πελάγη ἀπὸ] Indicavi lacunam ante ἀπὸ. excidisse videtur *τεκμαιρόμενος* vel simile verbum 436, 11. εἰ πού τι 437, 23. 24. περὶ τὸν Αἴμον καὶ οἱ ὑπ' αὐτοῦ 26. δὲ ὑπὲρ 438, 2. Τῆριαντες 26. ὅπον om. 439, 5. 6. Σηλυβρία 6. Πολυνοβρία 8. ἡ add. post αὐτῇ ib. ἐστὶ καὶ ἡ 30. προσεχὲς 440, 10. Φαρνακίας ib. πρότερον 29. πρότερον πλεύσαντες [εἰς] τοὺς 441, 10. ὄρεσι Ἰλλυρικοῖς 12. ἀρξαμένων 442, 2. Αἰκλος 15. Αελέγια 443, 4. γαίης † ἀλέους 21. δ' οὖν 444, 16. Ἐόρδων 449, 9. 10. Δαμασίῳ, Περισάδυνες τε συνεστήσαντο 10. καὶ † Ἐγγελέους καὶ 11. *Ανγκησταί* 12. *τριπολίτις Πελαγονία* καὶ Ἐορδοί 14. Ἐγγελλοίς 17. *Ανγκησταί* 19. Ἰρρα 21. *Νεοπτολέμῳ*] De Pyrrho Neoptolemi filio v. Vindic. p. 89. ubi adde schol. ad Euripidis Androm. 24. 26. *Ανγκηστόν* 28. *Κερνύρας* 450, 1. *Ρωμαίους* 10. *τριπολίτις* 13. *Στύμβαρα· Κῦδριαί* 451, 22. 23. *Σελλήεντος* . . . ἐν δὲ *Θεσπρωτοῖς* 452, 1. τε 15. ἐπιτετμημένως † τμάρους οἶον 17. *καταχρηστικῶς* [αἰς] καὶ 25. μὲν τοῖς 28. *Πελασγίας*] Malim *Θετταλίας* . . . fort. del. ib. δὲ 453, 8. *Σκότουσαν* 28. κρατοῦντα. recte κρατοῦντα i. e. manu tenentem 20. 21. 31. *χαλκεῖον* 454, 6. ὑπέρκειται] Rectius esset καίται 7. ἐπὶ τὰ πρὸς] Quae sequitur decem literarum lacuna, in ea stenam scriptum fuisse, nescio a quo notatum memini 27. *γελᾶται*] λέγεται? 30. 31. *τινῶν*] Spengelius *δαινῶν* 455, 24. *λουση* 26. *παραλληλογραμμον* 456, 7. *Ἰδωνες*] *ᾠδονες*? 9. δὲ] Spengelius γὰρ 457, 16. ἐν δὲ δεξιᾷ τὴν Ὅσαν, ἐγγὺς om. 22. *Θράκης* 458, 12. 13. om. 20. *φασί* 23. *μεῖζονα* 459, 1. *τῆς † Πελλαίας* 8. *ὀνομάζουσι* 460, 2. *Αἰνέα* 461, 5. *κάλλιστον † τῆς γῆς τῇ ὄψει κίδνεται* ἀλλὰ τὸ τῆς *πηγῆς τῷ Ἀξίῳ*] Spengelius *κάλλιστον τῇ ὄψει ἐπικίδνεται*, ἀλλὰ τὸ τῆς *Αἴης τῷ Ἀξίῳ* 24. *Αἰνέαν* 462, 27. *Μηκύνβερνα* 31. *πέριξ τῆς* 464, 11. *ἀγαθίδες* 14. *χρύσεια* 15. *ἀργύρεια* 465, 25. *ἀγαθίδας* 466, 25. καὶ [γὰρ] αὐτοὺς Spengelius 466, 32. *Πελαγόνες* 467, 28. *Ἰσμαρά*] Imo *Ἰσμαρα* 468, 11. *εἰκοσι* 15. *Ὀρθαγορία* 17. *χαράκωμα* 18. *ἀποθεν* 19. *χαρὰκώματος* 469, 25. *εὐρόνοτον*] *λιβόνοτον*? 470, 9. *Ἐλεοῦς* 19. *βάλλει*] Corrige operarum errorem δκ βάλλει pro ἐκβάλλει 22. 23. *Ανσιμαρία* 24. *Ἐλεοῦς* 26. *Ἐλεοῦντα* 472, 17. *μέμηλε* 26—32 om. 473, 5. πάντα] πάντα τὰ Spengelius 6. μέρος † τῆς *Μακεδονίας ἀποδάσσειεν* 474, 3. [Τῆς] *Ἑλλάδος μὲν οὖν* 5. *τεσσάρων* 7. *Ἰωνες*] Corr. *Ἰωνες* 17. *μὲν εἶναι*] *μεῖναι*? 18. *φησὶν ὁ Θουνυδίδης*] Haec fort. delenda 21. *ἐτεροεθνούς* 29. *Αἰολικοῦ ἔθνους*] V. Heyne Op. Ac. 2 p. 7. 475, 9. δ' ἔτι 11. *τοιαῦτα* 12. 13. *δὴ ἰδίᾳ λαβόντες* 18. *γῆν ἀρχὴν* ib. *θάλασσαν* 26. δὲ ταῦτα δύο 28. *ἐκτὸς † Πυλῶν μέχρη τῆς ἐβολῆς τοῦ Πηνειοῦ* καὶ τοῦτο δ' ἐστὶ τὸ *Θετταλικόν*. ἐστὶ δὲ 476, 14. δ' cm. 16. *τὴν μὲν Βοιωτίαν*] *τὴν μὲν Ἀττικὴν καὶ Βοιωτίαν*? Vidit etiam Spengelius. cf. Vindic. p. XII.

477, 16. αὖ om. 30. ἦ om. 478, 12. καὶ om. 16. τέρμοςιν
 479, 7. † πόλιν ib. *τὴν δὲ παρ' 20. σχεδὸν δὲ] Add. videtur
 τι 23. ὀνομάζει ib. δεῖ om. 31. προσκτισ[θαισῶν] 481, 14.
 τῇ † ἐπιθαλασσίῳ 15. Βοιωτῶα 19. 20. ἐκεῖ — στρατεύει ante
 τὴν ἄγει' ἐξ 21. δὲ 24. ἡ Ἀθηναῖα om. 31. ἄνδρα, γήσας,
 * ἄνδρα Μούλιον 482, 4. καὶ add. ante Κρανωνῶνιοι 20. καὶ
 περὶ] καὶ τὸ περὶ? 21. οὖν] Fort. delendum 25. αἰοιδῆς· φησὶ γὰρ
 Οἰχαλήθεν ἰόντα παρ' Εὐρύτου Οἰχαλήος. εἰ μὲν γὰρ ἦν Θετα-
 λικὴ 483, 1. δὲ τῆς τοῦ Πηνειοῦ καὶ τοῦ Σελλήεντος] Correx-
 Ernestus Curtius, nisi quod καὶ τῆς τοῦ Σ. scripsit. quod sequitur ἐκ-
 βολῆς, idem recte scripsit ἐμβολῆς 32. corr. ἐφ' 484, 6. 13. τέσ-
 σαρα et τέσσαρας 485, 2. Αἰσχύλος] Ἀρχίλοχος? 17. ἐνέμοντο
 πολιτείαν 486, 4. ἐχόμενον — Λαμπείας] Haec recte delere videtur
 Curtius 487, 4. Πάροιο] Scribendum videtur Πιέροιο 10. Λέπρεον
 ut in sqq. 21. τῷ ἐγγυτάτῳ 22. ἐστὶ 488, 12. Ἰνθίου 13.
 τὸν τς Κελάδοντα 18 et 26. Ἀλφειονίας] Scripsi Ἀλφειωνίας.
 praestat fortasse Ἀλφειῶας 24. ἀνθέων ὡς τὸ 489, 7. Φέλλωνα
 10. ὁ om. 12. ἐκ τῶν ἐπὶ τῶν Ὀμήρου τεκμαίροιο 14. καὶ
 Ἀρκαδικός] Haec fort. transponenda 10. post Λεπρεατικός 21. ἀπα-
 τηθεῖσαν 490, 1. πολεῖδια] Quod revocandum 24. *δ' * et hypo-
 stigma post διήγησιν. delenda potius verba τὸ δ' ἀπέχεσθαι προσήκε
 μάλλον 491, 30. μὲν] Delendum videtur ib. Σωτάδῃ 492, 2.
 πορεύεσθαι 29. lacunam om. 493, 22. Μιννήμιον] Ἑλληνήμιον?
 30. Ὑπαισία 494, 4. ἐπέδειξαν 7. καὶ τάφος· καὶ Ἀχαιοὶ εἰσὶ
 δὲ] καὶ τάφος καὶ αἱ Χαιαί· εἰσὶ δέ? 17. Παδινῇ 19. λυγῇ ib.
 αἰοιδῆς, ἐρατῶν ὕμνους 21. Παδινῇ 495, 11. Κελάδοντι 23.
 Κυπαρισσεῦσι 496, 1. Ἐρανα] Rectius videtur Ἐρανα 2. καὶ ἡ
 ἄκρα om. 30. μὲν] Delendum videtur 497, 3. φυσικῶς] Hoc
 abesse malim 17. 18. ὁμωνύμως μὲν οὖν 24. 25. Πτελεάσιμον
 28. Ἠλείας 30. οἱ δὲ πολλίδιον (sive potius πολεῖδιον) om.
 498, 22. δύσετό 501, 17. ὑπῆρχε 504, 9. εὐρεμα] Quod for-
 tasse revocandum 22. οὔτε 505, 16. Λέπρεον 19. ὅσας δ' 27.
 διὰ om. 30. πολλὰ † καὶ νομίζουσιν 506, 7. Πίσαν et sic in sqq.
 9. ὄρῳ 25. post φησὶ verba in margine posita 26. τέσσαρα-
 κοντα 31. Ἐνισέα] Scripsi Ἐλισέα, at debebam Ἐλιπέα. Hesychius
 Ἐλιπεύς· ὁ Ἐνιπεὺς ποταμός. Quod confirmat titulus Thessalicos edi-
 tus ab Ussingo Inser. gr. 2, 7. ἐκ τοῦ Εὐρώπου ἐν τὸν Ἐλιπῇ, ἀπὸ
 τοῦ Ἐλιπέος ἐν τὸ νεμός. Itaque Ἐλιπεὺς pro Ἐνιπεὺς dicebatur, ut
 λίτρον pro νίτρον, et alia. Hinc corrigenda quae dixi in Vind. Strab.
 p. 111 sq. 507, 3. Φηραῖαν ib. post ἰόντων verba in margine
 posita, quorum partem (inde ab ὑπέρεκται) suspectavit Kramerus in
 notis 5. ἐξηλίσθη 508, 10. † Ἀχαιοὶ 510, 8. καὶ ἡ Κυπα-
 ρισσία add. post Κορυθαῖον 14. καὶ pro ἐπὶ 16. προσκειμένη
 511, 8. Κιναίδιον 10. Βαίτυλος 18. Θαλάμους 20. ἀγόμε-
 νος 22. τῆς add. ante Ἀθηναῖς 23. καὶ et 25. Τράχιον sine aste-
 risis; non videntur haec Strabonis esse 512, 19. Ἐρανα] Malim

**Ἐραυνα* 513, 17. ἀμφοῖν pro κρατῶν 514, 11. 12. ἐλθὼν ἐξ Ἐρινεοῦ om. 515, 31. κατὰ τούτου] Volebam καὶ τούτου cum Corae 516, 8. Ἀμαθοῦς 9. Γύδιον ut in seqq. 26. τὸν [Θρα]κα, Scribendum videtur κατὰ τὸν [Θόρνα]κα 28 — 517, 7. non videntur Strabonis esse 517, 13. post προσηγορεύθησαν sequuntur ea quae ego in margine posui 24. 25. ποιεῖ . . . γὰρ 25. Φεραία δ' . . . ἀπὸ ἐντὸς] Volebam ἐντὸς. V. Vind. Strab. p. 115. ubi recte probavi Φεραία, pro quo per errorem Φάριδι editum est. ibidem πολεμίους conieci, non πολέμους 520, 3. ἀποδίδεται 6. ἐμβαλ- λούσης 19. γαίης 29. πρόσσω sine aster. 29. 30. κάθεται 521, 4. τῶν [Λεπρεα]ῶν? ib. Μεσσαίων] Μακιστίων? 8. τῶν τε 522, 12. δοκεῖ . . . πίπτειν 523, 9. τεσσαράκοντα 27. Ἀσίνης sine ast. 524, 2. Σαρωνικόν. καλεῖται δὲ πᾶς 11. ἀλλὰ νῦν τὰ μὲν 15. Ἀχαϊκόν 25. Ἀχαικόν om. 525, 25. 26. Ἄργος ἄνδρον θεοὶ δ' αὐτὸν θέσαν Ἄργος ἄνδρον] Pro θεοὶ δ' αὐτὸν scripsi ut par erat ἐὼν Δαναοί. at Strabo nonnisi priora Ἄργος ἄνδρον apposuisse videtur. Δαναοί error est typographicus 29. δὴ 526, 8. δέχονται κατὰ τὴν συναλοιφήν 9. ἐλέγχιστον] Fort. errore operarum, quamquam fuerint qui ita scriberent 16. ὄρνις 28. χω- ρίῳ μὲν κεῖσθαι 20. om. parentheses signa, quibus quae inclusi verba fortasse ne sunt quidem Strabonis 527, 1. εἰπεῖν] Fort. ἐκπε- σεῖν 4. † ἐν εὐπορίᾳ 11. Πάλινθος 29. ἡγεμονίδας οὐσας 528, 9. Λακωνικήν 15. συνέβη om. 529, 4. τῆς Ναυπλίας 7. Μίδα pro Μίδαει 8. Πρόσυμμα [καὶ] αὕτη 11. οἱ δὲ ἐξ Ἐρ- μιονῆς] εἰς 12. ἔστιν αὕτη 14. ὄπου om. 23. αὐδ'? 25. καὶ sine ast. 32. Νισαίαν 530, 6. αὕτη 531, 2. . . . ον] Fort. [πλατύτερον] 3. ἢ ante Ἐπίδανρος abesse malim ib. φησὶ γὰρ 23. Τροιζήνι 25. τοῦ om. 532, 4. ὑπ' αὐτὸν 534, 5. γραῖδλον 26. Τροικο- ρυθφ 535, 18. ὦν om. 20. lacunae signa om. 27. τὸν ἐπὶ 27. εἰς Κόρινθον add. post πλοῦν 28. τὸν φόρτον· αὐτόθι καὶ περὶ † τε τῶν ἐκκομιζομένων 536, 11. Διός om. 537, 23. 24. φρέατα sine ast. An φλεβία? 31. ὑποπεσοῦσαν] Scripsi ὑποῦσαν cum Plethone, nisi praestat υποπεπτώσαν 32. λευ- κῷ λίθῳ] Fort. λευκοῦ λίθου 538, 5. Βοιωτίδος 17. τῆς περὶ τὸ 539, 15. λῳίον 30. ἐγένοντο ib. ἐν ἄλλοις] Fort. εἰς ἄλ- λους 540, 14. ἀφίκεται Spengelius 541, 3. 4. κατορθομένων 11. πάντες] An πα[ίζον]τες? 15. Εὐφρόνιος 24. Σικυνωλίαν 26. Τανάγραν 542, 2. Ἀλγιάλους ib. ἀνφικέσθαι 3. σταδίου 4. Δήμητρος 27. Τροικουθον 543, 1. φυλάς] Fort. βίους 2. βίους] Fort. φυλάς 544, 4. συνοῦσαι 6. οὐ συνελθούσης] Cur- tius Pelop. I p. 451. οὐ συνεστάσης, quo sensu οὐκ ἐτι συνεστάσης requirerem. nil mutandum videtur 9. δ' 30. ἐστήκει] Fort. ἔστηκεν vel ἐστήκοι 545, 1. θαλάσσης 12. 13. Ἡσιόδους — Θεταλικῆς in marginem reicienda videntur 546, 2. post βουλο- μέναν add. quae in margine posui 10. παρ' ὃν [Πεῖρος] ποταμός ib. μέγας * Μέλας] Μέλας Curtius Pelop. I p. 450. 547, 22.

πόλιν pro χώραν 548, 7. post Φαριεῖς quae in marginem reieci, in
 quibus Βούραν [κα]θ' scribendum videtur 549, 3. Φαράται 7. τριά-
 κοντα om. 30. αὐτῇ 550, 17. πεντήκοντα] πέντε Müllerus Dor.
 Π p. 439. 32. περὶ Στύμφαλον 551, 13. εἰς Θανυμακούς om.
 14. καὶ τὸν Πηνειὸν om. 552, 7. ὅστε — Κορινθίων post Δο-
 κρῶν 10. 11. λευτέον om. 13. ἐπὶ] Fort. καὶ 18. σφοδρὰ pro
 οὐτως 21. ποιοῦντα τὸν κόλπον τὸν om. 22. οὐδ' αὖν om. 25.
 ὅπον τὸ pro εἰ μὴ τὸ 26. ἐποίει om. 27. τὰ περὶ . . . τὸν
 μυχὸν 553, 9. δὲ om. 11. ἡ Ἀττικὴ om. 28. lacuna pro πάλ-
 λιν ἀπὸ τῆς 30. Ἀττικῆς] Fort. ἀκτῆς 554, 4. δὲ recte post
 ὑψηλὸν add. Coraes 5. ληξιζόμενων 9. Μινῶα et sic constanter
 10. Νισαία 555, 3. τεσσάρων 3. Νίσος 12. νεῖμας . . . α 13.
 νέμων 26. παροξυνάντων 32. ante ἐποίησαν fort. excidit καλεῖ-
 σθαι, quod in similibus locis addere solet Strabo 556, 15. Νισαίαν
 21. 22. καθάπερ — πνοάς non videntur Strabonis esse 25. 26.
 Κυχρεία 31. Διμήτρην 557, 8. 9. Βάκαρος — καλούμενος non
 videntur Strabonis esse. postrema ὁ νῦν — καλούμενος suspectavit etiam
 Kramerus in addendis 558, 15. Ἐλευσιν 30. Ψυτταλία 559,
 1. Ψυτταλία 6. στομίῳ] ἰσθμῳ? 16. τὸ] τό τε? 560, 1. 2.
 περὶ τῆς 2. ἐκεῖ τι 5. αὐτοῖς [ἔδρυσαν] καταλαβόντων? 6.
 ἡρώων [ἐστὶν ἱερὸν]? 26. καὶ εἰς τὸ 27. Θησεῖον . . . υς ἔχει
 27. 28. καὶ τὸ Διονυσιακόν, [καὶ δὴ καὶ τ]ὸ Ὀλύμπιον? 31.
 πλείστα om. 561, 4. Ἀττικὴν 12. φιλότιμον] Libri φιλόδημον.
 an φιλεῖδημον? 18. [ἀλλ'] εἰσὶ? 28. προσθήσειν, ὅτι 562, 5.
 οἱ om. 563, 8. Θορεῖς 12. Θορέας 13. Φάβρα] an Φάγρα?
 ib. Ἐλεοῦσσα 19. φερίζουσι 24. 25. Πρασία 564, 5. τετραορί-
 στῶ 565, 6. Κηφισσός] Debebam Κηφισός 22. [κείμενα . . .] η
 πρὸς 24. ἡ Ἀττικὴ σὺν τῇ om. 27. 28. Πηγὰς 28. ὅρων pro
 τόπων 29. ἀπὸ τοῦ pro τῇν ἀπὸ 566, 20. χρησαμένους ἐπι[με-
 λεῖ] μηδὲ? 21. τί om. 569, 14. αἱ om. ib. ἀνάλογον] Hoc re-
 vocandum 570, 9. σύριγξ 20. θαλάσσης 25. Σιγηλοῦ] Imo Σι-
 γήλου 30. Ἀμφιάρειον 571, 1. τὴν ἐκ om. ib. post Χαλκίδα
 add. καλοῦσι δὲ Βοιωτικῶς Μυκαληττόν, quod Μονυκαληττόν scri-
 bendum 3. Μυκαληττόν 23. ἀπίνοντι 24. Τάναγρα κ[ώμη· ἡ δὲ
 Φαραὶ κώμη] ἐν δεξιᾷ? 572, 14—17. διάγραμμα — πολὺ ἐλάττωσεν
 Haec fortasse post Ὀρόβιαι uae sequuntur 17. κείται
 — Ὀρόβιαι delenda 32. . . . πόλις τῇ Μεγαρικῇ?
 573, 1. πρόσχωρος το ὑπῆρξε 576, 10. οὐτε
 24. 25. τόπω[ν σημειναι]ντ' αν ὥστε τῶ] λόγῳ 27. ἀξί[ων
 μνήμης καὶ τῶν μνή·] χαλεπὸν [δ'] ἐν 577, 2. περὶ ὠμ[ε]θα τὰς
 ἀρχὰς λαβεῖν] ἐνταῦθα 4. 5. χρήσιμον ἡ [ληφθὲν ἐξ ἄλλων]
 ἡμῶν 20. post εἰδ' add. εἰσὶ [δὲ] καὶ — τοῦτω, quae in margine po-
 sui 578, 19. αὐτὸς ἐ τοῦ πατρὸς 20. μ τερον
 579, 1. εἰκοσι 21. θέαν 580, 5. [ὑφ' ἐτέρων] 6 et 10.
 Ὠκάλοι 581, 10. Κορωνείας] Libri Κορωνίας. Fort. Κορωνίας
 ib. ἐπιλαῖω] Operarum error pro ἐπὶ λαῖω. λαῖων loci nomen fuisse

videtur prope Coroneam. Cf. Hippocrates Epid. III p. 134 et 142 ed. Littr. ἐπὶ τοῦ Ἀηίου, de quo dixi nuper in Commentatione de Hippocratis Epidemiis in Relatt. menstr. Acad. Berol. 1852. 25. Βοιωτίας pro Μεγαρίδος ib. pro αὖ lacuna 582, 8. πολιδιδιον] Hoc revocandum 23. [κ]ινηθεῖς 583, 2. 6. Πτώων 4. Πτώον 17. οὔτε 21. τέκτονος 585, 12. 13. πολυχρηματίσαντας 27. οὔτε μὴ om. 586, 3. ὦν pro ὅν 26. καὶ διάγωσιν 29. πλείστην om. 587, 12. καθήκειν 15. Ἀντίκυρα 588, 5. πᾶσα om. 589, 12. Πηληϊαδῶ ἀνακτος 590, 7. ὁ per errorem irrepsit ib. Κίρφι 591, 1. ἐτιμήθη om. 592, 31. ἱερὸν· χρημάτων δὲ χάριν τῶν ἀναθημάτων 593, 22. καταρχῆθαι 594, 16. ἀνέκρουσιν 19. ἐπιπαιωνισμόν 21. ὡς καὶ τὸ λαμβῖζειν add. post κακισμοῖς 23. εἰς add. ante ἐσχάτους 595, 27. παιωνισμόν 596, 11. Ἀλκμαίωνος 13. Ἐξ ἀρχῆς γὰρ 14. ὀπισθεν ὁ Μάραθος 23. Θουκυδίδης δ' ἐν Μεγάροις φησὶ add. post μυθεύουσι 597, 7. οἱ δ' ἐνοικοῦντες Τραχίνιοι λέγονται] Haec fort. delenda 21. ἐκένυς 598, 11. Πανόπην Γλήχωνα 18. post Σκύρῳ add. quae nos in margine posuimus 599, 13. κατέληξεν 18. τοῦσδε ποτὲ φθ. 19. 20. Δοκρῶν κεύθει ὁμῶς Ὀπόεις 600, 16. εἴκοσι 601, 7. οἰκεῖται, [ἀλλὰ νῦν εὐήροτον] τι πεδίον 8. καλοῦσιν οὕτως 9. 10. [αὖ Ἀνγισαί, ὦν τὴν χά]ραν 11. 16. σῖγμα 14. ἀγνωῶν . . . Ἀάπην] Excidisse videtur οὐκ εὖ. Ceterum vide ne iniuria erroris accuset Strabo (si tamen haec Strabonis sunt) Hellenicum; Ἀάπη enim dici potuit quae aliis Νάπη, ut Ἑλιπεύς dicebatur Thessalis, qui aliis Ἐνιπεύς. vide supra p. V. 27. ἀλλ' οὐποτε ἄλλων 604, 10. Ἀντίκυραν 29. ἅπαντα τελευτᾷ πᾶσι 605, 32. ἔφα 607, 5. καὶ οἱ [Θετταλιῶται] ἐφεξῆς Bultmannus Mythol. vol. 2 p. 277. 608, 4. post στρατείας add. λαῖον δ' ἐσχατιὴν Δολόπεσσιν ἀνάσσω 5. αὐτῷ om. 6. post μόνον add. ὀλίγων ἐστὶν 12. γὰρ om. οἱ μὲν om. nec necessaria sunt 22. δταν οὕτως om. 29. Θετίδιον 30. Θετιδίου 610, 17. ἐντεῦθεν δὲ 21. συνώκισαν Φαρσάλιοι] Ita haec suppleverunt critici; non minus recte possis συνώκισεν Φίλιππος 611, 2. Τραχίνα] Τραχινίαν? 13. Δαμίαν 613, 3. πρὸς ξω δὲ om. 18. τὴν Οἰταίαν om. 22. θαλάσσης 25. μεσογείῳ 614, 25. Φυλλαίου 615, 8. ἐννενήκοντα 9. εἴκοσι 18. Νηλίας et 20. Νηλίαν 616, 10. Μεθώνη 617, 2. καὶ τῆς Δευκαλλίας] Haec delenda videntur 3. Ἱεραπολιτικῆς] Hoc delendum videtur 5. λιθίας, ὕψ' ἧς 618, 6. μυθεῖσθαι sine ast. 10. 11. ὀνούριον 21. ἄλλοι om. 619, 4. εἴκοσιν 10. Κερνάφον 620, 5. λευκόγαλον 14. post ἐκένους add. εἰς τὴν ἐν τῇ μεσογαίᾳ ποταμίαν 621, 13. πεδίον νῦν] Cod. A. πεδίον ἐστὶν ὁ νῦν. Fort. igitur πεδίον ἐτι νῦν 18. 19. καὶ [ἡ] ἐν Συρίᾳ 21. καὶ — Λάρισα] Haec fort. delenda 29. καὶ Ὀδησσοῦ om. 30. Ὀλοσσῶν 622, 10. ἐπειληφότας] Fort. ἐπειληχότας 11. ὑπὸ] Fort. [οἱ] ὑπὸ 11. 12. Περραιβικαί] Fort. Περραιβικοί 623, 11. τοιοῦτον 624, 5. δὲ ἰδίους] Fort. Διδύμοις 7. κολωνοῖς] Fort. Κόρωνις 29. καὶ om. 626, 13. Ἐπειδὴ

ἡ Εὐβοία 627, 15. τὸν om. 20. Αἰκλον 24. Περιάδα 25. ἐν
 φ] Fort. ἐνθα 26. καὶ add. ante τοῦ 628, 24. πλησίον om.
 28. πολειδίον] Quod revocandum 629, 6. τὸν πλόνον 8. Μα-
 λιακῷ 24. Αἰκλός 630, 16. 17. ὥστερ — τάργυρεϊα om. 23.
 Εὐβοῖδα] Imo Εὐβοῖδα ib. καμπήν] Fort. κάμπτων 631, 1.
 post Ἐρετρια add. ἐν δὲ τῇ Ἐρετρικῇ πόλει ἦν Ταμύναι, quae cum
 πλησίον τοῦ πορθμοῦ coniuncta (in libris haec leguntur post αὐτὸν 3.)
 post κεκαμώθηται 19. transponenda esse vidit Kr. in notis 3. αὐ-
 τὸν] Fort. ἐνιαυτὸν 19—21. ἐν δὲ — πορθμοῦ] De his vide ad 1.
 632, 1. ὅς γε καὶ 4 et 5. lacunas om. 5. ὥστε τῷ 6. δρᾶν]
 Corrige δρᾶν 27. οὐδὲν 32. lacuna om. 633, 10. Ἄβαντες pro
 ἀποβαίνοντες 634, 10. Λαμίαν 21. Παλαιρός 636, 31. Γαρ-
 γάσσον 637, 13. τηλεφανοῦς· ἀλλὰ κατ' 24. Ἀλκμαίωνίδα
 638, 26. ποιεῖσθαι 642, 1. Ταφιοῦς 10. Κεφαλλήνες, καὶ [οἱ
 μὲν] ὑπ' Ὀδυσσεῖ 26. Ἄλνος add. post αὐτῇ 644, 5—7. μέμνη-
 ται — ἐθέλων] Haec fort. ex lib. 12 p. 549 addita sunt 11. ἔστιν
 ὁ κύκλος 15. τριακόσιοι 22. πλείους εἰσι 23. καὶ add. ante
 πρὸ 645, 9. βούπρωρος 30. Ταφιοῦς 646, 14. 15. Κριθωτῇ
 15. αἶ om. 16. ἐνικῶς λεγομένη add. post κόλπον 647, 4. οὐχ
 ante οὕτω om. 21. Λυσισμαχία, ut in sqq. 649, 15. ἐπιμεῖναι
 25. Ἀλκμαίωνα hic et in sqq. 653, 16. † λέγων post Ἐπειῶν 19.
 πιστὸν om. 24. ἀπελθόντος 654, 12. lac. signa om. Excidit
 fort. νήμειν 656, 25. καὶ — ἐμπλέκεσθαι om. 658, 3. γένηται
 659, 22. Ἀγδιστιν] Ἀγγδιστιν C. Keilius 24. Σικυληνῶν 24.
 25. καὶ Κυβήβην om. 660, 10. διὰ τε Ὀμηρον 11—13 & ἐκ
 — μητρὸς om. 13. pro μητρὸς pone μητρὸς] 14. post εὐρήματα
 dele parentheases notam 29. Παλημῆδην 30. οὐ σὺν] Fort. θύσαν
 ib. καμᾶν, ὅς] Fort. κοιλᾶν ὅς 661, 24. 25. Κοτύια 28
 σεμνὰ Κότυς] V. Hermannum Aeschyl. 31. δακτυλόδεικτον 662,
 22. ῥάσσων] Fort. ἀράσσων, ut sit paroemiacus 663, 4. εὐροι om.
 9. ὄρειαι ib. ἐγείνοντο 665, 4. Κορυβάντιον 10. ἡλῖδοι
 667, 4. αὐτῇ 25. ὑπὸ τὸ μέγεθος] Fort. ὃ ὅπου ἔστι μέγιστον
 668, 5. Λυκίων 669, 9. Βοῖον 23. 27. 30. Λύκτον 670, 5.
 ὁμώνυμος] Malim ὁμωνύμως 671, 2. Ζεὺς om. 673, 14. λόγῳ·
 † ἄθλων 15. φησὶν 674, 21. 22. καὶ Ὀλίσσην 675, 14. ποιη-
 τῆς] Fort. Νέστωρ 21. [οὐτε] κατὰ τὴν στρατείαν — ἐκείθεν add.
 post αὐτῷ 676, 7. † ἐν 8. ἀνδρεία συστάτια, ὅπως 677, 8.
 Κρής 19. malim Κισσοῦ 680, 11. lac. signa om. 26. ἀλαχρόν
 post τυχεῖν 681, 18. Θήρα 682, 18. ἐπιβαίνειν 27. δ' οὐν
 πεντεκαίδεκα om. 683, 6. κάμιον] Quod revocandum 14. ἡ
 με] Fort. οὐ με 15. δειλῇ ἡ] Fort. ἡ δειλῇ 30. 31. Πήναια] Imo
 Πήνεια, ut monuit Lobeckius ib. τετρασαι] Quod fortasse cupidius
 reieci quam debebam 684, 6. 7. Κορησία hic et in sqq. 685, 3.
 μυκύνουσι — συλλαβὴν in parenth. 686, 2. Λερία 12. post Λερός
 add. quae nos in margine posuimus 689, 12. πλησιάζοντα] Fort.
 ἐπιπολάζοντα 690, 16. ἐς 691, 2. καὶ om. 25. ὑπέρκεινται

693, 12. ἐλάσσω 694, 20. ᾧ ante ὄνομα add. ib. Ἄκρα
 695, 2. Φαναγορία et sic constanter 24. Τορεάται 696, 17.
 ῥένας 697, 13. Ζυγίων 24. τοῦ] Malim τῷ, vel τῷ τοῦ 29
 μέγαν] λιμένα? 699, 6. οὕτω δεῖ δέξασθαι post δρόμος 7. 700,
 3. πολλήν τε 6. 7. ἐπεκόμιζον 14. 15. κακωθείσης — Εὐριπί-
 δης] Haec fort. delenda 701, 4. περὶ δὲ τὴν Διοσκουριάδα ῥεῖ ὁ
 Χάρης ποταμός add. post Κολχίδος 14. δὲ om. 21. 22. θανμα-
 στοῖς, [ἀ] καὶ τοὺς φαρμάκοις τερωμένους 26. μὲν om. nec neces-
 sarium est 29. καὶ δὴ καὶ ἥ γε] Corrige operarum errorem δὴ καὶ
 ib. δὴ κ' ἥ γε operarum error post δὴ ἥ γε ib. Ἰβηρία * καὶ * οἰκεῖ-
 ται 702, 10. Ἀράγωνα 14. ἄλλους om. 29. γενόμενος 703,
 4. ἐπ' αὐτῷ 24. ἀγχιστεῖαν] Fort. add. αἰ 704, 16. προπί-
 πτουσα? 22. ἐπιγελῶντα] Fort. ἐπίπεδα ὄντα 705, 2. ἀλλὰ τὰ-
 γαθὰ ἄσπαρτα 3. ἅπαντα 5. γοῦν 11. ἐκείνῳ 12. δὲ pro δ'
 αἰ 13. δὲ om. 27. στρατιάς 28. δισμυρίους 706, 13. εἰκοσι
 707, 4. καὶ add. ante τὸ 708, 28. τῷ om. 710, 1. 2. θρυ-
 ληθέντα + καὶ ἀμολόγηται 5. ἔῶν 7. καὶ ast. incl. 711, 12.
 Χαιανοῖται 18. lac. om. 21. ἔστειλε 712, 24. προσβόρους
 26. πρότερον] πορρωτέρω Hermannus ad Aeschylum vol. II p. 163.
 30. ἀκριβῶς 713, 8. μήτε om. 8. 9. παρὰ γε εἰδόντων, † σκα-
 ποῦντες δ' αὐτὸ δὲ μόνον τοῦτο, ὅτι 714, 22. τετρακοσίους. καὶ
 † διὰ τὸ μὲν εἶδος τῆς εὐδαιμονίας σημεῖα ἡγοῦνται ἢ μὲν γὰρ
 715, 5. καὶ pro ἀλλ', quod nunc revocaverim, deleta cum Corae par-
 ticula μὲν 716, 1. οὖν add. ante συνήγον 6. προσφέρεται 14.
 προσέθεσαν * καὶ * τοῦτω 717, 6. 7. ἡλιαζόμενοι· ἄλλως δ' ἄλλοι
 13. ἀρξάμενον 718, 2. Δάαι 720, 2. ἅμα τε] Malim aut
 ἅμα sine τε aut τε ἅμα 4. ὦν 721, 8. ἡ add. ante δλαιτα 10.
 11. σκαιὸς δὲ 722, 8. 9. δισχίλιοι δισμύριοι] Transposuit etiam
 Spengelius 723, 14. † ἀλλήλοις 724, 20. διαρρεῖται· ποτίζουσι
 δ' αὐτὰ] Scribendum διαρρεῖται ποτίζουσιν αὐτὰ 725, 1. Ἀχαῖα]
 Corruptum videtur 19. Ἰσάμου 21. Πατταληνὴν 28. 29. ἐκβάλ-
 λων] Corrigit ἐμβάλλων. malim εἰσβάλλων 29. Δάραψα 30. Εὐ-
 κρατιδία 726, 2. 3. Τοριούαν 10. ἦθεσι 26. ποιεῖν] Thy-
 whitius ποεῖν. malim ὑπονοεῖν, quamquam etiam alia hic miserrime
 corrupta sunt 727, 8. Ὅξον 22. om. lacunae signa 23. τοῦνομο
 om. 728, 20. ἔξω 729, 1. 9. Ἰμάιον 5. μέλουρον et hic et in
 sqq. 730, 26. δύνανται 31. Ταπυρίων] Hoc fortasse ex Ταπύρων
 δ' ἔδιον corruptum est 731, 11. οὖν om. 27. ἐκτεινόμενος
 732, 14. 15. προσβόρῳ 733, 13. πρόσβορα 21. αἰ add. ante
 τοῦ 734, 21. Τίγρι 735, 19. χειμερινὸν δὲ om. ib. Οὔερα
 736, 8. εἰκὸς 22. χειμάδιον] Fort. χρηματιστήριον 737, 15.
 Ῥάγαις] An Ῥάγα? 16. Ἡράκλεια om. 738, 8. Μηδικὴν 17.
 πλάτος 740, 3. νέμειν] Fort. νέμ[οντας ἐχ]ειν, viam monstrante
 Kramero qui coni. ἔχοντας νέμειν 742, 3. θάλασσαν 10. προσ-
 βορώτατοι 15. αἶς om. 19. περιεχούσας] De his v. Viudic. p. 190

743, 15. ἔχουσα om. 20. Ἀρτάγηρας 21. Ἀδωρ 744, 19. Ὑσπικράτιδι 21. ἀπήχθη 749, 10. lacunae signa om. ib. δ' om.
 752, 9. δ' pro ἦν 753, 2. † ἀπλωτῶ 16. ὀχετοῦ πλάτει] Recte, ut videtur, Kramerus in notis ὀχετῶ οὐ πλάτει 24. εὐροδί-
 νης 30. post Ἀλγύπτῳ add. τρίτη — φανεράν, quae 754, 24. post
 ἐκείνον transponenda esse Kr. vidit in notis 754, 17. δ' om. 22.
 δ' om. 24. 25. Διὸς Δακίη οὐ λειπομένη 31. Δύο δὲ ἔχουσι
 μόνον στρατηγίαι πόλεις 755, 31. καὶ ἐμβελεῖς] Fort. κἀνμβε-
 λεῖς vel καὶ ἐμβελεῖς 756, 25. λιθίαν 757, 18. αὐτῶν 19. ἐκ
 pro καὶ ib. τῶν add. ante ἐν 24. Κυρίνου 758, 7. καὶ add.
 ante καρποῖς 9. Βαγαδαονία 24. ἄλλος δ' [εἰς] τὰς διόπτρας
 759, 30. μὲν] Fort. μέντοι, vel μὲν δὴ 760, 2. τε 761, 9.
 οὐδὲν 764, 4. μεσημβρίας 5. ἐξήσι ib. εἰς 13. διεῖπον
 765, 16. ἑκατόν] Hoc corruptum 767, 27. ἡ om. 32. Γαδιλω-
 νίτις 768, 13. Γαδιλῶνα 14. ἐννακσίους 27. 28. Σιδηνήν
 ut in sqq. 769, 29. εὐφορίαν 770, 4. 5. τῷ † Ἰκενι γεωμέτρῃ
 15. εἰτα † Κυτῶρος 28. Ἀππαῖται 771, 28. προαλείστερον.
 δελεαζόμενους μόνοι οὗτοι] V. Vindic. p. 193. 772, 14. Βούγοι
 22. οὐν om. 773, 2. ὦν om. 17. καὶ πᾶς] Delendum videtur καὶ
 22. Ἀλαξία] Malim Ἀλαξίη 23 et 26. Ὀδρύσσης 774, 1. 2.
 Ἀμαζόνων 2. δ' ἐν pro δὲ 775, 4. οὐδ' 7. Ἐνέαν 27. πο-
 λεμήσαντας 30. συμμαχήσαντας 32 et sqq. Φρυξίν. οἱ ὅα ποτ'
 ἦλθον Ἀμαζόνες 776, 3. οὐδ' 5. οὐδ' 20. Βαμωνίτιδι
 21. Πιμολίτιδι καὶ τῇ Γαζαλονίτιδι 31. καίπερ 777, 12. ἂν
 add. ante διὰ 15. ἂν om. 778, 2. τούτων καὶ om. 18. καὶ
 Δάμον add. post λέγων 779, 9. δεικνύηται 780, 16. Φαρνα-
 κίας] Rectius fuerit Φαρνακείας 781, 24. περὶ τε 786, 6. καὶ
 ἡ τοῦ 28. πόλιν om. 787, 1. Γαζηλωτὸς 30. 31. πόλεως ἅμα
 τε καὶ 788, 24. Ξιμηνῆς 27. Τρόκμων 28. Ξιμηνῇ 789,
 11. οὐδ' 16. et 20. Σανδαρακούργιον 792, 19. τὸ add. ante
 φύλον 20. τε 31. τι om. 794, 10. οἴεται pro οἷ' ἔστι 19
 Ἀντιγονίαν 795, 14 — 16. Κλεοφάνης τε φήτωρ, ὁ Μυρλεανός,
 Ἀσκληπιάδης τε ἱατρός, ὁ Προυσιεύς] Correxuit et supplevit Lehrsius
 796, 19. Τρόκμοι, quod ubique correxi 24. * Βογοδιατάρφ] Βρογι-
 τάρφ C. 797, 7.
 τνισόν
 Fort. τὰ Ἰσαύρα numero duali 29. [τὴν δὲ] Εὐερκῇ 799, 10.
 Ἰσαυρίαν] Praestat fort. Ἰσαύραν pro eo quod posui Ἰσαυραν 10.
 καὶ † Κιλίκων add. post οὐσαν 800, 29. προσβόροις 801, 20.
 ὀρθήλῶν] Ex ὀρθόκανλον corruptum (s e suspicatur Lobeckius 803,
 14. post ἄλλήλους add. πρὸς μὲν ἄλλήλους 805, 26. αἱ ante Κιμ-
 μερίαν fort. delendum 27. τε om. 809, 24. Δορυλάων 810,
 29. μικρὰς 811, 10. κατωφερεῖ 13. γενόμενος [μέγας] Μαίαν-
 δρος 24. ἀπέδειξεν? 30. ὑπολείβεσθαι 812, 22. † συνέπεσεν

813, 12. μεσόγαιαν 18. ὁμώνυμον 29. διὰ τὸν λίθον καὶ
τὴν ἀπὸ 814, 13. ὑπόνομον 20. συνέστηκε 24. τι συμβαίνει
36. βρυχήμασιν ἔρπονσι πᾶν δ' ἐρέχθει] πᾶν τ' Ἐρέχθειον
πέδον? an πᾶν δ' ἐρέχθεται πέδον?

Berolini d. XXVI. m. Ianuarii a. MDCCCLIII.

Augustus Meineke.

Εἰρηκόσι δ' ἡμῖν περὶ τῆς Ἰβηρίας καὶ τῶν Κελ-^{C.289}
τικῶν ἐθνῶν καὶ τῶν Ἰταλικῶν σὺν ταῖς πλησίον νή-^I
σοις ἐφεξῆς ἂν εἴη λέγειν τὰ λειπόμενα τῆς Εὐρώπης
5 μέρη, διελούσι τὸν ἐνδεχόμενον τρόπον. λείπεται δὲ
*τὰ πρὸς ἑω * μὲν τὰ πέραν τοῦ Ῥήνου μέχρι τοῦ Τανάι-*
δος καὶ τοῦ στόματος τῆς Μαιώτιδος λίμνης, καὶ ὅσα
μεταξὺ τοῦ Ἀδρίου καὶ τῶν ἀριστερῶν τῆς Ποντικῆς
θαλάττης μερῶν ἀπολαμβάνει πρὸς νότον μέχρι τῆς
10 Ἑλλάδος καὶ τῆς Προποντίδος ὁ Ἴστρος· διαιρεῖ γὰρ
οὗτος ἅπασαν ὡς ἐγγυτάτω δίχα τὴν λεχθεῖσαν γῆν,
μέγιστος τῶν κατὰ τὴν Εὐρώπην ποταμῶν, ῥέων πρὸς
νότον κατ' ἀρχάς, εἴτ' ἐπιστρέφων εὐθὺς ἀπὸ τῆς δύ-
σεως ἐπὶ τὴν ἀνατολήν καὶ τὸν Πόντον. ἄρχεται μὲν
15 οὖν ἀπὸ τῶν Γερμανικῶν ἄκρων τῶν ἐσπερίων, πλη-
σίον δὲ καὶ τοῦ μυχοῦ τοῦ Ἀδριατικοῦ, διέχων αὐτοῦ
περὶ χιλίους σταδίους· τελευτᾷ δ' εἰς τὸν Πόντον οὐ
πολὺ ἄπωθεν τῶν τοῦ Τύρα καὶ τοῦ Βορυσθένους
ἐκβολῶν, ἐκκλίνων πῶς πρὸς ἄρκτους. προσάρκτια
20 μὲν οὖν ἐστὶ τῷ Ἴστρῳ τὰ πέραν τοῦ Ῥήνου καὶ τῆς
Κελτικῆς· ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ τε Γαλατικά ἐθνη καὶ τὰ
Γερμανικά μέχρι Βασταρνῶν καὶ Τυρεγετῶν καὶ τοῦ
ποταμοῦ τοῦ Βορυσθένους, καὶ ὅσα μεταξὺ τούτου καὶ
Τανάιδος καὶ τοῦ στόματος τῆς Μαιώτιδος εἰς τε τὴν
25 μεσόγαιαν ἀνατείνει μέχρι τοῦ ὠκεανοῦ καὶ τῇ Πον-
τικῇ κλύζεται θαλάττῃ· μεσημβρινὰ δὲ τὰ τε Ἰλλυ-
ρικά καὶ τὰ Θράκια καὶ ὅσα τούτοις ἀναμείκται τῶν
Κελτικῶν ἢ τινων ἄλλων, μέχρι τῆς Ἑλλάδος. λέγωμεν

δὲ πρῶτον περὶ τῶν ἐκτὸς τοῦ Ἰστροῦ· πολὺ γὰρ ἀπλούστερα τῶν ἐπὶ θάτερα μερῶν ἐστίν.

C.290

2

Εὐθὺς τοίνυν τὰ πέραν τοῦ Ῥήνου μετὰ τοὺς Κελτοὺς πρὸς τὴν ἔω κεκλιμένα Γερμανοὶ νέμονται, μικρὸν ἐξαλλάττοντες τοῦ Κελτικοῦ φύλου τῷ τε πλε- 5 ονασμῷ τῆς ἀγριότητος καὶ τοῦ μεγέθους καὶ τῆς ξανθότητος, τὰλλα δὲ παραπλήσιοι καὶ μορφαῖς καὶ ἥθειαι καὶ βίοις ὄντες, οἷους εἰρήκαμεν τοὺς Κελτοὺς. διὸ δὴ καὶ μοι δοκοῦσι Ῥωμαῖοι τοῦτο αὐτοῖς θέσθαι τοῦ- νομα ὥς ἂν γνησίους Γαλάτας φράζειν βουλόμε- 10 νοι· γνήσιοι γὰρ οἱ Γερμανοὶ κατὰ τὴν Ῥωμαίων διά- λεκτον.

3

Ἔστι δὲ τὰ μὲν πρῶτα μέρη τῆς χώρας ταύτης τὰ πρὸς τῷ Ῥήνῳ μέχρι τῶν ἐκβολῶν ἀπὸ τῆς πηγῆς ἀρ- 15 ξαμένοις· σχεδὸν δέ τι καὶ τοῦτ' ἐστὶ τὸ ἐσπέριον τῆς 15 χώρας πλάτος, ἡ ποταμία πᾶσα. ταύτης δὲ τὰ μὲν εἰς τὴν Κελτικὴν μετήγαγον Ῥωμαῖοι, τὰ δ' ἔφθη μετα- στάντα εἰς τὴν ἐν βάθει χώραν, καθάπερ Μαρσοί· λοιποὶ δ' εἰσὶν ὀλίγοι καὶ τῶν Σουγάμβρων μέρος. μετὰ δὲ τοὺς παραποταμίους τὰλλα ἐστὶν ἔθνη τὰ με- 20 ταξὺ τοῦ Ῥήνου καὶ τοῦ Ἀλβίου ποταμοῦ, ὃς παράλ- ληλός πως ἐκείνῳ ρεῖ πρὸς τὸν ὠκεανόν, οὐκ ἐλάττω χώραν διεξιὼν ἥπερ ἐκεῖνος. εἰσὶ δὲ μεταξὺ καὶ ἄλλοι ποταμοὶ πλωτοὶ (ὧν ἐν τῷ Ἀμασίᾳ Δροῦσος Βρουκτέ- 25 ρους κατεναυμάχησε), ῥέοντες ὁσαύτως ἀπὸ νότου 25 πρὸς βορρᾶν καὶ τὸν ὠκεανόν. ἐξῆρται γὰρ ἡ χώρα πρὸς νότον καὶ συνεχῇ ταῖς Ἀλπεσι ποιεῖ ῥάχιν τινα πρὸς ἔω τεταμένην, ὥς ἂν μέρος οὔσαν τῶν Ἀλπεων· καὶ δὴ καὶ ἀπεφῆναντό τινες οὕτως διὰ τε τὴν λεχθεῖ- 30 σαν θέσιν καὶ διὰ τὸ τὴν αὐτὴν ὕλην ἐκφέρειν· οὐ μὴν 30 ἐπὶ τοσοῦτό γε ὕψος ἀνίσχει τὰ ταύτῃ ὄρη. ἐνταῦθα δ' ἐστὶν ὁ Ἐρκύνιος ὄρυμός καὶ τὰ τῶν Σοήβων ἔθνη,

τὰ μὲν οἰκοῦντα ἐντὸς τοῦ δρυμοῦ, ἐν οἷς ἐστὶ καὶ τὸ
 Βουίαιμον τὸ τοῦ Μαροβόδου βασιλείου, εἰς ὃν ἐκεῖ-
 νος τόπον ἄλλους τε μετανέστησε πλείους καὶ δὴ καὶ
 τοὺς ὁμοεθνεῖς ἑαυτῷ Μαρκομμάνους. ἐπέστη γὰρ
 5 τοῖς πράγμασιν οὗτος ἐξ ἰδιώτου μετὰ τὴν ἐκ Ῥώμης
 ἐπάνοδον· νέος γὰρ ἦν ἐνθάδε καὶ εὐεργετεῖτο ὑπὸ
 τοῦ Σεβαστοῦ, ἐπανελθὼν δὲ ἐδυνάστευσε καὶ κατε-
 κτήσατο πρὸς οἷς εἶπον Λουγίους τε, μέγα ἔθνος, καὶ
 Ζούμους καὶ Γούτυνας καὶ Μουγίλωνας καὶ Σιβίνους
 10 καὶ τῶν Σοήβων αὐτῶν μέγα ἔθνος, Σέμνωνας. πλὴν
 τά γε τῶν Σοήβων, ὡς ἔφην, ἔθνη τὰ μὲν ἐντὸς οἰκεῖ,
 τὰ δὲ ἐκτὸς τοῦ δρυμοῦ, ὅμορα τοῖς Γέταις. μέγιστον
 μὲν οὖν τὸ τῶν Σοήβων ἔθνος· διήκει γὰρ ἀπὸ τοῦ
 Ῥήνου μέχρι τοῦ Ἄλβιος· μέρος δέ τι αὐτῶν καὶ πέραν
 15 τοῦ Ἄλβιος νέμεται, καθάπερ Ἑρμόνδοροι καὶ Λαγκό-
 βαρδοι· νυνὶ δὲ καὶ τελέως εἰς τὴν περαιάν οὗτοί γε C.291
 ἐκπεπτῶκασιν φεύγοντες. κοινὸν δ' ἐστὶν ἅπασιν τοῖς
 ταύτῃ τὸ περὶ τὰς μεταναστάσεις εὐμαρὲς διὰ τὴν λι-
 τότητα τοῦ βίου καὶ διὰ τὸ μὴ γεωργεῖν μηδὲ θησαν-
 20 ρίζειν, ἀλλ' ἐν καλυβίοις οἰκεῖν ἐφήμερον ἔχουσι πα-
 ρασκευήν· τροφή δ' ἀπὸ τῶν θρεμμάτων ἢ πλείστη
 καθάπερ τοῖς νομάσιν, ὥστ' ἐκείνους μιμούμενοι τὰ
 οἰκεῖα ταῖς ἁρμαμάξαις ἐπάραντες ὅπη ἂν δόξῃ τρέ-
 πονται μετὰ τῶν βοσκημάτων. ἄλλα δ' ἐνδεέστερά
 25 ἐστὶν ἔθνη Γερμανικὰ Χηροῦσκοί τε καὶ Χάττοι καὶ
 Γαμαβρίσιοι καὶ Χαττουάριοι· πρὸς δὲ τῷ ὠκεανῷ
 Σούγαμβροί τε καὶ Χαῦβοι καὶ Βρούκτεροι καὶ Κίμ-
 βροι Καῦκοί τε καὶ Καοῦλκοι καὶ Καμφιανοὶ καὶ ἄλ-
 λοι πλείους. ἐπὶ ταῦτά δὲ τῷ Ἀμασίᾳ φέρονται Βί-
 30 σουργίς τε καὶ Λουπίας ποταμός, διέχων Ῥήνου περὶ

1. post δρυμοῦ: καθάπερ τὰ τῶν κολδούων (Κοαδούων)

ἑξακοσίους σταδίους, ῥέων διὰ Βρουκτέρων τῶν ἐλαττόνων. ἔστι δὲ καὶ Σάλας ποταμός, οὗ μεταξὺ καὶ τοῦ Ῥήνου πολεμῶν καὶ κατορθῶν Δροῦσος ἐτελεύτησεν ὁ Γερμανικός. ἐχειρώσατο δ' οὐ μόνον τῶν ἐθνῶν τὰ πλεῖστα, ἀλλὰ καὶ τὰς ἐν τῷ παράπλῳ νήσους, ὧν ἔστι 5 καὶ ἡ Βυρχανίς, ἣν ἐκ πολιορκίας εἴλε.

- 4 Γνώριμα δὲ ταῦτα κατέστη τὰ ἔθνη πολεμοῦντα πρὸς Ῥωμαίους, εἴτ' ἐνδιδόντα καὶ πάλιν ἀφιστάμενα ἢ καὶ καταλείποντα τὰς κατοικίας· καὶ πλείω δὲ γνώριμα ὑπῆρξεν, εἰ ἐπέτρεπε τοῖς στρατηγοῖς ὁ Σεβαστὸς 10 διαβαίνειν τὸν Ἄλβιν μετιοῦσι τοὺς ἐκεῖσε ἀπανιστάμενους. νυνὶ δ' εὐπορώτερον ὑπέλαβε στρατηγεῖν τὸν ἐν χειρὶ πόλεμον, εἰ τῶν ἔξω τοῦ Ἄλβιος καθ' ἡσυχίαν ὄντων ἀπέχοιτο καὶ μὴ παροξύνει πρὸς τὴν κοινωनीαν τῆς ἐχθρας. ἤρξαντο δὲ τοῦ πολέμου Σούγαμβροι πλη- 15 σίον οἰκοῦντες τοῦ Ῥήνου, Μέλωνα ἔχοντες ἡγεμόνα· καὶ κείθεν ἤδη διεδέχοντο ἄλλοτ' ἄλλοι δυναστεύοντες καὶ καταλνόμενοι, πάλιν δ' ἀφιστάμενοι, προδιδόντες καὶ τὰ ὄμηρα καὶ τὰς πίστεις. πρὸς οὓς ἡ μὲν ἀπιστία μέγα ὄφελος, οἱ δὲ πιστευθέντες τὰ μέγιστα κατέβλα- 20 ψαν, καθάπερ οἱ Χηρούσκοι καὶ οἱ τούτοις ὑπήκοοι, παρ' οἷς τρία τάγματα Ῥωμαίων μετὰ τοῦ στρατηγοῦ Ἰάρου Κουντιλλίου παρασπονδηθέντα ἀπώλετο ἐξ ἐνέδρας. ἔτισαν δὲ δίκας ἅπαντες καὶ παρέσχον τῷ νεωτέρῳ Γερμανικῷ λαμπρότατον θρίαμβον, ἐν ᾧ 25 ἐθριαμβεύθη τῶν ἐπιφανεστάτων ἀνδρῶν σώματα καὶ γυναικῶν, Σεγμιοῦντός τε Σεγέστου υἱός, Χηρούσκων ἡγεμῶν, καὶ ἀδελφῇ αὐτοῦ, γυνὴ δ' Ἀρμενίου τοῦ πολεμαρχήσαντος ἐν τοῖς Χηρούσκοις ἐν τῇ πρὸς Ἰᾶρον
- C.292 Κουντιλλιον παρασπονδήσει καὶ νῦν ἐτι συνέχοντος 30 τὸν πόλεμον, ὄνομα Θουσνέλδα, καὶ υἱὸς τριετῆς Θουμέλικος· ἐτι δὲ Σεσίθακος, Σεγμῆρου υἱὸς τῶν Χη-

- ρούσκων ἡγεμόνος, καὶ γυνὴ τούτου *Ραμῖς*, Οὐκρομή-
 ρου θυγάτηρ ἡγεμόνος *Χάττων*, καὶ *Λευδόριξ*, Βαιτό-
 ριγος τοῦ *Μέλωνος* ἀδελφοῦ υἱός, *Σούγαμβρος*. Σε-
 γέστης δὲ ὁ πενθερὸς τοῦ *Ἀρμενίου* καὶ ἐξ ἀρχῆς διέστη
 5 πρὸς τὴν γνώμην αὐτοῦ καὶ λαβὼν καιρὸν ἠντομόλησε
 καὶ τῷ *Θριάμβῳ* παρῆν τῶν φιλιάτων, ἐν τιμῇ ἀγό-
 μενος. ἐπόμεπυσε δὲ καὶ *Λίβης* τῶν *Χάττων* ἱερεὺς,
 καὶ ἄλλα δὲ σώματα ἐπόμεπύθη ἐκ τῶν πεπορθημένων
 ἔθνων, *Καούλκων* *Καμψανῶν* *Βρουκτέρων* *Οὐσίπων*
 10 *Χηρούσκων* *Χάττων* *Χαττουαρίων* *Λανδῶν* *Τουβατ-*
τίων. διέχει δὲ τοῦ *Ἀλβιος* ὁ *Ρῆνος* περὶ τρισχιλίους
 σταδίους, εἴ τις εὐθυπορούσας ἔχοι τὰς ὁδοὺς· νυνὶ
 δὲ διὰ σκολιάς καὶ ἐλώδους καὶ δρυμῶν κυκλοπορεῖν
 ἀνάγκη.
 15 Ὁ δὲ *Ἐρκύνιος* δρυμὸς πυκνότερός τε ἐστὶ καὶ με- 5
 γαλόδενδρος ἐν χωρίοις ἐρυμνοῖς κύκλον περιλαμβά-
 νων μέγαν, ἐν μέσῳ δὲ ἵδρυνται χώρα καλῶς οἰκείσθαι
 δυναμένη, περὶ ἧς εἰρήκαμεν. ἔστι δὲ πλησίον αὐτῆς
 ἢ τε τοῦ *Ἰστρου* πηγῇ καὶ ἢ τοῦ *Ρήνου* καὶ ἢ μεταξὺ
 20 ἀμφοῖν λίμνη καὶ τὰ ἔλη τὰ ἐκ τοῦ *Ρήνου* διαχεόμενα.
 ἔστι δ' ἡ λίμνη τὴν μὲν περίμετρον σταδίων πλειόνων
 ἢ πεντακοσίων, διάγραμμα δὲ ἐγγὺς διακοσίων. ἔχει δὲ
 καὶ νῆσον, ἣ ἐχρήσατο ὀρμητηρίῳ *Τιβέριος* ναυμαχῶν
 πρὸς *Γινδολικούς*. νοτιωτέρα δ' ἐστὶ τῶν τοῦ *Ἰστρου*
 25 πηγῶν καὶ αὕτη, ὥστ' ἀνάγκη τῷ ἐκ τῆς *Κελτικῆς* ἐπὶ
 τὸν *Ἐρκύνιον* δρυμὸν ἰόντι πρῶτον μὲν διαπερᾶσαι
 τὴν λίμνην, ἔπειτα τὸν *Ἰστρον*, εἴτ' ἤδη δι' εὐπετεστέ-
 ρων χωρίων ἐπὶ τὸν δρυμὸν τὰς προβάσεις ποιεῖσθαι
 δι' ὀροπεδίων. ἡμερῆσιον δ' ἀπὸ τῆς λίμνης προελθὼν
 30 ὁδὸν *Τιβέριος* εἶδε τὰς τοῦ *Ἰστρου* πηγάς. προσάπτου-

ται δὲ τῆς λίμνης ἐπ' ὀλίγον μὲν οἱ Ῥαιτοί, τὸ δὲ πλεόν
Ἑλεήττιοι καὶ Ῥινδολικοί . . . καὶ ἡ Βοίῳν ἐρημία.
μέχρι Παννουίων πάντες, τὸ πλεόν δ' Ἑλεήττιοι καὶ
Ῥινδολικοί, οἰκοῦσιν ὄροπέδια. Ῥαιτοὶ δὲ καὶ Νωρι-
κοὶ μέχρι τῶν Ἀλπειῶν ὑπερβολῶν ἀνίσχουσι καὶ πρὸς 5
τὴν Ἰταλίαν περινεύουσιν, οἱ μὲν Ἰνσούβροισι συνά-
πτοντες οἱ δὲ Κάρνοις καὶ τοῖς περὶ τὴν Ἀκυληίαν χω-
ρίοις. ἔστι δὲ καὶ ἄλλη ὕλη μεγάλη Γαβρητα ἐπὶ τὰδε
τῶν Σοήβων, ἐπέκεινα δ' ὁ Ἐρκύνιος δρυμός· ἔχεται
δὲ κάκεινος ὑπ' αὐτῶν. 10

2 Περὶ δὲ Κίμβρων τὰ μὲν οὐκ εὖ λέγεται, τὰ δ'
ἔχει πιθανότητος οὐ μετρία. οὔτε γὰρ τὴν τοιαύτην
αἰτίαν τοῦ πλάνητας γενέσθαι καὶ ληστρικοὺς ἀποδέ-
ξαιτ' ἂν τις, ὅτι χερρόνησον οἰκοῦντες μεγάλη πλημ-
μυρίδι ἐξελαθεῖεν ἐκ τῶν τόπων· καὶ γὰρ νῦν ἔχουσι 15
C.293 τὴν χώραν ἣν εἶχον πρότερον, καὶ ἐπεμφαν τῷ Σε-
βαστῷ δῶρον τὸν ἱερῶτατον παρ' αὐτοῖς λέβητα, αἰ-
τούμενοι φιλίαν καὶ ἀμνηστίαν τῶν ὑπηργμένων, τυ-
χόντες δὲ ὧν ἡξίου ἀπῆραν· γελοῖον δὲ τῷ φυσικῷ
καὶ αἰωνίῳ πάθει δις ἐκάστης ἡμέρας συμβαίνοντι 20
προσοργισθέντας ἀπελθεῖν ἐκ τοῦ τόπου. εἰκε δὲ
πλάσματι τὸ συμβῆναί ποτε ὑπερβάλλουσιν πλημμυ-
ρίδα· ἐπιτάσεις μὲν γὰρ καὶ ἀνέσεις δέχεται, τεταγμέ-
νας δὲ καὶ περιοδιζούσας, ὁ ὠκεανὸς ἐν τοῖς τοιούτοις
πάθεισιν. οὐκ εὖ δ' οὐδὲ ὁ φήσας ὅπλα αἰρεσθαι πρὸς 25
τὰς πλημμυρίδας τοὺς Κίμβρους, οὐδ' ὅτι ἀφοβίαν οἱ
Κελτοὶ ἀσχοῦντες κατακλύζεσθαι τὰς οἰκίας ὑπομέ-
νουσιν, εἴτ' ἀνοικοδομοῦσι, καὶ ὅτι πλείων αὐτοῖς
συμβαίνει φθόρος ἐξ ὕδατος ἢ πολέμου, ὅπερ Ἐφορός
φησιν. ἡ γὰρ τάξις ἡ τῶν πλημμυρίδων καὶ τὸ τὴν 30
ἐπικλυζομένην χώραν εἶναι γνῶριμον οὐκ ἔμελλε τοι-
αύτας τὰς ἀτοπίας παρέξειν. δις γὰρ ἐκάστης ἡμέρας

τούτου συμβαίνοντος τὸ μηδ' ἄπαξ αἰσθάνεσθαι φυσικὴν οὐσάν τὴν παλίρροϊαν καὶ ἀβλαβῇ, καὶ οὐ μόνον τοῦτοις συμβαίνουσιν ἀλλὰ τοῖς παρωκεανίταις πᾶσι, πῶς οὐκ ἀπίθانون; οὐδὲ Κλείταρχος εὖ· φησὶ
 5 γὰρ τοὺς ἱππέας ἰδόντας τὴν ἐφοδὸν τοῦ πελάγους ἀφιππάσασθαι καὶ φεύγοντας ἐγγὺς γενέσθαι τοῦ περικαταληφθῆναι. οὔτε δὲ τοσοῦτῳ τάχει τὴν ἐπίβασιν ὁρμωμένην ἱστοροῦμεν, ἀλλὰ λεληθότως προσιοῦσαν τὴν θάλατταν· οὔτε τὸ καθ' ἡμέραν γινόμενον καὶ
 10 πᾶσιν ἑναυλον ἦδη ὃν τοῖς πλησιάζειν μέλλουσι πρὶν ἢ θεάσασθαι, τοσοῦτον ἐμελλε παρῆξεσθαι φόβον ὥστε φεύγειν, ὥς ἂν εἰ ἐξ ἀδοκῆτου προσέπεσε.

Ταῦτά τε δὴ δικαίως ἐπιτιμᾷ τοῖς συγγραφεῦσι 2
 Ποσειδώνιος καὶ οὐ κακῶς εἰκάζει, διότι ληστροικοὶ ὄν-
 15 τες καὶ πλάνητες οἱ Κίμβροι καὶ μέχρι τῶν περὶ τὴν Μαιῶτιν ποιήσαιντο στρατείαν, ἀπ' ἐκείνων δὲ καὶ ὁ Κιμμέριος κληθεῖν Βόσπορος, οἷον Κιμβρικός, Κιμμερίους τοὺς Κίμβρους ὀνομασάντων τῶν Ἑλλήνων. φησὶ δὲ καὶ Βοίους τὸν Ἐρκύνιον δρυμὸν οἰκεῖν πρό-
 20 τερον, τοὺς δὲ Κίμβρους ὁρμήσαντας ἐπὶ τὸν τόπον τοῦτον, ἀποκρουσθέντας ὑπὸ τῶν Βοίων ἐπὶ τὸν Ἴστρον καὶ τοὺς Σκορδίσκους Γαλάτας καταβῆναι, εἰτ' ἐπὶ Τευρίστας καὶ Ταυρίσκους, καὶ τούτους Γαλάτας, εἰτ' ἐπὶ Ἑλεητιίους, πολυχρύσους μὲν ἄνδρας εἰρη-
 25 ναίους δέ· ὁρῶντας δὲ τὸν ἐκ τῶν ληστηρίων πλοῦτον ὑπερβάλλοντα τοῦ παρ' ἑαυτοῖς τοὺς Ἑλεητιίους ἐπαρθῆναι, μάλιστα δ' αὐτῶν Τυγυρίνους τε καὶ Τωγένους, ὥστε καὶ συνεξορμηῆσαι. πάντες μὲντοι κατε-
 λύθησαν ὑπὸ τῶν Ῥωμαίων αὐτοὶ τε οἱ Κίμβροι καὶ
 30 οἱ συναράμενοι τούτοις, οἱ μὲν ὑπερβαλόντες τὰς Ἀλπεῖς εἰς τὴν Ἰταλίαν οἱ δ' ἔξω τῶν Ἀλπεων.

Ἔθος δέ τι τῶν Κίμβρων διηγοῦνται τοιοῦτον, 3

ὅτι ταῖς γυναιξὶν αὐτῶν συστρατευούσαις παρηκολού-
θουν προμάντις, ἰέρειαι πολιότριχες, λευχείμονες,
καρπασίνας ἐφαπτίδας ἐπιπεπορημέναι, ξῶσμα χαλ-
κοῦν ἔχουσαι, γυμνόποδες· τοῖς οὖν αἰχμαλώτοις διὰ
τοῦ στρατοπέδου συνήντων ξιφῆρεις, καταστέψασαι δ' 5
αὐτοὺς ἦγον ἐπὶ κρατῆρα χαλκοῦν ὅσον ἀμφορέων εἰ-
κοσιν· εἶχον δὲ ἀναβάθραν, ἣν ἀναβάσα... ὑπερπετῆς
τοῦ λέβητος ἐλαιμοτόμει ἕκαστον μετεωρισθέντα· ἐκ
δὲ τοῦ προχεομένου αἵματος εἰς τὸν κρατῆρα μαν-
τείαν τινὰ ἐποιοῦντο, ἄλλαι δὲ διασχίσασαι ἐσπλάγ- 10
χνευον ἀναφθεγγόμεναι νίκην τοῖς οἰκέλοις. ἐν δὲ τοῖς
ἀγῶσιν ἔτυπτον τὰς βύρσας τὰς περιτεταμένους τοῖς
γέροισι τῶν ἀρμαμαξῶν, ὥστ' ἀποτελεῖσθαι ψόφον
ἐξαίσιον.

- 4 Τῶν δὲ Γερμανῶν, ὥς εἶπον, οἱ μὲν προσάρκτιοι 15
παροικοῦσι τῷ ὤκεανῳ, γνωρίζονται δ' ἀπὸ τῶν ἐκ-
βολῶν τοῦ Πήνου λαβόντες τὴν ἀρχὴν μέχρι τοῦ Ἄλ-
βιος. τούτων δ' εἰσὶ γνωριμώτατοι Σούγαμβροί τε καὶ
Κίμβροι. τὰ δὲ πέραν τοῦ Ἄλβιος τὰ πρὸς τῷ ὤκεανῳ
παντάπασιν ἄγνωστα ἡμῖν ἐστίν. οὔτε γὰρ τῶν προ- 20
τέρων οὐδένας ἴσμεν τὸν παράπλουν τοῦτον πεποιη-
μένους πρὸς τὰ ἐωθινὰ μέρη τὰ μέχρι τοῦ στόματος
τῆς Κασπίας θαλάττης, οὔθ' οἱ Ῥωμαῖοι πω προῆλθον
εἰς τὰ περαιτέρω τοῦ Ἄλβιος· ὥς δ' αὐτως οὐδὲ περὶ
παρωδεύκασιν οὐδένας. ἀλλ' ὅτι μὲν κατὰ μήκος 25
σιν ἐπὶ τὴν ἕω τὰ κατὰ τὸν Βορυσθένη καὶ τὰ πρὸς
βορρᾶν τοῦ Πόντου χωρία ἀπαντᾷ, δῆλον ἐκ τῶν κλι-
μάτων καὶ τῶν παραλλήλων διαστημάτων. τί δ' ἐστὶ
πέραν τῆς Γερμανίας καὶ τί τῶν ἄλλων τῶν ἐξῆς, εἶκε
Βαστάρνας χρὴ λέγειν, ὥς οἱ πλείους ὑπονοοοῦσιν, εἴτ' 30

ἄλλους μεταξὺ ἢ Ἰάξυγας ἢ Ῥωξολανούς ἢ τινας ἄλλους τῶν ἀμαξοίκων οὐ ῥάδιον εἰπεῖν, οὐδ' εἰ μέχρι τοῦ ὠκεανοῦ παρήκουσι παρὰ πᾶν τὸ μῆκος, ἢ ἔστι τι ἀοίκητον ὑπὸ ψύχους ἢ ἄλλης αἰτίας, ἢ εἰ καὶ γένος
 5 ἀνθρώπων ἄλλο διαδέχεται μεταξὺ τῆς θαλάττης καὶ τῶν ἐσίων Γερμανῶν ἰδρυμένον. τοῦτο δὲ τὸ αὐτὸ ἀγνόημα καὶ περὶ τῶν ἄλλων τῶν ἐφεξῆς προσαρκτίων ἐπέχει. οὔτε γὰρ τοὺς Βαστάρνας οὔτε τοὺς Σαυρομάτας καὶ ἅπλως τοὺς ὑπὲρ τοῦ Πόντου οἰκοῦντας ἴσμεν,
 10 οὔθ' ὁπόσον ἀπέχουσι τῆς Ἀτλαντικῆς θαλάττης, οὔτ' εἰ συνάπτουσιν αὐτῇ.

Τὸ δὲ νότιον μέρος τῆς Γερμανίας τὸ πέραν τοῦ **Β**
 Ἄλβιος τὸ μὲν συνεχὲς ἀκμὴν ὑπὸ τῶν Σοθήβων κατέ-
 χεται· εἴτ' εὐθύς ἡ τῶν Γετῶν συνάπτει γῇ, κατ' ἀρ-
 15 χὰς μὲν στενὴ, παρατεταμένη τῷ Ἰστρῳ κατὰ τὸ νό-
 τιον μέρος, κατὰ δὲ τοῦναντίον τῇ παρωρείᾳ τοῦ Ἑρ-
 κυνίου ὄρου, μέρος τι τῶν ὄρων καὶ αὐτὴ κατέ-
 χουσα, εἴτα πλατύνεται πρὸς τὰς ἄρκτους μέχρι Τυρε-
 γετῶν· τοὺς δὲ ἀκριβεῖς ὄρους οὐκ ἔχομεν φράζειν.
 20 διὰ δὲ τὴν ἄγνοιαν τῶν τόπων τούτων οἱ τὰ Ῥιπαῖα ὄρη
 καὶ τοὺς Ἱπερβορείους μυθοποιοῦντες λόγου ἡξίωται,
 καὶ ἃ Πυθίας ὁ Μασσαλιώτης κατεψεύσατο * ταῦτα
 τῆς παρωκεανίδος, προσχήματι χρώμενος τῇ περὶ τὰ
 οὐράνια καὶ τὰ μαθηματικὰ ἱστορίᾳ. ἐκεῖνοι μὲν οὖν
 25 ἐάσθωσαν· οὐδὲ γὰρ εἴ τινα Σοφοκλῆς τραγωδεῖ περὶ
 τῆς Ὀρειθυίας λέγων ὡς ἀναρπαγεῖσα ὑπὸ Βορέου κο-
 μισθείη „ὑπὲρ τε πόντον πάντ' ἐπ' ἔσχατα χθονὸς
 „νυκτός τε πηγὰς οὐρανοῦ τ' ἀναπτυχάς, Φοίβου πα-
 „λαιὸν κῆπον,“ οὐδὲν ἂν εἴη πρὸς τὰ νῦν, ἀλλ' ἐα-
 30 τέον, ὥσπερ καὶ ἐν τῷ Φαίδρῳ ὁ Σωκράτης. ἃ δὲ ἐκ τε
 τῆς παλαιᾶς ἱστορίας καὶ τῆς νῦν παρελήφαμεν, ταῦτα
 λέγωμεν.

2 Οἱ τοίνυν Ἕλληνες τοὺς Γέτας Θρᾷκας ὑπελάμβανον· ὥκουν δ' ἐφ' ἐκάτερα τοῦ Ἴστρου καὶ οὗτοι καὶ οἱ Μυσοὶ Θρᾷκες ὄντες καὶ αὐτοὶ καὶ οὓς νῦν Μοισσοὺς καλοῦσιν, ἀφ' ὧν ὠρμήθησαν καὶ οἱ νῦν μεταξὺ Λυδῶν καὶ Φρυγῶν καὶ Τρώων οἰκοῦντες Μυσοί. 5 καὶ αὐτοὶ δ' οἱ Φρύγες Βρίγες εἰσί, Θράκιόν τι ἔθνος, καθάπερ καὶ Μυγδόνες καὶ Βέβρυκες καὶ Μαιδοβιθυννοὶ καὶ Βιθυνοὶ καὶ Θυνοὶ, δοκῶ δὲ καὶ τοὺς Μαριανδυνούς. οὗτοι μὲν οὖν τελέως ἐκκλησίπασιν πάντες τὴν Εὐρώπην, οἱ δὲ Μυσοὶ συνέμειναν. καὶ Ὅμηρον 10 δ' ὀρθῶς εἰκάζειν μοι δοκεῖ Ποσειδώνιος τοὺς ἐν τῇ Εὐρώπῃ Μυσοὺς κατονομάζειν (λέγω δὲ τοὺς ἐν τῇ Θράκῃ) ὅταν φῇ „αὐτὸς δὲ πάλιν τρέπεν ὅσσε φαιινῶ, „νόσφιν ἐφ' ἱπποπόλων Θρηκῶν καθορώμενος αἶαν „Μυσῶν τ' ἀγγεμάχων.“ ἐπεὶ εἰ γε τοὺς κατὰ τὴν 15 Ἀσίαν Μυσοὺς δέχοιτό τις, ἀπηρτημένος ἂν εἴη ὁ λόγος. τὸ γὰρ ἀπὸ τῶν Τρώων τρέψαντα τὴν ὄρασιν ἐπὶ τὴν Θρακῶν γῆν συγκαταλέγειν ταύτῃ τὴν τῶν Μυσῶν, τῶν οὐ νόσφιν ὄντων ἀλλ' ὁμόρων τῇ Τρωάδι καὶ ὀπισθεν αὐτῆς ἰδρυμένων καὶ ἐκατέρωθεν, διειρ- 20 γομένων δ' ἀπὸ τῆς Θράκης πλατεῖ Ἑλλησπόντῳ, συγχέοντος ἂν εἴη τὰς ἡπείρους καὶ ἅμα τῆς φράσεως οὐκ ἀκούοντος. τὸ γὰρ „πάλιν τρέπεν“ μάλιστα μὲν ἐστὶν εἰς τοῦπίσω· ὁ δ' ἀπὸ τῶν Τρώων μεταφέρων τὴν ὄψιν ἐπὶ τοὺς μὴ ὀπισθεν αὐτῶν ἢ ἐκ πλαγίων ὄντας 25 προσωτέρω μὲν μεταφέρει, εἰς τοῦπίσω δ' οὐ πάνυ. C.296 καὶ τὸ ἐπιφερόμενον δ' αὐτοῦ τοῦτου μαρτύριον, ὅτι τοὺς ἱππημολογούς καὶ γαλακτοφάγους καὶ ἀβίους συνῆψεν αὐτοῖς, οἵπερ εἰσὶν οἱ ἀμάξοικοι Σκύθαι καὶ Σαρμάται. καὶ γὰρ νῦν ἀναμείκται ταῦτα τὰ ἔθνη 30 τοῖς Θραξὶ καὶ τὰ Βασταρνικά, μᾶλλον μὲν τοῖς ἐκτὸς Ἴστρου, ἀλλὰ καὶ τοῖς ἐντός. τούτοις δὲ καὶ τὰ Κελ-

τικά, οἳ τε Βόιοι καὶ Σκορδίσκοι καὶ Ταυρίσκοι. τοὺς δὲ Σκορδίσκους ἔτιοι Σκορδίστας καλοῦσι· καὶ τοὺς Ταυρίσκους δὲ Τευρίσκους καὶ Ταυρίστας φασί.

Λέγει δὲ τοὺς Μυσοὺς ὁ Ποσειδώνιος καὶ ἐμπύ- 3
 5 χων ἀπέχεσθαι κατ' εὐσέβειαν, διὰ δὲ τοῦτο καὶ θρεμ-
 μάτων· μέλιτι δὲ χοῆσθαι καὶ γάλακτι καὶ τυρῶ ζῶν-
 τας καθ' ἡσυχίαν, διὰ δὲ τοῦτο καλεῖσθαι θεοσεβεῖς τε
 καὶ καπνοβάτας· εἶναι δὲ τινας τῶν Θρακῶν οἳ χωρὶς
 γυναικὸς ζῶσιν, οὓς κτίστας καλεῖσθαι, ἀνιερωσθαι
 10 τε διὰ τιμὴν καὶ μετὰ ἀδείας ζῆν· τούτους δὴ συλλή-
 βδην ἅπαντας τὸν ποιητὴν εἰπεῖν ἀγανοὺς ἱππημολ-
 γοὺς γλακτοφάγους ἀβίους τε, δικαιοτάτους ἀνθρώ-
 πους. ἀβίους δὲ προσαγορεύειν μάλιστα ὅτι χωρὶς γυ-
 ναικῶν, ἡγούμενον ἡμιτελῆ τινα βίον τὸν χῆρον, κα-
 15 θάπερ καὶ τὸν οἶκον ἡμιτελῆ τὸν Πρωτεσιλάου διότι
 χῆρος· ἀγχεμάχους δὲ τοὺς Μυσοὺς, ὅτι ἀπόρρητοι,
 καθὰ οἱ ἀγαθοὶ πολεμισταί· δεῖν δὲ ἐν τῷ τρισκαιδεκά-
 τῳ γράφειν ἀντὶ τοῦ „Μυσῶν τ' ἀγχεμάχων“ „Μοι-
 σῶν τ' ἀγχεμάχων.“

20 Τὸ μὲν οὖν τὴν γραφὴν κινεῖν ἐκ τοσοῦτων ἐτῶν 4
 εὐδοκιμήσασαν περιττὸν ἴσως· πολὺ γὰρ πιθανώτε-
 ρον ὠνομάσθαι μὲν ἐξ ἀρχῆς Μυσοὺς, μετωνομάσθαι
 δὲ ὥς νῦν. τοὺς ἀβίους δὲ τοὺς χήρους οὐ μᾶλλον ἢ
 τοὺς ἀνεστίους καὶ τοὺς ἀμαξοίκους δέξαιτ' ἂν τις· μᾶ-
 25 λιστα γὰρ περὶ τὰ συμβόλαια καὶ τὴν τῶν χρημάτων
 κτήσιν συνισταμένων τῶν ἀδικημάτων, τοὺς οὕτως ἀπ'
 ὀλίγων εὐτελῶς ζῶντας δικαιοτάτους εὖλογον κληθῆ-
 ναι· ἐπεὶ καὶ οἱ φιλόσοφοι τῇ σωφροσύνῃ τὴν δικαιο-
 σύνην ἐγγυτάτω τιθέντες τὸ αὐταρκες καὶ τὸ λιτὸν ἐν
 30 τοῖς πρώτοις ἐξήλωσαν· ἀφ' οὗ καὶ προεκπτώσεις τι-
 νὰς αὐτῶν παρέωσαν ἐπὶ τὸν κυνισμόν. τὸ δὲ χήρους
 γυναικῶν οἰκεῖν οὐδεμίαν τοιαύτην ἔμφρασιν ὑπογρά-

φει, καὶ μάλιστα παρὰ τοῖς Θραξῇ καὶ τούτων τοῖς
 Γέταις. ὅρα δ' ἃ λέγει Μένανδρος περὶ αὐτῶν οὐ
 C.297 πλάσας, ὥς εἰκός, ἀλλ' ἐξ ἱστορίας λαβῶν „πάντες
 „μὲν οἱ Θραῖκες, μάλιστα δ' οἱ Γέται ἡμεῖς ἀπάντων (καὶ
 „γὰρ αὐτὸς εὐχόμεαι ἐκεῖθεν εἶναι τὸ γένος) οὐ σφόδρ' 5
 „ἐγκρατεῖς ἐσμέν.“ καὶ ὑποβὰς μικρὸν τῆς περὶ τὰς
 γυναικας ἀκρασίας τίθησι τὰ παραδείγματα „γαμεῖ
 „γὰρ ἡμῶν οὐδὲ εἷς, εἰ μὴ δέκ' ἢ ἔνδεκα γυναικας δώ-
 „δεκά τ' ἢ πλείους τινάς. ἂν τέτταρας δ' ἢ πέντε γε-
 „γαμηκῶς τύχη καταστροφῆς τις, ἀννυμέναιος ἄθλιος 10
 „ἄννυφος οὗτος ἐπικαλεῖτ' ἐν τοῖς ἐκεῖ.“ ταῦτα γὰρ
 ὁμολογεῖται μὲν καὶ παρὰ τῶν ἄλλων, οὐκ εἰκός δὲ
 τοὺς αὐτοὺς ἅμα μὲν ἄθλιον νομίζειν βίον τὸν μὴ
 μετὰ πολλῶν γυναικῶν, ἅμα δὲ σπουδαῖον καὶ δίκαιον
 τὸν τῶν γυναικῶν χῆρον. τὸ δὲ δὴ καὶ θεοσεβεῖς νο- 15
 μίζειν καὶ καπνοβάτας τοὺς ἐρήμους γυναικῶν σφό-
 δρα ἐναντιοῦται ταῖς κοιναῖς ὑπολήψεσιν. ἅπαντες
 γὰρ τῆς δεισιδαιμονίας ἀρχηγοὺς οἴονται τὰς γυναι-
 κας· αὗται δὲ καὶ τοὺς ἄνδρας προκαλοῦνται πρὸς τὰς
 ἐπὶ πλεόν θεραπείας τῶν θεῶν καὶ ἑορτὰς καὶ ποτνι- 20
 ασμούς· σπάνιον δ' εἴ τις ἀνὴρ καθ' αὐτὸν ζῶν εὐρί-
 σκεται τοιοῦτος. ὅρα δὲ πάλιν τὸν αὐτὸν ποιητὴν ἃ λέ-
 γει εἰσάγων τὸν ἀχθόμενον ταῖς περὶ τὰς θυσίας τῶν
 γυναικῶν δαπάναις καὶ λέγοντα „ἐπιτρίβουσι δ' ἡμᾶς
 „οἱ θεοὶ μάλιστα τοὺς γήμαντας· ἀεὶ γάρ τινα ἄγειν 25
 „ἑορτὴν ἔστ' ἀνάγκη.“ τὸν δὲ μισογύνην αὐτὰ ταῦ-
 τα αἰτιώμενον „ἐθύομεν δὲ πεντάκις τῆς ἡμέρας, ἐκυμ-
 „βάλιζον δ' ἑπτὰ θεράπαινοι κύκλω, αἱ δ' ὠλόλυ-
 „ξον.“ τὸ μὲν οὖν ἰδίως τοὺς ἀγύνους τῶν Γετῶν
 εὐσεβεῖς νομίζεσθαι παράλογόν τι ἐμφαίνει· τὸ δ' 30
 ἰσχύειν ἐν τῷ ἔθνει τούτῳ τὴν περὶ τὸ θεῖον σπουδὴν

ἐκ τε ὧν εἶπε Ποσειδάωνιος οὐκ ἀπιστητέον καὶ ἐκ τῆς ἄλλης ἱστορίας.

Λέγεται γάρ τινα τῶν Γετῶν ὄνομα Ζάμολξιν δου- 5
λεῦσαι Πυθαγόρα καὶ τινα τῶν οὐρανίων παρ' ἐκεί-
νου μαθεῖν, τὰ δὲ καὶ παρ' Αἰγυπτίων πλανηθέντα
καὶ μέχρι δεῦρο· ἐπανελθόντα δ' εἰς τὴν οἰκείαν σπου-
δασθῆναι παρὰ τοῖς ἡγεμόσι καὶ τῷ ἔθνει προλέγοντα
τὰς ἐπισημασίας, τελευτῶντα δὲ πεῖσαι τὸν βασιλέα
κοινωνὸν τῆς ἀρχῆς αὐτὸν λαβεῖν ὥς τὰ παρὰ τῶν
10 θεῶν ἐξαγγέλλειν ἱκανόν· καὶ κατ' ἀρχὰς μὲν ἱερέα
κατασταθῆναι τοῦ μάλιστα τιμωμένου παρ' αὐτοῖς
θεοῦ, μετὰ ταῦτα δὲ καὶ θεὸν προσαγορευθῆναι, καὶ 0.29
καταλαμβάνοντα ἀντρῶδες τι χωρίου ἄβατον τοῖς ἄλ-
λοις ἐνταῦθα διαιτᾶσθαι, σπάνιον ἐντυγχάνοντα τοῖς
15 ἐκτὸς πλὴν τοῦ βασιλέως καὶ τῶν θεραπόντων· συμ-
πράττειν δὲ τὸν βασιλέα ὁρῶντα τοὺς ἀνθρώπους
προσέχοντας ἐαυτῷ πολὺ πλεόν ἢ πρότερον, ὥς ἐκφέ-
ροντι τὰ προστάγματα κατὰ συμβουλὴν θεῶν. τουτὶ
δὲ τὸ ἔθος διέτεινεν ἄχρι καὶ εἰς ἡμᾶς, ἀεὶ τινος εὐρι-
20 σκομένου τοιούτου τὸ ἥθος, ὃς τῷ μὲν βασιλεῖ σύμ-
βουλος ὑπῆρχε, παρὰ δὲ τοῖς Γέταις ὠνομάζετο θεός·
καὶ τὸ ὄρος ὑπελήφθη ἱερόν, καὶ προσαγορεύουσιν
οὕτως· ὄνομα δ' αὐτῷ Κωγαίονον ὁμώνυμον τῷ πα-
ραρρέοντι ποταμῷ. καὶ δὴ ὅτε Βυρεβίστας ἦρχε τῶν
25 Γετῶν, ἐφ' ὃν ἤδη παρεσκευάσατο Καῖσαρ ὁ θεὸς στρα-
τεύειν, Δεκαίνεος εἶχε ταύτην τὴν τιμὴν, καὶ πῶς τὸ
τῶν ἐμψύχων ἀπέχεσθαι Πυθαγόρειον τοῦ Ζαμόλξιος
ἔμεινε παραδοθέν.

Τοιαῦτα μὲν οὖν [οὐ]κακῶς ἂν τις διαποροίη περὶ 6
30 τῶν κειμένων παρὰ τῷ ποιητῇ περὶ τε Μυσῶν καὶ

1. post ἀπιστητέον : καὶ ἐμψύχων ἀπέχεσθαι δι' εὐσίβειαν

ἀγανῶν ἱππημολγῶν· ἃ δ' Ἀπολλόδωρος ἐν τῷ δευ-
τέρῳ περὶ νεῶν προοιμιαζόμενος εἰρηκεν ἥκιστα λέγοιτ'
ἄν. ἐπαινεῖ γὰρ Ἑρατοσθένους ἀπόφασιν, ὅτι φησὶν
ἐκεῖνος καὶ Ὅμηρον καὶ τοὺς ἄλλους τοὺς παλαιοὺς τὰ
μὲν Ἑλληνικὰ εἰδέναι τῶν δὲ πόρρω πολλὴν ἔχειν⁵
ἀπειρίαν, ἀπείρους μὲν μακρῶν ὁδῶν ὄντας ἀπείρους
δὲ τοῦ ναυτίλλεσθαι. συνηγορῶν δὲ τούτοις Ὅμηρόν
φησι τὴν μὲν Αὐλίδαν καλεῖν πετρήεσσαν, ὥσπερ καὶ
ἔστι, πολύκνημον δὲ τὸν Ἑτεύωνόν, πολυτρήρωνα δὲ
τὴν Θίσβην, ποιήεντα δὲ τὸν Ἀλάρτον· τὰ δ' ἄπωθεν¹⁰
οὔτ' αὐτὸν εἰδέναι οὔτε τοὺς ἄλλους. ποταμῶν γοῦν
περὶ τετταράκοντα ῥεόντων εἰς τὸν Πόντον μηδὲ τῶν
ἐνδοξοτάτων μηδενὸς μεμνήσθαι, οἷον Ἰστρου Ταυάι-
δος Βορουσθένους Ὑπάνιος Φάσιδος Θερμῶδοντος Ἀλυ-
ρος· ἔτι δὲ Σκυθῶν μὲν μὴ μεμνήσθαι, πλάττειν δὲ¹⁵
ἀγανούς τινας ἱππημολγοὺς καὶ γαλακτοφάγους ἀβί-
ους τε, Παφλαγόνους τε τοὺς ἐν τῇ μεσογαίᾳ ἱστορηκέ-
ναι παρὰ τῶν περὶ τοῖς τόποις πλησιασάντων, τὴν πα-
ραλίαν δὲ ἄγνωστον· καὶ εἰκότως γε. ἅπλουν γὰρ εἶναι
τότε τὴν θάλατταν ταύτην καὶ καλεῖσθαι Ἀξενον διὰ²⁰
τὸ δυσχεῖμερον καὶ τὴν ἀγριότητα τῶν περιουκούντων
ἔθνων καὶ μάλιστα τῶν Σκυθικῶν, ξενοθυτούντων
καὶ σαρκοφαγούντων καὶ τοῖς κρανίοις ἐκπώμασι χρω-
C.299μένων· ὕστερον δ' Εὐξεινον κεκληῖσθαι τῶν Ἰώνων
ἐν τῇ παραλίᾳ πόλεις κτισάντων· ὁμοίως δ' ἄγνωστον²⁵
καὶ τὰ περὶ Αἴγυπτον καὶ Λιβύην, οἷον τὰς ἀναβάσεις
τοῦ Νείλου καὶ προσχώσεις τοῦ πελάγους, ὧν οὐδα-
μοῦ μεμνήσθαι, οὐδὲ τοῦ ἰσθμοῦ τοῦ μεταξὺ τῆς Ἑρυ-
θρᾶς καὶ τῆς Αἰγυπτίας θαλάττης, οὐδὲ τῶν κατὰ τὴν
Ἀραβίαν καὶ Αἰθιοπίαν καὶ τὸν ὠκεανόν, εἰ μὴ Ζή-³⁰
νωνι τῷ φιλοσόφῳ προσεκτέον γράφονται „Αἰθιοπίας
„θ' ἰκόμεν καὶ Σιδονίους Ἀραβάς τε.“ οὐ θαυμαστὸν

δ' εἶναι περὶ Ὀμήρου· καὶ γὰρ τοὺς ἔτι νεωτέρους ἐκεί-
 νου πολλὰ ἀγνοεῖν καὶ τερατολογεῖν, Ἡσίοδον μὲν
 Ἠμίκυνας λέγοντα καὶ Μεγαλοκεφάλους καὶ Πυγμαί-
 ους, Ἀλκμᾶνα δὲ Στεγανόποδας, Αἰσχύλον δὲ κυνο-
 5 κεφάλους καὶ στερνοφθάλμους καὶ μονομμάτους καὶ
 ἄλλα μυρία. ἀπὸ δὲ τούτων ἐπὶ τοὺς συγγραφεὰς βα-
 δίζει Ῥιπαῖα ὄρη λέγοντας καὶ τὸ Ὠγύιον ὄρος καὶ τὴν
 τῶν Γοργόνων καὶ Ἑσπερίδων κατοικίαν, καὶ τὴν παρὰ
 Θεοπόμπῃ Μεροπίδα γῆν, παρ' Ἑκαταίῳ δὲ Κιμμε-
 10 ρίδα πόλιν, παρ' Εὐνήμερῳ δὲ τὴν Παργαῖαν γῆν, παρ'
 Ἀριστοτέλει δὲ ποταμίους λίθους ἐξ ἄμμου... ἐκ δὲ τῶν
 ὄμβρων τήκεσθαι, ἐν δὲ τῇ Διβύῃ Διονύσου πόλιν εἶ-
 ναι, ταύτην δ' οὐκ ἐνδέχεσθαι δις τὸν αὐτὸν ἐξευρεῖν.
 ἐπιτιμᾷ δὲ καὶ τοῖς περὶ Σικελίαν τὴν πλάνην λέγουσι
 15 καθ' Ὅμηρον τὴν Ὀδυσσεῶς· εἰ γὰρ * αὖ χρῆναι τὴν
 μὲν πλάνην ἐκεῖ γεγονέναι φάσκειν, τὸν δὲ ποιητὴν
 ἐξωκεανικῆναι μυθολογίας χάριν. καὶ τοῖς μὲν ἄλλοις
 συγγνώμην εἶναι, Καλλιμάχῳ δὲ μὴ πάνυ μεταποιου-
 μένῳ γε γραμματικῆς, ὃς τὴν μὲν Γαῦδον Καλυψοῦς
 20 νῆσόν φησι, τὴν δὲ Κόρκυραν Σχερίαν. ἄλλους δ' αἰ-
 τιᾶται ψεύσασθαι περὶ Γερήνων καὶ τοῦ Ἀκακησίου
 καὶ Δήμου ἐν Ἰθάκῃ, Πελεθρονίου δ' ἐν Πηλίῳ, Γλαυ-
 κωπίου δ' ἐν Ἀθήναις. τούτοις δὲ μικρά τινα προσθεῖς
 τοιαῦτα παύεται, τὰ πλεῖστα μετενέγκας παρὰ τοῦ
 25 Ἑρατοσθένους, ὥς καὶ πρότερον ἐμνήσθημεν, οὐκ εὖ
 εἰρημένα. τὸ μὲν γὰρ τοὺς ὕστερον ἐμπειροτέρους γε-
 γονέναι τῶν πάλαι περὶ τὰ τοιαῦτα καὶ Ἑρατοσθέναι
 καὶ τούτῳ δοτέον· τὸ δ' οὕτω πέρα τοῦ μετρίου προά-
 γειν καὶ μάλιστα ἐφ' Ὀμήρου, δοκεῖ μοι καὶ ἐπιπλη-
 30 ξαί τις δικαίως καὶ τὸνναντίον εἰπεῖν, ὥς περὶ ὧν

5. post μονομμάτους: ἐν τῷ Προμηθεΐ φησι,

C.300 ἄγνοοῦσιν αὐτοί, περὶ τούτων τῷ ποιητῇ προφέρουσι.
τὰ μὲν οὖν ἄλλα ἐν τοῖς καθ' ἕκαστα οἰκείας μνήμης
τυγχάνει, τὰ δ' ἐν τοῖς καθόλου.

- 7 Νυνὶ δὲ περὶ Θρακῶν ἐλέγομεν „Μυσῶν τ' ἄρχε-
„μάχων καὶ ἀγανῶν ἱππημολγῶν, γλακτοφάγων ἀβί- 5
„ων τε, δικαιοτάτων ἀνθρώπων,“ βουλόμενοι συγκρί-
ναι τὰ τε ὑφ' ἡμῶν καὶ τὰ ὑπὸ Πρῶτου Περικλέους λεχθέντα
καὶ τὰ ὑπὸ τούτων· πρότερον δ' ὅτι τὴν ἐπιχείρησιν
ὑπεναντίαν τοῖς προτεθείσιν πεποιήνται. προὔθεντο
μὲν γὰρ διδάξαι διότι τῶν πόρρω τῆς Ἑλλάδος πλείων 10
ἦν ἄγνοια τοῖς πρεσβυτέροις ἢ τοῖς νεωτέροις, ἔδειξαν
δὲ τὰναντία, καὶ οὐ [κατὰ] τὰ πόρρω μόνον ἀλλὰ καὶ
τὰ ἐν αὐτῇ τῇ Ἑλλάδι. ἀλλ', ὥς ἔφην, τὰ ἄλλα μὲν
ὑπερκείμεθα, τὰ δὲ νῦν σκοποῦμεν. Σκυθῶν μὲν γὰρ
[μὴ] μεμνησθαι κατ' ἄγνοιάν φασι, μηδὲ τῆς περὶ τοὺς 15
ξένους ἀμότητος αὐτῶν, καταθύνοντων καὶ σαρκοφα-
γούντων καὶ τοῖς κρανίοις ἐκπώμασι χρωμένων, δι'
οὓς Ἀξενος ὠνομάζετο ὁ πόντος, πλάττειν δ' ἀγανούς
τινας ἱππημολγούς γλακτοφάγους ἀβίους τε, δι-
καιοτάτους ἀνθρώπους, τοὺς οὐδαμοῦ γῆς ὄντας. πῶς 20
οὖν Ἀξενον ὠνόμαζον, εἰ μὴ ἤδεισαν τὴν ἀγριότητα,
μηδ' αὐτοὺς τοὺς μάλιστα τοιούτους; οὗτοι δ' εἰσὶ δῆ-
που οἱ Σκύθαι. πρότερον δ' οὐδ' ἱππημολγοὶ ἦσαν οἱ
ἐπέκεινα τῶν Μυσῶν καὶ Θρακῶν καὶ Γετῶν, οὐδὲ
γλακτοφάγοι καὶ ἀβιοί; ἀλλὰ καὶ νῦν εἰσιν ἀμάξοι- 25
κοι καὶ νομάδες καλούμενοι, ζῶντες ἀπὸ θρεμμάτων
καὶ γάλακτος καὶ τυροῦ καὶ μάλιστα ἱππέιου, θησαν-
ρισμὸν δ' οὐκ εἰδότες οὐδὲ καπηλείαν πλὴν εἰ φόρ-
τον ἀντὶ φόρτου. πῶς οὖν ἡγνόει τοὺς Σκύθας ὁ ποι-
ητής, ἱππημολγούς καὶ γλακτοφάγους τινας προσ- 30
γορεύων; ὅτι γὰρ οἱ τότε τούτους ἱππημολγούς ἐκά-
λουν, καὶ Ἡσίοδος μάρτυς ἐν τοῖς ὑπ' Ἐρατοσθένους

παρατεθεῖσιν ἔπεσιν „Αἰθίοπας τε Αἴγυς τε ἰδὲ Σκύ-
 ,,θας ἱππημολγούς.“ τί δὲ θαυμαστόν, εἰ διὰ τὸ πλεο-
 νάζειν παρ' ἡμῖν τὴν περὶ τὰ συμβόλαια ἀδικίαν δι-
 καιοτάτους εἶπεν ἀνθρώπους τοὺς ἥκιστα ἐν τοῖς συμ-
 5 βολαίοις καὶ τῷ ἀργυρισμῷ ζῶντας, ἀλλὰ καὶ κοινὰ κε-
 κτημένους πάντα πλὴν ξίφους καὶ ποτηρίου, ἐν δὲ τοῖς
 πρῶτον τὰς γυναῖκας πλατωνικῶς ἔχοντας κοινὰς καὶ
 τέκνα; καὶ Αἰσχύλος δ' ἐμφαίνει συνηγορῶν τῷ ποι-
 ητῇ φήσας περὶ τῶν Σκυθῶν „ἀλλ' ἱππάκης βρωτῆρεςC.301
 10 „εὐνομοὶ Σκύθαι.“ αὕτη δ' ἡ ὑπόληψις καὶ νῦν ἐτι συμ-
 μένει παρὰ τοῖς Ἑλλήσιν· ἀπλουστάτους τε γὰρ αὐτοὺς
 νομίζομεν καὶ ἥκιστα κακεντρεχεῖς εὐτελεστεροὺς τε
 πολὺ ἡμῶν καὶ ἀνταρκεστεροὺς· καίτοι ὁ γε καθ' ἡμᾶς
 βίος εἰς πάντας σχεδόν τι διατέτακε τὴν πρὸς τὸ χεῖρον
 15 μεταβολήν, τρυφήν καὶ ἡδονὰς καὶ κακοτεχνίας καὶ
 πλεονεξίας μυρίας πρὸς ταῦτ' εἰσάγων. πολὺ οὖν τῆς
 τοιαύτης κακίας καὶ εἰς τοὺς βαρβάρους ἐμπέπτωκε τοὺς
 τε ἄλλους καὶ τοὺς νομάδας· καὶ γὰρ θαλάττης ἀψάμε-
 νοι χεῖρους γεγόνασι ληστεύοντες καὶ ξυνοκτονοῦντες,
 20 καὶ ἐπιπλεκόμενοι πολλοῖς μεταλαμβάνουσι τῆς ἐκεί-
 νων πολυτελείας καὶ καπηλείας· ἃ δοκεῖ μὲν εἰς ἡμε-
 ρότητα συντείνειν, διαφθείρει δὲ τὰ ἥθη καὶ ποικι-
 λίαν ἀντὶ τῆς ἀπλότητος τῆς ἄρτι λεχθείσης εἰσάγει.

Οἱ μέντοι πρὸ ἡμῶν καὶ μάλιστα οἱ ἐγγύς τοῖς 8
 25 Ὀμήρου χρόνοις τοιοῦτοί τινες ἦσαν καὶ ὑπελαμβά-
 νοντο παρὰ τοῖς Ἑλλήσιν ὁποίους Ὀμηρὸς φησιν. ὅρα
 δὲ ἃ λέγει Ἡρόδοτος περὶ τοῦ τῶν Σκυθῶν βασιλέως,
 ἔφ' ὃν ἐστράτευσε Δαρεῖος, καὶ τὰ ἐπεσταλμένα παρ'
 αὐτοῦ. ὅρα δὲ καὶ ἃ λέγει Χρύσιππος περὶ τῶν τοῦ Βο-
 30 σπόρου βασιλέων τῶν περὶ Λεύκωνα. πλήρεις δὲ καὶ
 αἱ Περσικαὶ ἐπιστολαὶ τῆς ἀπλότητος ἧς λέγω, καὶ τὰ
 ὑπὸ τῶν Αἰγυπτίων καὶ Βαβυλωνίων καὶ Ἰνδῶν ἀπο-

μνημονεύόμενα. διὰ τοῦτο δὲ καὶ ὁ Ἀνάχαρσις καὶ Ἀβαρις καὶ τινες ἄλλοι τοιοῦτοι παρὰ τοῖς Ἕλλησιν εὐδοκίμουν, ὅτι ἐθνικόν τινα χαρακτηῖρα ἐπέφαινον εὐκολίας καὶ λιτότητος καὶ δικαιοσύνης. καὶ τί δεῖ τοὺς πάλαι λέγειν; Ἀλέξανδρος γὰρ ὁ Φιλίππου κατὰ τὴν ἐπὶ Θρᾷκας τοὺς ὑπὲρ τοῦ Αἰμου στρατείαν ἐμβαλὼν εἰς Τριβαλλοὺς, ὁρῶν μέχρι τοῦ Ἰστρου καθήκοντας καὶ τῆς ἐν αὐτῷ νήσου Πεύκης, τὰ πέραν δὲ Γέτας ἔχοντας, ἀφίχθαι λέγεται μέχρι δεῦρο, καὶ εἰς μὲν τὴν νήσον ἀποβῆναι μὴ δύνασθαι σπᾶναι πλοίων (ἐκεῖσε γὰρ κα- 10 ταφυγόντα τὸν τῶν Τριβαλλῶν βασιλέα Σύρμον ἀντισχεῖν πρὸς τὴν ἐπιχειρήσιν), εἰς δὲ τοὺς Γέτας διαβάντα ἐλεῖν αὐτῶν πόλιν καὶ ἀναστρέφαι διὰ ταχέων εἰς τὴν οἰκειαν, λαβόντα δῶρα [παρὰ] τῶν ἐθνῶν καὶ παρὰ τοῦ Σύρμου. φησὶ δὲ Πτολεμαῖος ὁ Αἰγυνοῦ κατὰ 15 ταύτην τὴν στρατείαν συμμῖξαι τῷ Ἀλεξάνδρῳ Κελτοὺς τοὺς περὶ τὸν Ἀδρίαν φιλίας καὶ ξενίας χάριν, δεξάμε- 0.302 νον δὲ αὐτοὺς φιλοφρόνως τὸν βασιλέα ἐρέσθαι παρὰ πότον, τί μάλιστα εἴη ὃ φοβοῦντο, νομίζοντα αὐτὸν ἐρεῖν· αὐτοὺς δ' ἀποκρίναςθαι ὅτι οὐδὲν πλὴν εἰ ἄρα 20 μὴ ὁ οὐρανὸς αὐτοῖς ἐπιπέσοι, φιλίαν γε μὴν ἀνδρὸς τοιούτου περὶ παντὸς τίθεσθαι. ταῦτα δὲ ἀπλότητος τῆς τῶν βαρβάρων ἐστὶ σημεῖα, τοῦ τε μὴ συγχωρήσαντος μὲν τὴν ἀπόβασιν τὴν εἰς τὴν νήσον, δῶρα δὲ πέμπσαντος καὶ συνθεμένου φιλίαν, καὶ τῶν φοβεῖσθαι 25 μὲν οὐδένα φαιμένων, φιλίαν δὲ περὶ παντὸς τίθεσθαι μεγάλων ἀνδρῶν. ὃ τε Ἀρομικαίτης κατὰ τοὺς διαδόχους ἦν Γεταῶν βασιλεὺς· ἐκεῖνος τοίνυν λαβὼν Ἰω- γρία Ἀνσίμαχον ἐπιστρατεύσαντα αὐτῷ, δειξας τὴν πενίαν τὴν τε ἑαυτοῦ καὶ τοῦ ἐθνους, ὁμοίως δὲ καὶ 30

την αὐτάρκειαν, ἐκέλευσε τοῖς τοιούτοις μὴ πολεμεῖν, ἀλλὰ φίλοις χρῆσθαι· ταῦτα δ' εἰπὼν, ξενίσας καὶ συνθέμενος φιλίαν ἀπέλυσεν αὐτόν.

- Ἐφορος δ' ἐν τῇ τετάρτῃ μὲν τῆς ἱστορίας Εὐ- 9
 5 ρώπῃ δ' ἐπιγραφομένη βίβλῳ, περιοδεύσας τὴν Εὐ-
 ρώπην μέχρι Σκυθῶν ἐπὶ τέλει φησὶν εἶναι τῶν τε ἄλ-
 λων Σκυθῶν καὶ τῶν Σαυροματῶν τοὺς βίους ἀνομοί-
 ους· τοὺς μὲν γὰρ εἶναι χαλεποὺς ὥστε καὶ ἀνθρώπο-
 φραγεῖν, τοὺς δὲ καὶ τῶν ἄλλων ζώων ἀπέχεσθαι. οἱ μὲν
 10 οὖν ἄλλοι, φησί, τὰ περὶ τῆς ὁμότητος αὐτῶν λέγουσιν,
 εἰδότες τὸ δεινόν τε καὶ τὸ θαυμαστὸν ἐκπληκτικὸν ὄν·
 δεῖν δὲ τάναντία καὶ λέγειν καὶ παραδείγματα ποιῶ-
 σθαι· καὶ αὐτὸς οὖν περὶ τῶν δικαιοτάτοις ἡθεσι χρω-
 μένων ποιήσεσθαι τοὺς λόγους· εἶναι γὰρ τινες τῶν
 15 νομάδων Σκυθῶν γάλακτι τρεφομένους ἵππων τῇ τε
 δικαιοσύνῃ πάντων διαφέρειν· μεμνησθαι δ' αὐτῶν
 τοὺς ποιητάς, Ὅμηρον μὲν „γλακτοφάγων ἄβιον τε,
 „δικαιοτάτων ἀνθρώπων“ φήσαντα τὴν γῆν καθορᾶν
 τὸν Δία, Ἡσίοδον δ' ἐν τῇ καλουμένῃ γῆς περιόδῳ
 20 τὸν Φινέα ὑπὸ τῶν Ἀρπυιῶν ἄγεσθαι „γλακτοφάγων
 „εἰς γαῖαν ἀπήναις οἰκί' ἐχόντων.“ εἴτ' αἰτιολογεῖ
 διότι ταῖς διαίταις εὐτελεῖς ὄντες καὶ οὐ χρηματισταὶ
 πρὸς τε ἀλλήλους εὐνομοῦνται, κοινὰ πάντα ἔχοντες
 τὰ τε ἄλλα καὶ τὰς γυναῖκας καὶ τέκνα καὶ τὴν ὅλην
 25 συγγένειαν, πρὸς τε τοὺς ἐκτὸς ἄμαχοί εἰσι καὶ ἀνίκη- C.303
 τοι, οὐδὲν ἔχοντες ὑπὲρ οὗ δουλεύσουσι. καλεῖ δὲ καὶ
 Χοιρίλου εἰπόντα ἐν τῇ διαβάσει τῆς σχεδίας ἣν ἔξευξε
 Δαρεῖος „μηλονόμοι τε Σάκαι, γενεῇ Σκύθαι· αὐτὰρ
 „ἐναιον Ἀσίδα πυροφόρον· νομάδων γε μὲν ἦσαν ἅποι-

3. post αὐτόν: καὶ Πλάτων δὲ ἐν τῇ πολιτείᾳ τὴν θάλατταν ὥς πονηροδιδάσκαλον φεύγειν οἶεται δεῖν ὅτι πορρωτάτω τοὺς εὐ πολιτευσομένους καὶ μὴ οἰκεῖν ἐπ' αὐτῇ.

„κοι, ἀνθρώπων νομίμων.“ καὶ τὸν Ἀνάχαρσιν δὲ σοφὸν καλῶν ὁ Ἐφορος τούτου τοῦ γένους φησὶν εἶναι νομισθῆναι δὲ καὶ τῶν ἑπτὰ σοφῶν ἐπ' εὐτελείᾳ σωφροσύνη καὶ συνέσει· εὐρήματά τε αὐτοῦ λέγει τὰ τε ξώ-
 πυρα καὶ τὴν ἀμφίβολον ἄγκυραν καὶ τὸν κεραμικὸν δ
 τροχόν. ταῦτα δὲ λέγω σαφῶς μὲν εἰδῶς ὅτι καὶ οὗτος
 αὐτὸς οὐ τἀληθέστατα λέγει περὶ πάντων, καὶ δὴ καὶ
 τὸ τοῦ Ἀναχάρσιδος· πῶς γὰρ ὁ τροχὸς εὐρημα αὐ-
 τοῦ, ὃν οἶδεν Ὀμηρος πρεσβύτερος ᾧ; ἀλλ' ἐκεῖνα δια-
 σημῆναι βουλόμενος ὅτι κοινῇ τι νι φήμη καὶ ὑπὸ τῶν 10
 παλαιῶν καὶ ὑπὸ τῶν ὑστέρων πεπιστευθῆναι συνέβαι-
 νε τὸ τῶν νομάδων, τοὺς μάλιστα ἀπωκισμένους ἀπὸ
 τῶν ἄλλων ἀνθρώπων γαλακτοφάγους τε εἶναι καὶ ἀβί-
 οὺς καὶ δικαιοτάτους, ἀλλ' οὐχ ὑπὸ Ὀμήρου πεπλάσθαι.

- 10 Περὶ τε τῶν Μυσῶν δίκαιός ἐστιν ὑποσχεῖν λόγον 15
 τῶν ἐν τοῖς ἔπεσι λεγομένων Ἀπολλόδωρος, πότερ' ἡγεῖται καὶ τούτους εἶναι πλάσμα, ὅταν φῇ ὁ ποιη-
 τῆς „Μυσῶν τ' ἀγχεμάχων καὶ ἀγαυῶν ἱππημολγῶν,“
 ἢ τοὺς ἐν τῇ Ἀσίᾳ δέχεται. τοὺς μὲν οὖν ἐν τῇ Ἀσίᾳ
 δεχόμενος παρερμηνεύσει τὸν ποιητὴν, ὡς προείρηται, 20
 πλάσμα [δὲ] λέγων, ὡς μὴ ὄντων ἐν τῇ Θράκῃ Μυσῶν,
 παρὰ τὰ ὄντα [ἔρει]. ἔτι γὰρ ἐφ' ἡμῶν Αἴλιος Κάτος με-
 τῴκισεν ἐκ τῆς περαίας τοῦ Ἰστροῦ πέντε μυριάδας
 σωματίων παρὰ τῶν Γετῶν, ὁμογλώττου τοῖς Θραξίν
 ἔθνοισι, εἰς τὴν Θράκην· καὶ νῦν οἰκοῦσιν αὐτόθι 25
 Μοισοὶ καλούμενοι, ἦτοι καὶ τῶν πρότερον οὕτω κα-
 λουμένων, ἐν δὲ τῇ Ἀσίᾳ Μυσῶν μετονομασθέντων,
 ἢ ὅπερ οἰκειότερόν ἐστι τῇ ἱστορίᾳ καὶ τῇ ἀποφάσει
 τοῦ ποιητοῦ, τῶν ἐν τῇ Θράκῃ Μυσῶν καλουμένων

9. post ᾧ: „ὡς δ' ὅτε τις κεραμεὺς τροχὸν ἄρμενον ἐν πα-
 λάμῃσι“ καὶ τὰ ἐξῆς.

πρότερον. περὶ μὲν δὴ τούτων ἄλλης· ἐπάνειμι δὲ ἐπὶ τὴν ἐξῆς περιήγησιν.

Τῶν δὴ Γετῶν τὰ μὲν παλαιὰ ἀφείσθω, τὰ δ' εἰς 11
 ἡμᾶς ἤδη τοιαῦτα ὑπῆρξε. Βοιρεβίστας ἀνὴρ Γ'έτης, ἐπι-
 5 στάς ἐπὶ τὴν τοῦ ἔθνους ἐπιστασίαν, ἀνέλαβε κεκακω-
 μένους τοὺς ἀνθρώπους ὑπὸ συχνῶν πολέμων καὶ το-
 σοῦτον ἐπῆρεν ἀσκήσει καὶ νήψει καὶ τῷ προσέχειν τοῖς
 προστάγμασιν, ὥστ' ὀλίγων ἐτῶν μεγάλην ἀρχὴν κα-0.304
 τεστήσατο καὶ τῶν ὁμόρων τοὺς πλείστους ὑπέταξε τοῖς
 10 Γέταις· ἤδη δὲ καὶ Ῥωμαίοις φοβερὸς ἦν, διαβαίνων
 ἀδεῶς τὸν Ἰστρον καὶ τὴν Θράκην λεηλατῶν μέχρι Μα-
 κεδονίας καὶ τῆς Ἰλλυρίδος, τοὺς τε Κελτοὺς τοὺς ἀνα-
 μεμιγμένους τοῖς τε Θραξὶ καὶ τοῖς Ἰλλυριοῖς ἐξεπόρθη-
 σε, Βόλους δὲ καὶ ἄρδην ἠφάνισε τοὺς ὑπὸ Κριτασίρρω
 15 καὶ Ταυρίσκους. πρὸς δὲ τὴν εὐπειθείαν τοῦ ἔθνους
 συναγωνιστὴν ἔσχε Δεκαίνεον ἄνδρα γόητα, πεπλανη-
 μένον κατὰ τὴν Αἴγυπτον καὶ προσημασίας ἐκμεμα-
 θηκότα τινάς, δι' ὧν ὑπεκρίνετο τὰ θεῖα· καὶ δι' ὀλί-
 γου καθίστατο θεός, καθάπερ ἔφαμεν περὶ τοῦ Ζα-
 20 μόλξεως διηγούμενοι. τῆς δ' εὐπειθείας σημεῖον· ἐπεί-
 σθησαν γὰρ ἐκκόψαι τὴν ἄμπελον καὶ ζῆν οἴνου χωρὶς.
 ὁ μὲν οὖν Βοιρεβίστας ἔφθη καταλυθεὶς ἐπαναστάν-
 των αὐτῷ τινων πρὶν ἢ Ῥωμαίους σταῖλαι στρατεῖαν
 ἐπ' αὐτόν· οἱ δὲ διαδεδάμενοι τὴν ἀρχὴν εἰς πλείω μέρη
 25 διέστησαν. καὶ δὴ καὶ νῦν, ἥνίκα ἐπεμψεν ἐπ' αὐτοὺς
 στρατεῖαν ὁ Σεβαστὸς Καῖσαρ, εἰς πέντε μερίδας, τότε
 δὲ εἰς τέτταρας διεστῶτες ἐτύγχανον· οἱ μὲν οὖν τοι-
 οῦτοι μερισμοὶ πρόσκαιροι καὶ ἄλλοι' ἄλλοι.

Γέγονε δὲ καὶ ἄλλος τῆς χώρας μερισμὸς συμμέ- 12
 30 νων ἐκ παλαιοῦ· τοὺς μὲν γὰρ Δακοὺς προσαγορεύ-
 οῦσι τοὺς δὲ Γέτας, Γέτας μὲν τοὺς πρὸς τὸν Πόντον
 κεκλιμένους καὶ πρὸς τὴν ἕω, Δακοὺς δὲ τοὺς εἰς τὰ-

ναντία πρὸς τὴν Γερμανίαν καὶ τὰς τοῦ Ἰστρου πηγάς, οὓς οἶμαι Δάους καλεῖσθαι τὸ παλαιόν· ἄφ' οὗ καὶ παρὰ τοῖς Ἀττικοῖς ἐπεπόλασε τὰ τῶν οἰκετῶν ὀνόματα Γέται καὶ Δᾶοι. τοῦτο γὰρ πιθανώτερον ἢ ἀπὸ τῶν Σκυθῶν οὓς καλοῦσι Δάας· πόρρω γὰρ ἐκεῖνοι 5 περὶ τὴν Τρκανίαν, καὶ οὐκ εἰκὸς ἐκεῖθεν κομίζεσθαι ἀνδράποδα εἰς τὴν Ἀττικὴν. ἐξ ὧν γὰρ ἐκομίζετο, ἢ τοῖς ἔθνεσιν ἐκείνοις ὁμωνύμους ἐκάλουν τοὺς οἰκέτας, ὥς Ἀνδὸν καὶ Σύρον, ἢ τοῖς ἐπιπολάξουσιν ἐκεῖ ὀνόμασι προσηγόρευον, ὥς Μάνην ἢ Μίδαν τὸν Φρύ- 10 γα, Τίβιον δὲ τὸν Παφλαγόνα. ἐπὶ τοσοῦτον δ' ὑπὸ τοῦ Βοιρεβίστα τὸ ἔθνος ἐξαρθρὲν ἐταπεινώθη τελέως ὑπὸ τε τῶν στάσεων καὶ τῶν Ῥωμαίων· ἱκανοὶ δ' ὅμως εἶσιν ἔτι καὶ νῦν στέλλειν τέτταρας μυριάδας.

- 13 Ῥεῖ δὲ δι' αὐτῶν Μάρισος ποταμὸς εἰς τὸν Δα- 15 νούιον, ᾧ τὰς παρασκευὰς ἀνεκόμενον οἱ Ῥωμαῖοι τὰς πρὸς τὸν πόλεμον· καὶ γὰρ τοῦ ποταμοῦ τὰ μὲν ἄνω καὶ πρὸς ταῖς πηγαῖς μέρη μέχρι τῶν καταρακτῶν Δανούιον προσηγόρευον, ἃ μάλιστα διὰ τῶν Δακῶν φέ- 20 ρεται, τὰ δὲ κάτω μέχρι τοῦ Πόντου τὰ παρὰ τοὺς Γέ- 25 τας καλοῦσιν Ἰστρον· ὁμόγλωττοι δ' εἰσὶν οἱ Δακοὶ τοῖς Γέταις. παρὰ μὲν οὖν τοῖς Ἑλλήσιν οἱ Γέται γνωρίζονται μᾶλλον διὰ τὸ συνεχεῖς τὰς μεταναστάσεις ἔφ' ἑκάτερα τοῦ Ἰστρου ποιεῖσθαι καὶ τοῖς Μοισοῖς ἀναμεμῖχθαι· καὶ τὸ τῶν Τριβαλλῶν δ' ἔθνος, Θρακι- 30 κὸν ὄν, τὸ αὐτὸ πέπονθε τοῦτο. μεταναστάσεις γὰρ δέδεκται, τῶν πλησιοχώρων εἰς τοὺς ἀσθενεστέρους ἐξαναστάντων, τῶν μὲν ἐκ τῆς περαιᾶς Σκυθῶν καὶ Βασταρνῶν καὶ Σαυροματῶν ἐπικρατούντων πολλὰ- 35 κισ, ὥστε καὶ ἐπιδιαβαίνειν τοῖς ἐξελαθεῖσι καὶ κατα- 30 μένειν τινὰς αὐτῶν ἢ ἐν ταῖς νήσοις ἢ ἐν τῇ Θράκῃ· τῶν δ' ἐκ θατέρου μέρους ὑπ' Ἰλλυριῶν μάλιστα κα-

τισχυομένων. αὐξηθέντες δ' οὖν ἐπὶ πλεῖστον οἳ τε
Γέται οἳ τε Λακοί, ὥστε καὶ εἰκοσιμυριάδας ἐκπέμπειν
στρατείας, νῦν ὅσον εἰς τέτταρας μυριάδας συνεσταλ-
μένοι τυγγάνουσι, καὶ ἐγγὺς μὲν ἤκουσι τοῦ ὑπακού-
5 ειν Ῥωμαίων, οὐπω δ' εἰσὶν ὑποχείριοι τελέως διὰ τὰς
ἐκ τῶν Γερμανῶν ἐλπίδας πολεμίων ὄντων τοῖς Ῥω-
μαίοις.

Μεταξὺ δὲ τῆς Ποντικῆς θαλάττης τῆς ἀπὸ Ἰστρου 14
ἐπὶ Τύραν καὶ ἡ τῶν Γετῶν ἐρημία πρόκειται πεδίας
10 πᾶσα καὶ ἄνυδρος, ἐν ᾗ Λαρεῖος ἀποληφθεὶς ὁ Ὑστά-
σπεω, καθ' ὃν καιρὸν διέβη τὸν Ἰστρον ἐπὶ τοὺς Σκύ-
θας, ἐκινδύνευσε πανστρατιᾷ δίψῃ διαλυθῆναι· συν-
ῆκε δ' ὁψὲ καὶ ἀνέστρεψε. Λυσίμαχος δ' ὕστερον
στρατεύσας ἐπὶ Γέτας καὶ τὸν βασιλέα Δρομιχαίτην
15 οὐκ ἐκινδύνευσε μόνον, ἀλλὰ καὶ ἐάλω ζωογρίᾳ· πάλιν
δ' ἐσώθη τυχὼν εὐγνώμονος τοῦ βαρβάρου, καθάπερ
εἶπον πρότερον.

Πρὸς δὲ ταῖς ἐκβολαῖς μεγάλη νῆσός ἐστιν ἡ Πεν- 15
κη· κατασχόντες δ' αὐτὴν Βαστάρναι Πευκῖνοι προση-
20 γορεύθησαν· εἰσὶ δὲ καὶ ἄλλαι νῆσοι πολὺ ἐλάττους,
αἱ μὲν ἀνωτέρω ταύτης αἱ δὲ πρὸς τῇ θαλάττῃ. ἐπτά-
στομος γάρ ἐστι· μέγιστον δὲ τὸ ἱερὸν στόμα καλού-
μενον, δι' οὗ σταδίων ἀνάπλους ἐπὶ τὴν Πεύκην ἐκα-
τὸν εἴκοσιν, ἧς κατὰ τὸ κάτω μέρος ἐποίησε τὸ ζεύγμα
25 Λαρεῖος· δύναιτο δ' ἂν ξευχθῆναι καὶ κατὰ τὸ ἄνω.
τοῦτο δὲ καὶ πρῶτόν ἐστι στόμα ἐν ἀριστερᾷ εἰσπλέ-
οντι εἰς τὸν Πόντον· τὰ δ' ἐξῆς ἐν παράπλῳ τῷ ἐπὶ τὸν
Τύραν· διέχει δ' ἀπ' αὐτοῦ τὸ ἑβδομον στόμα περὶ
τριακοσίους σταδίους. γίνονται οὖν μεταξὺ τῶν στο-
30 μάτων νησίδες. τὰ μὲν δὴ τρία στόματα τὰ ἐφεξῆς τῷ
ἱερῷ στόματι ἐστὶ μικρά, τὰ δὲ λοιπὰ τοῦ μὲν πολὺ
ἐλάττονα τῶν δὲ μελῶνα· Ἐφορος δὲ πεντάστομον

εἰρηκε τὸν Ἰστρον. ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ Τύραν ποταμὸν
C.306 πλωτὸν ἐνακόσιοι στάδιοι· ἐν δὲ τῷ μεταξὺ δύο λίμναι
μεγάλαι, ἥ μὲν ἀνεφυγμένη πρὸς τὴν θάλατταν ὥστε
καὶ λιμένι χρῆσθαι, ἥ δ' ἄστομος.

16 Ἐπὶ δὲ τῷ στόματι τοῦ Τύρα πύργος ἐστὶ Νεοπτο- 5
λέμου καλούμενος καὶ κώμη Ἑρμώνακτος λεγομένη.
ἀναπλεύσαντι δὲ ἑκατὸν τετταράκοντα σταδίους ἐφ'
ἐκάτερα πόλεις, ἥ μὲν Νικωνία ἥ δ' ἐν ἀριστερᾷ Ὀφι-
οῦσσα· οἱ δὲ προσοικοῦντες τῷ ποταμῷ * πόλιν φασὶν
ἀνιόντι ἑκατὸν καὶ εἴκοσι σταδίους. διέχει δὲ τοῦ στό- 10
ματος ἡ νῆσος ἡ Λευκὴ διάγραμμα πεντακοσίων σταδίων,
ἱερὰ τοῦ Ἀχιλλέως, πελαγία.

17 Εἴτα Βορυσθένης ποταμὸς πλωτὸς ἐφ' ἑξακοσίους
σταδίους καὶ πλησίον ἄλλος ποταμὸς Ἵπανις καὶ νῆ- 15
σος πρὸ τοῦ στόματος τοῦ Βορυσθένου ἔχουσα λι-
μένα. πλεύσαντι δὲ τὸν Βορυσθένη σταδίους διακο-
σίους ὁμώνυμος τῷ ποταμῷ πόλις· ἥ δ' αὐτὴ καὶ Ὀλ-
βία καλεῖται, μέγα ἐμπόριον, κτίσμα Μιλησίων. ἥ δὲ
ὑπερκειμένη πᾶσα χώρα τοῦ λεχθέντος μεταξὺ Βορυ-
σθένου καὶ Ἰστρον πρώτη μὲν ἐστὶν ἡ τῶν Γετῶν ἔρη- 20
μία, ἔπειτα οἱ Τυρεγῆται, μεθ' οὓς οἱ Ἰάξυγες Σαρμάται
καὶ οἱ Βασίλειοι λεγόμενοι καὶ * Οὕργοι, τὸ μὲν πλεόν
νομάδες, ὀλίγοι δὲ καὶ γεωργίας ἐπιμελούμενοι· τού-
τους φασὶ καὶ παρὰ τὸν Ἰστρον οἰκεῖν, ἐφ' ἐκάτερα
πολλάκις. ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ Βαστάρναι μὲν τοῖς Τυ- 25
ρεγῆταις ὄμοροι καὶ Γερμανοῖς, σχεδὸν τι καὶ αὐτοὶ
τοῦ Γερμανικοῦ γένους ὄντες, εἰς πλείω φύλα διηρη-
μένοι. καὶ γὰρ Ἀτμονοὶ λέγονται τινες καὶ Σιδόνες, οἱ
δὲ τὴν Πεύκην κατασχόντες τὴν ἐν τῷ Ἰστροῦ νῆσον
Πευκῖνοι, Ῥᾶξολανοὶ δ' ἀρκτικώτατοι τὰ μεταξὺ τοῦ 30
Ταναΐδος καὶ Βορυσθένου νεμόμενοι πεδία. ἡ γὰρ
προσάρκτιος πᾶσα ἀπὸ Γερμανίας μέχρι τῆς Κασπίας

παιδιάς ἐστίν, ἣν ἴσμεν· ὑπὲρ δὲ τῶν Ῥωξολανῶν εἵ-
 τινες οἰκοῦσιν οὐκ ἴσμεν. οἱ δὲ Ῥωξολανοὶ καὶ πρὸς
 τοὺς Μιθριδάτου τοῦ Εὐπάτορος στρατηγοὺς ἐπολέ-
 μουν ἔχοντες ἡγεμόνα Τάσιον· ἦκον δὲ Παλάκῳ συμ-
 5 μαχήσοντες τῷ Σκιλούρου, καὶ ἐδόκουν μὲν εἶναι μά-
 χιμοι, πρὸς μέντοι συντεταγμένην φάλαγγα καὶ ὠπλι-
 σμένην καλῶς τὸ βάρβαρον φῦλον ἀσθενὲς πᾶν ἐστὶ
 καὶ τὸ γυμνητικόν. ἐκεῖνοι γοῦν περὶ πέντε μυριάδας
 πρὸς ἑξακισχιλίους τοὺς Διοφάντῳ, τῷ τοῦ Μιθριδά-
 10 του στρατηγῷ, συμπαραταξαμένους οὐκ ἀντέσχον,
 ἀλλ' οἱ πλεῖστοι διεφθάρησαν. χρῶνται δὲ ὠμοβοῖνοις
 κράνεσι καὶ θώραξι, γερροφόροι, ἀμυντήρια δ' ἔχοντες
 καὶ λόγχας καὶ τόξον καὶ ξίφος· τοιοῦτοι δὲ καὶ τῶν
 ἄλλων οἱ πλείους. τῶν δὲ νομάδων αἱ σκηναὶ πιλωταὶ 0.30*
 15 πεπήγασιν ἐπὶ ταῖς ἀμάξαις, ἐν αἷς διαιτῶνται· περὶ δὲ
 τὰς σκηναὺς τὰ βοσκήματα, ἀφ' ὧν τρέφονται καὶ γά-
 λακτι καὶ τυρῷ καὶ κρέασιν· ἀκολουθοῦσι δὲ ταῖς νο-
 μαῖς μεταλαμβάνοντες τόπους ἀεὶ τοὺς ἔχοντας πόαν,
 χειμῶνος μὲν ἐν τοῖς ἔλεσι τοῖς περὶ τὴν Μαιώτιν, θιέ-
 20 ρους δὲ καὶ ἐν τοῖς πεδίοις.

Ἄπασα δ' ἡ χώρα δυσχερέμερός ἐστι μέχρι τῶν ἐπὶ 18
 θαλάττῃ τόπων τῶν μεταξὺ Βορυσθένους καὶ τοῦ στό-
 ματος τῆς Μαιώτιδος· αὐτῶν δὲ τῶν ἐπὶ θαλάττῃ τὰ
 ἀρκτικώτατα τὸ τε στόμα τῆς Μαιώτιδος καὶ ἐτι μᾶλ-
 25 λον τὸ τοῦ Βορυσθένους [καὶ] ὁ μυχὸς τοῦ Ταμυράκου
 κόλπου, [τοῦ] καὶ Καρκινίτου, καθ' ὃν ὁ ἰσθμὸς τῆς
 μεγάλης χειρρονήσου. δηλοῖ δὲ τὰ ψύχη, καίπερ ἐν πε-
 δίοις οἰκούντων· ὄνους τε γὰρ οὐ τρέφουσι (δύσριγον
 γὰρ τὸ ξῶν), οἳ τε βόες οἱ μὲν ἄκερῳ γεννῶνται, τῶν
 30 δ' ἀπορρινῶσι τὰ κέρατα (καὶ γὰρ τοῦτο δύσριγον τὸ
 μέρος), οἳ τε ἵπποι μικροί, τὰ δὲ πρόβατα μεγάλα· ῥήτ-
 τονται δὲ χαλκαὶ ὕδρῳι, τὰ δ' ἐνόντα συμπήττεται.

τῶν δὲ πάγων ἡ σφοδρότης μάλιστα ἐκ τῶν συμβαινόντων περὶ τὸ στόμα τῆς Μαιώτιδος δηλὸς ἐστίν. ἀμαξεύεται γὰρ ὁ διάπλους ὁ εἰς Φαναγόρειαν ἐκ τοῦ Παντικαπαίου, ὥστε καὶ πλοῦν εἶναι καὶ ὁδόν· Νεοπτόλεμον δὲ φασὶ τὸν τοῦ Μιθριδάτου στρατηγὸν ἐν 5 τῷ αὐτῷ πόρῳ θέρους μὲν ναυμαχίᾳ περιγενέσθαι τῶν βαρβάρων, χειμῶνος δ' ἱππομαχίᾳ. ὀρυκτοὶ τὲ εἰσιν ἰχθυῖες οἱ ἀποληφθέντες ἐν τῷ κρυστάλλῳ τῇ προσαγορευομένῃ γαργάμῃ, καὶ μάλιστα οἱ ἀντακαῖοι, δελφῖσι πάρισοι τὸ μέγεθος. φασὶ δὲ καὶ τὴν ἄμπελον 10 ἐν τῷ Βοσπόρῳ κατορύττεσθαι χειμῶνος, ἐπαμώντων πολὺ τῆς γῆς. λέγεται δὲ καὶ τὰ καύματα σφοδρὰ γίνεσθαι, τάχα μὲν τῶν σωματῶν ἀηθιζομένων, τάχα δὲ τῶν πεδίων ἀννηνεμούντων τότε, ἣ καὶ τοῦ πάχους τοῦ ἄερος ἐκθερμαινομένου πλέον, καθάπερ ἐν τοῖς νέφε- 15 σιν οἱ παρηλίοι ποιοῦσιν. Ἀτέας δὲ δοκεῖ τῶν πλειέστων ἄρξαι τῶν ταύτῃ βαρβάρων ὁ πρὸς Φίλιππον πολεμήσας τὸν Ἀμύντου.

- 19 Μετὰ δὲ τὴν πρὸ τοῦ Βορυσθένους νῆσον ἐξῆς πρὸς ἀνίσχοντα ἥλιον ὁ πλοῦς ἐπὶ ἄκραν τὴν τοῦ Ἀχιλ- 20 λείου δρόμου, ψιλὸν μὲν χωρίον καλούμενον δ' ἄλσος, ἱερὸν Ἀχιλλέως· εἶθ' ὁ Ἀχιλλεῖος δρόμος, ἀλιτενῆς χειρόνησος· ἔστι γὰρ ταινία τις ὅσον χιλίων σταδίων μῆκος ἐπὶ τὴν ἑω, πλάτος δὲ τὸ μέγιστον δυεῖν σταδίων, ἐλάχιστον τεττάρων πλέθρων, διέχουσα τῆς 25 ἐκατέρωθεν τοῦ αὐχένος ἡπείρου σταδίους ἐξήκοντα, C.308 ἀμμάδης, ὕδωρ ἔχουσα ὀρυκτόν· κατὰ μέσσην δ' ὁ τοῦ ἰσθμοῦ αὐχὴν ὅσον τετταράκοντα σταδίων· τελευτᾷ δὲ πρὸς ἄκραν ἣν Ταμυράκην καλοῦσιν, ἔχουσαν ὕφορμον βλέποντα πρὸς τὴν ἡπειρον· μεθ' ἣν ὁ Καρ- 30 κινίτης κόλπος εὐμεγέθης, ἀνέχων πρὸς τὰς ἄρκτους ὅσον ἐπὶ σταδίους χιλίους, οἱ δὲ καὶ τριπλασίους φασὶ

μέχρι τοῦ μυχοῦ καλοῦνται δὲ Τάφριοι. τὸν δὲ κόλπον καὶ Ταμυράκην καλοῦσιν ὁμωνύμως τῇ ἄκρᾳ.

Ἐνταῦθα δ' ἐστὶν ὁ ἰσθμὸς ὁ διείργων τὴν σα- 4
πρὰν λεγομένην λίμνην ἀπὸ τῆς θαλάττης σταδίων
5 [ὧν] τετταράκοντα καὶ ποιῶν τὴν Ταυρικὴν καὶ Σκυ-
θικὴν λεγομένην χειρρόνησον· οἱ δὲ τριακοσίων ἐξή-
κοντα τὸ πλάτος τοῦ ἰσθμοῦ φασιν. ἡ δὲ σαπρὰ λίμνη
σταδίων μὲν καὶ τετρακισχιλίων λέγεται, μέρος δ' ἐστὶ
τῆς Μαιώτιδος τὸ πρὸς δύσιν· συνεστόμωται γὰρ αὐτῇ
10 στόματι μεγάλῳ. ἐλώδης δ' ἐστὶ σφόδρα καὶ ῥαπτοῖς
πλοίοις μόγῃς πλόιμος· οἱ γὰρ ἄνεμοι τὰ τενάγῃ ῥα-
δίως ἀνακαλύπτουσιν, εἴτα πάλιν πληροῦσιν, ὥστε τὰ
ἔλη τοῖς μεῖζοσι σκάφεσιν οὐ περάσιμά ἐστιν. ἔχει δ' ὁ
κόλπος νησίδια τρία καὶ προσβραχῇ τινα καὶ χοιρα-
15 δώδῃ ὀλίγα κατὰ τὸν παράπλουν.

Ἐκπλέοντι δ' ἐν ἀριστερᾷ πολίχνη καὶ * ἄλλος λι- 2
μὴν Χερρονησιτῶν. ἔκκειται γὰρ ἐπὶ τὴν μεσημβρίαν
ἄκρα μεγάλη κατὰ τὸν παράπλουν ἐφεξῆς, μέρος οὐσα
τῆς ὅλης χειρρόνησου, ἐφ' ἣ ἵδρυται πόλις Ἡρακλεω-
20 τῶν ἄποικος τῶν ἐν τῷ Πόντῳ, αὐτὸ τοῦτο καλουμένη
Χερρόνησος, διέχουσα τοῦ Τύρα παράπλουν σταδίων
τετρακισχιλίων τετρακοσίων· ἐν ἣ τὸ τῆς Παρθένου
ἱερὸν, δαίμονός τινος, ἧς ἐπώνυμος καὶ ἡ ἄκρα ἡ πρὸ
τῆς πόλεως ἐστὶν ἐν σταδίοις ἑκατόν, καλουμένη Παρ-
25 θένιον, ἔχον νεᾶν τῆς δαίμονος καὶ ξόανον. μετὰ δὲ
τῆς πόλεως καὶ τῆς ἄκρας λιμένες τρεῖς· εἰδ' ἡ παλαιὰ
Χερρόνησος κατεσκευασμένη καὶ μετ' αὐτὴν λιμὴν στε-
νόστομος, καθ' ὃν μάλιστα οἱ Ταῦροι, Σκυθικὸν ἔθνος,
τὰ ληστήρια συνίσταντο τοῖς καταφεύγουσιν ἐπ' αὐτὸν
30 ἐπιχειροῦντες· καλεῖται δὲ συμβόλων λιμὴν. οὗτος δὲ
ποιεῖ πρὸς ἄλλον λιμένα Κτενοῦντα καλούμενον τετ-
ταράκοντα σταδίων ἰσθμόν· οὗτος δ' ἐστὶν ὁ ἰσθμὸς ὁ

κλείων τὴν μικρὰν χειρόνησον, ἣν ἔφραμεν τῆς μεγάλης χειρόνησου μέρος, ἔχουσαν ἐν αὐτῇ τὴν ὁμωνύμως λεγομένην πόλιν Χερρόνησον.

- 3 Αὕτη δ' ἦν πρότερον αὐτόνομος, πορθομένη δὲ ὑπὸ τῶν βαρβάρων ἠναγκάσθη προστάτην ἐλέσθαι 5
C.309 Μιθριδάτην τὸν Εὐπάτορα, στρατηγιῶντα ἐπὶ τοὺς ὑπὲρ τοῦ Ἰσθμοῦ μέχρι Βορυσθένους βαρβάρους· ταῦτα δ' ἦν ἐπὶ Ῥωμαίους παρασκευή. ἐκεῖνος μὲν οὖν κατὰ ταύτας τὰς ἐλπίδας ἄσμενος πέμψας εἰς τὴν Χερρόνησον στρατιὰν ἅμα πρὸς τε τοὺς Σκύθας ἐπολέμει Σκί- 10
λουρόν τε καὶ τοὺς Σκιλούρου παῖδας τοὺς περὶ Πάλακον, οὓς Ποσειδώνιος μὲν πεντήκοντά φησιν Ἀπολλωνίδης δὲ ὀγδοήκοντα· ἅμα δὲ τούτους τε ἐχειρώσατο βία καὶ Βοσπόρου κατέστη κύριος παρ' ἐκόντος λαβὼν Παιρισάδου τοῦ κατέχοντος. ἐξ ἐκείνου δὴ τοῦ χρόνου 15
τοῖς τοῦ Βοσπόρου δυνάσταις ἡ τῶν Χερρονησιτῶν πόλις ὑπήκοος μέχρι νῦν ἐστι. τὸ δ' ἴσον ὁ Κτενοῦς διέχει τῆς τε τῶν Χερρονησιτῶν πόλεως καὶ τοῦ συμβόλων λιμένος. μετὰ δὲ τὸν συμβόλων λιμένα μέχρι Θεοδοσίας πόλεως ἡ Ταυρικὴ παραλία, χιλίων πούστα- 20
δίων τὸ μῆκος, τραχεῖα καὶ ὀρεινὴ καὶ καταιγίζουσα τοῖς βορέαις ἴδρυνται. πρόκειται δ' αὐτῆς ἄκρα πολὺ πρὸς τὸ πέλαγος καὶ τὴν μεσημβρίαν ἐκκειμένη κατὰ Παφλαγονίαν καὶ Ἀμαστριν πόλιν, καλεῖται δὲ Κριοῦ μέτωπον. ἀντίκειται δ' αὐτῇ τὸ τῶν Παφλαγόνων 2-
ἀκρωτήριον ἡ Κάραμβις τὸ διαιροῦν εἰς πελάγη δύο τὸν Εὐξείνιον πόντον τῷ ἐκατέρωθεν σφριγγομένῳ πορθμῷ. διέσθηκε δ' ἡ Κάραμβις τῆς μὲν τῶν Χερρονησιτῶν πόλεως σταδίους δισχιλίους καὶ πεντακοσίους, τοῦ δὲ Κριοῦ μετώπου πολὺ ἐλάττους τὸν ἀριθμὸν· 30

7. post βαρβάρους: καὶ τοῦ Ἀδρίου·

συχνοὶ γοῦν τῶν διαπλευσάντων τὸν πορθμὸν ἅμα
φασὶν ἰδεῖν ἀμφοτέρως ἐκατέρωθεν τὰς ἄκρας. ἐν δὲ
τῇ ὄρεινῇ τῶν Ταύρων καὶ τὸ ὄρος ἐστὶν ὁ Τραπεζοῦς,
ὁμώνυμον τῇ πόλει τῇ περὶ τὴν Τιβαρανίαν καὶ τῇ
5 Κολχίδα· καὶ ἄλλο δ' ἐστὶν ὄρος Κιμμέριον κατὰ τὴν
αὐτὴν ὄρεινὴν, δυναστευσάντων ποτὲ τῶν Κιμμερίων
ἐν τῷ Βοσπόρῳ· καθ' ὃ καὶ Κιμμερικὸς Βόσπορος κα-
λεῖται τοῦ πορθμοῦ πᾶν ὃ ἐπέχει τὸ στόμα τῆς Μαι-
ώτιδος.

- 10 Μετὰ δὲ τὴν ὄρεινὴν τὴν λεχθεῖσαν ἡ Θεοδοσία 4
κεῖται πόλις, πεδίον εὗγων ἔχουσα καὶ λιμένα ναυσὶ
καὶ ἑκατὸν ἐπιτήδειον· οὗτος δὲ ὄρος ἦν πρότερον τῆς
τῶν Βοσποριανῶν καὶ Ταύρων γῆς· καὶ ἡ ἐξῆς δ' ἐστὶν
εὗγως χώρα μέχρι Παντικαπαίου, τῆς μητροπόλεως
15 τῶν Βοσποριανῶν ἰδρυμένης ἐπὶ τῷ στόματι τῆς Μαι-
ώτιδος. ἔστι δὲ τὸ μεταξὺ τῆς Θεοδοσίας καὶ τοῦ Παν-
τικαπαίου σταδίων περὶ πεντακοσίων καὶ τριάκοντα,
χώρα πᾶσα σιτοφόρος, κώμας ἔχουσα καὶ πόλιν ἐνλί-
μενον τὸ Νύμφαιον καλούμενον. τὸ δὲ Παντικάπαιον
20 λόφος ἐστὶ πάντῃ περιεικούμενος ἐν κύκλῳ σταδίων
εἴκοσι· πρὸς ἕω δ' ἔχει λιμένα καὶ νεώρια ὅσον τρι-
άκοντα νεῶν, ἔχει δὲ καὶ ἀκρόπολιν· κτίσμα δ' ἐστὶ C.310
Μιλησίων. ἐμοναρχεῖτο δὲ πολὺν χρόνον ὑπὸ δυνα-
στῶν τῶν περὶ Λεύκωνα καὶ Σάτυρον καὶ Παιρισάδην
25 αὕτη τε καὶ αἱ πλησιόχωροι κατοικίαι πᾶσαι αἱ περὶ τὸ
στόμα τῆς Μαιώτιδος ἐκατέρωθεν μέχρι Παιρισάδου
τοῦ Μιθριδάτη παραδόντος τὴν ἀρχήν. ἐκαλοῦντο δὲ
τύραννοι, καίπερ οἱ πλείους ἐπιεικεῖς γεγονότες, ἀρξά-
μενοι ἀπὸ Παιρισάδου καὶ Λεύκωνος. Παιρισάδης δὲ
30 καὶ θεὸς νενομίσται· τούτῳ δὲ ὁμώνυμος καὶ ὁ ὕστα-
τος, ὃς οὐχ οἷός τε ὦν ἀντέχειν πρὸς τοὺς βαρβάρους
φόρον πραττομένους μείζω τοῦ πρότερον Μιθριδάτη

τῷ Εὐπάτορι παρέδωκε τὴν ἀρχήν· ἐξ ἐκείνου δ' ἡ βασιλεια γεγενηται Ῥωμαίοις ὑπήκοος. τὸ μὲν οὖν πλεόν αὐτῆς μέρος ἐστὶν ἐπὶ τῆς Εὐρώπης, μέρος δέ τι καὶ ἐπὶ τῆς Ἀσίας.

- 5 Τὸ δὲ στόμα τῆς Μαειώτιδος καλεῖται μὲν Κιμμε-
 ρικὸς Βόσπορος, ἄρχεται δὲ ἀπὸ μείζονος πλάτους
 ἑβδομήκοντά πον σταδίων· καθ' ὃ διαίρουσιν ἐκ τῶν
 περὶ Παντικάπαιον τόπων εἰς τὴν ἐγγυτάτω πόλιν τῆς
 Ἀσίας τὴν Φαναγόρειαν· τελευτᾷ δ' εἰς πολὺ στενω-
 10 τερον πορθμόν. διαιρεῖ δ' ὁ στενωπὸς οὗτος τὴν Ἀσίαν
 ἀπὸ τῆς Εὐρώπης καὶ ὁ Τάναϊς ποταμός, καταντικρὺ
 ῥέων ἀπὸ τῶν ἄρκτων εἰς τε τὴν λίμνην καὶ τὸ στόμα
 αὐτῆς· δύο δ' ἔχει τὰς εἰς τὴν λίμνην ἐκβολὰς διεχού-
 15 σας ἀλλήλων ὅσον σταδίους ἐξήκοντα. ἔστι δὲ καὶ πό-
 λιν ὁμώνυμος τῷ ποταμῷ, μέγιστον τῶν βαρβάρων
 ἐμπόριον μετὰ τὸ Παντικάπαιον. ἐν ἀριστερᾷ δ' εἰς-
 πλέοντι τὸν Κιμμερικὸν Βόσπορον πολίχνιον ἔστι
 Μυρμηκίον ἐν εἰκοσι σταδίοις ἀπὸ τοῦ Παντικαπαίου.
 τοῦ δὲ Μυρμηκίου διπλάσιον διέχει κώμη Παρθένιον,
 20 καθ' ἣν στενωτάτος ὁ εἰσπλους ἐστὶν ὅσον εἰκοσι στα-
 δίων, ἔχων ἀντικειμένην ἐν τῇ Ἀσίᾳ κώμην Ἀχίλλειον
 καλουμένην. ἐντεῦθεν δ' εὐθυπλοία μὲν ἐπὶ τὸν Τά-
 ναϊν καὶ τὴν κατὰ τὰς ἐκβολὰς νῆσον στάδιοι δισχίλιοι
 διακόσιοι, μικρὸν δ' ὑπερβάλλει τοῦ ἀριθμοῦ τούτου
 πλέοντι παρὰ τὴν Ἀσίαν· πλεόν δ' ἢ τριπλάσιον ἐν
 25 ἀριστερᾷ πλέοντι μέχρι τοῦ Τανάιδος, ἐν ᾧ παράπλω
 καὶ ὁ ἰσθμὸς ἴδρυνται. οὗτος μὲν οὖν ὁ παράπλους ἔρη-
 μος πᾶς ὁ παρὰ τὴν Εὐρώπην, ὁ δ' ἐν δεξιᾷ οὐκ ἔρη-
 30 μος· ὁ δὲ σύμπας τῆς λίμνης κύκλος ἐνακισχιλίων ἰστο-
 ρεῖται σταδίων. ἡ δὲ μεγάλη χερρόνησος τῇ Πελοπον-
 νήσῳ προσέεικε καὶ τὸ σχῆμα καὶ τὸ μέγεθος. ἔχουσι
 δ' αὐτὴν οἱ τοῦ Βοσπόρου δυνάσται κεκακωμένην πᾶ-

σαν ὑπὸ τῶν συνεχῶν πολέμων. πρότερον δ' εἶχον
 ὀλίγην μὲν τὴν πρὸς τῷ στόματι τῆς Μαιώτιδος καὶ
 τῷ Παντικαπαίῳ μέχρι Θεοδοσίας τῶν Βοσπορίων τῷ-C.311
 ραννοί, τὴν δὲ πλείστην μέχρι τοῦ Ἰσθμοῦ καὶ τοῦ κόλ-
 5 που τοῦ Καρκινίτου Ταῦροι, Σκυθικὸν ἔθνος· καὶ
 ἐκαλεῖτο ἡ χώρα πᾶσα αὕτη, σχεδὸν δέ τι καὶ ἡ ἕξω τοῦ
 Ἰσθμοῦ μέχρι Βορυσθένους, μικρὰ Σκυθία· διὰ δὲ τὸ
 πληθὺς τῶν ἐνθενδε περαιουμένων τόν τε Τύραν καὶ
 τὸν Ἰστρον καὶ ἐποικούντων τὴν γῆν καὶ ταύτης οὐκ
 10 ὀλίγη μικρὰ προσηγορεύθη Σκυθία, τῶν Θρακῶν τὰ
 μὲν τῇ βίᾳ συγχαρούντων τὰ δὲ τῇ κακίᾳ τῆς χώρας·
 ἐλώδης γάρ ἐστιν ἡ πολλὴ αὐτῆς.

Τῆς δὲ χειρρονήσου, πλὴν τῆς ὀρεινῆς τῆς ἐπὶ τῇ 6
 θαλάττῃ μέχρι Θεοδοσίας, ἥ γε ἄλλη πεδιάς καὶ εὐγεῶς
 15 ἐστὶ πᾶσα, σίτω δὲ καὶ σφόδρα εὐτυχῆς, τριακοντά-
 χουν ἀποδιδούσα διὰ τοῦ τυχόντος ὀρυκτοῦ σχιζομένη.
 φόρον τε ἐτέλουν ὀκτωκαίδεκα μυριάδας μεδίμνων
 Μιθριδάτῃ, τάλαντα δ' ἀργυρίου διακόσια σὺν τοῖς
 Ἀσιανοῖς χωρίοις τοῖς περὶ τὴν Σινδικήν. καὶ τοῖς
 20 πρόσθεν χρόνοις ἐντεῦθεν ἦν τὰ σιτοπομπεῖα τοῖς Ἑλ-
 λησι, καθάπερ ἐκ τῆς λίμνης αἰ ταριχεῖαι. Λεύκωνα
 δὲ φασιν ἐκ τῆς Θεοδοσίας Ἀθηναίοις πέμψαι μυριάδας
 μεδίμνων διακοσίας καὶ δέκα. οἱ δ' αὐτοὶ οὗτοι καὶ
 γεωργοὶ ἐκαλοῦντο ἰδίως διὰ τὸ τοὺς ὑπερκειμένους
 25 νομάδας εἶναι, τρεφομένους κρέασιν ἄλλοις τε καὶ ἱπ-
 πείοις, ἱππείῳ δὲ καὶ τυρῷ καὶ γάλακτι καὶ ὀξυγάλακτι
 (τοῦτο δὲ καὶ ὄψημά ἐστιν αὐτοῖς κατασκευασθέν
 πῶς)· διόπερ ὁ ποιητῆς ἅπαντας εἰρηκε τοὺς ταύτη
 γαλακτοφάγους. οἱ μὲν οὖν νομάδες πολεμιστὰι μᾶλ-
 30 λόν εἰσιν ἢ ληστρικοί, πολεμοῦσι δὲ ὑπὲρ τῶν φόρων.
 ἐπιτρέψαντες γὰρ ἔχειν τὴν γῆν τοῖς ἐθέλουσι γεωρ-
 γεῖν ἀντὶ ταύτης ἀγαπῶσι φόρους λαμβάνοντες τοὺς

συντεταγμένους μετρίους τινάς, οὐκ εἰς περιουσίαν ἀλλ' εἰς τὰ ἐφήμερα καὶ τὰ ἀναγκαῖα τοῦ βίου· μὴ δόντων δὲ αὐτοῖς πολεμοῦσιν. οὕτω δὲ καὶ δικαίους ἅμα καὶ ἀβίους ὁ ποιητὴς εἴρηκε τοὺς αὐτοὺς τοῦτους ἄνδρας, ἐπεὶ τῶν γε φόρων ἀπευτακτουμένων οὐδ' 5 ἂν καθίσταντο εἰς πόλεμον. οὐκ ἀπευτακτοῦσι δ' οἱ δυνάμει πεποιθότες, ὥστε ἢ ἀμύνασθαι ῥαδίως ἐπιόντας ἢ κωλύσαι τὴν ἐφοδον· καθάπερ Ἀσάνδρον ποιῆσαι φῆσιν Ὑψικράτης, ἀποτευχίσαντα τὸν ἰσθμὸν τῆς χερρονήσου τὸν πρὸς τῇ Μαιώτιδι τριακοσίων ὄντα 10 καὶ ἐξήκοντα σταδίων, ἐπιστήσαντα πύργους, καθ' ἕκαστον στάδιον ἓνα. οἱ δὲ γεωργοὶ ταύτῃ μὲν ἡμερώτεροί τε ἅμα καὶ πολιτικώτεροι νομίζονται εἶναι, χρηματισταὶ δ' ὄντες καὶ θαλάττης ἀπτόμενοι ληστηρίων C.312 οὐκ ἀπέχονται, οὐδὲ τῶν τοιούτων ἀδικιῶν καὶ πλεο- 15 νεξιῶν.

7 Πρὸς δὲ τοῖς καταριθμηθεῖσι τόποις ἐν τῇ χερρονήσῳ καὶ τὰ φρούρια ὑπῆρξεν, ἃ κατεσκεύασε Σκίλουρος καὶ οἱ παῖδες, οἷσπερ καὶ ὁρμητηρίοις ἐχρῶντο πρὸς τοὺς Μιθριδάτου στρατηγούς, Παλάκιόν τε καὶ 20 Χάβον καὶ Νεάπολιν· ἣν δὲ καὶ Εὐπατόριόν τι, κτίσαντος Διοφάντου, [τοῦ] Μιθριδάτου στρατηγοῦ. ἔστι δ' ἄκρα διέχουσα τοῦ τῶν Χερρονησιτῶν τείχους ὅσον πεντεκαίδεκα σταδίους, κόλπον ποιοῦσα εὐμεγέθη νεύοντα πρὸς τὴν πόλιν· τούτου δ' ὑπέρεκκεται 25 λιμνοθάλαττα ἀλοπήγιον ἔχουσα· ἐνταῦθα δὲ καὶ ὁ Κτενοῦς ἦν. ἔν' οὖν ἀντέχοιεν, οἱ βασιλικοὶ πολιορκούμενοι τῇ τε ἄκρᾳ τῇ λεχθείσῃ φρουρὰν ἐγκατέστησαν τειχίσαντες τὸν τόπον, καὶ τὸ στόμα τοῦ κόλπου τὸ μέχρι τῆς πόλεως διέχωσαν, ὥστε πεζεύεσθαι ῥα- 30 δίως καὶ τρόπον τινα μίαν εἶναι πόλιν ἐξ ἀμφοῖν· ἐκ δὲ τούτου ῥᾶον ἀπεκρούοντο τοὺς Σκύθας. ἐπεὶ δὲ καὶ

τῷ διατειχίσματι τοῦ ἰσθμοῦ τοῦ πρὸς τῷ Κτενοῦντι προσέβαλον καὶ τὴν τάφρον ἐνέχουν καλὰ μῶ, τὸ μεθ' ἡμέραν γεφυρωθὲν μέρος νύκτωρ ἐνεπίμπρασαν οἱ βασιλικοὶ καὶ ἀντεῖχον τέως ἕως ἐπεκράτησαν. καὶ νῦν ὑπὸ τοῖς τῶν Βοσπορανῶν βασιλεῦσιν, οὓς ἂν Ῥωμαῖοι καταστήσωσιν, ἅπαντά ἐστιν.

- Ἰδιον δὲ τοῦ Σκυθικοῦ καὶ τοῦ Σαρματικοῦ παν- 8
τὸς ἔθνους τὸ τοὺς ἵππους ἐκτέμνειν εὐπειθείας χάριν· μικροὶ μὲν γάρ εἰσιν, ὀξεῖς δὲ σφόδρα καὶ δυσπειθεῖς.
- 10 θῆραι δ' εἰσὶν ἐν μὲν τοῖς ἔλεσιν ἐλάφων καὶ συάγρων, ἐν δὲ τοῖς πεδίοις οὐάγρων καὶ δορκάδων. ἴδιον δέ τι καὶ τὸ ἀετὸν μὴ γίνεσθαι ἐν τοῖς τόποις τούτοις. ἔστι δὲ τῶν τετραπόδων ὁ καλούμενος κόλος, μεταξὺ ἐλάφου καὶ κριοῦ τὸ μέγεθος, λευκός, ὀξύτερος τούτων
- 15 τῷ δρόμῳ, πίνων τοῖς ῥώθωσιν εἰς τὴν κεφαλὴν, εἴτ' ἐντεῦθεν εἰς ἡμέρας ταμιεύων πλείους ὥστ' ἐν τῇ ἀνύδρῳ νέμεσθαι ῥαδίως. τοιαύτη μὲν ἡ ἐκτὸς Ἰστρου πᾶσα ἢ μεταξὺ τοῦ Ῥήνου καὶ τοῦ Ταναΐδος ποταμοῦ μέχρι τῆς Ποντικῆς θαλάττης καὶ τῆς Μαιώτιδος.
- 20 Λοιπὴ δ' ἐστὶ τῆς Εὐρώπης ἡ ἐντὸς Ἰστρου καὶ 5
τῆς κύκλω θαλάττης, ἀρξαμένη ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τοῦ Ἀδριατικοῦ μέχρι τοῦ ἱεροῦ στόματος τοῦ Ἰστρου, ἐν ᾗ ἔστιν ἡ τε Ἑλλάς καὶ τὰ τῶν Μακεδόνων καὶ τῶν Ἑπειρωτῶν ἔθνη καὶ τὰ ὑπὲρ τούτων πρὸς τὸν Ἰστρου
- 25 καθήκοντα καὶ πρὸς τὴν ἑφ' ἐκάτερα θάλατταν τὴν τε C.313
Ἀδριατικὴν καὶ τὴν Ποντικὴν, πρὸς μὲν τὴν Ἀδριατικὴν τὰ Ἰλλυρικά, πρὸς δὲ τὴν ἑτέραν μέχρι Προποντίδος καὶ Ἑλλησπόντου τὰ Θράκια καὶ εἴ τινα τούτοις ἀναμέμικται Σκυθικὰ ἢ Κελτικὰ. δεῖ δ' ἀπὸ τοῦ Ἰστρου
- 30 τὴν ἀρχὴν ποιήσασθαι τὰ ἐφεξῆς λέγοντας τοῖς περιουθεῖσι τόποις· ταῦτα δ' ἔστι τὰ συνεχῆ τῇ Ἰταλίᾳ τε καὶ ταῖς Ἀλπεσι καὶ Γερμανοῖς καὶ Λακοῖς καὶ Γέταις.

δίχα δ' ἂν τις καὶ ταῦτα διέλοι· τρόπον γάρ τινα τῷ Ἰστρῷ παράλληλά ἐστι τὰ τε Ἰλλυρικά καὶ τὰ Παιονικά καὶ τὰ Θράκια ὄρη, μίαν πως γραμμὴν ἀποτελοῦντα διήκουσαν ἀπὸ τοῦ Ἀδρίου μέχρι πρὸς τὸν Πόντον· ἧς προσάρκτια μὲν ἐστὶ μέρη τὰ μεταξὺ τοῦ Ἰστρου καὶ τῶν ὄρων, πρὸς νότον δ' ἢ τε Ἑλλάς καὶ ἡ συνεχῆς βάρβαρος μέχρι τῆς ὀρεινῆς. πρὸς μὲν οὖν τῷ Πόντῳ τὸ Αἶμον ἐστὶν ὄρος, μέγιστον τῶν ταύτη καὶ ὑψηλότατον, μέσην πως διαιροῦν τὴν Θράκην· ἀφ' οὗ φησι Πολύβιος ἀμφοτέρως καθοραῖσθαι τὰς θαλάσ- 5 τας, οὐκ ἀληθῆ λέγων· καὶ γὰρ τὸ διάστημα μέγα τὸ πρὸς τὸν Ἀδρίαν καὶ τὰ ἐπισκοτοῦντα πολλά. πρὸς δὲ τῷ Ἀδρίᾳ πᾶσα ἡ Ἀρδιά σχεδόν τι, μέση δ' ἡ Παιονία καὶ αὐτὴ πᾶσα ὑψηλή. ἐφ' ἐκάτερα δ' αὐτῆς ἐπὶ μὲν τὰ Θράκια ἡ Ροδόπη ὁμορεῖ, ὑψηλότατον ὄρος μετὰ τὸν 15 Αἶμον, ἐπὶ δὲ θάτερα πρὸς ἄρκτον τὰ Ἰλλυρικά ἢ τε τῶν Αὐταριατῶν χώρα καὶ ἡ Δαρδανική. λέγωμεν δὴ τὰ Ἰλλυρικά πρῶτα συνάπτοντα τῷ τε Ἰστρῷ καὶ ταῖς Ἀλπεσιν, αἱ κεῖνται μεταξὺ τῆς Ἰταλίας καὶ τῆς Γερμανίας, ἀρξάμεναι ἀπὸ τῆς λίμνης τῆς κατὰ τοὺς Ὀινδο- 20 λικοὺς καὶ Ραιτοὺς καὶ Ἑλεητίους.

- 2 Μέρος μὲν δὴ τι τῆς χώρας ταύτης ἠρῆμωσαν οἱ Λακοὶ καταπολεμήσαντες Βοίους καὶ Ταυρίσκους, ἔθνη Κελτικά τὰ ὑπὸ Κριτασίῳ, φάσκοντες εἶναι τὴν χώραν σφετέραν, καίπερ ποταμοῦ διείργοντος τοῦ Πα- 25 ρίσου, ῥέοντος ἀπὸ τῶν ὄρων ἐπὶ τὸν Ἰστρον κατὰ τοὺς Σκορδίσκους καλουμένους Γαλάτας· καὶ γὰρ οὗτοι τοῖς Ἰλλυρικοῖς ἔθνεσι καὶ τοῖς Θρακίοις ἀναμῖξ ᾤκησαν· ἀλλ' ἐκείνους μὲν οἱ Λακοὶ κατέλυσαν, τούτοις δὲ καὶ συμμάχοις ἐχρήσαντο πολλάκις. τὸ δὲ λοι- 30 πὸν ἔχουσι Παννόνιοι μέχρι Σεγεστικῆς καὶ Ἰστρου πρὸς ἄρκτον καὶ ἔω· πρὸς δὲ τὰλλα μέρη ἐπὶ πλέον

διατείνουσιν. ἡ δὲ Σεγεστικὴ πόλις ἐστὶ Παννονίων ἐν
 συμβολῇ ποταμῶν πλειόνων, ἀπάντων πλωτῶν, εὐ-
 φυνὲς ὁρμητήριον τῷ πρὸς Λακοὺς πολέμῳ· ὑποπέ-
 πτωκε γὰρ ταῖς Ἑλλεσπιν, αἱ διατείνουσι μέχρι τῶν Ἰα-
 5 πόδων, Κελτικοῦ τε ἅμα καὶ Ἰλλυρικοῦ ἔθνη· ἐντεῦθεν—C.314
 θεὺν δὲ καὶ ποταμοὶ ῥέουσι πολὺν καταφέροντες εἰς αὐ-
 τὴν τὸν τε ἄλλον καὶ τὸν ἐκ τῆς Ἰταλίας φόρτον. εἰς
 γὰρ Ναύπορτον ἐξ Ἀκυληίας ὑπερτιθεῖσι τὴν Ὀκραν
 εἰς ἑκατὰ στάδιοι τριακόσιοι πεντήκοντα, εἰς ἣν αἱ ἁρμάμα-
 10 ξαι κατάγονται, τῶν Ταυρίσκων οὐσαν κατοικίαν·
 ἔνιοι δὲ πεντακοσίους φασίν. ἡ δ' Ὀκρα ταπεινότατον
 μέρος τῶν Ἑλλεσπιν ἐστὶ τῶν διατεινουσῶν ἀπὸ τῆς
 Ραιτικῆς μέχρι Ἰαπόδων· ἐντεῦθεν δ' ἐξαίρεται τὰ ὄρη
 πάλιν ἐν τοῖς Ἰάποσι καὶ καλεῖται Ἀλβία. ὁμοίως δὲ
 15 καὶ ἐκ Τεργέστε κώμης Καρνικῆς ὑπερθεσὶς ἐστὶ διὰ
 τῆς Ὀκρας εἰς ἔλος Δούγεον καλούμενον. πλησίον δὲ
 τοῦ Ναυπόρτου ποταμός ἐστὶ Κορκόρας ὁ δεχόμενος
 τὰ φορτία· οὗτος μὲν οὖν εἰς τὸν Σάβον ἐμβάλλει,
 ἐκεῖνος δ' εἰς τὸν Δράβον, ὁ δὲ εἰς τὸν Νόαρον κατὰ
 20 τὴν Σεγεστικὴν. ἐντεῦθεν δ' ἤδη ὁ Νόαρος * πλήθει
 προσλαβὼν τὸν διὰ τῶν Ἰαπόδων ῥέοντα ἐκ τοῦ Ἀλ-
 βίου ὄρους Κόλαπιν συμβάλλει τῷ Δανουίῳ κατὰ τοὺς
 Σκορδίσκους. ὁ δὲ πλοῦς τὰ πολλὰ τοῖς ποταμοῖς ἐπὶ
 τὰς ἄρκτους ἐστίν· ὁδὸς δ' ἀπὸ Τεργέστε ἐπὶ τὸν Δα-
 25 νούιον σταδίων ὅσον χιλίων καὶ διακοσίων. ἐγγὺς δὲ
 τῆς Σεγεστικῆς ἐστὶ καὶ ἡ Σισκία φρούριον καὶ Σίρ-
 μιον ἐν ὁδῷ κείμεναι τῇ εἰς Ἰταλίαν.

Ἑθνη δ' ἐστὶ τῶν Παννονίων Βρεῦκοι καὶ Ἀνδι- 3
 ζήτιοι καὶ Διτίωνες καὶ Πειροῦσται καὶ Μαζαῖοι καὶ
 30 Δαισιτιᾶται, ὧν Βάτων ἡγεμῶν, καὶ ἄλλα ἀσημότερα
 μικρά, ἃ διατείνει μέχρι Δαλματίας σχεδὸν δέ τι καὶ
 Ἀρδιαίων ἰόντι πρὸς νότον· ἅπαντα δ' ἡ ἀπὸ τοῦ μυ-
 3*

χοῦ τοῦ Ἀδρίου παρήκουσα ὄρεινὴ μέχρι τοῦ Ῥιζονι-
κοῦ κόλπου καὶ τῆς Ἀρδιαίων γῆς μεταξὺ πλ-
πτουσα τῆς τε θαλάττης καὶ τῶν Παννονίων ἐθνῶν.
σχεδὸν δέ τι καὶ ἐντεῦθεν τὴν ἀρχὴν ποιητέον τῆς συν-
εχοῦς περιοδείας ἀναλαβοῦσι μικρὰ τῶν λεχθέντων 5
πρότερον. ἔφαμεν δ' ἐν τῇ περιοδείᾳ τῆς Ἰταλίας
Ἴστρους εἶναι πρώτους τῆς Ἰλλυρικῆς παραλίας συνε-
χεῖς τῇ Ἰταλίᾳ καὶ τοῖς Κάρνοις, καὶ διότι μέχρι Πόλας,
Ἰστρικῆς πόλεως, προήγαγον οἱ νῦν ἡγεμόνες τοὺς
τῆς Ἰταλίας ὄρους. οὗτοι μὲν οὖν περὶ ὀκτακοσίους 10
σταδίους εἰσὶν ἀπὸ τοῦ μυχοῦ. τοσοῦτοι δ' εἰσὶ καὶ ἀπὸ
τῆς ἄκρας τῆς πρὸ τῶν Πολῶν ἐπὶ Ἀγκῶνα ἐν δεξιᾷ
ἔχοντι τὴν Ἑνετικὴν. ὁ δὲ πᾶς Ἰστρικὸς παράπλους
χίλια τριακόσια.

4 Ἐξῆς δ' ἐστὶν ὁ Ἰαποδικὸς παράπλους χιλίων στα- 15
δίων· ἴδρυνται γὰρ οἱ Ἰάποδες ἐπὶ τῷ Ἀλβίῳ ὄρει τε-
λευταίῳ τῶν Ἀλπεων ὄντι ὑψηλῷ σφόδρα, τῇ μὲν ἐπὶ
τοὺς Παννονίους καὶ τὸν Ἴστρου καθήκοντες τῇ δ' ἐπὶ
τὸν Ἀδρίαν, ἀρειμάνιοι μὲν ἐκπεποιημένοι δὲ ὑπὸ
τοῦ Σεβαστοῦ τελέως· πόλεις δ' αὐτῶν Μέτουλον 20

0.315 Ἀρουπῖνοι Μονήτιον ὕενδων· λυπρὰ δὲ τὰ χωρία, καὶ
ξειᾷ καὶ κέγχρῳ τὰ πολλὰ τρεφομένων· ὁ δ' ὀπλισμὸς
Κελτικὸς· κατάστικτοι δ' ὁμοίως τοῖς ἄλλοις Ἰλλυρι-
οῖς καὶ Θραξί. μετὰ δὲ τὸν τῶν Ἰαπόδων ὁ Λιβυρνικὸς
παράπλους ἐστὶ, μέλizon τοῦ προτέρου σταδίοις [πεν- 25
τακοσίοις], ἐν δὲ τῷ παράπλῳ ποταμὸς φορτίοις ἀνά-
πλουν ἔχων μέχρι Δαλματέων, καὶ Σκάρδων Λιβυρνή
πόλις.

5 Παρ' ὅλην δ' ἣν εἶπον παραλίαν νῆσοι μὲν αἱ
Ἀψυρτίδες, περὶ αἷς ἡ Μήδεια λέγεται διαφθεῖραι τὸν 30
ἀδελφὸν Ἀψυρτον διώκοντα αὐτήν. ἔπειτα ἡ Κυρι-
κτικὴ κατὰ τοὺς Ἰάποδας· εἶθ' αἱ Λιβυρνίδες περὶ τετ-

ταράκοντα τὸν ἀριθμόν· εἴτ' ἄλλαι νῆσοι, γνωριμώ-
 τатаι δ' Ἰσσα, Τραγούριον, Ἰσσεών κτίσμα, Φάρος ἢ
 πρότερον Πάρος, Παρίων κτίσμα, ἐξ ἧς Δημήτριος ὁ
 Φάριος. εἶτα ἡ τῶν Δαλματέων παραλία καὶ τὸ ἐπί-
 5 νειον αὐτῶν Σάλων. ἔστι δὲ τῶν πολὺν χρόνον πολε-
 μησάντων πρὸς Ῥωμαίους τὸ ἔθνος τοῦτο· κατοικίας
 δ' ἔσχεν ἀξιολόγους εἰς πεντήκοντα, ὧν τινὰς καὶ πό-
 λεις, Σάλωνά τε καὶ Πρώμωνα καὶ Νινίαν καὶ Σινώ-
 τιον τό τε νέον καὶ τὸ παλαιόν, ἃς ἐνέπρησεν ὁ Σεβα-
 10 στός. ἔστι δὲ καὶ Ἀνδήτριον ἐρυμνὸν χωρίον, Δέλμιον
 δὲ μεγάλη πόλις, ἧς ἐπώνυμον τὸ ἔθνος· μικράν δ'
 ἐποίησε Νασικᾶς καὶ τὸ πεδλίον μηλόβοτον διὰ τὴν πλε-
 ονεξίαν τῶν ἀνθρώπων. ἰδιον δὲ τῶν Δαλματέων τὸ
 διὰ ὀκταετηρίδος χώρας ἀναδασμὸν ποιεῖσθαι· τὸ δὲ
 15 μὴ χρησθαι νομίσμασι πρὸς μὲν τοὺς ἐν τῇ παραλίᾳ
 ταύτῃ ἰδιον, πρὸς ἄλλους δὲ τῶν βαρβάρων πολλοὺς
 κοινόν. Ἀδριον δὲ ὄρος ἐστὶ μέσην τέμνον τὴν Δαλμα-
 τικὴν, τὴν μὲν ἐπιθαλάττιον τὴν δ' ἐπὶ θάτερα. εἶθ'
 ὁ Νάρων ποταμὸς καὶ οἱ περὶ αὐτὸν Δαόριζοι καὶ Ἀρ-
 20 διαῖοι καὶ Πληραῖοι, ὧν τοῖς μὲν πλησιάζει νῆσος ἢ
 μέλαινα Κόρκυρα καλουμένη καὶ πόλις, Κνιδίων κτί-
 σμα, τοῖς δὲ Ἀρδιαίοις ἢ Φάρος, Πάρος λεγομένη πρό-
 τερον· Παρίων γὰρ ἐστὶ κτίσμα.

Ἰαργαίους δ' οἱ ὕστερον ἐκάλεσαν τοὺς Ἀρδιαί- 6
 25 οὺς· ἀπέωσαν δ' αὐτοὺς εἰς τὴν μεσόγαιαν ἀπὸ τῆς
 θαλάττης Ῥωμαῖοι, λυμαινομένους αὐτὴν διὰ τῶν λη-
 στηρίων, καὶ ἠνάγκασαν γεωργεῖν. τραχεῖα δὲ χώρα
 καὶ λυπρὰ καὶ οὐ γεωργῶν ἀνθρώπων, ὥστ' ἐξέφθαρ-
 ται τελέως [τὸ ἔθνος], μικροῦ δὲ καὶ ἐκλέλοιπε. τοῦτο
 30 δὲ καὶ τοῖς ἄλλοις ἔθνεσι τοῖς ταύτῃ συνέβη· οἱ γὰρ
 πλείστον δυνάμενοι πρότερον τελέως ἐταπεινώθησαν
 καὶ ἐξέλιπον, Γαλατῶν μὲν Βοῖοι καὶ Σκορδίσται, Ἴλ-

λυριῶν δὲ Ἀνταριαῖται καὶ Ἀρδιαῖοι καὶ Δαρδάνιοι,
Θρακῶν δὲ Τριβαλλοί, ὑπ' ἀλλήλων μὲν ἐξ ἀρχῆς,
C.316 ὕστερον δ' ὑπὸ Μακεδόνων καὶ Ῥωμαίων ἐκπολεμού-
μενοι.

7 Μετὰ δ' οὖν τὴν τῶν Ἀρδιαίων καὶ Πληραίων 5
παραλίαν ὁ Ῥιζονικὸς κόλπος ἐστὶ καὶ Ῥίζων πόλις
καὶ ἄλλα πολίχνια, καὶ Δρίλων ποταμὸς ἀνάπλουν
ἔχων πρὸς ἕω μέχρι τῆς Δαρδανικῆς, ἣ συνάπτει
τοῖς Μακεδονικοῖς ἔθνεσι καὶ τοῖς Παιονικοῖς πρὸς
μεσημβρίαν, καθάπερ καὶ οἱ Ἀνταριαῖται καὶ Δασα- 10
ρήτιοι, ἄλλοι κατ' ἄλλα μέρη συνεχεῖς ἀλλήλοις ὄν-
τες καὶ τοῖς Ἀνταριαταῖς. τῶν δὲ Δαρδανιατῶν εἰσι
καὶ οἱ Γαλάβριοι, παρ' οἷς ... πόλις ἀρχαία, καὶ οἱ Θου-
νάται, [οἱ] Μαῖδοις ἔθνη Θρακίῳ πρὸς ἕω συνάπτου-
σιν. ἄγριοι δ' ὄντες οἱ Δαρδάνιοι τελέως, ὥσθ' ὑπὸ 15
ταῖς κοπρίαις ὀρύξαντες σπήλαια ἐνταῦθα διαίτας ποι-
εῖσθαι, μουσικῆς δ' ὅμως ἐπεμελήθησαν ἀεὶ χρώμε-
νοι καὶ αὐλοῖς καὶ τοῖς ἐντατοῖς ὀργάνοις. οὗτοι μὲν
οὖν ἐν τῇ μεσογαίᾳ· μνησθησόμεθα δ' αὐτῶν καὶ
ὕστερον. 20

8 Μετὰ δὲ τὸν Ῥιζονικὸν κόλπον Λίσσος ἐστὶ πόλις
καὶ Ἀκρόλισσος καὶ Ἐπίδαμνος Κερκυραίων κτίσμα, ἣ
νῦν Δυρράχιον ὁμωνύμως τῇ χειρρονήσῳ λεγομένη
ἐφ' ἧς ἵδρυται. εἰδ' ὃ Ἄψος ποταμὸς καὶ ὃ Ἄωος, ἐφ'
ᾧ Ἀπολλωνία πόλις εὐνομωτάτη, κτίσμα Κορινθίων 25
καὶ Κερκυραίων, τοῦ ποταμοῦ μὲν ἀπέχουσα σταδίου
δέκα τῆς θαλάττης δὲ ἐξήκοντα. τὸν δ' Ἄωον Αἶαντα
καλεῖ Ἐκαταῖος καὶ φησιν ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ τόπου τοῦ
περὶ Δάκμον, μᾶλλον δὲ τοῦ αὐτοῦ μυχοῦ, τόν τε Ἴνα-
χον ρεῖν εἰς Ἄργος πρὸς νότον καὶ τὸν Αἶαντα πρὸς 30

17. ante ἀεὶ: μουσικοῖς

ἔσπεραν καὶ πρὸς τὸν Ἀδρίαν. ἐν δὲ τῇ χώρᾳ τῶν Ἀπολ-
λωνιατῶν καλεῖται τι νυμφαῖον· πέτρα δ' ἐστὶ πῦρ
ἀναδιδούσα, ὅπ' αὐτῇ δὲ κρῆναι ῥέουσι χλιαροῦ καὶ
ἀσφάλτου, καιομένης, ὥς εἰκός, τῆς βώλου τῆς ἀσφαλ-
5 τίτιδος· μέταλλον δ' αὐτῆς ἐστὶ πλησίον ἐπὶ λόφου·
τὸ δὲ τμηθὲν ἐκπληροῦται πάλιν τῷ χρόνῳ, τῆς ἐγχων-
νυμένης εἰς τὰ ὀρύγματα γῆς μεταβαλλούσης εἰς ἀσφαλ-
τον, ὥς φησι Ποσειδώνιος. λέγει δ' ἐκεῖνος καὶ τὴν ἀμ-
πελῖτιν γῆν ἀσφαλτώδη τὴν ἐν Σελευκείᾳ τῇ Πιερίᾳ
10 μεταλλουμένην ἄκος τῆς φθειριώσης ἀμπέλου· χρι-
σθεῖσαν γὰρ μετ' ἐλαίου φθείρειν τὸ θηρίον πρὶν ἐπὶ
τοὺς βλαστοὺς τῆς ῥίζης ἀναβῆναι· τοιαύτην δ' εὗρε-
θῆναι καὶ ἐν Ῥόδῳ πρυτανεύοντος αὐτοῦ, πλείονος
δ' ἐλαίου δεῖσθαι. μετὰ δ' Ἀπολλωνίαν Βυλλιακὴ καὶ
15 Ὠρικὸν καὶ τὸ ἐπίνειον αὐτοῦ ὁ Πάνορμος καὶ τὰ Κε-
ραύνια ὄρη, ἡ ἀρχὴ τοῦ στόματος τοῦ Ἰονίου κόλπου
καὶ τοῦ Ἀδρίου.

Τὸ μὲν οὖν στόμα κοινὸν ἀμφοῖν ἐστὶ, διαφέρει 9
δὲ ὁ Ἰόνιος διότι τοῦ πρώτου μέρους τῆς θαλάττης C.317
20 ταύτης ὄνομα τοῦτ' ἐστίν, ὁ δ' Ἀδρίας τῆς ἐντὸς μέχρι
τοῦ μυχοῦ, νυνὶ δὲ καὶ τῆς συμπάσης. φησὶ δ' ὁ Θεό-
πομπος τῶν ὀνομάτων τὸ μὲν ἦκειν ἀπὸ ἀνδρὸς ἡγη-
σαμένου τῶν τόπων ἐξ Ἰσσης τὸ γένος, τὸν Ἀδρίαν
δὲ ποταμοῦ ἐπάνυμον γεγενῆσθαι. σταδίοι δ' ἀπὸ τῶν
25 Λιβυρυνῶν ἐπὶ τὰ Κεραύνια μικρῷ πλείους ἢ δισχιλίοι.
Θεόπομπος δὲ τὸν πάντα ἀπὸ τοῦ μυχοῦ πλοῦν ἡμε-
ρῶν ἐξ εἰρηκε, πεξῆ δὲ τὸ μῆκος τῆς Ἰλλυρίδος καὶ
τριάκοντα· πλεονάζειν δέ μοι δοκεῖ. καὶ ἄλλα δ' οὐ
πιστὰ λέγει, τό τε συντετρῆσθαι τὰ πελάγη ... ἀπὸ
30 τοῦ εὗρισκεσθαι κέραμόν τε Χῖον καὶ Θάσιον ἐν τῷ
Νάρωνι, καὶ τὸ ἄμφω κατοπτεύεσθαι τὰ πελάγη ἀπό-
τινος ὄρους, καὶ τῶν νήσων τῶν Λιβυρυνίδων * τιθεῖς,

ὥστε κύκλον ἔχειν σταδίων καὶ πεντακοσίων, καὶ τὸ τὸν Ἴστρον ἐν τῶν στομάτων εἰς τὸν Ἀδρίαν ἐμβάλλειν. τοιαῦτα δὲ καὶ τοῦ Ἐρατοσθένους ἐνία παρακούσματα ἐστὶ λαοδογματικά, καθάπερ Πολύβιός φησι καὶ περὶ αὐτοῦ καὶ τῶν ἄλλων λέγων συγγραφῶν. 5

- 10 Τὸν μὲν οὖν παράπλουν ἅπαντα τὸν Ἰλλυρικὸν σφόδρα εὐλίμενον εἶναι συμβαίνει καὶ ἐξ αὐτῆς τῆς συνεχοῦς ῥόνης καὶ ἐκ τῶν πλησίον νήσων, ὑπεναντίως τῷ Ἰταλικῷ τῷ ἀντικειμένῳ ἁλιμένῳ ὄντι· ἄλλοι δὲ καὶ χρηστόκαρποι ὁμοίως· ἐλαιόφυτοι γὰρ καὶ 10 εὐάμπελοι, πλὴν εἰ τί που σπάνιον ἐκτετράχυνται τελέως. τοιαύτη δ' οὐσα ὀλιγωρεῖτο πρότερον ἢ Ἰλλυρικὴ παραλία, τάχα μὲν καὶ κατ' ἄγνοιαν τῆς ἀρετῆς, τὸ μέντοι πλέον διὰ τὴν ἀγριότητα τῶν ἀνθρώπων καὶ τὸ ληστρικὸν ἔθος. ἡ δ' ὑπερκειμένη ταύτης πᾶσα 15 ὄρεινὴ καὶ ψυχρὰ καὶ νιφόβολός ἐστίν, ἡ δὲ προσάρκτιος καὶ μᾶλλον, ὥστε καὶ τῶν ἀμπέλων σπάνιν εἶναι καὶ ἐν ταῖς ὑψώσεσι καὶ ἐν τοῖς ἐπιπεδωτέροις. ὁροπέδια δ' ἐστὶ ταῦτα ἃ κατέχουσιν οἱ Παννόνιοι, πρὸς νότον μὲν μέχρι Δαλματῶν καὶ Ἀρδιαίων διατείνοντα, 20 πρὸς ἄρκτον δὲ ἐπὶ τὸν Ἴστρον τελευτῶντα, πρὸς ἑω δὲ Σκορδίσκοις συνάπτοντα τῇ δὲ παρὰ τὰ ὄρη τῶν Μακεδόνων καὶ Θρακῶν.

- 11 Ἀνταριᾶται μὲν οὖν τὸ μέγιστον καὶ ἄριστον τῶν Ἰλλυριῶν ἔθνος ὑπῆρξεν, ὃ πρότερον μὲν πρὸς Ἀρδι- 25 αῖους συνεχῶς ἐπολέμει περὶ ἁλῶν ἐν μεθορίοις πηγνυμένων ἐξ ὕδατος ῥέοντος ὑπὸ ἄγκει τινὶ τοῦ ἕαρος· ἀρυσάμενοις γὰρ καὶ ἀποθεῖσιν ἡμέρας πέντε ἐξεπηγνυντο οἱ ἄλλοι. συνέκειτο δὲ παρὰ μέρος χρῆσθαι τῷ ἄλοπηγίῳ, παραβαίνοντες δὲ τὰ συγκεκλιμένα ἐπολέ- 30 μουν· καταστρεψάμενοι δὲ ποτε οἱ Ἀνταριᾶται Τριβαλλοὺς ἀπὸ Ἀγριαίων μέχρι τοῦ Ἴστρον καθήκοντας

ἡμερῶν πεντεκαίδεκα ὁδὸν ἐπῆρξαν καὶ τῶν ἄλλων
Θρακῶν τε καὶ Ἰλλυριῶν· κατελύθησαν δ' ὑπὸ Σκορ-
δίσκων πρότερον, ὕστερον δ' ὑπὸ Ῥωμαίων, οὗ καὶ
τοὺς Σκορδίσκους αὐτοὺς κατεπολέμησαν πολὺν χρό-
5 νον ἰσχύσαντας.

Ῥωίκησαν δ' οὗτοι παρὰ τὸν Ἰστρον διηρημένοι 12
δίχα, οἱ μὲν μεγάλοι Σκορδίσκοι καλούμενοι οἱ δὲ μι-
κροί· οἱ μὲν μεταξὺ δυεῖν ποταμῶν ἐμβαλλόντων εἰς
τὸν Ἰστρον, τοῦ τε Νοάρχου τοῦ παρὰ τὴν Σεγεστικήν
10 ῥέοντος καὶ τοῦ Μάργον (τινὲς δὲ Βάργον φασίν), οἱ δὲ
μικροὶ τούτου πέραν, συνάπτοντες Τριβαλλοῖς καὶ
Μυσοῖς. εἶχον δὲ καὶ τῶν νήσων τινὰς οἱ Σκορδίσκοι·
ἐπὶ τοσοῦτον δ' ἠϋξήθησαν ὥστε καὶ μέχρι τῶν Ἰλλυ-
ρικῶν καὶ τῶν Παιονικῶν καὶ Θρακίων προῆλθον
15 ὄρων· κατέσχον οὖν καὶ τὰς νήσους τὰς ἐν τῷ Ἰστρον
τὰς πλείους, ἦσαν δὲ καὶ πόλεις αὐτοῖς Ἐόρτα καὶ Κα-
πέδουννον. μετὰ δὲ τὴν τῶν Σκορδίσκων χάραν παρὰ
μὲν τὸν Ἰστρον ἢ τῶν Τριβαλλῶν καὶ Μυσῶν ἔστιν,
ὧν ἐμνήσθημεν πρότερον, καὶ τὰ ἔλη τὰ τῆς μικρᾶς
20 καλουμένης Σκυθίας τῆς ἐντὸς Ἰστροῦ· καὶ τούτων
ἐμνήσθημεν. ὑπεροικοῦσι δ' οὗτοί τε καὶ Κρόβυβοι
καὶ οἱ Τρωγλοδύται λεγόμενοι τῶν περὶ Κάλλατιν καὶ
Τομέα καὶ Ἰστρον τόπων. εἶθ' οἱ περὶ τὸ Αἶμον καὶ
οἱ ὑπὲρ αὐτοῦ οἰκοῦντες μέχρι τοῦ Πόντου Κόραλλοι
25 καὶ Βέσσοι καὶ Μαίδων τινὲς καὶ Δανθηλητῶν. πάντα
μὲν οὖν ταῦτα ληστρικώτατα ἔθνη, Βέσσοι δέ, οἵπερ
τὸ πλεον τοῦ ὄρους νέμονται τοῦ Αἶμον, καὶ ὑπὸ τῶν
ληστῶν λησται προσαγορεύονται, καλυβίται τινες καὶ
λυπρόβιοι, συνάπτοντες τῇ τε Ῥοδόπῃ καὶ τοῖς Παί-
30 οσι καὶ τῶν Ἰλλυριῶν τοῖς τε Ἀνταριάταις καὶ τοῖς

Δαρδανίοις. μεταξὺ δὲ τούτων τε καὶ τῶν Ἀρδιαίων οἱ Δασαρήτιοι εἰσὶ καὶ Ἀγριᾶνες καὶ ἄλλα ἄσχημα ἔθνη, ἃ ἐπόρθουν οἱ Σκορδίσκοι μέχρι ἡρήμεωσαν τὴν χώραν καὶ δρυμῶν ἀβάτων ἐφ' ἡμέρας πλείους ἐποίησαν μεστήν. 5

6 Λοιπὴ δ' ἐστὶ τῆς μεταξὺ Ἰστρου καὶ τῶν ὀρῶν τῶν ἐφ' ἐκότερα τῆς Παιονίας ἢ Ποντικῆ παραλία, ἣ ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ στόματος τοῦ Ἰστρου μέχρι τῆς περὶ τὸν Αἴμον ὀρεινῆς καὶ μέχρι τοῦ στόματος τοῦ κατὰ Βυζάντιον. καθάπερ [δὲ] τὴν Ἰλλυρικὴν παραλίαν ἐπιόν- 10
τες μέχρι τῶν Κεραυνίων ὀρῶν προὔβημεν ἔξω τῆς Ἰλλυρικῆς πιπτόντων ὀρεινῆς, ἐχόντων δέ τι οἰκεῖον πέρας, τὰ μεσόγαια δ' ἔθνη τούτοις ἀφωρίσμεθα, νομίζοντες σημειωδεστέρας ἔσεσθαι τὰς τοιαύτας περιγραφὰς καὶ πρὸς τὰ νῦν καὶ πρὸς τὰ ὕστερον, οὕτω κἀν- 15
ταῦθα ἢ παραλία, κἀν ὑπερπίπτῃ τὴν ὀρεινὴν γραμμὴν, ὅμως εἰς οἰκεῖόν τι πέρας τελευτήσει τὸ τοῦ Πόν-
C.319 του στόμα καὶ πρὸς τὰ νῦν καὶ πρὸς τὰ ἐφεξῆς. ἔστιν οὖν ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ στόματος τοῦ Ἰστρου ἐν δεξιᾷ ἔχον-
τι τὴν συνεχῇ παραλίαν Ἰστρος πολίχνιον ἐν πεντα- 20
κοσίοις σταδίοις, Μιλησίων κτίσμα· εἶτα Τόμις, ἔτε-
ρον πολίχνιον ἐν διακοσίοις πεντήκοντα σταδίοις· εἶτα πόλις Κάλλατις ἐν διακοσίοις ὀγδοήκοντα, Ἑρακλεω-
τῶν ἄποικος· εἰτ' Ἀπολλωνία ἐν χιλίοις τριακοσίοις σταδίοις, ἄποικος Μιλησίων, τὸ πλεόν τοῦ κτίσματος 25
ἰδρυμένον ἔχουσα ἐν νησίᾳ τινί, [ὅπου] ἱερὸν τοῦ Ἀπόλλωνος, ἐξ οὗ Μάρκος Λεύκολλος τὸν κολοσσὸν ἦρε καὶ ἀνέθηκεν ἐν τῷ Καπετωλίῳ τὸν τοῦ Ἀπόλλωνος, Καλάμιδος ἔργον. ἐν τῷ μεταξὺ δὲ διαστήματι τῷ ἀπὸ Καλλάτιδος εἰς Ἀπολλωνίαν Βιζώνη τέ ἐστιν, 30
ἣς κατεπόθη πολὺ μέρος ὑπὸ σεισμῶν, καὶ Κρουνοὶ καὶ Ὀδησσὸς Μιλησίων ἄποικος, καὶ Ναύλοχος Με-

σημβριανῶν πολίχνιον· εἶτα τὸ Αἶμον ὄρος μέχρι τῆς
 δεῦρο θαλάττης διῆκον· εἶτα Μεσημβρία Μεγαρέων
 ἄποικος, πρότερον δὲ * Μενεβρία, οἶον * Μένα πόλις,
 τοῦ κτίσαντος * Μένα καλουμένου, τῆς δὲ πόλεως βρίας
 5 καλουμένης θρακιστί· ὥς καὶ ἡ τοῦ Σήλως πόλις Ση-
 λυμβρία προσηγόρευται, ἥ τε Αἶνος Πολτυμβρία ποτὲ
 ὠνομάζετο· εἰτ' Ἀρχιάλη πολίχνιον Ἀπολλωνιατῶν καὶ
 αὐτῇ Ἀπολλωνία. ἐν δὲ ταύτῃ τῇ παραλίᾳ ἐστὶν ἡ
 Τίριξις ἄκρα, χωρίον ἐρυμνόν, ᾧ ποτε καὶ Λυσίμαχος
 10 ἐχρήσατο γαζοφυλακίῳ. πάλιν δ' ἀπὸ τῆς Ἀπολλωνίας
 ἐπὶ Κυανέας στάδιοί εἰσι περὶ χιλίους καὶ πεντακοσίους,
 ἐν δὲ τῷ μεταξύ ἥ τε Θυνιάς τῶν Ἀπολλωνιατῶν χώρα,
 καὶ Φινόπολις καὶ Ἀνδριακή, συνάπτουσαι τῷ Σαλμυ-
 δησσῷ. ἐστὶ δ' οὗτος ἐρημος αἰγιαλὸς καὶ λιθώδης, ἀλί-
 15 μενος, ἀναπεπταμένος πολὺς πρὸς τοὺς βορέας, στα-
 δίων ὅσον ἑπτακοσίων μέχρι Κυανέων τὸ μῆκος, πρὸς
 ὃν οἱ ἐκπίπτοντες ὑπὸ τῶν Ἀστῶν διαρπάσσονται τῶν
 ὑπερκειμένων, Θρακίου ἔθνους. αἱ δὲ Κυάνεαι πρὸς
 τῷ στόματι τοῦ Πόντου εἰσὶ δύο νησίδια, τὸ μὲν τῇ
 20 Εὐρώπῃ προσεχὲς τὸ δὲ τῇ Ἀσίᾳ, πορθμῷ διεργόμενα
 ὅσον εἴκοσι σταδίων. τοσοῦτον δὲ διέχει καὶ τοῦ ἱεροῦ
 τοῦ Βυζαντίων καὶ τοῦ ἱεροῦ τοῦ Χαλκηδονίων, ὅπερ
 ἐστὶ τοῦ στόματος τοῦ Εὐξείνου τὸ στενώτατον· προῦ-
 ὄντι γὰρ δέκα σταδίους ἄκρα ἐστὶ πενταστάδιον ποι-
 25 οὔσα τὸν πορθμόν, εἶτα δίσταται ἐπὶ πλεόν καὶ ποιεῖν
 ἄρχεται τὴν Προποντίδα.

Ἀπὸ μὲν οὖν τῆς ἁκρας τῆς τὸ πενταστάδιον ποι- 2
 ούσης ἐπὶ τὸν ὑπὸ τῇ Συκῇ καλούμενον λιμένα στά-
 διοι πέντε καὶ τριάκοντα, ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ τὸ Κέρας τὸ C.320
 30 Βυζαντίων πέντε. ἐστὶ δὲ τὸ Κέρας προσεχὲς τῷ Βυ-

ξαντίων τείχει κόλπος ἀνέχων ὥς πρὸς δύοσιν ἐπὶ στα-
 δίους ἐξήκοντα, εἰκὼς ἐλάφον κέρατι· εἰς γὰρ πλεί-
 στους σχίζεται κόλπους ὥς ἂν κλάδους τινάς, εἰς οὓς
 ἐμπίπτουσα ἡ πηλαμὺς ἀλίσκεται ῥαδίως διὰ τε τὸ
 πλήθος αὐτῆς καὶ τὴν βίαν τοῦ συνελάνοντος ῥοῦ καὶ 5
 τὴν στενότητα τῶν κόλπων, ὥστε καὶ χερσὶν ἀλίσκε-
 σθαι. γεννᾶται μὲν οὖν τὸ ζῶον ἐν τοῖς ἔλεσι τῆς Μαι-
 ῳτίδος, ἰσχύσαν δὲ μικρὸν ἐκπίπτει διὰ τοῦ στόματος
 ἀγεληδὸν καὶ φέρεται παρὰ τὴν Ἀσιανὴν ἥονα μέχρι
 Τραπεζοῦντος καὶ Φαρνακείας· ἐνταῦθα δὲ πρῶτον 10
 συνίστασθαι συμβαίνει τὴν θήραν, οὐ πολλή δ' ἐστίν·
 οὐ γάρ πω τὸ προσῆκον ἔχει μέγεθος· εἰς δὲ Σινώπην
 προϊούσα ὥραιοτέρα πρὸς τε τὴν θήραν καὶ τὴν ταρι-
 χείαν ἐστίν· ἐπειδὴν δὲ ἤδη συνάψῃ ταῖς Κυανέαις καὶ
 παραλλάξῃ ταύτας, ἐκ τῆς Χαλκηδονιακῆς ἀκτῆς λευκή 15
 τις πέτρα προπίπτουσα φοβεῖ τὸ ζῶον ὥστ' εὐθύς εἰς
 τὴν περαιάν τρέπεσθαι· παραλαβὼν δ' ὁ ἐνταῦθα
 ῥοῦς, ἅμα καὶ τῶν τόπων εὐφυνῶν ὄντων πρὸς τὸ τὸν
 ἐκεῖ ῥοῦν τῆς θαλάττης ἐπὶ τὸ Βυζάντιον καὶ τὸ πρὸς
 αὐτῷ Κέρας τετράφθαι, φυσικῶς συνελάννεται δεῦρο 20
 καὶ παρέχει τοῖς Βυζαντίοις καὶ τῷ δήμῳ τῶν Ῥωμαίων
 πρόσοδον ἀξιόλογον. Χαλκηδόνιοι δ' ἐπὶ τῆς περαιᾶς
 ἰδρυμένοι πλησίον οὐ μετέχουσι τῆς εὐπορίας ταύτης
 διὰ τὸ μὴ προσπελάζειν τοῖς λιμέσιν αὐτῶν τὴν πηλα-
 μύδα· ἥ δὲ καὶ τὸν Ἀπόλλω φασὶ τοῖς κτίσασι τὸ Βυ- 25
 ζάντιον ὕστερον μετὰ τὴν ὑπὸ Μεγαρέων Χαλκηδόνας
 κτίσιν χρηστηριαζομένοις προστάξαι ποιήσασθαι τὴν
 ἰδρυσιν ἀπεναντίον τῶν τυφλῶν, τυφλοὺς καλέσαντα
 τοὺς Χαλκηδονίους, ὅτι πρότεροι πλεύσαντες τοὺς τό-

7. post ἀλίσκεσθαι: διὰ τὴν στενοχωρίαν.

πους, ἀφέντες τὴν πέραν κατασχεῖν τοσοῦτον πλοῦτον ἔχουσιν, εἵλοντο τὴν λυπροτέραν.

Μέχρι μὲν δὴ Βυζαντίου προήλθομεν, ἐπειδὴ πόλις ἐπιφανὴς πλησιάζουσα μάλιστα τῷ στόματι εἰς γνωριμώτερον πέρας ἀπὸ τοῦ Ἰστρου τὸν παράπλου τελευτῶντα ἀπέβαινεν. ὑπέρεκται δὲ τοῦ Βυζαντίου τὸ τῶν Ἀστῶν ἔθνος, ἐν ᾧ πόλις Καλύβη, Φιλίππου τοῦ Ἀμύντου τοὺς πονηροτάτους ἐνταῦθα ἰδρύναντος.

Τὰ μὲν οὖν ἀφοριζόμενα ἔθνη τῷ τε Ἰστρῳ καὶ 7
10 τοῖς Ἰλλυρικοῖς ὕρεσι καὶ Θρακίοις ταῦτ' ἔστιν ὧν ἄξιον μνησθῆναι, κατέχοντα τὴν Ἀδριατικὴν παραλίαν πᾶσαν ἀπὸ τοῦ μυχοῦ ἀρξάμενα, καὶ τὴν τὰ ἀριστερὰ τοῦ Πόντου λεγομένην ἀπὸ Ἰστρου ποταμοῦ μέχρι Βυζαντίου. λοιπὰ δὲ ἔστι τὰ νότια μέρη τῆς λε-0.321
15 χθείσης ὀρεινῆς καὶ ἐξῆς τὰ ὑποπίπτοντα χωρία, ἐν οἷς ἔστιν ἡ τε Ἑλλὰς καὶ ἡ προσεχὴς βάρβαρος μέχρι τῶν ὀρῶν.

Ἐκαταῖος μὲν οὖν ὁ Μιλήσιος περὶ τῆς Πελοποννήσου φησὶν διότι πρὸ τῶν Ἑλλήνων ὥκησαν αὐτὴν 20 βάρβαροι. σχεδὸν δέ τι καὶ ἡ σύμπασα Ἑλλὰς κατοικία βαρβάρων ὑπῆρξε τὸ παλαιόν, ἀπ' αὐτῶν λογιζομένοις τῶν μνημονευομένων, Πέλοπος μὲν ἐκ τῆς Φρυγίας ἐπαγαγομένου λαὸν εἰς τὴν ἀπ' αὐτοῦ κληθεῖσαν Πελοπόννησον, Δαναοῦ δὲ ἐξ Αἰγύπτου, Δρυό-
25 πων τε καὶ Καυκῶνων καὶ Πελασγῶν καὶ Δελέγων καὶ ἄλλων τοιούτων κατανειμαμένων τὰ ἐντὸς Ἰσθμοῦ· καὶ τὰ ἐκτὸς δέ· τὴν μὲν γὰρ Ἀττικὴν οἱ μετὰ Εὐμόλου Θοῤ᾽ακες ἔσχον, τῆς δὲ Φωκίδος τὴν Δαυλίδα Τηρεῦς, τὴν δὲ Καδμείαν οἱ μετὰ Κάδμου Φοίνικες, αὐ-
30 τὴν δὲ τὴν Βοιωτίαν Ἄονες καὶ Τέμμικες καὶ Ἵαντες·

30. post Ἵαντες: ὡς δὲ Πίνδαρός φησιν „ἦν ὅτε σῶας Βοιωτίον ἔθνος ἐννεπον.“

καὶ ἀπὸ τῶν ὀνομάτων δὲ ἐνίων τὸ βάρβαρον ἐμφαίνεται, Κέκροψ καὶ Κόδρος καὶ Ἄϊκλος καὶ Κόθος καὶ Δρύμας καὶ Κρίνακος οἱ δὲ Θραῖκες καὶ Ἰλλυριοὶ καὶ Ἑπειῶται καὶ μέχρι νῦν ἐν πλευραῖς εἰσιν· ἔτι μέντοι μᾶλλον πρότερον ἢ νῦν, ὅπου γε καὶ τῆς ἐν τῷ⁵ παρόντι Ἑλλάδος ἀναντιλέκτως οὔσης τὴν πολλὴν οἱ βάρβαροι ἔχουσι, Μακεδονίαν μὲν Θραῖκες καὶ τινα μέρη τῆς Θετταλίας, Ἀκαρνανίας δὲ καὶ Αἰτωλίας [τὰ] ἄνω Θεσπρωτοὶ καὶ Κασσωπαῖοι καὶ Ἀμφίλοχοι καὶ Μολοττοὶ καὶ Ἀθαμᾶνες, Ἑπειρωτικὰ ἔθνη. 10

2 Περὶ μὲν οὖν Πελασγῶν εἴρηται, τοὺς δὲ Λέλεγας τινὲς μὲν τοὺς αὐτοὺς Καρσὶν εἰκάζουσιν, οἱ δὲ συνοίκους μόνον καὶ συστρατιώτας· διόπερ ἐν τῇ Μιλησίᾳ Λελέγων κατοικίας λέγεσθαί τινας, πολλαχοῦ δὲ τῆς Καρίας τάφους Λελέγων καὶ ἐρύματα ἔρημα Λελέγεια 15 καλούμενα. ἢ τε Ἰωνία νῦν λεγομένη πᾶσα ὑπὸ Καρῶν ᾤκειτο καὶ Λελέγων· ἐκβαλόντες δὲ τούτους οἱ Ἴωνες αὐτοὶ τὴν χώραν κατέσχον, ἔτι δὲ πρότερον οἱ τὴν Τροίαν ἐλόντες ἐξήλασαν τοὺς Λέλεγας ἐκ τῶν περὶ τὴν Ἰδην τόπων τῶν κατὰ Πήδασον καὶ τὸν Σατνιό- 20 εντα ποταμόν. ὅτι μὲν οὖν βάρβαροι ἦσαν οὗτοι, καὶ αὐτὸ τὸ κοινωνῆσαι τοῖς Καρσὶ νομίζοιτ' ἂν σημείον· ὅτι δὲ πλάνητες καὶ μετ' ἐκείνων καὶ χωρὶς καὶ ἐκ παλαιοῦ, καὶ αἱ Ἀριστοτέλους πολιτεῖαι δηλοῦσιν. ἐν μὲν γὰρ τῇ Ἀκαρνανῶν φησὶ τὸ μὲν ἔχειν αὐτῆς Κουρήτας, 25 C.322 τὸ δὲ προσεσπέριον Λέλεγας, εἶτα Τηλεβόας· ἐν δὲ τῇ Αἰτωλῶν τοὺς νῦν Λοκροὺς Λέλεγας καλεῖ, κατασχεῖν δὲ καὶ τὴν Βοιωτίαν αὐτοὺς φησιν· ὁμοίως δὲ καὶ ἐν τῇ Ὀπουντίῳ καὶ Μεγαρέων· ἐν δὲ τῇ Λευκαδίων καὶ αὐτόχθονά τινα Λέλεγα ὀνομάζει, τούτου δὲ θυ- 30 γατριδοῦν Τηλεβόαν, τοῦ δὲ παῖδας δύο καὶ εἰκοσι Τηλεβόας, ὧν τινὰς οἰκῆσαι τὴν Λευκάδα. μάλιστα δ'

- ἄν τις Ἡσιόδῳ πιστεύσειεν οὕτως περὶ αὐτῶν εἰπόντι
 „ἦτοι γὰρ Δοκρὸς Δελέγων ἠγήσατο λαῶν, τοὺς δ' ἄ
 „ποτε Κρονίδης, Ζεὺς ἄφθιτα μῆδεα εἰδώς, λεκτοὺς
 „ἐκ γαίης λάουσιν πόρε Δευκαλίωνι.“ τῇ γὰρ ἐτυμολο-
 5 γία τὸ συλλέκτους γεγονέναι τινὰς ἐκ παλαιοῦ καὶ μι-
 γάδας αἰνίττεσθαι μοι δοκεῖ καὶ διὰ τοῦτο ἐκλελοιπέναι
 τὸ γένος· ἅπερ ἂν τις καὶ περὶ Κανκῶνων λέγοι, νῦν
 οὐδαμοῦ ὄντων πρότερον δ' ἐν πλείοσι τόποις κατο-
 κισμένων.
- 10 Πρότερον μὲν οὖν καίπερ μικρῶν καὶ πολλῶν καὶ 3
 ἀδόξων ὄντων τῶν ἐθνῶν, ὅμως διὰ τὴν εὐανδρίαν
 καὶ τὸ βασιλεύεσθαι κατὰ σφᾶς οὐ πάνυ ἦν χαλεπὸν
 διαλαβεῖν τοὺς ὄρους αὐτῶν, νυνὶ δ' ἐρήμου τῆς πλεί-
 στης χώρας γεγενημένης καὶ τῶν κατοικιῶν καὶ μάλι-
 15 στα τῶν πόλεων ἠφανισμένων, οὐδ' εἰ δύναιτό τις
 ἀκριβοῦν ταῦτα, οὐδὲν ἂν ποιολή χρησίμον διὰ τὴν
 ἀδοξίαν καὶ τὸν ἀφανισμόν αὐτῶν, ὃς ἐκ πολλοῦ χρό-
 νου λαβὼν τὴν ἀρχὴν οὐδὲ νῦν πω πέπανται κατὰ
 πολλὰ μέρη διὰ τὰς ἀποστάσεις, ἀλλ' ἐνστρατοπεδεύ-
 20 ουσιν αὐτοῖς Ῥωμαῖοι τοῖς οἰκοῖς, κατασταθέντες ὑπ'
 αὐτῶν δυνάσται. τῶν γοῦν Ἑπειρωτῶν ἑβδομήκοντα
 πόλεις Πολύβιός φησιν ἀνατρέφαι Παῦλον μετὰ τὴν
 Μακεδόνων καὶ Περσέως κατάλυσιν (Μολοττῶν δ'
 ὑπάρξει τὰς πλείστας), πέντε δὲ καὶ δέκα μυριάδας
 25 ἀνθρώπων ἐξανδραποδίσασθαι. ὅμως δ' οὖν ἐγχειρή-
 σομεν, ἐφ' ὅσον τῇ γραφῇ τε προσήκει καὶ ἡμῖν ἐφι-
 κτόν, ἐπελθεῖν τὰ καθ' ἕκαστα, ἀρξάμενοι ἀπὸ τῆς
 κατὰ τὸν Ἰόνιον κόλπον παραλίας· αὕτη δ' ἐστὶν εἰς
 ἣν ὁ ἑκπλοὺς ὁ ἐκ τοῦ Ἀδρίου τελευτᾷ.
- 30 Ταύτης δὴ τὰ πρῶτα μέρη τὰ περὶ Ἐπίδαμνον καὶ 4
 Ἀπολλωνίαν ἐστίν. ἐκ δὲ τῆς Ἀπολλωνίας εἰς Μακε-
 δονίαν ἢ Ἐργνατία ἐστὶν ὁδὸς πρὸς ἔω, βεβηματισμένη

κατὰ μίλιον καὶ κατεστηλωμένη μέχρι Κυψέλων καὶ
 Ἐβρου ποταμοῦ· μιλίων δ' ἐστὶ πεντακοσίων τριά-
 κοντα πέντε· λογιζομένῳ δέ, ὥς μὲν οἱ πολλοί, τὸ μί-
 λιον ὀκταστάδιον τετρακισχίλιοι ἂν εἴεν στάδιοι καὶ
 ἐπ' αὐτοῖς διακόσιοι ὀγδοήκοντα, ὥς δὲ Πολύβιος⁵
 προστιθεὶς τῷ ὀκτασταδίῳ δίπλεθρον, ὃ ἐστὶ τρίτον
 σταδίου, προσθετέον ἄλλους σταδίους ἑκατὸν ἑβδομή-
 C.323κοντα ὀκτώ, τὸ τρίτον τοῦ τῶν μιλίων ἀριθμοῦ. συμ-
 βαίνει δ' ἀπὸ ἴσου διαστήματος συμπίπτειν εἰς τὴν αὐ-
 τὴν ὁδὸν τοὺς τ' ἐκ τῆς Ἀπολλωνίας ὁρμηθέντας καὶ¹⁰
 τοὺς ἐξ Ἐπιδάμνου. ἡ μὲν οὖν πᾶσα Ἐγνατία καλεῖται,
 ἡ δὲ πρώτη ἐπὶ Κανδακίας λέγεται ὄρους Ἰλλυρικοῦ,
 διὰ Ἀνχινδοῦ πόλεως καὶ Πυλῶνος τόπου ὀρίζοντος ἐν
 τῇ ὑδρὶ τὴν τε Ἰλλυρίδα καὶ τὴν Μακεδονίαν· ἐκεῖθεν
 δ' ἐστὶ παρὰ Βαρνοῦντα διὰ Ἡρακλείας καὶ Ἀνγκη-¹⁵
 στῶν καὶ Ἐορδῶν εἰς Ἑδεσσαν καὶ Πέλλαν μέχρι Θεσ-
 σαλονικείας· μίλια δ' ἐστὶ, φησὶ Πολύβιος, ταῦτα δια-
 κόσια ἐξήκοντα ἐπτά. ταύτην δὲ τὴν ὁδὸν ἐκ τῶν περὶ
 τὴν Ἐπιδάμνον καὶ τὴν Ἀπολλωνίαν τόπων ἰοῦσιν ἐν
 δεξιᾷ μὲν ἐστὶ τὰ Ἡπειρωτικά ἔθνη κλυζόμενα τῷ Σι-²⁰
 κελικῷ πελάγει μέχρι τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου, ἐν ἀρι-
 στερᾷ δὲ τὰ ὕψη τὰ τῶν Ἰλλυριῶν ἃ προδιήλθομεν, καὶ
 τὰ ἔθνη τὰ παροικοῦντα μέχρι Μακεδονίας καὶ Παιό-
 νων. εἴτ' ἀπὸ μὲν Ἀμβρακικοῦ κόλπου τὰ νεύοντα
 ἐφεξῆς πρὸς ἑω, τὰ ἀντιπαρήκοντα τῇ Πελοποννήσῳ,²⁵
 τῆς Ἑλλάδος ἐστίν· εἴτ' ἐκπίπτει [εἰς] τὸ Αἰγαῖον πέ-
 λαγος ἀπολιπόντα ἐν δεξιᾷ τὴν Πελοπόννησον ὅλην.
 ἀπὸ δὲ τῆς ἀρχῆς τῶν Μακεδονικῶν ὁρῶν καὶ τῶν
 Παιονικῶν μέχρι Στρυμόνος ποταμοῦ Μακεδόνες τε
 οἰκοῦσι καὶ Παίονες καὶ τινες τῶν ὀρεινῶν Θρακῶν·³⁰
 τὰ δὲ πέραν Στρυμόνος ἤδη μέχρι τοῦ Ποντικοῦ στό-
 ματος καὶ τοῦ Αἴμου πάντα Θρακῶν ἐστὶ πλὴν τῆς

παραλλας· αὐτὴ δ' ὑφ' Ἑλλήνων οἰκεῖται, τῶν μὲν ἐπὶ
τῇ Προποντίδι ἰδρυμένων, τῶν δὲ ἐφ' Ἑλλησπόντῳ
καὶ τῷ Μέλανι κόλπῳ, τῶν δ' ἐπὶ τῷ Αἰγαίῳ. τὸ δ'
Αἰγαίου πέλαγος δύο κλύζει πλευρὰς τῆς Ἑλλάδος, τὴν
5 μὲν πρὸς ἑω βλέπουσαν, τείνουσαν δὲ ἀπὸ Σουνίου
πρὸς τὴν ἄρκτον μέχρι τοῦ Θερμαίου κόλπου καὶ Θεσ-
σαλονικείας Μακεδονικῆς πόλεως, ἣ νῦν μάλιστα τῶν
ἄλλων εὐανδρεῖ, τὴν δὲ πρὸς νότον τὴν Μακεδονικὴν
ἀπὸ Θεσσαλονικείας μέχρι Στρυμόνος· τινὲς δὲ καὶ τὴν
10 ἀπὸ Στρυμόνος μέχρι Νέστου τῇ Μακεδονίᾳ προσνέ-
μουν, ἐπειδὴ Φίλιππος ἐσπούδασε διαφερόντως περὶ
ταῦτα τὰ χωρία ὥστ' ἐξειδιώσασθαι, καὶ συνεστήσατο
προσόδους μεγίστας ἐκ τῶν μετὰλλων καὶ τῆς ἄλλης
εὐφυΐας τῶν τόπων. ἀπὸ δὲ Σουνίου μέχρι Πελοπον-
15 νήσου τὸ Μυρτώον ἔστι καὶ Κρητικὸν πέλαγος καὶ Λι-
βυκὸν σὺν τοῖς κόλποις μέχρι τοῦ Σικελικοῦ· τοῦτο δὲ
καὶ τὸν Ἀμβρακικὸν καὶ Κορινθιακὸν καὶ Κρῖσαιον
ἐκπληροῖ κόλπον.

Τῶν μὲν οὖν Ἑπειρωτῶν ἔθνη φησὶν εἶναι Θεό- 5
20 πομπος τετταρεσκαίδεκα, τούτων δ' ἐνδοξότατα Χάονες
καὶ Μολοττοὶ διὰ τὸ ἄρξαι ποτὲ πάσης τῆς Ἑπειρώτι-
δος πρότερον μὲν Χάονας, ὕστερον δὲ Μολοττούς, οἵ 0.324
καὶ διὰ τὴν συγγένειαν τῶν βασιλέων ἐπὶ πλεόν ἡϋξή-
θησαν (τῶν γὰρ Αἰακιδῶν ἦσαν), καὶ διὰ τὸ παρὰ τού-
25 τοις εἶναι τὸ ἐν Λαωδώνῃ μαντεῖον, παλαιὸν τε καὶ ὀνο-
μαστὸν ὄν. Χάονες μὲν οὖν καὶ Θεσπρωτοὶ καὶ μετὰ
τούτους ἐφεξῆς Κασσωπαῖοι (καὶ οὗτοι δ' εἰσὶ Θεσπρω-
τοὶ) τὴν ἀπὸ τῶν Κεραυνίων ὁρῶν μέχρι τοῦ Ἀμβρα-
κικοῦ κόλπου παραλίαν νέμονται χώραν εὐδαίμονα
30 ἔχοντες· ὁ δὲ πλοῦς ἀπὸ τῶν Χαόνων ἀρξαμένῳ πρὸς
ἀνίσχοντα ἥλιον καὶ πρὸς τὸν Ἀμβρακικὸν κόλπον καὶ
τὸν Κορινθιακόν, ἐν δεξιᾷ ἔχοντι τὸ Αὐσόιον πέλα-

γος, ἐν ἀριστερᾷ δὲ τὴν Ἡπειρον, εἰς χίλιοι καὶ τρια-
 κόσιοι στάδιοι ἀπὸ τῶν Κεραυνίων ἐπὶ τὸ στόμα τοῦ
 Ἀμβρακικοῦ κόλπου. ἐν τούτῳ δ' ἐστὶ τῷ διαστήματι
 Πάνορμος τε λιμὴν μέγας ἐν μέσοις τοῖς Κεραυνίοις
 ὄρεσι, καὶ μετὰ ταῦτα Ὀγγησμος λιμὴν ἄλλος, καθ' ὃν 5
 τὰ δυσμικὰ ἄκρα τῆς Κορκυραίας ἀντίκειται, καὶ πάλιν
 ἄλλος Κασσιόπη, ἃς οὗ ἐπὶ Βρεντέσιον χίλιοι
 ἑπτακόσιοι στάδιοι· οἱ δ' ἴσοι καὶ ἐπὶ Τάραντα ἀπὸ
 ἄλλου ἀκρωτηρίου νοτιωτέρου τῆς Κασσιόπης ὃ κα-
 λουῖσι Φαλακρόν. μετὰ δὲ Ὀγγησμον Ποσειδίου καὶ 10
 Βουθρωτὸν ἐπὶ τῷ στόματι τοῦ Πηλώδους καλουμέ-
 νου λιμένος ἰδρυμένον ἐν τόπῳ χειρρονησίζοντι, ἐποί-
 κους ἔχον Ῥωμαίους, καὶ τὰ Σύβοτα. εἰς δὲ νησιδες
 τὰ Σύβοτα τῆς μὲν Ἡπείρου μικρὸν ἀπέχουσιν, κατὰ
 δὲ τὸ ἑῶν ἄκρον τῆς Κορκυραίας τὴν Λευκίμμαν κεί- 15
 μεναι. καὶ ἄλλαι δ' ἐν τῷ παράπλῳ νησιδες εἰδὲν οὐκ
 ἄξιαι μνήμης. ἔπειτα ἄκρα Χειμέριον καὶ Γλυκὺς λι-
 μὴν, εἰς ὃν ἐμβάλλει ὁ Ἀχέρων ποταμός, ῥέων ἐκ τῆς
 Ἀχερουσίας λίμνης καὶ δεχόμενος πλείους ποταμούς
 ὥστε καὶ γλυκαίνειν τὸν κόλπον· ῥεῖ δὲ καὶ ὁ Θύαμις 20
 πλησίον. ὑπέρεκειται δὲ τούτου μὲν τοῦ κόλπου Κίχυ-
 ρος, ἡ πρότερον Ἐφύρα, πόλις Θεσπρωτῶν· τοῦ δὲ
 κατὰ Βουθρωτὸν ἡ Φοινίκη. ἐγγὺς δὲ τῆς Κιχύρου
 πολίχνην Βουχέτιον Κασσωπαίων μικρὸν ὑπὲρ τῆς
 θαλάττης ὄν, καὶ Ἐλάτρια καὶ Πανδοσία καὶ Βατίαι ἐν 25
 μεσογαίᾳ, καθήκει δ' αὐτῶν ἡ χώρα μέχρι τοῦ κόλπου.
 μετὰ δὲ Γλυκὺν λιμένα ἐφεξῆς εἰσὶ δύο ἄλλοι λιμένες,
 ὁ μὲν ἐγγυτέρω καὶ ἐλάττων Κόμαρος ἰσθμὸν ποιῶν
 ἐξήκοντα σταδίων πρὸς τὸν Ἀμβρακικὸν κόλπον καὶ
 τὸ τοῦ Σεβαστοῦ Καίσαρος κτίσμα τὴν Νικόπολιν· ὁ 30
 δὲ ἀπωτέρω καὶ μείζων καὶ ἀμείνων πλησίον τοῦ στό-

ματος τοῦ κόλπου, διέχων τῆς Νικοπόλεως ὅσον δώ-
δεκα σταδίου.

Ἐφεξῆς δὲ τὸ στόμα τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου· τού-^{C.325}
του δὲ τοῦ κόλπου τὸ μὲν στόμα μικρῷ τοῦ τετραστα-⁶
δίου μείζον, ὃ δὲ κύκλος καὶ τριακοσίων σταδίων, εὐ-
λίμενος δὲ πᾶς. οἰκοῦσι δὲ τὰ μὲν ἐν δεξιᾷ εἰσπλεύουσι
τῶν Ἑλλήνων Ἀκαρναῖνες· καὶ λερόν τοῦ Ἀκτίου Ἀπόλ-
λωνος ἐνταῦθά ἐστι πλησίον τοῦ στόματος, λόφος
τις ἐφ' ᾧ ὁ νεῶς, καὶ ὑπ' αὐτῷ πεδῖον ἄλσος ἔχον καὶ
10 νεώρια, ἐν οἷς ἀνέθηκε Καῖσαρ τὴν δεκαναῖαν ἀκρο-
θίνιον, ἀπὸ μονοκρότου μέχρι δεκῆρους· ὑπὸ πυρὸς
δ' ἠφανίσθαι καὶ οἱ νεώσοικοι λέγονται καὶ τὰ πλοῖα·
ἐν ἀριστερᾷ δὲ ἡ Νικόπολις καὶ τῶν Ἑπειρωτῶν οἱ
Κασσωπαῖοι μέχρι τοῦ μυχοῦ τοῦ κατὰ Ἀμβρακίαν·
15 ὑπέρεκται δὲ αὕτη τοῦ μυχοῦ μικρόν, Γόργου τοῦ
Κυψέλου κτίσμα· παραρρεῖ δ' αὐτὴν ὁ Ἀρατθος πο-
ταμὸς ἀνάπλουν ἔχων ἐκ θαλάττης εἰς αὐτὴν ὀλίγων
σταδίων, ἀρχόμενος ἐκ Τύμφης ὄρους καὶ τῆς Παρω-
ραίας. ἡντύχει μὲν οὖν καὶ πρότερον ἡ πόλις αὕτη δια-
20 φερόντως (τὴν γοῦν ἐπωνυμίαν ἐντεῦθεν ἔσχηκεν ὁ
κόλπος), μάλιστα δ' ἐκόσμησεν αὐτὴν Πύρρος βασι-
λεῖφ χρησάμενος τῷ τόπῳ· Μακεδόνες δ' ὕστερον καὶ
Ῥωμαῖοι καὶ ταύτην καὶ τὰς ἄλλας κατεπόνησαν τοῖς
συνεχέσι πολέμοις διὰ τὴν ἀπειθείαν, ὥστε τὸ τελευ-
25 ταῖον ὁ Σεβαστὸς ὁρῶν ἐκλειμμένης τελέως τὰς πό-
λεις εἰς μίαν συνήκισε τὴν ὑπ' αὐτοῦ κληθεῖσαν Νι-
κόπολιν ἐν τῷ κόλπῳ τούτῳ, ἐκάλεσε δ' ἐπωνυμιον τῆς
νίκης, ἐν ᾗ κατεναυμάχησεν Ἀντώνιον πρὸ τοῦ στό-
ματος τοῦ κόλπου καὶ τὴν Αἰγυπτίων βασίλισσαν
30 Κλεοπάτραν παροῦσαν ἐν τῷ ἁγῶνι καὶ αὐτήν. ἡ μὲν
οὖν Νικόπολις εὐάνδρεῖ καὶ λαμβάνει καθ' ἡμέραν
ἐπίδοσιν, χώραν τε ἔχουσα πολλὴν καὶ τὸν ἐκ τῶν λα-

φύρων κόσμον, τό τε κατασκευασθὲν τέμενος ἐν τῷ
 προαστείῳ τὸ μὲν εἰς τὸν ἀγῶνα τὸν πεντετηρικὸν ἐν
 ἄλσει ἔχοντι γυμνάσιόν τε καὶ στάδιον, τὸ δ' ἐν τῷ
 ὑπερκειμένῳ τοῦ ἄλσεως ἱερῷ λόφῳ τοῦ Ἀπόλλωνος.
 ἀποδέδεικται δ' ὁ ἀγὼν Ὀλύμπιος, τὰ Ἄκτια, ἱερὸς τοῦ 5
 Ἀκτίου Ἀπόλλωνος, τὴν δ' ἐπιμέλειαν ἔχουσιν αὐτοῦ
 Λακεδαιμόνιοι. αἱ δ' ἄλλαι κατοικίαι περιπόλιοι τῆς
 Νικοπόλεως εἰσιν. ἤγετο δὲ καὶ πρότερον τὰ Ἄκτια τῷ
 θεῷ, στεφανίτης ἀγῶν, ὑπὸ τῶν περιόικων· νυνὶ δ'
 ἐντιμότερον ἐποίησεν ὁ Καῖσαρ. 10

7 Μετὰ δὲ τὴν Ἀμβρακίαν τὸ Ἄργος ἐστὶ τὸ Ἀμφι-
 λοχικόν, κτίσμα Ἀλκμαίωνος καὶ τῶν παίδων. Ἐφο-
 ρος μὲν οὖν φησὶ τὸν Ἀλκμαίωνα μετὰ τὴν Ἐπιγόνων
 ἐπὶ τὰς Θήβας στρατείαν παρακληθέντα ὑπὸ Διομή-
 δους συνελθεῖν εἰς Αἰτωλίαν αὐτῷ καὶ συγκατακτῆ- 15
 σασθαι ταυτην τε καὶ τὴν Ἀκαρνανίαν· καλοῦντος δ'
 αὐτοῦς ἐπὶ τὸν Τρωικὸν πόλεμον Ἀγαμέμνωνος, τὸν
 0.326 μὲν Διομήδῃ πορευθῆναι, τὸν δ' Ἀλκμαίωνα μέιναντα
 ἐν τῇ Ἀκαρνανίᾳ τὸ Ἄργος κτίσαι, καλέσαι δ' Ἀμφιλο-
 χικὸν ἐπώνυμον τοῦ ἀδελφοῦ, Ἴναχον δὲ τὸν διὰ τῆς 20
 χώρας ῥέοντα ποταμὸν εἰς τὸν κόλπον ἀπὸ τοῦ κατὰ
 τὴν Ἀργείαν προσαγορεύσαι. Θουκυδίδης δὲ φησιν
 αὐτὸν Ἀμφίλοχον μετὰ τὴν ἐκ Τροίας ἐπάνοδον δυσά-
 ρεστοῦντα τοῖς ἐν Ἄργει παρελθεῖν εἰς τὴν Ἀκαρνα-
 νίαν, διαδεξάμενον δὲ τὴν τᾶδελφοῦ δυναστείαν κτίσαι 25
 τὴν πόλιν ἐπώνυμον ἑαυτοῦ.

Ἡπειρώται δ' εἰσὶ καὶ Ἀμφίλοχοι καὶ οἱ ὑπερκεί-
 μενοι καὶ συνάπτοντες τοῖς Ἰλλυρικοῖς ὄρεσι, τραχεῖαν
 οἰκοῦντες χώραν, Μολοττοὶ τε καὶ Ἀθαμᾶνες καὶ Αἰ-
 θικες καὶ Τυμφαῖοι καὶ Ὀρέσται Παρωραῖοι τε καὶ 30
 Ἀτιντᾶνες, οἱ μὲν πλησιάζοντες τοῖς Μακεδόσι μάλ-
 λον οἱ δὲ τῷ Ἰονίῳ κόλπῳ. λέγεται δὲ τὴν Ὀρεστιάδα

κατασχεῖν ποτε Ὀρέστης φεύγων τὸν τῆς μητρὸς φό-
 νον καὶ καταλιπεῖν ἐπώνυμον ἑαυτοῦ τὴν χώραν, κτί-
 σαι δὲ καὶ πόλιν, καλεῖσθαι δ' αὐτὴν Ἀργος Ὀρεστι-
 κόν. ἀναμέμικται δὲ τούτοις τὰ Ἰλλυρικά ἔθνη τὰ πρὸς
 5 τῷ νοτίῳ μέρει τῆς ὀρεινῆς καὶ τὰ ὑπὲρ τοῦ Ἰονίου
 κόλπου· τῆς γὰρ Ἐπιδάμνου καὶ τῆς Ἀπολλωνίας μέ-
 χρι τῶν Κεραυνίων ὑπεροικοῦσι Βυλλιόνες τε καὶ Ταυ-
 λάντιοι καὶ Παρθῖνοι καὶ Βρυῖοι· πλησίον δὲ πού καὶ
 τὰ ἀργυρεῖα τὰ ἐν Λαμαστίῳ, περὶ ἃ λυέσται συνεστή-
 10 σαντο τὴν θυναστείαν καὶ Ἐρχέλειοι, οὓς καὶ Σεσαρη-
 θίους καλοῦσι· πρὸς δὲ τούτοις λυγκῆσται τε καὶ ἡ
 Δευρίοπος καὶ ἡ τρίπολις Πελαγονία καὶ Ἑορδοὶ καὶ
 Ἑλίμεια καὶ Ἑράτυρα. ταῦτα δὲ πρότερον μὲν κατεδυ-
 ναστεύετο ἕκαστα, ὧν ἐν τοῖς Ἐρχελείοις οἱ Κάδμου
 15 καὶ Ἀρμονίας ἀπόγονοι ἦρχον, καὶ τὰ μυθευόμενα περὶ
 αὐτῶν ἐκεῖ δείκνυνται. οὗτοι μὲν οὖν οὐχ ὑπὸ ἰθαγε-
 νῶν ἦρχοντο· οἱ δὲ λυγκῆσται ὑπ' Ἀρραβαῖφ ἐγένοντο
 τοῦ Βακχιαδῶν γένους ὄντι· τούτου δ' ἦν θυγατριδῆ
 ἡ Φιλίππου μήτηρ τοῦ Ἀμύντου Εὐρυδίκη, Σίρρα δὲ
 20 θυγάτηρ· καὶ τῶν Ἡπειρωτῶν δὲ Μολοττοὶ ὑπὸ Πύρ-
 ρῳ τῷ Νεοπτολέμου τοῦ Ἀχιλλέως καὶ τοῖς ἀπογόνους
 αὐτοῦ Θετταλοῖς οὖσι γεγονότες· οἱ λοιποὶ δὲ ὑπὸ ἰθα-
 γενῶν ἦρχοντο· εἴτ' ἐπικρατούντων αἰετίνων κατέ-
 στρεψεν ἅπαντα εἰς τὴν Μακεδόνων ἀρχήν, πλὴν ὀλί-
 25 γων τῶν ὑπὲρ τοῦ Ἰονίου κόλπου. καὶ δὴ καὶ τὰ περὶ
 Ἀλύκον καὶ Πελαγονίαν καὶ Ὀρεστιάδα καὶ Ἑλίμειαν
 τὴν ἄνω Μακεδονίαν ἐκάλουν, οἱ δ' ὕστερον καὶ ἔλευ-
 θέραν· ἔνιοι δὲ καὶ σύμπασαν τὴν μέχρι Κορκύρας
 Μακεδονίαν προσαγορεύουσιν, αἰτιολογοῦντες ἅμαC.327
 30 ὅτι καὶ κουρᾷ καὶ διαλέκτῳ καὶ γλαμῦδι καὶ ἄλλοις
 τοιούτοις χρῶνται παραπλησίως· ἔνιοι δὲ καὶ δίγλωτ-
 τοὶ εἰσι. καταλυθείσης δὲ τῆς Μακεδόνων ἀρχῆς ὑπὸ

Ῥωμαίους ἔπεσε. διὰ δὲ τούτων ἐστὶ τῶν ἐθνῶν ἡ Ἑγνατία ὁδὸς ἐξ Ἐπιδάμνου καὶ Ἀπολλωνίας· περὶ δὲ τὴν ἐπὶ Κανδακίας ὁδὸν αἶ τε λίμναι εἰσὶν αἱ περὶ Ἀνχιδὸν ταριχείας ἰχθύων ἀντάρκεις ἔχουσαι, καὶ ποταμοὶ οἳ τε εἰς τὸν Ἰόνιον κόλπον ἐκπίπτοντες καὶ οἱ ἐπὶ τὰ νότια μέρη, ὃ τ' Ἰναχος καὶ ὁ Ἀρατῆος καὶ ὁ Ἀχελῶος καὶ ὁ Εὐήνος ὁ Ἀνκόρμας πρότερον καλούμενος, ὁ μὲν εἰς τὸν κόλπον τὸν Ἀμβρακικὸν ἐμβάλλων ὁ δὲ εἰς τὸν Ἀχελῶον, αὐτὸς δὲ ὁ Ἀχελῶος εἰς τὴν θάλατταν καὶ ὁ Εὐήνος, ὁ μὲν τὴν Ἀκαρνανίαν διεξιὼν ὁ δὲ τὴν Αἰτωλίαν· ὁ δὲ Ἐρίγων πολλὰ δεξιόμενος ῥεύματα ἐκ τῶν Ἰλλυρικῶν ὁρῶν καὶ Ἀνγκηστῶν καὶ Βρύγων καὶ Δευριόπων καὶ Πελαγόνων εἰς τὸν Ἀξίον ἐκδίδωσι.

- 9 Πρότερον μὲν οὖν καὶ πόλεις ἦσαν ἐν τοῖς ἔθνεσι τούτοις· τρίπολις γοῦν ἡ Πελαγονία ἐλέγετο, ἥς καὶ 15 Ἀξωρος ἦν, καὶ ἐπὶ τῷ Ἐρίγωνι πᾶσαι αἱ τῶν Δευριόπων πόλεις ᾤκνητο, ὧν τὸ Βρυάνιον καὶ Ἀλαλκομεναὶ καὶ Στύβαρα· Κύδραι δὲ Βρύγων, Αἰγίνιον δὲ Τυμφαίων, ὅμορον Αἰθικίᾳ καὶ Τρίκῃ· πλησίον δ' ἦδη τῆς τε Μακεδονίας καὶ τῆς Θετταλίας περὶ τὸ Ποῖον 20 ὄρος καὶ τὴν Πίνδον Αἰθικὲς τε καὶ τοῦ Πηνειοῦ πηγαί, ὧν ἀμφισβητοῦσι Τυμφαῖοί τε καὶ [οἱ] ὑπὸ τῇ Πίνδῳ Θετταλοί· καὶ πόλις Ὀξύνεια παρὰ τὸν Ἴωνα ποταμὸν ἀπέχουσα Ἀξώρου τῆς τριπολίτιδος σταδίους ἑκατὸν εἴκοσι· πλησίον δὲ καὶ Ἀλαλκομεναὶ καὶ Αἰγί- 25 νιον καὶ Εὐρωπος καὶ αἱ τοῦ Ἰωνος εἰς τὸν Πηνειὸν συμβολαί. τότε μὲν οὖν, ὥς εἶπον, καίπερ οὐσα τραχεῖα καὶ ὁρῶν πλήρης, Τομάρου καὶ Πολυάνου καὶ ἄλλων πλειόνων, ὅμως εὐάνδρει ἢ τε Ἑπειρος πᾶσα καὶ ἡ Ἰλλυρίς· νῦν δὲ τὰ πολλὰ μὲν ἐρημία κατέχει, τὰ 30 δ' οἰκούμενα κωμηδὸν καὶ ἐν ἐρειπίοις λείπεται.

- 10 Ἐκλέλοιπε δὲ πῶς καὶ τὸ μαντεῖον τὸ ἐν Δωδώνῃ,

καθάπερ τὰλλα. ἔστι δ', ὥς φησιν Ἐφορος, Πελα-
 σγῶν ἵδρυμα· οἱ δὲ Πελασγοὶ τῶν περὶ τὴν Ἑλλάδα
 δυναστευσάντων ἀρχαιότατοι λέγονται· καὶ ὁ ποιη-
 τῆς φησιν οὕτω „Ζεῦ ἄνα Δωδωναίε, Πελασγικέ,“
 5 ὁ δ' Ἡσίοδος „Δωδώνην φηγόν τε, Πελασγῶν ἔδρα-
 „νον ἦεν.“ περὶ μὲν οὖν τῶν Πελασγῶν ἐν τοῖς C.328
 Τυρρηνικοῖς εἴρηται, περὶ δὲ Δωδώνης τοὺς μὲν πε-
 ριοικοῦντας τὸ ἱερὸν διότι βάρβαροι διασαφεῖ καὶ ὁ
 Ὅμηρος ἐκ τῆς διαίτης, ἀνιπτόποδας χαμαιεύνας λέ-
 10 γων· πρότερον δὲ χρὴ λέγειν Ἑλλοὺς, ὡς Πίνδαρος, ἢ
 Σελλοὺς, ὡς ὑπονοοῦσι παρ' Ὀμήρῳ κεῖσθαι, ἢ γρα-
 φῇ ἀμφίβολος οὕσα οὐκ ἐξ δισχυρίζεσθαι. Φιλόχορος
 δὲ φησὶ καὶ τὸν περὶ Δωδώνην τόπον, ὥσπερ τὴν Εὐ-
 βροίαν, Ἑλλοπίαν κληθῆναι· καὶ γὰρ Ἡσίοδον οὕτω
 15 λέγειν „ἔστι τις Ἑλλοπίη, πολυλήμιος ἡδ' ἐυλείμων·
 „ἐνθα δὲ Δωδώνη τις ἐπ' ἔσχατιῇ πεπόλισται.“ οἶον-
 ται δέ, φησὶν ὁ Ἀπολλόδωρος, ἀπὸ τῶν ἐλῶν τῶν περὶ
 τὸ ἱερὸν οὕτω καλεῖσθαι· τὸν μέντοι ποιητὴν [οὐχ]
 οὕτω λέγειν Ἑλλοὺς ἀλλὰ Σελλοὺς ὑπολαμβάνει τοὺς
 20 περὶ τὸ ἱερὸν, προσθεὶς ὅτι καὶ Σελλήεντα τινὰ
 ὀνομάζει ποταμόν. ὀνομάζει μὲν οὖν, ὅταν φῇ „τηλό-
 „θεν ἐξ Ἐφύρης ποταμοῦ ἄπο Σελλήεντος.“ [οὐ μὲν-
 τοι, ὁ Σκήψιός φησι, τῆς] ἐν Θεσπρωτοῖς Ἐφύρας,
 ἀλλὰ τῆς ἐν τοῖς Ἡλείοις· ἐκεῖ γὰρ εἶναι τὸν Σελλήεντα,
 25 ἐν δὲ Θεσπρωτοῖς οὐδένα, οὐδ' ἐν Μολοττοῖς. τὰ δὲ
 μυθεύόμενα περὶ τῆς θρυλῆος καὶ τῶν πελειῶν καὶ εἰ
 τινα ἄλλα τοιαῦτα, καθάπερ καὶ [τὰ] περὶ Δελφῶν, τὰ
 μὲν ποιητικωτέρως ἐστὶ διατριβῆς τὰ δ' οἰκεία τῆς νῦν
 περιοδείας.

30 Ἡ Δωδώνη τοίνυν τὸ μὲν παλαιὸν ὑπὸ Θεσπρω- 11
 τοῖς ἦν καὶ τὸ ὄρος ὁ Τόμαρος ἢ Τμάρος (ἀμφοτέρως
 γὰρ λέγεται), ὑφ' ᾧ κεῖται τὸ ἱερὸν· καὶ οἱ τραγικοὶ

- δὲ καὶ Πίνδαρος Θεσπρωτίδα εἰρήκασι τὴν Δωδώνην·
 ὕστερον δὲ ὑπὸ Μολοττοῖς ἐγένετο. ἀπὸ δὲ τοῦ Το-
 μάρου τοὺς ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λεγομένους ὑποφήτας
 τοῦ Διὸς, οὓς καὶ ἀνιπτόποδας χαμαιεύνας καλεῖ, το-
 μούρους φασὶ λεχθῆναι· καὶ ἐν μὲν τῇ Ὀδυσσεΐᾳ οὕτω 5
 γράφουσιν τινες ἅ φησιν Ἀμφίνομος, συμβουλευών
 τοῖς μνηστῆρσι μὴ πρότερον ἐπιτίθεσθαι τῷ Τηλε-
 μάχῳ πρὶν ἂν τὸν Δία ἔρῳνται „εἰ μὲν κ' αἰνήσωσι
 „Διὸς μεγάλοιο τομοῦροι, αὐτὸς τε κτανέω, τοὺς τ'
 „ἄλλους πάντας ἀνώξω· εἰ δέ κ' ἀποτρύπῃσι θεός, 10
 „παύεσθαι ἄνωγα.“ βέλτιον γὰρ εἶναι τομούρους ἢ
 θέμιστας γράφειν· οὐδαμοῦ γοῦν τὰ μαντεῖα θέμιστας
 λέγεσθαι παρὰ τῷ ποιητῇ, ἀλλὰ τὰς βουλάς καὶ τὰ πο-
 λιτεύματα καὶ νομοθετήματα· τομούρους δ' εἰρῇσθαι
 C.829 ἐπιτετμημένως οἷον τομαροφύλακας. οἱ μὲν οὖν νεώ- 15
 τεροι λέγουσιν τομούρους· [παρ'] Ὀμήρῳ δ' ἀπλούστε-
 ρον δεῖ δέχεσθαι θέμιστας καταχρηστικῶς καὶ βουλάς,
 τὰ προστάγματα καὶ τὰ βουλήματα τὰ μαντικά, κα-
 θάπερ καὶ τὰ νόμιμα· τοιοῦτον γὰρ καὶ τό „ἐκ δρυὸς
 ὑψικόμοιο Διὸς βουλήν ἐπακούσαι.“ 20
- 12 Κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν ἄνδρες ἦσαν οἱ προφητεύον-
 τες· καὶ τοῦτ' ἴσως καὶ ὁ ποιητὴς ἐμφαίνει· ὑποφήτας
 γὰρ καλεῖ, ἐν οἷς τάττειντο καὶ οἱ προφητῆται· ὕστερον
 δ' ἀπεδείχθησαν τρεῖς γράται, ἐπειδὴ καὶ σύνναος τῷ
 Διὶ προσαπεδείχθη καὶ ἡ Διώνη. Σουίδα μὲντοι Θετ- 25
 ταλοῖς μυθώδεις λόγους προσχαριζόμενος ἐκείθεν τέ-
 φησιν εἶναι τὸ ἱερὸν μετενηνεγμένον ἐκ τῆς περὶ Σκο-
 τοῦσσαν Πελασγίας (ἔστι δ' ἡ Σκοτοῦσσα τῆς Πελασ-
 γιώτιδος Θετταλίας), συνακολουθησαί τε γυναικάς
 τὰς πλείστας, ὧν ἀπογόνους εἶναι τὰς νῦν προφητι- 30

δας· ἀπὸ δὲ τούτου καὶ Πελασγικὸν Δία κεκληῖσθαι·
Κινέας δ' ἔτι μνηθωδέστερον.

— ΕΚ ΤΟΥ Ζ —

5 Κινέας δέ φησι πόλιν ἐν Θεσσαλίᾳ εἶναι καὶ φη- 1
γὸν καὶ τὸ τοῦ Διὸς μαντεῖον εἰς Ἡπειρον μετενεχθῆ-
ναι. Stephanus in Δωδώνη.

Ἦν δὲ πρότερον περὶ Σκοτοῦσσαν πόλιν τῆς Πε- 1*
λασγιώτιδος τὸ χρηστήριον· ἐμπρησθέντος δ' ὑπό τι-
15 νων τοῦ δένδρου μετηνέχθη κατὰ χρησμόν τοῦ Ἀπόλ-
λωνος ἐν Δωδώνη. ἐχρησμάδει δ' οὐ διὰ λόγων, ἀλλὰ
διὰ τινων συμβόλων, ὥσπερ τὸ ἐν Λιβύῃ Ἀμμωνιακόν·
ἴσως δέ τινα πτῆσιν αἱ τρεῖς περιστεραὶ ἐπέτοντο ἐξαί-
ρετον, ἐξ ὧν αἱ λέρειαι παρατηρούμεναι προεθέσπιζον.
16 φασὶ δὲ καὶ κατὰ τὴν τῶν Μολοττῶν καὶ Θεσπρωτῶν
γλῶτταν τὰς γραίας πελίας καλεῖσθαι καὶ τοὺς γέρον-
τας πελίους· καὶ ἴσως οὐκ ὄρουα ἦσαν αἱ θρυλούμεναι
πελειάδες, ἀλλὰ γυναικες γραῖαι τρεῖς περὶ τὸ λερὸν
σχολάζουσαι. Epit. (i. e. epitome edita).

20 Ὅτι κατὰ Θεσπρωτοὺς καὶ Μολοττοὺς τὰς γραίας 2
πελίας καὶ τοὺς γέροντας πελίους, καθάπερ καὶ παρὰ
Μακεδόσι· πελιγόνας γοῦν καλοῦσιν ἐκεῖνοι τοὺς ἐν
τιμαῖς, καθὰ παρὰ Λάκωσι καὶ Μασσαλιώταις τοὺς
γέροντας· ὅθεν καὶ τὰς ἐν τῇ Δωδωναίᾳ δρυὶ μεμν-
25 θεῦσθαι πελειάς φασίν. E. (i. e. epitome Vaticana).

Ὅτι ἡ παροιμία „τὸ ἐν Δωδώνη χαλκίον“ ἐντεῦ- 3
θεν ὠνομάσθη· χαλκίον ἦν ἐν τῷ λερῷ ἔχον ὑπερκείμε-
νον ἀνδριάντα κρατοῦντα μάστιγα χαλκῆν, ἀνάθημα
Κορκυραίων· ἡ δὲ μάστιξ ἦν τριπλῇ ἀλυσιδωτὴ ἀπὸ η-
30 τημένους ἔχουσα ἐξ αὐτῆς ἀστραγάλους, οἳ πλήττοντες
τὸ χαλκίον συνεχῶς, ὅποτε αἰωροῖντο ὑπὸ τῶν ἀνέ-
μων, μακροὺς ἤχους ἀπειργάζοντο, ἕως ὃ μετρῶν τὸν

χρόνον ἀπὸ τῆς ἀρχῆς τοῦ ἤχου μέχρι τέλους καὶ ἐπὶ τετρακόσια προέλθοι· ὅθεν καὶ ἡ παροιμία ἐλέχθη „ἡ Κερκυραίων μάστιξ.“ Epil.

- 4 Ἡ δὲ Παιονία τούτοις μὲν ἔστι πρὸς ἕω τοῖς ἔθνεσι, πρὸς δύσιν δὲ τοῖς Θρακίοις ὄρεσι, πρὸς ἄρκτον 5 δ' ὑπέγκειται τοῖς Μακεδόσι, διὰ Γορτυνίου πόλεως καὶ Στύβων ἔχουσα τὰς εἰσβολὰς ἐπὶ τὰ πρὸς δι' ὧν ὁ Ἀξιὸς ῥέων δυσεῖσβολον ποιεῖ τὴν Μακεδονίαν ἐκ τῆς Παιονίας, ὥς ὁ Πηνειὸς διὰ τῶν Τεμπῶν φερόμενος ἀπὸ τῆς Ἑλλάδος αὐτὴν ἐρυμνοῖ· πρὸς νό- 10 τον δὲ τοῖς Αὐταριάταις καὶ Δαρδανίοις καὶ Ἀρδιαίοις ὁμορεῖ· ἐκτέταται δὲ καὶ μέχρι Στρυμόνος ἡ Παιονία. E.

- 5 Ὅτι ὁ Ἀλιάκμων εἰς τὸν Θερμαῖον κόλπον ῥεῖ. E.

- 6 Ἡ δ' Ὅρεσις πολλὴ καὶ ὄρος ἔχει μέγα μέχρι τοῦ 15 Κόρακος τῆς Αἰτωλίας καθήκον καὶ τοῦ Παρνασσοῦ. περιοικοῦσι δ' αὐτοὶ τε Ὀρέσται καὶ Τυμφαῖοι καὶ οἱ ἐκτὸς Ἰσθμοῦ Ἕλληνες οἱ περὶ Παρνασσὸν καὶ τὴν Οἰττην καὶ Πίνδον. ἐνὶ μὲν δὴ κοινῷ ὀνόματι καλεῖται Βοῖον τὸ ὄρος, κατὰ μέρη δὲ πολυνώνυμόν ἐστιν. φασὶ 20 δ' ἀπὸ τῶν ὑψηλοτάτων σκοπιῶν ἀφορᾶσθαι τό τε Αἰγαῖον πέλαγος καὶ τὸ Ἀμβρακικὸν καὶ τὸ Ἰόνιον, πρὸς ὑπερβολὴν οἶμαι λέγοντες. καὶ τὸ Πτελεὸν Ἰκανῶς ἐστὶν ἐν ὕψει τὸ περικείμενον τῷ Ἀμβρακικῷ κόλπῳ, τῇ μὲν ἐκτεινόμενον μέχρι τῆς Κερκυραίας τῇ δ' 25 ἐπὶ τὴν κατὰ Λευκάδα θάλασσαν. E.

- 7 Ὅτι ἐπὶ γέλωτι ἐν παροιμίας μέρει *γελάται Κέρκυρα ταπεινωθεῖσα τοῖς πολλοῖς πολέμοις. E.

- 8 Ὅτι ἡ Κόρκυρα τὸ παλαιὸν εὐτυχὴς ἦν καὶ δύναμιν ναυτικὴν πλείστην εἶχεν, ἀλλ' ὑπὸ πολέμων τι- 30 νῶν καὶ τυράννων ἐφθάρη· καὶ ὕστερον ὑπὸ Ῥωμαίων ἐλευθερωθεῖσα οὐκ ἐπηνέσθη, ἀλλ' ἐπὶ λοιδορίᾳ παροι-

μίαν ἔλαβεν „ἐλευθέρα Κόρκυρα, χέξ' ὅπου θέλεις.“
Epit.

Λοιπὴ δ' ἐστὶ τῆς Εὐρώπης ἢ τε Μακεδονία καὶ 9
τῆς Θράκης τὰ συνεχῇ ταύτῃ μέχρι Βυζαντίου καὶ ἡ
5 Ἑλλάς καὶ αἱ προσεχεῖς νῆσοι. ἔστι μὲν οὖν Ἑλλάς καὶ
ἡ Μακεδονία· νυνὶ μέντοι τῇ φύσει τῶν τόπων ἀκο-
λουθοῦντες καὶ τῷ σχήματι χωρὶς ἐγνωμεν αὐτὴν ἀπὸ
τῆς ἄλλης Ἑλλάδος τάξαι καὶ συνάψαι πρὸς τὴν ὁμο-
ρον αὐτῇ Θράκῃν μέχρι τοῦ στόματος τοῦ Εὐξείνου
10 καὶ τῆς Προποντίδος. εἴτα μετ' ὀλίγα μέμνηται Κυ-
ψέλων καὶ τοῦ Ἑβρου ποταμοῦ. καταγράφει δὲ καὶ τι
σχῆμα παραλληλόγραμμον, ἐν ᾧ ἡ σύμπασα Μακεδο-
νία ἐστίν. Ε.

Ὅτι ἡ Μακεδονία περιορίζεται ἐκ μὲν δυσμῶν τῇ 10
15 παραλίᾳ τοῦ Ἀδρίου, ἐξ ἀνατολῶν δὲ τῇ παραλλήλῳ
ταύτης μεσημβρινῇ γραμμῇ τῇ διὰ τῶν ἐκβολῶν Ἑβρου
ποταμοῦ καὶ Κυψέλων πόλεως, ἐκ βορρᾶ δὲ τῇ νοου-
μένην εὐθείᾳ γραμμῇ τῇ διὰ Βερτίσκου ὄρους καὶ Σκάρ-
δου καὶ Ὀρβήλου καὶ Ροδόπης καὶ Αἵμου· τὰ γὰρ ὅρη
20 ταῦτα ἀρχόμενα ἀπὸ τοῦ Ἀδρίου διήκει κατὰ εὐθείαν
γραμμὴν ἕως τοῦ Εὐξείνου, ποιοῦντα χειρόνησον με-
γάλην πρὸς νότον, τὴν τε Θράκην ὁμοῦ καὶ Μακεδο-
νίαν καὶ Ἑπειρον καὶ Ἀχαΐαν· ἐκ νότου δὲ τῇ Ἐγνατίᾳ
ὁδῷ ἀπὸ Δυρραχίου πόλεως πρὸς ἀνατολὰς ἰοῦσιν
25 ἕως Θεσσαλονικείας· καὶ ἔστι τὸ σχῆμα τοῦτο τῆς Μα-
κεδονίας παραλληλογράμμου ἔγγιστα. Epit.

Ὅτι Ἡμαθία ἐκαλεῖτο πρότερον ἢ νῦν Μακεδο- 11
νία. ἔλαβε δὲ τοῦνομα τοῦτο ἀπ' ἀρχαίου τινὸς τῶν
ἡγεμόνων Μακεδόνοιο. ἦν δὲ καὶ πόλις Ἡμαθία πρὸς
30 θαλάσσην. κατεῖχον δὲ τὴν χώραν ταύτην Ἑπειρωτῶν
τινες καὶ Ἰλλυριῶν, τὸ δὲ πλεῖστον Βοττιαῖοι καὶ Θρά-
κες· οἱ μὲν ἐκ Κρήτης, ὧς φασι, τὸ γένος ὄντες, ἡγε-

μόνα ἔχοντες Βότωνα, Θρακῶν δὲ Πίερες μὲν ἐνέ-
 μοντο τὴν Πιερίαν καὶ τὰ περὶ τὸν Ὀλυμπόν, Παίονες
 δὲ [τὰ] περὶ τὸν Ἀξιὸν ποταμὸν καὶ τὴν καλουμένην διὰ
 τοῦτο Ἀμφαξίτιν, Ἡδωνοὶ δὲ καὶ Βισάλται τὴν λοιπὴν
 μέχρι Στρυμόνος· ὧν οἱ μὲν αὐτὸ τοῦτο προσηγο- 5
 ρεῦοντο Βισάλται, Ἡδωνῶν δ' οἱ μὲν Μυγδόνες οἱ δὲ
 *Ἡδωνες οἱ δὲ Σίθωνες. τούτων δὲ πάντων οἱ Ἀργεά-
 δαι καλούμενοι κατέστησαν κύριοι καὶ Χαλκιδεῖς οἱ ἐν
 Εὐβοίᾳ. ἐπῆλθον δὲ καὶ Χαλκιδεῖς οἱ ἐν Εὐβοίᾳ ἐπὶ
 τὴν τῶν Σιθώνων καὶ συνώκισαν πόλεις ἐν αὐτῇ περὶ 10
 τριάκοντα, ἐξ ὧν ὕστερον ἐκβαλλόμενοι συνῆλθον εἰς
 μίαν οἱ πλείους αὐτῶν, εἰς τὴν Ὀλυνθον· ὠνομάζοντο
 δ' οἱ ἐπὶ Θράκης Χαλκιδεῖς. Ε.

- 11^a Τὸ δὲ ἐθνικὸν τοῦ Βόττεια διὰ τοῦ ι, ὡς Στρά-
 βων ἐν ζ'. καλεῖται δὲ ἀπὸ Βόττωνος τοῦ Κρητός. Ely- 15
 mol. M. p. 206, 6.
- 12 Ὅτι Πηνειὸς μὲν ὀρίζει τὴν κάτω καὶ πρὸς θα-
 λάττη Μακεδονίαν ἀπὸ Θετταλίας καὶ Μαγνησίας,
 Ἀλιάκμων δὲ τὴν ἄνω, καὶ ἔτι τοὺς Ἡπειρώτας καὶ
 τοὺς Παίονας καὶ αὐτὸς καὶ ὁ Ἐρίγων καὶ ὁ Ἀξιὸς καὶ 20
 ἕτεροι. Ε.
- 13 Ὅτι ἐστὶ τῆς παραλίας τῆς Μακεδονικῆς ἀπὸ τοῦ
 μυχοῦ τοῦ Θερμαίου κόλπου καὶ Θεσσαλονικείας ἡ μὲν
 τεταμένη πρὸς νότον μέχρι Σουνίου, ἡ δὲ πρὸς ἑω μέχρι
 τῆς Θρακίας χερρονήσου, γωνίαν τινὰ ποιοῦσα κατὰ 25
 τὸν μυχόν. εἰς ἑκάτερον δὲ καθηκούσης τῆς Μακεδο-
 νίας, ἀπὸ τῆς προτέρας λεχθείσης ἀρκτέον. τὰ μὲν δὴ
 πρῶτα μέρη τὰ περὶ Σούνιον ὑπερκειμένην ἔχει τὴν
 Ἀττικὴν σὺν τῇ Μεγαρικῇ μέχρι τοῦ Κρισαίου κόλ-
 που· μετὰ δὲ ταύτην ἡ Βοιωτικὴ ἐστὶ παραλία ἡ πρὸς 30
 Εὐβοίαν· ὑπέρκειται δ' αὐτῆς ἡ λοιπὴ Βοιωτία ἐπὶ
 δύσιν παράλληλος τῇ Ἀττικῇ. λέγει δὲ καὶ τὴν Ἐγνα-

τίαν ὁδὸν τελευτᾶν εἰς Θεσσαλονίκειαν ἀπὸ τοῦ Ἰο-
νίου κόλπου. Ε.

Τῶν ταινιῶν, φησὶν, ἀφοριοῦμεν πρώτους τοὺς 14
περὶ Πηνειὸν οἰκοῦντας καὶ τὸν Ἀλιάκμονα πρὸς θα-
5 λάττη. ρεῖ δ' ὁ Πηνειὸς ἐκ τοῦ Πίνδου ὄρους διὰ μέ-
σης τῆς Θετταλίας πρὸς ἔω. διελθὼν δὲ τὰς τῶν Λα-
πιθῶν πόλεις καὶ Περραιβῶν τινὰς συνάπτει τοῖς Τέμ-
πεσι, παραλαβὼν πλείους ποταμούς, ὧν καὶ ὁ Εὐρώ-
πος, ὃν Τιταρήσιον εἶπεν ὁ ποιητής, τὰς πηγὰς ἔχοντα
10 ἀπὸ τοῦ Τιταρίου ὄρους συμφυοῦς τῷ Ὀλύμπῳ, ὃ κἀν-
τεῦθεν ἄρχεται διορίζειν τὴν Μακεδονίαν ἀπὸ τῆς
Θετταλίας. ἔστι γὰρ τὰ Τέμπη στενὸς αὐλῶν μεταξὺ
Ὀλύμπου καὶ Ὀσσης. φέρεται δ' ὁ Πηνειὸς ἀπὸ τῶν
στενωῶν τούτων ἐπὶ σταδίους τετταράκοντα, ἐν ἀριστε-
15 ρᾷ μὲν ἔχων τὸν Ὀλυμπον, Μακεδονικὸν ὄρος μετεω-
ρότατον, [ἐν δὲ δεξιᾷ τὴν Ὀσσαν, ἐγγὺς] τῶν ἐκβολῶν
τοῦ ποταμοῦ. ἐπὶ μὲν δὴ ταῖς ἐκβολαῖς τοῦ Πηνειοῦ ἐν
δεξιᾷ Γυρτῶν ἱδρυται, Περραιβικὴ πόλις καὶ Μαγνη-
τις, ἐν ᾗ Πειρίθους τε καὶ Ἰξίων ἐβασίλευσαν· ἀπέχει
20 δ' ὅσον σταδίους ἑκατὸν τῆς Γυρτῶνος πόλις Κραν-
νών, καὶ φασιν, ὅταν εἴπῃ ὁ ποιητής „τὼ μὲν ἄρ' ἐκ
„Θρήκης“ καὶ ἐξῆς, Ἐφύρους μὲν λέγεσθαι τοὺς Κραν-
νωνίους, Φλεγύας δὲ τοὺς Γυρτωνίους· ἐπὶ δὲ θάτερα
ἢ Πιερία. Ε.

25 Ὅτι ὁ Πηνειὸς ποταμός, ρέων διὰ τῶν Τεμπῶν, 15
καὶ ἀρχόμενος ἀπὸ τοῦ Πίνδου ὄρους, καὶ διὰ μέσης
Θεσσαλίας καὶ τῶν Λαπιθῶν καὶ Περραιβῶν, δεχό-
μενός τε τὸν Εὐρώπον ποταμόν, ὃν Ὅμηρος Τιταρή-
σιον ὠνόμασε, διορίζει Μακεδονίαν μὲν πρὸς βορ-
30 ρᾶν, Θεσσαλίαν δὲ πρὸς νότον. αἱ δὲ τοῦ Εὐρώπου
ποταμοῦ πηγὰς ἐκ τοῦ Τιταρίου ὄρους ἄρχονται, ὃ
ἔστι συνεχὲς τῷ Ὀλύμπῳ. καὶ ἔστιν ὁ μὲν Ὀλυμπος

τῆς Μακεδονίας, ἣ δὲ Ὅσσα τῆς Θεσσαλίας καὶ τὸ Πη
λιοι Epit.

- 16 Ὅτι ὑπὸ ταῖς ὑπωρεΐαις τοῦ Ὀλύμπου παρὰ τὸν
Πηνειὸν ποταμὸν Γυρτῶν ἔστι, πόλις Περραιβικὴ καὶ
Μαγνητис, ἐν ἣ Πειρίδους τε καὶ Ἰξίων ἦρξαν. ἀπέχει 5
C.330δ' ἑκατὸν τῆς Γυρτῶνος πόλεως Κραννῶν, καὶ φασιν,
ὅταν εἴπῃ ὁ ποιητής „τὼ μὲν ἄρ' ἐκ Θορήκης,“ Ἐφύρους
μὲν λέγεσθαι τοὺς Κραννωνίους, Φλεγύας δὲ τοὺς
Γυρτωνίους. Epit.
- 16^a Ἀπέχει δὲ σταδίους ἑκατὸν Γυρτῶνος ἢ Κραννῶν 10
πόλις, ὧς φησι Στράβων. Stephanus in Κραννῶν.
- 16^b Ὁμόλιον πόλις Μακεδονίας καὶ Μαγνησίας. Στρά-
βων ἐβδόμη. Stephanus v. Ὁμόλιον. cf. Strabo 9 p. 443.
- 17 Ὅτι τὸ Δῖον ἢ πόλις οὐκ ἐν τῇ αἰγιαλῷ τοῦ Θερ-
μαίου κόλπου ἐστὶν ἐν ταῖς ὑπωρεΐαις τοῦ Ὀλύμπου, 15
ἀλλ' ὅσον ἐπτά ἀπέχει σταδίους· ἔχει δ' ἢ πόλις τὸ
Δῖον κώμην πλησίον Πίμπλειαν, ἐνθα Ὀρφεὺς διέ-
τριβεν. Epit.
- 18 Ὅτι ὑπὸ τῇ Ὀλύμπῳ πόλις Δῖον. ἔχει δὲ κώμην
πλησίον Πίμπλειαν· ἐνταῦθα τὸν Ὀρφέα διατρέψαι 20
φησι τὸν Κίκωνα, ἄνδρα γόητα, ἀπὸ μουσικῆς ἅμα καὶ
μαντικῆς καὶ τῶν περὶ τὰς τελετὰς ὀργιασμῶν ἀγυρ-
τεύοντα τὸ πρῶτον, εἴτ' ἤδη καὶ μειζόνων ἀξιούντα
ἑαυτὸν καὶ ὄχλον καὶ δύναμιν κατασκευαζόμενον· τοὺς
μὲν οὖν ἐκουσίως ἀποδέχεσθαι, τινὰς δ' ὑπιδομένους 25
ἐπιβουλήν καὶ βίαν ἐπισυστάντας διαφθεῖραι αὐτόν.
ἐνταῦθα πλησίον καὶ τὰ Λεῖβηθρα. E.
- 19 Ὅτι τὸ παλαιὸν οἱ μάντις καὶ μουσικὴν εἰργά-
ζοντο. Epit.
- 20 Μετὰ δὲ τὸ Δῖον αἱ τοῦ Ἀλιάκμονος ἐκβολαί· εἴτα 30
Πύδνα Μεθώνη Ἀλωρος καὶ ὁ Ἐρίγων ποταμὸς καὶ
Λουδίας, ὁ μὲν ἐκ Τρικλάρων ῥέων δι' Ὀρεστῶν καὶ

τῆς Πελαγονίας ἐν ἀριστερᾷ ἀφίεις τὴν πόλιν καὶ συμ-
 βάλλων τῷ Ἀξιῷ· ὁ δὲ Λουδίας εἰς Πέλλαν ἀνύπλουν
 ἔχων σταδίων ἑκατὸν καὶ εἴκοσι. μέση δ' οὐσα ἡ Με-
 θώνη τῆς μὲν Πύδνης ὅσον τετταράκοντα σταδίων
 5 ἀπέχει, τῆς Ἀλώρου δὲ ἑβδομήκοντα. ἔστι δ' ἡ Ἀλω-
 ρος τὸ μυχαίτατον τοῦ Θερμαίου κόλπου· *λέγεται δὲ
 Θεσσαλονίκη δια τὴν ἐπιφάνειαν. τὴν μὲν οὖν Ἀλω-
 ρον Βοτταϊκὴν νομίζουσι, τὴν δὲ Πύδναν Πιερικὴν.
 Πέλλα ἐστὶ μὲν τῆς κάτω Μακεδονίας ἣν Βοττιαῖοι
 10 κατεῦχον· ἐνταῦθ' ἦν πάλαι τὸ τῆς Μακεδονίας χρη-
 ματιστήριον· ἠϋξησε τὴν πόλιν ἐκ μικρᾶς Φίλιππος
 τραφεὶς ἐν αὐτῇ. ἔχει δ' ἄκραν ἐν λίμνῃ τῇ καλουμένῃ
 Λουδίᾳ· ἐκ ταύτης ὁ Λουδίας ἐκδίδωσι ποταμός, αὐτὴν
 δὲ πληροὶ τοῦ Ἀξιοῦ τι ἀπόσπασμα. ὁ δὲ Ἀξιὸς ἐκδί-
 15 δωσι μεταξὺ Χαλάστρας καὶ Θέρμης· ἐπικεῖται δὲ τῷ
 ποταμῷ τούτῳ χωρίον ἐρυμνόν, ὃ νῦν μὲν καλεῖται
 Ἀβυδῶν, Ὅμηρος δ' Ἀμυδῶνα καλεῖ, καὶ φησι τοὺς
 Παίονας ἐντεῦθεν εἰς Τροίαν ἐπικουρούς ἐλθεῖν „τη-
 „λόθεν ἔξ Ἀμυδῶνος ἀπ' Ἀξιοῦ εὐρυρέοντος.“ κατε-
 20 σκάφη δ' ὑπὸ τῶν Ἀργεαδῶν. Ε.
 Ὅτι ὁ Ἀξιὸς θολερὸς ῥεῖ· ὁ δ' Ὅμηρος Ἀξιοῦ κάλ- 21
 λιστον ὕδωρ φησίν, ἴσως διὰ τὴν πηγὴν τὴν καλουμέ-
 νην Αἶαν, ἣ καθαρώτατον ἐκδιδούσα ὕδωρ εἰς τοῦτον
 ἐλέγχει φαύλην ὑπάρχουσαν τὴν νῦν φερομένην γρα-
 25 φὴν παρὰ τῷ ποιητῇ. μετὰ δὲ Ἀξιὸν Ἐχέδωρος ἐν στα-
 δίοις εἴκοσιν· εἶτα Θεσσαλονίκη Κασάνδρου κτίσμα
 ἐν ἄλλοις τετταράκοντα καὶ ἡ Ἑγνατία ὁδός. ἐπωνό-
 μασε δὲ τὴν πόλιν ἀπὸ τῆς ἑαυτοῦ γυναικὸς Θεσσαλο-
 νίκης, Φιλίππου δὲ τοῦ Ἀμύντου θυματρός, καθελὼν
 30 τὰ ἐν τῇ Κρουσίδι πολίσματα καὶ τὰ ἐν τῷ Θερμαίῳ
 κόλπῳ περὶ ἑξ καὶ εἴκοσι καὶ συνοικίσας εἰς ἓν· ἡ δὲ
 μητρόπολις τῆς νῦν Μακεδονίας ἐστὶ. τῶν δὲ συνοι-

κισθαισῶν ἦν Ἀπολλωνία καὶ Χαλάστρα καὶ Θέρμα καὶ Γαρησκὸς καὶ Αἰνεια καὶ Κισσός, ὧν τὴν Κισσὸν ὑπονόησαιεν ἂν τις τῷ Κισσῷ προσήκειν, οὗ μέμνηται ὁ ποιητής „Κισσῆς τὸν γ' ἐθρεψε,“ τὸν Ἰφιδάμαντα λέγων. Ε.

5

- 22 Ὅτι μετὰ τὸ Αἶον πόλιν ὁ Ἀλιάκμων ποταμὸς ἔστιν, ἐκβάλλων εἰς τὸν Θερμαῖον κόλπον· καὶ τὸ ἀπὸ τούτου ἢ πρὸς βορρᾶν τοῦ κόλπου παραλία Πιερία καλεῖται ἕως τοῦ Ἀξιοῦ ποταμοῦ, ἐν ᾗ καὶ πόλις Πύδνα, ἢ νῦν Κίτρον καλεῖται· εἶτα Μεθώνη καὶ Ἀλωρος πό- 10 λεις· εἶτα Ἐρίγων καὶ Λουδίας ποταμοί· ἀπὸ δὲ Λουδίου εἰς Πέλλαν πόλιν ἀνάπλους στάδια ἑκατὸν εἴκοσιν. ἀπέχει δ' ἡ Μεθώνη τῆς μὲν Πύδνης στάδια τεταράκοντα, τῆς Ἀλώρου δὲ ἑβδομήκοντα στάδια. ἡ μὲν οὖν Πύδνα Πιερικὴ ἐστὶ πόλις, ἡ δὲ Ἀλωρος Βοτταϊκὴ. 15 ἐν μὲν οὖν τῷ πρὸ τῆς Πύδνης πεδίῳ Ῥωμαῖοι Περσέα καταπολεμήσαντες καθείλον τὴν τῶν Μακεδόνων βασιλείαν, ἐν δὲ τῷ πρὸ τῆς Μεθώνης πεδίῳ γενέσθαι συνέβη Φιλίππῳ τῷ Ἀμύντου τὴν ἐκκοπὴν τοῦ δεξιοῦ ὀφθαλμοῦ καταπελτικῶ βέλει κατὰ τὴν πολιορκίαν 20 τῆς πόλεως. Epil.

- 23 Ὅτι τὴν Πέλλαν οὕσαν μικρὰν πρότερον Φίλιππος εἰς μῆκος ἠϋξῆσε τραφεὶς ἐν αὐτῇ· ἔχει δὲ λίμνην πρὸ αὐτῆς, ἐξ ἧς ὁ Λουδίας ποταμὸς ῥεῖ· τὴν δὲ λίμνην πληροὶ τοῦ Ἀξιοῦ τι ποταμοῦ ἀπόσπασμα. εἶτα ὁ Ἀξιὸς 25 διαιρῶν τὴν τε Βοτταϊαίαν καὶ τὴν Ἀμφαξιτίν γῆν, καὶ παραλαβὼν τὸν Ἐρίγωνα ποταμὸν ἐξέλκει μεταξὺ Χαλάστρας καὶ Θέρμης· ἐπικεῖται δὲ τῷ Ἀξιῷ ποταμῷ χωρίον, ὅπερ Ὅμηρος Ἀμυδῶνα καλεῖ, καὶ φησι τοὺς Παίονας ἐντεῦθεν εἰς Τροίαν ἐπικούρους ἔλθειν „τηλόθεν ἐξ 30 „Ἀμυδῶνος ἀπ' Ἀξιοῦ εὐρυρέοντος.“ ἀλλ' ἐπεὶ ὁ μὲν Ἀξιὸς θολερός ἐστὶ, κρήνη δέ τις ἐξ Ἀμυδῶνος ἀνέ-

σχοῦσα καὶ ἐπιμιγνυμένη αὐτῷ κάλλιστον ὕδατος, διὰ τοῦτο τὸν ἐξῆς στίχον „Ἀξιοῦ, οὗ κάλλιστον ὕδωρ „ἐπικίδνεται Αἶαν“ μεταγράφουσιν οὕτως „Ἀξιοῦ, ὃ „κάλλιστον ὕδωρ ἐπικίδνεται Αἴης.“ οὐ γὰρ τὸ τοῦ 5 Ἀξιοῦ ὕδωρ κάλλιστον τῇ πηγῇ ἐπικίδνεται, ἀλλὰ τὸ τῆς πηγῆς τῷ Ἀξιώ. Epit.

- Ἐν δὲ τῷ „ἐπικίδνεται αἴη“ ἢ „αἶαν“ (διττῶς γὰρ 23 ἢ γραφῇ) αἶαν τινὲς οὐ τὴν γῆν ἐνόησαν, ἀλλὰ τινα πηγὴν, ὡς δῆλον ἐξ ὧν ὁ γεωγράφος φησί, λέγων ὅτι ἡ 10 παρ’ Ὀμήρῳ Ἀμυδῶν Ἀβυδῶν ὕστερον ἐκλήθη, κατεσκάφη δέ. πηγὴ δὲ πλησίον Ἀμυδῶνος Αἶα καλουμένη καθαρώτατον ὕδωρ ἐκδιδούσα εἰς τὸν Ἀξίον, ὃς ἐκ πολλῶν πληροῦμενος ποταμῶν θολερὸς ῥέει. φάυλη οὖν, φησὶν, ἡ φερομένη γραφῇ Ἀξίου κάλλιστον ὕδωρ 15 ἐπικίδνεται αἴη, ὡς δηλαδὴ οὐ τοῦ Ἀξίου ἐπικιδνάντος τὸ ὕδωρ τῇ πηγῇ, ἀλλ’ ἀνάπαλιν· εἴτα ὑποδυσκόλως αἰτιώμενος ὁ γεωγράφος καὶ τὸ νοῆσαι τὴν αἶαν ἐπὶ τῆς γῆς ἔοικε παντελῶς ἐθέλειν ἐκβαλεῖν τοῦ Ὀμηρικοῦ ἔπους τὴν τοιαύτην λέξιν. Eustathius ad Il. β 850.
- 20 Ὅτι μετὰ τὸν Ἀξίον ποταμὸν ἡ Θεσσαλονίκη ἐστὶ 24 πόλις, ἢ πρότερον Θέρμη ἐκαλεῖτο· κτίσμα δ’ ἐστὶ Κασσάνδρου, ὃς ἐπὶ τῷ ὀνόματι τῆς ἑαυτοῦ γυναικός, παιδὸς δὲ Φιλίππου τοῦ Ἀμύντου, ὠνόμασε· μετῴκισε δὲ τὰ πέριξ πολίχνια εἰς αὐτήν, οἷον Χαλάστραν Αἰνείαν 25 Κισσὸν καὶ τινα καὶ ἄλλα. ἐκ δὲ τοῦ Κισσοῦ τούτου ὑπονοήσειεν ἂν τις γενέσθαι καὶ τὸν παρ’ Ὀμήρῳ Ἰφιδάμαντα, οὗ ὁ πάππος Κισσεὺς ἔθρεψεν αὐτὸν (φησὶν) ἐν Θρήκῃ, ἢ νῦν Μακεδονία καλεῖται. Epit.

Ὅτι αὐτοῦ πον καὶ τὸ Βέρμιον ὄρος, ὃ πρότερον 25 30 κατεῖχον Βρίγες Θρακῶν ἔθνος, ὧν τινες διαβάντες εἰς τὴν Ἀσίαν Φρύγες μετωνομάσθησαν· μετὰ δὲ Θεσσαλονικεῖάν ἐστι τὰ λοιπὰ τοῦ Θερμαίου κόλπου μέχρι

τοῦ Καναστραίου. τοῦτο δ' ἐστὶν ἄκρα χειρρονησίξου-
σα, ἀνταΐρουσα τῇ Μαγνήτιδι· ὄνομα δὲ τῇ χειρρονήσῳ
Παλλήνῃ· πενταστάδιον δ' ἔχει τὸν ἰσθμὸν διορρωγ-
μένον· κεῖται δ' ἐπ' αὐτῷ πόλις ἡ πρότερον μὲν Ποτί-
δαια, Κορινθίων κτίσμα, ὕστερον δὲ Κασάνδρεια ἀπὸ 5
τοῦ αὐτοῦ βασιλέως Κασάνδρου ἀναλαβόντος αὐτὴν
ἀνατετραμμένην· ὁ περίπλους ταύτης τῆς χειρρονήσου
πεντακοσίων καὶ ἑβδομήκοντα. ἔτι δὲ πρότερον τοὺς
Γίγαντας ἐνταῦθα γενέσθαι φασὶ καὶ τὴν χώραν ὀνο-
μάζεσθαι Φλέγραν οἱ μὲν μυθολογοῦντες οἱ δὲ πιθα- 10
νώτερον ἔθνος τι βάρβαρον καὶ ἀσεβὲς ἀποφαίνοντες
τὸ κατέχον τὸν τόπον, καταλυθὲν δ' ὑπὸ Ἡρακλέους,
ἡνίκα τὴν Τροίαν ἐλὼν ἀνέπλει εἰς τὴν οἰκίαν. κάν-
ταῦθα δὲ τῆς λύμης αἱ Τρωάδες αἰτιαὶ λέγονται, ἐμ-
πρήσασαι τὰς ναῦς, ἵνα μὴ ταῖς γυναιξὶ τῶν ἐλόντων 15
αὐτὰς δουλεύοιεν. Ε.

26 Ὅτι ἡ Βέροια πόλις ἐν ταῖς ὑπωρεΐαις κεῖται τοῦ
Βερμίου ὄρους. Epit.

27 Ὅτι ἡ Παλλήνη χειρρόνησος, ἥς ἐν τῷ ἰσθμῷ κεῖ-
ται ἡ πρὶν μὲν Ποτίδαια νῦν δὲ Κασάνδρεια, Φλέγρα 20
τὸ πρὶν ἐκαλεῖτο· ὥκουν δ' αὐτὴν οἱ μυθευόμενοι Γί-
γαντες, ἔθνος ἀσεβὲς καὶ ἄνομον, οὓς Ἡρακλῆς διέ-
φθειρεν· ἔχει δὲ πόλεις τέσσαρας, Ἀφυντιν Μένδην
Σκιώνην Σάνην. Epit.

28 Ὅτι διεῖχε Ποτιδαίας Ὀλυνθος ἑβδομήκοντα στα- 25
δίους. Ε.

29 Ὅτι τῆς Ὀλύνθου ἐπίνειόν ἐστι Μηκύπερνα ἐν τῷ
Τορωναίῳ κόλπῳ. Epit.

30 Ὅτι πλησίον Ὀλύνθου χωρίον ἐστὶ κοῖλον, καλού-
μενον Κανθαρώλεθρον ἐκ τοῦ συμβεβηκότος· τὸ γὰρ 30
ζῶον ὁ κάνθαρος τῆς περιῆ χώρας γινόμενος, ἡνίκα
ψαύσῃ τοῦ χωρίου ἐκείνου, διαφθείρεται. Epit.

- Μετὰ δὲ Κασάνδρειαν ἐφεξῆς ἡ λοιπὴ τοῦ Τορω- 31
νικοῦ κόλπου παραλία μέχρι Δέρρεως· ἄκρα δ' ἐστὶν
ἀνταίρουσα τῷ Καναστραίῳ καὶ ποιοῦσα τὸν κόλπον.
ἀπαντικρὺ δὲ τῆς Δέρρεως πρὸς ἑω τὰ ἄκρα τοῦ Ἀθω,
5 μεταξὺ δὲ ὁ Σιγγικὸς κόλπος ἀπὸ τῆς ἐν αὐτῷ πόλεως
ἀρχαίας κατεσκαμμένης Σίγγου τοῦνομα. μεθ' ἣν
Ἀκανθος ἐπὶ τῷ ἰσθμῷ τοῦ Ἀθω κειμένη πόλις, Ἀν-
δρίων κτίσμα, ἀφ' ἧς συχνοὶ καὶ τὸν κόλπον Ἀκάνθιον
καλοῦσι. Ε.
- 10 Ὅτι ἀντικρὺ Κανάστρου, ἄκρου τῆς Παλλήνης, 32
ἡ Δέρρις ἐστὶν ἄκρα πλησίον Κωφοῦ λιμένος, καὶ ὁ
Τορωναῖος κόλπος ὑπὸ τούτων ἀφορίζεται. καὶ πρὸς
ἀνατολὰς αὐτῆς κεῖται τὸ ἄκρον τοῦ Ἀθωνος, ὃ ἀφορί-
ζει τὸν Σιγγιτικὸν κόλπον, ὥς εἶναι ἐφεξῆς κόλπους τοῦ
15 Αἰγαίου πελάγους πρὸς βορρᾶν, ἀλλήλων ἀπέχοντας
οὕτως, Μαλιακὸν Παρασιτικὸν Θερμαῖον Τορωναῖον
Σιγγιτικὸν Στρυμονικόν. τὰ δὲ ἄκρα Ποσειδῖον μὲν τὸ
μεταξὺ Μαλιακοῦ καὶ Παρασιτικοῦ, τὸ δὲ ἐφεξῆς πρὸς
βορρᾶν Σηπιάς, εἶτα τὸ ἐν Παλλήνῃ Κανάστρου, εἶτα
20 Δέρρις, εἶτα Νυμφαῖον ἐν τῷ Ἀθωνι πρὸς τῷ Σιγγιτι-
κῷ, τὸ δὲ πρὸς τῷ Στρυμονικῷ Ἀκράθως ἄκρον, ὃν με-
ταξὺ ὁ Ἀθων, οὗ πρὸς ἀνατολὰς ἡ Αἴημος· πρὸς δὲ βορ-
ρᾶν ἀφορίζει τὸν Στρυμονικὸν κόλπον ἡ Νεάπολις. Epit.
C.331
Ὅτι Ἀκανθος πόλις ἐν τῷ Σιγγιτικῷ κόλπῳ ἐστὶ 33
25 παράλιος πλησίον τῆς τοῦ Ξέρξου διώρυχος· ἔχει δ'
ὁ Ἀθων πέντε πόλεις, Αἶον Κλεωνὰς Θύσσον Ὀλόφνυ-
ξιν Ἀκροθώους· αὕτη δὲ πρὸς τῇ κορυφῇ τοῦ Ἀθω-
νος κεῖται. ἔστι δ' ὁ Ἀθων ὄρος μαστοειδὲς ὀξύτατον
ὑψηλότατον· οὗ οἱ τὴν κορυφὴν οἰκοῦντες ὀρῶσι τὸν
30 ἥλιον ἀνατέλλοντα πρὸ ὥρῶν τριῶν τῆς ἐν τῇ παραλίᾳ
ἀνατολῆς. καὶ ἔστιν ἀπὸ πόλεως τῆς Ἀκάνθου ὁ περι-
πλους τῆς χειρρονήσου ἕως Σταγείρου, πόλεως τοῦ
5*.

Ἀριστοτέλους, στάδια τετρακόσια, ἐν ᾗ λιμὴν ὄνομα
 Κάπρος καὶ νησίον ὁμώνυμον τῇ λιμένι· εἶτα αἱ τοῦ
 Στρυμόνος ἐκβολαί· εἶτα Φάγρης Γαληψὸς Ἀπολλω-
 νία, πᾶσαι πόλεις· εἶτα τὸ Νέστου στόμα τοῦ διορί-
 ζοντος Μακεδονίαν καὶ Θράκην, ὡς Φίλιππος καὶ Ἀλέ- 5
 ξανδρος ὁ τούτου παῖς διώριζον ἐν τοῖς κατ' αὐτοὺς
 χρόνοις. εἰσὶ δὲ περὶ τὸν Στρυμονικὸν κόλπον πόλεις
 καὶ ἑτεραι, ὅλον Μύρκινος Ἀργίλος Δραβήσκος Δάτον,
 ὅπερ καὶ ἀρίστην ἔχει χώραν καὶ εὐκαρπον καὶ ναυ-
 πήγια καὶ χρυσοῦ μέταλλα· ἀφ' οὗ καὶ παροιμία „Δά- 10
 „τον ἀγαθῶν,“ ὡς καὶ „ἀγαθῶν ἀγαθίδας.“ Epil.

34 Ὅτι πλεῖστα μέταλλά ἐστι χρυσοῦ ἐν ταῖς Κρη-
 σιν, ὅπου νῦν οἱ Φίλιπποι πόλεις ἴδρυνται, πλησίον τοῦ
 Παγγαίου ὄρους· καὶ αὐτὸ δὲ τὸ Παγγαῖον ὄρος χρυσεῖα
 καὶ ἀργυρεῖα ἔχει μέταλλα καὶ ἡ πέραν καὶ ἡ ἐντὸς τοῦ 15
 Στρυμόνος ποταμοῦ μέχρι Παιονίας· φασὶ δὲ καὶ τοὺς
 τὴν Παιονίαν γῆν ἀροῦντας εὐρίσκειν χρυσοῦ τινα
 μόρια. Epil.

35 Ἔστι δ' ὁ Ἄθως ὄρος ὑψηλὸν καὶ μαστοσιδέες, ὥστε
 τοὺς ἐν ταῖς κορυφαῖς ἤδη ἀνίσχοντος ἡλίου κάμνειν 20
 ἀροῦντας, ἡνίκα ἀλεκτοροφωνίας ἀρχὴ παρὰ τοῖς τῇν
 ἄκτῃν οἰκοῦσιν ἐστίν. ἐν δὲ τῇ ἄκτῃ ταύτῃ Θάμυρις ὁ
 Θραξ ἐβασίλευσε, τῶν αὐτῶν ἐπιτηδευμάτων γεγωνῶς
 ὢν καὶ Ὀρφεύς. ἐνταῦθα δὲ καὶ διῶρυξ δεικνύται ἡ
 περὶ τὴν Ἀκανθον, καθ' ἣν Ξέρξης τὸν Ἄθω διορύξαι 25
 λέγεται καὶ διαγαγεῖν ἐκ τοῦ Στρυμονικοῦ κόλπου διὰ
 τοῦ ἰσθμοῦ, δεξιόμενος τὴν θάλασσαν εἰς τὴν διῶρυγα.
 Δημήτριος δ' ὁ Σκήψιος οὐκ οἶεται πλευσθῆναι τὴν
 διῶρυγα ταύτην· μέχρι μὲν γὰρ δέκα σταδίων εὐγεων
 καὶ ὀρυκτὴν εἶναι, διορῶνυχθαι δ' ἐπὶ πλάτος πλεθρι- 30
 αῖον, εἰδ' ὑψηλὸν εἶναι πλαταμῶνα σταδιαλὸν σχεδόν
 τι τὸ μῆκος, ὅσον οὐκ ἐνὸν ἐκλατομηθῆναι δι' ὅλου

- μέχρι θαλάσσης· εἰ δὲ καὶ μέχρι δεῦρο, οὗ γε καὶ κατὰ
 βυθοῦ ὥστε πόρον γενέσθαι πλωτόν· ὅπου Ἀλέξαρχον
 τὸν Ἀντιπάτρου πόλιν ὑποδείμασθαι τὴν Οὐρανόπο-
 λιν τριάκοντα σταδίων τὸν κύκλον ἔχουσιν. ὥκησαν
 5 δὲ τὴν χειρόνησον ταύτην τῶν ἐκ Ἀήμνου Πελασγῶν
 τινες, εἰς πέντε διηρημένοι πολίσματα, Κλεωνὰς Ὀλό-
 φυξιν Ἀκροθάους Δίον Θύσσον. μετὰ δὲ Ἄθω ὁ Στρυ-
 μονικὸς κόλπος μέχρι Νέστου τοῦ ποταμοῦ τοῦ ἀφορί-
 ζοντος τὴν κατὰ Φίλιππον καὶ Ἀλέξανδρον Μακεδο-
 10 νίαν· εἰς μέντοι τάκριβες ἄκρα τὶς ἐστὶν ἡ ποιοῦσα τὸν
 κόλπον πρὸς τὸν Ἄθω, πόλιν ἐσχηκυῖα τὴν Ἀπολλω-
 νίαν. ἐν δὲ τῷ κόλπῳ πρώτη μετὰ τὸν Ἀκανθίων λι-
 μένα Στάγαιρα, ἔρημος, καὶ αὐτὴ τῶν Χαλκιδικῶν,
 Ἀριστοτέλους πατρίς, καὶ λιμὴν αὐτῆς Κάπρος καὶ
 15 νησίον ὁμώνυμον τούτῳ· εἶδ' ὁ Στρυμὼν καὶ ὁ ἀνά-
 πλους εἰς Ἀμφίπολιν εἴκοσι σταδίων· ἔστι δ' Ἀθη-
 ναίων κτίσμα ἐν τῷ τόπῳ ἰδρυμένον τούτῳ, ὃς καλεῖ-
 ται Ἐννέα ὁδοί· εἶτα Γαληψὸς καὶ Ἀπολλωνία, κατε-
 σκαμμέναι ὑπὸ Φιλίππου. Ε.
- 20 Ἀπὸ Πηνειοῦ φησὶν εἰς Πύδναν σταδίους * ἑκατὸν 36
 εἴκοσι. παρὰ δὲ τὴν παραλίαν τοῦ Στρυμόνος καὶ Δα-
 τηναῶν πόλιν Νεάπολιν καὶ αὐτὸ τὸ Δάτον, εὐκαρπα
 πεδία καὶ λίμνην καὶ ποταμούς καὶ ναυπήγια καὶ χρυ-
 σεῖα λυσιτελῆ ἔχον, ἀφ' οὗ καὶ παροιμιάζονται „Δάτον
 25 ἀγαθῶν“ ὥς καὶ „ἀγαθῶν ἀγαθῶδης.“ ἔστι δ' ἡ χώρα
 ἡ πρὸς τὸ Στρυμόνος πέραν, ἡ μὲν ἐπὶ τῇ θαλάττῃ καὶ
 τοῖς περὶ Δάτον τόποις Ὀδόμαντες καὶ Ἡδωνοὶ καὶ Βι-
 σάλται, οἳ τε αὐτόχθονες καὶ οἱ ἐκ Μακεδονίας δια-
 βάντες, ἐν οἷς Πῆσος ἐβασίλευσεν. ὑπὲρ δὲ τῆς Ἀμφι-
 30 πόλεως Βισάλται καὶ μέχρι πόλεως Ἡρακλείας, ἔχοντες
 αὐλῶνα εὐκαρπον, ὃν διαρρεῖ ὁ Στρυμὼν ὠρμημέ-
 νος ἐκ τῶν περὶ Ῥοδόπην Ἀγριάων, οἷς παρράκειται

τῆς Μακεδονίας ἡ Παρορβηλία, ἐν μεσογαίᾳ ἔχουσα κατὰ τὸν αὐλῶνα τὸν ἀπὸ Εἰδομένης Καλλίπολιν Ὀρδόπολιν Φιλιππούπολιν Γαρησκόν. ἐν δὲ τοῖς Βισάλλταις ἀνὰ ποταμὸν ἰόντι τὸν Στρυμόνα καὶ ἡ Βέργη ἰδρυνται, κώμη ἀπέχουσα Ἀμφιπόλεως περὶ διακοσίους 5 σταδίους. ἐπὶ δὲ ἄρκτους ἰόντι ἀπὸ Ἡρακλείας καὶ τὰ στενὰ δι' ὧν ὁ Στρυμὼν φέρεται, δεξιὸν ἔχοντι τὸν ποταμὸν ἐκ μὲν τῶν εὐωνύμων ἐστὶν ἡ Παιονία καὶ τὰ περὶ τὸν Δόβηρον καὶ τὴν Ῥοδόπην καὶ τὸν Αἴμον ὄρος, ἐν δεξιᾷ δὲ τὰ περὶ τὸν Αἴμον. ἐντὸς δὲ τοῦ 10 Στρυμόνος πρὸς αὐτῷ μὲν τῷ ποταμῷ ἡ Σκοτοῦσσα ἐστι, πρὸς δὲ τῇ λίμνῃ τῇ Βόλβῃ Ἀρέθουσα. καὶ δὴ καὶ μάλιστα λέγονται Μυγδόνες οἱ περὶ τὴν λίμνην. οὐ μόνον δ' ὁ Ἀξιὸς ἐκ Παιόνων ἔχει τὴν ῥύσιν, ἀλλὰ καὶ ὁ Στρυμὼν· ἐξ Ἀγριάνων γὰρ διὰ Μαίδων καὶ Σιντῶν 15 εἰς τὰ μεταξὺ Βισαλλτῶν καὶ Ὀδομάντων ἐκπίπτει. Ε.

37 Ὅτι ὁ Στρυμὼν ποταμὸς ἄρχεται ἐκ τῶν περὶ τὴν Ῥοδόπην Ἀγριάνων. Epit.

38 Τοὺς δὲ Παίονας οἱ μὲν ἀποίκους Φρυγῶν οἱ δ' ἀρχηγέτας ἀποφαίνουσι, καὶ τὴν Παιονίαν μέχρι 20 Πελαγονίας καὶ Πιερίας ἐκτετάσθαι φασί· καλεῖσθαι δὲ πρότερον Ὀρεστίαν τὴν Πελαγονίαν, τὸν δὲ Ἀστεροπαῖον, ἓνα τῶν ἐκ Παιονίας στρατευσάντων ἐπ' Ἴλιον ἡγεμόνων, οὐκ ἀπεικότως υἱὸν λέγεσθαι Πηλεγόνοιο, καὶ αὐτοὺς τοὺς Παίονας καλεῖσθαι Πελαγόνους. Ε. 25

39 Ὅτι ὁ παρ' Ὀμήρῳ Ἀστεροπαῖος υἱὸς Πηλεγόνοιο ἐκ Παιονίας ὦν τῆς ἐν Μακεδονίᾳ ἱστορεῖται· διὸ καὶ Πηλεγόνοιο υἱός· οἱ γὰρ Παῖονες Πελαγόνους ἐκαλοῦντο. Epit.

40 Ἐπεὶ δὲ ὁ παιανισμὸς τῶν Θρακῶν τιτανισμὸς ὑπὸ 30 τῶν Ἑλλήνων λέγεται κατὰ μίμησιν τῆς ἐν παιᾶσι φωνῆς, καὶ οἱ Τιτᾶνες ἐκλήθησαν Πηλαγόνες. Ε.

Ὅτι καὶ πάλαι καὶ νῦν οἱ Μαῖονες φαίνονται πολ- 41
λὴν τῆς νῦν Μακεδονίας κατεσχηκότες, ὥς καὶ Πέριν-
θον πολιορκῆσαι, καὶ Κρηστωνίαν καὶ Μυγδονίδα πᾶ-
σαν καὶ τὴν Ἀγριάνων μέχρι Παγγαίου ὑπ' αὐτοῖς γε-
5 νέσθαι. τῆς δ' ἐν τῷ Στρυμονικῷ κόλπῳ παραλίας τῆς
ἀπὸ Γαληψοῦ μέχρι Νέστου ὑπέρκεινται οἱ Φίλιπποι
καὶ τὰ περὶ Φιλίππους. οἱ δὲ Φίλιπποι Κρηνίδες ἐκα-
λοῦντο πρότερον, κατοικία μικρά· ἠϋξήθη δὲ μετὰ τὴν
περὶ Βροῦτον καὶ Κάσσιον ἦτταν. Ε.

10 Ὅτι οἱ νῦν Φίλιπποι πόλις Κρηνίδες ἐκαλοῦντο 43
τὸ παλαιόν. Εἰρή.

Πρόκεινται δὲ τῆς παραλίας ταύτης δύο νῆσοι, 44
Ἀῆμος καὶ Θάσος. μετὰ δὲ τὸν εἰς Θάσον πορθμὸν
Ἀβδήρα καὶ τὰ περὶ Ἀβδήρου μυθεύόμενα. ὥκησαν δ'
15 αὐτὴν Βίστονες Θρᾶκες, ὧν Διομήδης ἦρχεν· οὐ μέ-
νει δ' ὁ Νέστος ἐπὶ ταύτου ῥεῖθρου διὰ παντός, ἀλλὰ
κατακλύζει τὴν χώραν πολλάκις. εἴτα Δίκαια πόλις ἐν
κόλπῳ κειμένη καὶ λιμὴν· ὑπέρκειται δὲ τούτων ἡ Βι-
στονὶς λίμνη κύκλον ἔχουσα ὅσον διακοσίων σταδίων.
20 φασὶ δὲ τοῦ πεδίου κοίλου παντάπασιν ὄντος καὶ τα-
πεινότερου τῆς θαλάττης ἱπποκρατούμενον τὸν Ἡρα-
κλέα, ἥνικα ἦλθεν ἐπὶ τὰς τοῦ Διομήδους ἱππους, διο-
ρύξαι τὴν ῥόνα καὶ τὴν θάλατταν ἐπαφέντα τῷ πεδίῳ
κρατῆσαι τῶν ἐναντίων. δείκνυται δὲ καὶ τὸ βασιλείον
25 Διομήδους ἀπὸ συμβεβηκότος καλούμενον Καρτερά
κώμη διὰ τὴν ἐρυμνότητα. μετὰ δὲ τὴν ἀνὰ μέσον λί-
μνην Ξάνθεια Μαρώνεια καὶ Ἰσμαρος, αἱ τῶν Κικό-
νων πόλεις· καλεῖται δὲ νῦν Ἰσμᾶρα πλησίον τῆς Μα-
ρωνείας· πλησίον δὲ καὶ ἡ Ἰσμαρίς ἐξίησι λίμνη· κα-
30 λεῖται δὲ τὸ ῥεῖθρον ἡδὺ γειον· αὐτοῦ δὲ καὶ αἱ
Θασίων λεγόμεναι κεφαλαί. Σαπαῖοι δ' εἰσὶν οἱ ὑπερ-
κείμενοι. Ε.

- 45 "Οτι τὰ Τόπειρα ἔστι πρὸς Ἀβδήροις καὶ Μαρω-
νείᾳ. Ε.
- 46 "Οτι Σιντοὶ ἔθνος Θρακικὸν κατῴκει τὴν Δῆμνον
νῆσον· ὅθεν Ὅμηρος Σίντιας αὐτοὺς καλεῖ λέγων
,,ἐνθα με Σιντίες ἄνδρες.“ Εἰτ. 5
- 47 "Οτι μετὰ τὸν Νέστον ποταμὸν πρὸς ἀνατολὰς
Ἀβδηρα πόλις, ἐπώνυμος Ἀβδήρου, ὃν οἱ τοῦ Διομή-
δους ἵπποι ἔφαγον· εἶτα Δίκαια πόλις πλησίον, ἧς
ὑπέρκειται λίμνη μεγάλη ἡ Βιστονίς· εἶτα πόλις Μα-
ρώνεια. Εἰτ. 10
- 48 "Ἔστι δ' ἡ Θράκη σύμπασα ἐκ δυεῖν καὶ εἰκοσιν
ἔθνων συνεστῶσα· δύναται δὲ στέλλειν καίπερ οὐσα
περισσῶς ἐκπεπονημένῃ μυρίους καὶ πεντακισχιλλούς
ἱππέας, πεζῶν δὲ καὶ εἰκοσι μυριάδας. μετὰ δὲ τὴν
Μαρώνειαν Ὀρθαγόρεια πόλις καὶ τὰ περὶ Σέρριον, 15
παράπλους τραχύς, καὶ τὸ τῶν Σαμοθράκων πολίχνιον
Τέμπυρα καὶ ἄλλο Χαράκωμα, οὗ πρόκειται ἡ Σαμο-
θράκη νῆσος, καὶ Ἰμβρος οὐ πολὺ ἄπωθεν ταύτης·
πλέον δ' ἢ διπλάσιον ἡ Θάσος. ἀπὸ δὲ Χαρακώματος
Δορίσκος, ὅπου ἐμέτρησε Ξέρξης τῆς στρατιᾶς τὸ πλη- 20
θος. εἶθ' Ἐβρος ἀνάπλουν ἔχων εἰς Κύψελα ἑκατὸν
εἰκοσι· τῆς Μακεδονίας φησὶ τοῦτο ὄριον, ἣν ἀφεί-
λονται Περσέα Ῥωμαῖοι καὶ μετὰ ταῦτα τὸν Ψευδοφί-
λιππον. Παῦλος μὲν οὖν ὁ τὸν Περσέα ἔλων συνάψας
τῇ Μακεδονίᾳ καὶ τὰ Ἑπειρωτικὰ ἔθνη εἰς τέτταρα 25
μέρη διέταξε τὴν χώραν, καὶ τὸ μὲν προσένειμεν Ἀμ-
φιπόλει, τὸ δὲ Θεσσαλονικείᾳ, τὸ δὲ Πέλλῃ, τὸ δὲ Πε-
λαγόσι. παροικοῦσι δὲ τὸν Ἐβρον Κορπίλοι καὶ Βρέ-
ναι ἔτι ἀνωτέρω, εἰτ' ἔσχατοι Βέσσοι· μέγροι γὰρ δεῦρο
ὁ ἀνάπλους. ἅπαντα δὲ τὰ ἔθνη ληστρικὰ ταῦτα, μά- 30
λιστα δ' οἱ Βέσσοι, οὓς λέγει γειτονεῦειν Ὀδρύσαις καὶ
Σαπαίοις. Ἀστῶν δὲ βασίλειον ἦν Βιζύη. Ὀδρύσας δὲ

καλοῦσιν ἔνιοι πάντας τοὺς ἀπὸ Ἑβρου καὶ Κυψέλων
μέχρι Ὀδησοῦ τῆς παραλίας ὑπεροικούντας, ὧν ἔβα-
σίλευσεν Ἀμάδοκος καὶ Κερσοβλέπτης καὶ Βηρισάδης
καὶ Σεύδης καὶ Κότυς. Ε.

5 Ὅτι ὁ νῦν ποταμὸς Ῥιγινία ἐν Θράκῃ καλούμενος 49
Ἑρίγων ἦν καλούμενος. Epit.

Ὅτι τὴν Σαμοθράκην Ἰασίων καὶ Δάρδανος ἀδελ- 50
φοι ᾤκουν· κεραυνωθέντος δὲ Ἰασίωνος διὰ τὴν εἰς
Δήμητρα ἁμαρτίαν, ὁ Δάρδανος ἀπάρας ἐκ Σαμοθρά-
10 κης, ἐλθὼν ᾤκησεν ἐν τῇ ὑπωρεῖα τῆς Ἰδης, τὴν πόλιν
Δαρδανίαν καλέσας, καὶ ἐδίδαξε τοὺς Τρῶας τὰ ἐν
Σαμοθράκῃ μυστήρια· ἐκαλεῖτο δὲ ἡ Σαμοθράκῃ Σά-
μος πρῶτον. Epit.

Ὅτι τοὺς ἐν τῇ Σαμοθράκῃ τιμωμένους θεοὺς εἰ- 51
15 ρήκασιν πολλοὶ τοὺς αὐτοὺς τοῖς Καβείροις, οὐδ' αὐ-
τοὺς ἔχοντες λέγειν τοὺς Καβείρους οἵτινές εἰσι, κα-
θάπερ τοὺς Κύρβαντας καὶ Κορύβαντας, ὥς δ' αὐτως
Κουρήτας καὶ Ἰδαίους Δακτύλους. Ε.

Πρὸς δὲ τῇ ἐκβολῇ τοῦ Ἑβρου διστόμου ὄντος πό- 52
20 λιν Αἴνος ἐν τῷ Μέλανι κόλπῳ κεῖται, κτίσμα Μιτυ-
ληναίων καὶ Κυμαίων, ἔτι δὲ πρότερον Ἀλωπεκοννη-
σίῳν· εἴτ' ἄκρα Σαρπηδῶν· εἴθ' ἡ Χερρόνησος ἡ Θρα-
κία καλουμένη, ποιοῦσα τὴν τε Προποντίδα καὶ τὸν
Μέλαναν κόλπον καὶ τὸν Ἑλλήσποντον· ἄκρα γὰρ ἐκ-
25 κεῖται πρὸς εὐρόνοτον, συνάπτουσα τὴν Εὐρώπην
πρὸς τὴν Ἀσίαν ἐπτασταδίῳ πορθμῷ τῷ κατὰ Ἀβυδὸν
καὶ Σηστόν, ἐν ἀριστερᾷ μὲν τὴν Προποντίδα ἔχουσα,
ἐν δεξιᾷ δὲ τὸν Μέλαναν κόλπον καλούμενον οὕτως ἀπὸ
τοῦ Μέλανος ἐκδιδόντος εἰς αὐτόν, καθάπερ Ἡρόδο-
30 τος καὶ Εὐδόξος· εἰρηκε δέ, φησὶν, ὁ Ἡρόδοτος μὴ ἀν-
ταρκέσαι τὸ ρεῖθρον τῇ Ξέρξου στρατιᾷ τοῦτο· ἰσθμῷ
δὲ κλείεται τετταράκοντα σταδίων ἡ λεχθεῖσα ἄκρα.

ἐν μέσῳ μὲν οὖν τοῦ ἰσθμοῦ Λυσιμάχεια πόλις ἵδρυνται ἐπώνυμος τοῦ κτίσαντος βασιλέως· ἐκατέρωθεν δ' ἐπὶ μὲν τῷ Μέλανι κόλπῳ Καρδία κεῖται μεγίστη τῶν ἐν τῇ Χερρονήσῳ πόλεων, Μιλησίων καὶ Κλαζομενίων κτίσμα, ὕστερον δὲ καὶ Ἀθηναίων· ἐν δὲ τῇ Προπον- 5 τίδι Πακτύη. μετὰ δὲ Καρδίαν Δράβος καὶ Αἰμναι· εἴτ' Ἀλωπεκόννησος, εἰς ἣν τελευτᾷ μάλιστα ὁ Μέλας κόλπος· εἴτ' ἄκρα μεγάλη Μαζουσία· εἴτ' ἐν κόλπῳ Ἐλαιοῦς, ὅπου τὸ Πρωτεσιλάειον, καθ' ὃ τὸ Σίγειον ἀπὸ τετταράκοντα σταδίων ἐστίν, ἄκρα τῆς Τρωάδος· 10 καὶ σχεδὸν τοῦτ' ἐστὶ τὸ νοτιώτατον ἄκρον τῆς Χερρονήσου, σταδίους μικρῶ πλείους τῶν τετρακοσίων ἀπὸ Καρδίας· καὶ οἱ λοιποὶ δ' ἐπὶ θάτερον μέρος τοῦ ἰσθμοῦ μικρῶ τοῦ διαστήματος τούτου πλείους περι- 15 πλέοντι. Ε.

53 "Οτι ἡ ἐν Θράκῃ Χερρόνησος τρεῖς ποιεῖ θαλάσσας· Προποντίδα ἐκ βορρᾶ, Ἑλλήσποντον ἐξ ἀνατολῶν καὶ τὸν Μέλανα κόλπον ἐκ νότου, ὅπου καὶ ὁ Μέλας ποταμὸς ἐκ βάλλει, ὁμώνυμος τῷ κόλπῳ. Epil.

54 "Οτι ἐν τῷ ἰσθμῷ τῆς Χερρονήσου τρεῖς πόλεις 20 κεῖνται· πρὸς μὲν τῷ Μέλανι κόλπῳ Καρδία, πρὸς δὲ τῇ Προποντίδι Πακτύη, πρὸς δὲ τῇ μεσογαίᾳ Λυσιμάχεια· μῆκος τοῦ ἰσθμοῦ στάδια τετταράκοντα. Epil.

55 "Οτι ἡ πόλις ὁ Ἐλαιοῦς ἀρσενικῶς λέγεται· τάχα 25 δὲ καὶ ὁ Τραπεζοῦς. Epil.

56 "Ἔστι δ' ἐν τῷ περίπλῳ τούτῳ τῷ μετὰ Ἐλαιοῦντα ἡ εἰσβολὴ πρῶτον ἢ εἰς τὴν Προποντίδα διὰ τῶν στε- 30 νῶν, ἣν φασιν ἀρχὴν εἶναι τοῦ Ἑλλήσποντου· ἐνταῦθα δ' ἐστὶ τὸ Κυνὸς σῆμα ἄκρα, οἱ δ' Ἐκάβης φασί· καὶ γὰρ δείκνυνται κάμψαντι τὴν ἄκραν τάφος αὐτῆς. 30 εἰτα Μάδντος καὶ Σηστιᾶς ἄκρα, καθ' ἣν τὸ Ξέρξου ξεῦγμα, καὶ μετὰ ταῦτα Σηστός. ἀπὸ δὲ Ἐλαιοῦντος

ἐπὶ τὸ ξεῦγμα ἑκατὸν ἑβδομήκοντα· μετὰ δὲ Σηστὸν
ἐπὶ Αἰγὸς ποταμοὺς διακόσιοι ὀγδοήκοντα, πολίχνην
κατεσκαμμένην, ὅπου φασὶ τὸν λίθον πεσεῖν κατὰ τὰ
Περσικά· εἶτα Καλλίπολις, ἀφ' ἧς εἰς Λάμψακον δί-
5 αρμα εἰς τὴν Ἀσίαν τετταράκοντα· εἶτα πολίχνην κα-
τεσκαμμένον Κριθωτή· εἶτα Πακτύη· εἶτα τὸ Μακρὸν
τεῖχος καὶ Λευκὴ ἀκτὴ καὶ τὸ Ἱερὸν ὄρος καὶ Πέρινθος,
Σαμίων κτίσμα· εἶτα Σηλυβρία. ὑπέρεκείται δ' αὐτῶν
Σίλτα, καὶ τὸ Ἱερὸν ὄρος τιμᾶται ὑπὸ τῶν ἐγχωρίων
10 καὶ ἔστιν οἶον ἀκρόπολις τῆς χώρας. ἄσφαλτον δ' ἐξέλη-
σιν εἰς τὴν θάλασσαν, καθ' ὃν τόπον ἡ Προκόννησος
ἐγγυτάτω τῆς γῆς ἔστι ἀπὸ ἑκατὸν εἴκοσι σταδίων, τὸ
μέταλλον ἔχουσα τῆς λευκῆς μαρμάρου πολὺ τε καὶ
σπουδαῖον. μετὰ δὲ Σηλυβρίαν Ἀθύρας ἔστι ποταμὸς
15 καὶ Βαθυνίας· εἶτα Βυζάντιον καὶ τὰ ἐφεξῆς μέχρι
Κυανέων πετρῶν. Ε.

Ὅτι ἐκ Περίνθου εἰς Βυζάντιόν εἰσιν ἑξακόσιοι 57
τριακόντα· ἀπὸ δὲ Ἐβρου καὶ Κυψέλων εἰς Βυζάντιον
μέχρι Κυανέων τρισχίλιοι ἑκατόν, ὥς φησιν Ἀρτεμίδω-
20 ρος· τὸ δὲ σύμπαν μῆκος ἀπὸ Ἰονίου κόλπου τοῦ κατὰ
Ἀπολλωνίαν μέχρι Βυζαντίου ἑπτακισχίλιοι τριακόσιοι
εἴκοσι· προστίθῃσι δ' ὁ Πολύβιος καὶ ἄλλους ἑκατὸν
ὀγδοήκοντα, τὸ τρίτον τοῦ σταδίου προσλαμβάνων
ἐπὶ τοῖς ὀκτὼ τοῦ μιλίου σταδίοις. Δημήτριος δ' ὁ
25 Σκῆψιος ἐν τοῖς περὶ τοῦ Τρωικοῦ διακόσμου τὸ μὲν
ἐκ Περίνθου μέχρι Βυζαντίου φησὶν ἑξακοσίους σταδί-
ους, τὸ δ' ἴσον μέχρι Παρίου. τὴν δὲ Προποντίδα μήκει
μὲν χιλίων καὶ τετρακοσίων ἀποφαίνει σταδίων, εἰς
εὖρος δὲ πεντακοσίων. τοῦ δὲ Ἑλλησπόντου τὸ στενώ-
30 τατον ἑπταστάδιόν φησι, μῆκος δὲ τετρακοσίων. Ε.

Ὅτι Ἑλλησποντος οὐχ ὁμολογεῖται παρὰ πᾶσιν ὁ 58
αὐτός, ἀλλὰ δόξαι περὶ αὐτοῦ λέγονται πλείους. οἱ

- μὲν γὰρ ὅλην τὴν Προποντίδα καλοῦσιν Ἑλλήσποντον, οἱ δὲ μέρος τῆς Προποντίδος τὸ ἐντὸς Περίνθου· οἱ δὲ προσλαμβάνουσι καὶ τῆς ἔξω θαλάσσης τῆς πρὸς τὸ Αἰγαῖον πέλαγος καὶ τὸν Μέλαινα κόλπον ἀνεωγμένης, καὶ οὗτοι ἄλλος ἄλλα ἀποτεμνόμενος· οἱ μὲν τὸ ἀπὸ Σιγεί- 5
ου ἐπὶ Λάμψακον καὶ Κύζικον ἢ Πάριον ἢ Πριάπον, ὁ δὲ προσλαμβάνων καὶ τὸ ἀπὸ Σιγρίου τῆς Ἀεσβίας. οὐκ ὀκνοῦσι δὲ τινες καὶ τὸ μέχρι τοῦ Μυρτώου πελάγους ἅπαν καλεῖν Ἑλλήσποντον, εἶπερ, ὥς φησιν ἐν τοῖς ὕμνοις Πίνδαρος, οἱ μεθ' Ἡρακλέους ἐκ Τροίας πλέον- 10
τες διὰ παρθένιον Ἑλλας πορθμόν, ἐπεὶ τῷ Μυρτῷ συνῆψαν, εἰς Κῶν ἐπαλινδρομήσαν ξεφύρου ἀντιπνεύσαντος. οὕτω δὲ καὶ τὸ Αἰγαῖον πέλαγος μέχρι τοῦ Θερμαίου κόλπου καὶ τῆς κατὰ Θετταλίαν καὶ Μακεδονίαν θαλάσσης ἅπαν ἀξιοῦσιν Ἑλλήσποντον προσαγορεύειν 15
δεῖν, μάρτυρα καὶ Ὅμηρον καλοῦντες. φησὶ γὰρ, „ὄψαι, ἦν ἐθέλησθα καὶ αἰ κέν τοι τὰ μεμήλη, ἦρι μάλ' Ἑλλήσποντον ἐπ' ἰχθυοέντα πλεούσας νῆας ἐμάς.“ ἐλέγχεται δὲ τὸ τοιοῦτον ἐκ τῶν ἐπῶν ἐκείνων „ἥρως Ἰμβρα- 20
σίδης, ὃς ἄρ' Αἰνότην εἰληλούθει.“ οὗτος δὲ τῶν Θρα-
κῶν ἡγεῖτο „ὅσους Ἑλλήσποντος ἀγάρροος ἐντὸς ἐέρ-
γει.“ τοὺς γὰρ ἐφεξῆς τούτων ἐκτὸς αὖ καὶ τοῦ Ἑλλη-
σπόντου καθιδρυμένους ἀποφαίνοι. ἡ μὲν γὰρ Αἴνος κείται κατὰ τὴν πρότερον Ἀσυνθίδα νῦν δὲ Κορπιλικὴν λεγομένην, ἡ δὲ τῶν Κικόνων ἐφεξῆς πρὸς δύσιν. Ε. 25
- 58^a Τετραχωρίται, οἱ Βεσσοί, ὡς Στράβων ἐβδόμη. οὗτοι λέγονται καὶ Τετράκωμοι. Stephanus v. Τετραχωρίται.
- 58^b Λέγει γὰρ (Στράβων) αὐτὸν ἐν τῇ ἐβδόμῃ (τῶν γεωγραφουμένων) ἐγνωκέναι Ποσειδάωνιον τὸν ἀπὸ τῆς 30
στοᾶς φιλόσοφον . . . συγγενομένου Σκιπίωνι τῷ τὴν Καρχηδόνα ἐλόντι. Athenaeus 14 p. 657 f.

Ἐπεὶ δ' ἐπιόντες ἀπὸ τῶν ἐσπερίων τῆς Εὐρώπης
 μερῶν, ὅσα τῇ θαλάττῃ περιέχεται τῇ ἐντὸς καὶ τῇ ἐκτός,
 5 τὰ τε βάρβαρα ἔθνη περιωδεύσαμεν πάντα ἐν αὐτῇ μέ-
 χρι τοῦ Τανάιδος καὶ τῆς Ἑλλάδος οὐ πολὺ μέρος, ἀπο-
 δώσομεν νυνὶ τὰ λοιπὰ τῆς Ἑλλαδικῆς γεωγραφίας,
 ἅπερ Ὅμηρος μὲν πρῶτος, ἔπειτα καὶ ἄλλοι πλείους
 ἐπραγματεύσαντο, οἱ μὲν ἰδίᾳ λιμένας ἢ περιήλους ἢ
 10 περιόδους γῆς ἢ τι τοιοῦτον ἄλλο ἐπιγράψαντες, ἐν οἷς
 καὶ τὰ Ἑλλαδικὰ περιέχεται, οἱ δ' ἐν τῇ κοινῇ τῆς ἱστο-
 ρίας γραφῇ χωρὶς ἀποδείξαντες τὴν τῶν ἡπείρων το-
 πογραφίαν, καθάπερ Ἐφορὸς τε ἐποίησε καὶ Πολύβιος·
 ἄλλοι δ' εἰς τὸν φυσικὸν τόπον καὶ τὸν μαθηματικὸν
 15 προσέλαβόν τινα καὶ τῶν τοιούτων, καθάπερ Ποσει-
 δώνιος τε καὶ Ἰππαρχος. τὰ μὲν οὖν τῶν ἄλλων εὐδι-
 αίτητά ἐστι, τὰ δ' Ὀμήρου σκέψεως δεῖται κριτικῆς,
 ποιητικῶς τε λέγοντος καὶ οὐ τὰ νῦν ἀλλὰ τὰ ἀρχαῖα,
 ὧν ὁ χρόνος ἡμαύρωνε τὰ πολλὰ. ὥς δ' οὖν δυνατὸν
 20 ἐγχειρητέον ἀρξαμένοις ἀφ' ὧν περ ἀπελίπομεν· ἐτε-
 λεύτα δ' ἡμῖν ὁ λόγος ἀπὸ μὲν τῆς ἐσπέρας καὶ τῶν
 ἄρκτων εἰς τὰ Ἑπειρωτικά ἔθνη καὶ τὰ τῶν Ἰλλυριῶν,
 ἀπὸ δὲ τῆς ἑω εἰς τὰ τῶν Μακεδόνων μέχρι Βυζαντίου.
 μετὰ μὲν οὖν τοὺς Ἑπειρώτας καὶ τοὺς Ἰλλυριοὺς τῶν
 25 Ἑλλήνων Ἀκαρνανεὺς εἰσι καὶ Αἰτωλοὶ καὶ Λοκροὶ οἱ
 Ὀζόλαι· πρὸς δὲ τούτοις Φωκεῖς τε καὶ Βοιωτοί· τού-
 τοις δ' ἀντίπορθμός ἐστιν ἡ Πελοπόννησος, ἀπολαμ-
 βάνουσα μεταξὺ τὸν Κορινθιακὸν κόλπον καὶ σχημα-
 τίζουσά τε τοῦτον καὶ σχηματιζομένη ὑπ' αὐτοῦ· μετὰ C.333

δὲ Μακεδονίαν Θετταλοὶ μέχρι Μαλιέων καὶ τῶν ἄλλων τῶν ἐκτὸς Ἰσθμοῦ καὶ αὐτῶν τῶν ἐντός.

- 2 * ἐπιδουο μὲν οὖν πολλὰ ἔθνη γεγένηται, τὰ δ' ἀνωτάτω τοσαῦτα ὅσας καὶ διαλέκτους παρειλήφμεν τὰς Ἑλληνίδας· τούτων δ' αὐτῶν τεττάρων οὐσῶν τὴν 5 μὲν Ἰάδα τῇ παλαιᾷ Ἀτθίδι τὴν αὐτὴν φασί (καὶ γὰρ Ἴωνες ἐκαλοῦντο οἱ τότε Ἀττικοί, καὶ ἐκεῖθεν εἰσιν οἱ τὴν Ἀσίαν ἐποικήσαντες Ἴωνες καὶ χρησάμενοι τῇ νῦν λεγομένῃ γλώττῃ Ἰάδι), τὴν δὲ Δωρίδα τῇ Αἰολίδι· πάντες γὰρ οἱ ἐκτὸς Ἰσθμοῦ πλὴν Ἀθηναίων καὶ Με- 10 γάρων καὶ τῶν περὶ τὸν Παρνασσὸν Δωριέων καὶ νῦν ἔτι Αἰολεῖς καλοῦνται· καὶ τοὺς Δωριέας δὲ ὀλίγους ὄντας καὶ τραχυτάτην οἰκοῦντας χώραν εἰκὸς ἐστὶ τῷ ἀνεπιμίκτῳ παρατρέψαι τὴν γλῶτταν καὶ τὰ ἄλλα ἔθνη πρὸς τὸ μὴ ὁμογενές, ὁμογενεῖς πρότερον ὄντας. τοῦτο 15 δ' αὐτὸ καὶ τοῖς Ἀθηναίοις συνέβη, λεπτόγεῶν τε καὶ τραχεῖαν οἰκοῦντας χώραν ἀπορθητούς * μὲν εἶναι διὰ τοῦτο καὶ αὐτόχθονας νομισθῆναι φησὶν ὁ Θουκυδί- 20 δης, κατέχοντας τὴν αὐτὴν αἰεὶ, μηδενὸς ἐξελαύνοντος αὐτοὺς μηδ' ἐπιθυμοῦντος ἔχειν τὴν ἐκείνων· τοῦτο 20 τοίνυν αὐτὸ καὶ τοῦ ἑτερογλώττου καὶ τοῦ ἑτεροεθοῦς αἴτιον, ὥς εἰκὸς, ὑπῆρξε καίπερ ὀλίγοις οὓσιν. οὕτω δὲ τοῦ Αἰολικοῦ πλῆθους ἐπικρατοῦντος ἐν τοῖς ἐκτὸς Ἰσθμοῦ, καὶ οἱ ἐντός Αἰολεῖς πρότερον ἦσαν, εἴτ' ἐμί- 25 χθησαν, Ἰώνων μὲν ἐκ τῆς Ἀττικῆς τὸν Αἰγιάλὸν κα- 25 τασχόντων, τῶν δ' Ἡρακλειδῶν τοὺς Δωριέας κατα- γαγόντων, ὑφ' ὧν τὰ τε Μέγαρα φησὶσθαι καὶ πολλὰι τῶν ἐν τῇ Πελοποννήσῳ πόλεων. οἱ μὲν οὖν Ἴωνες ἐξέπεσον πάλιν ταχέως ὑπὸ Ἀχαιῶν, Αἰολικοῦ ἔθνους· ἐλείφθη δ' ἐν τῇ Πελοποννήσῳ τὰ δύο ἔθνη, τό τε Αἰ- 30 ολικὸν καὶ τὸ Δωρικόν. ὅσοι μὲν οὖν ἤττον τοῖς Δω- ριεῦσιν ἐπεπλέκοντο (καθάπερ συνέβη τοῖς τε Ἀρκάσι

καὶ τοῖς Ἡλείοις, τοῖς μὲν ὀρεινοῖς τελέως οὖσι καὶ οὐκ
 ἐμπεπτωκόσιν εἰς τὸν κλῆρον, τοῖς δ' ἱεροῖς νομισθεῖσι
 τοῦ Ὀλυμπίου Διὸς καὶ καθ' αὐτοὺς εἰρήνην ἄγουσι
 πολὺν χρόνον, ἄλλως τε καὶ τοῦ Αἰολικοῦ γένους οὖσι
 5 καὶ δεδεγμένοις τὴν Ὀξύλῳ συγκατελθοῦσαν στρατιὰν
 περὶ τὴν τῶν Ἡρακλειδῶν ἀθήοδον), οὗτοι αἰολιστὶ
 διελέχθησαν, οἱ δ' ἄλλοι μικτῇ τινι ἐχρήσαντο ἐξ ἀμ-
 φοῖν, οἱ μὲν μᾶλλον οἱ δ' ἦττον αἰολίζοντες· σχεδὸν
 δέ τι καὶ νῦν κατὰ πόλεις ἄλλοι ἄλλως διαλέγονται, δο-
 10 κοῦσι δὲ θεωρίζειν ἅπαντες διὰ τὴν συμβᾶσαν ἐπικρά-
 τειαν. τοσαῦτα μὲν οὖν τὰ τῶν Ἑλλήνων ἔθνη καὶ οὐ—C.334
 τως, ὥς τύπῳ εἰπεῖν, ἀφωρισμένα. λέγωμεν δὴ διαλα-
 βόντες ὃν χρή τρόπον τῇ τάξει περὶ αὐτῶν.

Ἐφορος μὲν οὖν ἀρχὴν εἶναι τῆς Ἑλλάδος τὴν 3
 15 Ἀκαρνανίαν φησὶν ἀπὸ τῶν ἐσπερίων μερῶν· ταύτην
 γὰρ συνάπτειν πρώτην τοῖς Ἑπειρωτικοῖς ἔθνεσιν.
 ἀλλ' ὥσπερ οὗτος τῇ παραλίᾳ μέτρῳ χρώμενος ἐντεῦ-
 θεν ποιεῖται τὴν ἀρχήν, ἡγεμονικόν τι τὴν θάλατταν
 κρίνων πρὸς τὰς τοπογραφίας, ἐπεὶ ἄλλως γ' ἐνεχώρει
 20 κατὰ τὴν Μακεδόνων καὶ Θετταλῶν τὴν ἀρχὴν ἀπο-
 φαίνεσθαι τῆς Ἑλλάδος· οὕτω καὶ ἡμῖν προσήκει ἀκο-
 λουθοῦσι τῇ φύσει τῶν τόπων σύμβουλον ποιεῖσθαι
 τὴν θάλατταν. αὕτη δ' ἐκ τοῦ Σικελικοῦ πελάγους
 προσπесοῦσα τῇ μὲν ἀναχεῖται πρὸς τὸν Κορινθιακὸν
 25 κόλπον, τῇ δ' ἀποτελεῖ χειρρόνησον μεγάλην τὴν Πε-
 λοπόννησον, ἰσθμῷ στενῷ κλειομένην. ἔστι δὲ τὰ δύο
 μέγιστα συστήματα τῆς Ἑλλάδος τό τε ἐντὸς Ἰσθμοῦ
 καὶ τὸ ἐκτὸς μέχρι τῆς ἐκβολῆς τοῦ Πηνειοῦ· ἔστι δὲ
 καὶ μεῖζον καὶ ἐπιφανέστερον τὸ ἐντὸς Ἰσθμοῦ· σχε-

28. post ἐκτὸς: πυλῶν post Πηνειοῦ: καὶ τοῦτο δ' ἐστὶ
 τὸ Θετταλικόν.

δὸν δέ τι καὶ ἀκρόπολις ἐστὶν ἡ Πελοπόννησος τῆς
 συμπάσης Ἑλλάδος χωρὶς γὰρ τῆς λαμπρότη-
 τος καὶ δυνάμεως τῶν ἐνοικησάντων ἐθνῶν αὐτὴ ἡ
 τῶν τόπων θέσις ὑπογράφει τὴν ἡγεμονίαν ταύτην,
 κόλποις τε καὶ ἄκραις πολλαῖς καὶ τοῖς σημειωδεστά- 5
 τοις, χερρονήσοις μεγάλαις, διαπεποικιλμένη, ὧν ἐκ
 διαδοχῆς ἑτέρα τὴν ἑτέραν ἔχει. ἔστι δὲ πρώτη μὲν τῶν
 χερρονήσων ἡ Πελοπόννησος, ἰσθμῷ κλειομένη τεττα-
 ράκοντα σταδίων. δευτέρα δὲ ἡ καὶ ταύτην περιέχουσα,
 ἥς ἰσθμός ἐστιν ὁ ἐκ Παγῶν τῶν Μεγαρικῶν εἰς Νί- 10
 σαιαν, τὸ Μεγαρέων ἐπίνειον, ὑπερβολῇ σταδίων ἑκα-
 τὸν εἰκοσιν ἀπὸ θαλάττης ἐπὶ θάλατταν. τρίτη δ' ἡ
 καὶ ταύτην περιέχουσα, ἥς ἰσθμός ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τοῦ
 Κρισαίου κόλπου μέχρι Θερμοπυλῶν· ἡ δ' ἐπινοου-
 μένη εὐθεῖα γραμμὴ ὅσον πεντακοσίων ὀκτὼ σταδίων 15
 τὴν μὲν Βοιωτίαν ἄπασαν ἐντὸς ἀπολαμβάνουσα, τὴν
 δὲ Φωκίδα τέμνουσα λοξὴν καὶ τοὺς Ἐπικνημιδίους.
 τετάρτη δὲ ἡ ἀπὸ τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου διὰ τῆς
 Οἰτης καὶ τῆς Τραχινίας εἰς τὸν Μαλιακὸν κόλπον κα-
 θήκοντα ἔχουσα τὸν ἰσθμὸν καὶ τὰς Θερμοπύλας, ὅσον 20
 ὀκτακοσίων ὄντα σταδίων· πλειόνων δ' ἡ χιλίων ἄλλος
 ἐστὶν ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ κόλπου τοῦ Ἀμβρακικοῦ διὰ Θετ-
 ταλῶν καὶ Μακεδόνων εἰς τὸν Θερμαῖον διήκων μυ-
 χόν. ὑπαγορεύει δὴ τινα τάξιν οὐ φάυλην ἢ τῶν χερ-
 ρονήσων διαδοχῇ· δεῖ δ' ἀπὸ τῆς ἐλαχίστης ἄρξασθαι, 25
 ἐπιφανεστάτης δέ.

C.335

2

Ἔστι τοίνυν ἡ Πελοπόννησος ἑοικυῖα φύλλῳ πλα-
 τάνου τὸ σχῆμα, ἴση σχεδόν τι κατὰ μῆκος καὶ κατὰ
 πλάτος ὅσον χιλίων καὶ τετρακοσίων σταδίων, τὸ μὲν
 ἀπὸ τῆς ἐσπέρας ἐπὶ τὴν ἑῶ, τοῦτο δ' ἐστὶ τὸ ἀπὸ τοῦ 30
 Χελωνάτα δι' Ὀλυμπίας καὶ τῆς Μεγαλοπολίτιδος ἐπὶ
 Ἰσθμόν· τὸ δ' ἀπὸ τοῦ νότου πρὸς τὴν ἄρκτον, ὅ ἐστι

τὸ ἀπὸ Μαλεῶν δι' Ἀρκαδίας εἰς Αἴγιον· ἡ δὲ περίμετρος μὴ κατακολπίζοντι τετρακισχιλίων σταδίων, ὥς Πολύβιος· Ἀρτεμίδωρος δὲ καὶ τετρακοσίους προστίθῃσι· κατακολπίζοντι δὲ πλείους τῶν ἑξακοσίων ἐπὶ 5 τοῖς πεντακισχιλίοις. ὁ δ' Ἰσθμὸς κατὰ τὸν διολκόν, δι' οὗ τὰ πορθμεῖα ὑπερνεωλκοῦσιν ἀπὸ τῆς ἐτέρας εἰς τὴν ἐτέραν θάλατταν, εἴρηται ὅτι τετταράκοντα σταδίων ἐστίν.

Ἐχουσι δὲ τῆς χειρονήσου ταύτης τὸ μὲν ἐσπέριον 2
10 μέρος Ἡλεῖσι καὶ Μεσσηνίοι, κλυζόμενοι τῷ Σικελικῷ πελάγῃ· προσλαμβάνουσι δὲ καὶ τῆς ἐκατέρωθεν παραλλίας, ἡ μὲν Ἡλεῖα πρὸς ἄρκτον ἐπιστρέφουσα καὶ τὴν ἀρχὴν τοῦ Κορινθιακοῦ κόλπου μέχρι ἄκρας Ἀρά-
ξου, καθ' ἣν ἀντίπορθμός ἐστιν ἢ τε Ἀκαρνανία καὶ 15 αἱ προκείμεναι νῆσοι, Ζάκυνθος καὶ Κεφαλληνία καὶ Ἰθάκη καὶ [αἱ] Ἐχινάδες, ὧν ἐστὶ καὶ τὸ Δουλίχιον· τῆς δὲ Μεσσηνίας τὸ πλεον ἀνεωγμένον πρὸς νότον καὶ τὸ Αἰβυκὸν πέλαγος μέχρι τῶν καλουμένων Θυρίδων πλησίον Ταινάρου. ἐξῆς δὲ μετὰ μὲν τὴν Ἡλείαν ἐστὶ 20 τὸ τῶν Ἀχαιῶν ἔθνος πρὸς ἄρκτους βλέπον καὶ τῷ Κορινθιακῷ κόλπῳ παρατεῖνον, τελευτᾷ δ' εἰς τὴν Σικωνίαν· ἐντεῦθεν δὲ Σικωνὴν καὶ Κόρινθον ἐκδέχεται μέχρι τοῦ Ἰσθμοῦ· μετὰ δὲ τὴν Μεσσηνίαν ἡ Λακωνική καὶ ἡ Ἀργεῖα, μέχρι τοῦ Ἰσθμοῦ καὶ αὕτη. κόλ-
25 ποι δ' εἰσὶν ἐνταῦθα ὅ τε Μεσσηνιακὸς καὶ ὁ Λακωνικὸς καὶ τρίτος ὁ Ἀργολικὸς, τέταρτος δ' ὁ Ἐρμιονικὸς καὶ Σαρωνικὸς (οἱ δὲ Σαλαμινιακὸν καλοῦσιν), ὧν τοὺς μὲν ἡ Αἰβυκὴ τοὺς δ' ἡ Κρητικὴ θάλαττα πληροὶ καὶ τὸ Μυρτώον πέλαγος· τινὲς δὲ καὶ τὸν Σαρωνικὸν πό-
30 ρον [ἢ] πέλαγος ὀνομάζουσι. μέση δ' ἐστὶν ἡ Ἀρκαδία πᾶσιν ἐπικειμένη καὶ γειτνιώσα τοῖς ἄλλοις ἔθνεσιν.

Ὁ δὲ Κορινθιακὸς κόλπος ἄρχεται μὲν ἀπὸ τῶν 3
STRABO II. 6.

ἐκβολῶν τοῦ Εὐήνου (τινὲς δὲ φασιν τοῦ Ἀχελώου τοῦ ὀρίζοντος Ἀκαρνανας καὶ τοὺς Αἰτωλοὺς) καὶ τοῦ Ἀρά-
 ξου. ἐνταῦθα γὰρ πρῶτον ἀξιόλογον συναγωγὴν λαμ-
 βάνουσι πρὸς ἀλλήλας αἱ ἐκατέρωθεν ἀκταί· προϋ-
 σαι δὲ πλέον τελέως συμπίπτουσι κατὰ τὸ Ῥίον καὶ 5
 τὸ Ἀντίρριον, ὅσον δὴ πέντε σταδίων ἀπολείπονσαι
 πορθμόν. ἔστι δὲ τὸ μὲν Ῥίον τῶν Ἀχαιῶν ἀλιτενῆς
 ἄκρα, ὁρεπανοειδῆ τινα ἐπιστροφὴν εἰς τὸ ἐντὸς ἔχου-
 C.336σα· καὶ δὴ καὶ καλεῖται Δρέπανον· κεῖται δὲ μεταξὺ
 Πατρῶν καὶ Αἰγίου Ποσειδῶνος ἱερὸν ἔχουσα· τὸ δ' 10
 Ἀντίρριον ἐν μεθορίοις τῆς Αἰτωλίας καὶ τῆς Λοκρίδος
 ἴδρυνται, καλοῦσι δὲ [καὶ] Μολύκριον Ῥίον. εἴτ' ἐντεῦ-
 θεν διίσταται πάλιν ἡ παραλία μετρίως ἐκατέρωθεν,
 προσελθοῦσα δ' εἰς τὸν Κρισαῖον κόλπον ἐνταῦθα τε-
 λευτᾷ, κλειομένη τοῖς προσεσπερίοις τῆς Βοιωτίας καὶ 15
 τῆς Μεγαρικῆς τερμόσιν. ἔχει δὲ τὴν περίμετρον ὁ
 Κορινθιακὸς κόλπος ἀπὸ μὲν τοῦ Εὐήνου μέχρι Ἀρά-
 ξου σταδίων δισχιλίων διακοσίων τριάκοντα· εἰ δ' ἀπὸ
 τοῦ Ἀχελώου, πλεονάζει ἂν ἑκατὸν πον σταδίοις. ἀπὸ
 μέντοι Ἀχελώου ἐπὶ τὸν Εὐήνον Ἀκαρνανές εἰσιν, εἴθ' 20
 ἐξῆς ἐπὶ τὸ Ἀντίρριον Αἰτωλοί, τὸ δὲ λοιπὸν μέχρι
 Ἰσθμοῦ Φωκέων ἐστὶ καὶ Βοιωτῶν καὶ τῆς Μεγαρίδος,
 στάδιοι χίλιοι ἑκατὸν εἴκοσι δυεῖν δέοντες· ἡ δὲ ἀπὸ
 τοῦ Ἀντιρρίου μέχρι Ἰσθμοῦ θάλαττα . . . Ἀλκωνίς
 καλεῖται, μέρος οὖσα τοῦ Κρισαίου κόλπου· ἀπὸ δὲ 25
 τοῦ] Ἰσθμοῦ ἐπὶ τὸν Ἀράξον τριάκοντα ἐπὶ τοῖς [χι-
 λίοις]. ὥς μὲν δὴ τύπῳ εἶπεῖν τοιαύτη τις καὶ τοσαύτη
 ἡ τῆς Πελοποννήσου θέσις καὶ τῆς ἀντιπόρθμου γῆς
 μέχρι τοῦ μυχοῦ, τοιοῦτος δὲ καὶ ὁ μεταξὺ ἀμφοῖν κόλ-
 πος. εἶτα καθ' ἕκαστα ἐροῦμεν, τὴν ἀρχὴν ἀπὸ τῆς 30
 Ἠλείας ποιησάμενοι.

Β Νῦν μὲν δὴ πᾶσαν Ἠλείαν ὀνομάζουσι τὴν μεταξὺ

Ἀχαιῶν τε καὶ Μεσσηνίων παραλίαν, ἀνέχουσιν εἰς
 τὴν μεσόγαίαν τὴν πρὸς Ἀρκαδίᾳ τῇ κατὰ Φολόην
 καὶ Ἀἰῶνας καὶ Παρρασίους. τοῦτο δὲ τὸ παλαιὸν εἰς
 πλείους δυναστείας διήρρητο, εἴτ' εἰς δύο, τὴν τε τῶν
 5 Ἐπειῶν καὶ τὴν ὑπὸ Νέστορι τῷ Νηλέως· καθάπερ
 καὶ Ὀμηρος εἶρηκε, τὴν μὲν τῶν Ἐπειῶν ὀνομάζων
 Ἴλιν, ἥ δὲ παρ' Ἴλιδα διᾶν, ὅθι κρατεύουσιν Ἐπειοί,“
 τὴν δ' ὑπὸ τῷ Νέστορι Πύλον, δι' ἧς τὸν Ἀλφειὸν ῥέειν
 φησιν, „Ἀλφειοῦ, ὅς τ' εὐρὺ ῥέει Πυλίων διὰ γαίης.“
 10 Πύλον μὲν οὖν καὶ πόλιν οἶδεν ὁ ποιητής, „οἱ δὲ Πύ-
 „λον, Νηλῆος ἐνκτίμενον ποτλίεθρον, ἴξον.“ οὐ διὰ
 τῆς πόλεως δὲ οὐδὲ παρ' αὐτὴν ῥεῖ ὁ Ἀλφειός, ἀλλὰ
 παρ' αὐτὴν μὲν ἕτερος, ὃν οἱ μὲν Παμισδὸν οἱ δὲ Ἀμα-
 θον καλοῦσιν, ἀφ' οὗ καὶ ὁ Πύλος Ἡμαθόεις εἰρησθαι
 15 οὗτος δοκεῖ, διὰ δὲ τῆς χώρας τῆς Πυλίας ὁ Ἀλφειός.

Ἴλις δὲ ἡ νῦν πόλις οὐπω ἐκτιστο καθ' Ὀμηρον, 2
 ἀλλ' ἡ χώρα κωμηδὸν ὠκεῖτο· ἐκαλεῖτο δὲ κοίλη Ἴλις
 ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος· τοιαύτη γὰρ ἦν ἡ πλείστη καὶ
 ἀρίστη· ὅψε δὲ ποτε συνῆλθον εἰς τὴν νῦν πόλιν Ἴλιν,
 20 μετὰ τὰ Περσικά, ἐκ πολλῶν δήμων. σχεδὸν δὲ καὶ
 τοὺς ἄλλους τόπους τοὺς κατὰ Πελοπόννησον πλὴν
 ὀλίγων, οὓς κατέλεξεν ὁ ποιητής, οὐ πόλεις ἀλλὰ χώ- 0.337
 ρας νομίζειν [δεῖ], συστήματα δήμων ἔχουσιν ἐκάστην
 πλείω, ἐξ ὧν ὕστερον αἱ γνωριζόμεναι πόλεις συνωκί-
 25 σθησαν, οἷον τῆς Ἀρκαδίας Μαντίνεια μὲν ἐκ πάντε
 δήμων ὑπ' Ἀργείων συνωκίσθη, Τεγέα δ' ἐξ ἑννέα, ἐκ
 τοσοῦτων δὲ καὶ Ἡραία ὑπὸ Κλεομβρότου ἢ ὑπὸ
 Κλεωνύμου· ὥς δ' αὕτως Αἰγίου ἐξ ἐπτὰ ἢ ὀκτώ δή-
 μων συνεπολίσθη, Πάτραι δὲ ἐξ ἐπτά, Δύμη δὲ ἐξ
 30 ὀκτώ· οὕτω δὲ καὶ ἡ Ἴλις ἐκ τῶν περιοικίδων συνε-
 πολίσθη· μία τούτων προσκτις Ἀργριάδες. ῥεῖ
 δὲ διὰ τῆς πόλεως ὁ Πηνειὸς ποταμὸς παρὰ τὸ γυμνά-

σιον αὐτῆς· ἐπραξάν τε τοῦτο Ἥλαιοι χρόνοις ὕστερον πολλοῖς τῆς εἰς αὐτοὺς μεταστάσεως τῶν χωρίων τῶν ὑπὸ τῷ Νέστορι.

Β Ἦν δὲ ταῦτα ἢ τε Πισᾶτις, ἣς ἡ Ὀλυμπία μέρος, καὶ ἡ Τριφυλία καὶ ἡ τῶν Κανκῶνων. Τριφύλιοι δ' 5 ἐκλήθησαν ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος, ἀπὸ τοῦ τρία φῦλα συνεληλυθέναι, τὸ τε τῶν ἀπ' ἀρχῆς Ἐπειῶν καὶ τὸ τῶν ἐποικησάντων ὕστερον Μινυῶν καὶ τὸ τῶν ὕστατα ἐπικρατησάντων Ἠλείων· οἱ δ' ἀντὶ τῶν Μινυῶν Ἀρκάδας φασίν, ἀμφισβητήσαντας τῆς χώρας πολλάκις, 10 ἀφ' οὗ καὶ Ἀρκαδικὸς Πύλος ἐκλήθη ὁ αὐτὸς καὶ Τριφυλιακός. Ὀμηρος δὲ ταύτην ἅπασαν τὴν χώραν μέγχι Μεσσήνης καλεῖ Πύλον ὁμωνύμως τῇ πόλει. ὅτι δὲ διώριστο ἡ κοίλη Ἥλις ἀπὸ τῶν ὑπὸ τῷ Νέστορι τόπων, ὁ τῶν νεῶν κατάλογος δηλοῖ τοῖς τῶν ἡγεμό- 15 νων καὶ τῶν κατοικιῶν ὀνόμασι. λέγω δὲ ταῦτα συμβάλλων τὰ τε νῦν καὶ τὰ ὑφ' Ὀμήρου λεγόμενα· ἀνάγκη γὰρ ἀντεξετάζεσθαι ταῦτα ἐκείνοις διὰ τὴν τοῦ ποιητοῦ δόξαν καὶ συντροφίαν πρὸς ἡμᾶς, τότε νομίζοντος ἐκάστου κατορθοῦσθαι τὴν παροῦσαν πρόθε- 20 σιν, ὅταν ἢ μηδὲν ἀντιπίπτον τοῖς οὕτω σφόδρα πιστευθεῖσι περὶ τῶν αὐτῶν λόγοις· δεῖ δὴ τὰ τε ὄντα λέγειν καὶ τὰ τοῦ ποιητοῦ παρατιθέντας ἐφ' ὅσον προσήκει προσσκοπεῖν.

Δ Ἔστι δέ τις ἄκρα τῆς Ἠλείας πρόσβορος ἀπὸ ἐξή- 25 κοντα Δύμης Ἀχαϊκῆς πόλεως Ἀραξός. ταύτην μὲν οὖν ἀρχὴν τίθεμεν τῆς τῶν Ἠλείων παραλίας· μετὰ δὲ ταύτην ἐστὶν ἐπὶ τὴν ἐσπέραν προέουσι τὸ τῶν Ἠλείων ἐπίνειον ἢ Κυλλήνη, ἀνάβασιν ἔχουσα ἐπὶ τὴν νῦν πόλιν ἑκατὸν καὶ εἴκοσι σταδίων. μέμνηται δὲ τῆς Κυλ- 30 λήνης ταύτης καὶ Ὀμηρος λέγων Ἰάον Κυλλήνιον ἀρχὸν Ἐπειῶν. οὐ γὰρ ἀπὸ τοῦ Ἀρκαδικοῦ ὄρους ὄντα

- ἔμελλεν ἡγεμόνα τῶν Ἑπειῶν ἀποφῆναι· ἔστι δὲ κόμη
μετρία, τὸν Ἀσκληπιὸν ἔχουσα τὸν Κολώτου, θαυμα-
στὸν ἰδεῖν ξόανον ἐλεφάντινον. μετὰ δὲ Κυλλήνην
ἀκρωτήριόν ἐστιν ὁ Χελωνάτας, δυσμικώτατον τῆς Πε-
5 λοποννήσου σημεῖον. πρόκειται δ' αὐτοῦ νησίον καὶ 0.338
βραχέα ἐν μεθορίοις τῆς τε κοίλης Ἥλιδος [καὶ τῆς]
Πισατῶν, ὅθεν εἰς Κεφαλληνίαν πλέοντι εἰσὶν οὐ
πλεῖους στάδιοι ὀγδοήκοντα. αὐτοῦ δέ που καὶ ὁ Ἑλλί-
σων ἢ Ἑλίσσα ῥεῖ ποταμὸς ἐν τῇ λεχθείσῃ μεθορίᾳ.
- 10 Μεταξὺ δὲ τοῦ Χελωνάτα καὶ τῆς Κυλλήνης ὁ τε 5
Πηνειὸς ἐκδίδωσι ποταμὸς καὶ ὁ Σελλήεις ὑπὸ τοῦ ποιη-
τοῦ λεγόμενος, ῥέων ἐκ Φολόης· ἐφ' ᾧ Ἐφύρα πόλις,
ἐτέρα τῆς Θεσπρωτικῆς καὶ Θετταλικῆς καὶ τῆς Κορίν-
θου, τετάρτη τις ἐπὶ τῇ ὁδῷ κειμένη τῇ ἐπὶ Λασιώνα,
15 ἥτοι ἡ αὐτὴ οὖσα τῇ Βοινῳά (τὴν γὰρ Οἰνόνην οὕτω
καλεῖν εἰώθασιν) ἢ πλησίον ἐκείνης, διέχουσα τῆς
Ἥλειων πόλεως σταδίους ἑκατὸν εἰκοσιν· ἐξ ἧς ἢ τε
Τληπολέμου τοῦ Ἡρακλέους δοκεῖ λέγεσθαι μῆτηρ
„τὴν ἄγετ' ἐξ Ἐφύρης ποταμοῦ ἄπο Σελλήεντος“ (ἐκεῖ
20 γὰρ μάλλον αἱ τοῦ Ἡρακλέους στρατεῖαι, πρὸς ἐκεί-
ναις τε οὐδεὶς ποταμὸς Σελλήεις), καὶ ὁ τοῦ Μέγητος
[θώραξ] „τόν ποτε Φυλεὺς ἤγαγεν ἐξ Ἐφύρης ποτα-
„μοῦ ἄπο Σελλήεντος.“ ἐξ ἧς καὶ τὰ φάρμακα τὰ ἀν-
δροφόνα. εἰς Ἐφύραν γὰρ ἀφίχθαι [ἢ Ἀθηνᾶ] φησὶ τὸν
25 Ὀδυσσεύς „φάρμακον ἀνδροφόνον διζήμενον, ὅφρα οἱ
„εἴη ἰοὺς χρίεσθαι“ καὶ τὸν Τηλέμαχον οἱ μνηστῆρες
„ἦδ' καὶ εἰς Ἐφύρην ἐθέλει πείραν ἄρουραν ἐλθεῖν,
„ὅφρ' ἐνθεν θυμοφθόρα φάρμακ' ἐνεῖκη.“ καὶ γὰρ τὴν
Ἀνγέου θυγατέρα τοῦ τῶν Ἑπειῶν βασιλέως ὁ Νέστωρ
30 ἐν τῇ διηγῆσει τοῦ πρὸς αὐτοὺς πολέμου φαρμακίδα
εἰσάγει „πρῶτος ἐγὼν ἔλον ἄνδρα“ φήσας „Μούλιον
„αἰχμητὴν, γαμβρὸς δ' ἦν Ἀνγείαο, πρεσβυτάτην δὲ

„θύγατρ' εἶχεν, ἥ τόσα φάρμακα ἤδη, ὅσα τρέφει εὐ-
 „ρεῖα χθών.“ ἔστι δὲ καὶ περὶ Σικυνῶνα Σελλήεις πο-
 ταμὸς καὶ Ἐφύρα πλησίον κώμη, καὶ ἐν τῇ Ἀγραίᾳ τῆς
 Αἰτωλίας Ἐφύρα κώμη, οἱ δ' ἀπ' αὐτῆς Ἐφυροὶ· καὶ
 ἄλλοι οἱ Περραιβῶν πρὸς Μακεδονίαν, οἱ Κραννώ- 5
 νιοι, καὶ οἱ Θεσπρωτικοὶ οἱ ἐκ Κιχύρου τῆς πρότερον
 Ἐφύρας.

- 6 Ἀπολλόδωρος δὲ διδάσκων ὃν τρόπον ὁ ποιητὴς
 εἶωθε διαστέλλεσθαι τὰς ὁμωνυμίας, οἷον ἐπὶ τοῦ Ὀρ-
 χομενοῦ τὸν μὲν Ἀρκαδικὸν πολύμηλον καλῶν τὸν δὲ 10
 Βοιωτικὸν Μινύειον, καὶ Σάμον Ὀρηκίην συντιθεῖς
 C.339, „μεσσηγὺς τε Σάμοιο καὶ Ἰμβρον,“ ἵνα χωρίσῃ ἀπὸ
 τῆς Ἰωνικῆς, οὕτω φησὶ καὶ τὴν Θεσπρωτικὴν Ἐφύ-
 ραν διαστέλλεσθαι τῷ τε „τηλόθεν“ καὶ τῷ „ποταμοῦ
 „ἄπο Σελλήεντος.“ ταῦτα δ' οὐχ ὁμολογεῖ τοῖς ὑπὸ τοῦ 15
 Σκηψίου Δημητρίου λεγομένοις, παρ' οὓς μεταφέρει τὰ
 πλεῖστα. ἐκεῖνος γὰρ οὗ φησιν εἶναι Σελλήεντα ἐν
 Θεσπρωτοῖς ποταμόν, ἀλλ' ἐν τῇ Ἠλείᾳ παρὰ τὴν ἐκεῖ
 Ἐφύραν, ὥς προείπομεν. τοῦτό τε οὖν εἰρηκε σκέψεως
 δεόμενον καὶ περὶ τῆς Οἰχαλίας ὅτι φησὶν οὐ μίαν οὐ- 20
 σης, μίαν εἶναι πόλιν Εὐρύτου Οἰχαλιῆος· δῆλον οὖν
 ὅτι τὴν Θετταλικὴν, ἐφ' ἧς φησιν „οἱ τ' ἔχον Οἰχαλίην,
 „πόλιν Εὐρύτου Οἰχαλιῆος.“ τίς οὖν ἐστὶν ἐξ ἧς ὀρ-
 μηθέντα αἱ Μοῦσαι κατὰ Δώριον „ἀντόμεναι Θάμυ-
 „ριν τὸν Ὀρήκα παῦσαν ἀοιδῆς;“ εἰ μὲν γὰρ ἡ Θεττα- 25
 λικὴ, οὐκ εὖ πάλιν ὁ Σκήψιος Ἀρκαδικὴν τινα λέγων,
 ἣν νῦν Ἀνδανίαν καλοῦσιν· εἰ δ' οὗτος εὖ, καὶ ἡ Ἀρ-
 καδικὴ πόλις Εὐρύτου εἴρηται, ὥστ' οὐ μίαν μόνον·
 ἐκεῖνος δὲ μίαν φησί.

25. post ἀοιδῆς: φησὶ γάρ „Οἰχαλίηθεν ἰόντα παρ' Εὐ-
 ρντιου Οἰχαλιῆος“

Μεταξὺ δὲ τοῦ Πηνειοῦ καὶ τῆς Σελλήεντος ἐκ- 7
 βολῆς Πύλος ᾤκειτο κατὰ τὸ Σκόλλιον, οὐχ ἡ τοῦ
 Νέστορος πόλις, ἀλλ' ἑτέρα τις, ἥ πρὸς τὸν Ἀλφειὸν
 οὐδὲν ἐστι κοινῶνημα, οὐδὲ πρὸς τὸν Παμισόν, εἴτε
 5 Ἀμαθον χρὴ καλεῖν. βιάζονται δ' ἔνιοι μνηστευόμενοι
 τὴν Νέστορος δόξαν καὶ τὴν εὐγένειαν· τριῶν γὰρ Πύ-
 λων ἱστορουμένων ἐν Πελοποννήσῳ — καθότι καὶ τὸ
 ἔπος εἰρηται τουτί „ἐστι Πύλος πρὸ Πύλοιο· Πύλος γε
 μὲν ἐστι καὶ ἄλλος“ — τούτου τε καὶ τοῦ Λεπρεατικοῦ
 10 τοῦ ἐν τῇ Τριφυλίᾳ καὶ τῇ Πισάτιδι, τρίτου δὲ τοῦ
 Μεσσηνιακοῦ τοῦ κατὰ Κορυφάσιον, ἕκαστοι τὸν παρὰ
 σφισιν ἡμαθόεντα πειρῶνται δεικνύναι, καὶ τὴν τοῦ
 Νέστορος πατρίδα τοῦτον ἀποφαίνουσιν. οἱ μὲν οὖν
 πολλοὶ τῶν νεωτέρων καὶ συγγραφέων καὶ ποιητῶν
 15 Μεσσηνιὸν φασὶ τὸν Νέστορα, τῷ σωζομένῳ μέχρι εἰς
 αὐτοὺς προστιθέμενοι· οἱ δ' Ὀμηρικώτεροι τοῖς ἔπεσιν
 ἀκολουθοῦντες τοῦτον εἶναί φασὶ τὸν τοῦ Νέστορος
 Πύλον, οὗ τὴν χώραν διέξεισιν ὁ Ἀλφειός· διέξεισι δὲ
 τὴν Πισάτιν καὶ τὴν Τριφυλίαν. οἱ δ' οὖν ἐκ τῆς κοί-
 20 λης Ἥλιδος καὶ τοιαύτην φιλοτιμίαν προσετίθεσαν τῷ
 παρ' αὐτοῖς Πύλῳ, καὶ γνωρίσματα δεικνύντες Γέρη-Ο.340
 νον τόπον καὶ Γέροντα ποταμὸν καὶ ἄλλον Γεράνιον,
 εἰπ' ἀπὸ τούτων ἐπιθέτως Γερήνιον εἰρησθαι πιστού-
 μενοι τὸν Νέστορα. τοῦτο δὲ ταῦτ' οἱ Μεσσηνιοὶ
 25 πεποιήκασι, καὶ πιθανώτεροί γε φαίνονται· μᾶλλον
 γὰρ γνώριμά φασιν εἶναι τὰ παρ' ἐκείνοις Γέρηνα,
 συνοικουμένην ποτὲ εὖ. τοιαῦτα μὲν τὰ περὶ τὴν κοί-
 λην Ἥλιν ὑπάρχοντα νυνί.

Ὁ δὲ ποιητὴς εἰς τέτταρα μέρη διελὼν τήνδε τὴν 8
 30 χώραν, τέτταρας δὲ καὶ τοὺς ἡγεμόνας εἰπών, οὐ σα-
 φῶς εἰρηκεν „οἱ δ' ἄρα Βουπράσιόν τε καὶ Ἥλιδα δῖαν
 „ἔναιον, ὅσσον ἔφ' Ἐρμίνην καὶ Μύρσινος ἐσχατώσα

„πέτρον τ' Ὠλενίη καὶ Ἀλσισίον ἐντὸς ἔεργει, τῶν αὖ
 „τέσσαρες ἄρχοι ἔσαν, δέκα δ' ἀνδρὶ ἐκάστω νῆες
 „ἔποντο θοαί· πολέες δ' ἔμβαινον Ἐπειοί.“ τῷ μὲν
 γὰρ Ἐπειοὺς ἀμφοτέρους προσαγορεύειν τοὺς τε Βου-
 πρασιεῖς καὶ τοὺς Ἥλείους, Ἥλείους δὲ μηκέτι καλεῖν 5
 τοὺς Βουπρασιεῖς, οὐ τὴν Ἥλειαν δόξειεν ἂν εἰς τέτ-
 ταρα μέρη διαιρεῖν, ἀλλὰ τὴν τῶν Ἐπειῶν, ἣν εἰς δύο
 μέρη διείλε πρότερον· οὐδ' ἂν μέρος εἴη τῆς Ἥλιδος
 τὸ Βουπράσιον, ἀλλὰ τῶν Ἐπειῶν μᾶλλον. ὅτι γὰρ
 Ἐπειοὺς καλεῖ τοὺς Βουπρασίους, δῆλον „ὥς ὁπότε 10
 „κράϊοντ' Ἀμαρυγκέα θάπτον Ἐπειοὶ Βουπρασίφ.“
 πάλιν δὲ τῷ συγκαταριθμῆσθαι Βουπράσιόν τε καὶ
 Ἥλιδα διὰν λέγοντα, εἰτ' εἰς τέτταρας διαιρεῖν μερίδας,
 ὥς ἂν κοινῷ δοκεῖ τῷ τε Βουπρασίφ καὶ τῇ Ἥλιδι αὐ-
 τὰς ὑποτάττειν. ἦν δ', ὥς ἔοικε, κατοικία τῆς Ἥλειας 15
 τὸ Βουπράσιον ἀξιώλογος, ἣ νῦν οὐκέτ' ἐστίν· ἡ δὲ
 χώρα καλεῖται μόνον οὕτως ἢ ἐπὶ τῆς ὁδοῦ τῆς ἐπὶ Δύ-
 μνῃ ἐξ Ἥλιδος τῆς νῦν πόλεως. ὑπολάβοι δ' ἂν τις καὶ
 ὑπεροχὴν τινα ἔχειν τότε τὸ Βουπράσιον παρὰ τὴν
 Ἥλιν, ὥσπερ καὶ οἱ Ἐπειοὶ παρὰ τοὺτους· ὕστερον δ' 20
 αὐτ' Ἐπειῶν Ἥλαιοι ἐκλήθησαν. καὶ τὸ Βουπράσιον
 μὲν δὴ μέρος ἦν τῆς Ἥλιδος. ποιητικῷ δέ τιτι σχήματι
 συγκαταλέγειν τὸ μέρος τῷ ὅλῳ φασὶ τὸν Ὅμηρον, ὥς
 τό „ἂν' Ἑλλάδα καὶ μέσον Ἄργος“ καὶ „ἂν' Ἑλλάδα
 τε Φθίην τε“ „Κουρητὲς τ' ἐμάχοντο καὶ Αἰτωλοί“ „οἱ 25
 δ' ἐκ Δουλιχίου Ἐχινάων δ' ἰεράων.“ καὶ γὰρ τὸ Δου-
 λίχιον τῶν Ἐχινάδων. χρῶνται δὲ καὶ οἱ νεώτεροι·
 Ἰππῶναξ μὲν „Κυπρίων βέκος φαγοῦσι καὶ Ἀμαθου-
 „σίων πνρόν.“ Κύπριοι γὰρ καὶ οἱ Ἀμαθούσιοι· καὶ

11. post Βουπρασίφ: τὸ δὲ Βουπράσιον εἶναι τινα χώραν
 τῆς Ἥλειας, κατοικίαν οὐκ ἔχουσαν ὁμώνυμον· νυνὶ φαίνεται
 τῆς Ἥλιδος ὃν μέρος καὶ τοῦτο.

Ἀλκμάν δέ „Κύπρον λιμερτὰν λιποῖσα καὶ Πάφον πε-
 „ριρρύταν“ καὶ Αἰσχύλος „Κύπρον Πάφον τ' ἔχουσαC.341
 „πάντα κλήρον.“ εἰ δ' οὐκ εἴρηκεν Ἠλείους τοὺς Βου-
 πρασίους, οὐδ' ἄλλα πολλὰ τῶν ὄντων, φήσομεν· ἀλλὰ
 5 τοῦτ' οὐκ ἔστιν ἀπόδειξις τοῦ μὴ εἶναι, ἀλλὰ τοῦ μὴ
 εἰπεῖν μόνον.

Ἐκαταῖος δ' ὁ Μιλήσιος ἑτέρους λέγει τῶν Ἠλείων 9
 τοὺς Ἐπειούς· τῷ γοῦν Ἡρακλεῖ συστρατεῦσαι τοὺς
 Ἐπειοὺς ἐπὶ Αὐγέα καὶ συνανελεῖν αὐτῷ τὸν τε Αὐ-
 10 γέα καὶ τὴν Ἥλιν· φησὶ δὲ καὶ τὴν Δύμην Ἐπειίδα
 καὶ Ἀχαιίδα. πολλὰ μὲν οὖν καὶ μὴ ὄντα λέγουσιν οἱ
 ἀρχαῖοι συγγραφεῖς, συντεθραμμένοι τῷ ψεύδει διὰ
 τὰς μυθογραφίας· διὰ δὲ τοῦτο καὶ οὐχ ὁμολογοῦσι
 πρὸς ἀλλήλους περὶ τῶν αὐτῶν. οὐ μέντοι ἄπιστον
 15 οὐδ' εἴ ποτε διάφοροι τοῖς Ἠλείοις ὄντες οἱ Ἐπειοὶ καὶ
 ἑτεροεθνεῖς εἰς ταῦτό συνήρχοντο κατ' ἐπικράτειαν,
 καὶ κοινὴν ἔνεμον τὴν πολιτείαν· ἐπεκράτουν δὲ καὶ
 μέγχι Δύμης. ὁ μὲν γὰρ ποιητὴς οὐκ ὠνόμακε τὴν Δύ-
 μην, οὐκ ἀπεικὸς δ' ἐστὶ τότε μὲν αὐτὴν ὑπὸ τοῖς
 20 Ἐπειοῖς ὑπάρχει, ὕστερον δὲ τοῖς Ἰωσιν, ἢ μὴδ' ἐκεῖ-
 νοῖς ἀλλὰ τοῖς τὴν ἐκείνων χώραν κατασχοῦσιν Ἀχαι-
 οῖς· τῶν δὲ τεττάρων μερίδων, ὧν ἐντός ἐστι καὶ τὸ
 Βουπράσιον, ἡ μὲν Τρμίνη καὶ ἡ Μύρσινος τῆς Ἠλείας
 ἐστίν, αἱ λοιπαὶ δὲ ἐπὶ τῶν ὄρων ἤδη τῆς Πισατίδος,
 25 ὥς οἴονται τινες.

Τρμίνη μὲν οὖν πολίχμιον ἦν, νῦν δ' οὐκ ἔστιν· 10
 ἀλλ' ἀκρωτήριον πλησίον Κυλλήνης ὀρεινόν ἐστι, κα-
 λούμενον Ὀρμινά ἢ Τρμινά· Μύρσινος δὲ τὸ νῦν
 Μυρτουύντιον, ἐπὶ θάλατταν καθήκουσα κατὰ τὴν ἐκ
 30 Δύμης εἰς Ἥλιν ὁδὸν κατοικία, στάδια τῆς Ἠλείων πό-
 λεως διέχουσα ἑβδομήκοντα. πέτρην δ' Ὠλενίην εἰκά-
 ζουσι τὴν νῦν Σκόλλιν· ἀνάγκη γὰρ εἰκότα λέγειν, καὶ

τῶν τόπων καὶ τῶν ὀνομάτων μεταβεβλημένων, ἐκείνου τε μὴ σφόδρα ἐπὶ πολλῶν σαφηνίζοντος· ἔστι δ' ὄρος πετρῶδες κοινὸν Δυμαίων τε καὶ Τριταίων καὶ Ἑλείων, ἐχόμενον ἐτέρου τινὸς Ἀρκαδικοῦ ὄρους Λαμπείας, ὃ τῆς Ἑλίδος μὲν διέστηκεν ἐκ[ατὸν καὶ] τριά- 5
κοντα σταδίους, Τριταίας δὲ ἑκατὸν, [καὶ Δύμης] τοὺς ἴσους, Ἀχαϊκῶν πόλεων. τὸ δ' Ἀλείσιον ἔστι τὸ νῦν Ἀλεσιαῖον, χώρα περὶ τὴν Ἀμφιδολίδα, ἐν ᾗ καὶ κατὰ μῆνα ἄγορὰν συνάγουσιν οἱ περίοικοι· κεῖται δὲ ἐπὶ τῆς ὀρεινῆς ὁδοῦ τῆς ἐξ Ἑλίδος εἰς Ὀλυμπίαν· πρότε- 10
ρον δ' ἦν πόλις τῆς Πισάτιδος, ἄλλοτ' ἄλλως τῶν ὄρων ἐπαλλαττόντων διὰ τὰς τῶν ἡγεμόνων μεταβολάς· τὸ δ' Ἀλείσιον καὶ Ἀλεισίου κολώνην ὃ ποιητὴς καλεῖ
C.342 ὅταν φῇ „μέσφ' ἐπὶ Βουπρασίῳ πολυπύρου βήσαμεν „ἵππους πέτρης τ' Ὀλενίης καὶ Ἀλεισίου ἐνθα κολώνη 15
„κέκληται.“ ὑπερβατῶς γὰρ δεῖ δέξασθαι ἴσον τῷ „καὶ „ἐνθ' Ἀλεισίου κολώνη κέκληται.“ ἐνιοὶ δὲ καὶ ποταμὸν δεικνύουσιν Ἀλείσιον.

- 11 Λεγομένων δέ τινων ἐν τῇ Τριφυλίᾳ Καυκῶνων πρὸς τῇ Μεσσηνίᾳ, λεγομένης δὲ καὶ τῆς Δύμης Καν- 20
κωνίδος ὑπὸ τινων, ὅντος δὲ καὶ ποταμοῦ ἐν τῇ Δυμαίᾳ μεταξὺ Δύμης καὶ Τριταίας ὃς καλεῖται Καύκων, ζητοῦσι περὶ τῶν Καυκῶνων μὴ διττοὶ λέγονται, οἱ μὲν περὶ τὴν Τριφυλίαν οἱ δὲ περὶ Δύμην καὶ Ἑλιν καὶ τὸν Καύκωνα· ἐμβάλλει δ' οὗτος εἰς ἕτερον, ὃς 25
Τευθέας ἀρσενικῶς καλεῖται, ὁμώνυμος πολίχνη τινὶ τῶν εἰς τὴν Δύμην συνωκισμένων, πλὴν ὅτι χωρὶς τοῦ σίγμα Τευθέα λέγεται θηλυκῶς αὕτη, ἐκτεινόντων τὴν ἐσχάτην συλλαβὴν, ὅπου τὸ τῆς * Νεμυδίας Ἀρτέμιδος ἱερὸν. ὃ δὲ Τευθέας εἰς τὸν Ἀχελῶον ἐμβάλλει τὸν 30

κατὰ Λύμην θέοντα, ὁμώνυμον τῷ κατὰ Ἀκαρνανίαν, καλούμενον καὶ Πείρον. τοῦ δ' Ἑσιόδου εἰπόντος „ᾧκεε δ' Ὀγλινίην πέτρην ποταμοῖο παρ' ὅχθας εὐρείος „Πείροιο,“ μεταγράφουσί τινες Πάροιο οὐκ εὖ. οὔτε 5 γὰρ τὴν Λύμην ὀπόθεν Κανκωνίδα εἰρησθαι συμβέβηκε παραλιπεῖν ἄξιον, οὔτε τὸν ποταμὸν ὀπόθεν Κανκων εἴρηται, διὰ τὸ τοὺς Κανκωνας παρέχειν ζήτησιν, οἳ τινές ποτέ εἰσιν, ὅπου φησὶν ἡ Ἀθηνᾶ βαδίζειν κατὰ τὴν τοῦ χρέους κομιδὴν. εἰ γὰρ δὴ δεχοίμεθα τοὺς ἐν 10 τῇ Τριφυλίᾳ λέγεσθαι τοὺς περὶ Λέπρειον, οὐκ οἶδ' ὅπως πιθανὸς ἔσται ὁ λόγος· διὸ καὶ γράφουσί τινες „ἐνθα χρεῖός μοι ὀφείλεται“ Ἡλιδι δῆλ, οὐκ ὀλίγον.“ σαφεστεράν δ' ἔξει τὴν ἐπίσκεψιν τοῦτο, ἐπειδὴν τὴν ἑξῆς χώραν περιοδεύσωμεν τὴν τε Πισᾶτιν καὶ τὴν 15 Τριφυλίαν μέχρι τῆς τῶν Μεσσηνίων μεθορίας.

Μετὰ δὲ τὸν Χελωνάταν ὁ τῶν Πισατῶν ἔστιν 12 αἰγιαλὸς πολὺς, εἴτ' ἄκρα Φειά· ἣν δὲ καὶ πολίχνη „Φειᾶς παρ' τείχεσσι, Ἰαρδάνου ἀμφὶ ῥέεθρα.“ ἔστι γὰρ καὶ ποτάμιον πλησίον. ἔνιοι δ' ἀρχὴν τῆς Πισᾶ—C.343 20 τιδος τὴν Φειάν φασι· πρόκειται δὲ καὶ ταύτης νησίον καὶ λιμὴν, ἐνθεν εἰς Ὀλυμπίαν τὸ ἐγγυτάτω ἐκ θαλάττης εἰς στάδιοι ἑκατὸν εἴκοσιν. εἴτ' ἄλλη ἄκρα εὐθύς ἐπὶ πολὺ προὔχουσα ἐπὶ τὴν δύσιν, καθάπερ ὁ Χελωνάτας, ἀφ' ἧς πάλιν ἐπὶ τὴν Κεφαλληνίαν στάδιοι ἑκα— 25 τὸν εἴκοσιν. εἰθ' ὁ Ἀλφειὸς ἐκδίδωσι, διέχων τοῦ Χε—

4. post οὐκ εὖ: περὶ δὲ τῶν Κανκωνίων ζητοῦσι, φησὶν, ὅτι τῆς Ἀθηνᾶς τῆς τῷ Μέντορι σεία εἰκούσης πρὸς τὸν Νέστορα „αἰ. με- οὐδ' κετο δῶμα, πέμψον σὺν δίσκῳ σημαίνεσθαι χώρα τις ἐν εἶχον, ἕτεροι ὄντες τῶν ἐν τῇ Τριφυλίᾳ, ἐπεκτείνοντες καὶ μέχρι τῆς Λυμαίας τυχόν.

λωνάτα σταδίους διακοσίους ὀγδοήκοντα, Ἀράξου δὲ πεντακοσίους τετταράκοντα πέντε. ῥεῖ δ' ἐκ τῶν αὐτῶν τόπων ἐξ ὧν καὶ ὁ Εὐρώτας· καλεῖται δὲ Ἀσέα, κώμη τῆς Μεγαλοπολίτιδος, πλησίον ἀλλήλων ἔχουσα δύο πηγάς, ἐξ ὧν ῥέουσιν οἱ λεχθέντες ποταμοί· δύν- 5 τες δ' ὑπὸ γῆς ἐπὶ συχνοὺς σταδίους ἀνατέλλουσι πάλιν, εἰδ' ὁ μὲν εἰς τὴν Λακωνικὴν ὁ δ' εἰς τὴν Πισάτιν κατάγεται. ὁ μὲν οὖν Εὐρώτας κατὰ τὴν ἀρχὴν τῆς Βλεμινάτιδος ἀναδαίξας τὸ ῥεῖθρον, παρ' αὐτὴν τὴν Σπάρτην ῥυεῖς καὶ διεξιὼν αὐλῶνά τινα μακρὸν κατὰ 10 τὸ Ἑλος, οὗ μέμνηται καὶ ὁ ποιητής, ἐκδίδωσι μεταξὺ Γυνθείου τοῦ τῆς Σπάρτης ἐπινείου καὶ Ἀκραίων. ὁ δ' Ἀλφειὸς παραλαβὼν τὸν τε Λάδωνα καὶ τὸν Ἐρύμανθον καὶ ἄλλους ἀσημοτέρους διὰ τῆς Φρίξης καὶ τῆς Πισάτιδος καὶ Τριφυλίας ἐνεχθεὶς παρ' αὐτὴν τὴν 15 Ὀλυμπίαν ἐπὶ θάλατταν τὴν Σικελικὴν ἐκπίπτει μεταξὺ Φειᾶς τε καὶ Ἐπιταλίου. πρὸς δὲ τῇ ἐκβολῇ τὸ τῆς Ἀλφειωνίας Ἀρτέμιδος ἢ Ἀλφειούσης ἄλσος ἐστὶ (λέγεται γὰρ ἀμφοτέρως), ἀπέχον τῆς Ὀλυμπίας εἰς ὀγδοήκοντα σταδίους. ταύτῃ δὲ τῇ θεῷ καὶ ἐν Ὀλυμ- 20 πίᾳ κατ' ἔτος συντελεῖται πανήγυρις, καθάπερ καὶ τῇ Ἐλαφίᾳ καὶ τῇ Λαφνίᾳ. μεστὴ δ' ἐστὶν ἡ γῆ πᾶσα ἀρτεμισίων τε καὶ ἀφροδισίων καὶ νυμφαίων ἐν ἄλσεσιν ἀνθέων [πλέ]ως τὸ πολὺ διὰ τὴν εὐνδρίαν, συχνὰ δὲ καὶ ἑρμεῖα ἐν ταῖς ὁδοῖς, ποσεῖδια δ' ἐπὶ ταῖς ἀκταῖς. 25 ἐν δὲ τῷ τῆς Ἀλφειωνίας ἱερῷ γραφαὶ Κλεάνθους τε καὶ Ἀρήγοντος, ἀνδρῶν Κορινθίων, τοῦ μὲν Τροίας ἄλωσης καὶ Ἀθηνᾶς γοναί, τοῦ δ' Ἀρτεμις ἀναφερομένη ἐπὶ γρυπός, σφόδρα εὐδόκιμοι.

13 Εἶτα τὸ διεῖργον ὄρος τῆς Τριφυλίας τὴν Μακι- 30 στίαν ἀπὸ τῆς Πισάτιδος· εἰτ' ἄλλος ποταμὸς Χαλκίς καὶ κρήνη Κρουνοὶ καὶ κατοικία Χαλκίς, καὶ τὸ Σαμι-

κὸν μετὰ ταῦτα, ὅπου τὸ μάλιστα τιμώμενον τοῦ Σα-
μίου Ποσειδῶνος ἱερὸν· ἔστι δ' ἄλσος ἀγριελαιῶν
πλέων· ἐπεμελοῦντο δ' αὐτοῦ Μακίστιοι· οὗτοι δὲ καὶ
τὴν ἐκεχειρίαν ἐπήγγελλον, ἣν καλοῦσι Σάμιον· συν-
5 τελοῦσι δ' εἰς τὸ ἱερὸν πάντες Τριφύλιοι. καὶ τὸ τῆς
Σκιλλουντίας δὲ Ἀθηναῖς ἱερὸν τὸ περὶ Σκιλλοῦντα τῶν
ἐπιφανῶν ἐστίν, Ὀλυμπίας πλησίον κατὰ τὸν φελλῶνα.

Κατὰ ταῦτα δὲ πως τὰ ἱερὰ ὑπέρεκεται τῆς θα- 14
λάττης ἐν τριάκοντα ἢ μικρῷ πλείοσι σταδίοις ὁ Τρι-
10 φυλιακὸς Πύλος [ὁ] καὶ Λεπρεατικός, ὃν καλεῖ ὁ ποιη- C.344
τῆς ἡμαθόεντα καὶ παραδίδωσι τοῦ Νέστορος πατρὶδα,
ὥς ἂν τις ἐκ τῶν ἐπῶν τεκμαίροιτο· εἴτε τοῦ παραρ-
ρέοντος ποταμοῦ πρὸς ἕρκτον Ἀμάθου καλουμένου
πρότερον, ὃς νῦν *Μάματος καὶ Ἀρκαδικὸς καλεῖται,
15 ὥστ' ἐντεῦθεν ἡμαθόεντα κεκληῖσθαι· εἴτε τούτου μὲν
Παμισοῦ καλουμένου ὁμωνύμως τοῖς ἐν τῇ Μεσσηνίᾳ
δυσί, τῆς δὲ πόλεως ἄδηλον ἐχούσης τὴν ἐτυμολογίαν
τοῦ ἐπιθέτου· καὶ γὰρ τὸ ἀμαθώδη τὸν ποταμὸν ἢ τὴν
χώραν εἶναι ψευδὸς φασί. πρὸς ἕω δ' ἐστὶν ὄρος τοῦ
20 Πύλου πλησίον ἐπώνυμον Μίνθης, ἣν μυθεύουσι
παλλακὴν τοῦ Ἄιδου γενομένην πατηθεῖσαν ὑπὸ τῆς
κόρης εἰς τὴν κηπαίαν μίνθην μεταβαλεῖν, ἣν τινας
ἡδύοσμον καλοῦσι. καὶ δὴ καὶ τέμενός ἐστιν Ἄιδου
πρὸς τῷ ὄρει τιμώμενον καὶ ὑπὸ Μακιστίων, καὶ Διή-
25 μητρος ἄλσος ὑπερκείμενον τοῦ Πυλιακοῦ πεδίου. τὸ
δὲ πεδίου ἐγγεῶν ἐστὶ τοῦτο, τῇ θαλάττῃ δὲ συνάψαν
παρατείνει παρ' ἅπαν τὸ μεταξὺ τοῦ τε Σαμικοῦ καὶ
ποταμοῦ Νέδας διάστημα. θινώδης δὲ καὶ στενός ἐστιν
ὁ τῆς θαλάττης αἰγιαλός, ὥστ' οὐκ ἂν ἀπογνοίῃ τις
30 ἐντεῦθεν ἡμαθόεντα ἀνομάσθαι τὸν Πύλον.

15 Πρὸς ἄρκτον δ' ὁμορα ἦν τῷ Πύλῳ δύο πολίδια Τριφυλιακὰ Ἵπανα καὶ Τυμπανέαι, ὧν τὸ μὲν εἰς Ἥλιον συνφοκίσθη τὸ δ' ἔμεινε. καὶ ποταμοὶ δὲ δύο ἐγγὺς ῥέουσιν ὃ τε Δαλίῳν καὶ ὁ Ἀχέρων, ἐμβάλλοντες εἰς τὸν Ἀλφειόν. ὁ δὲ Ἀχέρων κατὰ τὴν πρὸς τὸν Αἰ- 5 δην οἰκειότητα ὠνόμασται· ἐκτετίμηται γὰρ δὴ σφόδρα τὰ τε τῆς Δήμητρος καὶ τῆς κόρης ἱερὰ ἐνταῦθα καὶ τὰ τοῦ Αἰδοῦ, τάχα διὰ τὰς ὑπεναντιότητας, ὥς φησιν ὁ Σκήψιος Δημήτριος. καὶ γὰρ εὐκαρπὸς ἐστὶ καὶ ἐρυσίβην γεννᾷ καὶ θρύον ἢ Τριφυλία· διόπερ 10 ἀντὶ μεγάλης φορᾶς πυκνὰς ἀφορίας γίνεσθαι συμβαίνει κατὰ τοὺς τόπους.

16 Τοῦ δὲ Πύλου πρὸς νότον ἐστὶ τὸ Λεπρεῖον. ἦν δὲ καὶ αὕτη ἡ πόλις ὑπὲρ τῆς θαλάττης ἐν τετταράκοντα σταδίοις· μεταξὺ δὲ τοῦ Λεπρείου καὶ τοῦ *Ἀννίου τὸ 15 ἱερὸν τοῦ Σαμίου Ποσειδῶνος ἐστίν, ἑκατὸν σταδίους ἑκατέρου διέχον. τοῦτο δ' ἐστὶ τὸ ἱερὸν ἐν ᾧ καταληφθῆναί φησιν ὁ ποιητὴς ὑπὸ Τηλεμάχου τὴν θυσίαν συντελοῦντας τοὺς Πυλίους „οἱ δὲ Πύλον, Νηλῆος „ἐνκτίμενον πτολίεθρον, ἱξον· τοὶ δ' ἐπὶ θινὶ θαλάσ- 20 „σης ἱερὰ ῥέξον, ταύρους παμμέλανας, Ἐνοσίχθονι C.345 „κυανοχαίτη.“ πάρεστι μὲν γὰρ τῷ ποιητῇ καὶ πλάττειν τὰ μὴ ὄντα, ὅταν δ' ἢ δυνατόν, ἐφαρμόττειν τοῖς οὖσι τὰ ἔπη καὶ σώζειν τὴν διήγησιν. τὸ δ' ἀπέχεσθαι προσῆκε μᾶλλον. χώραν δ' εἶχον εὐδαίμονα οἱ Λε- 25 πρεᾶται· τούτοις δ' ὁμοροὶ Κυπαρισσιεῖς. ἄμφω δὲ τὰ χωρία ταῦτα Καύκωνες κατεῖχον, καὶ τὸν Μάκιστον δέ, ὃν τινες Πλατανιστοῦντα καλοῦσιν. ὁμώνυμον τῇ χώρᾳ [δ'] ἐστὶ τὸ πόλισμα. φασὶ δ' ἐν τῇ Λεπρεάτιδι καὶ Καύκωνος εἶναι μνήμα, εἴτ' ἀρχηγέτου τινὸς εἴτ' 30 ἄλλως ὁμωνύμου τῷ ἔθνει.

17 Πλείους δ' εἰσὶ λόγοι περὶ τῶν Καυκῶνων· καὶ

γὰρ Ἀρκαδικὸν ἔθνος φασί, καθάπερ τὸ Πελασγικόν,
 καὶ πλανητικὸν ἄλλως, ὥσπερ ἐκεῖνο. Ἱστορεῖ γοῦν ὁ
 ποιητὴς καὶ τοῖς Τρωσὶν ἀφιγμένους συμμάχους, πό-
 θεν δ' οὐ λέγει· δοκοῦσι δ' ἐκ Παφλαγονίας· ἐκεῖ γὰρ
 5 ὀνομάζουσι Κανκωνιάτας τινὰς Μαριανδυννοῖς ὁμό-
 ρους, οἳ καὶ αὐτοὶ Παφλαγόνες εἰσὶ. μνησθησόμεθα
 δ' αὐτῶν ἐπὶ πλεόν, ὅταν εἰς ἐκεῖνον περιστῇ τὸν τό-
 πον ἡ γραφή. νυνὶ δὲ περὶ τῶν ἐν τῇ Τριφυλίᾳ Καν-
 κώνων ἔτι καὶ ταῦτα προσιστορητέον. οἱ μὲν γὰρ καὶ
 10 ὅλην τὴν νῦν Ἑλείαν ἀπὸ τῆς Μεσσηνίας μέχρι Δύ-
 μης Κανκωνίαν λεχθῆναι φασιν· Ἀντίμαχος γοῦν καὶ
 Ἐπειοὺς καὶ Κανκωνας ἅπαντας προσαγορεύει. τινὲς
 δὲ ὅλην μὲν μὴ κατασχεῖν αὐτούς, δίχα δὲ μεμερι-
 σμένους οἰκεῖν, τοὺς μὲν πρὸς τῇ Μεσσηνίᾳ κατὰ
 15 τὴν Τριφυλίαν τοὺς δὲ πρὸς τῇ Δύμῃ κατὰ τὴν Βου-
 πρασίδα καὶ τὴν κοίλην Ἑλιν· Ἀριστοτέλης δ' ἐνταῦ-
 θα μάλιστα οἶδεν ἰδρυμένους αὐτούς. καὶ δὴ τοῖς ὑφ'
 Ὀμήρου λεγομένοις ὁμολογεῖ μᾶλλον ἢ ὑστάτη ἀπόφα-
 σις, τό τε ζητούμενον πρότερον λαμβάνει λύσιν. ὁ μὲν
 20 γὰρ Νέστωρ ὑπόκειται τὸν Τριφυλιακὸν οἰκῶν Πύ-
 λον, τὰ τε πρὸς νότον καὶ τὰ ἑωθινά (ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ
 συγκυροῦντα πρὸς τὴν Μεσσηνίαν καὶ τὴν Λακωνι-
 κήν) ὑπ' ἐκείνῳ ἐστίν, ἔχουσι δ' οἱ Κανκωνες, ὥστε
 τοῖς ἀπὸ τοῦ Πύλου βαδίζουσιν εἰς Λακεδαίμονα ἀνάγ-
 25 κη διὰ Κανκώνων εἶναι τὴν ὁδόν. τὸ δὲ ἱερὸν τοῦ
 Σαμίου Ποσειδῶνος καὶ ὁ κατ' αὐτὸ ὄρμος, εἰς ὃν κα-
 τήχθη Τηλέμαχος, πρὸς δύσιν καὶ πρὸς ἄρκτον ἀπο-
 νεύει. εἰ μὲν τοίνυν οἱ Κανκωνες ἐνταῦθα μόνον οἰ-
 κοῦσιν, οὐ σῶζεται τῷ ποιητῇ ὁ λόγος. κελεύει γὰρ ἡ
 30 μὲν Ἀθηναῖα κατὰ τὸν Σωτάδην τῷ Νέστορι, τὸν μὲν Τη-
 λέμαχόν εἰς τὴν Λακεδαίμονα πέμψαι σὺν δίφρῳ τε
 καὶ νίει εἰς τὰ πρὸς ἕω μέρη· αὐτὴ δ' ἐπὶ ναῦν βαδιεῖ-

σθαι νυκτερεύουσα φησιν ἐπὶ τὴν θυρίδα καὶ εἰς τοῦ-
πίσω, „ἀτὰρ ἡῶθεν μετὰ Καύκωνας μεγαθύμους“
πορεύσεσθαι ἐπὶ τὸ χρέος πάλιν εἰς τοῦμπροσθεν. τίς
C.346οὗν ὁ τρόπος; παρὴν γὰρ τῷ Νέστορι λέγειν ἄλλ’ οἷ-
γε Καύκωνες ὑπ’ ἐμοὶ εἰσι καὶ πρὸ ὁδοῦ τοῖς εἰς Λακε- 5
δαίμονα βαδίζουσιν· ὥστε τί οὐ συνοδεύεις τοῖς περὶ
Τηλέμαχον, ἀλλ’ ἀναχωρεῖς εἰς τοῦπίσω; ἅμα δ’ οἷ-
κετον ἦν τῷ βαδίζοντι ἐπὶ χρέους κομιδὴν οὐκ ὀλίγον,
ὥς φησι, πρὸς ἀνθρώπους ὑπὸ τῷ Νέστορι ὄντας, αἰ-
τήσασθαι τινα παρ’ αὐτοῦ βοήθειαν, εἴ τι ἀγνωμονοῖτο 10
(ὥσπερ εἶωθε) περὶ τὸ συμβόλαιον· οὐ γέγονε δὲ
τοῦτο. εἰ μὲν τοίνυν ἐνταῦθα μόνον οἰκοῖεν οἱ Καύ-
κωνες, ταῦτ’ ἂν συμβαίνοι τὰ ἄτοπα· μεμερισμένων
δὲ τινῶν καὶ εἰς τοὺς πρὸς Δύμη τόπους τῆς Ἠλείας,
ἐκείσε ἂν εἴη λέγουσα τὴν ἑφοδὸν ἢ Ἀθηνᾶ, καὶ οὐκ 15
ἂν ἔτι οὐδ’ ἢ εἰς τὴν ναῦν κατάβασις ἔχοι τι ἀπεμφαι-
νον οὐδ’ ὁ τῆς συνοδίας ἀποσπασμός, εἰς τὰναντία
τῆς ὁδοῦ οὔσης. παραπλησίως δ’ ἂν καὶ τὰ περὶ τοῦ
Πύλου διαπορούμενα τύχοι τῆς προσηκούσης διαίτης
ἐπελθοῦσι μικρὸν ἔτι τῆς χωρογραφίας μέχρι τοῦ Πύ- 20
λου τοῦ Μεσσηνιακοῦ.

18 Ἐλέγοντο δὲ Παρωρεᾶται τινὲς τῶν ἐν τῇ Τριφυ-
λίᾳ κατέχοντες ὄρη περὶ τὸ Λέπρειον καὶ τὸ Μάκιστον
καθήκοντα ἐπὶ θάλατταν πλησίον τοῦ Σαμιακοῦ πο-
σειδίου.

25

19 Ὑπὸ τούτοις ἐστὶν ἐν τῇ παραλίᾳ δύο ἄντρα, τὸ
μὲν νυμφῶν Ἀνιγριάδων τὸ δὲ ἐν ᾧ τὰ περὶ τὰς Ἀ-
τλαντίδας καὶ τὴν Δαρδάνου γένεσιν. ἐνταῦθα δὲ καὶ
τὰ ἄλλα τό τε Ἰωναῖον καὶ τὸ Εὐρυκύνδειον. τὸ μὲν
οὖν Σαμικὸν ἐστὶν ἔρυμα, πρότερον δὲ καὶ πόλις Σά- 30
μος προσαγορευομένη διὰ τὸ ὕψος ἰσως, ἐπειδὴ σά-
μους ἐκάλουν τὰ ὕψη· τάχα δὲ τῆς Ἀργῆνης ἀκρόπολις

ἦν τοῦτο, ἧς ἐν τῷ καταλόγῳ μέμνηται ὁ ποιητής „οὐ
 „δὲ Πύλον τ' ἐνέμοντο καὶ Ἀρήνην ἐρατεινήν.“ οὐ-
 δαμου γὰρ σαφῶς εὐρίσκοντες ἐνταῦθα μάλιστα εἰκά-
 ζουσι τὴν Ἀρήνην, ὅπου καὶ ὁ παρακείμενος Ἀνιγρος
 5 ποταμός, καλούμενος πρότερον Μινύειος, δίδωσιν οὐ
 μικρὸν σημεῖον· λέγει γὰρ ὁ ποιητής „ἔστι δὲ τις πο-
 „ταμός Μινυήιος εἰς ἄλλα βάλλων ἐγγύθεν Ἀρήνης.“
 πρὸς γὰρ δὴ τῷ ἄντρῳ τῶν Ἀνιγριάδων νυμφῶν ἐστι
 πηγὴ, ὑφ' ἧς ἔλειον καὶ τιφῶδες τὸ ὑποπίπτον γίνεται
 10 χωρίον· ὑποδέχεται δὲ τὸ πλείστον τοῦ ὕδατος ὁ Ἀνι-
 γρος βαθὺς καὶ ὕπιος ὣν ὥστε λιμνάζειν· θινώδης
 δ' ὦν ὁ τόπος ἐξ εἰκοσι σταδίων βαρεῖαν ὁσμὴν παρέ-
 χει καὶ τοὺς ἰχθῦς ἀβρώτους ποιεῖ. μυθεύουσι δ' οἱ
 μὲν ἀπὸ τοῦ τῶν τετρωμένων Κενταύρων τινὰς ἐν-
 15 ταῦθ' ἀπονύφασθαι τὸν ἐκ τῆς Ἰθρας ἰόν, οἱ δ' ἀπὸ
 τοῦ Μελάμποδα τοῖς ὕδασι τούτοις καθαρσίους χρήσα-
 σθαι πρὸς τὸν τῶν Προϊτίδων καθαρμόν· ἄλφους δὲ C.347
 καὶ λεύκας καὶ λειχήνας ἰᾶται τὸ ἐντεῦθεν λουτρόν.
 φασὶ δὲ καὶ τὸν Ἀλφειὸν ἀπὸ τῆς τῶν ἄλφῶν θερα-
 20 πείας οὕτως ὠνομάσθαι. ἐπεὶ οὖν ἢ τε ὑπτιότης τοῦ
 Ἀνίγρου καὶ αἱ ἀνακοπαὶ τῆς θαλάττης μονὴν μᾶλλον
 ἢ δύσιν παρέχουσι τοῖς ὕδασι, * Μινυήιον φασιν εἰρη-
 σθαι πρότερον, παρατρέψαι δὲ τινὰς τοῦνομα καὶ ἀντ'
 αὐτοῦ ποιῆσαι Μινυήιον. ἔχει δ' ἡ ἐτυμότης καὶ ἄλλας
 25 ἀφορμὰς, εἰτ' ἀπὸ τῶν μετὰ Χλωρίδος τῆς Νέστορος
 μητρὸς ἐλθόντων ἐξ Ὀρχομενοῦ τοῦ Μινυεῖου, [εἰτε]
 Μινυῶν, οἱ τῶν Ἀργοναυτῶν ἀπόγονοι ὄντες ἐκ Αἴ-
 μνου μὲν εἰς Λακεδαίμονα ἐξέπεσον ἐντεῦθεν δ' εἰς τὴν
 Τριφυλίαν, καὶ ᾤκησαν περὶ τὴν Ἀρήνην ἐν τῇ χώρᾳ
 30 τῇ νῦν Αἰπασίᾳ κελουμένη, οὐκ ἐχούσῃ οὐκέτι τὰ τῶν
 Μινυῶν κτίσματα· ὧν τινὲς μετὰ Θήρα τοῦ Αὐτεσίω-
 νος (ἦν δ' οὗτος Πολυνεῖκους ἀπόγονος) πλεύσαντες

εἰς τὴν μεταξὺ Κυρηναίας καὶ τῆς Κρήτης νῆσον, Καλ-
 „λίστην τὸ πάροιθε, τὸ δ' ὕστερον οὖνομα Θήρην,“
 ὡς φησι Καλλίμαχος, ἔκτισαν τὴν μητρόπολιν τῆς Κυ-
 ρήνης Θήραν, ὁμώνυμον δ' ἀπέδειξαν τῇ πόλει καὶ τὴν
 νῆσον. 5

20 Μεταξὺ δὲ τοῦ Ἀνίγρου καὶ τοῦ ὄρους, ἐξ οὗ ῥεῖ,
 ὁ τοῦ Ἰαργάνου λειμῶν δείκνυται καὶ τάφος· καὶ Ἀχαι-
 αι εἰσὶ δὲ πέτραι ἀπότομοι τοῦ αὐτοῦ ὄρους, ὑπὲρ ὧν
 ἡ Σάμος, ὡς ἔφαμεν, γέγονε πόλις· οὐ πάνυ δὲ ὑπὸ
 τῶν τοὺς περίπλους γραψάντων ἡ Σάμος μνημονεύε- 10
 ται, τάχα μὲν γε διὰ τὸ πάλαι κατεσπασθαι, τάχα δὲ καὶ
 διὰ τὴν θέσιν. τὸ μὲν γὰρ ποσειδίου ἐστιν ἄλσος, ὡς
 εἰρηται, πρὸς τῇ θαλάττῃ· ὑπέρεκειται δ' αὐτοῦ λόφος
 ὑψηλὸς ἐπίπροσθεν ὧν τοῦ νῦν Σαμικοῦ ἐφ' οὗ ἦν
 ἡ Σάμος, ὥστ' ἐκ θαλάττης μὴ ὁρᾶσθαι. καὶ πεδίον δ' 15
 αὐτόθι καλεῖται Σαμικόν· ἐξ οὗ πλέον ἄν τις τεκμαί-
 ροιτο ὑπάρξαι ποτὲ πόλιν τὴν Σάμον. καὶ ἡ Παδίνη
 δὲ ἦν Στησίχορος ποιῆσαι δοκεῖ (ἥς ἀρχή „ἄγε Μοῦ-
 „σα λῖγει“, ἄρξον ἀοιδᾶς, Ἐρατώ, νόμους Σαμίων περὶ
 „παίδων ἐρατᾶ φθεγγομένα λύρα“) ἐντεῦθεν λέγει 20
 τοὺς παῖδας. ἐκδοθεῖσαν γὰρ τὴν Παδίνην εἰς Κόριν-
 θον τυράννω φησὶν ἐκ τῆς Σάμου πλεῦσαι πνέοντος
 ξεφύρου, οὐ δῆπουθεν τῆς Ἰωνικῆς Σάμου· [τῷ] δ'
 αὐτῷ ἀνέμῳ καὶ ἀρχιθέωρον εἰς Δελφούς [τὸν ἀδ]ελ-
 φὸν αὐτῆς ἐλθεῖν καὶ τὸν ἀνεψιὸν ἐρῶντα αὐτῆς ἄρ- 25
 ματι εἰς Κόρινθον ἐξορμηῆσαι παρ' αὐτήν· ὃ τε τύραν-
 νος κτείνας ἀμφοτέρους ἄρματι ἀποπέμπει τὰ σώματα,
 μεταγνοὺς δ' ἀνακαλεῖ καὶ θάπτει.

C.348 21 Ἀπὸ δὲ τοῦ Πύλου τούτου καὶ τοῦ Λεπρείου τε-
 τρακοσίων που σταδίων ἐστὶ διάστημα ἐπὶ τὴν Μεσση- 30

νιακὴν Πύλον καὶ τὸ Κορυφάσιον ἐπὶ θαλάττῃ κείμενα
 φρούρια, καὶ τὴν παρακειμένην Σφαγίαν νῆσον, ἀπὸ
 δὲ Ἀλφειοῦ ἑπτακοσίων πεντήκοντα, ἀπὸ δὲ τοῦ Χε-
 λωνάτα χιλίων τριάκοντα. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ τό τε τοῦ
 5 Μακιστίου Ἡρακλέους ἱερὸν ἐστὶ καὶ ὁ Ἀκίδων ποτα-
 μός. ῥεῖ δὲ παρὰ τάφον Ἰαρδάνου καὶ Χάαν πόλιν ποτὲ
 ὑπάρξασαν πλησίον Δεπρείου, ὅπου καὶ τὸ πεδίον τὸ
 Αἰπάσιον. περὶ ταύτης δὲ τῆς Χάας γενέσθαι φασὶν
 ἔνιοι τὸν πόλεμον τοῖς Ἀρκάσι πρὸς τοὺς Πυλούς, ὃν
 10 ἔφρασεν Ὅμηρος, καὶ δεῖν οἴονται γράφειν „ἡβῶμ’,
 „ὥς ὅτ’ ἐπ’ ὠκυρόφῳ Ἀκίδοντι μάχοντο ἀγρόμενοι Πύ-
 „λλιοί τε καὶ Ἀρκάδες Χάας παρ’ τεύχεσσιν,“ οὐ Κελά-
 δοντι, οὐδὲ Φειᾶς· τῷ γὰρ τάφῳ τοῦ Ἰαρδάνου τοῦ-
 τον πλησιάζειν καὶ τοῖς Ἀρκάσι τὸν τόπον μᾶλλον ἢ
 15 ἐκεῖνον.

Κυπαρισσία τέ ἐστὶν ἐπὶ τῇ θαλάττῃ τῇ Τριφυ- 22
 λιακῇ καὶ Πύργοι καὶ ὁ Ἀκίδων ποταμὸς καὶ Νέδα.
 νυνὶ μὲν οὖν τῇ Τριφυλίᾳ πρὸς τὴν Μεσσηνίαν ὄριόν
 ἐστὶ τὸ τῆς Νέδας ρεῦμα λάβρον ἐκ τοῦ Λυκαίου κα-
 20 τιὸν Ἀρκαδικοῦ ὄρους, ἐκ πηγῆς ἣν ἀναρρῆξαι τεκοῦ-
 σαν τὸν Δία μυθεύεται Ῥέαν νίπτρων χάριν. ῥεῖ δὲ
 παρὰ Φιγαλίαν, καθ’ ὃ γειτνιῶσι Πυργῖται Τριφυλίων
 ἔσχατοι Κυπαρισσιεῦσι πρῶτοις Μεσσηνίων. τὸ δὲ πα-
 λαιὸν ἄλλως διώριστο, ὥς καὶ τινὰς τῶν πέραν τῆς
 25 Νέδας ὑπὸ τῷ Νέστορι εἶναι, τὸν τε Κυπαρισσῆντα
 καὶ ἄλλα τινὰ ἐπέκεινα, καθάπερ καὶ τὴν θάλατταν
 τὴν Πυλίαν ὁ ποιητὴς ἐπεκτείνει μέχρι τῶν ἑπτὰ πό-
 λεων ὧν ὑπέσχετο Ἀγαμέμνων τῷ Ἀχιλλεῖ „πᾶσαι δ’
 „ἔγγυς ἁλὸς νέσεται Πύλον ἡμαθόεντος.“ τοῦτο γὰρ
 30 ἴσον τῷ „ἔγγυς ἁλὸς τῆς Πυλίας.“

Ἐφεξῆς δ’ οὖν τῷ Κυπαρισσῆντι ἐπὶ τὴν Μεσση- 23
 νιακὴν Πύλον παραπλέοντι [καὶ] τὸ Κορυφάσιον ἢ τε
 7 *

Ἔρανα ἔστιν, ἣν τινες οὐκ εὖ Ἀρήνην νομίζουσιν κε-
κλήσθαι πρότερον ὁμωνύμως τῇ Πυλιακῇ, [καὶ ἡ ἄκρα]
Πλαταμώδης, ἀφ' ἧς ἐπὶ τὸ Κορυφάσιον καὶ τὴν νῦν
καλουμένην Πύλον ἑκατόν εἰσι στάδιοι. ἔστι δὲ καὶ
νησίον καὶ πολίχνιον ἐν αὐτῷ ὁμώνυμον Πρωτῇ. οὐκ 5
ἂν δ' ἐξητάξομεν ἴσως ἐπὶ τοσοῦτον τὰ παλαιά, ἀλλ'
ἡρεκεῖ λέγειν ὥς ἔχει νῦν ἕκαστα, εἰ μὴ τις ἦν ἐκ παλ-
δων ἡμῖν παραδεδομένη φήμη περὶ τούτων· ἄλλων δ'
ἄλλα εἰπόντων ἀνάγκη διαιτᾶν. πιστεύονται δ' ὥς
ἐπὶ τὸ πολὺ οἱ ἐνδοξότατοί τε καὶ πρεσβύτατοι καὶ κατ' 10
ἐμπειρίαν πρῶτοι· Ὀμήρου δ' εἰς ταῦτα ὑπερβεβλη-
O.349μένου πάντας, ἀνάγκη συνεπισκοπεῖν καὶ τὰ ὑπ' ἐκεί-
νου λεχθέντα καὶ συγκρούειν πρὸς τὰ νῦν, καθάπερ
καὶ μικρὸν ἔμπροσθεν ἔφαμεν.

- 24 Περὶ μὲν οὖν τῆς κοίλης Ἡλιδος καὶ τοῦ Βουπρά- 15
σίου τὰ λεχθέντα ὑφ' Ὀμήρου προεπέσκεπται ἡμῖν.
περὶ δὲ τῆς ὑπὸ τῷ Νέστορι οὕτω φησὶν „οἱ δὲ Πύλον
„τ' ἐνέμοντο καὶ Ἀρήνην ἐρατεινὴν καὶ Θρύον, Ἀλ-
„φειοῖο πόρον, καὶ εὐκτιτον Αἴπυ καὶ Κυπαρισσήεντα
„καὶ Ἀμφιγένηϊαν ἔναιον καὶ Πτελεὸν καὶ Ἔλος καὶ 20
„Δώριον, ἐνθα τε Μοῦσαι ἀντόμεναι Θάμυριν τὸν
„Θρήϊκα παῦσαν ἀοιδῆς, Οἰχαλίηθεν ἰόντα παρ' Εὐ-
„ρύτου Οἰχαλιῆος.“ Πύλος μὲν οὖν ἔστι περὶ ἧς ἡ ζή-
τησις· αὐτίκα δ' ἐπισκεψόμεθα περὶ αὐτῆς. περὶ δὲ
τῆς Ἀρήνης εἴρηται· ἣν δὲ λέγει νῦν Θρύον, ἐν ἄλλοις 25
καλεῖ Θρυόεσσαν „ἔστι δὲ τις Θρυόεσσα πόλις, αἰπεῖα
„κολώνη, τηλοῦ ἐπ' Ἀλφειῷ.“ Ἀλφειοῦ δὲ πόρον φη-
σὶν, ὅτι πεζῇ περατὸς εἶναι δοκεῖ κατὰ τοῦτον τὸν τό-
πον· καλεῖται δὲ νῦν Ἐπιτάλιον τῆς Μακιστίας χωρίον.
τὸ εὐκτιτον δ' Αἴπυ ἔνιοι μὲν ζητοῦσι πότερον ποτέ- 30
ρου ἐπίθετον, καὶ τίς ἡ πόλις, καὶ εἰ αἱ νῦν Μαργάλαι
τῆς Ἀμφιδολίας· αὐταὶ μὲν οὖν οὐ φυνικὸν ἔρμα,

ἕτερον δὲ δείκνυνται φυσικὸν ἐν τῇ Μακιστίᾳ. ὁ μὲν οὖν τοῦθ' ὑπονοῶν φράζεσθαι ὄνομά φησι τῆς πόλεως τὸ Αἶπυ ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος φυσικῶς, ὥς "Ἐλος καὶ Αἰγριαλὸν καὶ ἄλλα πλείω· ὁ δὲ τὴν Μαργά-
 5 λαν τοῦμπαλιν ἴσως. Θρύον δὲ καὶ Θρυόεσσαν τὸ Ἐπι-
 τάλιόν φασιν, ὅτι πᾶσα μὲν αὕτη ἡ χώρα θρυώδης, μάλιστα δ' οἱ ποταμοί· ἐπὶ πλέον δὲ διαφαίνεται τοῦτο κατὰ τοὺς περατοὺς τοῦ ῥείθρου τόπους. τάχα δέ φασι Θρύον μὲν εἰρῆσθαι τὸν πόρον, εὐκτιτον δ' Αἶπυ τὸ
 10 Ἐπιτάλιον· ἔστι γὰρ ἐρυμνὸν φύσει· καὶ γὰρ ἐν ἄλλοις αἰπεῖαν κολώνην λέγει, „ἔστι δέ τις Θρυόεσσα πό-
 „λις, αἰπεῖα κολώνη, τηλοῦ ἐπ' Ἀλφειῷ, πυμάτη Πύ-
 „λου ἡμαθόεντος.“

Ὁ δὲ Κυπαρισσῆεις ἔστι μὲν περὶ τὴν πρότερον 25
 15 Μακιστίαν, ἥνικα καὶ πέραν τῆς Νέδας ἔτι ἦν Μακιστία, ἀλλ' οὐκ οἰκεῖται, ὥς οὐδὲ τὸ Μάκιστον· ἄλλη δ' ἐστὶν ἡ Μεσσηνιακὴ Κυπαρισσία, ὁμώνυμος μὲν οὗ, ὁμοίως δὲ νῦν ἀκείνη λέγεται Κυπαρισσία ἐνικῶς τε καὶ θηλυκῶς, ὁ δὲ ποταμὸς Κυπαρισσῆεις. καὶ Ἀμ-
 20 φιγένεια δὲ τῆς Μακιστίας ἐστὶ περὶ τὸν Ὑψόεντα, ὅπου τὸ τῆς Αἰτουῦς ἱερὸν. τὸ δὲ Πτελεὸν κτίσμα μὲν γέγονε τῶν ἐκ Πτελεοῦ τοῦ Θετταλικοῦ ἐποικησάντων· λέγε-
 25 „ται γὰρ ἀκεί „Αγχιάλόν τ' Ἀντρώνα ἰδὲ Πτελεὸν λε- C.350
 „χεποίην.“ ἔστι δὲ δρυμῶδες χωρίον ἀοίκητον, Πτελε-
 30 ἄσιον καλούμενον. Ἐλος δ' οἱ μὲν περὶ τὸν Ἀλφειὸν χώραν τινά φασιν, οἱ δὲ καὶ πόλιν, ὥς τὴν Λακωνικήν „Ἐλος τ' ἔφαλον πτολίεθρον.“ οἱ δὲ περὶ τὸ Ἀλώριον ἔλος, οὗ τὸ τῆς Ἐλείας Ἀρτέμιδος ἱερὸν τῆς ὑπὸ τοῖς Ἀρκάσιν· ἐκεῖνοι γὰρ ἔσχον τὴν ἱερωσύνην. Δω-
 30 ριον δ' οἱ μὲν ὄρος, οἱ δὲ πεδῖον, [οἱ δὲ πολίδιον] φασίν· οὐδὲν δὲ νῦν δείκνυνται· ὅμως δ' ἐνιοὶ τὴν νῦν Ὀλουριν ἢ Ὀλουραν ἐν τῷ καλουμένῳ αὐλῶνι τῆς

Μεσσηνίας κειμένην Δώριον λέγουσιν. αὐτοῦ δέ που καὶ ἡ Οἰχαλία ἐστὶν ἡ τοῦ Εὐρύτου ἡ νῦν Ἀνδανία, πολίχνην Ἀρκαδικὸν ὁμώνυμον τῷ Θετταλικῷ καὶ τῷ Εὐβοικῷ· ὅθεν φησὶν ὁ ποιητὴς ἐς τὸ Δώριον ἀφικόμενον Θάμυριν τὸν Θραῖκα ὑπὸ Μουσῶν ἀφαιρεθῆναι 5 τὴν μουσικὴν.

- 26 Ἐκ δὲ τούτων δῆλον ὥς ἐφ' ἐκάτερα τοῦ Ἀλφειοῦ ἡ ὑπὸ Νέστορι χώρα ἐστίν, ἣν πᾶσαν ὀνομάζει Πυλίων γῆν· οὐδαμοῦ δὲ ὁ Ἀλφειὸς οὔτε τῆς Μεσσηνίας ἐφάπτεται οὔτε τῆς κοίλης Ἡλιδος. ἐν ταύτῃ γὰρ τῇ χώρᾳ 10 ἐστὶν ἡ πατρὶς τοῦ Νέστορος, ἣν φαμεν Τριφυλιακὸν Πύλον καὶ Ἀρκαδικὸν καὶ Λεπρεατικόν. καὶ γὰρ δὴ οἱ μὲν ἄλλοι Πύλοι ἐπὶ θαλάττῃ δείκνυνται, οὗτος δὲ πλείους ἢ τριάκοντα σταδίους ὑπὲρ αὐτῆς, ὅπερ καὶ ἐκ τῶν ἐπῶν δῆλον. ἐπὶ τε γὰρ τοὺς Τηλεμάχου ἐταίρους 15 ἄγγελος πέμπεται πρὸς τὸ πλοῖον καλῶν ἐπὶ ξενίαν, ὃ τε Τηλέμαχος κατὰ τὴν ἐκ Σπάρτης ἐπάνοδον τὸν Πεισίστρατον οὐκ ἔῃ πρὸς τὴν πόλιν ἐλαύνειν, ἀλλὰ παρατρέψαντα ἐπὶ [τὴν] ναῦν σπεύδειν, ὥς οὐ τὴν αὐτὴν οὔσαν ἐπὶ τὴν πόλιν καὶ τὸν ὄρμον. ὃ τε ἀπόπλους 20 τοῦ Τηλεμάχου οὕτως ἂν οἰκείως λέγοιτο „βὰν δὲ παρὰ „Κροουνούς καὶ Χαλκίδα καλλιρέεθρον. δύετό τ' ἡέλιος, σκιοῶντό τε πᾶσαι ἀγνυαί· ἡ δὲ Φεὰς ἐπέβαλλεν, „ἀγαλλομένη Διὸς οὔρῳ, ἡδὲ παρ' Ἡλιδά δι' αὖν, ὅθι „κρατέουσιν Ἐπειοί.“ μέχρι μὲν δὴ δεῦρο πρὸς τὴν 25 ἄρκτον ὁ πλοῦς, ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ τὸ πρὸς ἕω μέρος ἐπιστρέφει. παρήσει δὲ τὸν εὐθύν πλοῦν ἡ ναῦς καὶ τὸν ἐξ ἀρχῆς καὶ τὸν εἰς Ἰθάκην διὰ τὸ τοὺς μνηστῆρας ἐκεῖ τὴν ἐνέδραν θέσθαι „ἐν πορθμῷ Ἰθάκης τε Σάμμοιό τε· ἐνθεν δ' αὖ νήσοισιν ἐπιπροέηκε θοῇσι.“ 30 351 θοὰς δὲ εἶρκετε τὰς ὀξείας· τῶν Ἐχινάδων δ' εἰσὶν αὐται, πλησιάζουσαι τῇ ἀρχῇ τοῦ Κορινθιακοῦ κόλπου

καὶ ταῖς ἐκβολαῖς τοῦ Ἀχελώου. παραλλάξας δὲ τὴν Ἰθάκην, ὥστε κατὰ νότου γενέσθαι, κάμπτει πάλιν πρὸς τὸν οἰκείον δρόμον τὸν μεταξὺ τῆς Ἀκαρνανίας καὶ τῆς Ἰθάκης, καὶ κατὰ θάτερα μέρη τῆς νήσου ποιεῖται τὴν καταγωγὴν, οὐ κατὰ τὸν πορθμὸν τὸν Κεφαλληνιακόν, ὃν ἐφρούρουν οἱ μνηστῆρες.

Εἰ γοῦν τὸν Ἠλιακὸν Πύλον εἶναι τις τὸν Νέστο- 27
ρος ἐπινοήσειεν, οὐκ ἂν οἰκείως λέγοιτο ἢ ἐντεῦθεν ἀναχθεῖσα ναῦς παρὰ Κρουνοὺς ἐνεχθῆναι καὶ Χαλ- 10
κίδα μέχρι δύσεως, εἴτα Φεαῖς ἐπιβάλλειν νύκτωρ, καὶ τότε τὴν Ἠλείαν παραπλεῖν· οὔτοι γὰρ οἱ τόποι πρὸς νότον τῆς Ἠλείας εἰσὶ, πρῶται μὲν αἱ Φεαί, εἰθ' ἡ Χαλκίς, εἰθ' οἱ Κρουνοί, εἰθ' ὁ Πύλος ὁ Τριφυλιακὸς καὶ τὸ Σαμικόν. τῷ μὲν οὖν πρὸς νότον πλέοντι ἐκ τοῦ 15
Ἠλιακοῦ Πύλου οὗτος ἂν ὁ πλοῦς εἴη· τῷ δὲ πρὸς ἄρκτον, ὅπου ἐστὶν ἡ Ἰθάκη, ταῦτα μὲν πάντα ὀπίσω λείπεται, αὐτὴ δ' ἡ Ἠλεία παραπλευστέα ἦν, καὶ πρὸ 20
δύσεώς γε· ὁ δὲ φησι μετὰ δύσιν. καὶ μὴν εἰ καὶ πάλιν ὑπόθοιτό τις τὸν Μεσσηνιακὸν Πύλον καὶ τὸ Κορυ-
φάσιον ἀρχὴν τοῦ παρὰ Νέστορος πλοῦ, πολὺ ἂν εἴη τὸ διάστημα καὶ πλέονος χρόνου. αὐτὸ γοῦν τὸ ἐπὶ τὸν Τριφυλιακὸν Πύλον καὶ τὸ Σαμιακὸν ποσειδίου 25
τετρακοσίων ἐστὶ σταδίων· καὶ ὁ παράπλους [οὐ] παρὰ Κρουνοὺς καὶ Χαλκίδα καὶ Φεάν, ἀδόξαν ποταμῶν
ὀνόματα μᾶλλον δὲ ὀχετῶν, ἀλλὰ παρὰ τὴν Νέδαν πρῶτον, εἴτ' Ἀκίδωνα, εἴτα τὸν Ἀλφειὸν καὶ τόπους 30
τούτων τοὺς μεταξὺ· ὕστερον δ', εἰ ἄρα, κἀκείνων ἐχρῆν μνησθῆναι· καὶ γὰρ παρ' ἐκείνους ὑπῆρχεν ὁ πλοῦς.

Καὶ μὴν ἢ γε τοῦ Νέστορος διήγησις, ἣν διατίθε- 28
ται πρὸς Πάτροκλον περὶ τοῦ γενομένου τοῖς Πυλίοις πρὸς Ἠλείους πολέμου, συνηγορεῖ τοῖς ὑφ' ἡμῶν ἐπι-

χειρουμένοις, ἂν σκοπῇ τις τὰ ἔπη. φησὶ γὰρ ἐν αὐ-
 τοῖς, ὅτι πορθήσαντος Ἡρακλέους τὴν Πυλλίαν ὥστε
 τὴν νεότητά ἐκλειφθῆναι πᾶσαν, δῶδεκα δὴ παίδων
 ὄντων τῷ Νηλεῖ, μόνον αὐτῷ περιγενέσθαι τὸν Νέ-
 στορα νέον τελέως· καταφρονήσαντες δ' οἱ Ἐπειοὶ τοῦ 5
 Νηλέως διὰ γῆρας καὶ ἐρημίαν ὑπερηφάνως καὶ ὑβρι-
 στικῶς ἐχρῶντο τοῖς Πυλλοῖς. ἀντὶ τούτων οὖν ὁ Νέ-
 στωρ συναγαγὼν τοὺς οἰκείους ὅσους οἶός τε ἦν ἐπελ-
 θεῖν φησιν ἐπὶ τὴν Ἥλειαν, καὶ περιελάσαι παμπόλλην
 λείαν „πεντήκοντα βοῶν ἀγέλας, τόσα πῶεα οἰῶν, 10
 „τόσσα συῶν συβόσια,“ τοσαῦτα δὲ καὶ αἰπόλια, „ἵπ-
 πους δὲ ξανθὰς ἑκατὸν καὶ πενήκοντα,“ ὑποπώλους
 C.352 τὰς πλείστας. „καὶ τὰ μὲν ἡλασάμεσθα Πύλον“ φησὶ
 „Νηληϊον εἴσω, ἐννύχιοι προτὶ ἄστν,“ ὥς μεθ' ἡμέραν
 μὲν τῆς λεηλασίας γενομένης καὶ τῆς τροπῆς τῶν ἐκ- 15
 βοηθησάντων, ὅτε κτανεῖν λέγει τὸν Ἴτυμονέα, νύ-
 κτωρ δὲ τῆς ἀφόδου γενομένης ὥστ' ἐννυχίους πρὸς
 τῷ ἄστει γενέσθαι· περὶ δὲ τὴν διανομὴν καὶ θυσίαν
 ὄντων οἱ Ἐπειοὶ τῇ τρίτῃ τῶν ἡμερῶν κατὰ πλη-
 θος ἀθροισθέντες πεξοί τε καὶ ἱππεῖς ἀντεπεξῆλθον 20
 καὶ τὸ Θρόνον ἐπὶ τῷ Ἀλφειῷ κείμενον περιεστρατοπέ-
 δευσαν. αἰσθόμενοι δ' εὐθύς οἱ Πύλιοι βοηθεῖν ὤρ-
 μησαν· νυκτερεύσαντες δὲ περὶ τὸν Μινυήιον ποτα-
 μὸν ἐγγύθεν Ἀρῆνης, ἐντεῦθεν ἐνδιοὶ πρὸς τὸν Ἀλ-
 φειὸν ἀφικνοῦνται· τοῦτο δ' ἐστὶ κατὰ μεσημβρίαν· 25
 θύσαντες δὲ τοῖς θεοῖς καὶ νυκτερεύσαντες ἐπὶ τῷ πο-
 ταμῷ συμβάλλουσιν εἰς μάχην εὐθύς ἔωθεν· λαμπρᾶς
 δὲ τῆς τροπῆς γενομένης οὐκ ἐπαύσαντο διώκοντές
 τε καὶ κτείνοντες πρὶν Βουπρασίου ἐπέβησαν „πέτρης
 „τ' Ὠλενίης καὶ Ἀλεισίου ἐνθα κολώνη κέκληται, ὅθεν 30
 αὐτὶς ἀπέτραπε λαὸν Ἀθήνη.“ καὶ ὑποβάς „αὐτὰρ

„Αχαιοὶ ἄψ ἀπὸ Βουπρασίου Πύλονδ' ἔχον ὠκείας ἵπ-
πους.“

Ἐκ τούτων δὴ πῶς ἂν ἦ τὸν Ἡλιακὸν Πύλον ὑπο- 29
λάβοι τις ἢ τὸν Μεσσηνιακὸν λέγεσθαι; τὸν μὲν Ἡλια-
5 κόν, ὅτι τούτου πορθουμένου συνεπορθεῖτο καὶ ἡ τῶν
Ἐπειῶν ὑπὸ τοῦ Ἡρακλέους· αὕτη δ' ἐστὶν ἡ Ἡλεία.
πῶς οὖν ἤμελλον οἱ συμπεπορθημένοι καὶ ὁμόφυλοι
τοιαύτην ὑπερφηανίαν καὶ ὕβριν κτήσασθαι κατὰ τῶν
συναδικηθέντων; πῶς δ' ἂν τὴν οἰκείαν κατέτρεχον
10 καὶ ἐλεηλάτουν; πῶς δ' ἂν ἅμα καὶ Αὐγέας ἦρχε τῶν
αὐτῶν καὶ Νηλεὺς ἐχθροὶ ὄντες ἀλλήλων; εἰγε τῷ
Νηλεῖ „χρεῖος μὲν' ὀφείλειτ' ἐν Ἡλιδι δίη, τέσσαρες
„ἀθλοφόροι ἵπποι αὐτοῖσιν ὄχεςφιν, ἐλθόντες μετ'
„ἄεθλα· περὶ τρίποδος γὰρ ἔμελλον θεύσεσθαι· τοὺς
15 „δ' αὐθι ἄναξ ἀνδρῶν Αὐγείας κάσχεθε, τὸν δ' ἐλατῆρ'
„ἀφίει.“ εἰ δ' ἐνταῦθα ᾤκει ὁ Νηλεὺς, ἐνταῦθα καὶ
ὁ Νέστωρ ἐπῆρχε. πῶς οὖν τῶν μὲν Ἡλείων καὶ Βου-
πρασίων „τέσσαρες ἄρχοι ἔσαν, δέκα δ' ἀνδρὶ ἐκάστω
„νῆες ἔποντο θοαί, πολέες δ' ἔμβαινον Ἐπειοί;“ εἰς
20 τέτταρα δὲ καὶ ἡ χώρα διήρητο, ὣν οὐδενὸς ἐπῆρχεν ὁ
Νέστωρ, „οἳ δὲ Πύλον τ' ἐνέμοντο καὶ Ἀργήνην ἐρα-
τεινήν“ καὶ τὰ ἐξῆς τὰ μέχρι Μεσσήνης; οἱ δὲ δὴ ἀν-
τεπεξιόντες Ἐπειοὶ τοῖς Πυλίοις πῶς ἐπὶ τὸν Ἀλφειὸν
ἐξορμῶσι καὶ τὸ Θρῶον; πῶς δ' ἐκεῖ τῆς μάχης γενομέ-
25 νης τρεφθέντες ἐπὶ Βουπρασίου φεύγουσι; πάλιν δ', C.353
εἰ τὸν Μεσσηνιακὸν Πύλον ἐπόρθησεν ὁ Ἡρακλῆς,
πῶς οἱ τοσοῦτον ἀφεστῶτες ὕβριζον εἰς αὐτούς, καὶ ἐν
συμβολαίοις ἦσαν πολλοῖς, καὶ ταῦτ' ἀπεστέρουσαν χρεο-
κοποῦντες, ὥστε διὰ ταῦτα συμβῆναι τὸν πόλεμον;
30 πῶς δὲ ἐπὶ τὴν λεηλασίαν ἐξιὼν Νέστωρ τοσαύτην πε-
ριελάσας λείαν συῶν τε καὶ προβάτων, ὣν οὐδὲν ὠκυ-
πορεῖν οὐδὲ μακροπορεῖν δύναται, πλειόνων ἢ χιλίων

σταδίων ὁδὸν διήνυσεν εἰς τὴν πρὸς τῷ Κορυφασίῳ Πύλον, οἱ δὲ τρίτῳ ἡματι πάντες ἐπὶ τὴν Θρυόεσσαν καὶ τὸν ποταμὸν τὸν Ἀλφειὸν ἤκουσι πολιορκήσοντας τὸ φρούριον; πῶς δὲ ταῦτα τὰ χωρία προσήκοντα ἦν τοῖς ἐν τῇ Μεσσηνίᾳ δυναστεύουσιν ἐχόντων Καυκῶ- 5 νων καὶ Τριφυλίων καὶ Πισατῶν; τὰ δὲ Γέρηνα ἢ τὴν Γερηνίαν (ἀμφοτέρως γὰρ λέγεται) τάχα μὲν ἐπίτηδες ὠνόμασάν τινες· δύναται δὲ καὶ κατὰ τύχην οὕτως ὠνομάσθαι τὸ χωρίον. τὸ δ' ὄλον, τῆς Μεσσηνίας ὑπὸ Μενελάῳ τεταγμένης, ὅφ' ᾧ καὶ ἡ Λακωνικὴ ἐτέτακτο 10 (ὥς δῆλον ἔσται καὶ ἐκ τῶν ὕστερον), καὶ τοῦ μὲν Παμισσοῦ ῥέοντος διὰ ταύτης καὶ τοῦ Νέδωνος, Ἀλφειοῦ δ' οὐδαμῶς „ὅς τ' εὐρὺ ῥέει Πυλίων διὰ γαίης,“ ἣς ἐπῆρχεν ὁ Νέστωρ, τίς ἂν γένοιτο πιθανὸς λόγος εἰς τὴν ἀλλοτριὰν ἀρχὴν ἐκβιβάζων τὸν ἄνδρα, ἀφαιρού- 15 μενος δὲ τὰς συγκαταλεγείσας αὐτῷ πόλεις * πάνθ' ὑπ' ἐκείνῳ ποιῶν;

- 30 Λοιπὸν δ' ἐστὶν εἰπεῖν περὶ τῆς Ὀλυμπίας καὶ τῆς εἰς τοὺς Ἥλειους ἀπάντων μεταπτώσεως. ἔστι δ' ἐν τῇ Πισατίδι τὸ ἱερὸν σταδίου τῆς Ἥλιδος ἐλάττους ἢ τρι- 20 ακοσίους διέχον· πρόκειται δ' ἄλλος ἀγριελαίων ἐν ᾧ τὸ στάδιον· παραρρεῖ δ' ὁ Ἀλφειὸς ἐκ τῆς Ἀρκαδίας ῥέων εἰς τὴν Τριφυλιακὴν θάλατταν μεταξὺ δύσεως καὶ μεσημβρίας. τὴν δ' ἐπιφάνειαν ἔσχεν ἕξ ἀρχῆς μὲν διὰ τὸ μαντεῖον τοῦ Ὀλυμπίου Διός· ἐκείνου δ' ἐκλει- 25 φθέντος οὐδὲν ἦττον συνέμεινεν ἡ δόξα τοῦ ἱεροῦ, καὶ τὴν αὔξησιν ὅσῃν ἴσμεν ἔλαβε διὰ τε τὴν πανήγυριν καὶ τὸν ἀγῶνα τὸν Ὀλυμπιακόν, στεφανίτην τε καὶ ἱερὸν νομισθέντα, μέγιστον τῶν πάντων. ἐκοσμήθη δ' ἐκ τοῦ πλήθους τῶν ἀναθημάτων, ἅπερ ἐκ πάσης 30 ἀνελίθετο τῆς Ἑλλάδος· ὧν ἦν καὶ ὁ χρυσοῦς σφυρήλατος Ζεὺς, ἀνάθημα Κυψέλου τοῦ Κορινθίων τυράν-

νου. μέγιστον δὲ τούτων ὑπῆρξε τὸ τοῦ Διὸς ξόανον, ὃ ἐποίει Φειδίας Χαρμίδου Ἀθηναῖος ἐλεφάντινον, τη-
 λικοῦτον τὸ μέγεθος ὥς καίπερ μέγιστον ὄντος τοῦ
 νεῷ δοκεῖν ἀστοχήσαι τῆς συμμετρίας τὸν τεχνίτην.
 5 καθήμενον ποιήσαντα, ἀπτόμενον δὲ σχεδόν τι τῇ κο-
 ρυφῇ τῆς ὀροφῆς ὥστ' ἔμφασιν ποιεῖν, ἐὰν ὀρθὸς γέ-
 νηται διαναστάς, ἀποστεγάσειν τὸν νεῶν. ἀνέγραψαν C.364
 δέ τινες τὰ μέτρα τοῦ ξοάνου, καὶ Καλλίμαχος ἐν λάμ-
 βῳ τινὶ ἐξείπε. πολλὰ δὲ συνέπραξε τῷ Φειδίᾳ Πάναι-
 10 νος ὁ ζωγράφος, ἀδελφιδοῦς ᾧν αὐτοῦ καὶ συνεργολά-
 βος, πρὸς τὴν τοῦ ξοάνου διὰ τῶν χρωμάτων κόσμη-
 σιν καὶ μάλιστα τῆς ἐσθῆτος. δέκνυνται δὲ καὶ γρα-
 φαὶ πολλαὶ τε καὶ θαυμασταὶ περὶ τὸ ἱερὸν ἐκείνου
 ἔργα. ἀπομνημονεύουσι δὲ τοῦ Φειδίου, διότι πρὸς
 15 τὸν Πάναινον εἶπε πυνθανόμενον πρὸς τί παρὰδειγμα
 μέλλοι ποιήσῃ τὴν εἰκόνα τοῦ Διός, ὅτι πρὸς τὴν
 Ὀμήρου δι' ἐπῶν ἐκτεθεῖσαν τούτων „ἦ καὶ κυανέησιν
 „ἐπ' ὀφρύσι νεῦσε Κρονίων· ἀμβρόσια δ' ἄρα χαίται
 „ἐπερρώσαντο ἄνακτος κρατὸς ἀπ' ἀθανάτοιο, μέγαν
 20 „δ' ἐλέλιξεν Ὀλυμπον.“ ἄξιοι δὲ μάλιστα τὴν αἰτίαν
 ἔχειν τῆς περὶ τὸ Ὀλυμπίασιν ἱερὸν μεγαλοπρεπείας
 τε καὶ τιμῆς Ἡεῖοι. κατὰ μὲν γὰρ τὰ Τρωικὰ καὶ ἔτι
 πρὸ τούτων οὐκ ἠνύχουν, ὑπὸ τε τῶν Πυλίων ταπει-
 νωθέντες καὶ ὑφ' Ἡρακλέους ὕστερον, ἥνικα Ἀνγέας

20. post Ὀλυμπον: εἰρησθῆναι γὰρ μάλα δοκεῖ καλῶς ἐκ τε
 τῶν ἄλλων καὶ τῶν ὀφρύων, ὅτι προκαλεῖται τὴν διάνοιαν ὃ
 ποιητῆς ἀναζωγραφεῖν μέγαν τινὰ τύπον καὶ μεγάλην δύνα-
 μιν ἀξίαν τοῦ Διός, καθάπερ καὶ ἐπὶ τῆς Ἡρας, ἅμα φυ-
 λάττων τὸ ἐφ' ἑκατέρῳ πρέπον· ἔφη μὲν γὰρ „σεισατο δ' ἐνὶ
 „ἐπαντήσῃ ταῖς ὀφρύσι μό-
 νον νεύσαντος, συμπαθοῦσης δὲ τι καὶ τῆς κόμης· κομρῶς δ'
 εἴρεται καὶ τὸ ὃ τὰς τῶν θεῶν εἰκόνας ἢ μόνος ἰδὼν ἢ μόνος
 δειξάς.

ὁ βασιλεύων αὐτῶν κατελύθη. σημεῖον δέ· εἰς γὰρ τὴν Τροίαν ἐκεῖνοι μὲν τετταράκοντα ναῦς ἔστειλαν, Πύλλιοι δὲ καὶ Νέστωρ ἐνενήκοντα. ὕστερον δὲ μετὰ τὴν τῶν Ἡρακλειδῶν κάθοδον συνέβη τάναντία. Αἰτωλοὶ γὰρ συγκατελθόντες τοῖς Ἡρακλείδαις μετὰ Ὀξύλου καὶ συνοικήσαντες Ἐπειοῖς κατὰ συγγένειαν παλαιὰν ἠϋξήσαν τὴν κοίλην Ἥλιν καὶ τῆς τε Πισάτιδος ἀφείλοντο πολλήν, καὶ Ὀλυμπία ὑπ' ἐκείνοις ἐγένετο· καὶ δὴ καὶ ὁ ἀγὼν εὖρημά ἐστιν ἐκείνων ὁ Ὀλυμπιακός, καὶ τὰς Ὀλυμπιάδας τὰς πρώτας ἐκεῖνοι συνε- 10 τέλουν. ἑᾶσαι γὰρ δεῖ τὰ παλαιὰ καὶ περὶ τῆς κτίσεως C.355 τοῦ ἱεροῦ καὶ περὶ τῆς θέσεως τοῦ ἀγῶνος, τῶν μὲν ἓνα τῶν Ἰδαίων δακτύλων Ἡρακλέα λεγόντων ἀρχηγέτην τούτων, τῶν δὲ τὸν Ἀλκμήνης καὶ Διός, ὃν καὶ ἀγωνίσασθαι πρῶτον καὶ νικῆσαι· τὰ γὰρ τοιαῦτα 15 πολλαχῶς λέγεται καὶ οὐ πάνυ πιστεύεται. ἐγγυτέρω δὲ πίστεως, ὅτι μέχρι τῆς ἑκτῆς καὶ εἰκοστῆς Ὀλυμπιάδος ἀπὸ τῆς πρώτης, ἐν ᾗ Κόροιβος ἐνίκα στάδιον Ἥλειος, τὴν προστασίαν εἶχον τοῦ τε ἱεροῦ καὶ τοῦ ἀγῶνος Ἥλαιοι. κατὰ δὲ τὰ Τρωικὰ ἢ οὐκ ἦν ἀγὼν 20 στεφανίτης ἢ οὐκ ἐνδοξος, οὐδ' οὗτος οὐτ' ἄλλος οὐδεις τῶν νῦν ἐνδόξων· οὐδὲ μέμνηται τούτων Ὅμηρος οὐδενός, ἀλλ' ἐτέρων τινῶν ἐπιταφίων. καίτοι δοκεῖ τισὶ τοῦ Ὀλυμπιακοῦ μεμνησθαι, ὅταν φῇ τὸν Αὐγέα ἀποστερεῖσθαι τέσσαρας ἀθλοφόρους ἵππους, ἐλθόντας 25 μετ' ἅεθλα· φασὶ δὲ τοὺς Πισάτας μὴ μετασχεῖν τοῦ Τρωικοῦ πολέμου ἱεροὺς νομισθέντας τοῦ Διός. ἀλλ' οὐδ' ἢ Πισᾶτις ὑπὸ Αὐγέα τόθ' ὑπῆρχεν, ἐν ᾗ ἐστι καὶ ἡ Ὀλυμπία, ἀλλ' ἢ Ἥλεια μόνον, οὐτ' ἐν Ἥλειᾳ συνετελέσθη ὁ Ὀλυμπιακὸς ἀγὼν οὐδ' ἀπαξ, ἀλλ' αἰεὶ 30 ἐν Ὀλυμπίᾳ. ὁ δὲ νῦν παρατεθεὶς ἐν Ἥλιδι φαίνεται γενόμενος, ἐν ᾗ καὶ τὸ χρῆος ὠφείλετο „καὶ γὰρ τῷ χρῆος

„[μέγ’] ὀφείλετ’ ἐν Ἡλίδι δῖη, τέσσαρες ἀθλοφόροι
 ἵπποι.“ καὶ οὗτος μὲν οὐ στεφανίτης (περὶ τρίποδος
 γὰρ ξιμελλον θεύσεσθαι), ἐκείνος δέ. μετὰ [δὲ] τὴν
 ἕκτην καὶ εἰκοστὴν Ὀλυμπιάδα οἱ Πισᾶται τὴν οἰκίαν
 5 ἀπολαβόντες αὐτοὶ συνετέλουν, τὸν ἀγῶνα ὁρῶντες
 εὐδοκιμοῦντα· χρόνοις δ’ ὕστερον μεταπεσοῦσης πάλ-
 λιν τῆς Πισάτιδος εἰς τοὺς Ἡλείους μετέπεσεν εἰς αὐ-
 τοὺς πάλιν καὶ ἡ ἀγωνοθεσία. συνέπραξαν δὲ καὶ οἱ
 Λακεδαιμόνιοι μετὰ τὴν ἐσχάτην κατάλυσιν τῶν Μεσ-
 10 σσηνίων συμμαχήσασιν αὐτοῖς τάναντία τῶν Νέστορος
 ἀπογόνων καὶ τῶν Ἀρκάδων συμπολεμησάντων τοῖς
 Μεσσηνίοις· καὶ ἐπὶ τοσοῦτόν γε συνέπραξαν ὥστε
 τὴν χώραν ἅπασαν τὴν μέχρι Μεσσήνης Ἠλείαν δη-
 15 θῆναι καὶ διαμεῖναι μέχρι νῦν, Πισατῶν δὲ καὶ Τρι-
 φυλίων καὶ Κανκῶνων μηδ’ ὄνομα λειφθῆναι. καὶ
 αὐτὸν δὲ τὸν Πύλον τὸν ἡμαθόεντα εἰς τὸ Λέπρειον
 συνῴκισαν, χαριζόμενοι τοῖς Λεπρεάταις κρατήσασι
 πολέμῳ, καὶ ἄλλας πολλὰς τῶν κατοικιῶν κατέσπασαν,
 ὅσας γ’ ἑώρων αὐτοπραγεῖν ἐθελούσας, καὶ φόρους
 20 ἐπράξαντο.

Διωνομάσθη δὲ ἡ Πισᾶτις τὸ μὲν πρῶτον διὰ 31
 τοὺς ἡγεμόνας δυνηθέντας πλεῖστον, Οἰνόμαόν τε καὶ C.356
 Πέλοπα τὸν ἐκείνον διαδεξάμενον καὶ τοὺς παῖδας αὐ-
 τοῦ πολλοὺς γενομένους· καὶ ὁ Σαλμωνεύς δ’ ἐνταῦ-
 25 θα βασιλεῦσαι λέγεται· εἰς γοῦν ὀκτὼ πόλεις μεριζο-
 μένης τῆς Πισάτιδος, μία τούτων λέγεται καὶ ἡ Σαλ-
 μώνη. διὰ ταῦτά τε δὴ καὶ [διὰ] τὸ ἱερὸν τὸ Ὀλυμπίᾳσι
 διατεθρύληται σφόδρα ἡ χώρα. δεῖ δὲ τῶν παλαιῶν
 ἱστοριῶν ἀκούειν οὕτως ὥς μὴ ὁμολογουμένων σφό-
 30 δρα· οἱ γὰρ νεώτεροι πολλὰ καινίζουσιν, ὥστε καὶ τὰ-

ναντία λέγειν, οἶον τὸν μὲν Ἀνγέα τῆς Πισάτιδος ἄρξαι τὸν δ' Οἰνόμαον καὶ τὸν Σαλμωνέα τῆς Ἡλείας· ἐνιοι δ' εἰς ταὐτὸ συνάγουσι τὰ ἔθνη. δεῖ δὲ τοῖς ὁμολογουμένοις ὥς ἐπὶ πολὺ ἀκολουθεῖν, ἐπεὶ οὐδὲ τοῦτομα τὴν Πισᾶτιν ἐτυμολογοῦσιν ὁμοίως· οἱ μὲν γὰρ ἀπὸ Πίσσης ὁμωνύμου τῇ κρήνῃ πόλεως, τὴν δὲ κρήνην Πισαν εἰρησθαι, οἶον πίστραν, ὅπερ ἐστὶ ποτίστρα· τὴν δὲ πόλιν ἰδρυμένην ἐφ' ὕψους δεικνύουσι μεταξὺ δυεῖν ὁροῖν, Ὅσσης καὶ Ὀλύμπου, ὁμωνύμων τοῖς ἐν Θετταλίᾳ. τινὲς δὲ πόλιν μὲν οὐδεμίαν γερονέ-
ναι Πῖσαν φασὶν (εἶναι γὰρ ἂν μίαν τῶν ὀκτώ), κρήνην δὲ μόνην, ἣν νῦν καλεῖσθαι Βῖσαν, Κικυσίου πλησίον πόλεως μεγίστης τῶν ὀκτώ· Στησίχορον δὲ καλεῖν πόλιν τὴν χώραν Πῖσαν λεγομένην, ὥς ὁ ποιητὴς τὴν Ἀέσβον Μάκαρος πόλιν. Εὐριπίδης δ' ἐν Ἰωνί „Εὐ-
βοί' Ἀθήναις ἐστὶ τις γείτων πόλις“ καὶ ἐν Ῥαδα-
μάνθῃ „οἱ γῆν ἔχουσ' Εὐβοῖδα πρόσχωρον πόλιν“
Σοφοκλῆς δ' ἐν Μυσοῖς „Ἀσία μὲν ἡ σύμπασα κλή-
ζεται, ξένε, πόλις δὲ Μυσῶν Μυσία προσήγορος.“
32 Ἡ δὲ Σαλμώνη πλησίον ἐστὶ τῆς ὁμωνύμου κρή-
νης ἐξ ἧς ῥεῖ ὁ Ἐνιπεύς· ἐμβάλλει δ' εἰς τὸν Ἀλφειόν.
τούτου δ' ἐρασθῆναι τὴν Τυρώ φασιν „ἡ ποταμοῦ
„ἡράσσαι' Ἐνιπῆος θείοιο.“ ἐνταῦθα γὰρ βασιλεῦσαι
τὸν πατέρα αὐτῆς τὸν Σαλμωνέα, καθάπερ καὶ Εὐρι-
πίδης ἐν Αἰόλῳ φησί. ἐγγὺς δὲ τῆς Σαλμώνης Ἡρά-
κλεια, καὶ αὕτη μία τῶν ὀκτώ, διέχουσα περὶ τετταρά-
κοντα σταδίους τῆς Ὀλυμπίας, κειμένη δὲ παρὰ τὸν
Κυθήριον ποταμόν, οὗ τὸ τῶν Ἰωνιάδων νυμφῶν
λερὸν τῶν πεπιστευμένων θεραπεύειν νόσους τοῖς

21. post Ἀλφειόν· καλεῖται δὲ νῦν Βαρνίχιος. 25. post
φησί· τον δ' ἐν τῇ Θετταλίᾳ· ὁ δὲ ποταμὸς ὁνομασθῆναι
Ὀθρυος ῥέων δέχεται τὸν

ὑδασι. παρὰ δὲ τὴν Ὀλυμπίαν ἐστὶ καὶ ἡ Ἄρπινα, καὶ C.357
 αὕτη τῶν ὀκτώ, δι' ἧς ῥεῖ ποταμὸς Παρθενίας ὡς εἰς
 Ἡραίαν ἰόντων· αὐτοῦ δ' ἐστὶ καὶ τὸ Κικύσιον τῶν
 ὀκτῶ καὶ τὸ Ἀνυπὸντιον κατὰ τὴν ὁδὸν τὴν ἐξ Ἡλιδος
 5 εἰς Ὀλυμπίαν ἐν πεδίῳ κείμενον· ἐξελεῖφθη δέ, καὶ
 ἀπῆραν οἱ πλείους εἰς Ἐπίδαμνον καὶ Ἀπολλωνίαν· καὶ
 ἡ Φολόη δ' ὑπέρεκται τῆς Ὀλυμπίας ἐγγυτάτω, ὅρος
 Ἀρκαδικόν, ὥστε τὰς ὑπωρείας τῆς Πισάτιδος εἶναι.
 καὶ πᾶσα δ' ἡ Πισᾶτις καὶ τῆς Τριφυλίας τὰ πλεῖστα
 10 ὁμορεῖ τῇ Ἀρκαδίᾳ· διὰ δὲ τοῦτο καὶ Ἀρκαδικὰ εἶναι
 δοκεῖ τὰ πλεῖστα τῶν Πυλιακῶν ἐν καταλόγῳ φραζο-
 μένων χωρίων· οὐ μέντοι φασὶν οἱ ἔμπειροι· τὸν γὰρ
 Ἐρύμανθον εἶναι τὸν ὀρίζοντα τὴν Ἀρκαδίαν τῶν εἰς
 Ἀλφειὸν ἐμπιπτόντων ποταμῶν, ἔξω δ' ἐκείνου τὰ χω-
 15 ρία ἰδρῦσθαι ταῦτα.

Ἐφορος δέ φησιν Αἰτωλὸν ἐκπεσόντα ὑπὸ Σαλ- 33
 μωνέως τοῦ βασιλέως Ἐπειῶν τε καὶ Πισατῶν ἐκ τῆς
 Ἠλείας εἰς τὴν Αἰτωλίαν, ὀνομάσαι τε ἀφ' αὐτοῦ τὴν
 χώραν καὶ συνοικίσαι τὰς αὐτόθι πόλεις· τούτου δ'
 20 ἀπόγονον ὑπάρξαντα Ὀξύλον φίλον τοῖς περὶ Τήμε-
 νον Ἡρακλείδαις ἡγήσασθαι τε τὴν ὁδὸν κατιοῦσιν εἰς
 τὴν Πελοπόννησον καὶ μερίσαι τὴν πολεμίαν αὐτοῖς
 χώραν καὶ τᾶλλα ὑποθέσθαι τὰ περὶ τὴν κατάκτησιν
 τῆς χώρας, ἀντὶ δὲ τούτων λαβεῖν χάριν τὴν εἰς τὴν
 25 Ἠλείαν κἀθοδον, προγονικὴν οὖσαν, κατελθεῖν δὲ
 ἀθροίσαντα στρατιὰν ἐκ τῆς Αἰτωλίας ἐπὶ τοὺς κατέ-
 χοντας Ἐπειοὺς τὴν Ἥλιν· ἀπαντησάντων δὲ τῶν
 Ἐπειῶν μεθ' ὀπλων, ἐπειδὴ ἀντίπαλοι ἦσαν αἱ δυνά-
 μεις, εἰς μονομαχίαν προελθεῖν κατὰ ἔθος τι παλαιὸν

3. post ἰόντων· ἡ δὲ Ἡραία ἐστὶ τῆς Ἀρκαδίας· ὑπέρεκει-
 ται δὲ τῆς Ἀνμαίας καὶ Βουπρασίον καὶ Ἡλιδος· ἅπερ ἐστὶ
 πρὸς ἄρκτον τῇ Πισάτιδι.

τῶν Ἑλλήνων Πυραΐχμην Αἰτωλὸν Δέγμενόν τ' Ἐπειόν,
 τὸν μὲν Δέγμενον μετὰ τόξου ψιλόν, ὥς περιεσόμενον
 ῥαδίως ὀπλίτου διὰ τῆς ἐκηβολίας, τὸν δὲ μετὰ σφεν-
 δόνης καὶ πήρας λίθων, ἐπειδὴ κατέμαθε τὸν δόλον·
 τυχεῖν δὲ νεωστὶ ὑπὸ τῶν Αἰτωλῶν εὐρημένον τὸ τῆς 5
 σφενδόνης εἶδος· μακροβολωτέρας δ' οὐσῆς τῆς σφεν-
 δόνης πεσεῖν τὸν Δέγμενον, καὶ κατασχεῖν τοὺς Αἰ-
 τωλοὺς τὴν γῆν ἐκβαλόντας τοὺς Ἐπειοὺς· παραλα-
 βεῖν δὲ καὶ τὴν ἐπιμέλειαν τοῦ ἱεροῦ τοῦ Ὀλυμπίασιν,
 ἣν εἶχον οἱ Ἀχαιοί· διὰ δὲ τὴν τοῦ Ὁξύλου φιλίαν πρὸς 10
 τοὺς Ἡρακλείδας συννομολογηθῆναι ῥαδίως ἐκ πάντων
 C.358 μεθ' ὅρκου τὴν Ἥλειαν ἱερὰν εἶναι τοῦ Διός, τὸν δ'
 ἐπιόντα ἐπὶ τὴν χώραν ταύτην μεθ' ὅπλων ἐναγῇ εἶναι,
 ὥς δ' αὐτως ἐναγῇ καὶ τὸν μὴ ἐπαμύνοντα εἰς δύνα-
 μιν· ἐκ δὲ τούτου καὶ τοὺς κτίσαντας τὴν Ἥλειαν πό- 15
 λιν ὕστερον ἀταίχιστον εἶσαι, καὶ τοὺς δι' αὐτῆς τῆς
 χώρας ἰόντας στρατοπέδῳ τὰ ὅπλα παραδόντας ἀπο-
 λαμβάνειν μετὰ τὴν ἐκ τῶν ὄρων ἐκβασιν· Ἰφιδόν τε
 θεῖναι τὸν Ὀλυμπικὸν ἀγῶνα, ἱερῶν ὄντων τῶν Ἥλει-
 ων. ἐκ δὴ τῶν τοιούτων αὕξησιν λαβεῖν τοὺς ἀνδρά- 20
 πους· τῶν γὰρ ἄλλων πολεμούντων ἀεὶ πρὸς ἀλλή-
 λους, μόνοις ὑπάρξαι πολλὴν εἰρήνην, οὐκ αὐτοῖς μό-
 νον ἀλλὰ καὶ τοῖς ξένοις, ὥστε καὶ εὐανδρῆσαι μά-
 λιστα πάντων παρὰ τοῦτο. Φεῖδωνα δὲ τὸν Ἀργεῖον,
 δέκατον μὲν ὄντα ἀπὸ Τημένου, δυνάμει δ' ὑπερβε- 25
 βλημένον τοὺς κατ' αὐτόν, ἀφ' ἧς τὴν τε λῆξιν ὅλην
 ἀνέλαβε τὴν Τημένου διεσπασμένην εἰς πλείω μέρη,
 καὶ μέτρα ἐξεῦρε τὰ Φειδῶνια καλούμενα καὶ σταθ-
 μούς καὶ νόμισμα κεχαραγμένον τό τε ἄλλο καὶ τὸ ἄρ-
 γυροῦν, πρὸς τούτοις ἐπιθέσθαι καὶ ταῖς ὑφ' Ἡρα- 30
 κλέους αἰρεθείσαις πόλεσι, καὶ τοὺς ἀγῶνας ἀξιοῦν
 τιθέναι αὐτόν, οὓς ἐκείνος ἔθηκε· τούτων δὲ εἶναι καὶ

τὸν Ὀλυμπικόν· καὶ δὴ βιασάμενον ἐπελθόντα θείναι αὐτόν, οὔτε τῶν Ἑλείων ἐχόντων ὄπλα ὥστε κωλύειν διὰ τὴν εἰρήνην τῶν τε ἄλλων κρατουμένων τῇ δυναστείᾳ· οὐ μὴν τοὺς γε Ἑλείους ἀναγράψαι τὴν θέσιν 5 ταύτην, ἀλλὰ καὶ ὄπλα κτήσασθαι διὰ τοῦτο καὶ ἀρξάμενους ἐπικουρεῖν σφίσιν αὐτοῖς· συμπράττειν δὲ καὶ Λακεδαιμονίους, εἴτε φθονήσαντας τῇ διὰ τὴν εἰρήνην εὐτυχίᾳ εἴτε καὶ συνεργοὺς ἕξειν νομίσαντας πρὸς τὸ καταλῦσαι τὸν Φεῖδωνα, ἀφηρημένον αὐτοὺς τὴν ἡγε- 10 μούριαν τῶν Πελοποννησίων, [ἣν ἐκεῖ]νοι προεκέκτηντο· καὶ δὴ καὶ συγκαταλῦσαι τὸν Φεῖδωνα· τοὺς δὲ συγκατασκευάσαι τοῖς Ἑλείοις τὴν τε Πισᾶτιν καὶ τὴν Τριφυλίαν. ὁ δὲ παράπλους ἅπας ὁ τῆς νῦν Ἠλείας μὴ κατακολπίζοντι χιλίων ὁμοῦ καὶ διακοσίων ἐστὶ 15 σταδίων. ταῦτα μὲν περὶ τῆς Ἠλείας.

Ἡ δὲ Μεσσηνία συνεχῆς ἐστὶ τῇ Ἠλείᾳ, περινεύ- 4 οῦσα τὸ πλεόν ἐπὶ τὸν νότον καὶ τὸ Λιβυκὸν πέλαγος. αὕτη δ' ἐπὶ μὲν τῶν Τρωικῶν ὑπὸ Μενελάῳ ἐτέτακτο, μέρος οὖσα τῆς Λακωνικῆς, ἐκαλεῖτο δ' ἡ χώρα Μεσ- 20 σσηνή· τὴν δὲ νῦν ὀνομαζομένην πόλιν Μεσσήνην, ἥς ἀκρόπολις ἡ Ἰθώμη ὑπῆρξεν, οὕτω συνέβαινε ἐκτίσθαι· μετὰ δὲ τὴν Μενελάου τελευτήν, ἐξασθενησάν-C.359 των τῶν διαδεξαμένων τὴν Λακωνικὴν, οἱ Νηλεῖδαι τῆς Μεσσηνίας ἐπῆρχον. καὶ δὴ κατὰ τὴν τῶν Ἑρα- 25 κλειδῶν ἀάθοδον καὶ τὸν τότε γενηθέντα μερισμὸν τῆς χώρας ἦν Μέλανθος βασιλεὺς τῶν Μεσσηνίων καθ' αὐτοὺς ταττομένων, πρότερον δ' ὑπήκοοι ἦσαν τοῦ Μενελάου. σημεῖον δέ· ἐκ γὰρ τοῦ Μεσσηνιακοῦ κόλπου καὶ τοῦ συνεχοῦς Ἀσιναίου λεγομένου ἀπὸ τῆς 30 Μεσσηνιακῆς Ἀσίνης αἱ ἑπτὰ ἦσαν πόλεις, αἷς ὑπέσχετο δώσειν ὁ Ἀγαμέμνων τῷ Ἀχιλλεῖ „Καρδαμύλην Ἐνό- „πην τε καὶ Ἰρὴν ποιήεσαν Φηράς τε ξαθίας ἡδ' Ἀν-

„θειαν βαθύλειμον καλήν τ' Αἴπειαν καὶ Πήδασον
 „ἀμπελόεσσας,“ οὐκ ἂν τάς γε μὴ προσηκούσας μήτ'
 αὐτῷ μήτε τῷ ἀδελφῷ ὑποσχόμενος. ἐκ δὲ τῶν Φηρῶν
 καὶ συστρατεύσαντας τῷ Μενελάῳ δημοῖ ὁ ποιητής,
 τὸν δὲ [Οἰτυλον] καὶ συγκαταλέγει τῷ Λακωνικῷ κα- 5
 ταλόγῳ, [ιδρυμένον] ἐν τῷ Μεσσηνιακῷ κόλπῳ. ἔστι
 δ' ἡ Μεσσήνη μετὰ Τριφυλίαν· κοινὴ δ' ἐστὶν ἀμφοῖν
 ἄκρα, μεθ' ἣν τὸ Κορυφάσιον· ὑπέρκειται δ' ὄρος ἐν
 ἑπτὰ σταδίοις τὸ Αἰγαλέον τούτου τε καὶ τῆς θαλάττης.

- 2 Ἡ μὲν οὖν παλαιὰ Πύλος ἡ Μεσσηνιακὴ ὑπὸ τῷ 10
 Αἰγαλέῳ πόλις ἦν, κατεσπασμένης δὲ ταύτης ἐπὶ τῷ
 Κορυφασίῳ τινὲς αὐτῶν ᾤκησαν· προσέκτισαν δ' αὐ-
 τὴν Ἀθηναῖοι τὸ δεύτερον ἐπὶ Σικελίαν πλέοντες μετ'
 Εὐρυμέδοντος ἐπὶ Στρατοκλέους, ἐπιτείχισμα τοῖς Λα-
 κεδαιμονίοις. αὐτοῦ δ' ἐστὶ καὶ ἡ Κυπαρισσία ἡ Μεσ- 15
 σηνιακὴ καὶ ἡ..... καὶ ἡ προκειμένη πλησίον
 τοῦ Πύλου Σφαγία νῆσος, ἡ δ' αὐτὴ καὶ Σφακτηρία
 λεγομένη, περὶ ἣν ἀπέβαλον ξωγρία Λακεδαιμόνιοι
 τριακοσίους ἐξ ἑαυτῶν ἄνδρας ὑπ' Ἀθηναίων ἐκπο-
 λιορκηθέντας. κατὰ δὲ τὴν παραλίαν ταύτην τῶν Κυ- 20
 παρισσιῶν πελάγαι πρόκεινται δύο νῆσοι προσαγο-
 ρευόμεναι Στροφάδες, τετρακοσίους ἀπέχουσαι μά-
 λιστα πῶς τῆς ἡπείρου σταδίου ἐν τῷ Λιβυκῷ καὶ με-
 σημβρινῷ πελάγει. φησὶ δὲ Θουκυδίδης ναύσταθμον
 ὑπάρχει τῶν Μεσσηνίων ταύτην τὴν Πύλον· διέχει 25
 δὲ Σπάρτης τετρακοσίους.

- 3 Ἐξῆς δ' ἐστὶ Μεθώνη· ταύτην δ' εἰναί φασι τὴν
 ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ Πήδασον προσαγορευομένην, μίαν
 τῶν ἑπτὰ ὧν ὑπέσχετο τῷ Ἀχιλλεῖ ὁ Ἀγαμέμνων· ἐν-
 ταῦθα Ἀγρίππας τὸν τῶν Μαυρουσίων βασιλέα τῆς 30

8. post Κορυφάσιον: καὶ ἡ Κυπαρισσία· 20. ante τῶν: αἱ

Ἀντωνίου στάσεως ὄντα Βόρον κατὰ τὸν πόλεμον τὸν Ἀκτιακὸν διέφθειρε, λαβὼν ἐξ ἐπίπλου τὸ χωρίον.

Τῇ δὲ Μεθώνῃ συνεχῆς ἐστὶν ὁ Ἀκρίτας, ἀρχὴ 4 τοῦ Μεσσηνιακοῦ κόλπου· καλοῦσι δ' αὐτὸν καὶ Ἀσιν-
5 ναῖον ἀπὸ Ἀσίνης, πολέχνης πρώτης ἐν τῷ κόλπῳ, ὁμωνύμου τῇ Ἑρμιονικῇ. αὕτη μὲν οὖν ἡ ἀρχὴ πρὸς C.360
δύσιν τοῦ κόλπου ἐστὶ, πρὸς ἑω δὲ αἱ καλούμεναι Θυ-
ρίδες, ὅμοροι τῇ νῦν Λακωνικῇ τῇ κατὰ Κιναίθιον καὶ
Ταίναρον. μεταξὺ δὲ ἀπὸ τῶν Θυρίδων ἀρξαμένοις
10 Οἰτυλὸς ἐστὶ· καλεῖται δ' ὑπὸ τινων Βοίτυλος· εἴτα
Λεῦκτρον τῶν ἐν τῇ Βοιωτίᾳ Λεύκτρων ἄποικος, εἴτ'
ἐπὶ πέτρας ἐρυμνῆς ἴδρυται Καρδαμύλη, εἴτα Φηραὶ
ὅμορος Θουρίᾳ καὶ Γερήνοις, ἀφ' οὗ τόπου Γερήνιον
τὸν Νέστορα κληθῆναι φασὶ διὰ τὸ ἐνταῦθα σωθῆναι
15 αὐτόν, ὡς προειρήκαμεν. δεικνύνται δ' ἐν τῇ Γερηνίᾳ
Τρικκαίου ἱερὸν Ἀσκληπιοῦ, ἀφίδρυμα τοῦ ἐν τῇ Θε-
ταλικῇ Τρίκκῃ. οἰκίσαι δὲ λέγεται Πέλοψ τό τε Λεῦ-
κτρον καὶ Χαράδραν καὶ Θαλάμας, τοὺς νῦν Βοιωτοὺς
καλουμένους, τὴν ἀδελφὴν Νιόβην ἐκδοὺς Ἀμφίονι
20 καὶ ἐκ τῆς Βοιωτίας ἀγαγόμενός τινας. παρὰ δὲ Φηρὰς
Νέδων ἐκβάλλει ρέων διὰ τῆς Λακωνικῆς, ἕτερος ὢν
τῆς Νέδας· ἔχει δ' ἱερὸν ἐπίσημον Ἀθηνᾶς Νεδουσίας.
*καὶ ἐν Ποιαέσση δ' ἐστὶν Ἀθηνᾶς Νεδουσίας ἱερὸν,
ἐπάννυμον τόπου τινὸς Νέδοντος, ἐξ οὗ φασιν οἰκίσαι
25 Τήλεκλον Ποιαέσσαν καὶ Ἐχειᾶς καὶ Τράγιον.*

Τῶν δὲ προταθεισῶν ἑπτὰ πόλεων τῷ Ἀχιλλεῖ 5
περὶ μὲν Καρδαμύλης καὶ Φηρῶν εἰρήκαμεν καὶ Πη-
δάσου. Ἐνόπην δὲ οἱ μὲν τὰ Πέλλανά φασιν, οἱ δὲ τό-
πον τινὰ περὶ Καρδαμύλην, οἱ δὲ τὴν Γερηνίαν· τὴν
30 δὲ Ἰρὴν κατὰ τὸ ὄρος δεικνύουσι τὸ κατὰ τὴν Μεγαλό-
πολιν τῆς Ἀρκαδίας ὡς ἐπὶ τὴν Ἀνδανίαν ἰόντων, ἣν
ἔφαμεν Οἰχαλίαν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ κεκληῆσθαι· οἱ δὲ

- τὴν νῦν Μεσόλαν οὕτω καλεῖσθαι φασι καθήκουσαν εἰς τὸν μεταξὺ κόλπον τοῦ Ταῦρέτου καὶ τῆς Μεσσηνίας. ἡ δ' Αἴπεια νῦν Θουρία καλεῖται, ἣν ἔφαμεν ὁμορον Φαραῖς· ἰδρυται δ' ἐπὶ λόφον ὑψηλοῦ, ἀφ' οὗ καὶ τοῦνομα. ἀπὸ δὲ τῆς Θουρίας καὶ ὁ Θουριά- 5 τῆς κόλπος, ἐν ᾧ πόλισμα ἦν Πλον τοῦνομα ἀπεναντίον Ταινάρου. Ἀνθεϊαν δὲ οἱ μὲν αὐτὴν τὴν Θουρίαν φασίν, Αἴπειαν δὲ τὴν Μεθώνην, οἱ δὲ τὴν μεταξὺ Ἀσίην τῶν Μεσσηνίων πόλεων οἰκειότατα βαθύλειμον λεχθεῖσαν, ἥς πρὸς θαλάττη πόλις Κορώνη· 10 καὶ ταύτην δέ τινες Πήδασον λεχθῆναί φασιν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ. „πᾶσαι δ' ἐγγὺς ἀλός,“ Καρδαμύλη μὲν ἐπ' αὐτῇ, Φαραὶ δ' ἀπὸ πέντε σταδίων, ὕφορμον ἔχουσα θερυνόν, αἱ δ' ἄλλαι ἀνωμάλοις κέχρηται τοῖς ἀπὸ θαλάττης διαστήμασι. 15
- 6 Πλησίον δὲ τῆς Κορώνης κατὰ μέσον πῶς τὸν κόλπον ὁ Παμισδὸς ποταμὸς ἐκβάλλει, ταύτην μὲν ἐν δεξιᾷ ἔχων καὶ τὰς ἐξῆς· ὧν εἰσιν ἑσχαται πρὸς δύσιν Πύλος καὶ Κυπαρισσία, μέση δὲ τούτων Ἔρανα, ἣν οὐκ εὖ τινες Ἀρήνην . . . νενομίκασι πρότερον· Θουρίαν 20 δὲ καὶ Φαράς ἐν ἀ[ριστερᾷ]. μέγιστος δ' ἐστὶ ποταμῶν τῶν ἐντὸς Ἰσθμοῦ καίπερ οὐ πλείους ἢ ἑκατὸν σταδίους ἐκ τῶν πηγῶν θύει δαφυλῆς τῷ ὕδατι διὰ τοῦ Μεσσηνιακοῦ πεδίου καὶ τῆς Μακαρίας καλουμένης· ἀφέστηκε τε τῆς νῦν Μεσσηνίων πόλεως ὁ ποταμὸς 25 σταδίους πεντήκοντα. ἔστι δὲ καὶ ἄλλος Παμισδὸς χαρδρῶδης μικρὸς περὶ Λεῦκτρον ῥέων τὸ Λακωνικόν, περὶ οὗ κρῖσιν ἔσχον Μεσσηνιοὶ πρὸς Λακεδαιμονίους ἐπὶ Φιλίππου· τὸν δὲ Παμισδόν, ὃν Ἀμαθόν τινες ἀνόμασαν, προειρήκαμεν. 30

26. post σταδίους: διακοσίους καὶ 30. ante; προειρήκαμεν: ως

Ἐφορος δὲ τὸν Κρεσφόντην, ἐπειδὴ εἴλε Μεσσή- 7
νην, διελεῖν φησιν εἰς πέντε πόλεις αὐτήν, ὥστε Στε-
νύκλαρον μὲν ἐν τῷ μέσῳ τῆς χ[ώρας ταύτης] κειμένην
ἀποδείξαι βασιλείον αὐτῷ, [εἰς δὲ τὰς ἄλλας] βασιλέας
5 πέμψαι, Πύλον καὶ Ρίον κ[αὶ Μεσόλαν καὶ] Ῥαμεῖτιν,
ποιήσαντα ἰσονόμους πάντας τοῖς Ἀωριεῦσι τοὺς Μεσ-
σηνίους· ἀγανακτούντων δὲ τῶν Ἀωριέων μεταγνόντα
μόνον τὸν Στενύκλαρον νομίσαι πόλιν, εἰς τοῦτον δὲ
καὶ τοὺς Ἀωριέας συναγαγεῖν πάντας.

- 10 Ἡ δὲ Μεσσηνίων πόλις ἔοικε Κορίνθῳ· ὑπέρκει- 8
ται γὰρ τῆς πόλεως ἑκατέρας ὄρος ὑψηλὸν καὶ ἀπότο-
μον τείχει κοινῷ περιειλημμένον ὥστ' ἀκροπόλει χρῆ-
σθαι, τὸ μὲν καλούμενον Ἰθώμη τὸ δὲ Ἀκροκόρινθος·
ὥστ' οἰκείως δοκεῖ Δημήτριος ὁ Φάριος πρὸς Φίλιπ-
15 πον εἰπεῖν τὸν Δημητρίου, παρακελευόμενος τούτων
ἔχεσθαι τῶν πόλεων ἀμφοῖν ἐπιθυμοῦντα τῆς Πελο-
ποννήσου· „τῶν κεράτων γὰρ κρατῶν“ ἔφη „καθέ-
„ξεῖς τὴν βοῦν.“ κέρατα μὲν λέγων τὴν Ἰθώμην καὶ
τὸν Ἀκροκόρινθον, βοῦν δὲ τὴν Πελοπόννησον. καὶ
20 δὴ διὰ τὴν εὐκαιρίαν ταύτην ἀμφήριστοι γεγόνασιν αἱ
πόλεις αὗται. Κόρινθον μὲν οὖν κατέσκαψαν [Ρω-
μαῖοι] καὶ ἀνέστησαν πάλιν· Μεσσήνην δὲ ἀνείλον
μὲν Λακεδαιμόνιοι, πάλιν δ' ἀνέλαβον Θηβαῖοι καὶ
μετὰ ταῦτα Φίλιππος Ἀμύντου· αἱ δ' ἀκροπόλεις ἀοί-
25 κητοὶ διέμεναν.

Τὸ δ' ἐν Λίμναις τῆς Ἀρτέμιδος ἱερὸν, ἐφ' ᾧ^{C.362} 9
Μεσσηνιοὶ περὶ τὰς παρθένους ὑβρίσαι δοκοῦσι τὰς
ἀφιγμένας ἐπὶ τὴν θυσίαν, ἐν μεθορίοις ἐστὶ τῆς τε
Λακωνικῆς καὶ τῆς Μεσσηνίας, ὅπου κοινὴν συνετέ-
30 λουν πανηγυρίαν καὶ θυσίαν ἀμφοτέροι· μετὰ δὲ τὴν
ὑβρίαν οὐ διδόντων δίκας τῶν Μεσσηνίων συστήναί
φρασι τὸν πόλεμον. ἀπὸ δὲ τῶν Λιμνῶν τούτων καὶ

τὸ ἐν τῇ Σπάρτῃ Λιμναῖον εἰρηται τῆς Ἀρτέμιδος
λερόν.

- 10 Πλεονάκεις δ' ἐπολέμησαν διὰ τὰς ἀποστάσεις τῶν
Μεσσηνίων. τὴν μὲν οὖν πρώτην κατάκτησιν αὐτῶν
φησι Τυρταῖος ἐν τοῖς ποιήμασι κατὰ τοὺς τῶν πατέ- 5
ρων πατέρας γενέσθαι· τὴν δὲ δευτέραν, καθ' ἣν ἐλό-
μενοι συμμαχούς Ἀργεῖους τε καὶ Ἀρκάδας καὶ Πισά-
τας ἀπέστησαν, Ἀρκάδων μὲν Ἀριστοκράτην τὸν Ὀρ-
χομενοῦ βασιλέα παρεχομένων στρατηγόν, Πισατῶν
δὲ Πανταλέοντα τὸν Ὀμφαλίωτος· ἥνικα φησὶν αὐτὸς 10
στρατηγῆσαι τὸν πόλεμον τοῖς Λακεδαιμονίοις [ἐλ-
θὼν ἐξ Ἐρινεοῦ]· καὶ γὰρ εἶναί φησιν ἐκεῖθεν ἐν
τῇ ἐλεγείᾳ ἣν ἐπιγράφουσιν Εὐνομίαν „αὐτὸς γὰρ
„Κρονίων, καλλιστεφάνου πόσις Ἥρης, Ζεὺς Ἥρα-
„κλείδαις τήνδε δέδωκε πόλιν· οἷσιν ἅμα προλιπόν- 15
„τες Ἐρινεὸν ἠνεμόεντα, εὐρεῖαν Πέλοπος νῆσον ἀφι-
„κόμεθα.“ ὥστ' ἢ ταῦτα ἠκύρωται τὰ ἐλεγεία, ἢ Φι-
λοχόρῳ ἀπιστητέον τῷ φήσαντι Ἀθηναῖόν τε καὶ Ἀφι-
δναῖον, καὶ Καλλισθένει καὶ ἄλλοις πλείοσι τοῖς εἰποῦ-
σιν ἐξ Ἀθηναίων ἀφικέσθαι δεηθέντων Λακεδαιμονίων 20
κατὰ χρησμόν, ὃς ἐπέταττε παρ' Ἀθηναίων λαβεῖν ἡγε-
μόνα. ἐπὶ μὲν οὖν τοῦ Τυρταίου ὁ δεύτερος ὑπῆρξε
πόλεμος· τρίτον δὲ καὶ τέταρτον συστήναί φασιν, ἐν
ᾧ κατελύθησαν οἱ Μεσσήνιοι. ὁ δὲ πᾶς παράπλους
ὁ Μεσσηνιακὸς στάδιοι ὀκτακόσιοί που κατακολπί- 25
ζοντι.

- 11 Ἀλλὰ γὰρ εἰς πλείω λόγον τοῦ μετρίου πρόκειμεν
ἀκολουθοῦντες τῷ πλήθει τῶν ἱστορουμένων περὶ χώ-
ρας ἐκλειμμένης τῆς πλείστης· ὅπου γε καὶ ἡ Λακω-
νικὴ λειπανδρεὶ κρινομένη πρὸς τὴν παλαιὰν εὐαν- 30
δρίαν. ἔξω γὰρ τῆς Σπάρτης αἱ λοιπαὶ πολίχναι τινές
εἰσι περὶ τριάκοντα τὸν ἀριθμόν· τὸ δὲ παλαιὸν ἐκα-

τόμπολιν φασιν αὐτήν καλεῖσθαι, καὶ τὰ ἑκατόμβαια διὰ τοῦτο θύεσθαι παρ' αὐτοῖς κατ' ἔτος.

- Ἔστι δ' οὖν μετὰ τὸν Μεσσηνιακὸν κόλπον ὁ Λα-
κωνικὸς μεταξὺ Ταινάρου καὶ Μαλεῶν, ἐκκλίνων μι-
5 κρὸν ἀπὸ μεσημβρίας πρὸς ἕω· διέχουσι δὲ σταδίους
ἑκατὸν τριάκοντα αἱ Θυρίδες τοῦ Ταινάρου ἐν τῷ Μεσ-
σηνιακῷ οὔσαι κόλπῳ, βοώδης κρημνός. τούτων δ' ο 363
ὑπέρεκκεται τὸ Ταῦγετον· ἔστι δ' ὄρος μικρὸν ὑπὲρ τῆς
θαλάττης ὑψηλὸν τε καὶ ὄρθιον, συνάπτον κατὰ τὰ
10 προσάρκτια μέρη ταῖς Ἀρκαδικαῖς ὑπωρεΐαις, ὥστε
καταλείπεσθαι μεταξὺ αὐλῶνα, καθ' ὃν ἡ Μεσσηνία
συνεχῆς ἐστὶ τῇ Λακωνικῇ. ὑποπέπτωκε δὲ τῷ Ταῦ-
γέτῳ ἡ Σπάρτη ἐν μεσογαίᾳ καὶ Ἀμύκλαι, οὗ τὸ τοῦ
Ἀπόλλωνος ἱερὸν, καὶ ἡ Φᾶρις. ἔστι μὲν οὖν ἐν κοιλο-
15 τέρῳ χωρίῳ τὸ τῆς πόλεως ἑδαφος καίπερ ἀπολαμβά-
νον ὄρη μεταξύ· ἀλλ' οὐδέν γε μέρος αὐτοῦ λιμνάζει,
τὸ δὲ παλαιὸν ἐλίμναζε τὸ προάστειον, καὶ ἐκάλουν
αὐτὸ Λίμνας· καὶ τὸ τοῦ Διονύσου ἱερὸν ἐν Λίμναις
ἐφ' ὑγροῦ βεβηκὸς ἐτύγχανε, νῦν δ' ἐπὶ ξηροῦ τὴν
20 ἰδρυσιν ἔχει. ἐν δὲ τῷ κόλπῳ τῆς παραλίας τὸ μὲν Ταί-
ναρον ἀκτὴ ἐστὶν ἐκκειμένη τὸ ἱερὸν ἔχουσα τοῦ Πο-
σειδῶνος ἐν ἄλσει ἰδρυμένον· πλησίον δ' ἐστὶν ἄν-
τρον, δι' οὗ τὸν Κέρβερον ἀναχθῆναι μυθεύουσιν ὑφ'
Ἡρακλέους ἐξ ἄδου. ἐντεῦθεν δ' εἰς μὲν Φυκοῦντα
25 ἄκραν τῆς Κυρηναίας πρὸς νότον διάρμα ἐστὶ σταδίων
τρισχιλίων· εἰς δὲ Πάχυνον πρὸς δύσιν, τὸ τῆς Σικε-
λίας ἀκρωτήριον, τετρακισχιλίων ἑξακοσίων, τινὲς δὲ
τετρακισχιλίων φασίν· εἰς δὲ Μαλέας πρὸς ἕω ἑξακο-
σίων ἑβδομήκοντα κατακολπίζονται· εἰς δὲ Ὀνου γνά-
30 θον, ταπεινὴν χειρρόνησον ἐνδοτέρῳ τῶν Μαλεῶν,
πεντακοσίων εἴκοσι (πρόκειται δὲ κατὰ τοῦτου Κύ-
θηρα ἐν τετταράκοντα σταδίοις, νῆσος εὐλίμενος, πό-

λιν ἔχουσα ὁμώνυμον, ἣν ἔσχευεν Εὐρυκλῆς ἐν μέρει κτήσεως ἰδίας ὁ καθ' ἡμᾶς τῶν Λακεδαιμονίων ἡγεμῶν· περίκειται δὲ νησίδια πλείω τὰ μὲν ἐγγὺς τὰ δὲ καὶ μικρὸν ἀπωτέρω)· εἰς δὲ Κώρυκον ἄκραν τῆς Κρήτης ἐγγυτάτῳ πλοῦς ἐστὶ σταδίων ἑπτακοσίων 5 πεντήκοντα.

- 2 Μετὰ δὲ Ταίναρον πλέοντι ἐπὶ τὴν Ὀνου γνάθον καὶ Μαλείας Ψαμαθοῦς ἐστὶ πόλις· εἰπ' Ἀσίνη καὶ Γύθειον τὸ τῆς Σπάρτης ἐπίνειον ἐν διακοσίοις καὶ τετταράκοντα σταδίοις ἰδρυμένον· ἔχει δ', ὥς φασι, τὸ 10 ναύσταθμον ὀρυκτόν· εἰθ' ὁ Εὐρώτας ἐκδίδωσι μεταξὺ Γυθείου καὶ Ἀκραίων. τέως μὲν οὖν ὁ πλοῦς ἐστὶ παρ' αἰγιαλὸν ὅσον διακοσίων καὶ τετταράκοντα σταδίων· εἰθ' ἑλῶδες ὑπέρεκκεται χωρίον καὶ κόμη Ἑλος· πρότερον δ' ἦν πόλις, καθάπερ καὶ Ὅμηρός φησιν „οἷ 15 „τ' ἄρ' Ἀμύνκλας εἶχον Ἑλος τ' ἔφαλον πτολίεθρον.“ κτίσμα δ' Ἑλλίου φασὶ τοῦ Περσέως. ἐστὶ δὲ καὶ πεδῖον καλούμενον Λεύκη· εἴτα πόλις ἐπὶ χερρονήσου ἰδρυμένη Κυπαρισσία λιμένα ἔχουσα· εἴτα ἡ Ὀνου γνά- 0.364θος λιμένα ἔχουσα· εἴτα Βοία πόλις, εἴτα Μαλείαι· στά- 20 διοι δ' εἰς αὐτάς ἀπὸ τῆς Ὀνου γνάθου πεντήκοντα καὶ ἑκατόν· ἐστὶ δὲ καὶ Ἀσωπὸς πόλις ἐν τῇ Λακωνικῇ.
- 3 Τῶν δ' ὑφ' Ὀμήρου καταλεγόμενων τὴν μὲν Μεσσην οὐδαμοῦ δείκνυσθαί φασι· Μεσσοῖαν δ' οὐ τῆς χώρας εἶναι μέρος [ἀλλὰ] τῆς Σπάρτης, καθάπερ καὶ 25 τὸ Λιμναῖον, κατὰ τὸν . . . κα. ἐνιοι δὲ κατὰ ἀποκοπὴν δέχονται τὴν Μεσσήνην· εἰρηται γὰρ ὅτι καὶ αὕτη μέρος ἦν τῆς Λακωνικῆς. παραδείγμασι δὲ χρῶνται τοῦ μὲν ποιητοῦ τῷ κρι καὶ δῶ καὶ μάψ, καὶ ἔτι „ἥρως „δ' Αὐτομέδων τε καὶ Ἀλκιμος,“ ἀντὶ τοῦ Ἀλκιμέ- 30 δων· Ἡσιόδου δέ, ὅτι τὸ βριθὺ καὶ βριαρὸν βροῖ λέγει· Σοφοκλῆς δὲ καὶ Ἴων τὸ ῥάδιον ῥά· Ἐπίχαρμος δὲ τὸ

λίαν λι, Συρακῶ δὲ τὰς Συρακούσας· παρ' Ἐμπεδο-
κλεῖ δέ „μία γίνεται ἀμφοτέρων ὄψ“ ἡ ὄψις· καὶ παρ'
Ἀντιμάχῳ „Ἀήμητρος τοι Ἐλευσινίης ἱερῇ ὄψ.“ καὶ
τὸ ἄλφιτον ἄλφι· Εὐφορίων δὲ καὶ τὸν ἥλον λέγει ἥλ·
5 παρὰ Φιλήτα δέ „δμῳίδες εἰς ταλάρους λευκὸν ἄγου-
„σιν ἔρι“ [τὸ ἔριον]· „εἰς ἄνεμον δὲ τὰ πηδᾶ“ τὰ πη-
δάλια Ἀρατὸς φησι, Δωδὼ δὲ τὴν Δωδώνην Σιμυρίας.

Τῶν δ' ἄλλων τῶν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ κατωνομα-
σμένων τὰ μὲν ἀνῆρηται, τῶν δ' ἔκρη λείπεται, τὰ δὲ
10 μετωνόμασται, καθάπερ αἱ Ἀργεῖαι Αἰγαιαί· [αἱ] γὰρ
ἐν τῇ Δοκρίδι οὐδ' ὅλως περιέεισι. τὴν δὲ Λᾶν οἱ Διόσ-
κουροὶ ποτε ἐκ πολιορκίας ἐλεῖν ἱστοροῦνται, ἀφ' οὗ
δὴ Λαπέρσαι προσηγορεύθησαν.

Φησὶ δ' Ἐφορος τοὺς κατασχόντας τὴν Λακωνι- 4
15 κὴν Ἡρακλείδας Εὐρυσθένη τε καὶ Προκλῆ διελθὲν
εἰς ἕξ μέρη καὶ πολίσαι τὴν χώραν· μίαν μὲν οὖν τῶν
μερίδων, τὰς Ἀμύκλας, ἐξαίρετον δοῦναι τῷ προδόντι
αὐτοῖς τὴν Λακωνικὴν καὶ πείσαντι τὸν κατέχοντα αὐ-
τὴν ἀπελθεῖν ὑπόσπονδον μετὰ τῶν Ἀχαιῶν εἰς τὴν
20 Ἰωνίαν· τὴν δὲ Σπάρτην βασιλείον ἀποφῆναι σφίσι
αὐτοῖς· εἰς δὲ τὰς ἄλλας πέμψαι βασιλέας, ἐπιτρέψαν-
τας δέχεσθαι συνοίκους τοὺς βουλομένους τῶν ξένων
διὰ τὴν λειπανδρίαν· χορῆσθαι δὲ Λαῖ μὲν να[υστάθμῳ
διὰ τὸ εὐ]λίμενον, Αἴγυι δὲ πρὸς τοὺς πολέ[μους] ὀρμη-
25 τηρίῳ· καὶ] γὰρ ὁμορεῖν τοῖς κύκλῳ, Φάριδι δ[ὲ ἀρ-
χείῳ, πλειστήνῃ] ἀπὸ τῶν ἐντὸς ἀσφάλειαν ἐχούσῃ,
τ ὑπακούοντας δ' ἅπαντας τοὺς περιό-
κους Σπαρτιατῶν ὅμως ἰσονόμους εἶναι, μετέχονταςC.365
καὶ πολιτείας καὶ ἀρχείων· Ἀγιν δὲ τὸν Εὐρυσθένην

13. post προσηγορεύθησαν: καὶ Σοφοκλῆς λέγει πον „νῆ
„τῷ Λαπέρσῃ, νῆ τὸν Εὐρώταν τρίτον, νῆ τοὺς ἐν Ἀργεὶ καὶ
„κατὰ Σπάρτην θεοῦς.“

ἀφελέσθαι τὴν ἰσοτιμίαν καὶ συντελεῖν προστάξει τῇ Σπάρτῃ. τοὺς μὲν οὖν ἄλλους ὑπακοῦσαι, τοὺς δ' Ἐλείους τοὺς ἔχοντας τὸ Ἔλος (καλεῖσθαι δὲ Εἰλωτας) ποιησαμένους ἀπόστασιν κατὰ κράτος ἀλῶναι πολέμῳ καὶ κριθῆναι δούλους ἐπὶ τακτοῖς τισιν, ὥστε τὸν 5 ἔχοντα μὴτ' ἐλευθεροῦν ἐξεῖναι μῆτε πωλεῖν ἔξω τῶν ὄρων τούτους· τοῦτον δὲ λεχθῆναι τὸν πρὸς τοὺς Εἰλωτας πόλεμον. σχεδὸν δέ τι καὶ τὴν εἰλωτείαν τὴν ὕστερον συμμείνασαν μέχρι τῆς Ῥωμαίων ἐπικρατείας οἱ περὶ Ἄγιν εἰσὶν οἱ καταδείξαντες· τρόπον γὰρ τινα 10 δημοσίους δούλους εἶχον οἱ Λακεδαιμόνιοι τούτους, κατοικίας τινὰς αὐτοῖς ἀποδείξαντες καὶ λειτουργίας ἰδίας.

- 5 Περὶ δὲ τῆς Λακωνίων πολιτείας καὶ τῶν γενομένων παρ' αὐτοῖς μεταβολῶν τὰ μὲν πολλὰ παρείη τις 15 ἂν διὰ τὸ γινώριμον, τινῶν δ' ἄξιον ἔσως μνησθῆναι. Ἀχαιεὺς γὰρ τοὺς Φθιώτας φασὶ συγκρατελθόντας Πέλοπι εἰς τὴν Πελοπόννησον οἰκῆσαι τὴν Λακωνικὴν, τοσοῦτον δ' ἄρετῇ διενεγκεῖν ὥστε τὴν Πελοπόννησον, ἐκ πολλῶν ἤδη χρόνων Ἄργος λεγομένην, τότε Ἀχαῖ- 20 κὸν Ἄργος λεχθῆναι, καὶ οὐ μόνον γε τὴν Πελοπόννησον ἀλλὰ καὶ ἰδίως τὴν Λακωνικὴν οὕτω προσαγορευθῆναι· τὸ γοῦν τοῦ ποιητοῦ „ποῦ Μενέλαος ἔην; „ἢ οὐκ Ἄργεος ἦεν Ἀχαιικοῦ;“ δέχονται τινες οὕτως „ἢ οὐκ ἦν ἐν τῇ Λακωνικῇ;“ κατὰ δὲ τὴν τῶν Ἡρα- 25 κλειδῶν ἀπόδοτον Φιλονόμου προδόντος τὴν χώραν τοῖς Δωριεῦσι μετανέστησαν ἐκ τῆς Λακωνικῆς εἰς τὴν τῶν Ἰώνων τὴν καὶ νῦν Ἀχαῖαν καλουμένην· ἐροῦμεν δὲ περὶ αὐτῶν ἐν τοῖς Ἀχαικοῖς. οἱ δὲ κατασχόντες τὴν Λακωνικὴν κατ' ἀρχὰς μὲν ἐσωφρόνουν, ἐπεὶ δ' 30

οὖν *Λυκούργῳ* τὴν πολιτείαν ἐπέτρεψαν, τοσοῦτον ὑπερεβάλλοντο τοὺς ἄλλους ὥστε μόνοι τῶν Ἑλλήνων καὶ γῆς καὶ θαλάττης ἐπῆρξαν, διετέλεσάν τε ἄρχοντες τῶν Ἑλλήνων ἕως ἀφείλονται αὐτοὺς τὴν ἡγεμονίαν *Θηβαῖοι* 5 καὶ μετ' ἐκείνους εὐθὺς *Μακεδόνες*. οὐ μὴν τελέως γε οὐδὲ τούτοις εἴξαν, ἀλλὰ φυλάττοντες τὴν αὐτονομίαν ἔρην εἶχον περὶ πρωτείων αἰεὶ πρὸς τε τοὺς ἄλλους Ἑλλήνας καὶ πρὸς τοὺς τῶν *Μακεδόνων* βασιλέας· καταλυθέντων δὲ τούτων ὑπὸ *Ῥωμαίων*, μικρὰ μὲν τινα 10 προσέκρουσαν τοῖς πεμπομένοις ὑπὸ *Ῥωμαίων* στρατηγοῖς τυραννούμενοι τότε καὶ πολιτευόμενοι μοχθηρῶς· ἀναλαβόντες δὲ σφᾶς ἐτιμήθησαν διαφερόντως καὶ ἔμειναν ἐλεύθεροι, πλὴν τῶν φιλικῶν λειτεουργιῶν ἄλλο συντελοῦντες οὐδέν. νεωστὶ δ' *Εὐρυκλῆς* αὐτοὺς C.366 15 ἐτάραξε δόξας ἀποχρήσασθαι τῇ *Καίσαρος* φιλίᾳ πέρα τοῦ μετρίου πρὸς τὴν ἐπιστάσιαν αὐτῶν, ἐπαύσατο δ' ἡ ἀρχὴ ταχέως, ἐκείνου μὲν παραχωρήσαντος εἰς τὸ χρεῶν, τοῦ δ' υἱοῦ τὴν φιλίαν ἀπεστραμμένου τὴν τοιαύτην πᾶσαν· συνέβη δὲ καὶ τοὺς *Ἐλευθερολάκων* 20 νας λαβεῖν τινα τάξιν πολιτείας, ἐπειδὴ *Ῥωμαίοις* προσέθεντο πρῶτοι οἱ περιόικοι τυραννουμένης τῆς *Σπάρτης*, οἳ τε ἄλλοι καὶ οἱ *Εἰλωτες*. *Ἑλλάνικος* μὲν οὖν *Εὐρυσθένη* καὶ *Προκλέα* φησὶ διατάξαι τὴν πολιτείαν, *Ἐφορος* δ' ἐπιτιμᾷ φήσας *Λυκούργου* μὲν αὐτὸν μηδαμῶς 25 μεμνησθαι, τὰ δ' ἐκείνου ἔργα τοῖς μὴ προσήκουσιν ἀνατιθέναι· μόνῳ γοῦν *Λυκούργῳ* ἱερὸν ἰδρῦσθαι καὶ θύεσθαι κατ' ἔτος, ἐκείνοις δὲ καίπερ οἰκισταῖς γενομένοις μηδὲ τοῦτο δεδόσθαι ὥστε τοὺς ἀπ' αὐτῶν τοὺς μὲν *Εὐρυσθενίδας* τοὺς δὲ *Προκλείδας* καλεῖσθαι, ἀ[λλὰ τοὺς μὲν] *Ἀγίδας* ἀπὸ *Ἀγιδος* τοῦ *Εὐρυσθένους* τοὺς δ' [*Εὐρυπωντίδας* ἀ]πὸ *Εὐρυπῶντος* 30 τοῦ *Προκλέους*· τοὺς μὲν [γὰρ δυναστεῦ]σαι δικαίως,

τοὺς δὲ δεξαμένους ἐπ[ήλυδας ἀνθρώ]πους, δι' ἐκεί-
νων δυναστεῦσαι· ὅθ[ε]ν οὐδ' ἀρχηγέτας] νομισθῆναι
ὅπερ πᾶσιν ἀποδέδοτα[ι οἰκισταῖς. Παν]σανίαν τε τῶν
Εὐρυπωντιδῶν ἐκπεσόν[τα τῆς] οἰκείας ἐν
τῇ φυγῇ συντάξαι λόγ[ον κατὰ τοῦ Λυκούρ]γου, νό- 5
μων ὄντος τῆς ἐκβαλούση[ς αὐτὸν αἰτίου, καὶ] τοὺς
χρησμούς λέγειν τοὺς δοθέντα[ς αὐτῷ περὶ τῶν] πλεί-
στων.

- 6 Περὶ δὲ τῆς φύσεως τῶν τόπων καὶ τούτων καὶ
τῶν Μεσσηνιακῶν ταῦτα μὲν ἀποδεκτέον λέγοντος 10
Εὐριπίδου· τὴν γὰρ Λακωνικὴν φησιν ἔχειν „πολὺν
„μὲν ἄροτον, ἐκπνεῖν δ' οὐ ῥάδιον· κοίλῃ γάρ, ὅρεσι
„περιδρομος, τραχεῖά τε δυσεῖσβολός τε πολεμίοις,“
τὴν δὲ Μεσσηνιακὴν „καλλίκαρπον κατάρρυτόν τε
„μυροῖσι νάμασι, καὶ βουσί καὶ ποιμέναισιν εὐβοτω- 15
„τάτην οὔτ' ἐν πνοαῖσι χεῖματος δυσχείμερον, οὔτ' αὖ
„τεθρίπποις ἡλίου θερμὴν ἄγαν.“ καὶ ὑποβὰς τῶν
πάλων φησὶν ὅτι οἱ Ἡρακλεῖδαι περὶ τῆς χώρας ἐποιή-
σαντο, τὸν μὲν πρότερον γενέσθαι „γαλας Λακαίνης
„κύριον, φαύλου χθονός·“ τὸν δὲ δεύτερον τῆς Μεσ- 20
σήνης „ἀρετὴν ἐχούσης μελῖζον' ἢ λόγῳ φράσαι.“ οἶαν
καὶ ὁ Τυρταῖος φράζει. τὴν δὲ Λακωνικὴν καὶ τὴν
Μεσσηνίαν ὀρίζειν αὐτοῦ φήσαντος „Παμισὸν εἰς θά-
„λασσαν ἐξορμώμενον,“ οὐ συγχωρητέον, ὅς διὰ μέσης
ῥεῖ τῆς Μεσσηνίας, οὐδαμοῦ τῆς νῦν Λακωνικῆς ἀ- 25
πτόμενος. οὐκ εὖ δὲ οὐδ' ὅτι τῆς Μεσσηνίας ὁμοίως
ἐπιθαλαττιαίας οὔσης τῇ Λακωνικῇ φησὶν αὐτὴν πρό-
σω ναυτίλοισιν εἶναι. ἀλλ' οὐδὲ τὴν Ἥλιν εὖ διορίζει
„*πρόσω δὲ βάντι ποταμὸν Ἥλις ἢ Λιὸς γείτων καλεῖ-
C.367,ται.“ εἴτε γὰρ τὴν νῦν Ἠλείαν βούλεται λέγειν, ἥτις 30
[ὁμο]ρεῖ τῇ Μεσσηνίᾳ, ταύτης οὐ προσάπτεται ὁ Πα-
μι[σός], ὥσπερ γε [οὐδὲ] τῆς Λακωνικῆς· εἴρηται γὰρ

ὅτι διὰ μέ[σης ρ]εῖ τῆς Μεσσηνίας· εἴτε τὴν παλαιὰν
τὴν κοίλην [καλουμέν]ην, πολὺ μᾶλλον ἐκπίπτει τῆς
ἀληθείας· διαβάν[τι γὰρ τ]ὸν Παμισὸν ἔστι πολλή τῆς
Μεσσηνίας, εἰθ' ἡ τῶν ὧν ἅπασα καὶ *Μεσ-
5 σαίων, ἣν Τριφυλίαν ἐκάλουν, [εἰθ' ἡ Πι]σᾶτις καὶ ἡ
Ὀλυμπία, εἴτα μετὰ τριακοσί[ους σταδίους] ἡ Ἥλις.

Γραφόντων δὲ τῶν μὲν „Λακεδαίμονα κητώεσ- 7
„σαν“ τῶν δὲ „καιετάεσσαν“, ζητοῦσι τὴν κητώεσσαν
τίνα δέχεσθαι χορή, εἴτε ἀπὸ τῶν κητῶν εἴτε μεγάλην,
10 ὅπερ δοκεῖ πιθανώτερον εἶναι· τὴν δὲ καιετάεσσαν οἱ
μὲν καλαμινθώδη δέχονται, οἱ δὲ ὅτι οἱ ἀπὸ τῶν σει-
σμῶν ῥωγμοὶ *καιετοὶ λέγονται· καὶ ὁ καιέτας τὸ δε-
σμωτήριον ἐντεῦθεν τὸ παρὰ Λακεδαιμονίοις, σπή-
λαιόν τι· ἐνιοὶ δὲ κώους μᾶλλον τὰ τοιαῦτα κοιλώματα
15 λέγεσθαι φασιν, ἄφ' οὗ καὶ τὸ „φηρσίλ ὀρεσκόουσιν.“
εὐσειστός δ' ἡ Λακωνική· καὶ δὴ τοῦ Ταῦρέτου κορυ-
φάς τινες ἀπορραγῆναι τινὲς μνημονεύουσιν· εἰσὶ δὲ
λατομίαι λίθου πολυτελοῦς τοῦ μὲν Ταιναρίου ἐν Ται-
νάρῳ παλαιαί, νεωστὶ δὲ καὶ ἐν τῷ Ταῦρέτῳ μέταλλον
20 ἀνέφξάν τινες εὐμέγεθες, χορηγὸν ἔχοντες τὴν τῶν
Ῥωμαίων πολυτέλειαν.

Ὅτι δὲ Λακεδαίμων ὁμωνύμως λέγεται καὶ ἡ χώρα 8
καὶ ἡ πόλις, δηλοῖ καὶ Ὅμηρος· λέγω δὲ χώραν σὺν τῇ
Μεσσηνίᾳ. περὶ μ[ὲν δὴ τῶν] τόξων ὅταν λέγῃ „καλά,
25 „τὰ οἱ ξείνος Λακεδαίμονι δῶκε τυχήσας, Ἴφιτος Εὐ-
„ρυτίδης“, εἴτ' ἐπενέγκῃ „τῷ δ' ἐν Μεσσήνῃ ξυμβλή-
„την ἀλλήλουιν οἶκῳ ἐν Ὀρτιλόχοιο“, τὴν χώραν λέγει,
ἣς μέρος ἦν καὶ ἡ Μεσσηνία· οὐ διήνεγκεν οὖν αὐτῷ
καὶ οὕτως εἰπεῖν „ξείνος Λακεδαίμονι δῶκε τυχήσας“,
30 καὶ „τῷ δ' ἐν Μεσσήνῃ ξυμβλήτην.“ ὅτι γὰρ αἱ Φηραι

εἰσὶν ὁ τοῦ Ὀρτιλόχου οἶκος δῆλον, ἔς Φηράς δ' ἵκον-
 „το Διοκλῆος ποτὶ δῶμα, νίεός Ὀρτιλόχοιο,“ ὃ τε Τη-
 λέμαχος καὶ ὁ Πεισίστρατος· αἱ δὲ Φηραὶ τῆς Μεσση-
 νίας εἰσὶν. ὅταν δ' ἐκ τῶν Φηρῶν ὁρμηθέντας τοὺς
 περὶ Τηλέμαχον πανημερίους φῆ σείειν ζυγόν, εἴτ' ὁ
 εἶπεν „δύσετό τ' ἡέλιος, οἱ δ' ἴξον κοίλῃν Λακεδαίμονα
 „κητώεσσαν· πρὸς δ' ἄρα δώματ' ἔλων Μενελάου,“
 C.368 τὴν πόλιν δεῖ δέχεσθαι· εἰ δὲ μὴ, ἐκ Λακεδαίμονος εἰς
 Λακεδαίμονα φανείται λέγων τὴν ἄφιξιν· ἄλλως τε οὐ
 πιθανὸν μὴ ἐν Σπάρτῃ τὴν οἴκησιν εἶναι τοῦ Μενε- 10
 λάου, [οὐδὲ] μὴ οὔσης ἐκεῖ τὸν Τηλέμαχον λέγειν „εἴμι
 „γὰρ ἐς Σπάρτην τε καὶ εἰς Πύλον.“ δοκεῖ [δὲ συμ]πί-
 πτειν τούτῳ τὸ τοῖς τῆς χώρας ἐπιθέτοις αὐ εἰ
 μὴ νῆ Δία ποιητικῇ τις τοῦτο συγχωρήσῃ ἐξο[υσία.
 βέλ]τιον γὰρ τὴν Μεσσήνην μετὰ τῆς Λακωνικῆς καὶ 15
 Πύλου] τῆς ὑπὸ τῷ Νέστορι, μηδὲ δὴ καθ' αὐτὴν
 τάτ[τεσθαι ἐν τῷ] καταλόγῳ μηδὲ κοινωνοῦσαν τῆς
 στρα[τείας].

- 6** Μετὰ δὲ Μαλέας ὁ Ἀργολικὸς ἐκδέχεται κόλπος
 καὶ ὁ Ἑρμιονικὸς, ὁ μὲν μέχρι τοῦ Σκυλλαίου πλέοντι 20
 ὥς πρὸς ἑω βλέπων καὶ πρὸς τὰς Κυκλάδας, ὁ δὲ ἑω-
 θινώτερος τούτου μέχρι πρὸς Αἰγίναν καὶ τὴν Ἐπι-
 δαυρίαν. τὰ μὲν δὴ πρῶτα τοῦ Ἀργολικοῦ Λάκωνες
 ἔχουσι, τὰ δὲ λοιπὰ Ἀργεῖοι· ἐν οἷς ἐστὶ τῶν μὲν Λα-
 κῶνων τὸ Δῆλιον ἱερὸν Ἀπόλλωνος ὁμῶννυμον τῷ Βοι- 25
 ωτιακῷ, καὶ Μινῶα φρούριον ὁμῶννυμος καὶ αὕτη τῇ
 Μεγαρικῇ, καὶ ἡ λιμηρὰ Ἐπίδαυρος, ὥς Ἀρτεμίδωρός
 φησιν. Ἀπολλόδωρος δὲ Κυθήρων πλησίον ἱστορεῖ
 ταύτην, εὐλίμενον δὲ οὗσαν βραχέως καὶ ἐπιτετμημέ-
 νως λιμηρὰν εἰρησθαι ὥς ἂν λιμενηράν, μεταβεβλη- 30
 κέναι δὲ τοῦνομα. ἔστι δὲ τραχὺς ὁ παράπλους εὐθύς
 ἀπὸ Μαλεῶν ἀρξάμενος μέχρι πολλοῦ ὁ Λακωνικός,

ἔχει δ' ὅμως ὑφόρμους καὶ λιμένας. ἡ λοιπὴ δ' ἐστὶ παραλία εὐλίμενος, νησιδιά τε πολλὰ πρόκειται αὐτῆς οὐκ ἄξια μνήμης.

Τῶν δ' Ἀργείων αἶ τε Πρασιαὶ καὶ τὸ Τημένιον, ²
 5 ἐν ᾧ τέθραπται Τήμενος, καὶ ἔτι πρότερον τὸ χωρίον, δι' οὗ ρεῖ ποταμὸς ἡ Λέσρη καλουμένη ὁμώνυμος τῇ λίμνῃ, ἐν ᾗ μεμύθευται τὰ περὶ τὴν Ὑδραν. τὸ δὲ Τημένιον ἀπέχει τοῦ Ἀργους ἕξ καὶ εἰκοσι σταδίους ὑπὲρ τῆς θαλάττης, ἀπὸ δὲ τοῦ Ἀργους εἰς τὸ Ἡραῖον τετ-
 10 τάρακοντα, ἐνθεν δὲ εἰς Μυκῆνας δέκα. μετὰ δὲ τὸ Τημένιον ἡ Ναυπλία, τὸ τῶν Ἀργείων ναύσταθμον· τὸ δ' ἐνυμον ἀπὸ τοῦ ταῖς ναυσὶ προσπλεῖσθαι. ἀπὸ τούτου δὲ πεπλάσθαι φασὶ τὸν Ναύπλιον καὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ παρὰ τοῖς νεωτέροις· οὐ γὰρ Ὅμηρον
 15 ἀμνημονῆσαι ἂν τούτων, τοῦ μὲν Παλαμήδους τοσαύτην σοφίαν καὶ σύνεσιν ἐπιδεδειγμένου, δολοφονηθέντος δὲ ἀδίκως, τοῦ δὲ Ναυπλίου τοσοῦτον ἀπεργασαμένου φθόρου ἀνθρώπων περὶ τὸν Καφηρέα. ἡ δὲ γενεαλογία πρὸς τῷ μυθῶδι καὶ τοῖς χρόνοις διημάρ-
 20 τηται· δεδόσθω γὰρ Ποσειδῶνος εἶναι, Ἀμυμώνης δὲ πῶς τὸν κατὰ τὰ Τρωικὰ ἔτι ζῶντα; ἐφεξῆς δὲ τῇ Ναυ- C.369
 πλίᾳ τὰ σπήλαια καὶ οἱ ἐν αὐτοῖς οἰκοδομητοὶ λαβύρινοι, Κυκλώπεια δ' ὀνομάζουσιν.

Εἴτ' ἄλλα χωρία καὶ ἐφεξῆς ὁ Ἑρμιονικὸς κόλπος· ³
 25 καὶ [γὰρ τοῦτον Ὅμ]ήρου τάξαντος ὑπὸ τῇ Ἀργείᾳ καὶ ἡμῖν οὐ [παροπτέος ἐν]εφηνεν ὁ μερισμὸς τῆς περιουδείας οὗτος. ἄρχεται δ' ἀπὸ *Ἀσίνης πολίχνης· εἶθ' Ἑρμιόνη καὶ Τροιζήν· ἐν παράπλῳ δὲ πρόκειται καὶ Καλαυρία νῆσος, κύκλον ἔχουσα τριάκοντα σταδίων,
 30 πορθμῷ δὲ τετρασταδίῳ διεστῶσα τῆς ἡπείρου.

Εἶθ' ὁ Σαρωνικὸς κόλπος· οἱ δὲ πόντον λέγου· ⁴

σιν, οἱ δὲ πόρον, καθ' ὃ καὶ πέλαγος λέγεται Σαρωνικὸν πᾶς ὁ συνάπτων πόρος ἀπὸ τῆς Ἑρμιονικῆς καὶ τῆς περὶ τὸν Ἰσθμὸν θαλάττης τῷ τε Μυρτώφῳ πελάγει καὶ τῷ Κρητικῷ. τοῦ δὲ Σαρωνικοῦ Ἐπίδανρός τέ ἐστι καὶ ἡ προκειμένη νῆσος Αἴγινα· εἶτα Κεγχρεαὶ τὸ 5 τῶν Κορινθίων ἐπὶ τὰ πρὸς ἕω μέρη ναύσταθμον· εἶτα λιμὴν Σχοινοῦς πλεύσαντι τετταράκοντα καὶ πέντε σταδίους· ἀπὸ δὲ Μαλεῶν τοὺς πάντας περὶ χιλίους καὶ ὀκτακοσίους. κατὰ δὲ τὸν Σχοινοῦντα ὁ δόλοκος τὸ στενώτατον τοῦ Ἰσθμοῦ, περὶ ὃν τὸ τοῦ Ἰσθμίου 10 Ποσειδῶνος ἱερὸν· ἀλλὰ [ταῦ]τα μὲν ὑπερκείμεθω· ἔξω γάρ ἐστι τῆς Ἀργείας. ἀναλαβόντες δ' ἐφοδεύσωμεν πάλιν τὰ κατὰ τὴν Ἀργεῖαν.

- 5 Καὶ πρῶτον ποσαχῶς λέγεται παρὰ τῷ ποιητῇ τὸ Ἄργος καὶ καθ' αὐτὸ καὶ μετὰ τοῦ ἐπιθέτου, Ἀχαι- 15 κὸν Ἄργος καλοῦντος ἢ Ἰάσον ἢ ἱππιον ἢ Πελασγικὸν ἢ ἱππόβοτον. καὶ γὰρ ἡ πόλις Ἄργος λέγεται „Ἄργος τε Σπάρτη τε.“ „οἱ δ' Ἄργος τ' εἶχον Τί- „ρυνθά τε.“ καὶ ἡ Πελοπόννησος „ἡμετέρῳ ἐνὶ οἴκῳ „ἐν Ἀργεῖ.“ οὐ γὰρ ἡ πόλις γε ἦν οἶκος αὐτοῦ. καὶ ὅλη 20 ἡ Ἑλλάς· Ἀργεῖους γοῦν καλεῖ πάντας καθάπερ καὶ Δαναοὺς καὶ Ἀχαιοὺς. τὴν δ' οὖν ὁμωνυμίαν τοῖς ἐπιθέτοις διαστέλλεται, τὴν μὲν Θετταλίαν Πελασγικὸν Ἄργος καλῶν „νῦν αὖ τοὺς ὅσοι τὸ Πελασγικὸν „Ἄργος ἔναιον.“ τὴν δὲ Πελοπόννησον [Ἀχαιικὸν] „εἰ 25 „δέ κεν Ἄργος ἰκοίμεθ' Ἀχαιικόν“ „ἢ οὐκ Ἀργεος ἦεν „Ἀχαιικοῦ.“ σημαίνων ἐνταῦθα, ὅτι καὶ Ἀχαιοὶ ἰδίως ὠνομάζοντο οἱ Πελοποννήσιοι κατ' ἄλλην σημασίαν. Ἰάσον τε Ἄργος τὴν Πελοπόννησον λέγει „εἰ πάντες „γ' ἐσίδοιεν ἂν Ἰάσον Ἀργος Ἀχαιοί“ τὴν Πηνελό- 30

πην, ὅτι πλείους ἂν λάβοι μνηστῆρας· οὐ γὰρ τοὺς C. 376
 ἐξ ὅλης τῆς Ἑλλάδος εἰκός, ἀλλὰ τοὺς ἐγγύς. ἱππόβο-
 τον δὲ καὶ ἱππιον κοινῶς εἶρηκε.

- Περὶ δὲ τῆς Ἑλλάδος καὶ Ἑλλήνων καὶ Πανελλή- 6
 5 νων ἀντιλέγεται. Θουκυδίδης μὲν γὰρ τὸν ποιητὴν
 μηδαμοῦ βαρβάρους εἶπεῖν φησι διὰ τὸ μηδὲ Ἑλληνάς
 πω τὸ ἀντίπαλον εἰς ἓν ὄνομα ἀποκεκριθῆναι. καὶ Ἀπολ-
 λόδωρος δὲ μόνους τοὺς ἐν Θετταλίᾳ καλεῖσθαι φησιν
 Ἑλληνας „Μυρμιδόνες δὲ καλεῦντο καὶ Ἑλληνες.“
 10 Ἡσίοδον μέντοι καὶ Ἀρχίλοχον ἤδη εἰδέναι καὶ Ἑλλη-
 νας λεγομένους τοὺς σύμπαντας καὶ Πανέλληνας, τὸν
 μὲν περὶ τῶν Προϊτίδων λέγοντα ὥς Πανέλληνες ἐμνή-
 στευον αὐτάς, τὸν δὲ „ὥς Πανελλήνων οἰζὺς ἐς Θά-
 „σον συνέδραμεν.“ ἄλλοι δ' ἀντιτιθέασιν ὅτι καὶ βαρ-
 15 βάρους εἶρηκεν, εἰπὼν γε βαρβαροφώνους τοὺς Κᾶ-
 ρας, καὶ Ἑλληνας τοὺς πάντας „ἀνδρός, τοῦ κλέος
 „εὐρὺ καθ' Ἑλλάδα καὶ μέσον Ἄργος.“ καὶ πάλιν „εἰ
 „δ' ἐθέλης [τραφθῆναι] ἀν' Ἑλλάδα καὶ μέσον Ἄργος.“
 Ἡ μὲν οὖν πόλις ἢ τῶν Ἀργείων ἐν χωρίοις ἐπι- 7
 20 πέδοις ἴδρυται τὸ πλεόν, ἄκραν δ' ἔχει τὴν καλουμένην
 Δάρισαν, λόφον εὐερκῇ μετρίως ἔχοντα ἱερὸν Διός·
 ρεῖ δ' αὐτῆς πλησίον ὁ Ἴναχος χαραδρώδης ποταμὸς
 τὰς πηγὰς ἔχων ἐκ Αὐρκείου. περὶ δὲ τῶν μυθευομέ-
 νων πηγῶν εἶρηται διότι πλάσματα ποιητῶν ἐστὶ· πλά-
 25 σμα δὲ καὶ τὸ „Ἄργος ἄνυδρον ἐὼν Δαναοὶ θῆσαν Ἄρ-
 „γος ἔνυδρον,“ τῆς τε χώρας κοίλης οὕσης καὶ ποτα-
 μοῖς διαρρεομένης καὶ ἔλη καὶ λίμνας παρεχομένης,
 καὶ τῆς πόλεως εὐπορουμένης ὕδασι φρεάτων πολλῶν
 καὶ ἐπιπολαίων. αἰτιῶνται δὲ τῆς ἀπάτης τὸ „καὶ κεν
 30 „ἐλέγχιστος πολυδίψιον Ἄργος ἰκοίμην.“ τοῦτο δ' ἦτοι

23. post Αὐρκείου· τοῦ κατὰ τὴν Κυνουρίαν ὄρους τῆς Ἀρ-
 καδίας.

ἀντὶ τοῦ πολυπόθητον κεῖται, ἢ χωρὶς τοῦ δ' πολυψιον-
 ὡς „πολύφθορόν τε δῶμα Πελοπιδῶν τόδε“ φησὶ Σο-
 φροκλῆς· τὸ γὰρ ἔψασθαι φθοράν τινα καὶ βλάβην ση-
 μαίνει „νῦν μὲν πειραῖται, τάχα δ' ἔψεται νῆας Ἀχαιῶν“
 ἄλλως τε οὐ τὴν πόλιν λέγει τὸ Ἄργος (οὐ γὰρ ἐκεῖσε δ
 ἐμελλεν ἀφίξεσθαι) ἀλλὰ τὴν Πελοπόννησον, οὐ δῆ-
 που καὶ ταύτην διψηρὰν οὔσαν. καὶ σὺν τῷ δ' δὲ ὑπερ-
 βατῶς δέχονται[τινες κατὰ] συναλοιφήν μετὰ τοῦ συν-
 δέσμου τοῦ δέ, ἢ οὕτως „καὶ κεν ἐλέγχιστος πολὺν δ'
 „ἔψιον Ἄργος ἰκοίμην,“ πολυψιον Ἄργοςδε 10
 ἰκοίμην ἀντὶ τοῦ „εἰς Ἄργος.“

C. 371

8

Εἰς μὲν δὴ Ἰναχὸς ἐστὶν ὁ διαρρέων τὴν Ἀργεῖαν·
 ἄλλος δὲ ποταμὸς Ἑρασίνοιο ἐν τῇ Ἀργεῖᾳ ἐστίν· οὗτος
 δὲ τὰς ἀρχὰς ἐκ Στυμφάλου τῆς Ἀρκαδίας λαμβάνει
 καὶ τῆς ἐκεῖ λίμνης τῆς καλουμένης Στυμφαλίδος, ἐν 15
 ἢ τὰς ὄρνεις μυθολογοῦσι τὰς ὑπὸ τοῦ Ἡρακλέους το-
 ξεύμασι καὶ τυμπάνοις ἐξελαθείσας, [ἄς] καὶ αὐτὰς κα-
 λοῦσι Στυμφαλίδας· δύντα δ' ὑπὸ γῆς φασὶ τὸν ποτα-
 μὸν τοῦτον ἐκπίπτειν εἰς τὴν Ἀργεῖαν καὶ ποιεῖν ἐπίρ-
 ρυτον τὸ πεδίον· ῥεῖ δὲ καὶ ἄλλος ὁμώνυμος ἐκ τῆς 20
 Ἀρκαδίας εἰς τὸν κατὰ Βοῦραν αἰγιαλόν· ἄλλος δ' ἐστὶν
 ὁ Ἑρετρικός, καὶ ὁ ἐν τῇ Ἀττικῇ κατὰ Βραυρωνά. δει-
 κνυται δὲ καὶ Ἀμυμώνη τις κρήνη κατὰ Λέρνην. ἢ δὲ
 Λέρνη λίμνη τῆς Ἀργείας ἐστὶ καὶ τῆς Μυκηναίας, ἐν
 ἢ τὴν Ὑδραν ἱστοροῦσι· διὰ δὲ τοὺς γινομένους κα- 25
 θαρμούς ἐν αὐτῇ παροιμία τις ἐξέπεσε „Λέρνη κακῶν.“
 τὴν μὲν οὖν χώραν συγχωροῦσιν εὐνδρεῖν, αὐτὴν δὲ
 τὴν πόλιν ἐν ἀνύδρῳ χωρίῳ κεῖσθαι, φρεάτων δ' εὐ-
 πορεῖν (ἂ ταῖς Δαναΐσιν ἀνάπτουσιν, ὡς ἐκείνων ἐξευ-

3. post γὰρ: προῖάψαι καὶ ἰάψαι καὶ 4. post Ἀχαιῶν: κατὰ
 χρόα καλὸν ἰάψῃ. Ἄϊδι προῖαψεν. 20. post πεδίον: τὸν δ' Ἑρα-
 σῖνον καλοῦσι καὶ Ἀρσίονον.

ρουσῶν, ἃφ' οὗ καὶ τὸ ἔπος * εἶπεν τοῦτο „Ἄργος ἄνυδρον ἐὼν Δαναοὶ θύσαν Ἄργος ἔκλυδρον“, τῶν δὲ φρεάτων τέτταρα καὶ ἱερὰ ἀποδειχθῆναι καὶ τιμᾶσθαι διαφερόντως, ἐν εὐπορίᾳ ὑδάτων ἀπορίαν εἰσάγοντες.

- 5 Τὴν δὲ ἀκρόπολιν τῶν Ἀργείων οἰκίσαι λέγεται 9
 Δαναός, ὃς τοσοῦτον τοὺς πρὸ αὐτοῦ δυναστεύοντας ἐν τοῖς τόποις ὑπερβαλέσθαι δοκεῖ ὥστε κατ' Εὐριπίδην „Πελασγιάτας ὠνομασμένους τὸ πρὶν Δαναούς, καλεῖσθαι νόμον ἔθνηκ' ἂν Ἑλλάδα.“ ἔστι δὲ καὶ τά-
 10 φος αὐτοῦ κατὰ μέσην τὴν τῶν Ἀργείων ἀγοράν· καλεῖται δὲ πλίνθος. οἶμαι δ' ὅτι καὶ Πελασγιάτας καὶ Δαναούς, ὥσπερ καὶ Ἀργεῖους, ἡ δόξα τῆς πόλεως ταύτης ἀπ' αὐτῆς καὶ τοὺς ἄλλους Ἕλληνας καλεῖσθαι παρεσκεύασεν· οὕτω δὲ καὶ Ἰασίδας καὶ Ἴασον Ἄργος.
 15 καὶ Ἀπίαν καὶ Ἀπιδόνας οἱ νεώτεροί φασι· Ὅμηρος δ' Ἀπιδόνας μὲν οὐ λέγει, ἀπίαν δὲ τὴν πόρρω μᾶλλον. ὅτι δ' Ἄργος τὴν Πελοπόννησον λέγει, προσλαβεῖν ἔστι καὶ τάδε „Ἀργεῖη δ' Ἑλένη“ καὶ „ἔστι πόλις „Ἐφύρη μυκῶ Ἄργεος“ καὶ „μέσον Ἄργος“ καὶ „πολ-
 20 „λῆσιν νήσοισι καὶ Ἄργεϊ παντὶ ἀνάσσειν.“ ἌργοςC.372 δὲ καὶ τὸ πεδῖον λέγεται παρὰ τοῖς νεωτέροις, παρ' Ὁμήρῳ δ' οὐδ' ἅπαξ· μάλιστα δ' οἴονται Μακεδονικὸν καὶ Θετταλικὸν εἶναι.

- Τῶν δ' ἀπογόνων τοῦ Δαναοῦ διαδεξαμένων τὴν 10
 25 ἐν Ἄργει δυναστείαν, ἐπιμιχθέντων δὲ τούτοις τῶν Ἀμυθαιωνιδῶν ὠρμημένων ἐκ τῆς Πισάτιδος καὶ τῆς Τριφυλίας, οὐκ ἂν θαυμάσειε τις εἰ συγγενεῖς ὄντες οὕτω διείλοντο τὴν χώραν εἰς δύο βασιλείας τὸ πρῶτον, ὥστε τὰς ἡγεμονεύουσας ἐν αὐταῖς δύο πόλεις
 30 ἀποδειχθῆναι πλησίον ἀλλήλων ἰδρυμένας ἐν ἐλάττωσιν ἢ πεντήκοντα σταδίοις, τό τε Ἄργος καὶ τὰς Μυκήνας, καὶ τὸ Ἡραῖον εἶναι κοινὸν ἱερὸν τὸ πρὸς ταῖς

Μυκῆναις ἀμφοῖν, ἐν ᾧ τὰ Πολυκλείτου ξόανα τῇ μὲν τέχνῃ κάλλιστα τῶν πάντων πολυτελεία δὲ καὶ μεγέθει τῶν Φειδίου λειπόμενα. κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν τὸ Ἄργος ἐπεκράτει μᾶλλον, εἶθ' αἱ Μυκῆναι μείζονα ἐπίδοσιν λαβοῦσαι διὰ τὴν τῶν Πελοπιδῶν εἰς αὐτὰς μεθίδρου- 5 σιν· περιστάντων γὰρ εἰς τοὺς Ἀτρώως παῖδας ἀπάντων, Ἀγαμέμνων ὢν πρεσβύτερος παραλαβὼν τὴν ἐξουσίαν ἅμα τύχητε καὶ ἀρετῇ πρὸς τοῖς οὔσι πολλὴν προσεκτίσαστο τῆς χώρας, καὶ δὴ καὶ τὴν Ἀργολικὴν τῇ Μυκηναίᾳ προσέθηκε. Μενέλαος μὲν δὴ τὴν Λακω- 10 νικὴν ἔσχε, Μυκῆνας δὲ καὶ τὰ μέχρι Κορίνθου καὶ Σικυῶνος καὶ τῆς Ἰώνων μὲν τότε καὶ Αἰγιάλεων καλουμένης Ἀχαιῶν δὲ ὕστερον Ἀγαμέμνων παρέλαβε. μετὰ δὲ τὰ Τρωικὰ τῆς Ἀγαμέμνονος ἀρχῆς καταλυθείσης ταπεινωθῆναι [συνέβη] Μυκῆνας καὶ μάλιστα 15 μετὰ τὴν τῶν Ἡρακλείδων κάθοδον. κατασχόντες γὰρ οὗτοι τὴν Πελοπόννησον ἐξέβαλον τοὺς πρότερον κρατοῦντας ὥσθ' οἱ τὸ Ἄργος ἔχοντες εἶχον καὶ τὰς Μυκῆνας συντελούσας εἰς ἓν· χρόνοις δ' ὕστερον κατεσκάφησαν ὑπ' Ἀργείων ὥστε νῦν μηδ' ἔχνος εὐρίσκει- 20 σθαι τῆς Μυκηναίων πόλεως. ὅπου δὲ Μυκῆναι τοιαῦτα πεπόνθασιν, οὐ δεῖ θανυμάζειν οὐδ' εἴ τινες τῶν ὑπὸ τῷ Ἄργει καταλεγομένων ἀφανεῖς νῦν εἰσιν. ὁ μὲν δὴ κατάλογος ἔχει οὕτως „οἱ δ' Ἄργος τ' εἶχον Τί- 25 „ρυνθὰ τε τειχιόεσσαν Ἑρμιόνην τ' Ἀσίνην τε, [βα- „θὺν] κατὰ κόλπον ἐχούσας, Τροίξην Ἡϊόνας τε καὶ „ἀμπελόεντ' Ἐπίδαυρον, οἱ τ' ἔχον Αἰγιναν Μάσητά „τε, κοῦροι Ἀχαιῶν.“ τούτων δὲ περὶ μὲν τοῦ Ἀργους εἴρηται, περὶ δὲ τῶν ἄλλων λεκτέον.

- 11 Τῇ μὲν οὖν Τίρυνθι ὀρμητηρίῳ χρήσασθαι δοκεῖ 30
 Προῖτος καὶ τειχίσαι διὰ Κυκλώπων, οὓς ἑπτὰ μὲν εἶ-
 ναι καλεῖσθαι δὲ γαστερόχειρας τρεφομένους ἐκ τῆς

- τέχνης, ἦκειν δὲ μεταπέμπτους ἐκ Αὐκίας· καὶ ἴσως^{0.373}
 τὰ σπήλαια τὰ περὶ τὴν Ναυπλίαν καὶ τὰ ἐν αὐτοῖς
 ἔργα τούτων ἐπώνυμά ἐστιν. ἡ δὲ ἀκρόπολις Αἰκὺμνα
 ἐπώνυμος Αἰκὺμνίου, διέχει δὲ τῆς * Ναυπλίου περὶ
 5 δῶδεκα σταδίους· ἔρημος δ' ἐστὶ κακείνη καὶ ἡ πλη-
 σίον Μιδέα, ἑτέρα οὖσα τῆς Βοιωτικῆς· ἐκείνη γὰρ
 ἐστὶ Μίδεια ὡς πρόνοια, αὕτη δὲ Μιδέα ὡς Τεγέα·
 ταύτη δ' ὁμορος Πρόσυμνα αὕτη ἱερὸν ἔχουσα
 "Ἡρας· ἠρήμωσαν δὲ τὰς πλείστας οἱ Ἀργεῖοι ἀπειθού-
 10 σας. οἱ δ' οἰκητορες οἱ μὲν ἐκ [τῆς] Τίρυνθος ἀπῆλθον
 εἰς Ἐπίδαυρον, οἱ δὲ ἐκ [τῆς] εἰς τοὺς Ἀλιεῖς κα-
 λουμένους, οἱ δ' ἐκ τῆς Ἀ[σίνης] (ἐστὶ δ') αὕτη κώμη
 τῆς Ἀργείας πλησίον Ναυπλίας) ὑπὸ Λακεδαιμονίων
 εἰς τὴν Μεσσηνίαν μετῴκισθ[ησαν, ὅπου] καὶ ἡ ὁμώ-
 15 νυμος τῇ Ἀργολικῇ Ἀσίῃ πολίχ[νη]. οἱ γὰρ Λακεδαι-
 μόνιοι, φησὶν ὁ Θεόπομπος, πολλὴν κατακτησάμενοι
 τῆς ἀλλοτρίας εἰς ταύτην κατῴκισον οὓς ἂν ὑποδέξαιν-
 το τῶν φυγόντων ἐπ' αὐτο[ύς· καὶ οἱ] ἐκ τῆς Ναυπλίας
 ἐκεῖσε ἀνεχώρησαν.
- 20 Ἐρμιόνη δ' ἐστὶ τῶν οὐκ ἀσήμεων πόλεων, ἥς τὴν 12
 παραλίαν ἔχουσιν Ἀλιεῖς λεγόμενοι θαλαττουργοί τι-
 νες ἄνδρες. παρ' Ἐρμιονεῦσι δὲ τεθρύληται τὴν εἰς
 "Αἶδου κατάβασιν σύντομον εἶναι· διόπερ οὐκ ἐντιθέ-
 ασιν ἐνταῦθα τοῖς νεκροῖς ναῦλον.
- 25 Δρυόπων δ' οἰκητήριόν φασι * καὶ τὴν Ἀσίην, 13
 εἰτ' ἐκ τῶν περὶ Σπερχειὸν τόπων ὄντας αὐτοὺς Δρύ-
 οπος τοῦ Ἀρκάδος κατοικίσαντος ἐνταῦθα, ὡς Ἀρι-
 στοτέλης φησὶν, εἰδ' Ἡρακλέους ἐκ τῆς περὶ τὸν Παρ-
 νασσὸν Δωρίδος ἐξελάσαντος αὐτούς. τὸ δὲ Σκύλ-
 30 λαιον τὸ ἐν Ἐρμιόνῃ ὠνομάσθαι φασὶν ἀπὸ Σκύλλης
 τῆς Νίσου θυγατρὸς, ἣν ἐξ ἔρωτος προδοῦσαν Μίνω
 τὴν Νίσαιαν καταποντωθῆναί φασιν ὑπ' αὐτοῦ, δεῦρο

δ' ἐκκυμανθεῖσαν ταφῆς τυχεῖν. Ἡιόνες δὲ κώμη τις ἦν, ἣν ἐρημώσαντες Μυκηναῖοι ναύσταθμον ἐποίησαν, ἀφαν[ισθεῖσα δ' ὕστερον] οὐδὲ ναύσταθμόν ἐστιν.

14 Τροιζήν δὲ ἱερά ἐστι Ποσειδῶνος, ἀφ' οὗ καὶ Ποσειδωνία ποτὲ ἐλέγετο· ὑπέρεκειται δὲ τῆς θαλάττης εἰς 5 πεντεκαίδεκα σταδίους, οὐδ' αὖτη ἄσσημος πόλις. πρόκειται δὲ τοῦ λιμένος αὐτῆς Πάγωνος τοῦνομα Καλαυρία νησιδίον ὅσον τριάκοντα σταδίων ἔχον τὸν κύκλον· ἐνταῦθα ἦν ἄστυλον Ποσειδῶνος ἱερόν, καὶ φασι τὸν θεὸν τοῦτον ἀλλάξασθαι πρὸς μὲν Αἰγυπτὸν τὴν Κα- 10

374λαυρίαν ἀντιδόντα Δῆλον, πρὸς Ἀπόλλωνα δὲ Ταίναρον ἀντιδόντα Πυθώ. Ἐφορος δὲ καὶ τὸν χρησμὸν λέγει „ἴσόν τοι Δῆλόν τε Καλαυρείαν τε νέμεσθαι, Πυ- „θῶ τ' ἡγαθέην καὶ Ταίναρον ἡνεμόεντα.“ ἦν δὲ καὶ Ἀμφικτυονία τις περὶ τὸ ἱερόν τοῦτο ἐπὶ πόλεων αἰ 15 μετεῖχον τῆς θυσίας· ἦσαν δὲ Ἑρμιῶν Ἐπίδανυρος Αἰγίνα Ἀθῆναι Πρασιεῖς Ναυπλιεῖς Ὀρχομενὸς ὁ Μινύειος· ὑπὲρ μὲν οὖν Ναυπλιέων Ἀργεῖοι συνετέλουν, ὑπὲρ Πρασιέων δὲ Λακεδαιμόνιοι. οὕτω δ' ἐπεκράτησεν ἡ τιμὴ τοῦ θεοῦ τούτου παρὰ τοῖς Ἕλλησιν ὥστε 20 καὶ Μακεδόνες δυναστεύοντες ἤδη μέχρι δεῦρο ἐφύλαττόν πως τὴν ἀσυλίαν, καὶ τοὺς ἐκέτας ἀποσπᾶν ἡδοῦντο τοὺς εἰς Καλαυρίαν καταφυγόντας· ὅπου γε οὐδὲ Δημοσθένης ἐθάρρησεν Ἀρχίας βιάσασθαι στρατιώτας ἔχων, ὃ προσετέτακτο ὑπὸ Ἀντιπάτρου ζῶντα 25 ἀγαγεῖν ἀκείνον καὶ τῶν ἄλλων ρητόρων ὃν ἂν εὖρη τῶν ἐν ταῖς αἰτίαις ὄντων ταῖς παραπλησίοις, ἀλλὰ πεῖθειν ἐπειρᾶτο· οὐ μὴν ἐπεισέγε, ἀλλ' ἐφθη φαρμάκῳ παραλύσας ἑαυτὸν τοῦ ζῆν. Τροιζήν δὲ καὶ Πιτθεὺς οἱ Πέλοπος ὀρμηθέντες ἐκ τῆς Πισάτιδος ὁ μὲν 30 τὴν πόλιν ὁμώνυμον ἑαυτοῦ κατέλιπεν, ὁ δὲ Πιτθεὺς ἐβασίλευσεν ἐκεῖνον διαδεξάμενος. Ἀνθης δ' ὁ προ-

κατέχων πλεύσας Ἀλικαρνασὸν ἔκτισεν· ἐροῦμεν δ' ἐν τοῖς Καρικοῖς οὐ καὶ τοῖς Τρωικοῖς.

Ἡ Ἐπίδανρος δ' ἐκαλεῖτο Ἐπίτανρος· φησὶ δὲ 15
Ἀριστοτέλης κατασχεῖν αὐτὴν Κᾶρας, ὥσπερ καὶ Ἐρ-
5 μίονα, τῶν δὲ Ἡρακλειδῶν κατελθόντων Ἴωνας αὐ-
τοῖς συνοικῆσαι τοὺς ἐκ τῆς Ἀττικῆς τετραπόλεως συν-
επομένους εἰς Ἄργος. καὶ αὕτη δ' οὐκ ἄσημος ἡ πόλις
καὶ μάλιστα διὰ τὴν ἐπιφάνειαν τοῦ Ἀσκληπιοῦ θερα-
πεύειν νόσους παντοδαπὰς πεπιστευμένου, καὶ τὸ λε-
10 ρὸν πλήρες ἔχοντος αἰὲ τῶν τε καμνόντων καὶ τῶν
ἀνακειμένων πινάκων, ἐν οἷς ἀναγεγραμμένοι τυγχά-
νουσιν αἱ θεραπεῖαι, καθάπερ ἐν Κῶ τε καὶ Τρίκκῃ.
κεῖται δ' ἡ πόλις ἐν μυχῶ τοῦ Σαρωνικοῦ κόλπου, τὸν
περίπλουν ἔχουσα σταδίων πεντεκαίδεκα, βλέπουσα
15 πρὸς ἀνατολὰς θερρινάς· περικλείεται δ' ὄρεσιν ὑψη-
λοῖς μέχρι πρὸς τὴν θάλατταν, ὥστ' ἐρυμνὴ κατεσκεύ-
ασται φυσικῶς πανταχόθεν. μετὰξὺ δὲ Τροιζήνος καὶ
Ἐπιδαύρου χωρίον ἦν ἐρυμνὸν Μέθανα καὶ χερρόνη-
σος ὁμώνυμος τούτῳ· παρὰ Θουκυδίδῃ δὲ ἐν τισιν
20 ἀντιγράφοις Μεθώνῃ φέρεται ὁμωνύμως τῇ Μακεδο-
νικῇ, ἐν ἣ Φίλιππος ἐξεκόπη τὸν ὀφθαλμὸν πολιορ-
κῶν· διόπερ οἶεται τινὰς ἐξαπατηθέντας ὁ Σκῆψιος 0.375
Δημήτριος τὴν ἐν τῇ Τροιζηνίᾳ Μεθώνην ὑπονοεῖν,
καθ' ἧς ἀράσασθαι λέγεται τοὺς ὑπ' Ἀγαμέμνονος
25 πεμφθέντας ναυτολόγους μηδέποτε παύσασθαι [τοῦ]
τειχοδομεῖν, οὐ τούτων ἀλλὰ τῶν Μακεδόνων ἀνα-
νευσάντων, ὡς φησι Θεόπομπος· τούτους δ' οὐκ εἰ-
κὸς ἐγγυὲς ὄντας ἀπειθῆσαι.

Αἴγινα δ' ἔστι μὲν καὶ τόπος τις τῆς Ἐπιδανρίας, 16
30 ἔστι δὲ καὶ νῆσος πρὸ τῆς ἡπείρου ταύτης, ἣν ἐν τοῖς
ἀρχαίοις παρατεθεῖσιν ἔπεσι βούλεται φράζειν ὁ ποιη-
τής· διὸ καὶ γράφουσί τινες „νῆσόν τ' Αἴγινα“ ἀντὶ

τοῦ „οἷ τ' ἔχον Αἰγιναν,“ διαστελλόμενοι τὴν ὁμωνυ-
 μίαν. ὅτι μὲν οὖν τῶν σφόδρα γνωρίμων ἐστὶν ἡ νῆ-
 σος, τί δεῖ λέγειν; ἐντεῦθεν γὰρ Αἰακός τε λέγεται καὶ
 οἱ ἅπ' αὐτοῦ. αὕτη δ' ἐστὶν ἡ καὶ θαλαττοκρατήσασά
 ποτε καὶ περὶ πρωτείων ἀμφισβητήσασα πρὸς Ἀθη- 5
 ναίους ἐν τῇ περὶ Σαλαμῖνα ναυμαχίᾳ κατὰ τὰ Περ-
 σικά. λέγεται δὲ σταδίων ἑκατὸν ὀγδοήκοντα ὁ κύκλος
 τῆς νήσου, πόλιν δ' ὁμώνυμον ἔχει τετραμμένην πρὸς
 λίβα· περιέχουσι δ' αὐτὴν ἡ τε Ἀττικὴ καὶ ἡ Μεγαρὶς
 καὶ τῆς Πελοποννήσου τὰ μέχρι Ἐπιδαύρου, σχεδόν τι 10
 ἑκατὸν σταδίους ἐκάστη διέχουσα· τὸ δὲ ἑωθινὸν μέ-
 ρος καὶ τὸ νύτιον πελάγει κλύζεται τῷ τε Μυρτώῳ καὶ
 τῷ Κρητικῷ· νησίδια δὲ περὶκεῖται πολλὰ μὲν πρὸς
 τῇ ἡπείρῳ, Βέλινα δὲ πρὸς τὸ πέλαγος ἀνατείνουσα.
 ἡ δὲ χώρα αὐτῆς κατὰ βάρθους μὲν γεώδης ἐστί, πε- 15
 τρώδης δ' ἐπιπολῆς καὶ μάλιστα ἡ πεδιάς· διόπερ ψιλὴ
 πᾶσα ἐστί, κριθοφόρος δὲ ἱκανῶς. Μυρμιδόνας δὲ
 κληθῆναι φασιν οὐχ ὥς ὁ μῦθος τοὺς Αἰγινῆτας, ὅτι
 λοιμοῦ μεγάλου συμπεσόντος οἱ μύρμηκες ἄνθρωποι
 γένοιντο κατ' εὐχὴν Αἰακοῦ, ἀλλ' ὅτι μυρμήκων τρό- 20
 πον ὀρύττοντες τὴν γῆν ἐπιφέροιεν ἐπὶ τὰς πέτρας
 ὥστ' ἔχειν γεωργεῖν, ἐν δὲ τοῖς ὀρύγμασιν οἰκεῖν φει-
 δόμενοι πλύνθων. ὠνομάζετο δ' Οἰνώνη πάλαι. ἐπώ-
 κησαν δ' αὐτὴν Ἀργεῖοι καὶ Κρητὲς καὶ Ἐπιδαῦριοι
 καὶ Δωριεῖς, ὕστερον δὲ κατεκληροῦχησαν τὴν νήσον 25
 Ἀθηναῖοι· ἀφελόμενοι δὲ Λακεδαιμόνιοι τοὺς Ἀθη-
 C.376 ναίους τὴν νήσον ἀπέδοσαν τοῖς ἀρχαίοις οἰκήτορ-
 σιν. ἀποίκους δ' ἔστειλαν Αἰγινῆται εἰς τε Κυθω-

23. Γ.
 πρὸς Ἐλε-
 θεράϊς,
 ἥς ἡ παροιμία „Οἰνώνη τὴν χαράδραν.“

νίαν τὴν ἐν Κρήτῃ καὶ εἰς Ὀμβρικοῦς. Ἐφορος δ' ἐν Αἰγίνῃ ἄργυρον πρῶτον κοπήναι φησιν ὑπὸ Φεῖδωνος· ἐμπορίον γὰρ γενέσθαι, διὰ τὴν λυπρότητα τῆς χώρας τῶν ἀνθρώπων θαλαττουργούντων ἐμπορικῶς, 5 ἀφ' οὗ τὸν ῥῶπον Αἰγινάϊαν ἐμπολὴν λέγεσθαι.

Ὁ δὲ ποιητὴς ἔνια μὲν χωρία λέγει συνεχῶς ὥσπερ 17 καὶ κεῖται „οἱ δ' Ἑλίην ἐνέμοντο καὶ Αὐλίδα“ „οἱ δ' „Ἄργος τ' εἶχον Τίρυνθά τε“ „Ἐρμιόνην τ' Ἀσίνην τε“ „Τροίξην Ἡίονας τε.“ ἄλλοτε δ' οὐχ ὥς ἐστι τῇ τάξει 10 „Σχοῖνόν τε Σκῶλόν τε“ „Θέσπειαν Γραϊάν τε.“ τὰ τ' ἐν ἡπείρῳ ταῖς νήσοις συμφράζει „οἱ δ' Ἰθάκην εἶχον, „καὶ Κροκύλει“ ἐνέμοντο.“ τὰ γὰρ Κροκύλεια ἐν τοῖς Ἀκαρνασίν. οὕτω δὲ καὶ νῦν τῇ Αἰγίνῃ τὸν Μάσητα συνῆψεν ὄντα τῆς Ἀργολικῆς ἡπείρου. Θυρέας δὲ Ὀμη- 15 ρος μὲν οὐκ ὠνόμασεν, οἱ δ' ἄλλοι Θρυλοῦσι· περὶ ὧν Ἀργείοις καὶ Λακεδαιμονίοις συνέστη ἀγῶν τριακοσίοις πρὸς τριακοσίους· ἐνίκων δὲ Λακεδαιμόνιοι στρατηγοῦντος Ὀθρυάδα· εἶναι δὲ φησι τὸ χωρίον τοῦτο Θουκυδίδης ἐν τῇ Κυνουρίᾳ κατὰ τὴν μεθορίαν τῆς 20 Ἀργείας καὶ τῆς Λακωνικῆς. εἰσὶ δὲ καὶ Τρῳαίι τύπος γνῶριμος τῆς Ἀργολικῆς καὶ Κεγχρεαί, αἱ κεῖνται ἐπὶ τῇ ὁδῷ τῇ ἐκ Τεγέας εἰς Ἄργος διὰ τοῦ Παρθενίου ὄρους. Ὀμηρος δ' αὐτὰς οὐκ οἶδεν.

Τῶν [δὴ] κατὰ Πελοπόννησον πόλεων ἐνδοξότα- 18 25 ται γεγόνασι καὶ μέχρι νῦν εἰσιν „Ἄργος τε Σπάρτη „τε,“ διὰ δὲ τὸ πολυθρόνητον ἥμιστα δεῖ μακρολογεῖν περὶ αὐτῶν· τὰ γὰρ ὑπὸ πάντων εἰρημμένα λέγειν δύ- ξομεν. τὸ παλαιὸν μὲν οὖν ἠὺδοκίμει τὸ Ἄργος μᾶλ-

23. post ὄρους: καὶ τοῦ Κροκώλου. ib. post οἶδεν: οὐδὲ τὸ Λύρκειον, οὐδ' Ὀρνεάς· κῶμαι δ' εἰσὶ τῆς Ἀργείας, ἡ μὲν ὁμό- νυμος τῷ ὄρει τῷ [Λυρκείῳ], αἱ δὲ ταῖς Ὀρνεαῖς ταῖς μετὰ τὸν Κο- ρίνθον καὶ Σικυνῶνος ἰδρυμέναις.

λον, ὕστερον δὲ καὶ μέχρι παντὸς ὑπερεβάλλοντο Λα-
κεδαιμόνιοι καὶ διετέλεσαν τὴν αὐτονομίαν φυλάττον-
τες, πλὴν εἴ τί που μικρὸν προσπταίειν αὐτοὺς συνέ-
βαινεν. Ἀργεῖοι δὲ Πύρρον μὲν οὐκ ἐδέξαντο (ἀλλὰ
καὶ πρὸ τοῦ τείχους ἔπεσε γραδίου τινός, ὥς ἔοικε, 5
κεραμίδα ἀφέντος ἀνῶθεν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν) ὑπ' ἄλ-
C.377λοις δ' ἐγένοντο βασιλεῦσι, μετασχόντες δὲ τοῦ τῶν
Ἀχαιῶν συστήματος σὺν ἐκείνοις εἰς τὴν τῶν Ῥωμαίων
ἐξουσίαν ἦλθον, καὶ νῦν συνέστηκεν ἡ πόλις δευτε-
ρεῦσα τῇ τάξει μετὰ τὴν Σπάρτην. 10

19 Ἐξῆς δὲ λέγωμεν περὶ τῶν ὑπὸ Μυκῆναις καὶ τῷ
Ἀγαμέμνονι τεταγμένων τόπων ἐν τῷ καταλόγῳ τῶν
νεῶν· ἔχει δ' οὕτω τὰ ἔπη „οἱ δὲ Μυκῆνας εἶχον, ἐν-
„κτίμενον ποταμόν, ἀφνειὸν τε Κόρινθον ἐνκτιμέ-
„νας τε Κλεωναίς, Ὀρνειάς τ' ἐνέμοντο Ἀραιθυρέην 15
„[τ' ἐρατεινὴν] καὶ Σικυῶν, ὅθ' [ἄρ'] Ἀδρηστος πρῶτ'
„ἐμβασίλευεν, οἱ δ' Ὑπερησίην τε καὶ Αἰπεινὴν Γο-
„νόεσσαν Πελλήνην τ' εἶχον, ἡδ' Αἰγίον ἀμφενέ-
„μοντο, Αἰγιαλὸν τ' ἀνὰ πάντα καὶ ἄμφ' Ἑλίκην εὐ-
„ρεῖαν· αἱ μὲν οὖν Μυκῆναι νῦν οὐκέτ' εἰσὶν, ἔκτισε 20
δ' αὐτὰς Περσεύς, διεδέξατο δὲ Σθένελος, εἴτ' Εὐρυ-
σθεύς· οἱ δ' αὐτοὶ καὶ τοῦ Ἄργους ἦρξαν. Εὐρυσθεύς
μὲν οὖν στρατεύσας εἰς Μαραθῶνα ἐπὶ τοὺς Ἡρακλέ-
ους παῖδας καὶ Ἰόλαον βοηθησάντων Ἀθηναίων ἱστο-
ρεῖται πεσεῖν ἐν τῇ μάχῃ, καὶ τὸ μὲν ἄλλο σῶμα Γαρ- 25
γηττοῖ ταφῆναι, τὴν δὲ κεφαλὴν χωρὶς ἐν Τρικορύνθῳ,
ἀποκόψαντος αὐτὴν Ἰολάου περὶ τὴν κρήνην τὴν Μα-
καρίαν ὑπὸ ἀμαξιτόν· καὶ ὁ τόπος καλεῖται Εὐρυσθεῶς
κεφαλὴ. αἱ δὲ Μυκῆναι μετέπεσον εἰς τοὺς Πελοπίδας
ὁρμηθέντας ἐκ τῆς Πισάτιδος, εἴτ' εἰς τοὺς Ἡρακλεί- 30
δας καὶ τὸ Ἄργος ἔχοντας. μετὰ δὲ τὴν ἐν Σαλαμῖνι
ναυμαχίαν Ἀργεῖοι μετὰ Κλεωναίων καὶ Τεγεατῶν

ἐπελθόντες ἄρδην τὰς Μυκῆνας ἀνεῖλον καὶ τὴν χώραν διενείμαντο. διὰ δὲ τὴν ἐγγύτητα τὰς δύο πόλεις ὥς μίαν οἱ τραγικοὶ συνωνύμως προσαγορεύουσιν, Εὐρύπιδης δὲ καὶ ἐν τῷ αὐτῷ δράματι τοτὲ μὲν Μυκῆνας 5 καλῶν τοτὲ δ' Ἄργος τὴν αὐτὴν πόλιν, καθάπερ ἐν Ἰφιγενεΐᾳ καὶ Ὀρέστη. Κλεωναὶ δ' εἰσὶ πόλισμα ἐπὶ τῇ ὁδῷ κείμενον τῇ ἑξ' Ἀργους εἰς Κόρινθον ἐπὶ λόφον περιοικουμένου πανταχόθεν καὶ τετειχισμένου καλῶς, ὥστ' οἰκείως εἰρησθαί μοι δοκεῖ τὸ ἐνκτιμέναις Κλεω- 10 νάς. ἐνταῦθα δὲ καὶ ἡ Νεμέα μεταξὺ Κλεωνῶν καὶ Φλιοῦντος καὶ τὸ ἄλσος, ἐν ᾧ καὶ τὰ Νέμεα συντελεῖν ἔθος τοῖς Ἀργείοις, καὶ τὰ περὶ τὸν Νεμεαῖον λέοντα μυθεύόμενα, καὶ ἡ Βέμβινα κώμη· διέχουσι δ' αἱ Κλεωναὶ τοῦ μὲν Ἀργους σταδίους ἑκατὸν εἴκοσι, Κορίν- 15 θου δὲ ὀγδοήκοντα. καὶ ἡμεῖς ἀπὸ τοῦ Ἀκροκορίνθου κατωπτεύσαμεν τὸ κτίσμα.

Ὁ δὲ Κόρινθος ἀφνειὸς μὲν λέγεται διὰ τὸ ἐμπό-^{0.378}
ριον, ἐπὶ τῷ Ἰσθμῷ κείμενος καὶ δυεῖν λιμένων [ὧν] ²⁰
κύριος, ὧν ὁ μὲν τῆς Ἀσίας ὁ δὲ τῆς Ἰταλίας ἐγγύς
20 ἔστι καὶ ῥαδίας ποιεῖ τὰς ἐκατέρωθεν ἀμοιβὰς
τῶν φορτίων πρὸς ἀλλήλους τοῖς τοσοῦτον ἀφροστώσιν.
ἦν δ' ὥσπερ ὁ πορθμὸς οὐκ εὐπλοὺς ὁ κατὰ τὴν Σικελίαν τὸ παλαιόν, οὕτω καὶ τὰ πελάγη καὶ μάλιστα τὸ ὑπὲρ Μαλεῶν διὰ τὰς ἀντιπνοίας· ἀφ' οὗ καὶ παροι-
25 μιάζονται „Μαλέας δὲ κάμψας ἐπιλάθου τῶν οἰκαδε.“
ἀγαπητὸν οὖν ἐκατέροις ἦν τοῖς τε ἐκ τῆς Ἰταλίας καὶ ἐκ τῆς Ἀσίας ἐμπόροις, ἀφεῖσι τὸν περὶ Μαλέας πλοῦν, κατάργεσθαι τὸν φόρτον αὐτόθι· καὶ περὶ δὲ τῶν ἐκκο-
μιζομένων ἐκ τῆς Πελοποννήσου καὶ τῶν εἰσαγομένων
30 ἔπιπτε τὰ τέλη τοῖς τὰ κλειῖθρα ἔχουσι. διέμενε δὲ

τοῦτο καὶ εἰς ὕστερον μέχρι παντός· τοῖς δ' ὕστερον καὶ πλείω προσεγίνετο πλεονεκτήματα· καὶ γὰρ ὁ Ἰσθμικὸς ἀγὼν ἐκεῖ συντελούμενος ὄχλους ἐπήγετο, καὶ οἱ Βακχιάδαι τυραννήσαντες, πλούσιοι καὶ πολλοὶ καὶ γένος λαμπροί, διακόσια ἔτη σχεδὸν τι κατέσχον⁵ τὴν ἀρχὴν καὶ τὸ ἐμπόριον ἀδεῶς ἐκαρπώσαντο· τούτους δὲ Κύψελος καταλύσας αὐτὸς ἐτυράννησε, καὶ μέχρι τριγονίας ὁ οἶκος αὐτοῦ συνέμεινε· τοῦ δὲ περὶ τὸν οἶκον τοῦτον πλούτου μαρτύριον τὸ Ὀλυμπιάσιν ἀνάθημα Κυψέλου, σφυρήλατος χρυσοῦς ἀνδριάς¹⁰ εὐμεγέθης [Διός]. Δημάρατος τε, εἰς τῶν ἐν Κορίνθῳ δυναστευσάντων, φεύγων τὰς ἐκεῖ στάσεις τοσοῦτον ἠνέγκατο πλοῦτον οἰκοθεῖν εἰς τὴν Τυρρηνίαν ὥστε αὐτὸς μὲν ἤρξε τῆς δεξαμένης αὐτὸν πόλεως, ὁ δ' υἱὸς αὐτοῦ καὶ Ῥωμαίων κατέστη βασιλεύς. τό τε τῆς Ἀφρο-¹⁵δίτης ἱερὸν οὕτω πλούσιον ὑπῆρξεν ὥστε πλείους ἢ χιλίας ἱεροδούλους ἐκέκτητο ἐταίρας, αἷς ἀνεδίθεσαν τῇ θεῇ καὶ ἄνδρες καὶ γυναῖκες. καὶ διὰ ταύτας οὖν πολυωχλεῖτο ἡ πόλις καὶ ἐπλουτίζετο· οἱ γὰρ ναύκληροι ῥαδίως ἐξανηλίσκοντο, καὶ διὰ τοῦτο ἡ παροιμία φησὶν²⁰ „οὐ παντὸς ἀνδρὸς ἐς Κόρινθόν ἐσθ' ὁ πλοῦς.“ καὶ δὴ καὶ μνημονεύεται τις ἐταῖρα πρὸς τὴν ὄνειδίζουσαν, ὅτι οὐ φιλεργὸς εἴη οὐδ' ἐρίων ἄπτοιτο, εἰπεῖν „ἐγὼ μῆντοι ἢ τοιαύτη τρεῖς ἥδη καθείλον ἱστοὺς ἐν βραχεῇ χρόνῳ τούτῳ.“

25

21 Τὴν δὲ τοποθεσίαν τῆς πόλεως, ἐξ ὧν Ἰερώνυμὸς C.379τε εἴρηκε καὶ Εὐδόξος καὶ ἄλλοι καὶ αὐτοὶ δὲ εἰδομεν νεωστὶ ἀναληφθείσης ὑπὸ τῶν Ῥωμαίων, τοιάνδε εἶναι συμβαίνει. ὄρος ὑψηλὸν ὅσον τριῶν ἡμισυ σταδίων ἔχον τὴν κάθετον, τὴν δ' ἀνάβασιν καὶ τριάκοντα³⁰ σταδίων, εἰς ὁξείαν τελευτᾷ κορυφὴν· καλεῖται δὲ Ἀκροκόρινθος, οὗ τὸ μὲν πρὸς ἄρκτον μέρος ἐστὶ τὸ

- μάλιστα ὄρθιον, ὅφ' ὃ καίται ἡ πόλις ἐπὶ τραπεζώδους
 ἐπιπέδου χωρίου πρὸς αὐτῇ τῇ ῥίξῃ τοῦ Ἀκροκοριν-
 θου. αὐτῆς μὲν οὖν τῆς πόλεως ὁ κύκλος καὶ τετταρά-
 κοντα σταδίων ὑπῆρχεν· ἐτετείχιστο δ' ὅσον τῆς πό-
 5 λεως γυμνὸν ἦν τοῦ ὄρους· συμπεριερίληπτο δὲ τῷ
 περιβόλῳ τούτῳ καὶ τὸ ὄρος αὐτὸ ὃ Ἀκροκόρινθος ἢ
 δυνάτον ἦν τειχισμὸν δεξασθαι, καὶ ἡμῖν ἀναβαίνου-
 σιν ἦν δῆλα τὰ ἐρείπια τῆς σχοινίας· ὥσθ' ἡ πᾶσα πε-
 ρίμετρος ἐγένετο περὶ πέντε καὶ ὀγδοήκοντα σταδίων.
 10 ἀπὸ δὲ τῶν ἄλλων μερῶν ἦττον ὄρθιόν ἐστι τὸ ὄρος,
 ἀνατέταται μέντοι ἐνθ' ἐνδεῖς ἱκανῶς καὶ περιόπτόν ἐστιν.
 ἡ μὲν οὖν κορυφὴ ναῖδιον ἔχει Ἀφροδίτης, ὑπὸ δὲ τῇ
 κορυφῇ τὴν Πειρήνην εἶναι συμβαίνει κρήνην, ἐκρυ-
 σιν μὲν οὐκ ἔχουσιν μεστήν δ' αἰετὶ διαφυγούσας καὶ ποτί-
 15 μιν ὕδατος. φασὶ δὲ καὶ ἐνθ' ἐνδεῖς καὶ ἐξ ἄλλων ὑπονό-
 μων τινῶν φλεβίων συνθλίβεσθαι τὴν πρὸς τῇ ῥίξῃ
 τοῦ ὄρους κρήνην ἐκρέουσιν εἰς τὴν πόλιν ὥσθ' ἱκα-
 νῶς ἀπ' αὐτῆς ὑδρεύεσθαι. ἐστι δὲ καὶ φρεάτων εὐ-
 πορία κατὰ τὴν πόλιν, λέγουσι δὲ καὶ κατὰ τὸν Ἀκρο-
 20 κόρινθον· οὐ μὲν ἡμεῖς γε εἶδομεν. τοῦ δ' οὖν Εὐρι-
 πίδου φήσαντος οὕτως „ἦκω περίκλυστον προλιποῦσ'
 „Ἀκροκόρινθον, ἱερὸν ὄχθον, πόλιν Ἀφροδίτας,“ τὸ
 περίκλυστον ἦτοι κατὰ βῆθους δεκτέον, ἐπεὶ καὶ * φρέ-
 ατα καὶ ὑπόνομοι λιβάδες διήκουσι δι' αὐτοῦ, ἢ τὸ πα-
 25 λαιὸν ὑποληπτέον τὴν Πειρήνην ἐπιπολάζειν καὶ κα-
 τάρρυστον ποιεῖν τὸ ὄρος. ἐνταῦθα δὲ φασὶ πίνοντα
 τὸν Πήγασον ἀλῶναι ὑπὸ Βελλεροφόντου, πτηνὸν
 ἵππον ἐκ τοῦ τραχήλου τοῦ Μεδούσης ἀναπαλέντα
 κατὰ τὴν γοργοτομίαν· τὸν δ' αὐτόν φασὶ καὶ τὴν
 30 Ἴππου κρήνην ἀναβαλεῖν ἐν τῷ Ἑλικῶνι πλήξαντα
 τῷ ὄνυχι τὴν ὑποῦσαν πέτραν. ὑπὸ δὲ τῇ Πειρήνῃ τὸ
 Σισύφειόν ἐστιν, ἱεροῦ τινος ἢ βασιλείου λευκῶν λί-

- θων πεποιημένου διασῶζον ἐρείπια οὐκ ὀλίγα. ἀπὸ δὲ τῆς κορυφῆς πρὸς ἄρκτον μὲν ἀφορᾶται ὅ τε Παρνασσὸς καὶ ὁ Ἑλικῶν, ὄρη ὑψηλὰ καὶ νιφόβολα, καὶ ὁ Κρισαῖος κόλπος ὑποπεπτωκὸς ἀμφοτέροις, περιεχόμενος ὑπὸ τῆς Φωκίδος καὶ τῆς Βοιωτίας καὶ τῆς Μεγαρίδος 5 καὶ τῆς ἀντιπόρθμου τῇ Φωκίδι Κορινθίας καὶ Σικυνωνίας· πρὸς ἐσπέραν δὲ ὑπέρκειται δὲ τούτων
- C.380 ἀπάντων τὰ καλούμενα Ὀνεῖα ὄρη διατείνοντα μέχρι Βοιωτίας καὶ Κιθαιρῶνος ἀπὸ τῶν Σκειρωνίδων πετρῶν, ἀπὸ τῆς παρὰ ταύτας ὁδοῦ πρὸς τὴν Ἀττικὴν. 10
- 22 Ἀρχὴ δὲ τῆς παραλίας ἐκατέρως τῆς μὲν τὸ Λέχαιον τῆς δὲ Κεγχρεαὶ κόμη καὶ λιμὴν ἀπέχων τῆς πόλεως ὅσον ἐβδομήκοντα σταδίους· τούτῳ μὲν οὖν χρῶνται πρὸς τοὺς ἐκ τῆς Ἀσίας πρὸς δὲ τοὺς ἐκ τῆς Ἰταλίας τῷ Λεχαίῳ. τὸ δὲ Λέχαιον ὑποπέπτωκε τῇ πό- 15 λει κατοικίαν ἔχον οὐ πολλήν· σκέλη δὲ καθείλκυσται σταδίων περὶ δώδεκα ἐκατέρωθεν τῆς ὁδοῦ τῆς ἐπὶ τὸ Λέχαιον. ἐντεῦθεν δὲ παρεκτείνουσα ἡ ἧών μέχρι Παγῶν τῆς Μεγαρίδος κλύζεται μὲν ὑπὸ τοῦ Κορινθιακοῦ κόλπου, κοίλη δ' ἐστὶ καὶ ποιεῖ τὸν διόλκον 20 πρὸς τὴν ἐτέραν ἧῶνα τὴν κατὰ Σχοινοῦντα πλησίον ὄντα τῶν Κεγχρεῶν. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ τοῦ Λεχαίου καὶ Παγῶν τὸ τῆς Ἀκραίας μαντεῖον Ἡρας ὑπῆρχε τὸ παλαιόν, καὶ αἱ Ὀλμιαὶ τὸ ποιοῦν ἀκρωτήριον τὸν κόλπον ἐν ᾧ ἦ τε Οἰνότη καὶ Παγαί, τὸ μὲν τῶν Μεγαρέων 25 φρουρίον ἡ δὲ Οἰνότη τῶν Κορινθίων. ἀπὸ [δὲ] τῶν Κεγχρεῶν ὁ Σχοινοὺς, καθ' ὃν τὸ στενὸν τοῦ διόλκου· ἐπειθ' ἡ Κρομμυωνία. πρόκειται δὲ τῆς ἧῶνος ταύτης ὅ τε Σαρωνικὸς κόλπος καὶ ὁ Ἑλευσινιακός, τρόπον τινα ὁ αὐτὸς ὧν, συνεχῆς τῷ Ἑρμιονικῷ. ἐπὶ 30 δὲ τῷ Ἴσθμῳ καὶ τὸ τοῦ Ἴσθμίου Ποσειδῶνος ἱερὸν ἄλσει πιτυώδει συνηρεφές, ὅπου τὸν ἀγῶνα τῶν Ἴσθμίων

Κορίνθιοι συνετέλουν. ἡ δὲ Κρομμυὼν ἔστι κώμη τῆς Κορινθίας, πρότερον δὲ τῆς Μεγαρίδος, ἐν ᾗ μυθεύουσι τὰ περὶ τὴν Κρομμυωνίαν ὕν, ἣν μητέρα τοῦ Καλυδωνίου κάπρου φασί· καὶ τῶν Θησεῶς ἀθλῶν ἓνα 5 τοῦτον παραδιδόασι τὴν τῆς ὕδς ταύτης ἐξαίρεσιν. καὶ ἡ Τενέα δ' ἔστι κώμη τῆς Κορινθίας, ἐν ᾗ τοῦ Τενεάτου Ἀπόλλωνος ἱερὸν· λέγεται δὲ καὶ Ἀρχία τῷ στείλαντι τὴν εἰς Συρακούσας ἀποικίαν τοὺς πλείστους τῶν ἐποίκων ἐντεῦθεν συνεπακολουθήσαι, καὶ μετὰ 10 ταῦτα εὐθηνεῖν μάλιστα τῶν ἄλλων τὴν κατοικίαν ταύτην, τὰ δ' ὕστατα καὶ καθ' αὐτοὺς πολιτεύεσθαι, προσθέσθαι τε τοῖς Ῥωμαίοις ἀποστάντας Κορινθίων καὶ κατασκαφείσης τῆς πόλεως συμμεῖναι. φέρεται δὲ καὶ χρησμὸς ὁ δοθείς τινι τῶν ἐκ τῆς Ἀσίας ἐρωτῶντι 15 εἰ λῶον εἴη μετοικεῖν εἰς Κόρινθον, „εὐδαίμων ὁ Κόρινθος, ἐγὼ δ' εἴην Τενεάτης.“ ὅπερ κατ' ἄγνοιάν τινες παρατρέπουσιν „ἐγὼ δ' εἴην Τεγεάτης.“ λέγεται δ' ἐνταῦθα ἐκθρέψαι Πόλυβος τὸν Οἰδίπουν. δοκεῖ δὲ καὶ συγγενεῖά τις εἶναι Τενεδίοις πρὸς τοὺτους ἀπὸ 20 Τέννου τοῦ Κύκνου, καθάπερ εἰρηκεν Ἀριστοτέλης· καὶ ἡ τοῦ Ἀπόλλωνος δὲ τιμὴ παρ' ἀμφοτέροις ὁμοία οὕσα δίδωσιν οὐ μικρὰ σημεῖα.

Κορίνθιοι δ' ὑπὸ Φιλίππῳ ὄντες ἐκείνῳ τε συνε- C.381
23
φιλονείκησαν καὶ ἰδίᾳ πρὸς Ῥωμαίους ὑπεροπτικῶς 25 εἶχον, ὥστε τινὲς καὶ τῶν πρέσβεων παριόντων τὴν οἰκίαν αὐτῶν ἐθάρρησαν καταντλήσαι βόρβορον. ἀντὶ τούτων μὲν οὖν καὶ ἄλλων ὧν ἐξήμαρτον ἔτισαν δίκας αὐτίκα· πεμφθείσης γὰρ ἀξιολόγου στρατιᾶς, αὐτὴ τε κατέσκαπτο ὑπὸ Λευκίου Μομμίου καὶ τᾶλλα μέχρι 30 Μακεδονίας ὑπὸ Ῥωμαίοις ἐγένετο, ἐν ἄλλοις ἄλλων πεμπομένων στρατηγῶν· τὴν δὲ χώραν ἔσχον Σικυῶνιοι τὴν πλείστην τῆς Κορινθίας. Πολύβιος δὲ τὰ συμ-

βάντα περὶ τὴν ἄλωσιν ἐν οἴκτου μέρει λέγων προστί-
 θησι καὶ τὴν στρατιωτικὴν ὀλιγωρίαν τὴν περὶ τὰ τῶν
 τεχνῶν ἔργα καὶ τὰ ἀναθήματα. φησὶ γὰρ ἰδεῖν παρῶν
 ἐρριμμένους πίνακας ἐπ' ἐδάφους, πεττεύοντας δὲ
 τοὺς στρατιώτας ἐπὶ τούτων. ὀνομάζει δ' αὐτῶν Ἀρι- 5
 στείδου γραφὴν τοῦ Διονύσου, ἐφ' οὗ τινες εἰρῆσθαι
 φασὶ τὸ „οὐδὲν πρὸς τὸν Διόνυσον,“ καὶ τὸν Ἡρακλέα
 τὸν καταπονοῦμενον τῷ τῆς Δημιανείρας χιτῶνι. τοῦ-
 τον μὲν οὖν οὐχ ἑωράκαμεν ἡμεῖς, τὸν δὲ Διόνυσον
 ἀνακείμενον ἐν τῷ Δημητρείῳ τῷ ἐν Ῥώμῃ κάλλιστον 10
 ἔργον ἑωρῶμεν· ἐμπρησθέντος δὲ τοῦ νεῶ συνηφανί-
 σθη καὶ ἡ γραφὴ νεωστί. σχεδὸν δέ τι καὶ τῶν ἄλλων
 ἀναθημάτων τῶν ἐν Ῥώμῃ τὰ πλεῖστα καὶ ἄριστα ἐν-
 τεῦθεν ἀφίχθαι· τινὰ δὲ καὶ αἱ κύκλω τῆς Ῥώμης πό-
 λεις ἔσχον. μεγάλωφρον γὰρ ὢν μᾶλλον ἢ φιλότεχνος 15
 ὁ Μόμμιος, ὥς φασὶ, μετεδίδου ξαδίως τοῖς δεηθεῖσι.
 Λεύκολλος δὲ κατασκευάσας τὸ τῆς Εὐτυχίας ἱερὸν καὶ
 στοάν τινα χρῆσιν ἡτήσατο ὃν εἶχεν ἀνδριάντων ὁ
 Μόμμιος, ὥς κοσμήσων τὸ ἱερὸν μέχρι ἀναδείξεως, εἴτ'
 ἀποδώσων· οὐκ ἀπέδωκε δέ, ἀλλ' ἀνέθηκε κελεύσας 20
 αἰρεῖν εἰ βούλεται· πράως δ' ἡνεγκεν ἐκείνος οὐ φρον-
 τίσας οὐδέν, ὥστ' ἠὺδοκίμει τοῦ ἀναθέντος μᾶλλον.
 πολὺν δὲ χρόνον ἐρήμη μείνασα ἡ Κόρινθος ἀνελήφθη
 πάλιν ὑπὸ Καίσαρος τοῦ Θεοῦ διὰ τὴν εὐφύτιαν, ἐποί-
 κους πέμπσαντος τοῦ ἀπελευθερικοῦ γένους πλείστους· 25
 οἱ τὰ ἐρείπια κινουῦντες καὶ τοὺς τάφους συνανασκά-
 πτοντες εὗρισκον ὀστρακίων * τορευμάτων πλήθη,
 πολλὰ δὲ καὶ χαλκῶματα· θαναμάζοντες δὲ τὴν κατα-
 σκευὴν οὐδένα τάφον ἀσκευώρητον εἶασαν, ὥστε εὐ-
 πορήσαντες τῶν τοιούτων καὶ διατιθέμενοι πολλοῦ 30
 C.382 νεκροκορινθίων ἐπλήρωσαν τὴν Ῥώμην· οὕτω γὰρ
 ἐκάλουν τὰ ἐκ τῶν τάφων ληφθέντα, καὶ μάλιστα τὰ

ὁστράκινα. κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν ἐτιμήθη σφόδρα ὁμοίως τοῖς χαλκώμασι τοῖς κορινθιουργέειν, εἰτ' ἐπαύσαντο τῆς σπουδῆς, ἐκλιπόντων τῶν ὁστράκων καὶ οὐδὲ κατωρθωμένων τῶν πλείστων. ἡ μὲν δὴ πόλις ἡ τῶν
 5 Κορινθίων μεγάλη τε καὶ πλουσία διὰ παντὸς ὑπῆρξεν, ἀνδρῶν τε ἡνυπόρησεν ἀγαθῶν εἰς τε τὰ πολιτικά καὶ εἰς τὰς τέχνας τὰς δημιουργικάς· μάλιστα γὰρ καὶ ἐνταῦθα καὶ ἐν Σικυῶνι ἡνυξήθη γραφικὴ τε καὶ πλαστικὴ καὶ πᾶσα ἡ τοιαύτη δημιουργία. χώραν δ' ἔσχεν
 10 οὐκ εὖγεων σφόδρα, ἀλλὰ σκολιάν τε καὶ τραχεῖαν, ἀφ' οὗ πάντες ὀφρύνοντα Κόρινθον εἰρήκασιν καὶ παρομιάζονται „Κόρινθος ὀφρυνᾷ τε καὶ κοιλαίνεται.“

Ὁρνεαὶ δ' εἰσὶν ἐπώνυμοι τῷ παραρρέοντι ποτα- 24
 μῳ, νῦν μὲν ἔρημοι πρότερον δ' οἰκούμεναι καλῶς,
 15 ἱερὸν ἔχουσαι Πριάπου τιμώμενον, ἀφ' ὧν καὶ ὁ τὰ Πριάπεια ποιήσας Εὐφορίων Ὁρνεάτην καλεῖ τὸν θεόν· κεῖνται δ' ὑπὲρ τοῦ πεδίου τοῦ Σικυωνίων, τὴν δὲ χώραν ἔσχον Ἀργεῖοι. Ἀραιθυρέα δ' ἐστὶν ἡ νῦν Φλιασία καλουμένη, πόλιν δ' εἶχεν ὁμώνυμον τῇ χώρᾳ
 20 πρὸς ὅρει Κηλώσση· οἱ δ' ὕστερον ἀναστάντες ἐκεῖθεν πρὸ τριάκοντα σταδίων ἔκτισαν πόλιν, ἣν ἐκάλεσαν Φλιοῦντα· τῆς δὲ Κηλώσσης μέρος ὁ Καρνεάτης, ὅθεν λαμβάνει τὴν ἀρχὴν Ἀσωπὸς ὁ παραρρέων τὴν Σικυῶνα καὶ ποιῶν τὴν Ἀσωπίαν χώραν, μέρος οὗ-
 25 σαν τῆς Σικυωνίας. ἔστι δ' Ἀσωπὸς καὶ ὁ παρὰ Θήβας ῥέων καὶ Πλαταιὰς καὶ Τάναγραν, ἄλλος δ' ἐστὶν ἐν Ἡρακλείᾳ τῇ Τραχινίᾳ παρὰ κώμην ῥέων ἣν Παρασωπίους ὀνομάζουσι, τέταρτος δ' ὁ ἐν Πάρῳ. κεῖται δ' ὁ Φλιοῦς ἐν μέσῳ Σικυωνίας Ἀργείας Κλεωνῶν καὶ
 30 Στυμφάλου κύκλῳ περιεχόμενος· τιμᾶται δ' ἐν Φλιοῦντι καὶ Σικυῶνι τὸ τῆς Δίας ἱερὸν· καλοῦσιν δ' οὕτω τὴν Ἥβην.

25 Τὴν δὲ Σικυῶνα πρότερον Μηκώνην ἐκάλουν, ἔτι δὲ πρότερον Αἰγιαλεῖς· ἀνῴκισε δ' αὐτὴν ἀπὸ θαλάττης ὅσον εἴκοσι σταδίοις (οἱ δὲ δώδεκά φασιν) ἐπὶ λόφον ἐρυμνὸν Δημήτριος· τὸ δὲ παλαιὸν κτίσμα ἐπινειὸν ἐστὶν ἔχον λιμένα. ὀρίζει δὲ τὴν Σικυωνίαν καὶ 5 τὴν Κορινθίαν ποταμὸς Νεμέα· ἐτυραννήθη δὲ πλεῖστον χρόνον, ἀλλ' αἶε τοὺς τυράννους ἐπιεικεῖς ἄνδρας ἔσχεν, Ἀρατον δ' ἐπιφανέστατον, ὃς καὶ τὴν πόλιν ἡλευθέρωσε, καὶ Ἀχαιῶν ἤρξε παρ' ἐκόντων λαβὼν τὴν ἐξουσίαν, καὶ τὸ σύστημα ἠὔξησε προσθεὶς αὐτῷ 10 C.383 τὴν τε πατρίδα καὶ τὰς ἄλλας πόλεις τὰς ἐγγύς. Ὑπερρήσιν δὲ καὶ τὰς ἐξῆς πόλεις αἷς ὁ ποιητὴς λέγει, καὶ τὸν Αἰγιάλον τῶν Ἀχαιῶν ἥδη συμβέβηκεν εἶναι μέχρι Δύμης καὶ τῶν ὄρων τῆς Ἠλείας.

7 Ταύτης δὲ τῆς χώρας τὸ μὲν παλαιὸν Ἴωνες ἐκρά- 15 τουν, ἐξ Ἀθηναίων τὸ γένος ὄντες, ἐκαλεῖτο δὲ τὸ μὲν παλαιὸν Αἰγιάλεια καὶ οἱ ἐνοικοῦντες Αἰγιαλεῖς, ὕστερον δ' ἀπ' ἐκείνων Ἴωνία, καθάπερ καὶ ἡ Ἀττική, ἀπὸ Ἴωνος τοῦ Ξούθου. φασὶ δὲ Δευκαλίωνος μὲν Ἑλληνα εἶναι, τοῦτον δὲ περὶ τὴν Φθίαν τῶν μεταξὺ Πηνειοῦ 20 καὶ Ἀσωποῦ δυναστεύοντα τῷ πρεσβυτάτῳ τῶν παίδων παραδοῦναι τὴν ἀρχήν, τοὺς δ' ἄλλους ἕξω διὰ πέμψαι ζητήσοντας ἰδρυσιν ἕκαστον αὐτῷ· ὦν Δῶρος μὲν τοὺς περὶ Παρνασσὸν Δωριέας συνοικίσας κατέλιπεν ἐπωνύμους αὐτοῦ, Ξοῦθος δὲ τὴν Ἐρεχθίδος θυ- 25 γατέρα γήμας ᾤκισε τὴν τετράπολιν τῆς Ἀττικῆς, Οἰνόην Μαραθῶνα Προβάλινθον καὶ Τρικόρυνθον. τῶν δὲ τούτου παίδων Ἀχαιοὺς μὲν φόνον ἀκούσιον πράξας ἐφυγεν εἰς Λακεδαιμόνα καὶ Ἀχαιοὺς τοὺς ἐκεῖ κληθῆναι παρεσκεύασεν, Ἴων δὲ τοὺς μετ' Εὐμόλπου νι- 30 κήσας Θοῤῃκας οὕτως ἠὔδοκίμησεν ὥστ' ἐπέτρεψαν αὐτῷ τὴν πολιτείαν Ἀθηναῖοι. ὁ δὲ πρῶτον μὲν εἰς

τέτταρας φυλάς διείλε τὸ πλῆθος, εἶτα εἰς τέτταρας
 βίους· τοὺς μὲν γὰρ γεωργοὺς ἀπέδειξε τοὺς δὲ δημι-
 ουργοὺς τοὺς δὲ ἱεροποιούς, τετάρτους δὲ τοὺς φύλα-
 κας· τοιαῦτα δὲ πλείω διατάξας τὴν χώραν ἐπώνυμον
 5 ἑαυτοῦ κατέλιπεν. οὕτω δὲ πολυανδρῆσαι τὴν χώραν
 τότε συνέπεσεν ὥστε καὶ ἀποικίαν τῶν Ἰώνων ἔστειλαν
 εἰς Πελοπόννησον Ἀθηναῖοι, καὶ τὴν χώραν ἣν κατέ-
 σχον ἐπώνυμον ἑαυτῶν ἐποίησαν Ἰωνίαν ἀντ' Αἰγιάλου
 κληθεῖσαν, οἳ τε ἄνδρες ἀντὶ Αἰγιάλεων Ἴωνες προσ-
 10 ηγορεύθησαν εἰς δώδεκα πόλεις μερισθέντες. μετὰ δὲ
 τὴν Ἡρακλειδῶν κάθοδον ὑπ' Ἀχαιῶν ἐξελαθέντες
 ἐπανῆλθον πάλιν εἰς Ἀθήνας· ἐκείθεν δὲ μετὰ τῶν
 Κοδριδῶν ἔστειλαν τὴν Ἰωνικὴν ἀποικίαν εἰς τὴν Ἀσί-
 15 αν· ἔκτισαν δὲ δώδεκα πόλεις ἐν τῇ παραλίᾳ τῆς Κα-
 ρίας καὶ τῆς Λυδίας, εἰς τοσαῦτα μέρη διελόντες σφᾶς
 ὅσα καὶ ἐν τῇ Πελοποννήσῳ κατεῖχον. οἳ δ' Ἀχαιοὶ
 Φθιώται μὲν ἦσαν τὸ γένος, ὥκησαν δ' ἐν Λακεδαι-
 μονι, τῶν δ' Ἡρακλειδῶν ἐπικρατησάντων ἀναλη-
 φθέντες ὑπὸ Τισαμενοῦ τοῦ Ὀρέστου παιδός, ὡς προ-
 20 ειρήκαμεν, τοῖς Ἴωσιν ἐπέθεντο, καὶ γενόμενοι κρείτ-
 τους τοὺς μὲν ἐξέβαλον, αὐτοὶ δὲ κατέσχον τὴν γῆν,
 καὶ διεφύλαξαν τὸν αὐτὸν τῆς χώρας μερισμὸν ὅνπερ
 καὶ παρῆλθον. οὕτω δ' ἴσχυσαν ὥστε τὴν ἄλλην Πε-0.384
 λοπόννησον ἔχόντων τῶν Ἡρακλειδῶν ὧν ἀπέστη-
 25 σαν, ἀντειχον ὅμως πρὸς ἅπαντας Ἀχαιᾶν ὀνομάσαν-
 τες τὴν χώραν. ἀπὸ μὲν οὖν Τισαμενοῦ μέχρι Ὠγύγου
 βασιλευόμενοι διετέλουν· εἶτα δημοκρατηθέντες το-
 σοῦτον ἡῦδοκίμησαν περὶ τὰς πολιτείας ὥστε τοὺς Ἰτα-
 λιώτας μετὰ τὴν στάσιν τὴν πρὸς τοὺς Πυθαγορείους
 30 τὰ πλείστα τῶν νομίμων μετενέγκασθαι παρὰ τούτων
 συνέβη· μετὰ δὲ τὴν ἐν Λεύκτροις μάχην ἐπέτρεψαν
 Θηβαῖοι τούτοις τὴν δίαίταν περὶ τῶν ἀντιλεγομένων

ταῖς πόλεσι πρὸς ἀλλήλας· ὕστερον δ' ὑπὸ Μακεδόνων λυθείσης τῆς κοινωνίας ἀνέλαβον σφᾶς πάλιν κατὰ μικρόν· ἤρξαν δὲ Πύρρον στρατεύσαντος εἰς Ἰταλίαν τέτταρες συνιοῦσαι πόλεις, αἷν ἦσαν Πάτραι καὶ Δύμη· εἶτα προσελάμβανόν τινας τῶν δῶδεκα 5 πλὴν Ὀλλέου καὶ Ἑλίκης, τῆς μὲν οὐ συνελθούσης τῆς 2 δ' ἀφανισθείσης ὑπὸ κύματος. ἐξαρθὲν γὰρ ὑπὸ σεισμοῦ τὸ πέλαγος κατέκλυσε καὶ αὐτὴν καὶ τὸ ἱερὸν τοῦ Ἑλικωνίου Ποσειδῶνος, ὃν καὶ νῦν ἐτι τιμῶσιν Ἴωνες, καὶ θύουσιν ἐκεῖ τὰ Πανιώνια. μέμνηται δ', ὥς ὑπο- 10 νοοῦσί τινες, ταύτης τῆς θυσίας Ὅμηρος ὅταν φῇ „αὐτὰρ ὁ θυμὸν αἶσθε καὶ ἥρυνεν, ὥς ὅτε ταῦρος „ἥρυνεν ἐλκόμενος Ἑλικώνιον ἀμφὶ ἄνακτα.“ τεκμαίρονται τε νεώτερον εἶναι τῆς Ἰωνικῆς ἀποικίας τὸν ποιητὴν, μεμνημένον γε τῆς Πανιονικῆς θυσίας ἣν ἐν 15 τῇ Πριηνέων χώρᾳ συντελοῦσιν Ἴωνες τῷ Ἑλικωνίῳ Ποσειδῶνι, ἐπεὶ καὶ αὐτοὶ οἱ Πριηνεῖς ἐξ Ἑλίκης εἶναι λέγονται· καὶ δὴ πρὸς τὴν θυσίαν ταύτην καθιστᾷσιν ἄνδρα νέον Πριηνέα τὸν τῶν ἱερῶν ἐπιμελησόμενον. τεκμηριοῦνται δ' ἐτι μᾶλλον τὸ προκείμενον ἐκ τῶν 20 περὶ τοῦ ταύρου πεφρασμένων· τότε γὰρ νομίζουσι καλλιερεῖν περὶ τὴν θυσίαν ταύτην Ἴωνες, ὅταν θυόμενος ὁ ταῦρος μυκήσῃται. οἱ δ' ἀντιλέγοντες μεταφέρουσιν εἰς τὴν Ἑλίκην τὰ λεχθέντα τεκμήρια περὶ τοῦ ταύρου καὶ τῆς θυσίας, ὥς ἐκεῖ νενομισμένων τοῦ- 25 των καὶ τοῦ ποιητοῦ παραβάλλοντος τὰ ἐκεῖ συντελούμενα. κατεκλύσθη δ' ἡ Ἑλίκη θυσὶν ἔτεσι πρὸ τῶν Λευκτρικῶν. Ἐρατοσθένους δὲ καὶ αὐτὸς ἰδεῖν φησι τὸν τόπον, καὶ τοὺς πορθμέας λέγειν ὥς ἐν τῷ πύρρῳ ὀρθὸς ἐστήκει Ποσειδῶν χάλκεος, ἔχων ἱππόκαμπον 30 ἐν τῇ χειρὶ κίνδυνον φέροντα τοῖς δικτυεῦσιν. Ἡρακλείδης δὲ φησι κατ' αὐτὸν γενέσθαι τὸ πάθος νύκτωρ,

δωδεκα σταδίους διεχούσης τῆς πόλεως ἀπὸ θαλάττης^{C.385}
καὶ τούτου τοῦ χωρίου παντὸς σὺν τῇ πόλει καλυφθέν-
τος, δισχιλίους δὲ παρὰ τῶν Ἀχαιῶν πεμφθέντας ἀνε-
λέσθαι μὲν τοὺς νεκροὺς μὴ δύνασθαι, τοῖς δ' ὁμόροις
5 νεῖμαι τὴν χώραν. συμβῆναι δὲ τὸ πάθος κατὰ μῆνιν
Ποσειδῶνος· τοὺς γὰρ ἐκ τῆς Ἑλίκης ἐκπεσόντας Ἴω-
νας αἰτεῖν πέμψαντας παρὰ τῶν Ἑλικέων μάλιστα μὲν
τὸ βρέτας τοῦ Ποσειδῶνος, εἰ δὲ μή, τοῦ γε ἱεροῦ τὴν
ἀφίδρυσιν· οὐ δόντων δὲ πέμψαι πρὸς τὸ κοινὸν τῶν
10 Ἀχαιῶν· τῶν δὲ ψηφισαμένων οὐδ' ὥς ὑπακοῦσαι·
τῷ δ' ἑξῆς χειμῶνι συμβῆναι τὸ πάθος, τοὺς δ' Ἀχαι-
οὺς ὕστερον δοῦναι τὴν ἀφίδρυσιν τοῖς Ἴωσιν. Ἡσιό-
δος δὲ καὶ ἄλλης Ἑλίκης μέμνηται Θετταλικῆς.

Εἰκοσι μὲν δὴ ἔτη διετέλεσαν γραμματέα κοινὸν ³
15 ἔχοντες καὶ στρατηγοὺς δύο κατ' ἐνιαυτὸν οἱ Ἀχαιοί,
καὶ κοινοβούλιον εἰς ἓνα τόπον συνήγετο αὐτοῖς (ἐκα-
λεῖτο δὲ Ἀμάριον) ἐν ᾧ τὰ κοινὰ ἐξηγάτιζον καὶ οὗτοι
καὶ Ἴωνες πρότερον· εἶτα ἔδοξεν ἓνα χειροτονεῖσθαι
στρατηγόν. Ἄρατος δὲ στρατηγῆσας ἀφείλετο Ἀντίλο-
20 νον τὸν Ἀκροκόρινθον, καὶ τὴν πόλιν τοῖς Ἀχαιοῖς
προσέθηκε καθάπερ καὶ τὴν πατρίδα· προσελάβετο δὲ
καὶ Μεγαρέας· καὶ τὰς παρ' ἐκάστοις τυραννίδας κα-
ταλύων Ἀχαιοὺς ἐποίει τοὺς ἐλευθερωθέντας
τὴν δὲ Πελοπόννησον ἡλευθέρωσε τῶν τυραννίδων,
25 ὥστε καὶ Ἄργος καὶ Ἑρμιῶν καὶ Φλιοῦς καὶ Μεγάλη
πόλις, ἡ μεγίστη τῶν ἐν Ἀρκαδίᾳ, προσετέθη τοῖς
Ἀχαιοῖς, ὅτε δὴ καὶ πλεῖστον ἠϋξήντο. ἦν δ' ὁ καιρὸς
ἡνίκα Ῥωμαῖοι Καρχηδονίους ἐκ τῆς Σικελίας ἐκβα-
λόντες ἐστράτευσαν ἐπὶ τοὺς περὶ τὸν Πάδον Γαλάτας.
30 μέχρι δὲ τῆς Φιλοποίμενος στρατηγίας συμμεῖναντες
ἱκανῶς οἱ Ἀχαιοὶ διελύθησαν κατ' ὀλίγον, ἥδη Ῥω-
μαίων ἐχόντων τὴν Ἑλλάδα σύμπασαν καὶ οὐ τὸν αὐτὸν

τρόπον ἐκάστοις χρωμένων, ἀλλὰ τοὺς μὲν συνέχειν τοὺς δὲ καταλύειν βουλομένων

- 4 Ἡ δὲ τάξις τῶν τόπων, οὓς κατῴκουν εἰς δώδεκα μέρη διηρημένοι, τοιαύτη τίς ἐστι· μετὰ Σικυῶνα Πελλήνη κείται· εἴτα Αἰγείρα δευτέρα· τρίτη Αἰγαί, Πο- 5 σειδῶνος ἱερὸν ἔχουσα· τετάρτη Βοῦρα· μετ' αὐτὴν Ἑλλίκη, εἰς ἣν καταπεφύγεισαν Ἴωνες, μάχη κρατηθέντες ὑπ' Ἀχαιῶν, καὶ τὸ τελευταῖον ἐξέπεσον ἐνθύν-
C.386δε· μετὰ δὲ Ἑλλίκην Αἴγιον καὶ Ῥύπες καὶ Πατρέϊς καὶ Φαρεῖς· εἴτ' Ὡλενος, παρ' ὃν ποταμὸς μέγας * Μέλας· 10 εἴτα Δύμη καὶ Τριταιεῖς. οἱ μὲν οὖν Ἴωνες κωμηθὸν ὦκουν, οἱ δ' Ἀχαιοὶ πόλεις ἔκτισαν, ὧν εἰς τινὰς ὕστερον συνώκισαν καὶ ἐκ τῶν ἄλλων μερίδων ἐνίας, καθάπερ τὰς Αἰγὰς εἰς Αἰγείραν (Αἰγαῖοι δ' ἐλέγοντο οἱ ἐνοικοῦντες), Ὡλενον δὲ εἰς Δύμην. δείκνυνται δ' ἔχνη 15 μεταξὺ Πατρῶν καὶ Δύμης τοῦ παλαιοῦ τῶν Ὡλενίων κτίσματος· αὐτοῦ δὲ καὶ τὸ τοῦ Ἀσκληπιοῦ ἱερὸν ἐπίσημον, [ὃ] Δύμης μὲν ἀπέχει τετταράκοντα σταδίου, Πατρῶν δὲ ὀγδοήκοντα. ὁμώνυμοι δ' εἰσὶ ταῖς μὲν Αἰγαῖς ταύταις αἱ ἐν Εὐβοίᾳ, τῷ δὲ Ὡλένῳ τὸ ἐν Αἰτω- 20 λίᾳ κτίσμα καὶ αὐτὸ ἔχνη σῶζον μόνον. ὁ δὲ ποιητὴς τοῦ μὲν ἐν Ἀχαΐᾳ Ὡλένου οὐ μέμνηται, ὥσπερ οὐδ' ἄλλων πλειόνων τῶν περὶ τὸν Αἰγιαλὸν οἰκούντων, ἀλλὰ κοινότερον λέγει „Αἰγιαλὸν τ' ἀνὰ πάντα καὶ „ἄμφ' Ἑλλίκην εὐρεῖαν.“ τοῦ δ' Αἰτωλικοῦ μέμνηται 25 ὅταν φῇ „οὔ Πλευρῶν' ἐνέμοντο καὶ Ὡλενον.“ τὰς δ' Αἰγὰς ἀμφοτέρας λέγει, τὴν μὲν Ἀχαϊκὴν „οἱ δέ τοι „εἰς Ἑλλίκην τε καὶ Αἰγὰς δῶρ' ἀνάγουσι.“ ὅταν δὲ φῇ

2. post βουλομένων: εἴτα λέγει αἰτίαν τοῦ ἐμπλατύνεσθαι τοῖς περὶ Ἀχαιῶν λόγοις τὸ ἐπὶ τοσοῦτον ἀύξηθέντας, ὥς καὶ Λακεδαιμονίους ὑπερβαλέσθαι, μὴ ἀξίως γνωρίζεσθαι.

„Αίγας, ἔνθα τέ οἱ κλυτὰ δῶματα βένθεσι λίμνης·
 „ἔνθ' ἱππους ἔστησε Ποσειδάων,“ βέλτιον δέχεσθαι τὰς
 ἐν Εὐβοίᾳ, ἀφ' ὧν εἰκὸς καὶ τὸ πέλαγος Αἰγαῖον λε-
 χθῆναι· ἐκεῖ δὲ καὶ τῷ Ποσειδῶνι ἡ πραγματεία πε-
 5 ποίηται ἡ περὶ τὸν Τρωικὸν πόλεμον. πρὸς δὲ ταῖς
 Ἀχαῖκαῖς Αἰγαῖς ὁ Κραῖθις ῥεῖ ποταμὸς ἐκ θυνεῖν ποτα-
 μῶν ἀνυξόμενος, ἀπὸ τοῦ κίρνασθαι τὴν ὀνομασίαν
 ἔχων· ἀφ' οὗ καὶ ὁ ἐν Ἰταλίᾳ Κραῖθις.

Ἐκάστη δὲ τῶν δώδεκα μερίδων ἐκ δήμων συνει- 5
 10 στήκει ἐπτὰ καὶ ὀκτώ· τοσοῦτον εὐανδρεῖν τὴν χώραν
 συνέβαινε. ἔστι δ' ἡ Πελλήνη στάδια ἐξήκοντα τῆς
 θαλάττης ὑπερκείμενη, φρούριον ἐρυμνόν. ἔστι δὲ καὶ
 κόμη Πελλήνη, ὅθεν καὶ αἱ Πελληνικαὶ χλαῖναι, αἷς
 καὶ ἄθλα ἐτίθεσαν ἐν τοῖς ἀγῶσι· κεῖται δὲ μετὰ τὴν Αἰ-
 15 γίον καὶ Πελλήνης· τὰ δὲ Πέλλανα ἔτερα τούτων ἐστί,
 Λακωνικὸν χωρίον, ὡς πρὸς τὴν Μεγαλοπολίτιν νεῦον.
 Αἰγείρα δὲ ἐπὶ βουνοῦ κεῖται. Βοῦρα δ' ὑπέρεκειται
 τῆς θαλάττης ἐν τετταράκοντά πωσ σταδίοις, ἣν ὑπὸ
 σεισμῷ καταποθῆναι συνέβη. ἀπὸ δὲ τῆς ἐνταῦθα
 20 κρήνης Συβάριδος τὸν κατὰ τὴν Ἰταλίαν ποταμὸν ὀνο-
 μασθῆναί φασιν. ἡ δ' Αἰγὰ (καὶ γὰρ οὕτω λέγουσι τὰς 387
 Αἰγὰς) νῦν μὲν οὐκ οἰκεῖται, τὴν δὲ χώραν ἔχουσιν Αἰ-
 γιεῖς. Αἰγίον δὲ ἱκανῶς οἰκεῖται· ἱστοροῦσι δ' ἐνταῦθα
 τὸν Δία ὑπ' αἰγὸς ἀνατραφῆναι, καθάπερ φησὶ καὶ
 25 Ἀρατος „αἰεῖ ἱερῇ, τὴν μὲν τε λόγος Διὶ μαζὸν ἐπι-
 „σχεῖν.“ ἐπιλέγει δὲ καὶ ὅτι „Ὠλενίην δέ μιν αἶγα Διὸς
 καλέουσ' ὑποφῆται“ δηλῶν τὸν τόπον διότι πλησίον
 Ὠλένη. αὐτοῦ δὲ καὶ ἡ Κερύνεια ἐπὶ πέτρᾳ ὑψηλῆς
 ἰδρυμένη. Αἰγίῶν δ' ἐστὶ καὶ ταῦτα καὶ Ἑλίκη καὶ τὸ
 30 τοῦ Διὸς ἄλλος τὸ Ἀμάριον, ὅπου συνήεσαν οἱ Ἀχαιοὶ
 βουλευσόμενοι περὶ τῶν κοινῶν. ῥεῖ δὲ διὰ τῆς Αἰ-
 γιῶν ὁ Σελινοῦς ποταμός, ὁμώνυμος τῷ τε ἐν Ἐφέσῳ

παρὰ τὸ Ἀρτεμίδιον ῥέοντι, καὶ τῷ ἐν τῇ νῦν Ἠλείᾳ τῷ
 παραρρέοντι τὸ χωρίον ὃ φησιν ὠνήσασθαι τῇ Ἀρτέ-
 μιδι Ξενοφῶν κατὰ χρησμόν· ἄλλος δὲ Σελινοῦς ὁ
 παρὰ τοῖς Ὑβλαίοις Μεγαρεῦσιν, οὓς ἀνέστησαν Καρ-
 χηδόνιοι. τῶν δὲ λοιπῶν πόλεων τῶν Ἀχαϊκῶν εἴτε 5
 μερίδων Ῥύπες μὲν οὐκ οἰκοῦνται, τὴν δὲ χώραν Ῥυ-
 πίδα καλουμένην ἔσχον Αἰγυεῖς καὶ* Φαριεῖς· ἐκ δὲ τῶν
 Ῥυπῶν ἦν ὁ Μύσκελλος ὁ Κρότωνος οἰκιστής· τῆς δὲ
 Ῥυπίδος καὶ τὸ Λεῦκτρον ἦν, δηῆμος τῶν Ῥυπῶν. μετὰ
 δὲ τούτους Πάτραι πόλις ἀξιόλογος· μεταξὺ δὲ τὸ Ῥίον 10
 ἀπέχον Πατρῶν στάδια τετταράκοντα. Ῥωμαῖοι δὲ νε-
 ωστὶ μετὰ τὴν Ἀκτιακὴν νίκην ἰδρυσαν αὐτόθι τῆς
 στρατιᾶς μέρος ἀξιόλογον, καὶ διαφερόντως εὐανδρεῖ
 νῦν ἀποικία Ῥωμαίων οὖσα· ἔχει δὲ ὕφορμον μέτριον.
 ἐφεξῆς δ' ἐστὶν ἡ Λύμη, πόλις ἀλίμενος, πασῶν δυσμι- 15
 κωτάτη, ἀφ' οὗ καὶ τοῦνομα· πρότερον δ' ἐκαλεῖτο
 Στράτος· διαιρεῖ δ' αὐτὴν ἀπὸ τῆς Ἠλείας κατὰ Βου-
 πράσιον ὁ Λάρισος ποταμός, ῥέων ἐξ ὄρους· τοῦτο
 δ' οἱ μὲν Σκόλλιν καλοῦσιν, Ὅμηρος δὲ πέτρην Ὀλε-
 νίην. τοῦ δ' Ἀντιμάχου Καυκωνίδα τὴν Λύμην εἰπόν- 20
 τος, οἱ μὲν ἐδέξαντο ἀπὸ τῶν Καυκῶνων ἐπιθέτως εἰ-
 ρῆσθαι αὐτὸ μέχρι δεῦρο καθηκόντων, καθάπερ ἐπά-
 νω προείπομεν· οἱ δ' ἀπὸ Καύκωνος ποταμοῦ τινας,
 ὥς αἱ Θῆβαι Διρκαῖαι καὶ Ἀσωπίδες, Ἄργος δ' Ἰνά-
 χειον, Τροία δὲ Σιμουντίς. δέδεκται δ' οἰκήτορας καὶ 25
 ἡ Λύμη μικρὸν πρὸ ἡμῶν ἀνθρώπους μιγάδας, οὓς
 0.388 ἀπὸ τοῦ πειρατικοῦ πλήθους περιλιπεῖς ἔσχε Πομπή-
 ιος, καταλύσας τὰ ληστήρια καὶ ἰδρύσας τοὺς μὲν ἐν
 Σόλοις τοῖς Κιλικίοις τοὺς δ' ἄλλοθι καὶ δὴ καὶ ἐν-

7. post Φαριεῖς; καὶ Αἰαχύλος δὲ λέγει πον „Βουραν θ
 „λερὰν καὶ κεραννίας Ῥύπας.“ 10. post Ῥίον: καὶ τὸ Ἀντίρ-
 ριον

ταῦθα. ἡ δὲ Φάρα συνορεῖ μὲν τῇ Λυμαίᾳ. καλοῦνται δὲ οἱ μὲν ἐκ ταύτης τῆς Φάρας * Φαριεῖς, οἱ δ' ἐκ τῆς Μεσσηνιακῆς Φαραιᾶται· ἔστι δ' ἐν τῇ Φαραῖκῇ Δίρκῃ κρήνη ὁμώνυμος τῇ ἐν Θήβαις. ἡ δ' Ὁλενος ἔστι μὲν 5 ἔρημος, κεῖται δὲ μεταξὺ Πατρῶν καὶ Λύμης· ἔχουσι δὲ Λυμαῖοι τὴν χώραν. εἴτ' Ἀραξος, τὸ ἀκρωτήριον τῆς Ἠλείας, ἀπὸ Ἰσθμοῦ στάδιοι χίλιοι [τριᾶκοντα].

Ἀρκαδία δ' ἔστιν ἐν μέσῳ μὲν τῆς Πελοποννήσου, 8 πλείστην δὲ χώραν ὄρεινὴν ἀποτεμένεται. μέριστον δ' ὅρος ἐν αὐτῇ Κυλλήνῃ· τὴν γοῦν κάθεται οἱ μὲν εἰκοσι σταδίων φασὶν οἱ δ' ὅσον πεντεκαίδεκα. δοκεῖ δὲ παλαιότατα ἔθνη τῶν Ἑλλήνων εἶναι τὰ Ἀρκαδικά, Ἀζᾶνές τε καὶ Παρράσιοι καὶ ἄλλοι τοιοῦτοι. διὰ δὲ τὴν 15 τῆς χώρας παντελεῖ κάκωσιν οὐκ ἂν προσήκοι μακρολογεῖν περὶ αὐτῶν· αἱ τε γὰρ πόλεις ὑπὸ τῶν συνεχῶν πολέμων ἠφανίσθησαν ἐνδοξοὶ γενόμεναι πρότερον, τὴν τε χώραν οἱ γεωργήσαντες ἐκλελοίπασιν ἔξ ἐκείνων ἔτι τῶν χρόνων ἔξ ὧν εἰς τὴν προσαγορευθεῖσαν Μεγάλην πόλιν αἱ πλείσται συνωκίσθησαν. νυνὶ δὲ 20 καὶ αὐτὴ ἡ Μεγάλη πόλις τὸ τοῦ κωμικοῦ πέπονθε καὶ „ἐρημία μεγάλη ἔστιν ἡ Μεγάλη πόλις.“ βοσκήμασι δ' εἰσὶ νομαὶ θαψιλεῖς, καὶ μάλιστα ἵπποις καὶ ὄνοις τοῖς ἱπποβάτοις· ἔστι δὲ καὶ τὸ γένος τῶν ἵππων ἄριστον τὸ Ἀρκαδικόν, καθάπερ καὶ τὸ Ἀργολικόν καὶ τὸ Ἐπι- 25 δαύριον. καὶ ἡ τῶν Αἰτωλῶν δὲ καὶ Ἀκαρνανῶν ἐρημία πρὸς ἱπποτροφίαν εὐφυῆς γέγονεν οὐχ ἥττον τῆς Θετταλίας.

Μαντίνειαν μὲν οὖν ἐποίησεν ἐνδοξὸν Ἐπαμεινών- 2 δας, τῇ δευτέρᾳ νικήσας μάχῃ Λακεδαιμονίους ἐν ἧ καὶ 30 αὐτὸς ἐτελεύτα. καὶ αὕτη δὲ καὶ Ὀρχομενὸς καὶ Ἡραία καὶ Κλεῖτωρ καὶ Φενεὸς καὶ Στύμφαλος καὶ Μαίναλος καὶ Μεθύδιον καὶ Καφνεῖς καὶ Κύναιθα ἡ οὐκέτ' εἰσὶν

ἡ μόλις αὐτῶν ἴχνη φαίνεται καὶ σημεῖα. Τεγέα δ' ἔτι μετρίως συμμένει καὶ τὸ ἱερὸν τῆς Ἀλέας Ἀθηνᾶς· τιμᾶται δ' ἐπὶ μικρὸν καὶ τὸ τοῦ Λυκαίου Διὸς ἱερὸν κατὰ τὸ Λύκαιον [μέγιστον] ὄρος. τῶν δ' ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λεγομένων „Ρίπην τε Στρατίην τε καὶ ἡνεμόεσ- 5 „σαν Ἐνίσπην“ εὐρεῖν τε χαλεπὸν καὶ εὐροῦσιν οὐδὲν ὄφελος διὰ τὴν ἐρημίαν.

3 Ὅρη δ' ἐπιφανῇ πρὸς τῇ Κυλλήνῃ Φολόῃ τε καὶ
C.389 Λύκαιον καὶ Μαίναλος καὶ τὸ Παρθένιον καλούμενον
καθῆκον ἐπὶ τὴν Ἀργεῖαν ἀπὸ τῆς Τεγεάτιδος. 10

4 Περὶ δὲ τοῦ Ἀλφειοῦ καὶ τοῦ Εὐρώτα τὸ συμβε-
βηκὸς παράδοξον εἴρηται καὶ τὸ περὶ Ἐρασῖνον τὸν ἐκ-
διδόντα ἐκ τῆς Στυμφαλίδος λίμνης εἰς τὴν Ἀργεῖαν
νυνί, πρότερον δ' οὐκ ἔχοντα ἔκρυσιν, τῶν βερέθρων,
ἃ καλοῦσιν οἱ Ἀρκάδες ξέρεθρα, τυφλῶν ὄντων καὶ μὴ 15
δεχομένων ἀπέρασιν ὥστε τὴν τῶν Στυμφαλίων πόλιν
νῦν μὲν καὶ πεντήκοντα διέχειν σταδίους ἀπὸ τῆς λί-
μνης, τότε δ' ἐπ' αὐτῆς κεῖσθαι. τὰναντία δ' ὁ Λάδων
ἔπαθε τοῦ ρεύματος ἐπισχεθέντος ποτὲ διὰ τὴν ἔμ-
φραξιν τῶν πηγῶν· συμπεσόντα γὰρ τὰ περὶ Φενεὸν 20
βέρεθρα ὑπὸ σεισμοῦ, δι' ὧν ἦν ἡ φορὰ, μονὴν ἐποί-
ησε τοῦ ρεύματος μέχρι τῶν κατὰ βάθους φλεβῶν τῆς
πηγῆς. καὶ οἱ μὲν οὕτω λέγουσιν· Ἐρατοσθένους δέ
φησι περὶ Φενεὸν μὲν τὸν Ἀνίαν καλούμενον ποταμὸν
λιμνάζειν τὰ πρὸ τῆς πόλεως, καταδύεσθαι δ' εἰς τινὰς 25
ἡθμοὺς οὓς καλεῖσθαι ξέρεθρα· τούτων δ' ἔμφρα-
χθέντων ἔσθ' ὅτε ὑπερχεῖσθαι τὸ ὕδωρ εἰς τὰ πεδία,
πάλιν δ' ἀναστομουμένων ἄθρου ἐκ τῶν πεδίων ἐκ-
πεσὸν εἰς τὸν Λάδωνα καὶ τὸν Ἀλφειὸν ἐμβάλλειν,
ὥστε καὶ τῆς Ὀλυμπίας κλυσθῆναι ποτε τὴν περὶ τὸ 30
ἱερὸν γῆν, τὴν δὲ λίμνην συσταλῆναι· τὸν Ἐρασῖνον
δὲ παρὰ Στυμφάλου ρέοντα ὑποδύντα ὑπὸ τὸ ὄρος ἐν

τῇ Ἀργείᾳ πάλιν ἀναφανῆναι· διὸ δὴ καὶ Ἰφικράτη
πολιορκοῦντα τὸν Στύμφαλον καὶ μηδὲν περαίνοντα
ἐπιχειρῆσαι τὴν κατάδυσιν ἀποφράξαι σπόγγους πο-
ρισάμενον πολλοὺς, παύσασθαι δὲ διοσημίας γενομέ-
5 νης. περὶ Φενεὸν δ' ἔστι καὶ τὸ καλούμενον Στυγὸς
ὔδωρ, λιβάδιον ὀλεθρίου ὕδατος νομιζόμενον ἱερόν.
τοσαῦτα καὶ περὶ Ἀρκαδίας εἰρήσθω.

Πολυβίου δ' εἰρηκότος τὸ ἀπὸ Μαλεῶν ἐπὶ τὰς 5
ἄρκτους μέχρι τοῦ Ἰστροῦ διάστημα περὶ μυρίους στα-
10 δίους, εὐθύνει τοῦτο ὁ Ἀρτεμίδωρος οὐκ ἀτόπως, ἐπὶ
μὲν Αἴγιον χιλίους καὶ [τετρακοσ]ίους εἶναι λέγων ἐκ
Μαλεῶν ὁδόν, ἐνθ' ἐνδε εἰς [Κίρραν πλοῦν] διακοσίων,
ἐνθ' ἐνδε διὰ Ἡρακλείας [εἰς Θυμακοὺς] πεντακοσίων
ὁδόν, εἶτα εἰς Λάρισαν [καὶ τὸν Πηνειὸν] τριακοσίων
15 τετταράκοντα, εἶτα διὰ [τῶν Τεμπῶν ἐπὶ τὰς Πη]νειοῦ
ἐκβολὰς διακοσίων τετταράκον[τα, εἶτα εἰς τὴν Θεσσα]-
λονίκειαν ἑξακοσίων ἑξήκοντα, ἐντεῦ[θεν ἐπ' Ἰστρον
δι' Εἰδομ]ένης καὶ Στόβων καὶ Λαρδανίων τρισχι[λίους
καὶ διακοσί]ους. κατ' ἐκείνον δὴ συμβαίνει τὸ ἐκ [τοῦ
20 Ἰστροῦ ἐπὶ τὰς Μαλ]έας ἑξακισχιλίων πεντακοσίων.
αἷτιον δὲ τούτου τὸ μὴ τὴν σύντομον καταμετρεῖν,
ἀλλὰ τὴν τυχοῦσαν ἣν ἐπορεύθη τῶν στρατηγῶν τις.

Οὐκ ἄτοπον δ' ἴσως καὶ τοὺς οἰκιστὰς προσθεῖναι
τῶν τὴν Πελοπόννησον οἰκούντων, οὓς εἶπεν Ἐφορος,
25 τοὺς μετὰ τὴν Ἡρακλειδῶν ἀάθοδον· Κορίνθου μὲν
Ἀλήτην, Σικυῶνος δὲ Φάλην, Ἀχαΐας δὲ Τισαμενόν,
Ἥλιδος δ' Ὀξύλον, Μεσσήνης δὲ Κρεσφόντην, Λακε-
δαίμονος δ' Εὐρυσθένη καὶ Προκλή, Ἀργούς δὲ Τή-
μενον κ[αὶ Κισσόν, τῶν δὲ] περὶ τὴν Ἀκτὴν Ἀγραῖον
30 καὶ Δημόφοντην.

C.390

1

Περιοδευκόσι δὲ τὴν Πελοπόννησον, ἣν πρώτην
 ἔφαμεν καὶ ἐλαχίστην τῶν συντιθεσῶν τὴν Ἑλλάδα
 χειρρονήσων, ἐφεξῆς ἂν εἴη τὰς συνεχεῖς ἐπελθεῖν. ἦν 5
 δὲ δευτέρα μὲν ἡ προστιθεῖσα τῇ Πελοποννήσῳ τὴν
 Μεγαρίδα, ὥστε τὸν Κρομμυῶνα Μεγαρέων εἶναι καὶ
 μὴ Κορινθίων· τρίτη δὲ ἡ πρὸς ταύτῃ προσλαμβά-
 νουσα τὴν Ἀττικὴν καὶ τὴν Βοιωτίαν καὶ τῆς Φωκίδος
 τι μέρος καὶ τῶν Ἐπικνημιδίων Λοκρῶν. περὶ τούτων 10
 οὖν [λεκτέον]. φησὶ δ' Εὐδόξος, εἴ τις νοήσειεν ἀπὸ
 τῶν Κεραυνίων ὁρῶν ἐπὶ Σούνιον τὸ τῆς Ἀττικῆς
 ἄκρον ἐπὶ τὰ πρὸς ἑω μέρη τεταμένην εὐθεῖαν, ἐν δε-
 ξιά μὲν ἀπολείψειν τὴν Πελοπόννησον ὅλην πρὸς νό-
 τον, ἐν ἀριστερᾷ δὲ καὶ πρὸς τὴν ἄρκτον τὴν ἀπὸ τῶν 15
 Κεραυνίων ὁρῶν συνεχεῇ παραλίαν μέχρι τοῦ Κρισαίου
 κόλπου καὶ τῆς Μεγαρίδος καὶ συμπάσης τῆς Ἀττικῆς·
 νομίζει δ' οὐδ' ἂν κ[οιλαίνεσθαι οὕτως] τὴν ἡῶνα τὴν
 ἀπὸ Σουνίου μέχρι [τοῦ Ἰσθμοῦ ὥστε μεγάλην] ἔχειν
 ἐπιστροφὴν, εἰ μὴ προσῇ τῇ [ἡῶνι ταύτῃ καὶ] τὰ συν- 20
 εχῇ τῷ Ἰσθμῷ χωρὶα τὰ [ποιοῦντα τὸν κόλπον τὸν]
 Ἑρμιονικὸν καὶ τὴν Ἀκτὴν· ὥς δ' αὐ[τὼς οὐδ' ἂν τὴν
 ἀπὸ τῶν Κεραυνίων ἐπὶ τὸν Κορινθιακὸν κόλπον
 ἔχειν τινὰ τοσαύτην ἐπιστρο]φὴν ὥστε κοιλαίνεσθαι
 κολποειδῶς καθ' αὐ[τήν, εἰ μὴ τὸ] Ῥίον καὶ τὸ Ἀν- 25
 τίρριον συναγόμενα εἰς στενὸν [ἐποίει τὴν] ἔμφασιν
 ταύτην· ὁμοίως δὲ καὶ τὰ περι[έχοντα] τὸν μυχόν, εἰς
 ἃ καταλήγειν συμβαίνει τὴν [ταύτην] θάλατταν.

2

Οὕτω δ' εἰρηκότος Εὐδόξου, μαθηματικοῦ ἀν-
 C.391δρὸς καὶ σχημάτων ἐμπείρου καὶ κλιμάτων καὶ τοὺς 30
 τόπους τούτους εἰδότος, δεῖ νοεῖν τήνδε τὴν πλευρὰν
 τῆς Ἀττικῆς σὺν τῇ Μεγαρίδι τὴν ἀπὸ Σουνίου μέχρι

Ἰσθμοῦ κοίλην μὲν ἄλλ' ἐπὶ μικρόν. ἐνταῦθα δ' ἐστὶ κατὰ μέσην που τὴν λεχθεῖσαν γραμμὴν ὁ Πειραιεὺς τὸ τῶν Ἀθηναίων ἐπίνειον. διέχει γὰρ τοῦ μὲν Σχοινοῦντος τοῦ κατὰ τὸν Ἰσθμὸν περὶ τριακοσίους πεντή-
 5 κοντα σταδίους, τοῦ δὲ Σουνίου τριάκοντα καὶ τριακοσίους· [τός]ον πῶς ἐστὶ διάστημα καὶ τὸ ἐπὶ Πηγὰς ἀπὸ τοῦ Πει[ραιῶς], ὅσον περ καὶ ἐπὶ Σχοινοῦντα· δέκα δ' ὅμως στα[δίοις] πλεονάζειν φασί. κάμψαντι δὲ τὸ Σούνιον πρὸς ἄρκτον μὲν ὁ πλοῦς, ἐκκλίνων [δὲ]
 10 πρὸς δύσιν.

Ἀκτὴ δ' ἐστὶν [ἡ Ἀττικὴ] ἀμφιθάλαττος, στενὴ τὸ 3
 πρῶτον, εἴτ' εἰς τὴν μεσόγαιαν πλατύνεται, μηνοειδῆ δ' οὐδὲν ἦτον ἐπιστροφὴν λαμβάνει πρὸς Ὠρωπὸν τῆς Βοιωτίας τὸ κυρτὸν ἔχουσαν πρὸς θαλάττῃ· τοῦτο
 15 δ' ἐστὶ τὸ δεύτερον πλευρὸν ἐφ' ὃν τῆς Ἀττικῆς. τὸ δὲ λοιπὸν ἤδη τὸ προσάρκτιόν ἐστὶ πλευρὸν ἀπὸ τῆς Ὠρωπίας ἐπὶ δύσιν παρατείνον μέχρι τῆς Μεγαρίδος, ἡ Ἀττικὴ ὄρεινὴ, πολυώνυμός τις, διείργουσα τὴν Βοιωτίαν ἀπὸ τῆς Ἀττικῆς· ὥσθ', ὅπερ εἶπον ἐν τοῖς
 20 πρόσθεν, ἰσθμὸν γίνεσθαι τὴν Βοιωτίαν ἀμφιθάλαττον οὖσαν τῆς τρίτης χειρρονήσου τῆς λεχθείσης, ἀπολαμβάνοντα ἐντὸς τὰ πρὸς τῇ Πελοποννήσῳ τὴν τε Μεγαρίδα καὶ τὴν Ἀττικὴν. διὰ δὲ τοῦτο καὶ Ἀκτὴν φασὶ λεχθῆναι τὸ παλαιὸν καὶ Ἀκτικὴν τὴν νῦν Ἀττι-
 25 κὴν παρονομασθεῖσαν, ὅτι τοῖς ὄρεσιν ὑποπέπτωκε τὸ πλεῖστον μέρος αὐτῆς ἀλιτεὺς καὶ στενόν, μήκει δ' ἀξιολόγῳ κεκρημένον, προπεπτωκὸς μέχρι Σουνίου. ταύτας οὖν διέξιμεν ἀναλα[βόντες] πάλιν ἀπὸ τῆς π[α]-
 30 ραλίας ἀφ' ἧς περ ἀπελίπομεν.

Μετὰ δὲ Κρομμυῶνα ὑπέρκεινται τῆς * Ἀττικῆς 4
 αἱ Σκειρωνίδες πέτραι ἀρόδον οὐκ ἀπολείπουσαι πρὸς θαλάττῃ· ὑπὲρ αὐτῶν δ' ἐστὶν ἡ ὁδὸς ἡ ἐπὶ Μεγάρων

καὶ τῆς Ἀττικῆς ἀπὸ τοῦ Ἰσθμοῦ· οὕτω δὲ σφόδρα πλησιάζει ταῖς πέτραις ἢ ὁδὸς ὥστε πολλαχοῦ καὶ παρὰ κρημνὸς ἐστὶ διὰ τὸ ὑπερκείμενον ὄρος δύσβατόν τε καὶ ὑψηλόν· ἐνταῦθα δὲ μυθεύεται τὰ περὶ τοῦ Σκείρωνος καὶ τοῦ Πιτυοκάμπτου τῶν ληξομένων τὴν λε- 5 χθεῖσαν ὄρεινήν, οὓς καθεῖλε Θησεύς. ἀπὸ δὲ τῶν ἄκρων τούτων καταιγίζοντα σκαιὸν τὸν ἀργέστην σκείρωνα προσηγορεύουσιν Ἀθηναῖοι. μετὰ δὲ τὰς Σκειρωνίδας πέτρας ἄκρα πρόκειται Μινῶα ποιοῦσα τὸν ἐν τῇ Νίσαια λιμένα. ἢ δὲ Νίσαια ἐπίνειόν ἐστιν τῶν 10 Μεγάρων δεκαοκτὼ σταδίους τῆς πόλεως διέχον, σκέ-
C.392 λεισιν ἐκατέρωθεν συναπτόμενον πρὸς αὐτήν· ἐκα-
λειτο δὲ καὶ τοῦτο Μινῶα.

- 6 Τὸ παλαιὸν μὲν οὖν Ἴωνες εἶχον τὴν χώραν ταύ-
την οἵπερ καὶ τὴν Ἀττικὴν, οὕτω τῶν Μεγάρων ἐκτι- 15
σμένων· διόπερ οὐδ' ὁ ποιητὴς μέμνηται τῶν τόπων
τούτων ἰδίως, ἀλλ' Ἀθηναίους καλῶν τοὺς ἐν τῇ Ἀτ-
τικῇ πάντας συμπεριεῖληψε καὶ τούτους τῷ κοινῷ ὀνό-
ματι Ἀθηναίους νομίζων, ὥς ὅταν φῇ ἐν τῷ καταλό-
γῳ „οἱ δ' ἄρ' Ἀθήνας εἶχον, ἐκτιμέμενον πτολίεθρον“ 20
δέχεσθαι δεῖ καὶ τοὺς νῦν Μεγαρέας, ὥς καὶ τούτους
μετασχόντας τῆς στρατείας. σημεῖον δέ· ἢ γὰρ Ἀττικὴ
τὸ παλαιὸν Ἰωνία καὶ Ἰὰς ἐκαλεῖτο, καὶ ὁ ποιητὴς ὅταν
φῇ „ἐνθα δὲ Βοιωτοὶ καὶ Ἰάονες“ τοὺς Ἀθηναίους
6 λέγει· ταύτης δ' ἦν μερὶς καὶ ἡ Μεγαρίς. καὶ δὴ καὶ 25
τῶν ὀρίων ἀμφισβητοῦντες πολλάκις οἱ τε Πελοπον-
νήσιοι καὶ Ἴωνες, ἐν οἷς ἦν καὶ ἡ Κρομμυωνία, συνέ-
βησαν καὶ στήλην ἔστησαν ἐπὶ τοῦ συνομολογηθέντος
τόπου περὶ αὐτὸν τὸν Ἰσθμόν, ἐπιγραφὴν ἔχουσιν
ἐπὶ μὲν τοῦ πρὸς τὴν Πελοπόννησον μέρους „τάδ' ἐστὶ 30
„Πελοπόννησος οὐκ Ἰωνία,“ ἐπὶ δὲ τοῦ πρὸς Μέγαρρα
„τάδ' οὐκ Πελοπόννησος ἀλλ' Ἰωνία.“ οἷ τε δὴ τὴν

Ἀτθίδα συγγράψαντες πολλὰ διαφωνοῦντες τοῦτό γε ὁμολογοῦσιν οἳ γε λόγου ἄξιοι, διότι τῶν Πανδιονιδῶν τετάρων ὄντων, Αἰγέως τε καὶ Λύκου καὶ Πάλλαντος καὶ τετάρτου Νίσου, καὶ τῆς Ἀττικῆς εἰς τέ-
 5 ταρα μέρη διαιρεθείσης, ὁ Νίσος τὴν Μεγαρίδα λά-
 χοι καὶ κτίσαι τὴν Νίσαιαν. Φιλόχορος μὲν οὖν ἀπὸ Ἰσθμοῦ μέχρι τοῦ Πυθίου διήκειν αὐτοῦ φησι τὴν ἀρ-
 χήν, "Ανδρῶν δὲ μέχρι Ἐλευσίνος καὶ τοῦ Θωριασίου
 πεδίου. τὴν δ' εἰς τέτταρα μέρη διανομὴν ἄλλων ἄλ-
 10 λως εἰρηκότων ἀρκεῖ ταῦτα παρὰ Σοφοκλέους λαβεῖν·
 φησὶ δ' ὁ Αἰγέως ὅτι ὁ πατὴρ ὥρισεν ἐμοὶ μὲν ἀ[πελ-
 θεῖ]ν εἰς ἀκτὰς τῆσδε γῆς πρὸς βεῖα νείμας· [εἰτ]α Λύ-
 κῳ „τὸν ἀντίπλευρον κῆπον Εὐβοίας νέμει, Νίσῳ δὲ
 „τὴν ὁμαυλον ἐξαιρεῖ χθόνα Σκείρωνος ἀκτῆς, τῆς δὲ
 15 „γῆς τὸ πρὸς νότον ὁ σκληρὸς οὗτος καὶ γίγαντας ἐκ-
 „τρέφων εἰληχε Πάλλας.“ ὅτι μὲν οὖν ἡ Μεγαρίς τῆς
 Ἀττικῆς μέρος ἦν, τούτοις χρῶνται τεκμηρίοις.

Μετὰ δὲ τὴν τῶν Ἡρακλειδῶν κἀθοδὸν καὶ τὸν 7
 τῆς χώρας μερισμὸν ὑπ' αὐτῶν καὶ τῶν συγκατελθόν-
 20 των αὐτοῖς Λωριέων ἐκπεσεῖν τῆς οἰκείας συνέβη πολ-
 λούς εἰς τὴν Ἀττικὴν, ὧν ἦν καὶ ὁ τῆς Μεσσήνης βασι-
 λεὺς Μέλανθος· οὗτος δὲ καὶ τῶν Ἀθηναίων ἐβασί-
 λευσεν ἐκόντων, νικήσας ἐκ μονομαχίας τὸν τῶν Βοι-
 ωτῶν βασιλέα Ξάνθον. εὐανδροῦσης δὲ τῆς Ἀττικῆς
 25 διὰ τοὺς φυγάδας φοβηθέντες οἱ Ἡρακλεῖδαι, παρ-
 ξυνόντων αὐτοὺς μάλιστα τῶν ἐν Κορίνθῳ καὶ τῶν ἐν
 Μεσσήνῃ, τῶν μὲν διὰ τὴν γειννίαν, τῶν δὲ ὅτι Κό-
 δρος τῆς Ἀττικῆς ἐβασίλευε τότε ὁ τοῦ Μελάνθου παῖς,
 ἐστράτευσαν ἐπὶ τὴν Ἀττικὴν· ἡττηθέντες δὲ μάχῃ τῆς
 30 μὲν ἄλλης ἐξέστησαν γῆς, τὴν Μεγαρικὴν δὲ κατέσχον
 καὶ τὴν τε πόλιν ἐκτίσαν τὰ Μέγαρα καὶ τοὺς ἀνθρώ-
 πους Λωριέας ἀντὶ Ἰώνων ἐποίησαν· ἡφάνισαν δὲ καὶ

τὴν στήλην τὴν ὀρίζουσιν τοὺς τε Ἰωνας καὶ τοὺς Πελοποννησίους.

- 8 Πολλαῖς δὲ κέχρηται μεταβολαῖς ἡ τῶν Μεγαρέων πόλις, συμμένει δ' ὅμως μέχρι νῦν. ἔσχε δέ ποτε καὶ φιλοσόφων διατριβὰς τῶν προσαγορευθέντων Μεγα- 5 ρικῶν, Εὐκλείδην διαδεξαμένον ἄνδρα Σωκρατικόν, Μεγαρέα τὸ γένος· καθάπερ καὶ Φαίδωνα μὲν τὸν Ἠλεῖον οἱ Ἠλείακοι διεδέξαντο, καὶ τοῦτον Σωκρατικόν, ὃν ἦν καὶ Πύρρων, Μενέδημον δὲ τὸν Ἐρετριέα οἱ Ἐρετρικοί. ἔστι δ' ἡ χώρα τῶν Μεγαρέων παράλυ- 10 προς καθάπερ καὶ ἡ Ἀττική, καὶ τὸ πλεον αὐτῆς ἐπέχει τὰ καλούμενα Ὀνεῖα ὄρη, ῥάχιδες τις μηχανομένη μὲν ἀπὸ τῶν Σκειρωνίδων πετρῶν ἐπὶ τὴν Βοιωτίαν καὶ τὸν Κιθαιρῶνα, διαίρουσα δὲ τὴν κατὰ Νίσαιαν θάλατταν ἀπὸ τῆς κατ[ὰ τὰς Παγὰς] Ἀλκωνίδος προσ- 15 αγορευομένης.

- 9 Πρόκειται δ' ἀπὸ Νισαίας πλέοντι εἰς τὴν Ἀττικὴν πέντε νησία. εἴτα Σαλαμῖς ἐβδομήκοντά που σταδίων οὖσα τὸ μήκος, οἱ δ' ὀγδοήκοντά φασιν· ἔχει δ' ὁμώνυμον πόλιν τὴν μὲν ἀρχαίαν ἔρημον πρὸς Αἰγι- 20 ναν τετραμμένην καὶ πρὸς νότον (καθάπερ καὶ Αἰσχύλος εἴρηκεν, „Αἰγινα δ' αὕτη πρὸς νότου κεῖται πνοάς“), τὴν δὲ νῦν ἐν κόλπῳ κειμένην ἐπὶ χερρονησοειδοῦς τόπου συνάπτουτος πρὸς τὴν Ἀττικὴν. ἐκαλεῖτο δ' ἐτέροις ὀνόμασι τὸ παλαιόν· καὶ γὰρ Σκιρὰς καὶ Κύ- 25 χρεῖα ἀπὸ τινων ἡρώων, ἀφ' οὗ μὲν Ἀθηναῖα τε λέγεται Σκιρὰς καὶ τόπος Σκίρα ἐν τῇ Ἀττικῇ καὶ ἐπὶ Σκίρῳ ἱεροποιία τις καὶ ὁ μὲν ὁ Σκιροφοριῶν, ἀφ' οὗ δὲ καὶ Κυχρεΐδης ὄφις, ὃν φησιν Ἡσίοδος τραφέντα ὑπὸ Κυ- 30 χρεῶς ἐξελαθῆναι ὑπὸ Εὐρυλόχου λυμαίνόμενον τὴν νῆσον, ὑποδέξασθαι δὲ αὐτὸν τὴν Λήμητρα εἰς Ἐλευ- 0.394 στίνα καὶ γενέσθαι ταύτης ἀμφίπολον. ὠνομάσθη δὲ

καὶ Πιτυοῦσσα ἀπὸ τοῦ φυτοῦ· ἐπιφανῆς δὲ ἡ νῆσος
 ὑπῆρξε διὰ τε τοὺς Αἰακίδας ἐπάρξαντας αὐτῆς, καὶ
 μάλιστα δι' Αἴαντα τὸν Τελαμώνιον, καὶ διὰ τὸ περὶ
 τὴν νῆσον ταύτην καταναυμαχηθῆναι Πέρξην ὑπὸ τῶν
 5 Ἑλλήνων καὶ φυγεῖν εἰς τὴν οἰκείαν. συναπέλαυσαν δὲ
 καὶ Αἰγινῆται τῆς περὶ τὸν ἄγωνά τοῦτον δόξης, γεί-
 τονές τε ὄντες καὶ ναυτικὸν ἀξιόλογον παρασχόμενοι.
 Βῳκάρος δ' ἐστὶν ἐν Σαλαμῖνι ποταμός, ὁ νῦν Βωκα-
 λία καλούμενος.

- 10 Καὶ νῦν μὲν ἔχουσιν Ἀθηναῖοι τὴν νῆσον, τὸ δὲ 10
 παλαιὸν πρὸς Μεγαρέας ὑπῆρξεν αὐτοῖς ἔρις περὶ αὐ-
 τῆς· καὶ φασιν οἱ μὲν Πεισίστρατον οἱ δὲ Σόλωνα
 παρεγγράψαντα ἐν τῷ νεῶν καταλόγῳ μετὰ τὸ ἔπος
 τοῦτο „Αἴας δ' ἐκ Σαλαμῖνος ἄγεν δυοκαίδεκα νῆας“
 15 ἐξῆς τοῦτο „στῆσε δ' ἄγων, ἴν' Ἀθηναίων ἵσταντο φά-
 „λαγγες“, μάρτυρι χρήσασθαι τῷ ποιητῇ τοῦ τὴν νῆσον
 ἐξ ἀρχῆς Ἀθηναίων ὑπάρξαι. οὐ παραδέχονται δὲ τοῦθ'
 οἱ κριτικοὶ διὰ τὸ πολλὰ τῶν ἐπῶν ἀντιμαρτυρεῖν αὐ-
 τοῖς. διὰ τί γὰρ ναυλοχῶν ἔσχατος φαίνεται ὁ Αἴας, οὐ
 20 μετ' Ἀθηναίων ἀλλὰ μετὰ τῶν ὑπὸ Πρωτεσιλάῳ Θετ-
 ταλῶν; „ἐνθ' ἔσαν Αἴαντός τε νέες καὶ Πρωτεσιλάου“
 καὶ ἐν τῇ ἐπιπωλήσει ὁ Ἀγαμέμνων „εὗρ' υἱὸν Πετσεῶ
 „Μενεσθῆα πλη[ξιππον ἐστα]ότ', ἀμφὶ δ' Ἀθηναῖοι,
 „μήστωρες αὐτῆς. αὐτὰρ ὁ πλησίον ἐστήκει πολύμη-
 25 „τις Ὀδυσσεύς, παρ δὲ Κεφαλλήνων ἀμφὶ στίχες.“
 ἐπὶ δὲ τὸν Αἴαντα καὶ τοὺς Σαλαμινίους πάλιν „ἦλθε
 „δ' ἐπ' Αἰάντεσσι“, καὶ παρ' αὐτοὺς „Ἰδομενεὺς δ'
 „ἐτέρωθεν“, οὐ Μενεσθεύς. οἱ μὲν δὲ Ἀθηναῖοι τοι-
 αύτην τινὰ σκήψασθαι μαρτυρίαν παρ' Ὀμήρου δο-
 30 κοῦσιν, οἱ δὲ Μεγαρεῖς ἀντιπαρωδῆσαι οὕτως „Αἴας
 „δ' ἐκ Σαλαμῖνος ἄγεν νέας, ἐκ τε Πολίχνης, ἐκ τ'
 „Αἰγυρίουσσης Νισαίης τε Τριπόδων τε.“ ἃ ἐστὶ χωρία

Μεγαρικά, ἃν οἱ Τρίποδες Τριποδίσκιον λέγονται, καθ' ὃν νῦν ἀγορὰ τῶν Μεγάρων κεῖται.

- 11 Τινες δ' ἀπὸ τοῦ τὴν Ἱέρειαν τῆς Πολιάδος Ἀθη-
C.395 νῆς χλωροῦ τυροῦ τοῦ μὲν ἐπιχωρίου μὴ ἄπτεσθαι,
ξενικὸν δὲ μόνον προσφέρεισθαι, χρῆσθαι δὲ καὶ τῷ 5
Σαλαμινίῳ, ξένην φασὶ τῆς Ἀττικῆς τὴν Σαλαμῖνα
οὐκ εἶναι· καὶ γὰρ τὸν ἀπὸ τῶν ἄλλων νήσων τῶν ὁμολο-
γούμενως τῇ Ἀττικῇ προσχώρων προσφέρεται, ξενικὸν
πάντα τὸν διαπόντιον νοησάντων τῶν ἀρξάντων τοῦ
ἔθνους τούτου. ἔοικε δὲ τὸ παλαιὸν ἢ νῦν Σαλαμῖς καθ' 10
αὐτὴν τάττεσθαι, τὰ δὲ Μέγαρα τῆς Ἀττικῆς ὑπάρξαι
μέρος. ἐν δὲ τῇ παραλίᾳ τῇ κατὰ Σαλαμῖνα κεῖσθαι
συμβαίνει τὰ ὅρια τῆς τε Μεγαρικῆς καὶ τῆς Ἀττικῆς,
ὄρη δύο ἃ καλοῦσι Κέρατα.

- 12 Εἰτ' Ἐλευσίς πόλις, ἐν ᾗ τὸ τῆς Ἀθήνητρος ἱερὸν 15
τῆς Ἐλευσινίας καὶ ὁ μυστικὸς σηκός, ὃν κατεσκεύα-
σεν Ἰκτῖνος ὄχλον θεάτρον δέξασθαι δυνάμενον, ὃς
καὶ τὸν παρθενῶνα ἐποίησε τὸν ἐν ἀκροπόλει τῇ Ἀθη-
νᾷ, Περικλέους ἐπιστατοῦντος τῶν ἔργων· ἐν δὲ τοῖς
δήμοις καταριθμεῖται ἡ πόλις. 20

- 13 Εἰτα τὸ Θριάσιον πεδίον καὶ ὁμῶννμος αἰγιαλὸς
καὶ δῆμος· εἴθ' ἡ ἄκρα ἢ Ἀμφιάλη καὶ τὸ ὑπερκείμε-
νον λατόμιον καὶ ὁ εἰς Σαλαμῖνα πορθμὸς ὅσον δι-
στάδιος, ὃν διαχοῦν ἐπειρᾶτο Ξέρξης, ἐφθη δὲ ἡ ναυ-
μαχία γενομένη καὶ φνυγὴ τῶν Περσῶν. ἐνταῦθα δὲ 25
καὶ αἱ Φαρμακοῦσσαι, δύο νησίαι ὧν ἐν τῷ μέλζονι Κίρ-
κης τάφος δεικνυται.

- 14 Ὑπὲρ δὲ τῆς ἀκτῆς ταύτης ὄρος ἐστὶν ὃ καλεῖται
Κορυδαλλός, καὶ ὁ δῆμος οἱ Κορυδαλλεῖς· εἴθ' ὁ Φω-
ρων λιμὴν καὶ ἡ Ψυττάλεια, νησίον ἐρημον πετρῶδες 30
ὃ τινες εἶπον λήμην τοῦ Πειραιῶς· πλησίον δὲ καὶ ἡ
Ἀταλάντη ὁμῶννμος τῇ περὶ Εὐβοίαν καὶ Δοκρούς,

καὶ ἄλλο νησίον ὁμοιον τῇ Ψυτταλείᾳ καὶ τοῦτο· εἶδ' ὁ Πειραιεὺς καὶ αὐτὸς ἐν τοῖς δῆμοις ταττόμενος καὶ ἡ Μουνυχία.

Λόφος δ' ἐστὶν ἡ Μουνυχία χειρρονησιάζων καὶ 15
 5 κοῖλος καὶ ὑπόνομος πολὺ μέρος φύσει τε καὶ ἐπίτηδες ὥστ' οἰκήσεις δέχεσθαι, στομίῳ δὲ μικρῷ τὴν εἰσοδὸν ἔχων. ὑποπίπτουσι δ' αὐτῷ λιμένες τρεῖς. τὸ μὲν οὖν παλαιὸν ἐτετείχιστο καὶ συνώκιστο ἡ Μουνυχία παρα-
 πλησίως ὥσπερ ἡ τῶν Ῥοδίων πόλις, προσειληφυῖα τῷ
 10 περιβόλῳ τὸν τε Πειραιᾶ καὶ τοὺς λιμένας πλήρεις νεωρίων, ἐν οἷς καὶ ἡ ὀπλοθήκη Φίλωνος ἔργον· ἄξιόν τε ἦν ναύσταθμον ταῖς τετρακοσίαις ναυσίν, αἷν οὐκ ἐλάττους ἔστελλον Ἀθηναῖοι. τῷ δὲ τείχει τούτῳ συνῆ-
 15 ἦν μακρὰ τεῖχη τετταράκοντα σταδίων τὸ μῆκος, συν-
 ἄπτοντα τὸ ἄστυ τῷ Πειραιεῖ. οἱ δὲ πολλοὶ πόλεμοι τὸ τεῖχος κατήρειψαν καὶ τὸ τῆς Μουνυχίας ἔρυμα, τὸν τε Πειραιᾶ συνέστειλαν εἰς ὀλίγην κατοικίαν τὴν περὶ 0.396
 τοὺς λιμένας καὶ τὸ ἱερὸν τοῦ Διὸς τοῦ σωτῆρος· τοῦ
 20 δὲ ἱεροῦ τὰ μὲν στοῦδια ἔχει πίνακας θαυμαστούς, ἔργα τῶν ἐπιφανῶν τεχνιτῶν, τὸ δ' ὑπαιθρον ἀνδριάντας. κατέσπασται δὲ καὶ τὰ μακρὰ τεῖχη, Λακεδαιμονίων μὲν καθελόντων πρότερον Ῥωμαίων δ' ὕστερον, ἡνίκα Σύλλας ἐκ πολιορκίας εἶλε καὶ τὸν Πειραιᾶ καὶ τὸ ἄστυ.
 25 Τὸ δ' ἄστυ αὐτὸ πέτρα ἐστὶν ἐν πεδίῳ περιοικου- 16
 μένη κύκλῳ· ἐπὶ δὲ τῇ πέτρᾳ τὸ τῆς Ἀθηνᾶς ἱερὸν ὃ τε ἀρχαῖος νεὸς ὁ τῆς Πολιάδος ἐν ᾧ ὁ ἄσβεστος λύ-
 χνος, καὶ ὁ παρθενῶν ὃν ἐποίησεν Ἰκτίνος, ἐν ᾧ τὸ τοῦ Φειδίου ἔργον ἐλεφάντινον ἡ Ἀθηνᾶ. ἀλλὰ γὰρ
 30 εἰς πλῆθος ἐμπίπτων τῶν περὶ τῆς πόλεως ταύτης ὑμνουμένων τε καὶ διαβωμένων ὁκνῶ πλεονάζειν, μὴ συμβῇ τῆς προθέσεως ἐκπεσεῖν τὴν γραφήν. ἐπεισι

γὰρ ὁ φησιν Ἡγησίας „ὁρῶ τὴν ἀκρόπολιν καὶ τὸ πε-
 „ριττῆς τριαίνης ἐκεῖθι σημεῖον, ὁρῶ τὴν Ἐλευσίνα, καὶ
 „τῶν ἱερῶν γέγονα μύστης· ἐκεῖνο Λεωκόριον, τοῦτο
 „Θησεῖον· οὐ δύναμαι δηλῶσαι καθ' ἓν ἕκαστον· ἢ
 „γὰρ Ἀττικὴ θεῶν αὐτοῖς καταλαβόντων καὶ 5
 „τῶν προγόνων ἡρώων“ οὗτος μὲν οὖν ἐνὸς
 ἐμνήσθη τῶν ἐν ἀκροπόλει σημείων, Πολέμων δ' ὁ πε-
 ριγηγῆς τέτταρα βιβλία συνέγραψε περὶ τῶν ἀναθη-
 μάτων τῶν ἐν ἀκροπόλει· τὸ δ' ἀνάλογον συμβαίνει
 καὶ ἐπὶ τῶν ἄλλων τῆς πόλεως μερῶν καὶ τῆς χώρας· 10
 Ἐλευσινὰ τε εἰπὼν ἕνα τῶν ἑκατὸν ἐβδομήκοντα δή-
 μων πρὸς δὲ καὶ τεττάρων, ὥς φασιν, οὐδένα τῶν
 ἄλλων ὠνόμακεν.

- 17 Ἐχουσι δὲ καὶ εἰ μὴ πάντες οἳ γε πολλοὶ μυθοποι-
 ιας συχνὰς καὶ ἱστορίας· καθάπερ Ἀφιδνα μὲν τὴν τῆς 15
 Ἑλένης ἀρπαγὴν ὑπὸ Θησέως καὶ τὴν ὑπὸ τῶν Διοσ-
 κούρων ἐκπόρθησιν αὐτῆς καὶ ἀνακομιδὴν τῆς ἀδελ-
 φῆς, Μαραθῶν δὲ τὸν Περσικὸν ἀγῶνα, Ῥαμνοῦς δὲ
 τὸ τῆς Νεμέσεως ξόανον, ὃ τινες μὲν Διοδότου φασὶν
 ἔργον τινὲς δὲ Ἀγορακρίτου τοῦ Παρίου, καὶ μεγέθει 20
 καὶ κάλλει σφόδρα καταρθωμένον καὶ ἐνάμιλλον τοῖς
 Φειδίου ἔργοις. οὕτω δὲ καὶ Δεκέλεια μὲν τὸ ὀρμητή-
 ριον τῶν Πελοποννησίων κατὰ τὸν Δεκελεικὸν πόλε-
 μον, Φυλὴ δὲ ὅθεν ἐπήγαγε τὸν δῆμον Θρασύβουλος
 εἰς Πειραιᾶ ἀνέειθεν εἰς ἄστν. οὕτω δὲ καὶ ἐπ' ἄλλων 25
 πλειόνων ἔστιν ἱστορεῖν πολλά· καὶ ἔτι τὸ Λεωκόριον
 καὶ τὸ Θη[σεῖον μύθο]ς ἔχει, καὶ τὸ Ἀνύκειον καὶ τὸ
 Ὀλυμπικόν ὃ τὸ Ὀλύμπιον, ὅπερ ἡμιτελὲς
 κατέλιπε τελευτῶν ὁ ἀναθεὶς βασιλεὺς· ὁμοίως δὲ καὶ ἡ
 Ἀκαδημία καὶ οἱ κῆποι τῶν φιλοσόφων καὶ τὸ Ὠιδεῖον 30
 καὶ ἡ ποικίλη στοὰ καὶ τὰ ἱερὰ τὰ ἐν τῇ πό[λει πλείστα]
 ἔχοντα τεχνιτῶν ἔργα.

Πολὺ δ' ἂν πλείων εἴη λόγος, εἰ τοὺς ἀρχηγέτας^{0.397}
 τοῦ κτίσματος ἐξετάζοι τις ἀρξάμενος ἀπὸ Κέκροπος.¹⁸
 οὐδὲ γὰρ ὁμοίως λέγουσιν ἅπαντες. τοῦτο δὲ καὶ ἀπὸ
 τῶν ὀνομάτων δῆλον· Ἀκτὴν μὲν γὰρ ἀπὸ Ἀκταίω-
 5 νος φασίν, Ἀτθίδα δὲ καὶ Ἀττικὴν ἀπὸ Ἀτθίδος τῆς
 Κραναοῦ, ἀφ' οὗ καὶ Κραναοὶ οἱ ἔνοικοι, Μοψοπίαν
 δὲ ἀπὸ Μοψόπου, Ἰωνίαν δὲ ἀπὸ Ἰωνος τοῦ Ξούθου,
 Προσειδωνίαν δὲ καὶ Ἀθήνας ἀπὸ τῶν ἐπωνύμων θεῶν.
 εἴρηται δ' ὅτι κἀνταῦθα φαίνεται τὸ τῶν Πελασγῶν
 10 ἔθνος ἐπιδημῆσαν, καὶ διότι ὑπὸ τῶν Ἀττικῶν Πελασ-
 γοὶ προσηγορεύθησαν διὰ τὴν πλάνην.

Ὅσῳ δὲ πλέον ἐστὶ τὸ φιλότιμον περὶ τὰ ἔνδοξα¹⁹
 καὶ πλείους οἱ λαλήσαντές τι περὶ αὐτῶν, τοσῶδε μεί-
 ζων ὁ ἔλεγχος, ἂν μὴ κρατῇ τις τῆς ἱστορίας· οἷον ἐν τῇ
 15 συναγωγῇ τῶν ποταμῶν ὁ Καλλίμαχος γελᾶν φησιν,
 εἰ τις θαρρεῖ γράφειν τὰς τῶν Ἀθηναίων παρθένους
 „ἀφύσσεσθαι καθαρὸν γάνος Ἡριδανοῖο,“ οὗ καὶ τὰ
 βοσκήματα ἀπόσχεται ἂν. εἰσὶ μὲν νῦν αἱ πηγαὶ κα-
 θαροῦ καὶ ποτίμου ὕδατος, ὥς φασιν, ἐκτὸς τῶν Διο-
 20 χάρους καλουμένων πυλῶν πλησίον τοῦ Λυκείου· πρό-
 τερον δὲ καὶ κρήνη κατεσκεύαστό τις πλησίον πολ-
 λοῦ καὶ καλοῦ ὕδατος· εἰ δὲ μὴ νῦν, τί ἂν εἴη θαν-
 μαστόν, εἰ πάλαι πολὺ καὶ καθαρὸν ἦν ὥστε καὶ πότι-
 μον εἶναι, μετέβαλε δὲ ὕστερον; ἐν μὲν οὖν τοῖς καθ'
 25 ἑκάστα τοσοῦτοις οὗσιν οὐκ ἐνδέχεται διατρίβειν, οὐ
 μὴν οὐδὲ σιγῇ παρελθεῖν ὥστε μηδ' ἐν κεφαλαίῳ μνη-
 σθῆναί τινων.

Τοσαῦτ' οὖν ἀπόχρη προσθεῖσιν ὅτι φησὶ Φι-²⁰
 λόχορος πορθουμένης τῆς χώρας ἐκ θαλάττης μὲν ὑπὸ
 30 Καρῶν ἐκ γῆς δὲ ὑπὸ Βοιωτῶν, οὓς ἐκάλουν Ἴονας,
 Κέκροπα πρῶτον εἰς δώδεκα πόλεις συνοικίσαι τὸ πλῆ-
 θος, ὧν ὀνόματα Κεκροπία Τετράπολις Ἐπακρία Δε-

κέλεια Ἐλευσίς Ἀφιδνα (λέγουσι δὲ καὶ πληθυντικῶς Ἀφιδνας) Θόρικος Βραυρῶν Κύθηρος Σφηττὸς Κηφισιά πάλιν δ' ὕστερον εἰς μίαν πόλιν συναγαγεῖν λέγεται τὴν νῦν τὰς δώδεκα Θησεύς. ἐβασιλεύοντο μὲν [οὖν οἱ Ἀθηναῖοι] πρότερον, εἰτ' εἰς δημοκρατίαν μετέστησαν· τυράννων δ' ἐπιθεμένων αὐτοῖς, Πεισιστράτου καὶ τῶν παίδων, ὕστερόν τε ὀλιγαρχίας γενομένης τῆς τε τῶν τετρακοσίων καὶ τῆς τῶν τριάκοντα τυράννων, οὓς ἐπέστησαν Λακεδαιμόνιοι, τούτους μὲν διεκρούσαντο ῥαδίως, ἐφύλαξαν δὲ τὴν δημοκρατίαν μέχρι τῆς Ῥωμαίων επικρατείας. καὶ γὰρ εἴ τι μικρὸν ὑπὸ τῶν Μακεδονικῶν βασιλέων παρελυπήθησαν ὥσθ' ὑπακούειν αὐτῶν ἀναγκασθῆναι, τὸν γε ὁλοσχερῇ τύπον τῆς πολιτείας τὸν αὐτὸν διετήρουν. ἔνιοι δὲ φασὶ καὶ βέλτιστα τότε αὐτοὺς πολιτεύσασθαι 15 δεκαετῇ χρόνον ὃν ἤρχε Μακεδόνων Κάσανδρος. οὗτος γὰρ ὁ ἀνὴρ πρὸς μὲν τὰ ἄλλα δοκεῖ τυραννικώτερος γενέσθαι, πρὸς Ἀθηναίους δὲ εὐγνωμόνησε λαβὼν ὑπήκοον τὴν πόλιν· ἐπέστησε γὰρ τῶν πολιτῶν Δημήτριον τὸν Φαληρεά τῶν Θεοφράστου τοῦ φιλοσόφου γνωρίμων, ὃς οὐ μόνον οὐ κατέλυσε τὴν δημοκρατίαν ἀλλὰ καὶ ἐπηνώρθωσε. δηλοῖ δὲ τὰ ὑπομνήματα ἃ συνέγραψε περὶ τῆς πολιτείας ταύτης ἐκεῖνος. ἀλλ' οὕτως ὁ φθόνος ἴσχυσε καὶ ἡ πρὸς ὀλίγους ἀπέχθεια ὥστε μετὰ τὴν Κασάνδρου τελευτὴν ἠναγκάσθη 25 φυγεῖν εἰς Αἴγυπτον· τὰς δ' εἰκόνας αὐτοῦ πλείους ἢ τριακοσίας κατέσπασαν οἱ ἐπαναστάντες καὶ κατεχώνευσαν, ἔνιοι δὲ καὶ προστιθέασιν ὅτι καὶ εἰς Ἀμίδας. Ῥωμαῖοι δ' οὖν παραλαβόντες αὐτοὺς δημοκρατουμένους ἐφύλαξαν τὴν αὐτονομίαν αὐτοῖς καὶ τὴν ἔλευ- 30 θερίαν. ἐπιπεσὼν δ' ὁ Μιθριδατικὸς πόλεμος τυράννους αὐτοῖς κατέστησεν οὓς ὁ βασιλεὺς ἐβούλετο· τὸν

δ' ἰσχύσαντα μάλιστα τὸν Ἀριστίωνα καὶ ταύτην βια-
σάμενον τὴν πόλιν ἐκ πολιορκίας ἐλὼν Σύλλας ὁ τῶν
Ῥωμαίων ἡγεμὼν ἐκόλασε, τῇ δὲ πόλει συγγνώμην
ἔνειμε· καὶ μέχρι νῦν ἐν ἐλευθερίᾳ τέ ἐστι καὶ τιμῇ
5 παρὰ τοῖς Ῥωμαίοις.

Μετὰ δὲ τὸν Πειραιᾶ Φαληρεῖς δῆμος ἐν τῇ ἐφε- 21
ξῆς παραλίᾳ· εἰθ' Ἀλιμούσιοι Αἰξωνεῖς Ἀλαιεῖς οἱ Αἰ-
ξωνικοὶ Ἀναγυράσιοι· εἴτα Θοραιεῖς Λαμπρεῖς Αἰγι-
λίεῖς Ἀναφλύστιοι Ἀξηνιεῖς· οὗτοι μὲν οἱ μέχρι τῆς
10 ἄκρας τοῦ Σουνίου. μετὰ δὲ τῶν λεχθέντων δῆμων
μακρὰ ἄκρα, πρώτη μετὰ τοὺς Αἰξωνέας Ζωστήρ, εἴτ'
ἄλλη μετὰ Θοραιέας Ἀστυπάλαια· ὧν τῆς μὲν πρόκει-
ται νῆσος Φάβρα τῆς δ' Ἐλαιοῦσσα· καὶ κατὰ τοὺς Αἰ-
ξωνέας δ' ἐστὶν Ὑδροῦσσα· περὶ δὲ Ἀνάφλυστόν ἐστι
15 καὶ τὸ Πανεῖον καὶ τὸ τῆς Κωλιάδος Ἀφροδίτης ἱερόν,
εἰς ὃν τόπον ἐκκυμανθῆναι τὰ τελευταῖα τὰ ἐκ τῆς περὶ
Σαλαμῖνα ναυμαχίας τῆς Περσικῆς ναυαγία φασι, περὶ
ὧν καὶ τὸν Ἀπόλλω προειπεῖν „Κωλιάδες δὲ γυναῖκες
„ἐρετμοῖσι φρούξουσι.“ πρόκειται δὲ καὶ τούτων τῶν
20 τόπων Βέλβινα νῆσος οὐ πολὺ ἄπωθεν καὶ ὁ Πατρό-
κλου χάραξ· ἐρημοὶ δ' αἱ πλείσται τούτων.

Κάμπαντι δὲ τὴν κατὰ τὸ Σούνιον ἄκραν ἀξιόλο- 22
γος δῆμος Σούνιον, εἴτα Θόρικος, εἴτα Ποταμὸς δῆμος
οὕτω καλούμενος, ἐξ οὗ οἱ ἄνδρες Ποτάμιοι, εἴτα Πρα-0.399
25 σιὰ Στειριὰ Βραυρών, ὅπου τὸ τῆς Βραυρωνίας Ἀρ-
τέμιδος ἱερόν, [Ἀλαὶ Ἀραφη]νίδες, ὅπου τὸ τῆς Ταν-
ροπόλου, Μυρρινοῦς Προβάλινθος Μαραθῶν, ὅπου
Μιλτιάδης τὰς μετὰ Λάτιος τοῦ Πέρσου δυνάμεις ἄρ-
δην διέφθειρεν οὐ περιμείνας ὑστερίζοντας Λακεδαι-
30 μονίους διὰ τὴν πανσέληνον· ἐνταῦθα μεμυθεύκασι
καὶ τὸν Μαραθῶνιον ταῦρον ὃν ἀνείλε Θησεύς. μετὰ
δὲ Μαραθῶνα Τρικόρυνθος, εἴτα Ῥαμνοῦς, [ὅπου] τὸ

τῆς Νεμέσεως Ιερόν, εἶτα Ψαφίς ἢ τῶν Ὀρωπίων· ἐν-
 ταῦθα δέ που καὶ τὸ Ἀμφιαράειόν ἐστι τετιμημένον
 ποτὲ μαντεῖον, ὅπου φνυγόντα τὸν Ἀμφιάρεον, ὥς φησι
 Σοφοκλῆς, „ἐδέξατο ῥαγεῖσα Θηβαία κόνις αὐτοῖσιν
 „ὅπλοις καὶ τετρωρίστω δόφρῳ.“ Ὀρωπὸς δ' ἐν ἄμφισ- 5
 βητησίῳ γεγένηται πολλάκις· ἴδρυνται γὰρ ἐν μεθορίῳ
 τῆς τε Ἀττικῆς καὶ τῆς Βοιωτίας. πρόκειται δὲ τῆς παρα-
 λίας ταύτης πρὸ μὲν τοῦ Θορίκου καὶ τοῦ Σουνίου νῆ-
 σος Ἑλένη τραχεῖα καὶ ἔρημος, παραμῆκης ὅσον ἐξή-
 κοντα σταδίων τὸ μῆκος, ἣς φασι μεμνησθαι τὸν ποι- 10
 ητὴν ἐν οἷς Ἀλέξανδρος λέγει πρὸς τὴν Ἑλένην „οὐδ'
 „ὅτε σε πρῶτον Λακεδαίμονος ἐξ ἐρατεινῆς [ἐπλεον]
 „ἀρπάξας ἐν ποντοπόροις νέεσσι, νήσῳ δ' ἐν Κρα-
 „νάῃ ἐμίγην φιλότῃ καὶ εὐνῇ.“ ταύτην γὰρ λέγει
 Κρανάην τὴν νῦν Ἑλένην ἀπὸ τοῦ ἐκεῖ γενέσθαι τὴν 15
 μῆξιν. μετὰ δὲ τὴν Ἑλένην ἡ Εὐβοία πρόκειται τῆς
 ἐξῆς παραλίας, ὁμοίως στενὴ καὶ μακρὰ καὶ κατὰ μῆ-
 κος τῇ ἡπείρῳ παραβεβλημένη καθάπερ ἡ Ἑλένη. ἐστι
 δ' ἀπὸ τοῦ Σουνίου πρὸς τὸ νότιον τῆς Εὐβοίας ἄκρον,
 ὃ καλοῦσι Δευκὴν ἀκτὴν, σταδίων τριακοσίων πλοῦς· 20
 ἀλλὰ περὶ Εὐβοίας με[ν] λέγομεν ὕστερον], τοὺς δ' ἐν
 τῇ μεσογαίᾳ δήμους τῆς Ἀττικῆς μακρὸν εἶπεῖν διὰ τὸ
 πλήθος.

- 23 Τῶν δ' ὁρῶν τὰ μὲν ἐν ὀνόματι μάλιστα ἐστὶν ὃ τε
 Ῥμηττὸς καὶ Βριλησσὸς καὶ Λυκαβηττός, ἔτι δὲ Πάρ- 25
 νης καὶ Κορυδαλλός. μαρμάρου δ' ἐστὶ τῆς τε Ῥμητ-
 τίας καὶ τῆς Πεντελικῆς κάλλιστα μέταλλα πλησίον τῆς
 πόλεως· ὃ δ' Ῥμηττὸς καὶ μέλι ἄριστον ποιεῖ. τὰ δ'
 ἀργυρεῖα τὰ ἐν τῇ Ἀττικῇ κατ' ἀρχὰς μὲν ἦν ἀξιόλογα,
 νυνὶ δ' ἐκλείπει· καὶ δὴ καὶ οἱ ἐργαζόμενοι, τῆς με- 30
 ταλλείας ἀσθενῶς ὑπακουούσης, τὴν παλαιὰν ἐκβο-
 λάδα καὶ σκωρίαν ἀναχωνεύοντες εὗρισκον ἔτι ἐξ αὐτῆς

ἀποκαθαιρόμενον ἀργύριον, τῶν ἀρχαίων ἀπείρως καμινεύοντων. τοῦ δὲ μέλιτος ἀρίστου τῶν πάντων ὄντος τοῦ Ἀττικοῦ πολὺν βέλτιστόν φασι τὸ ἐν τοῖς ἀρ- C.400
γυρείοις, ὃ καὶ ἀκάπνιστον καλοῦσιν ἀπὸ τοῦ τρόπου
5 τῆς σκευασίας.

Ποταμοὶ δ' εἰσὶν ὁ μὲν Κηφισσὸς ἐκ Τρινεμέων 24
τὰς ἀρχὰς ἔχων ῥέων δὲ διὰ τοῦ πεδίου, ἐφ' οὗ καὶ ἡ
γέφυρα καὶ οἱ γεφυρισμοί, διὰ δὲ τῶν σκελῶν τῶν ἀπὸ
τοῦ ἄστεος εἰς τὸν Πειραιᾶ καθηκόντων ἐκδίδωσιν εἰς
10 τὸ Φαληρικόν, χειμαρρῶδης τὸ πλεόν, θέρους δὲ μει-
οῦται τελέως. ἔστι δὲ τοιοῦτος μᾶλλον ὁ Ἴλισσος, ἐκ
θατέρου μέρους τοῦ ἄστεος ῥέων εἰς τὴν αὐτὴν παρα-
λίαν ἐκ τῶν ὑπὲρ τῆς Ἀγρας καὶ τοῦ Ἀνκείου μερῶν
καὶ τῆς πηγῆς ἣν ὕμνηκεν ἐν Φαίδρῳ Πλάτων. περὶ
15 μὲν τῆς Ἀττικῆς ταῦτα.

Ἐξῆς δ' ἐστὶν ἡ Βοιωτία, περὶ ἧς λέγοντα καὶ περὶ 2
τῶν συνεχῶν ἔθνων ἀνάμνησιν ποιήσασθαι χρὴ τοῦ
σαφοῦς χάριν ὧν εἵπομεν πρότερον. [ἐλέγομ]εν δὲ
τὴν ἀπὸ Σουνίου παραλίαν μέχρι Θετταλο[νικείας] ἐπὶ
20 τὰς ἄρκτους τετάσθαι, μικρὸν ἐκκλίνουσιν [πρὸς δύ-
σιν καὶ] ἔχουσιν τὴν θάλατταν πρὸς ἑω, τὰ δ' ὑπὲρ-
[κείμενα μέρ]η πρὸς δύσιν ὥς ἂν ταινίας τινὰς διὰ τῆς
[πάσης χώρας] τεταμέναι παραλλήλους· ὧν πρώτη
ἐστὶν [ἡ Ἀττικὴ σὺν τῇ] Μεγαρίδι ὥς ἂν ταινία τις, τὸ
25 μὲν ἑωθι[νὸν πλευρὸν ἔχου]σα τὴν ἀπὸ Σουνίου μέ-
χρι Ὠρωποῦ καὶίας, τὸ δ' ἐσπέριον τὸν τε
Ἰσθμὸν καὶ τὴν [Ἀλκυονίδα θάλατταν τὴν κατὰ Πα-
γὰς μέχρι τῶν [τόπων τῆς Βοιωτί]ας τῶν περὶ Κρέου-
σαν· τὰ δὲ λοιπὰ [τὴν ἀπὸ Σουνίου] μέχρι Ἰσθμοῦ πα-
30 ραλίαν καὶ τὴν ὥς ἂνς ὀρεινὴν τὴν διείρ-
γουσαν ἀπὸ τῆς [Βοιωτίας τὴν Ἀ]ττικὴν. δευτέρα δ'
ἐστὶν ἡ Βοιωτία ἀπὸ τῆς ἑω ἐπὶ δύσιν τεταμένη ταινία

τις ἀπὸ τῆς κατ' Εὐβοίαν θαλάττης ἐπὶ θάλατταν τὴν κατὰ τὸν Κρισαῖον κόλπον, ἰσομήκης πως τῇ Ἀττικῇ ἢ καὶ ἐλάττων κατὰ μῆκος· ἀρετῇ μέντοι τῆς χώρας πάμπολυ διαφέρει.

- 2 Ἐφορος δὲ καὶ ταύτῃ κρείττω τὴν Βοιωτίαν ἀπο-
 φαίνει τῶν ὁμόρων ἔθνων καὶ ὅτι μόνῃ τριθάλαττος
 ἐστὶ καὶ λιμένων εὐπορεῖ πλειόνων, ἐπὶ μὲν τῷ Κρι-
 σαίῳ κόλπῳ καὶ τῷ Κορινθιακῷ τὰ ἐκ τῆς Ἰταλίας καὶ
 Σικελίας καὶ Λιβύης δεχομένη, ἐπὶ δὲ τῶν πρὸς Εὐβοίαν
 μερῶν ἐφ' ἑκάτερα τοῦ Εὐρίπου σχιζομένης τῆς παρα- 10
 λίας τῇ μὲν ἐπὶ τὴν Αὐλίδα καὶ τὴν Ταναγραϊκὴν τῇ δ'
 ἐπὶ τὸν Σαλαγανέα καὶ τὴν Ἀνθηδόνα, τῇ μὲν εἶναι συν-
 εχῇ τὴν κατ' Αἴγυπτον καὶ Κύπρον καὶ τὰς νήσους θά-
 λατταν τῇ δὲ τὴν κατὰ Μακεδόνας καὶ τὴν Προποντίδα
 καὶ τὸν Ἑλλήσποντον. προστίθῃσι δὲ ὅτι καὶ τὴν Εὐ- 15
 βοίαν τρόπον τινὰ μέρος αὐτῆς πεποίηκεν ὁ Εὐρίπος
 οὕτω στενὸς ὢν καὶ γεφύρα συνεξευγμένος πρὸς αὐ-
 0.401 τὴν διπλέθρῳ. τὴν μὲν οὖν χώραν ἐπαινεῖ διὰ ταῦτα,
 καὶ φησι πρὸς ἡγεμονίαν εὐφυῶς ἔχειν, ἀγωγῇ δὲ καὶ
 παιδείᾳ μὴ χρησαμένους * ἐπεὶ μηδὲ τοὺς αἰεὶ προϊστα- 20
 μένους αὐτῆς, εἰ καὶ [τί] ποτε κατώρθωσαν, ἐπὶ μικρὸν
 τὸν χρόνον συμμεῖναι, καθάπερ Ἐπαμεινώνδας ἔδειξε·
 τελευτήσαντος γὰρ ἐκείνου τὴν ἡγεμονίαν ἀποβαλεῖν
 εὐθὺς τοὺς Θηβαίους γευσαμένους αὐτῆς μόνον· αἵ-
 τιον δὲ εἶναι τὸ λόγων καὶ ὁμιλίας τῆς πρὸς ἀνθρώ- 25
 πους ὀλιγορῆσαι, μόνῃς δ' ἐπιμεληθῆναι τῆς κατὰ πό-
 λεμον ἀρετῆς. ἔδει δὲ προσθεῖναι διότι τοῦτο πρὸς
 Ἕλληνας μάλιστα χρήσιμόν ἐστιν, ἐπεὶ πρὸς γε τοὺς
 βαρβάρους βία λόγου κρείττων ἐστὶ. καὶ Ῥωμαῖοι δὲ
 τὸ παλαιὸν μὲν ἀγριωτέροις ἔθνεσι πολεμοῦντες οὐδὲν 30
 ἔδεοντο τῶν τοιούτων παιδευμάτων, ἀφ' οὗ δὲ ἤρ-
 ξαντο πρὸς ἡμερώτερα ἔθνη καὶ φύλα τὴν πραγμα-

τείαν ἔχειν, ἐπέθεντο καὶ ταύτῃ τῇ ἀγωγῇ καὶ κατέστησαν πάντων κύριοι.

Ἡ δ' οὖν Βοιωτία πρότερον μὲν ὑπὸ βαρβάρων 3
ὥκειτο Ἀόνων καὶ Τεμμίκων ἐκ τοῦ Σουνίου πεπλα-
5 νημένων καὶ Λελέγων καὶ Ῥάντων· εἶτα Φοίνικες
ἔσχον οἱ μετὰ Κάδμου, ὃς τὴν τε Καδμείαν ἐτείχισε
καὶ τὴν ἀρχὴν τοῖς ἐκγόνοις ἀπέλιπεν. ἐκεῖνοι δὲ τὰς
Θήβας τῇ Καδμείᾳ προσέκτισαν, καὶ συνεφύλαξαν τὴν
ἀρχὴν ἡγούμενοι τῶν πλείστων Βοιωτῶν ἕως τῆς τῶν
10 Ἐπιγόνων στρατείας. κατὰ δὲ τούτους ὀλίγον χρόνον
ἐκλιπόντες τὰς Θήβας ἐπανῆλθον πάλιν· ὥς δ' αὐτως
ὑπὸ Θρακῶν καὶ Πελασγῶν ἐκπεσόντες ἐν Θετταλίᾳ
συνεστήσαντο τὴν ἀρχὴν μετὰ Ἀρναίων ἐπὶ πολλὸν
χρόνον, ὥστε καὶ Βοιωτοὺς κληθῆναι πάντας. εἴτ'
15 ἀνέστρεψαν εἰς τὴν οἰκίαν, ἥδη τοῦ Αἰολικοῦ στόλου
παρεσκευασμένου περὶ Ἀυλίδα τῆς Βοιωτίας, ὃν ἔσταλ-
λον εἰς τὴν Ἀσίαν οἱ Ὀρέστου παῖδες. προσθέντες δὲ
τῇ Βοιωτίᾳ τὴν Ὀρχομενίαν (οὐ γὰρ ἦσαν κοινῇ πρό-
τερον, οὐδ' Ὀμηρος μετὰ Βοιωτῶν αὐτοὺς κατέλεξεν
20 ἀλλ' ἰδίᾳ, Μινύας προσαγορεύσας) μετ' ἐκείνων ἐξέ-
βαλον τοὺς μὲν Πελασγοὺς εἰς Ἀθήνας, ἀφ' ὧν ἐκλή-
θη μέρος τι τῆς πόλεως Πελασγικόν (ᾧκησαν δὲ ὑπὸ
τῷ Ῥηητῷ), τοὺς δὲ Θρακὰς ἐπὶ τὸν Παρνασσόν.
Ῥαντες δὲ τῆς Φωκίδος Ῥαν πόλιν ᾧκισαν.

25 Φησὶ δ' Ἐφορος τοὺς μὲν Θρακὰς ποιησαμένους 4
σπονδὰς πρὸς τοὺς Βοιωτοὺς ἐπιθέσθαι νύκτωρ στρα-
τοπεδεύουσιν ὀλιγωρότερον ὥς εἰρήνης γεγонуίας·
διακρουσαμένων [δ'] αὐτοὺς αἰτιωμένων τε ἅμα ὅτι
τὰς σπονδὰς παρέβαινον, μὴ παραβῆναι φάσκειν ἐκεί-
30 νους· συνηθέσθαι γὰρ ἡμέρας, νύκτωρ δ' ἐπιθέσθαι. C.402
ἀφ' οὗ δὴ καὶ τὴν παροιμίαν εἰρησθαι „Θρακία παρεύ-
,,ρεσις.“ τοὺς δὲ Πελασγοὺς μένοντος ἔτι τοῦ πολέμου

χρηστηριασομένους ἀπελθεῖν, ἀπελθεῖν δὲ καὶ τοὺς Βοιωτοὺς· τὸν μὲν οὖν τοῖς Πελασγοῖς δοθέντα χρησμὸν ἔφη μὴ ἔχειν εἰπεῖν, τοῖς δὲ Βοιωτοῖς ἀνελεῖν τὴν προφητίαν ἀσεβήσαντας εὖ πράξειν· τοὺς δὲ θεωροὺς ὑπονόησαντας χαριζομένην τοῖς Πελασγοῖς τὴν προφητίαν 5 κατὰ τὸ συγγενὲς (ἐπειδὴ καὶ τὸ ἱερὸν Πελασγικὸν ἐξ ἀρχῆς ὑπῆρξεν) οὕτως ἀνελεῖν, ἀρπάσαντας τὴν ἀνθρωπον εἰς πυρὰν ἐμβαλεῖν ἐνθυμηθέντας, εἴτε κακουργήσασαν εἴτε μὴ, πρὸς ἀμφοτέρω ὁρθῶς ἔχειν, εἰ μὲν παρεχρηστηρίασε, κολασθείσης αὐτῆς, εἰ δ' οὐδὲν ἐκα- 10 κούργησε, τὸ προσταχθὲν αὐτῶν πραξάντων. τοὺς δὲ περὶ τὸ ἱερὸν τὸ μὲν ἀκρίτους κτείνειν τοὺς πράξαντας, καὶ ταῦτ' ἐν ἱερῷ, μὴ δοκιμάσαι, καθιστάναι δ' εἰς κρίσιν, καλεῖν δ' ἐπὶ τὰς ἱερείας, ταύτας δὲ εἶναι τὰς προφήτιδας αἱ λοιπαὶ τριῶν οὐσῶν περιῆσαν· 15 γόντων δ' ὡς οὐδαμοῦ νόμος εἴη δικάζειν γυναῖκας, προσελέσθαι καὶ ἄνδρας ἴσους ταῖς γυναιξὶ τὸν ἀριθμόν· τοὺς μὲν οὖν ἄνδρας ἀπογνῶναι, τὰς δὲ γυναικας καταγνῶναι, ἴσων δὲ τῶν ψήφων γενομένων τὰς ἀπολυούσας νικῆσαι· ἐκ δὲ τούτων Βοιωτοῖς μόνοις 20 ἄνδρας προθεσπίξειν ἐν Λωδώνῃ. τὰς μέντοι προφήτιδας ἐξηγουμένας τὸ μαντεῖον εἰπεῖν, ὅτι προστάττοι ὁ θεὸς τοῖς Βοιωτοῖς τοὺς παρ' αὐτοῖς τριπόδας * συλλέγοντας εἰς Λωδώνην πέμπειν κατ' ἔτος· καὶ δὴ καὶ ποιεῖν τοῦτο· αἰεὶ γάρ τινα τῶν ἀνακειμένων τριπόδων 25 νύκτωρ καθαιροῦντας καὶ κατακαλύπτοντας ἱματίοις ὥς ἂν λάθρα τριποδηφορεῖν εἰς Λωδώνην.

5 Μετὰ δὲ ταῦτα τὴν Αἰολικὴν ἀποικίαν συνέπραξαν τοῖς περὶ Πενθίλον, πλείστους ἐξ ἑαυτῶν συμπεμπάντες, ὥστε καὶ Βοιωτικὴν προσαγορευθῆναι. ὕστε- 30

9. post κακουργήσασαν: περὶ τῶν γυναικῶν τῶν δικαστῶν

ρον δὲ χρόνοις πολλοῖς ὁ Περσικὸς πόλεμος περὶ Πλα-
 ταιᾶς γενόμενος διελυμήνατο τὴν χώραν. εἴτ' ἀνέλα-
 βον σφᾶς πάλιν ἐπὶ τοσοῦτον ὥστε καὶ τῆς τῶν Ἑλλή-
 νων ἀρχῆς ἀμφισβητῆσαι Θηβαίους δυσι μάχαις κρα-
 5 τήσαντας Λακεδαιμονίους. Ἐπαμεινώνδα δὲ πεσόντος
 ἐν τῇ μάχῃ ταύτης μὲν τῆς ἐλπίδος διεσφάλησαν, ὑπὲρ
 δὲ τῶν Ἑλλήνων ὅμως ἐπολέμησαν πρὸς Φωκέας τοὺς
 τὸ ἱερὸν συλήσαντας τὸ κοινόν. κακωθέντες δ' ὑπὸ τε 403
 τούτου τοῦ πολέμου καὶ τῶν Μακεδόνων ἐπιθεμένων
 10 τοῖς Ἑλλήσιν, ὑπὸ τῶν αὐτῶν τούτων καὶ ἀπέβαλον
 τὴν πόλιν κατασκαφεῖσαν καὶ ἀνέλαβον ἀνακτισθεῖ-
 σαν. ἐξ ἐκείνου δ' ἤδη πράττοντες ἐνδεέστερον αἶε
 μέχρι εἰς ἡμᾶς οὐδὲ κώμης ἀξιολόγου τύπον σῶζουσι.
 καὶ [αἰ] ἄλλαι δὲ πόλεις ἀνὰ λόγον πλὴν Τανάγρας καὶ
 15 Θεσπιῶν· αὗται δ' ἱκανῶς συμμένουσι πρὸς ἐκείνας
 κρινόμεναι.

Ἐξῆς δὲ τὴν περιήγησιν τῆς χώρας ποιητέον ἀρ- 6
 ξάμενους ἀπὸ τῆς πρὸς Εὐβοίαν παραλίας τῆς συνε-
 χοῦς τῇ Ἀττικῇ. ἀρχὴ δ' ὁ Ὠρωπὸς καὶ ὁ ἱερὸς λιμὴν
 20 ὃν καλοῦσι Δελφίνιον, καθ' ὃν ἡ παλαιὰ Ἐρέτρια ἐν
 τῇ Εὐβοίᾳ, διάπλουν ἔχουσα ἐξήκοντα σταδίων. μετὰ
 δὲ τὸ Δελφίνιον ὁ Ὠρωπὸς ἐν εἴκοσι σταδίοις· κατὰ δὲ
 τοῦτόν ἐστιν ἡ νῦν Ἐρέτρια, διάπλους δ' ἐπ' αὐτὴν
 στάδιοι τετταράκοντα.

25 Εἵτα Δήλιον τὸ ἱερὸν τοῦ Ἀπόλλωνος ἐκ Δήλου 7
 ἀφιδρυμένον, Ταναγραίων πολίχνιον Ἀυλίδος διέχον
 σταδίους τριάκοντα, ὅπου μάχῃ λειφθέντες Ἀθηναῖοι
 προτροπάδην ἔφυγον· ἐν δὲ τῇ φυγῇ πεσόντα ἀφ' ἵπ-
 που Ξενοφῶντα ἰδὼν κείμενον τὸν Γρύλλον Σωκρά-
 30 τος ὁ φιλόσοφος στρατεύων πεξὸς τοῦ ἵππου γεγονό-
 τος ἐκποδὼν ἀνέλαβε τοῖς ὤμοις αὐτόν, καὶ ἔσωσεν ἐπὶ
 πολλοὺς σταδίους ἕως ἐπαύσατο ἡ φυγὴ.

8 Ἔτα λιμὴν μέγας ὃν καλοῦσι Βαθὺν λιμένα· εἴθ' ἡ Αὐλὴ πετρῶδες χωρίον καὶ κώμη Ταναγραίων· λιμὴν δ' ἐστὶ πεντήκοντα πλοίοις, ὥστ' εἰκὸς τὸν ναύσταθμον τῶν Ἑλλήνων ἐν τῷ μεγάλῳ ὑπάρχει λιμένι. καὶ ὁ Εὐριπος δ' ἐστὶ πλησίον ὁ Χαλκίδος, εἰς ὃν ἀπὸ 5 Σουνίου στάδιοι * ἑβδομήκοντα· ἔστι δ' ἐπ' αὐτῷ γέφυρα δίπλευρος, ὡς εἴρηκα· πύργος δ' ἐκατέρωθεν ἐφέστηκεν ὁ μὲν ἐκ τῆς Χαλκίδος ὁ δ' ἐκ τῆς Βοιωτίας διωκοδόμεται δ' εἰς αὐτοὺς σῦριγξ. περὶ δὲ τῆς παλιρροίας τοῦ Εὐρίπου τοσοῦτον μόνον εἰπεῖν ἱκανόν, ὅτι 10 ἐπτάκις μεταβάλλειν φασὶ καθ' ἡμέραν ἐκάστην καὶ νύκτα· τὴν δ' αἰτίαν ἐν ἄλλοις σκεπτέον.

9 Πλησίον δ' ἐστὶν ἐφ' ὕψους κείμενον χωρίον Σαλγανεύς, ἐπάνυμον τοῦ ταφέντος ἐπ' αὐτῷ Σαλγανέως ἀνδρὸς Βοιωτίου, καθηγησαμένου τοῖς Πέρσαις εἰς— 15 πλέουσιν εἰς τὸν διάπλουν τοῦτον ἐκ τοῦ Μαλιακοῦ κόλπου, ὃν φασιν ἀναιρεθῆναι πρὶν ἢ τῷ Εὐρίπῳ συνάπτειν ὑπὸ τοῦ ναυάρχου Μεγαβάτου νομισθέντα κακοῦργον, ὥς ἐξ ἀπάτης ἐμβαλόντα τὸν στόλον εἰς τυφλὸν τῆς θαλάττης στενωπὸν· αἰσθόμενον δὲ τὸν 20 βάρβαρον τὴν περὶ αὐτὸν ἀπάτην μεταγνῶναί τε καὶ ταφῆς ἀξιῶσαι τὸν ἀναιτίως ἀποθανόντα.

C.404
10 Καὶ ἡ Γραῖα δ' ἐστὶ τόπος Ὠρωποῦ πλησίον καὶ τὸ ἱερὸν τοῦ Ἀμφιαράου καὶ τὸ Ναρκίσσου τοῦ Ἐρετριέως μνημα ὃ καλεῖται Σιγηλοῦ, ἐπειδὴ σιγῶσι πα— 25 ριόντες· τινὲς δὲ τῇ Τανάγρα τὴν αὐτὴν φασιν· ἡ Ποιμανδρὶς δ' ἐστὶν ἡ αὐτὴ τῇ Ταναγραικῇ· καλοῦνται δὲ καὶ Γεφυραῖοι οἱ Ταναγραῖοι. ἐκ Κνωπίας δὲ τῆς Θηβαϊκῆς μεθιδρύ[θη κατὰ χρησμόν] δεῦρο τὸ Ἀμφιαράειον. 30

11 Καὶ ὁ Μυκαλησσὸς δὲ κώμη τῆς Ταναγραϊκῆς·

κεῖται δὲ παρ' ὁδὸν [τὴν ἐκ] Θηβῶν εἰς Χαλκίδα· ὥς
 δ' αὐτως καὶ τὸ Ἄρμα, τῆς Ταναγραϊκῆς κόμης ἐρημος
 περὶ τὴν Μυκαλησσόν, ἀπὸ τοῦ Ἀμφιαράου ἄρματος
 λαβοῦσα τοῦνομα, ἑτέρα οὖσα τοῦ Ἄρματος τοῦ κατὰ
 5 τὴν Ἀττικὴν, ὃ ἐστὶ περὶ Φυλὴν, δῆμον τῆς Ἀττικῆς
 ὁμορον τῇ Τανάγρα. ἐντεῦθεν δὲ ἡ παροιμία τὴν ἀρ-
 χὴν ἔσχεν ἡ λέγουσα „ὁπόταν δι' Ἄρματος ἀστράψῃ,“
 ἀστραπὴν τινα σημειουμένων κατὰ χρησμὸν τῶν λε-
 γομένων Πυθαϊστῶν, βλεπόντων ὥς ἐπὶ τὸ Ἄρμα καὶ
 10 τότε πεμπόντων τὴν θυσίαν εἰς Δελφοὺς ὅταν ἀστρά-
 ψαντα ἰδῶσιν· ἐτήρουν δ' ἐπὶ τρεῖς μῆνας, καθ' ἕκα-
 στον μῆνα ἐπὶ τρεῖς ἡμέρας καὶ νύκτας, ἀπὸ τῆς ἐσχά-
 ρας τοῦ ἀστραπαίου Διός· ἐστὶ δ' αὕτη ἐν τῷ τείχει
 μεταξὺ τοῦ Πυθίου καὶ τοῦ Ὀλυμπίου. περὶ δὲ τοῦ
 15 Ἄρματος τοῦ Βοιωτιακοῦ οἱ μὲν φασιν ἐκπεσόντος ἐκ
 τοῦ ἄρματος ἐν τῇ μάχῃ τοῦ Ἀμφιαράου κατὰ τὸν τό-
 πον, ὅπου νῦν ἐστὶ τὸ ἱερὸν αὐτοῦ, τὸ ἄρμα ἐρημον
 ἐνεχθῆναι ἐπὶ τὸν ὁμώνυμον τόπον· οἱ δὲ τοῦ Ἀδρά-
 στου συντριβῆναι τὸ ἄρμα φεύγοντός φασιν ἐνταῦθα,
 20 τὸν δὲ διὰ τοῦ Ἀρείονος σωθῆναι. Φιλόχορος δ' ὑπὸ
 τῶν κωμητῶν σωθῆναι φησιν αὐτόν, καὶ διὰ τοῦτο
 ἰσοπολιτείαν αὐτοῖς παρὰ τῶν Ἀργείων ὑπάρξει.

Ἔστι δὲ τῷ ἐκ Θηβῶν εἰς * Ἄργος ἀνιόντι ἐν ἀρι- 12
 στερά ἡ Τάναγρα κ..... ἐν δεξιᾷ κεῖται· καὶ
 25 ἡ Ἰρία δὲ τῆς Ταναγραϊας νῦν ἐστὶ, πρότερον δὲ τῆς
 Θηβαϊδος· ὅπου ὁ Ἰριεὺς μεμύθευται καὶ ἡ τοῦ Ὠρί-
 ωνος γένεσις, ἣν φησι Πίνδαρος ἐν τοῖς διθυράμβοις·
 κεῖται δ' ἐγγὺς Αὐλίδος. ἐνιοὶ δὲ τὰς Ἰσιὰς Ἰρίην λέγε-
 σθαί φασι, τῆς Παρασωπίας οὖσαν ὑπὸ τῷ Κιθαιρῶνι
 30 πλησίον Ἐρυθρῶν ἐν τῇ μεσογαίᾳ, ἀποικον Ἰριέων,

1. post Χαλκίδα: καλοῦσι δὲ βοιωτικῶς Μυκαληττόν.

κτίσμα δὲ Νυκτέως τοῦ Ἀντιόπης πατρὸς. εἰσὶ δὲ καὶ ἐν τῇ Ἀργείᾳ Ῥοῖαι κώ[μη], οἱ δ' ἐξ αὐτῆς Ῥοῖαι λέγονται. τῶν δ' Ἑρυθρῶν τούτων ἄποικοι αἱ ἐν Ἰωνίᾳ Ἑρυθραί. καὶ ὁ Ἑλεὼν δ' ἐστὶ κώμη Ταναγρακὴ, ἀπὸ τῶν ἑλῶν ὠνομασμένη. 5

13 Μετὰ δὲ Σαλγανέα Ἀνθηδῶν πόλις λιμένα ἔχουσα, ἐσχάτη τῆς Βοιωτικῆς παραλίας τῆς πρὸς Εὐβοίᾳ, C.405καθ' ἅπερ καὶ ὁ ποιητὴς εἰρηκεν, „Ἀνθηδόνα τ' ἐσχατό-
„ωσαν.“ εἰσὶ μέντοι ἔτι προΐόντι μικρὸν πολίχνη δύο τῶν Βοιωτῶν, Λάρυμνά τε, παρ' ἣν ὁ Κηφισὸς ἐκδί- 10
δωσι, καὶ ἔτι ἐπέκεινα Ἀλαί, ὁμώνυμοι τοῖς Ἀττικοῖς δήμοις. κατὰ δὲ τὴν παραλίαν ταύτην κεῖσθαι φασιν Αἰγὰς τὰς ἐν Εὐβοίᾳ, ἐν αἷς τὸ τοῦ Ποσειδῶνος ἱερὸν τοῦ Αἰγαίου· ἐμνήσθημεν δ' αὐτοῦ καὶ πρότερον. δι-
αρμα δ' ἐστὶν ἀπὸ μὲν τῆς Ἀνθηδόου εἰς Αἰγὰς ἑκα- 15
τὸν εἴκοσι στάδιοι, ἀπὸ δὲ τῶν ἄλλων τόπων πολὺ ἐλάττους· κεῖται δ' ἐπὶ ὄρους ὑψηλοῦ τὸ ἱερὸν, ἣν δέ ποτε καὶ πόλις· ἐγγὺς δὲ τῶν [Αἰγῶν] καὶ αἱ Ὀρόβιαι. ἐν δὲ τῇ Ἀνθηδονίᾳ Μεσσάπιον ὄρος ἐστὶν ἀπὸ Μεσ-
σάπου, ὃς εἰς τὴν Ἰαφυρίαν ἐλθὼν Μεσσαπίαν τὴν 20
χώραν ἐκάλεσεν. ἐνταῦθα δὲ καὶ τὰ περὶ τὸν Γλαῦκον μυθεύεται τὸν Ἀνθηδόνιον, ὃν φασιν εἰς κῆτος μετα-
βαλεῖν.

14 Πλησίον δ' ἐστὶν Ἀνθηδόου ἱεροπρεπὴς τόπος τῆς Βοιωτίας, Ἰχνη πόλεως ἔχων, ὁ καλούμενος Ἴσος 25
συστέλλονται τὴν πρώτην συλλαβήν. οἶονται δὲ τινες δεῖν γράφειν „Ἴσόν τε ξαθέην Ἀνθηδόνα τ' ἐσχατό-
„ωσαν“ ἐκτείνοντες τὴν πρώτην συλλαβὴν ποιητικῶς διὰ τὸ μέτρον, ἀντὶ τοῦ „Νισάν τε ξαθέην.“ ἡ γὰρ Νῖσα οὐδαμοῦ φαίνεται τῆς Βοιωτίας, ὥς φησιν Ἀπολ- 30
λόδωρος ἐν τοῖς περὶ νεῶν. [ε]ῖ, εἰ μὴ τὴν Νῖσαν οὕτως εἰρηκεν· ἦν γὰρ ὁ Μεγαρικῇ,

ἐκεῖθεν ἀπωρισμένη πρόσ[χωρος τοῦ Κιθα]ιρῶνος, ἐκλείπεται δὲ νῦν. τινὲς δὲ γράφουσι „Κρεῦσάν τε „ζαθέην,“ τὴν νῦν Κρέουσαν δεχόμενοι, τὸ τῶν Θεσπιδέων ἐπίνειον ἐν τῷ Κρισαίῳ κόλπῳ ἰδρυμένον. ἄλλοι δὲ „Φαράς τε ζαθέας.“ ἔστι δὲ τῆς τετρακωμίας τῆς περὶ Τάναγραν, Ἑλεῶνος Ἀρματος Μυκαλησσοῦ Φαρῶν. γράφουσι δὲ καὶ τοῦτο „Νῦσάν τε ζαθέην.“ κώμη δ' ἐστὶ τοῦ Ἑλικῶνος ἢ Νῦσα. ἡ μὲν οὖν παραλία τοιαύτη τις ἢ πρὸς Εὐβοίαν.

- 10 Τὰ δ' ἐξῆς ἐν τῇ μεσογαίᾳ πεδιά ἐστὶ κοῖλα πάν- 15
τοθεν ἐκ τῶν ἄλλων μερῶν ὄρεσι περιεχόμενα, τοῖς Ἀττικοῖς μὲν πρὸς νότου, πρὸς ἄρκτου δὲ τοῖς Φωκικοῖς. ἀπὸ δὲ τῆς ἐσπέρας ὁ Κιθαιρῶν λοξὸς ἐμπίπτει μικρὸν ὑπὲρ τῆς Κρισαίας θαλάττης, ἔχων τὴν ἀρχὴν
13 συνεχῇ τοῖς Μεγαρικοῖς καὶ τοῖς Ἀττικοῖς ὄρεσιν, εἰτ' ἐπιστρέφων εἰς τὰ πεδιά, πανύμενος δὲ περὶ τὴν Θη- C.406
βαίαν.

Τῶν δὲ πεδίων τούτων τὰ μὲν λιμνάζει, ποταμῶν 16
ἀναχκομένων εἰς αὐτά, τῶν δ' ἐμπιπτόντων, εἰτα ἐκρύ-
20 σεις λαμβανόντων. τὰ δ' ἀνέψυκται καὶ γεωργεῖται παντοδαπῶς διὰ τὴν εὐκαρπίαν. ὑπάντρον δὲ καὶ σι-
ραγγάδους οὕσης κατὰ βάθους τῆς γῆς, σεισμοὶ γενό-
μενοι πολλάκις ἐξαίσιον τοὺς μὲν ἐφραξαν τῶν πόρων
τοὺς δὲ ἀνέφωξαν, τοὺς μὲν μέχρι τῆς ἐπιφανείας τοὺς
25 δὲ δι' ὑπονόμων. συμβαίνει δὴ καὶ τοῖς ὕδασι τοῖς μὲν
δι' ὑπονόμων φέρεσθαι τῶν ρείθρων τοῖς δ' ἐπιπολῆς,
τοῖς τε λιμναίοις καὶ τοῖς ποταμίοις. ἐγγωσθέντων δὲ
κατὰ βάθους τῶν πόρων αὕξεσθαι τὰς λίμνας συμ-
βαίνει μέχρι τῶν οἰκουμένων τόπων ὥστε καὶ πόλεις
30 καταπίνεσθαι καὶ χώρας, ἀνοιχθέντων δὲ τῶν αὐτῶν
ἢ ἄλλων ἀνακαλύπτεσθαι, καὶ τοὺς αὐτοὺς τόπους
ποτὲ μὲν πλεῖσθαι ποτὲ δὲ πεξεύεσθαι, καὶ τὰς αὐ-

τὰς πόλεις ποτὲ μὲν ἐπὶ τῇ λίμνῃ ποτὲ δὲ ἄπωθεν
κεῖσθαι.

- 17 Διττῶς δὲ τοῦτο γίνεται· καὶ γὰρ μενουσῶν ἀκιν-
νῆτων τῶν πόλεων, ὅταν ἡ αὕξησις τῶν ὑδάτων ἦττων
ἢ τῆς ὑπερχύσεως διὰ ὕψος τῶν οἰκήσεων ἢ διὰ ἀπό- 5
στασιν, καὶ διὰ ἀνοικισμόν, ὅταν τῷ πλησιασμῷ κιν-
δυνεύσαντες πολλάκις ἀπαλλαγὴν πορίσωνται τοῦ φό-
βου τὴν μετάληψιν τῶν χωρίων τῶν ἄπωθεν ἢ τῶν ἐν
ὑψει. παρακολουθεῖ δὲ τοῖς οὕτως ἀνοικισθεῖσι τὸ τὴν
αὐτὴν προσηγορίαν φυλάττουσιν, ἐτύμως πρότερον 10
λεγομένοις ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος τοπικῶς, νῦν μη-
[κέτι] λέγεσθαι ἐτύμως· Πλαταιὰς γὰρ ἀπὸ τῆς πλά-
της τῶν κωπῶν εἰρησθαι πιθανὸν καὶ Πλαταιέας τοὺς
ἀπὸ κωπηλασίας ζῶντας, ἀλλὰ νῦν ἄπωθεν τῆς λίμνης
οἰκοῦντες οὐκέτ' ἂν προσαγορεύοιντο ἐτύμως. Ἐλος 15
τε καὶ Ἐλεῶν καὶ Εἰλέσιον ἐκλήθη διὰ τὸ ἐπὶ τοῖς ἔλε-
σιν ἰδρῦσθαι· νῦν δὲ οὐχ ὁμοίως ἔχει ταῦτα, ἢ ἀνοικι-
σθέντων ἢ τῆς λίμνης ἐπιπολὺν ταπεινωθείσης διὰ τὰς
ὑστερον γενομένας ἐκρύσεις· καὶ γὰρ τοῦτο δυνατόν.

- 18 Ἀηλοὶ δὲ καὶ ὁ Κηφισσὸς τοῦτο μάλιστα τὴν Κω- 20
παῖδα λίμνην πληρῶν. αὐξομένης γὰρ αὐτῆς ὥστε κιν-
δυνεύειν καταποθῆναι τὰς Κώπας, [ἄς] ὅ τε ποιητῆς
ὀνομάζει, καὶ ἀπ' αὐτῶν ἡ λίμνη τὴν ἐπωνυμίαν εἰ-
ληφε, χάσμα γενηθὲν πρὸς τῇ λίμνῃ πλησίον τῶν Κω-
πῶν ἀνέωξεν ὑπὸ γῆς ρεῖθρον ὅσον τριάκοντα σταδίω 25
καὶ ἐδέξατο τὸν ποταμόν, εἶτα ἐξέρρηξεν εἰς τὴν ἐπι-
φάνειαν κατὰ Δάρυμναν τῆς Λοκρίδος τὴν ἄνω· καὶ
γὰρ ἑτέρα ἐστίν, ἥς [ἐμνήσθη]μεν, [ἥ] Βοιωτιακῇ,
ἐπὶ τῇ θαλάττῃ, ἣ προσέθεσαν Ῥωμαῖοι τὴν ἄνω. κα-
C.407 λείται δ' ὁ τόπος Ἀγχόη· ἔστι δὲ καὶ λίμνη ὁμώνυμος· 30
ἐντεῦθεν δ' ἦδη ὁ Κηφισσὸς ἐκδίδωσιν ἐπὶ τὴν θά-
λατταν. τότε μὲν οὖν παυσαμένης τῆς πλημμυρίδος,

- παῦλα καὶ τοῦ κινδύνου τοῖς παροικοῦσιν ὑπῆρξε, πλὴν τῶν ἤδη καταποθεισῶν πόλεων. πάλιν δ' ἐργουμένων τῶν πόρων, ὁ μεταλλευτὴς Κράτης ἀνὴρ Χαλκιδεὺς ἀνακαθαίρειν τὰ ἐμφράγματα ἐπαύσατο στα-
 5 διασάντων τῶν Βοιωτῶν, καίπερ, ὥς αὐτὸς ἐν τῇ πρὸς Ἀλέξανδρον ἐπιστολῇ φησιν, ἀνεψυγμένων ἤδη πολ-
 λῶν, ἐν οἷς οἱ μὲν τὸν Ὀρχομενὸν οἰκίσθαι τὸν ἀρ-
 χαῖον ὑπελάμβανον, οἱ δ' Ἐλευσίνα καὶ Ἀθήνας παρὰ
 τὸν Τρίτωνα ποταμὸν· λέγεται [δ' οἰκίσαι] Κέκροπα,
 10 ἥνίκα τῆς Βοιωτίας ἐπῆρξε καλουμένης τότε Ὠγυγίας, ἀφανισθῆναι δὲ ταύτας ἐπικλυσθείσας ὕστερον. γενέ-
 σθαι δὲ φασιν καὶ κατὰ Ὀρχομενὸν χάσμα, καὶ δέξα-
 σθαι τὸν Μέλανα ποταμὸν τὸν ρέοντα διὰ τῆς Ἀλιαρ-
 τίας καὶ ποιοῦντα ἐνταῦθα τὸ ἔλος τὸ φύον τὸν αὐλη-
 15 τικὸν κάλαμον. ἀλλ' οὗτος ἠφάνισται τελέως, εἴτε τοῦ χάσματος διαχέοντος αὐτὸν εἰς ἀδήλους πόρους, εἴτε τῶν περὶ Ἀλιάρτον ἐλῶν καὶ λιμνῶν προαναλι-
 σκόντων αὐτόν, ἀφ' ὧν ποιήεντα καλεῖ τὸν [τόπον] ὁ ποιητὴς „καὶ ποιήενθ' Ἀλιάρτον“ λέγων.
- 20 Οὗτοι μὲν οὖν ἐκ τῶν Φωκιῶν ὄρων οἱ ποταμοὶ 19
 καταφέρονται, ὧν ὁ Κηφισσοὺς ἐκ Αἰλαίας Φωκιῆς
 πόλεως τὴν ἀρχὴν λαμβάνει, καθάπερ καὶ Ὀμηρὸς φη-
 σιν „οἳ τε Αἰλαίαν ἔχον πηγῆς ἐπὶ Κηφισσοῖο“ δι'
 Ἐλατείας δὲ ὄρεις μεγίστης τῶν ἐν Φωκεῦσι πόλεων,
 25 καὶ διὰ Παραποταμίων καὶ Φανοτέων ὁμοίως Φωκι-
 κῶν πολισμάτων, εἰς Χαιρώνειαν τῆς Βοιωτίας πρό-
 εἰσιν, εἴτα διὰ τῆς Ὀρχομενίας καὶ τῆς Κορωνειακῆς
 εἰς τὴν Κωπαῖδα λίμνην ἐξίησι· καὶ ὁ Περμησσὸς δὲ
 καὶ ὁ Ὀλμειός, ἐκ τοῦ Ἑλικῶνος συμβάλλοντες ἀλλή-
 30 λοις, εἰς τὴν αὐτὴν ἐμπίπτουσι λίμνην τὴν Κωπαῖδα
 τοῦ Ἀλιάρτου πλη[σίον· καὶ ἄλλα] δὲ ρεύματα εἰς αὐ-
 τὴν ἐμβάλλει. ἔστι μὲν οὖν μεγάλη, τὴν περιμέτρον

ἔχουσα ὀγδοήκοντα καὶ τριακοσίων σταδίων, αἱ δὲ ἐκρύσεις οὐδαμοῦ φαίνονται πλὴν τοῦ δεχομένου τὸν Κηφισὸν χάσματος καὶ τῶν ἐλῶν.

- 20 [Τῶν δὲ περι]κειμένων λιμνῶν ἐστὶν ἡ τε * Τρεφία καὶ ἡ Κ[ηφισίς, ἥς] μέμνηται καὶ Ὅμηρος „ὅς ῥ' ὅ
 „ἐν Ἰλῇ ναίεσκε μέγα πλούτοιο μεμηλῶς, λίμνη κε-
 „κλιμένος Κηφισίδι.“ οὐ γὰρ λίμνην τὴν Κωπαΐδα
 βούλεται λέγειν, ὥς οἴονται τινες, ἀλλὰ τὴν Ἰλικὴν
 προσαγορευομένην ἀπὸ τῆς πλησίον κώμης ἣν καλοῦ-
 σιν Ἰλας, οὐδὲ Ἰδην, ὥς ἐνιοὶ γράφουσιν „ὅς ῥ' ἐν 10
 „Ἰδῇ ναίεσκεν.“ ἡ μὲν γὰρ ἐστὶν ἐν Αὐδίᾳ „Τμῶλῳ
 C.408 „ὑπὸ νιφόεντι, Ἰδῆς ἐν πίοι διήμῳ,“ ἡ δὲ Βοιωτικὴ
 ἐπιφέρει γοῦν τῷ „λίμνη κεκλιμένος Κηφισίδι“ τὸ
 „πὰρ δὲ οἱ ἄλλοι ναῖον Βοιωτοί.“ ἡ μὲν γὰρ ἐστὶ με-
 γάλη καὶ οὐκ ἐν τῇ Θηβαΐδι, ἡ δὲ μικρά, ἐκεῖθεν δι' 15
 ὑπονόμων πληρουμένη, κειμένη μεταξὺ Θηβῶν καὶ
 Ἀνθηδόνας. Ὅμηρος δ' ἐνικῶς ἐκφέρει τοτὲ μὲν ἐκτεί-
 νων τὴν πρώτην συλλαβὴν, ὥς ἐν τῷ καταλόγῳ „ἡ δ'
 „Ἰλῆν καὶ Πετεῶνα,“ ποιητικῶς, τοτὲ δὲ συστέλλων
 „ὅς ῥ' ἐν Ἰλῇ ναίεσκε“ „σκυτοτόμων ὅχ' ἄριστος Ἰλῇ 20
 „ἐνὶ οἰκίᾳ ναίων.“ οὐδ' ἐνταῦθα εὖ γραφόντων τι-
 νῶν Ἰδῇ ἐνι· οὐ γὰρ ὁ Αἴας ἐκ Αὐδίας τὸ σάκος μετε-
 πέμπετο.

- 21 [Αὗται δ' αἱ] λίμναι τὴν τάξιν τῶν ἐφεξῆς τόπων
 ὑπογράφουσιν ὥστε] λόγῳ περιληφθῆναι σαφῶς, ὅτι 25
 ὁ [ποιητὴς ἀτάκτως χρῆται] τοῖς ὀνόμασι τῶν τόπων
 τῶν τε ἀξ[ιολόγων καὶ τῶν μῆ· καὶ] χαλεπὸν ἐν το-
 σούτοις καὶ ἀσήμοις τοῖς πλείστοις καὶ ἐν μεσογαίᾳ μη-
 δαμοῦ τῇ τάξει διαπεσεῖν· ἡ παραλία δ' ἔχει τι πλεο-
 νέκτημα πρὸς τοῦτο· καὶ γνωριμώτεροι οἱ τόποι, καὶ 30

9. post προσαγορευομένην: τῇ προσφθίᾳ ὡς λυρικὴν 10.
 post Ἰλας: ὡς λύρας καὶ θύρας 20. post ναίεσκε: Τύχιος

ἢ θάλαττα τό γε ἐξῆς ὑπαγορεύει βέλτιον· διόπερ καὶ
 ἡμεῖς ἐκεῖθεν πειρώμ[εθα περιοδεύειν]· ἐνταῦθα δ'
 ἐάσαντες τοῦτο τῷ π[οιητῇ ἀκολουθοῦντες ποιήσομεν
 τὴν] διαρίμην, προστιθέντες ὅ τι ἂν χρήσιμον ἦ
 5 [πρὸς τὴν ὑπόθεσιν] ἡμῖν, ὑπ' ἐκείνου δὲ παραλειφθέν.
 ἄρχεται [δ' ἀπὸ τῆς Τρι]ης καὶ τῆς Αὐλίδος, περὶ ὧν
 εἰρήκαμεν.

Σχοῖνος δ' ἐστὶ χώρα τῆς Θηβαϊκῆς κατὰ τὴν ὁδὸν 22
 τὴν ἐπὶ Ἀνθηδόνης, διέχουσα τῶν Θηβῶν ὅσον πεντή-
 10 κοντα σταδίους· ῥεῖ δὲ καὶ ποταμὸς δι' αὐτῆς Σχοινοῦς.

Σκῶλος δ' ἐστὶ κώμη τῆς Παρασωπίας ὑπὸ τῷ 23
 Κιθαιρῶνι, δυσοίκητος τόπος καὶ τραχύς, ἀφ' οὗ καὶ
 ἡ παροιμία „εἰς Σκῶλον μῆτ' αὐτὸς ἵναι, μῆτ' ἄλλω
 ἐπεσθαι.“ καὶ τὸν Πενθέα δὲ ἐνθένδε καταγόμενον
 15 διασπασθῆναί φασιν. ἦν δὲ καὶ τῶν περὶ Ὀλυνθον
 πόλεων ὁμώνυμος αὐτῇ Σκῶλος. εἴρηται δ' ὅτι Πα-
 ρασώπιοι καὶ κώμη τις καλεῖται ἐν Ἡρακλείᾳ τῇ Τρα-
 χυνίᾳ, παρ' ἣν ῥεῖ Ἀσωπὸς ποταμὸς, καὶ ὅτι ἐν Σι-
 κυωνίᾳ ἄλλος ἐστὶν Ἀσωπὸς καὶ ἡ χώρα Ἀσωπία, δι'
 20 ἧς ῥεῖ.

Ὁ Ἐτεωνὸς δὲ Σκάρφῃ μετωνομάσθη, καὶ αὕτη 24
 δὲ τῆς Παρασωπίας. ὁ γὰρ Ἀσωπὸς καὶ ὁ Ἰσμηνὸς διὰ
 τοῦ πεδίου ῥέουσιν τοῦ πρὸ τῶν Θηβῶν· ἔστι δὲ καὶ ἡ
 Αἰρκὴ κρήνη καὶ Πότνιαι, ἐφ' ὧν μυθεύεται τὰ περὶ C.409
 25 τὸν Ποτνιέα Γλαῦκον τὸν διασπασθέντα ὑπὸ τῶν Ποτ-
 νιάδων Ἰππων τῆς πόλεως πλησίον, καὶ ὁ Κιθαιρὼν δὲ
 οὐκ ἄπαθεν τῶν Θηβῶν τελευτᾷ· παρ' αὐτὸν δὲ ὁ
 Ἀσωπὸς ῥεῖ, τὴν ὑπώρειαν αὐτοῦ κλύζων καὶ ποιῶν
 τοὺς Παρασωπίους εἰς κατοικίας πλείους διηρημένους,
 30 ἅπαντας δ' ὑπὸ Θηβαίοις ὄντας (ἕτεροι δ' ἐν τῇ Πλα-

20. post ῥεῖ: εἰς καὶ ἄλλοι ποταμοὶ ὁμώνυμοι τῷ ποταμῷ
 τούτῳ.

ταιέων φασί τόν τε Σκῶλον καὶ τὸν Ἐτσεωνὺν καὶ τὰς Ἑρυθράς· καὶ γὰρ παρα[ρρεῖ] Πλαταιὰς καὶ παρὰ Τά-
ναγραν ἐκδίδωσιν). ἐν δὲ τῇ Θηβαίων εἰσὶ καὶ αἱ Θε-
ράπναι καὶ ὁ Τευμησσός, ὃν ἐκόσμησεν Ἀντίμαχος
διὰ πολλῶν ἐπῶν, τὰς μὴ προσούσας ἀρετὰς διαριθ- 5
μούμενος, „ἔστι τις ἡνεμόεις ὀλίγος λόφος.“ γινώριμα
δὲ τὰ ἔπη.

- 25 Θεσπειαν δὲ λέγει τὰς νῦν Θεσπιάς, πολλῶν ὀνο-
μάτων τῶν μὲν ἀμφοτέρως λεγομένων καὶ ἐνικῶς καὶ
πληθυντικῶς, καθάπερ καὶ ἀρρενικῶς καὶ θηλυκῶς, 10
τῶν δ' ὑποτέρως. ἔστι δὲ πόλις πρὸς τῷ Ἐλικῶνι νο-
τιωτέρα αὐτοῦ, ἐπικειμένη δὲ τῷ Κρισαίῳ κόλπῳ καὶ
αὐτῇ καὶ ὁ Ἐλικῶν· ἐπίνειον δ' ἔχουσιν αἱ Θεσπιαὶ
Κρέουσιν, ἣν καὶ Κρεουσίδα καλοῦσιν. ἐν δὲ τῇ Θε-
σπειῶν ἐστὶ καὶ ἡ Ἀσκηρὴ κατὰ τὸ πρὸς Ἐλικῶνα μέρος, 15
ἢ τοῦ Ἡσιόδου πατρίδος· ἐν δεξιᾷ γὰρ ἐστὶ τοῦ Ἐλικῶ-
νος, ἐφ' ὕψηλοῦ καὶ τραχέος τόπου κειμένη, ἀπέχουσα
τῶν Θεσπιῶν ὅσον τετταράκοντα σταδίους, ἣν καὶ κε-
κωμώδηκεν αὐτὸς ἐ[πιλαβόμενος] τοῦ πατρός, ὅτι ἐκ
Κύμης τῆς Αἰολίδος μ[ετέστη, θρασύ]τερον λέγων 20
„νάσσατο δ' ἄγχ' Ἐλικῶνος οἰζυρῇ [ἐνὶ κόμῃ], Ἀσκηρὴ
χεῖμα κακῇ, θέρει ἀργαλή, οὐδέ ποτ' [ἔσθλῃ].“ ὁ δὲ
Ἐλικῶν συνεχής ἐστι τῇ Φωκίδι ἐκ τῶν πρὸς ἄρκτον
αὐτοῦ μερῶν· μικρὰ δὲ καὶ ἐκ τῶν πρὸς ἐσπέραν κατὰ
τὸν ὕστατον λιμένα τῆς Φωκίδος, ὃν καλοῦσιν ἀπὸ 25
τοῦ συμβεβηκότος μυχόν· ὑπέρεκειται γὰρ κατὰ τοῦ-
τον μάλιστα τὸν λιμένα τοῦ Κρισαίου κόλπου καὶ ὁ
Ἐλικῶν καὶ ἡ Ἀσκηρὴ καὶ ἔτι αἱ Θεσπιαὶ καὶ τὸ ἐπίνειον
αὐτῆς ἡ Κρέουσα. τοῦτο δὲ καὶ κοιλότατον νομίζεται
το μέρος τοῦ Κρισαίου κόλπου καὶ ἀπλῶς τοῦ Κοριν- 30
θιακοῦ· στάδιοι δ' εἰσὶ τῆς [παραλίας] τῆς ἀπὸ τοῦ
μυχοῦ τοῦ λιμένος εἰς Κρέουσιν ἐνε[νήκοιτα·] ἐντεῦ-

- θεν δὲ ἑκατὸν εἰκοσιν ἕως τῆς ἄκρας ἦν [Ὀλμιάς] κα-
 λοῦσιν· ἐν δὲ τῷ κοιλοτάτῳ τοῦ κόλπου τοῦ [Κρισαίου
 συμ]βέβηκε τὰς Πηγὰς κεῖσθαι καὶ τὴν Οἰνώην, πε[ρὶ
 ὧν εἰρήκαμεν. ὁ μὲν οὖν Ἑλικῶν οὐ πολὺ διεσπηγῶς
 5 τοῦ Παρνασσοῦ ἐνάμιλλός ἐστιν ἐκείνῳ κατὰ τε ὕψος
 καὶ περίμετρον· ἄμφω γὰρ χιονόβολα τὰ ὄρη καὶ πε- C.410
 τρώδῃ, περιγράφεται δ' οὐ πολλῇ χώρῃ. ἐνταῦθα δ'
 ἐστὶ τό τε τῶν Μουσῶν ἱερὸν καὶ ἡ Ἴππου κρήνη καὶ
 τὸ τῶν Λειβηθριδῶν νυμφῶν ἄντρον· ἐξ οὗ τεκμαί-
 10 ροιτ' ἂν τις Θοῤῃκας εἶναι τοὺς τὸν Ἑλικῶνα ταῖς Μού-
 σαις καθιερώσαντας, οἳ καὶ τὴν Πιερίδα καὶ τὸ Λεῖβη-
 θρον καὶ τὴν Πύμπλειαν ταῖς αὐταῖς θεαῖς ἀνέδειξαν·
 ἐκαλοῦντο δὲ Πίερες· ἐκλιπόντων δ' ἐκείνων Μακε-
 δόνες νῦν ἔχουσι τὰ χωρία ταῦτα. εἴρηται δ' ὅτι τὴν
 15 Βοιωτίαν ταύτην ἐπώκησάν ποτε Θοῤῃκες βιασάμενοι
 τοὺς Βοιωτοὺς καὶ Πελασγοὶ καὶ ἄλλοι βάρβαροι. αἱ
 δὲ Θεσπιαὶ πρότερον μὲν ἐγνωρίζοντο διὰ τὸν Ἑρωτα
 τὸν Πραξιτέλους, ὃν ἔγλυψε μὲν ἐκεῖνος, ἀνέθηκε δὲ
 Γλυκέρα ἢ ἑταῖρα Θεσπιδεύσιν ἐκεῖθεν οὔσα τὸ γένος,
 20 λαβοῦσα δῶρον παρὰ τοῦ τεχνίτου. πρότερον μὲν οὖν
 ὀψόμενοι τὸν Ἑρωτὰ τινες ἀνέβαινον ἐπὶ τὴν Θεσπείαν
 ἄλλως οὐκ οὔσαν ἀξιοθέατον, νυνὶ δὲ μόνῃ συνέστηκε
 τῶν Βοιωτικῶν πόλεων καὶ Τάναγρα· τῶν δ' ἄλλων
 ἐρείπια καὶ ὀνόματα λείπεται.
- 25 [Μετ]ὰ δὲ Θεσπιδῆς καταλέγει Γραῖαν καὶ Μυκα- 26
 [λησσόν, περ]ὶ ὧν εἰρήκαμεν· ὥς δ' αὐτως καὶ περὶ
 τῶν [ἄλλων „οἱ τ'] ἀμφ' Ἄρμ' ἐνέμοντο καὶ Εἰλέσιον
 „καὶ Ἐρύθρας, [οἱ τ' Ἑλεῶν] εἶχον ἡδ' Ἄλῃην καὶ Πε-
 „τεῶνα.“ Πετεῶν δὲ κώμη τῆς Θεβαλδος ἐγγὺς τῆς
 30 ἐπ' Ἀνθηδόνα ὁδοῦ, ἣ δ' Ὠκαλή μέση Ἀλιάρτου καὶ
 Ἀλαλκομενίου ἑκατέρου τριάκοντα σταδίους ἀπέχου-
 σα· παραρρεῖ δ' αὐτὴν ποτάμιον ὁμώνυμον. Μεδεῶν

δ' ὁ μὲν Φωκικὸς ἐν τῷ Κρῖσαιῳ κόλπῳ, διέχων Βοιω-
τίας σταδίους ἑκατὸν ἐξήκοντα, ὁ δὲ Βοιωτικὸς ἀπ'
ἐκείνου κέκληται, πλησίον δ' ἐστὶν Ὀρχηστοῦ ὑπὸ τῷ
Φοινικίῳ ὄρει, ἀφ' οὗ καὶ μετωνόμασται Φοινικίς· τῆς
δὲ Θηβαίας καὶ τοῦτο λέγεται, [ὑπ' ἐνί]ων δὲ τῆς Ἀλι- 5
αρτίας καὶ Μεδεῶν καὶ Ὠκαλέα.

27 Εἰτά φησι „Κώπας Εὐτρησίην τε πολυτρήρωνά τε
„Θίσβην.“ περὶ μὲν οὖν Κωπῶν εἴρηται· προσάρκτιος
δὲ ἐστὶν ἐπὶ τῇ Κωπαίδι λίμνῃ· αἱ δ' ἄλλαι κύκλῳ εἰ-
σὶν αἶδε, Ἀκραϊφαίαι Φοινικίς Ὀρχηστός Ἀλιάρτος Ὠκα- 10
λέα Ἀλαλκομεναὶ Τιλφούσιον Κορώνεια. καὶ τό γε
C.411 παλαιὸν οὐκ ἦν τῆς λίμνης κοινὸν ὄνομα, ἀλλὰ καθ'
ἐκάστην πρὸς αὐτῇ κατοικίαν ἐκείνης ἐπώνυμος ἐλέ-
γετο, Κωπαῖς μὲν τῶν Κωπῶν, Ἀλιαρτίς δὲ Ἀλιάρτου,
καὶ οὕτως ἐπὶ τῶν ἄλλων, ὕστερον δ' ἡ πᾶσα Κωπαῖς 15
ἐλέχθη κατ' ἐπικράτειαν· κοιλότατον γὰρ τοῦτο τὸ χω-
ρίον. Πίνδαρος δὲ καὶ Κηφισσίδα καλεῖ ταύτην· πα-
ρατίθησι γοῦν τὴν Τιλφῶσσαν κρήνην ὑπὸ τῷ Τιλ-
φωσσίῳ ὄρει ῥέουσαν πλησίον Ἀλιάρτου καὶ Ἀλαλκο-
μενῶν, ἐφ' ἣ τὸ Τειρεσίου μνημα· αὐτοῦ δὲ καὶ τὸ 20
τοῦ Τιλ[φωσσίου Ἀπόλλω]νος ἱερόν.

28 Ὁ δὲ ποιητὴς ἐφεξῆς ταῖς Κώπαις Εὐτρησίην τί-
θησι κωμίον Θεσπιέων· ἐνταυθα φασὶ Ζῆθον καὶ
Ἀμφίονα οἰκῆσαι πρὶν βασιλεῦσαι Θηβῶν. ἡ δὲ Θίσβη
Θίσβαι νῦν λέγονται, οἰκεῖται δὲ μικρὸν ὑπὲρ τῆς θα- 25
λάττης ὁμορον Θεσπιεῦσι τὸ χωρίον καὶ τῇ Κορωνει-
ακῇ, ὑποπεπτωκὸς ἐκ τοῦ νοτίου μέρους τῷ Ἐλικῶνι
καὶ αὐτό· ἐπίνειον δ' ἔχει πετρωδὲς περιστερῶν με-
στόν, ἐφ' οὗ φησιν ὁ ποιητὴς „πολυτρήρωνά τε Θί-
„σβην.“ πλοῦς δ' ἐστὶν ἐνθενδε εἰς Σικυνῶνα σταδίων 30
ἑκατὸν ἐξήκοντα.

29 Ἐξῆς δὲ Κορώνειαν καταλέγει καὶ Ἀλιάρτον καὶ

Πλαταιὰς καὶ Γλίσσαντα. ἡ μὲν οὖν Κορώνεια ἐγγὺς τοῦ Ἑλικῶνός ἐστιν ἐφ' ὕψους ἰδρυμένη, κατελάβοντο δ' αὐτὴν ἐπανιόντες ἐκ τῆς Θετταλικῆς Ἀρνης οἱ Βοιωτοὶ μετὰ τὰ Τρωικά, ὅτε περ καὶ τὸν Ὀρχομενὸν 5 ἔσχον· κρατήσαντες δὲ τῆς Κορωνείας ἐν τῷ πρὸ αὐτῆς πεδίῳ τὸ τῆς Ἰωνίας Ἀθηνᾶς ἱερὸν ἰδρύνσαντο ὁμώνυμον τῷ Θετταλικῷ, καὶ τὸν παραρρέοντα ποταμὸν Κουάριον προσηγόρευσαν ὁμοφώνως τῷ ἐκεῖ. Ἀλκαῖος δὲ καλεῖ Κωράλιον λέγων „[ὦ'ν]ασσ' Ἀθανάα 10 „πολε[μηδόκος], ἃ ποι Κορωνίας ἐπιλαῖω ναύω πάροι, „θεν ἀμφι[βαίνεις] Κωραλίω ποταμῷ παρ' ὄχθαις.“ ἐνταῦθα δὲ καὶ τὰ Παμβοιωτία συνετέλουν· συγκαθίσδρυνται δὲ τῇ Ἀθηνᾷ ὁ Αἰδης κατὰ τινα, ὥς φασι, μυστικὴν αἰτίαν. οἱ μὲν οὖν ἐν τῇ Κορωνείᾳ Κορώνιοι 15 λέγονται, οἱ δ' ἐν τῇ Μεσσηνιακῇ Κορωναεῖς.

Ἀλῖαρτος δὲ νῦν οὐκέτι ἐστὶ κατασκαφεῖσα ἐν τῷ 30 πρὸς Περσέα πολέμῳ, τὴν χώραν δ' ἔχουσιν Ἀθηναῖοι δόντων Ῥωμαίων. ἐκεῖτο δὲ ἐν στενῷ χωρίῳ μεταξὺ ὑπερκειμένου ὄρους καὶ τῆς Κωπαίδος λίμνης πλησίον τοῦ Περμησσοῦ καὶ τοῦ Ὀλμειοῦ καὶ τοῦ ἔλους τοῦ 20 φύοντος τὸν αὐλητικὸν κάλαμον.

Πλαταιὰ δέ, ἃς ἐνικῶς εἶπεν ὁ ποιητής, ὑπὸ τῷ 31 Κιθαιρῶνι εἰσι μετὰ αὐτοῦ καὶ Θηβῶν κατὰ τὴν ὁδὸν τὴν εἰς Ἀθῆνας καὶ Μέγαρα ἐπὶ τῶν ὄρων τῶν 0.412 25 τῆς Ἀττικῆς καὶ τῆς Βοιωτίας. [αἱ] γὰρ Ἐλευθεραὶ πλησίον, ἃς οἱ μὲν [τῆς Ἀττικῆς, οἱ δὲ] τῆς Βοιωτίας φασιν. εἴρηται δ' ὅτι παραρρεῖ τὰς Πλαταιὰς ὁ Ἀσωπός. ἐνταῦθα Μαρδόνιον καὶ τὰς τριάκοντα μυριάδας Περσῶν αἱ τῶν Ἑλλήνων δυνάμεις ἄρδην ἠφάνισαν· ἰδρύ- 30 σαντό τε ἔλευθερίου Διὸς ἱερὸν καὶ ἀγῶνα γυμνικὸν στεφανίτην ἀπέδειξαν, Ἐλευθέρια προσαγορεύσαντες· ταφὴ τε δείκνυται δημοσία τῶν τελευτησάντων ἐν τῇ

μάχη. ἔστι δὲ καὶ ἐν τῇ Σικυωνίᾳ δῆμος Πλαταιαί, ὁθενπερ ἦν Μνασάλκης. ὁ ποιητής. Γλίσσαντα δὲ λέγει κατοικίαν ἐν τῷ Ἑπάτῳ ὄρει ὃ ἐστὶν ἐν τῇ Θηβαϊκῇ πλησίον Τευμησσοῦ καὶ τῆς Καδμείας, ᾧ ὑποπίπτει τὸ Ἀόνιον καλούμενον πεδίον, ὃ διατείνει [εἰς 5 τὴν Καδμείαν] ἀπὸ τοῦ Ἑπάτου ὄρους.

- 32 Τὸ δ' οὕτω φηθέν „οἳ θ' ὑπὸ Θήβας εἶχον“ οἱ μὲν δέχονται πολιδιόν τι Ἑποθήβας καλούμενον, οἱ δὲ τὰς Ποτνίας· τὰς γὰρ Θήβας ἐκλελειφθαι διὰ τὴν τῶν Ἐπιγόνων στρατείαν καὶ μὴ μετασχεῖν τοῦ Τρωικοῦ 10 πολέμου· οἱ δὲ μετασχεῖν μὲν οἰκεῖν δὲ ὑπὸ τῇ Καδμείᾳ τότε ἐν τοῖς ἐπιπέδοις χωρίοις μετὰ τὴν τῶν Ἐπιγόνων ἄφοδον, τὴν Καδμείαν ἀδυνατοῦντας ἀνακτίσαι· ἐπεὶ δὲ ἡ Καδμεία ἐκαλεῖτο Θήβαι, ὑπὸ Θήβας εἶπεῖν ἀντὶ τοῦ ὑπὸ τῇ Καδμείᾳ οἰκοῦντας τὸν ποιητὴν 15 τοὺς τότε Θηβαίους.

- 33 Ὅγχηστός δ' ἐστίν, ὅπου τὸ Ἀμφικτυονικὸν συνέγγετο ἐν τῇ Ἀλιαρτίᾳ πρὸς τῇ Κωπαῖδι λίμνῃ καὶ τῷ Τηνερικῷ πεδίῳ, ἐν ᾧ κείμενος φιλός, ἔχων Ποσειδῶνος ἱερὸν καὶ αὐτὸ φιλόν. οἱ δὲ ποιηταὶ κοσμοῦσιν, 20 ἄλσῃ καλοῦντες τὰ ἱερὰ πάντα κἄν ᾗ φιλά· τοιοῦτόν ἐστι καὶ τὸ τοῦ Πινδάρου περὶ τοῦ Ἀπόλλωνος λεγόμενον „[δι]νηθεὶς ἐπήγει γὰρ τε καὶ θάλασσαν, καὶ σκοπιαῖσιν „[μεγάλαις] ὀρέων ὕπερ ἔστα, καὶ μυχοὺς * δεινάσατο „βαλλό[μενος] κρηπίδας ἁλσέων.“ οὐκ εὖ δ' ὁ Ἀλ- 25 καῖος, ὥσπερ τὸ τοῦ ποταμοῦ ὄνομα παρέτρεψε τοῦ Κουαρίου, οὕτω καὶ τοῦ Ὅγχηστοῦ κατέφενυσται πρὸς ταῖς ἐσχατιαῖς τοῦ Ἐλικῶνος αὐτὸν τιθεῖς· ὁ δ' ἐστὶν C.413 ἄπωθεν ἱκανῶς τούτου τοῦ ὄρους.

- 34 Τὸ δὲ Τηνερικὸν πεδίον ἀπὸ Τηνέρου προσηγό- 30

2. post ποιητης: Μνασάλκης τὸ μνᾶμα τῷ Πλαταιάδᾳ.

4. post Καδμείας: γεώλοφα καλεῖται θρία

ρευται μυθεύεται δ' Ἀπόλλωνος υἱὸς ἐκ Μελίας,
 προφήτης τοῦ μαντείου κατὰ τὸ Πτῶον ὄρος, ὃ φησιν
 εἶναι τρικόρυφον ὃ αὐτὸς ποιητής „καί ποτε τὸν τρι-
 „κάρανον Πτωίου κευθμῶνα κατέσχευθε.“ καὶ τὸν Τή-
 5 νερον καλεῖ „ναοπόλον μάντιν δαπέδοισιν ὁμοκλέα.“
 ὑπέρεκται δὲ τὸ Πτῶον τοῦ Τηνερικοῦ πεδίου καὶ τῆς
 Κωπαῖδος λίμνης πρὸς Ἀκραίφιον. Θηβαίων δ' ἦν τό
 τε μαντεῖον καὶ τὸ ὄρος· τὸ δ' Ἀκραίφιον καὶ αὐτὸ
 κεῖται ἐν ὕψει. φασὶ δὲ τοῦτο καλεῖσθαι Ἄρνην ὑπὸ
 10 τοῦ ποιητοῦ, ὁμώνυμον τῇ Θετταλικῇ.

Οἱ δὲ φασὶ καὶ τὴν Ἄρνην ὑπὸ τῆς λίμνης κατα- 35
 ποθῆναι καὶ τὴν Μίδειαν. Ζηνόδοτος δὲ γράφων „οἷ
 „δὲ πολυστάφυλον Ἄσκηρην ἔχον,“ οὐκ ἔοικεν ἐντυ-
 χόντι τοῖς ὑπὸ Ἑσιόδου περὶ τῆς πατρίδος λεχθεῖσι καὶ
 15 τοῖς ὑπ' Εὐδόξου πολὺ χείρω λέγοντος περὶ τῆς Ἄσκηρος.
 πῶς γὰρ ἂν τις πολυστάφυλον τὴν τοιαύτην ὑπὸ τοῦ
 ποιητοῦ λέγεσθαι πιστεύσειεν; οὐκ εὖ δὲ οὐδὲ οἱ Τάρ-
 νην ἀντὶ τῆς Ἄρνης γράφοντες· οὐδὲ γὰρ μία δείκνυ-
 ται Τάρνη παρὰ τοῖς Βοιωτοῖς, ἐν δὲ Αὐδοῖς ἐστίν, ἥς
 20 καὶ Ὅμηρος μέμνηται „Ἰδομενεὺς δ' ἄρα Φαίστον
 „ἐνήρατο Μήονος υἱὸν Βῶρον, ὃς ἐκ Τάρνης ἐριβώ-
 „λακος εἰληλούθει.“ λοιπαὶ δ' εἰσὶ τῶν μὲν περικειμέ-
 νων τῇ λίμνῃ αἷ τε Ἀλαλκομεναὶ καὶ τὸ Τιλφώσσιον,
 τῶν δ' ἄλλων Χαιρώνεια καὶ Λεβάδεια καὶ Λεῦκτρα,
 25 περὶ ὧν ἄξιον μνησθῆναι.

Ἀλαλκομενῶν τοίνυν μέμνηται ὁ ποιητής, ἀλλ' 36
 οὐκ ἐν καταλόγῳ „Ἦρη τ' Ἀργεῖη καὶ Ἀλαλκομενῆς
 Ἀθήνη.“ ἔχει δ' ἀρχαῖον ἱερὸν Ἀθηναῖς σφόδρα τιμώμε-
 νον, καὶ φασὶ γε τὴν θεὸν γεγενῆσθαι ἐνθάδε, καθά-
 30 περ καὶ τὴν Ἦραν ἐν Ἀργεῖ, καὶ διὰ τοῦτο τὸν ποιητὴν
 ὥς ἀπὸ πατρίδων τούτων ἀμφοτέρως οὕτως ὀνομάσαι.
 διὰ τοῦτο δ' ἴσως οὐδ' ἐν τῷ καταλόγῳ μέμνηται τῶν

ἐνταῦθα ἀνδρῶν, ἐπειδὴ ἱεροὶ ὄντες παρεῖντο τῆς στρατείας. καὶ γὰρ καὶ ἀπόρρητος αἶε διετέλεσεν ἡ πόλις, οὔτε μεγάλη οὔσα οὔτ' ἐν εὐρεκαὶ χωρίῳ κειμένη, ἀλλ' ἐν πεδίῳ· τὴν δὲ θεὸν σεβόμενοι πάντες ἀπείχοντο πάσης βίας, ὥστε καὶ Θηβαῖοι κατὰ τὴν τῶν 5 Ἐπιγόνων στρατείαν ἐκλιπόντες τὴν πόλιν ἐκεῖσε λέγονται καταφεύγειν καὶ εἰς τὸ ὑπερκείμενον ὄρος ἐρυμνὸν τὸ Τιλφῶσσιον, ὅφ' ὃ Τιλφῶσσα κρήνη καὶ τὸ τοῦ Τειρεσίου μνημα ἐκεῖ τελευτήσαντος κατὰ τὴν φωνήν.

C.414

37

Χαιρώνεια δ' ἐστὶν Ὀρχομενοῦ πλησίον, ὅπου Φίλιππος ὁ Ἀμύντου μάχῃ μεγάλη νικήσας Ἀθηναίους τε καὶ Βοιωτοὺς καὶ Κορινθίους κατέστη τῆς Ἑλλάδος κύριος· δείκνυνται δὲ κἀνταῦθα ταφὴ τῶν πεσόντων ἐν τῇ μάχῃ δημοσία· περὶ δὲ τοὺς τόπους τοὺς αὐτοὺς 15 καὶ Ῥωμαῖοι τὰς Μιθριδάτου δυνάμεις πολλῶν μυριάδων κατηγωνίσαντο, ὥστ' ὀλίγους ἐπὶ θάλατταν σωθέντας φυγεῖν ἐν ταῖς ναυσί, τοὺς δ' ἄλλους τοὺς μὲν ἀπολέσθαι τοὺς δὲ καὶ ἀλῶναι.

38

Λεβάρδεια δ' ἐστὶν, ὅπου Διὸς Τροφωνίου μαν- 20 τεῖον ἴδρυνται, χάσματος ὑπονόμου κατὰ βᾶσιν ἔχον, καταβαίνει δ' αὐτὸς ὁ χρηστηριαζόμενος· κεῖται δὲ μετὰ τὸ τοῦ Ἑλικῶνος καὶ τῆς Χαιρωνείας, Κορωνείας πλησίον.

39

Τὰ δὲ Λεῦκτρα ἐστὶν, ὅπου Λακεδαιμονίους μέ- 25 γάλη μάχῃ νικήσας Ἐπαμεινώνδας ἀρχὴν εὗρετο τῆς καταλύσεως αὐτῶν· οὐκέτι γὰρ ἐξ ἐκείνου τὴν τῶν Ἑλλήνων ἡγεμονίαν ἀναλαβεῖν ἰσχυσαν ἣν εἶχον πρότερον, καὶ μάλιστ' ἐπειδὴ καὶ τῇ δευτέρᾳ συμβολῇ τῇ περὶ Μαντίνειαν κακῶς ἔπραξαν. τὸ μέντοι μὴ ὅφ' 30 ἐτέροις εἶναι καίπερ οὕτως ἐπτακόσι συνέμεινε μέχρι τῆς Ῥωμαίων ἐπικρατείας· καὶ παρὰ τούτοις δὲ τιμώ-

μενοι διατελοῦσι διὰ τὴν τῆς πολιτείας ἀρετὴν. δεικνυται δὲ ὁ τόπος οὗτος κατὰ τὴν ἐκ Πλαταιῶν εἰς Θεσπιάς ὁδόν.

- Ἐξῆς δ' ὁ ποιητὴς μέμνηται τοῦ τῶν Ὀρχομε- 40
 5 νίων καταλόγου, χωρίζων αὐτοὺς ἀπὸ τοῦ Βοιωτιακοῦ ἔθνους. καλεῖ δὲ Μινύειον τὸν Ὀρχομενὸν ἀπὸ ἔθνους τοῦ Μινυῶν· ἐντεῦθεν δὲ ἀποικησαί τινας τῶν Μινυῶν εἰς Ἰωλκόν φασιν, ὅθεν τοὺς Ἀργοναύτας Μινύας λεχθῆναι. φαίνεται δὲ τὸ παλαιὸν
 10 καὶ πλουσία τις γεγονυῖα πόλις καὶ δυναμένη μέγα· τοῦ μὲν οὖν πλούτου μάρτυς καὶ Ὅμηρος· διαριθμούμενος γὰρ τοὺς τόπους τοὺς πολυχρηματήσαντάς φησιν „οὐδ' ὅς' ἐς Ὀρχομενὸν ποτινίσσεται, „οὐδ' ὅσα Θήβας Αἰγυπτίας.“ τῆς δυνάμεως δέ, ὅτι
 15 Θηβαῖοι δασμὸν ἐτέλουν τοῖς Ὀρχομενίοις καὶ Ἐργίλῳ τῷ τυραννοῦντι αὐτῶν, ὃν ὑφ' Ἡρακλέους καταλυθῆναί φασιν. Ἐτεοκλῆς δέ, τῶν βασιλευσάντων ἐν Ὀρχομενῷ τις, Χαρίτων ἱερὸν ἰδρυσάμενος πρῶτος ἀμφοτέρω ἐμφαίνει, καὶ πλοῦτον καὶ δύναμιν, ὅς
 20 εἴτ' ἐν τῷ λαμβάνειν χάριτας εἴτ' ἐν τῷ διδόναι κατορθῶν εἴτε καὶ ἀμφοτέρω, τὰς θεὰς ἐτίμησε 0.415
 ταύτας. λέγουσι δὲ τὸ χωρίον, ὅπερ ἡ λίμνη κατέ-

εχει, τὴν αμοιβὴν εχει. το γὰρ κενουμένον αμα καὶ πληρουμένον πρὸς τὴν χρείαν αἰετὶ πλήρες ἐστιν, ὁ δὲ διδοὺς μὲν μὴ λαμβάνων δὲ οὐδ' ἂν ἐπὶ θάτερα κατορθοίη· παύσεται γὰρ διδοὺς ἐπιλείποντος τοῦ ταμείου, παύσονται δὲ καὶ οἱ διδόντες τῷ λαμβάνοντι μόνον, χαρίζομένῳ δὲ μηδέν, ὥστ' οὐδ' οὗτος ἐτέρως ἂν κατορθοίη. ὅμοια δὲ καὶ περὶ δυνάμεως λέγοιτ' ἂν. χωρὶς δὲ τοῦ κοινοῦ λόγου διότι „τὰ χρήματ' ἀνθρώποισι τιμιώτατα, δύναμιν τε πλείστην τῶν ἐν ἀνθρώποις ἔχει,“ καὶ ἐκ τῶν καθ'

χει νῦν ἢ Κωπαῖς, ἀνεψύχθαι πρότερον καὶ γεωργεῖσθαι παντοδαπῶς ὑπὸ τοῖς Ὀρχομενίοις ὃν πλησίον οἰκοῦσι· καὶ τοῦτ' οὖν τεκμήριον τοῦ πλούτου τιθέασι.

- 41 Τὴν δ' Ἀσπληδόνα χωρὶς τῆς πρώτης συλλαβῆς 5
ἐκάλουν τινές· εἴτ' Εὐδείελος μετωνομάσθη καὶ αὐτὴ
καὶ ἡ χώρα, τάχα τι ἰδίωμα προσφερομένη ἐκ τοῦ δει-
λινοῦ κλίματος οἰκεῖον τοῖς κατοικοῦσι, καὶ μάλιστα
τὸ εὐχέμερον. διέχει δὲ τοῦ Ὀρχομενοῦ στάδια εἰκοσι·
μεταξὺ δ' ὁ Μέλας ποταμός.

- C. 416 10
42 Ὑπέρκειται δ' Ὀρχομενίας ὁ Πανοπεύς, Φωκικὴ
πόλις, καὶ Ἰάμπολις· τούτοις δ' ὁμορεῖ Ὀποῦς, ἡ τῶν
Λοκρῶν μητρόπολις τῶν Ἐπικνημιδίων. πρότερον μὲν
οὖν οἰκεῖσθαι τὸν Ὀρχομενόν φασιν ἐπὶ πεδίῳ, ἐπιπο-
λαζόντων δὲ τῶν ὑδάτων ἀνοικισθῆναι πρὸς τὸ Ἀκόν- 15
τιον ὄρος, παρατεῖνον ἐπὶ ἐξήκοντα σταδίους μέχρι
Παραποταμίων τῶν ἐν τῇ Φωκίδι. ἱστοροῦσι δὲ τοὺς
ἐν τῷ Πόντῳ καλουμένους Ἀχαιοὺς ἀποίκους Ὀρχομε-
νίων εἶναι τῶν μετὰ Ἰαλμένου πλανηθέντων ἐκεῖσε
μετὰ τὴν τῆς Τροίας ἄλωσιν. καὶ περὶ Κάρυστον δ' ἦν 20

ἕκαστα σκοπεῖν δεῖ. μάλιστα γὰρ τοὺς βασιλεῖς δύνασθαι φα-
μεν· διόπερ καὶ δυνάστας προσαγορεύομεν. δύνανται δ' ἄγον-
τες ἐφ' ἃ βούλονται τὰ πλήθη διὰ πειθοῦς ἢ βίας. πείθουσι μὲν
οὖν δι' εὐεργεσίας μάλιστα· οὐ γὰρ ἡ γὰρ διὰ τῶν λόγων ἐστὶ
βασίλική, ἀλλ' αὕτη μὲν δητορικὴ· βασιλικὴν δὲ πειθῶ λέγομεν,
ὅταν εὐεργεσίαις φέρωσι καὶ ἄγωσιν ἐφ' ἃ βούλονται· πείθουσι
μὲν δι' εὐεργεσιῶν, βιάζονται δὲ διὰ τῶν ὀπλων. ταῦτα δ'
ἄμφω χρημάτων ὧνά ἐστι· καὶ γὰρ στρατιὰν ἔχει πλείστην ὁ
[πλείστην] τρέφειν δυνάμενος, καὶ εὐεργετεῖν δύναται πλείστον
ὁ πλείστα κεκτημένος.

9. post εὐχέμερον: ψυχρότατα ἔν τῳ γὰρ τῷ ἄκρῳ τῆς ἡμέ-
ρας ἐστὶ, τούτων δὲ τὸ δειλινὸν τοῦ ἐσθινοῦ ψυχρότερον· εἰς
ἐπίτασιν γὰρ ἄγει πλησιάζον τῇ νυκτί, τὸ δ' εἰς ἀνέσιν ἀφιστά-
μενον τῆς νυκτός. ἔαμα δὲ τοῦ ψύχους ὁ ἥλιος· τὸ οὖν ἡλιαζό-
μενον πλείστον ἐν τῳ ψυχροτάτῳ καιρῷ εὐχειμερώτατον.

τις Ὀρχομενός. εὖ γὰρ τὴν τοιαύτην ὕλην ὑποβεβλή-
 κασιν ἡμῖν οἱ τὰ περὶ τῶν νεῶν συγγράψαντες, οἷς
 ἀκολουθοῦμεν ὅταν οἰκεία λέγωσι πρὸς τὴν ἡμετέραν
 ὑπόθεσιν.

- 5 Μετὰ δὲ τὴν Βοιωτίαν καὶ τὸν Ὀρχομενὸν ἡ Φω- 3
 κίς ἐστὶ πρὸς ἄρκτον παραβεβλημένη τῇ Βοιωτίᾳ πα-
 ραπλησίως ἀπὸ θαλάττης εἰς θάλατταν τό γε παλαιόν.
 ὁ γὰρ Δαφνουῦς ἦν τότε τῆς Φωκίδος, σχίζων ἐφ' ἐκά-
 τερα τὴν Λοκρίδα καὶ μέσος ταττόμενος τοῦ τε Ὀπου-
 10 λίου κόλπου καὶ τῆς τῶν Ἐπικνημιδίων παραλίας· νῦν
 δὲ Λοκρῶν ἐστὶν ἡ χώρα (τὸ δὲ πόλισμα κατέσκαπται),
 ὥστ' οὐδ' ἐκεῖ καθήκει οὐκέτι μέχρι τῆς πρὸς Εὐβοίᾳ
 θαλάττης ἡ Φωκίς, τῷ δὲ Κρισαίῳ κόλπῳ συνῆπται.
 αὐτὴ γὰρ ἡ Κρισαία τῆς Φωκίδος ἐστὶν ἐπ' αὐτῆς ἰδρυ-
 15 μένη τῆς θαλάττης καὶ Κίρρα καὶ Ἀντικύρα καὶ τὰ
 ὑπὲρ αὐτῶν ἐν τῇ μεσογαίᾳ συνεχῇ καίμενα χωρία πρὸς
 τῷ Παρνασσῷ, Δελφοί τε καὶ Κίρφεις καὶ Δαυλὶς καὶ
 αὐτὸς ὁ Παρνασσὸς τῆς τε Φωκίδος ὦν καὶ ἀφορίζων
 τὸ ἑσπερίον πλευρόν. ὃν τρόπον δ' ἡ Φωκίς τῇ Βοιω-
 20 τίᾳ παράκειται, τοῦτον καὶ ἡ Λοκρὶς τῇ Φωκίδι ἐκα-
 τέρα. διττὴ γάρ ἐστι διηρημένη ὑπὸ τοῦ Παρνασσοῦ
 δίχα, ἡ μὲν ἐκ τοῦ ἑσπερίου μέρους παρακειμένη τῷ
 Παρνασσῷ καὶ μέρος αὐτοῦ νεμομένη, καθήκουσα δ'
 ἐπὶ τὸν Κρισαῖον κόλπον, ἡ δ' ἐκ τοῦ πρὸς ἑὸν τελευ-
 25 τῶσα ἐπὶ τὴν πρὸς Εὐβοίᾳ θάλατταν. καλοῦνται δ' οἱ
 μὲν ἑσπεριοὶ Λοκροὶ καὶ Ὀζόλαι, ἔχουσί τε ἐπὶ τῇ δη-
 μοσίᾳ σφραγίδι τὸν ἑσπερον ἄστέρα ἐγκεχαραγμένον·
 οἱ δ' ἕτεροὶ δίχα πως καὶ αὐτοὶ διηρημένοι, οἱ μὲν
 Ὀπούντιοι ἀπὸ τῆς μητροπόλεως, ὁμοροὶ Φωκεῦσι καὶ
 30 Βοιωτοῖς, οἱ δ' Ἐπικνημιδίοι ἀπὸ ὄρους Κνημίδος,
 προσεχεῖς Οἰταίοις τε καὶ Μαλιεῦσιν. ἐν μέσῳ δὲ ἀμ-
 φοῖν τῶν τε Ἑσπερίων καὶ τῶν ἐτέρων Παρνασσός,

παραμήκης εἰς το ᾽προσάρκτιον μέρος ἐκτεινόμενος
 C 417 ἀπὸ τῶν περὶ Δελφοὺς τόπων μέχρι τῆς συμβολῆς τῶν
 τε Οἰταίων ὁρῶν καὶ τῶν Αἰτωλικῶν καὶ τῶν ἀνὰ μέ-
 σον Δωριέων. πάλιν γὰρ ὥσπερ ἡ Δο[κρὶς διττὴ οὐ]σα
 τοῖς Φωκεῦσι παραβέβληται, οὕτω [καὶ ἡ πᾶσα Οἰταία] 5
 μετὰ τῆς Αἰτωλίας καὶ τινων ἀνὰ μέσον τ[όπων τῆς
 Δω]ρικῆς τετραπόλεως τῇ Δοκρίδι ἑκατέρᾳ [καὶ Παρ-
 νασ]σῶ καὶ τοῖς Δωριεῦσιν. ὑπὲρ τούτων δ' ἤδη [οἱ
 Θετταλοὶ] καὶ τῶν Αἰτωλῶν οἱ προσάρκτιοι καὶ Ἀκαρ-
 ν[ᾶνες καὶ τινα] τῶν Ἑπειρωτικῶν ἔθνων καὶ τῶν 10
 Μακεδονικῶν· [δεῖ δέ,] ὅπερ ἔφαμεν καὶ πρότερον,
 παραλλήλους ὥσ[περ ταινίας] τινὰς τεταμένας ἀπὸ
 τῆς ἐσπέρας ἐπὶ τὰς ἀνατολάς] νοῆσαι τὰς λεχθεί-
 σας χώρας. ἱεροπρεπὴς δ' ἐστὶ πᾶς ὁ Παρνασσός,
 ἔχων ἄντρα τε καὶ ἄλλα χωρία τιμώμενά τε καὶ 15
 ἀγιστευόμενα· ὧν ἐστὶ γνωριμώτατόν τε καὶ κάλ-
 λιστον τὸ Κωρύκιον νυμφῶν ἄντρον ὁμώνυμον τῷ
 Κιλικίῳ. τῶν δὲ πλευρῶν τοῦ Παρνασσοῦ τὸ μὲν
 ἐσπέρειον νέμονται Δοκροὶ τε οἱ Ὀζόλαι καὶ τινες τῶν
 Δωριέων καὶ Αἰτωλοὶ κατὰ τὸν Κόρακα προσαγορευ- 20
 ὄμενον Αἰτωλικὸν ὄρος, τὸ δὲ Φωκεῖς καὶ Δωριεῖς οἱ
 πλείους, ἔχοντες τὴν Τετράπολιν περικειμένην πως
 τῷ Παρνασσῷ, πλεονάζουσιν δὲ τοῖς πρὸς ἑω. αἱ μὲν
 οὖν κατὰ τὸ μῆκος πλευ[ραὶ τῶν] λεχθεισῶν χωρῶν τε
 καὶ ταινιῶν ἐκάστης παρ[άλληλοι] ἅπασαί εἰσιν, ἡ μὲν 25
 οὐσα προσάρκτιος ἡ [δὲ πρὸς νότον]. αἱ δὲ λοιπαὶ
 ἐσπέριοι ταῖς ἐώαις οὐκ εἰσι π[αράλληλοι· οὐ]δὲ ἡ
 παραλία ἑκατέρᾳ, ἥ τε τοῦ Κρι[σαίου κόλπου μέ]χρι
 Ἀκτίου καὶ ἡ πρὸς Εὐβοίαν μέχρι τῆς [Θεσσαλονικείας]
 παράλληλοι ἀλλήλαις εἰσίν, εἰς αἷς τελ[ευτᾶ ταῦτα τὰ] 30
 ἔθνη· ἀλλ' οὕτω δέχεσθαι δεῖ τὰ σχήματα [τούτων
 τῶν χω]ρίων ὥς ἂν ἐν τριγώνῳ παρὰ τὴν [βάσιν τε-

ταμένων] γραμμῶν πλειόνων· τὰ γὰρ ἀποληφ[θέντα
 σχήματα πα]ράλληλα μὲν ἀλλήλοις ἔσται, καὶ τὰς [κατα
 μῆκος ἐναν]τίον πλευρὰς ἔξει παραλλήλους, τ[ὰς δὲ
 κατὰ πλάτος οὐ]κέτι. ὁ μὲν οὖν ὁλοσχερῆς τύπος οὗτος
 5 τῆς λοιπῆς καὶ ἐφεξῆς περιουσίας, τὰ καθ' ἕκαστα δ'
 ἐξῆς λέγωμεν ἀπὸ τῆς Φωκίδος ἀρξάμενοι.

Ταύτης δ' ἐπιφανέσταται δύο πόλεις Δελφοί τε 2
 καὶ Ἐλάτεια· Δελφοί μὲν διὰ τὸ ἱερὸν τοῦ Πυθίου
 Ἀπόλλωνος καὶ τὸ μαντεῖον ἀρχαῖον ὄν, εἰ γε Ἀγαμέ-
 10 μνων ἀπ' αὐτοῦ χρηστηριάσασθαι λέγεται ὑπὸ τοῦ
 ποιητοῦ· ὁ γὰρ κιθαρωδὸς ἄδων εἰσάγεται „νεῖκος
 „Ὀδυσσεὺς καὶ Πηλεΐδew Ἀχιλλῆος, ὥς ποτε δηρί-
 „σαντο. — ἀναξ δ' ἀνδρῶν Ἀγαμέμνων χαῖρε νόφ.“
 „ὥς γὰρ οἱ χρεῖων μυθήσατο Φοῖβος Ἀπόλλων Πυ-
 15 „θοῦ.“ Δελφοί μὲν δὴ διὰ ταῦτα, Ἐλάτεια δὲ ὅτι πασσῶν
 μεγίστη τῶν ἐνταῦθα πόλεων καὶ ἐπικαιριωτάτη διὰ τὸ
 ἐπικεῖσθαι τοῖς στενοῖς καὶ τὸν ἔχοντα ταύτην ἔχειν τὰς
 εἰσβολὰς τὰς εἰς τὴν Φωκίδα καὶ τὴν Βοιωτίαν. ὅρη γὰρ
 ἔστιν Οἰταῖα πρῶτον, ἔπειτα τὰ τῶν Λοκρῶν καὶ τῶν
 20 Φωκέων, οὗ πανταχοῦ στρατοπέδοις βάσιμα τοῖς ἐκ
 Θετταλίας ἐμβάλλουσιν, ἀλλ' ἔχει παρόδους στενὰς
 μὲν ἀφωρισμένας δέ, ἃς αἱ παρακείμεναι πόλεις φρου-
 ροῦσιν· ἄλυσσιν δ' ἐκείνων κρατεῖσθαι συμβαίνει
 καὶ τὰς παρόδους. ἐπεὶ δ' ἡ τοῦ ἱεροῦ ἐπιφάνεια τοῦ
 25 ἐν Δελφοῖς ἔχει πρεσβεῖον, καὶ ἅμα ἡ θέσις τῶν χω-
 ρίων ἀρχὴν ὑπαγορεύει φυσικὴν (ταῦτα γὰρ ἔστι τὰ
 ἐσπεριώτατα μέρη τῆς Φωκίδος), ἐντεῦθεν ἀρκτέον.

Εἴρηται δ' ὅτι καὶ ὁ Παρνασσὸς ἐπὶ τῶν ἐσπε- 3
 ρίων ὄρων ἵδρυται τῆς Φωκίδος. τούτου δὴ τὸ μὲν
 30 πρὸς δύσιν πλευρὸν οἱ Λοκροὶ κατέχουσιν οἱ Ὀξόλαι,
 τὸ δὲ νότιον οἱ Δελφοί, πετρῶδες χωρίον θεατροειδές,
 κατα κορυφὴν ἔχον τὸ μαντεῖον καὶ τὴν πόλιν, στα-

δαίων ἐκκαίδεκα κύκλον πληροῦσαν. ὑπέρκειται δ' αὐ-
 τῆς ἡ *Λυκώρεια*, ἐφ' οὗ τόπον πρότερον ἴδρυντο οἱ
Δελφοί ὑπὲρ τοῦ *Ιεροῦ*. νῦν δ' ἐπ' αὐτῷ οἰκοῦσι περὶ
 τὴν κρήνην τὴν *Κασταλίαν*. πρόκειται δὲ τῆς πόλεως
 ἡ *Κίρφει* ἐκ τοῦ νοτίου μέρους, ὅρος ἀπότομον, νάπην 5
 ἀπολιπὸν μεταξὺ, δι' ἧς *Πλειστός* διαρρεῖ ποταμός. ὑπο-
 πέπτωκε δὲ τῇ ὁ *Κίρφει* πόλις ἀρχαία *Κίρρα*, ἐπὶ τῇ θα-
 λάττῃ ἰδρυμένη, ἀφ' ἧς ἀνάβασις εἰς *Δελφούς* ὀρδοή-
 κοντά που σταδίων· ἴδρυται δ' ἀπαντικρὺ *Σικυνῶνος*.
 πρόκειται δὲ τῆς *Κίρρας* τὸ *Κρισαῖον* πεδῖον εὐδαίμων. 10
 πάλιν γὰρ ἐφεξῆς ἐστὶν ἄλλη πόλις *Κριῖσα*, ἀφ' ἧς ὁ
 κόλπος *Κρισαῖος*. εἶτα *Ἀντικύρα*, ὁμώνυμος τῇ κατὰ
 τὸν *Μαλιακὸν* κόλπον καὶ τὴν *Οἰτην*. καὶ δὴ φασιν
 ἐκεῖ τὸν ἐλλέβορον φύεσθαι τὸν ἀστεῖον, ἐνταῦθα δὲ
 σκευάζεσθαι βέλτιον, καὶ διὰ τοῦτο ἀποδημεῖν δεῦρο 15
 πολλοὺς καθάρσεως καὶ θεραπείας χάριν· γίνεσθαι
 γὰρ τι σησαμοειδὲς φάρμακον ἐν τῇ *Φωκιῇ*, μεθ' οὗ
 σκευάζεσθαι τὸν *Οἰταῖον* ἐλλέβορον.

4 Ἀὕτη μὲν οὖν συμμένει, ἡ δὲ *Κίρρα* καὶ ἡ *Κριῖσα*
 κατεσπάσθησαν, ἡ μὲν ὕστερον ὑπ' *Εὐ-* 20
ρυλόχου τοῦ *Θετταλοῦ* κατὰ τὸν *Κρισαῖον* πόλεμον·
 εὐτυχῆσαντες γὰρ οἱ *Κρισαῖοι* διὰ τὰ ἐκ τῆς *Σικελίας*
 καὶ τῆς *Ἰταλίας* τέλη, πικρῶς ἐτελώνουν τοὺς ἐπὶ τὸ
 C. 419 *Ιερόν* ἀφικνουμένους καὶ παρὰ τὰ προστάγματα τῶν
Ἀμφικτυόνων. τὰ δ' αὐτὰ καὶ τοῖς *Ἀμφισσεῦσι* συν- 25
 ἔβη. *Λοκρῶν* δ' εἰσὶν οὗτοι τῶν *Ὀζολῶν*. ἐπελθόντες
 γὰρ καὶ οὗτοι τὴν τε *Κριῖσαν* ἀνέλαβον, καὶ τὸ πεδῖον
 τὸ ὑπὸ τῶν *Ἀμφικτυόνων* ἀνιερωθὲν αὐτοῖς κατεγεώρ-
 γουν, καὶ χεῖρους ἦσαν περὶ τοὺς ξένους τῶν πάλαι
Κρισαίων. καὶ τούτους οὖν ἐτιμωρήσαντο οἱ *Ἀμφι-* 30
κτύονες, καὶ τῷ θεῷ τὴν χώραν ἀπέδοσαν. ὀλιγώρηται
 δ' *Ἰκανῶς* καὶ τὸ *Ιερόν*, πρότερον δ' ὑπερβαλλόντως

[έτιμήθη]. δηλοῦσι δ' οἷ τε θησαυροὶ οὓς καὶ δῆμοι καὶ
 δυνάσται κατεσκεύασαν, εἰς οὓς καὶ χρήματα ἀνέτι-
 θεντο καθιερωμένα καὶ ἔργα τῶν ἀρίστων δημοιου-
 ρῶν, καὶ ὁ ἀγὼν ὁ Πυθικὸς καὶ τὸ πλῆθος τῶν ἱστο-
 5 ρουμένων χρησμῶν.

Φασὶ δ' εἶναι τὸ μαντεῖον ἄντρον κοῖλον κατὰ 5
 βάθους οὐ μάλα εὐρύστομον, ἀναφέρεσθαι δ' ἐξ
 αὐτοῦ πνεῦμα ἐνθουσιαστικόν, ὑπερκεῖσθαι δὲ τοῦ
 στομίου τρίποδα ὑψηλόν, ἐφ' ὃν τὴν Πυθίαν ἀναβαί-
 10 νουσαν δεχομένην τὸ πνεῦμα ἀποθεσπίζειν ἑμμετρά τε
 καὶ ἔμμετρα· ἐντείνειν δὲ καὶ ταῦτα εἰς μέτρον ποιητάς
 τινας ὑπουργοῦντας τῷ ἱερῷ. πρώτην δὲ Φημονόην
 γενέσθαι φασὶ Πυθίαν, κεκληῖσθαι δὲ καὶ τὴν προφῆ-
 15 σθαι δὲ τὴν πρώτην συλλαβὴν, ὥς ἐπὶ τοῦ ἀθανάτου
 καὶ ἀκαμάτου καὶ διακόνου.

Ἡ μὲν οὖν ἐπὶ τὸ πλεῖον τιμὴ τῷ ἱερῷ τούτῳ διὰ 6
 τὸ χρηστήριον συνέβη δόξαντι ἀψευδεστάτῳ τῶν πάν-
 των ὑπάρξει, προσέλαβε δὲ τι καὶ ἡ θέσις τοῦ τόπου.
 20 τῆς γὰρ Ἑλλάδος ἐν μέσῳ πῶς ἐστὶ τῆς συμπασης, τῆς
 τε ἐντὸς Ἰσθμοῦ καὶ τῆς ἐκτός, ἐνομίσθη δὲ καὶ τῆς
 οἰκουμένης, καὶ ἐκάλεσαν τῆς γῆς ὀμφαλόν, προσπλά-
 σαντες καὶ μῦθον ὃν φησι Πίνδαρος, ὅτι συμπέσειεν
 ἐνταῦθα οἱ ἀετοὶ οἱ ἀφεθίντες ὑπὸ τοῦ Διός, ὁ μὲν
 25 ἀπὸ τῆς δύσεως ὁ δ' ἀπὸ τῆς ἀνατολῆς· οἱ δὲ κόρακας C.420

16. post διακόνου: ἡ μὲν οὖν ἐπίνοια αὕτη τῆς τε τῶν πό-
 λεων κτίσεως καὶ τῆς τῶν κοινῶν ἱερῶν ἐκτιμήσεως. καὶ γὰρ κατὰ
 πόλεις συνήσαν καὶ κατὰ ἔθνος, φυσικῶς κοινωνικοὶ ὄντες, καὶ
 ἅμα τῆς παρ' ἀλλήλων χρείας χάριν, καὶ εἰς τὰ ἱερὰ τὰ κοινὰ
 ἀπῆλυντο διὰ τὰς αὐτὰς αἰτίας, ἑορτὰς καὶ πανηγύρεις συντε-
 λοῦντες. φιλικὸν γὰρ πᾶν τὸ τοιοῦτον, ἀπὸ τῶν ὁμοτραπέζων
 ἀρξάμενον καὶ ἐκ πλείονων

φρασι. δείκνυνται δὲ καὶ ὀμφαλός τις ἐν τῷ ναῷ τετα-
νωμένος καὶ ἐπ' αὐτῷ αἱ δύο εἰκόνες τοῦ μύθου.

- 7 Τοιαύτης δὲ τῆς εὐκαιρίας οὔσης τῆς περὶ τοὺς
Δελφούς, συνήρσαν τε ῥαδίως ἐκείσε, μάλιστα δ' οἱ
ἐγγύθεν, καὶ δὴ καὶ τὸ Ἀμφικτυονικὸν σύστημα ἐκ 5
τούτων συνετάχθη περὶ τετῶν κοινῶν βουλευσόμενον
καὶ τοῦ ἱεροῦ τὴν ἐπιμέλειαν ἔξου κοινοτέραν, ἅτε καὶ
χρημάτων ἀποκειμένων πολλῶν καὶ ἀναθημάτων φυ-
λακῆς καὶ ἀγιστείας δεομένων μεγάλης. τὰ πάλοι μὲν
οὖν ἀγνοεῖται, Ἀκρίσιος δὲ τῶν μνημονευομένων 10
πρῶτος διατάξαι δοκεῖ τὰ περὶ τοὺς Ἀμφικτύοντας καὶ
πόλεις ἀφορίσαι τὰς μετεχούσας τοῦ συνεδρίου καὶ
ψῆφον ἐκάστη δοῦναι, τῇ μὲν καθ' αὐτὴν τῇ δὲ μεθ'
ἐτέρας ἢ μετὰ πλειόνων, ἀποδειξαι δὲ καὶ τὰς Ἀμφι-
κτυονικὰς δίκας ὅσαι πόλεσι πρὸς πόλεις εἰσίν· ὥστε- 15
ρον δ' ἄλλαι πλείους διατάξεις γερόνασιν, ἕως κατε-
λύθη καὶ τοῦτο τὸ σύνταγμα, καθάπερ τὸ τῶν Ἀχαιῶν.
αἱ μὲν οὖν πρῶται δυοκαίδεκα συνελθεῖν λέγονται
πόλεις· ἐκάστη δ' ἔπεμπε πυλαγόραν, δις κατ' ἔτος οὔ-
σης τῆς συνόδου ἕκρος τε καὶ μετοπώρου· ὥστερον δὲ 20
καὶ πλείους προσῆλθον πόλεις. τὴν δὲ σύνοδον Πυ-
λαίαν ἐκάλουν τὴν μὲν ἐαρινὴν τὴν δὲ μετοπωρινήν,
ἐπειδὴ ἐν Πύλαις συνήγοντο, ἃς καὶ Θερμοπύλας κα-
λοῦσιν· ἔθουον δὲ τῇ Δήμητρι οἱ πυλαγόροι. τὸ μὲν
οὖν ἐξ ἀρχῆς τοῖς ἐγγύς μετῆν * καὶ τούτων καὶ τοῦ 25
μαντείου, ὥστερον δὲ καὶ οἱ πόρρωθεν ἀφικνοῦντο
καὶ ἐχρῶντο τῷ μαντεῖϊ καὶ ἐπεμπον δῶρα καὶ θησαν-
ροὺς κατεσκεύαζον, καθάπερ Κροῖσος καὶ ὁ πατήρ
Ἀλυάττης καὶ Ἰταλιωτῶν τινες καὶ Σικελοί.

- 8 Ἐπίφθορος δ' ὢν ὁ πλοῦτος δυσφύλακτός ἐστι 30
καὶ ἱερὸς ἤ. νυνὶ γέ τοι πενέστατόν ἐστι τὸ ἐν Δελφοῖς
ἱερὸν χρημάτων γε χάριν, τῶν δ' ἀναθημάτων τὰ μὲν

- ῆρται τὰ δὲ πλείω μένει. πρότερον δὲ πολυχρήματον ἦν τὸ ἱερόν, καθάπερ Ὀμηρός τε εἴρηκεν „οὐδ' ὅσα „λάϊνος οὐδὸς ἀφήτορος ἐντὸς ἔεργει Φοῖβον Ἀπόλ- „λωνος Πυθοῖ ἐνὶ πετρῆσση,“ καὶ οἱ θησαυροὶ δη- 5 λούσι καὶ ἡ σύλησις ἡ γενηθεῖσα ὑπὸ τῶν Φωκέων, ἐξ ἧς ὁ Φωκικὸς καὶ ἱερὸς καλούμενος ἐξήφθη πόλεμος. αὕτη μὲν οὖν ἡ σύλησις γεγένηται κατὰ Φίλιππον τὸν Ἀμύντου· προτέραν δ' ἄλλην ὑπονοοῦσιν ἀρχαίαν, ἣ τὸν ὑφ' Ὀμήρου λεγόμενον πλοῦτον ἐξεφόρησεν· οὐδὲ C. 421
- 10 γὰρ ἶχνος αὐτοῦ σωθῆναι πρὸς τοὺς ὕστερον χρόνους ἐν οἷς οἱ περὶ Ὀνόμαρχον καὶ Φάνλλον ἐσύλησαν τὸ ἱερόν, ἀλλὰ τὰ μὲν . . . ἀπενεχθέντα νεώτερα ἐκείνων εἶναι τῶν χρημάτων· ἀποκεῖσθαι γὰρ ἐν θησαυροῖς, ἀπὸ λαφύρων ἀνατεθέντα, ἐπιγραφὰς σώζοντα ἐν 15 αἷς καὶ οἱ ἀναθέντες· „Γύγου“ γὰρ καὶ „Κροίσου“ καὶ „Συβαριτῶν“ καὶ „Σπινητῶν τῶν περὶ τὸν Ἀδρίαν,“ καὶ οὕτως ἐπὶ τῶν ἄλλων. οὗτ' . . . ἡκοι τὰ παλαιὰ χρήματα ἀναμεμῖχθαι· [ὥς] καὶ ἄλλοι τόποι διασημαίνουσιν ὑπὸ τούτων σκευωρηθέντες τῶν ἀνδρῶν.
- 20 ἔνιοι δὲ τὸν ἀφήτορα δεξάμενοι λέγεσθαι θησαυρόν, ἀφήτορος δ' οὐδὸν κατὰ γῆς θησαυρισμόν, ἐν τῷ ναῷ κατορωρύχθαι φασὶ τὸν πλοῦτον ἐκείνον, καὶ τοὺς περὶ τὸν Ὀνόμαρχον ἐπιχειρήσαντας ἀνασκάπτειν νύκτωρ σεισμῶν γενομένων μεγάλων ἔξω τοῦ ναοῦ φυγεῖν καὶ 25 παύσασθαι τῆς ἀνασκαφῆς, ἐμβαλεῖν δὲ καὶ τοῖς ἄλλοις φόβον τῆς τοιαύτης ἐπιχειρήσεως.
- Τῶν δὲ ναῶν τὸν μὲν πτέρινον εἰς τοὺς μύθους 9 τακτέον, τὸν δὲ δεύτερον Τροφωνίου καὶ Ἀγαμήδους ἔργον φασί, τὸν δὲ νῦν Ἀμφικτύονες κατεσκεύασαν.
- 30 δείκνυται δ' ἐν τῷ τεμένει τάφος Νεοπτολέμου κατὰ χρησμὸν γενόμενος, Μαχαιρέως Δελφοῦ ἀνδρὸς ἀνελόντος αὐτόν, ὥς μὲν ὁ μῦθος, δίκας αἰτοῦντα τὸν

θεὸν τοῦ πατρῷου φόνον, ὥς δὲ τὸ εἰκός, ἐπιθέμενον
τῷ Ιερῷ. τοῦ δὲ Μαχαιρέως ἀπόγονον Βράγχον φασὶ
τὸν προστατήσαντα τοῦ ἐν Διδύμοις Ιεροῦ.

- 10 Ἀγῶν δὲ ὁ μὲν ἀρχαῖος ἐν Δελφοῖς κιθαρωδῶν
ἐγενήθη παιᾶνα ἀδόντων εἰς τὸν θεόν· ἔθηκαν δὲ 5
Δελφοί· μετὰ δὲ τὸν Κρισαῖον πόλεμον οἱ Ἀμφικτύ-
νες ἱππικὸν καὶ γυμνικὸν ἐπ' Εὐρυλόχου διέταξαν στε-
φανίτην καὶ Πύθια ἐκάλεσαν. προσέθεσαν δὲ τοῖς κι-
θαρωδοῖς αὐλητάς τε καὶ κιθαριστάς χωρὶς ᾠδῆς, ἀπο-
δώσοντάς τι μέλος ὃ καλεῖται νόμος Πυθικός. πέντε 10
δ' αὐτοῦ μέρη ἐστίν, ἄγκρουσις ἄμπειρα κατακελευ-
σμός ἱαμβοὶ καὶ δάκτυλοι σύριγγες. ἐμελοποίησε μὲν
οὗν Τιμοσθένης, ὁ ναύαρχος τοῦ δευτέρου Πτολεμαίου
ὁ καὶ τοὺς λιμένας συντάξας ἐν δέκα βίβλοις. βούλεται
δὲ τὸν ἀγῶνα τοῦ Ἀπόλλωνος τὸν πρὸς τὸν δράκοντα 15
διὰ τοῦ μέλους ὑμνεῖν, ἄγκρουσιν μὲν τὸ προοίμιον
δηλῶν, ἄμπειραν δὲ τὴν πρώτην κατάπειραν τοῦ ἀγῶ-
νος, κατακελευσμόν δὲ αὐτὸν τὸν ἀγῶνα, ἱαμβὸν δὲ
καὶ δάκτυλον τὸν ἐπιπαιανισμόν τὸν [γινόμενον] ἐπὶ
C.422 τῇ νίκη μετὰ τοιούτων ῥυθμῶν, ὧν ὁ μὲν ὕμνοις ἐστὶν 20
οἰκεῖος ὁ δ' ἱαμβὸς κακισμοῖς, σύριγγας δὲ τὴν ἐκλει-
ψιν τοῦ θηρίου, μιμουμένων ὥς ἂν καταστρέφοντος
ἑσχάτους τινὰς συριγμούς.
- 11 Ἐφορος δ', ᾧ τὸ πλεῖστον προσχρώμεθα διὰ τὴν
περὶ ταῦτα ἐπιμέλειαν, καθάπερ καὶ Πολύβιος μαρτυ- 25
ρῶν τυγχάνει, ἀνὴρ ἀξιόλογος, δοκεῖ μοι τάναντία
ποιεῖν ἔσθ' ὅτε τῇ προαιρέσει καὶ ταῖς ἐξ ἀρχῆς ὑπο-
σχέσεσιν. ἐπιτιμήσας γοῦν τοῖς φιλομυθοῦσιν ἐν τῇ
τῆς ἱστορίας γραφῇ καὶ τὴν ἀλήθειαν ἐπαινέσας προσ-
τίθῃσι τῷ περὶ τοῦ μαντείου τούτου λόγῳ σεμνὴν τινα 30
ὑπόσχεσιν, ὥς πανταχοῦ μὲν ἄριστον νομίζει τάληθές,

21. post κακισμοῖς: ὥς καὶ τὸ ἱαμβίζειν 23. ante ἑσχάτους: εἰς

- μάλιστα δὲ κατὰ τὴν ὑπόθεσιν ταύτην. ἄτοπον γὰρ εἰ
 περὶ μὲν τῶν ἄλλων τὸν τοιοῦτον ἀεὶ τρόπον διώκο-
 μεν, φησί, περὶ δὲ τοῦ μαντιίου λέγοντες, ὃ πάντων
 ἐστὶν ἀψευδέστατον, τοῖς οὕτως ἀπίστοις καὶ ψευδέσι
 5 χρησόμεθα λόγοις. ταῦτα δ' εἰπὼν ἐπιφέρει παρα-
 χρημα, ὅτι ὑπολαμβάνουσι κατασκευάσαι τὸ μαντεῖον
 Ἀπόλλωνα μετὰ Θέμιδος ὠφελῆσαι βουλούμενον τὸ γέ-
 νος ἡμῶν. εἶτα τὴν ὠφέλειαν εἰπὼν ὅτι εἰς ἡμερότητα
 προὔκαλεῖτο καὶ ἐσωφρόνιζε, τοῖς μὲν χρηστηριάζων
 10 καὶ τὰ μὲν προστάττων τὰ δ' ἀπαγορεύων, τοὺς δ' οὐδ'
 ὅλως προσιέμενος, ταῦτα διοικεῖν νομίζουσι, φησὶν,
 αὐτόν, οἱ μὲν αὐτὸν τὸν θεὸν σωματοειδῇ γινόμενον,
 οἱ δ' ἀνθρώποις ἐννοίαν παραδιδόντα τῆς ἑαυτοῦ βου-
 λήσεως.
- 15 Ὑποβὰς δὲ περὶ τῶν Δελφῶν οἵτινές εἰσι διαλε- 12
 γόμενος φησὶ τὸ παλαιὸν Παρνασσίους τινὰς αὐτό-
 χθονας καλουμένους οἰκεῖν τὸν Παρνασσόν· καθ' ὃν
 χρόνον Ἀπόλλωνα τὴν γῆν ἐπιόντα ἡμεροῦν τοὺς ἀν-
 θρώπους ἀπὸ τε τῶν ἡμέρων καρπῶν καὶ τῶν βίων, ἐξ
- 20 Ἀθηνῶν δ' ὀρμηθέντα ἐπὶ Δελφοὺς ταύτην εἶναι τὴν
 ὁδόν, ἣ νῦν Ἀθηναῖοι τὴν Πυθιάδα πέμπουσιν· γενό-
 μενον δὲ κατὰ Πανοπέας Τιτυὸν καταλῦσαι ἔχοντα
 τὸν τόπον, βίαιον ἄνδρα καὶ παράνομον· τοὺς δὲ Παρ-
 νασσίους συμμίζαντας αὐτῷ καὶ ἄλλον μηνῦσαι χαλε-
- 25 πὸν ἄνδρα Πύθωνα τοῦνομα, ἐπικλεῦειν ἕς παιάν, ἀφ' οὗ τὸν
 παιανισμὸν οὕτως ἐξ ἔθους παραδοθῆναι τοῖς μέλ-
 λουσι συμπίπτειν εἰς παράταξιν· ἐμπρησθῆναι δὲ καὶ
 σκηνὴν τότε τοῦ Πύθωνος ὑπὸ τῶν Δελφῶν, καθά-
- 30 περ καὶ νῦν ἐτι * καὶ αἰεὶ ὑπόμνημα ποιουμένους τῶν
 τότε γενομένων. τί δ' ἂν εἴη μυθωδέστερον ἢ Ἀπόλ-
 λων τοξεύων καὶ κολάζων Τιτυοὺς καὶ Πύθωνας καὶ C. 423

ὁδεύων ἐξ Ἀθηνῶν εἰς Δελφοὺς καὶ γῆν παῖσαν ἐπιῶν;
εἰ δὲ ταῦτα μὴ ὑπελάμβανε μύθους εἶναι, τί ἐχρῆν τὴν
μυθευομένην Θέμιν γυναιῖκα καλεῖν, τὸν δὲ μυθευό-
μενον δράκοντα ἄνθρωπον; πλὴν εἰ συγγεῖν ἐβούλετο
τόν τε τῆς ἱστορίας καὶ τὸν τοῦ μύθου τύπον. παρα- 5
πλήσια τούτοις καὶ τὰ περὶ τῶν Αἰτωλῶν εἰρημένα.
φήσας γὰρ ἀπορρήτους αὐτοὺς ἐκ παντὸς τοῦ χρόνου
τοτὲ μὲν Αἰολέας φησὶν οἰκῆσαι τοὺς κατέχοντας βαρ-
βάρους ἐκβαλόντας, τοτὲ δ' Αἰτωλὸν μετὰ τῶν ἐξ Ἑλι-
δος Ἐπειῶν τῶν ἐχθρῶν· τούτους δ' ὑπ' 10
Ἀλκμείωνος καὶ Διομήδους. ἀλλ' ἐπάνειμι ἐπὶ τοὺς
Φωκέας.

- 13 Ἐξῆς γὰρ ἐν τῇ παραλίᾳ μετὰ τὴν Ἀντικύραν πο-
λίχρινόν ἐστιν Ὀπισθομάραθος· εἴτ' ἄκρα Φαρύγιον
ἔχουσα ὕφορμον· εἶθ' ὁ λιμὴν ὕστατος ὁ προσαγορευ- 15
θεὶς μυχὸς ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος, ὑπὸ τῷ Ἑλικῶνι
καὶ τῇ Ἀσκλη καίμενος. οὐδ' αἱ Ἀβαὶ δὲ τὸ μαντεῖον
ἄπωθεν τῶν τόπων τούτων ἐστίν, οὐδ' ἡ Ἀμβρυσος,
[οὐδ' ἡ Με]δεὼν ὁμώνυμος τῇ Βοιωτιακῇ. ἔτι δὲ μᾶλ-
λον ἐν τῇ μεσογαίᾳ μετὰ Δελφοὺς ὡς πρὸς τὴν ἔω 20
Δαυλὶς πολίχρινον, ὅπου Τηρεά τὸν Θρακά φασι δυ-
ναστεῦσαι· καὶ τὰ περὶ Φιλομήλαν καὶ Πρόκνην ἐκεῖ
μυθεύουσι. τοῦνομα δὲ τῷ τόπῳ γεγονέναι ἀπὸ τοῦ
δάσους· δαυλοὺς γὰρ καλοῦσι τὰ δάση. Ὀμηρος μὲν
οὖν Δαυλίδα εἶπεν, οἱ δ' ὕστερον Δαυλίαν. καὶ τὸ 25
„[οἱ] Κυπάρισσον ἔχον“ δέχονται διττῶς, οἱ μὲν ὁμο-
νύμως τῷ φυτῷ οἱ δὲ παρωνύμως κώμην ὑπὸ τῇ Λυ-
κωρείᾳ.

- 14 Πανοπεὺς δ' ὁ νῦν Φανοτεύς, ὁμορος τοῖς περὶ
Λεβιάδειαν τόποις, ἡ τοῦ Ἐπειοῦ πατρὶς. καὶ τὰ περὶ 30

23. post μυθεύουσι: Θουκυδίδης δ' ἐν Μεγάρους φησί

τὸν Τιτυὸν δὲ ἐνταῦθα μυθεύουσιν. Ὅμηρος δὲ φησιν ὅτι οἱ Φαίηκες τὸν Ῥαδάμανθυν εἰς Εὐβοίαν, ἥγαγον, ὁπόμενον Τιτυὸν γαιήϊον υἱόν.“ καὶ Ἐλάρϊόν τι σπῆλαιον ἀπὸ τῆς Τιτυοῦ μητρὸς Ἐλάρας δεικνυνται κατὰ τὴν νῆσον καὶ ἡρώων τοῦ Τιτυοῦ καὶ τιμαί τινες. πλησίον δὲ Λεβαδείας καὶ ἡ Τραχίη, ὁμώνυμος τῇ Οἰταίᾳ, Φωκικῇ πολίχνη· οἱ δ' ἐνοικοῦντες Τραχίνιοι λέγονται.

Ἡ δ' Ἀνεμώρεια ὠνόμασται ἀπὸ τοῦ συμβαίνοντος πάθους· καταγίγει γὰρ εἰς αὐτὴν ὁ καλούμενος Κατοπτῆριος χῶρος, κρημνός τις ἀπὸ τοῦ Παρνασσοῦ διήκων· ὅριον δ' ἦν ὁ τόπος οὗτος Δελφῶν τε καὶ Φωκῶν, ἡνίκα ἀπέστησαν τοὺς Δελφούς ἀπὸ τοῦ κοινοῦ συστήματος τῶν Φωκῶν Λακεδαιμόνιοι καὶ ἐπέτρεψαν καθ' αὐτοὺς πολιτεύεσθαι· τινὲς δὲ Ἀνεμώλειαν C.424 καλοῦσιν. εἶδ' Ἰάμπολις (Ἰα μετὰ ταῦτα ἐκλήθη ὑπὸ τινων), εἰς ἣν ἐκ Βοιωτίας ἐκπεσεῖν ἔφραμεν τοὺς Ἰαντας· ἔστι δ' ἐν τῇ μεσογαίᾳ μάλιστα καὶ αὕτη, πλησίον τῶν Παραποταμίων, ἑτέρα οὖσα τῆς ἐν τῷ Παρνασσῷ Ταμπεΐ[ας], καὶ Ἐλάτεια ἡ μεγίστη πόλις τῶν Φωκικῶν, ἣν Ὅμηρος μὲν οὐκ οἶδε (νεωτέρω γὰρ ἔστι τῆς ἡλικίας ἐκείνου), ἐπικαιρίως δ' ἰδρυται πρὸς τὰς ἐκ τῆς Θετταλίας εἰσβολάς. δηλοὶ δὲ τὴν εὐφυῆς ταύτην καὶ Δημοσθένους, φράζων τὸν θόρυβον τὸν γενηθέντα Ἀθήνησιν αἰφνιδίως, ἐπειδὴ ἦκέ τις ἀπαγ- 25 γέλλων ὥς τοὺς πρυτάνεις ὥς Ἐλάτεια κατεῖληπται.

Παραποτάμιοι δ' εἰσὶ κατοικία τις ἐπὶ τῷ Κηφισσῷ 16 ἰδρυμένη πλησίον Φανοτεῦσι καὶ Χαιρωνεῦσι καὶ Ἐλατεῖα. φησὶ δὲ Θεόπομπος τὸν τόπον τοῦτον διέχειν τῆς μὲν Χαιρωνείας ὅσον τετταράκοντα σταδίους, διορίζειν δὲ τοὺς Ἀμβρυσέας καὶ Πανοπέας καὶ Δαυλιέας· 30 κείσθαι δ' ἐπὶ τῆς ἐμβολῆς τῆς ἐκ Βοιωτίας εἰς Φωκέας ἐν λόφῳ μετρίως ὑψηλῷ, μεταξὺ τοῦ τε Παρνασσοῦ

καὶ τοῦ [Ἀδυλίου ὄ]ρους πενταστάδιον σχεδόν τι ἀπο-
 λειπόντων ἀν[ὰ μέσον χω]ρίον, διαιρεῖν δὲ τὸν Κη-
 φισσὸν στενὴν ἐκατέρωθεν διδόντα πάροδον, τὰς μὲν
 ἀρχὰς ἐκ Αἰλαίας ἔχοντα Φωκικῆς πόλεως (καθάπερ
 καὶ Ὀμηρὸς φησιν „οἱ τε Αἰλαίαν ἔχον πηγῆς ἐπὶ Κη- 5
 „φισσοῖο“), εἰς δὲ τὴν Κωπαῖδα λίμνην ἐκδιδόντα· τὸ
 δὲ Ἀδύλιον παρατείνειν ἐφ' ἐξήκοντα σταδίους μέχρι
 τοῦ *Ἵφραντείου, ἐφ' ᾧ κεῖται ὁ Ὀρχομενός. καὶ Ἡσίο-
 δος δ' ἐπὶ πλεόν περὶ τοῦ ποταμοῦ λέγει καὶ τῆς ῥύ-
 σεως, ὡς δι' ὅλης ῥέοι τῆς Φωκίδος σκολιῶς καὶ δρα- 10
 κοντοειδῶς „παρὲκ Πανοπῆα διὰ Γλήχωνά τ' ἐρυμνὴν
 „καὶ τε δι' Ὀρχομενοῦ ἐλιγμένος εἰσι δράκων ὥς.“
 τὰ δὲ στενὰ τὰ περὶ τοὺς Παραποταμίους ἢ τὴν Παρα-
 ποταμίαν (λέγεται γὰρ ἀμφοτέρως) περιμάχῃτα ὑπῆρ-
 ξεν ἐν τ[ῷ] Φωκικῷ πολέμῳ, μίαν ἐχόντων ταύτην ἐμ- 15
 βολὴν [εἰς τὴν Φωκίδα]· ἔστι δὲ Κηφισσὸς ὁ τε Φωκι-
 κὸς καὶ ὁ Ἀθήνησι καὶ ὁ ἐν Σαλαμῖνι, τέταρτος δὲ καὶ
 πέμπτος ὁ ἐν Σικυνῶνι καὶ ὁ ἐν Σκύρῳ, ἐν Ἀπολλωνίᾳ
 δὲ τῇ πρὸς Ἐπιδάμνῳ πηγῇ ἔστι κατὰ τὸ γυμνάσιον,
 ἣν καλοῦσι Κηφισσόν. 20

- 17 Δαφνοῦς δὲ νῦν μὲν κατέσκαπται· ἦν δὲ ποτε
 τῆς Φωκίδος πόλις ἀπτομένη τῆς Εὐβοϊκῆς θαλάττης,
 διαιροῦσα τοὺς Ἐπικνημιδίους Λοκρούς, τοὺς μὲν ἐπὶ
 τὸ πρὸς Βοιω[τίαν μέρος τοὺς δὲ πρὸς] Φωκίδα τὴν
 C.425 ἀπὸ θαλάττης καθήκ[οι]σαν τότε ἐπὶ θάλατταν]. τε- 25
 κμήριον δὲ τὸ ἐν αὐτῷ Σχεδιεῖον, ὃ φασιν εἶναι τάφον
 Σχεδίου. [εἴρη]ται δὲ ὁ Δαφνοῦς ἐφ' ἐκάτερα τὴν Λο-
 κρίδα [σχίσαι, ὥστ]ε μηδαμοῦ ἄπτεσθαι ἀλλήλων τοὺς
 τ' Ἐπικνημι[δίους καὶ το]ὺς Ὀπουντίους· ὕστερον δὲ

18. post Σκύρῳ: ἔκτος δὲ ὁ ἐν Ἄργει τὰς πηγὰς ἔχων ἐκ Λυρ-
 κείου

προσωρίσθη τοῖς [Ὀπουντίοις ὁ τό]πος. περὶ μὲν δὴ
τῆς Φωκίδος ἀπόκρι.

Ἐφεξῆς δ' ἐστὶν ἡ Λοκρίς, ὥστε περὶ ταύτης λε- 4
κτέον. διήρηται δὲ δίχα· τὸ μὲν γὰρ αὐτῆς ἐστὶν οἱ
5 πρὸς Εὐβοίαν Λοκροί, [οὓς ἐλέ]γομεν σχίζεσθαι ποτε
ἐφ' ἐκάτερα τοῦ Λαφνουῦντος· ἐπεκαλοῦντο δ' οἱ μὲν
Ὀπούντιοι ἀπὸ τῆς μητροπόλεως, οἱ δ' Ἐπικνημιδίοι
ἀπὸ ὕρους τινὸς Κνημίδος· τὸ δὲ λοιπὸν οἱ ἐσπέριοι
εἰσι Λοκροί, οἱ δ' αὐτοὶ καὶ Ὀζόλαι καλοῦνται. χωρί-
10 ξι δ' αὐτοὺς ἀπὸ τῶν Ὀπουντίων καὶ τῶν Ἐπικνημι-
δίων ὅ τε Παρνασσὸς μεταξὺ ἰδρυμένος καὶ ἡ τῶν Δω-
ριέων τετράπολις. ἀρκτέον δ' ἀπὸ τῶν Ὀπουντίων.

Ἐφεξῆς τοίνυν ταῖς Ἀλαῖς, εἰς αἷς κατέληγεν ἡ 2
Βοιωτικὴ παραλία ἡ πρὸς Εὐβοίᾳ, τὸν Ὀπούντιον
15 κόλπον κεῖσθαι συμβαίνει. ὁ δ' Ὀποῦς ἐστὶ μητροπό-
λις, καθάπερ καὶ τὸ ἐπίγραμμα δηλοῖ τὸ ἐπὶ τῇ πρώτῃ
τῶν πέντε στηλῶν τῶν περὶ Θερμοπύλας ἐπιγεγραμ-
μένον πρὸς τῷ πολυανδρίῳ „τούσδε ποθεῖ φθιμένους
„ὑπὲρ Ἑλλάδος ἀντία Μήδων, μητρόπολις Λοκρῶν εὐ-
20 „θυνόμων Ὀπόεις.“ ἀπέχει δὲ τῆς θαλάττης περὶ πεν-
τεκαίδεκα σταδίου, τοῦ δ' ἐπινείου καὶ ἐξήκοντα. Κῦ-
νος δ' ἐστὶ τὸ ἐπίνειον, ἄκρα τερματίζουσα τὸν Ὀπούν-
τιον κόλπον σταδίων ὄντα περὶ τετταράκοντα· μεταξὺ
δὲ Ὀποῦντος καὶ Κύνου πεδίον εὐδαίμον· κεῖται δὲ
25 κατὰ Αἰδηψὸν τῆς Εὐβοίας, ὅπου τὰ θερμὰ τὰ Ἡρα-
κλέους, πορθμῷ διεργόμενος σταδίων ἐξήκοντα καὶ
ἐκατόν. ἐν δὲ τῷ Κύνῳ Δευκαλίωνα φασιν οἰκῆσαι,
καὶ τῆς Πύρρας αὐτόθι δείκνυνται σῆμα, τοῦ δὲ Δευ-
καλίωνος Ἀθήνησι. διέχει δὲ τῆς Κνημίδος ὁ Κῦνος
30 ὅσον πεντήκοντα σταδίου. καὶ ἡ Ἀταλάντη δὲ νῆσος
κατὰ Ὀποῦντα ἴδρυται, ὁμώνυμος τῇ πρὸ τῆς Ἀττι-
κῆς. λέγεσθαι δ' Ὀπουντίους τινὰς καὶ ἐν τῇ Ἠλείᾳ

φασίν, ὅν οὐκ ἄξιον μεμνησθαι, πλὴν ὅτι συγγένειαν αὐτῶν ἔξανανευοῦνται τοῖς Ὀπουντίοις ὑπάρχουσιν. ὅτι δ' ἐξ Ὀποῦντος ἦν ὁ Πάτροκλος λέγει Ὀμηρος, καὶ διότι φόνον ἀκούσιον πράξας ἐφυγεν εἰς Πηλέα, ὁ δὲ πατὴρ Μενότιος ἔμεινεν ἐν τῇ πατρίδι· ἐκείσε γὰρ 5 φησιν ὁ Ἀχιλλεὺς ὑποσχέσθαι τῷ Μενoitῶ κατάξειν τὸν Πάτροκλον ἐκ τῆς στρατείας ἐπανελθόντα. οὐ μὴν ἐβασίλευε γε ἐκεῖνος τῶν Ὀπουντίων, ἀλλ' Αἴας ὁ Λοκρός, πατρίδος ὦν, ὡς φασι, Ναφύκου. Αἰάνην δ' ὀνομάζουσι τὸν ἀναιρεθέντα ὑπὸ τοῦ Πατρόκλου, 10 ἀφ' οὗ καὶ τέμενος Αἰάνειον δεικνυται καὶ κρήνη τις Αἰανίς.

C.426 Ἐξῆς μετὰ τὸν Κῦνον Ἀλόπη ἐστὶ καὶ ὁ Λαφνοῦς, 3 ὃν ἔφαμεν κατεσπᾶσθαι· λιμὴν δ' ἐστὶν αὐτόθι διέχων Κύνου περὶ ἐνενήκοντα σταδίους, Ἐλατείας δὲ πεξεύ- 15 οντι εἰς τὴν μεσόγαιαν ἑκατὸν εἰκοσιν. ἤδη δ' ἐστὶ ταῦτα τοῦ Μαλιακοῦ κόλπου· μετὰ γὰρ τὸν Ὀπουντίον συνεχῆς ἐστὶν οὗτος.

4 Μετὰ δὲ Λαφνοῦντα Κυνημίδες χωρίον ἐρμυνὸν ὅσον σταδίους εἴκοσι πλεύσαντι· καθ' ὃ τὸ Κήναιον 20 ἐκ τῆς Εὐβοίας ἀντίκειται ἄκρα βλέπουσα πρὸς ἐσπέραν καὶ τὸν Μαλιέα κόλπον, πορθμῷ διειργομένη σχεδὸν εἰκοσασταδίῳ. ταῦτα δ' ἤδη τῶν Ἐπικνημιδίῳ ἐστὶ Λοκρῶν. ἐνταῦθα καὶ αἱ Λιχάδες καλούμεναι τρεῖς νῆσοι πρόκεινται ἀπὸ Λίχα τοῦνομα ἔχουσαι. 25 καὶ ἄλλαι δ' εἰσὶν ἐν τῷ λεχθέντι παράπλῳ, αἷς ἐκόντες παραλείπομεν. μετὰ δὲ εἴκοσι σταδίους ἀπὸ Κυνημίδων λιμὴν, ὑπὲρ οὗ κεῖται τὸ Θρόνιον ἐν σταδίοις τοῖς ἰσοῖς κατὰ τὴν μεσόγαιαν. εἰδ' ὁ Βοάγριος ποταμὸς ἐκδί- 30 δωσιν ὁ παραρρέων τὸ Θρόνιον, Μάνην δ' ἐπονομά- ζουσιν αὐτόν· ἐστὶ δὲ χειμάρρους ὥστ' ἀβρόχοις ἐμβαλίνειν τοῖς ποσίν, ἄλλοτε δὲ καὶ δίπλεθρον ἴσχειν

πλάτος. μετὰ δὲ ταῦτα Σκάρφεια σταδίοις ὑπερκει-
μένη τῆς θαλάττης δέκα, διέχουσα δὲ τοῦ Θρονίου τρι-
άκοντα, ἐλάττωσι δὲ μικρῶ ἔπειτα Νικάιά ἐστι
καὶ αἱ Θερμοπύλαι.

- 5 Τῶν δὲ λοιπῶν πόλεων τῶν μὲν ἄλλων οὐκ ἄξιον 5
μεμνησθαι· ὧν δ' Ὅμηρος μέμνηται Καλλίαρος μὲν
οὐκέτι οἰκεῖται, [εὐήροτον δὲ νῦν ἐσ]τι πεδίον· κα-
λουῦσι δ' οὕτως ἀπὸ τοῦ [συμβεβηκότος· καὶ Βῆσσα
δ'] οὐκ ἐστι, δρυμώδης τις τόπος· οὐδ' [αἱ Αὐγειαί,
10 τὴν δὲ χά]ραν ἔχουσι Σκαρφιεῖς· ταύτην μὲν οὖν τὴν
Βῆσσαν ἐν τοῖς δυσι γραπτέον σίγμα (ἀπὸ γὰρ
τοῦ δρυμώδους ὠνόμασται ὁμωνύμως, ὥσπερ καὶ
Νάπη ἐν τῷ Μηθύμνης πεδίῳ, ἣν Ἑλλάνικος ἀγνο-
ῶν Λάπην ὀνομάζει), τὸν δ' ἐν τῇ Ἀττικῇ δῆ-
15 μον, ἀφ' οὗ Βησαιεῖς οἱ δημόται λέγονται, ἐν τῷ ἐνὶ
σίγμα.

- Ἡ δὲ Τάρφῃ κεῖται ἐφ' ὕψους, διέχουσα [Θρονίου] 6
σταδίους εἴκοσι, χάραν δ' εὐκαρπὸν τε καὶ εὐδενδρον
ἔχει· ἥδη γὰρ καὶ αὕτη ἀπὸ τοῦ δάσους ὠνόμασται. κα-
20 λείτται δὲ νῦν Φαρύγαι· ἴδρυνται δ' αὐτόθι Ἡρας Φα-
ρυγαίας ἱερὸν ἀπὸ τῆς ἐν Φαρύγαις τῆς Ἀργείας· καὶ
δὴ καὶ ἄποικοί φασιν εἶναι Ἀργείων.

- Τῶν γε μὴν ἐσπερίων Λοκρῶν Ὅμηρος οὐ μέμνη- 7
ται, ἣ οὐ ῥητῶς γε, ἀλλὰ μόνον τῷ δοκεῖν ἀντιδια-
25 στέλλεσθαι τούτοις ἐκείνους περὶ ὧν εἰρήκαμεν „Λο-
κρῶν, οἳ ναίουσι πέρην ἱερῆς Εὐβοίης,“ ὥς καὶ ἐτέ-
ρων ὄντων. ἀλλ' οὐδ' ὑπὸ τῶν ἄλλων τεθρόλῃνται
πολλῶν· πόλεις δ' ἔσχον Ἀμφισσάν τε καὶ Ναύπα-
κτον, ὧν ἡ Ναύπακτος συμμένει τοῦ Ἀντιρρίου πλη-
30 σίου, ὠνόμασται δ' ἀπὸ τῆς ναυπηγίας τῆς ἐκεῖ γενο-
μένης, εἴτε τῶν Ἡρακλειδῶν ἐκεῖ ναυπηγησαμένων C.427
τὸν στόλον, εἴθ' (ὥς φησιν Ἐφορος) Λοκρῶν ἔτι πρό-

τερον παρασκευασάντων· ἔστι δὲ νῦν Αἰτωλῶν Φιλίππου προσκρίναντος.

- 8 Αὐτοῦ δὲ καὶ ἡ Χαλκίς, ἣς μέμνηται καὶ ὁ ποιητὴς ἐν τῷ Αἰτωλικῷ καταλόγῳ, ὑποκάτω Καλυδῶνος· αὐτοῦ δὲ καὶ ὁ Ταφιασσὸς λόφος, ἐν ᾧ τὸ τοῦ Νέσσου 5 μνήμα καὶ τῶν ἄλλων Κενταύρων, ὧν ἀπὸ τῆς σηπεδόνης φασὶ τὸ ὑπὸ τῇ θίζῃ τοῦ λόφου προχεόμενον θυσῶδες καὶ θρόμβους ἔχον ὕδωρ ῥεῖν· διὰ δὲ τοῦτο καὶ Ὀζόλας καλεῖσθαι τὸ ἔθνος. καὶ ἡ Μολύκρεια δ' ἐστὶ κατὰ τὸ Ἀντίρριον, Αἰτωλικὸν πολίχνιον. ἡ δ' Ἀμ- 10 φισσα ἐπὶ τοῖς ἄκροις ἰδρύται τοῦ Κρισαίου πεδίου, κατέσπασαν δ' αὐτὴν οἱ Ἀμφικτύονες, καθάπερ εἰρήκαμεν· [καὶ Οἰάνθει]α δὲ καὶ Εὐπάλιον Δοκρῶν εἰσὶν. ὁ δὲ πᾶς παράπλους ὁ Δοκρικὸς μικρὸν ὑπερβάλλει τῶν διακοσίων σταδίων. 15

- 9 Ἀλόπην δὲ καὶ ἑνταῦθα καὶ ἐν τοῖς Ἐπικνημιδίοις ὀνομάζουσι καὶ ἐν τῇ Φθιώτιδι· οὗτοι μὲν οὖν ἄποικοι τῶν Ἐπικνημιδίων εἰσὶν, οἱ δ' Ἐπιξεφύριοι τούτων.

- 10 Τοῖς δὲ Δοκροῖς τοῖς μὲν ἐσπερίοις συνεχεῖς εἰσὶν Αἰτωλοί, τοῖς δ' Ἐπικνημιδίοις Αἰνιᾶνες συνεχεῖς οἱ 20 τὴν Οἰτὴν ἔχοντες, καὶ μέσοι Δωριεῖς. οὗτοι μὲν οὖν εἰσὶν οἱ τὴν τετράπολιν οἰκήσαντες, ἣν φασιν εἶναι μητρόπολιν τῶν ἀπάντων Δωριέων, πόλεις δ' ἔσχον Ἐρινεὸν Βοῖον Πίνδον Κυτίνιον· ὑπέρκειται δ' ἡ Πίνδος τοῦ Ἐρινεοῦ, παραρρεῖ δ' αὐτὴν ὁμῶννυμος ποτα- 25 μὸς ἐμβάλλων εἰς τὸν Κηφιστὸν οὐ πολὺ τῆς Αἰλαίας ἄπωθεν· τινὲς δ' Ἀκύφραντα λέγουσι τὴν Πίνδον. τούτων ὁ βασιλεὺς Αἰγίμιος ἐκπεσὼν τῆς ἀρχῆς κατήχθη πάλιν, ὥς ἱστοροῦσιν, ὑφ' Ἡρακλέους· ἀπεμνημόνευσεν οὖν αὐτῷ τὴν χάριν τελευτήσαντι περὶ τὴν Οἰτὴν· 30 Ἄλλον γὰρ εἰσεποιήσατο τὸν πρεσβύτατον τῶν ἐκείνου παίδων, καὶ διεδέξατο ἐκεῖνος τὴν ἀρχὴν καὶ οἱ ἀπό-

γονοι. ἐντεῦθεν ὁρμηθεῖσι τοῖς Ἡρακλείδαις ὑπῆρξεν ἢ εἰς Πελοπόννησον κάθοδος.

Τέως μὲν οὖν ἦσαν ἐν ἀξιώματι αἱ πόλεις, καίπερ 11
οὔσαι μικραὶ καὶ λυπρόχωροι, ἔπειτ' ὀλιγωρήθησαν.
5 ἐν δὲ τῷ Φωκικῷ πολέμῳ καὶ τῇ Μακεδόνων ἐπικρα-
τεῖα καὶ Αἰτωλῶν καὶ Ἀθαμάνων θανυμαστὸν εἰ καὶ
ἶχνος αὐτῶν εἰς Ῥωμαίους ἦλθε. τὰ δ' αὐτὰ πεπόνθασι
καὶ Αἰνιᾶνες· καὶ γὰρ τούτους ἐξέφθειραν Αἰτωλοὶ τε
καὶ Ἀθαμᾶνες, Αἰτωλοὶ μὲν μετὰ Ἀκαρνάνων πολε-
10 μούντες καὶ μέγα δυνάμενοι, Ἀθαμᾶνες δ' ὕστατοι
τῶν Ἑπειρωτῶν εἰς ἀξίωμα προαχθέντες, ἤδη τῶν ἄλ-
λων ἀπειρηκότων, καὶ μετ' Ἀμυνάνδρου τοῦ βασι-
λέως δύναμιν κατασκευασάμενοι. οὗτοι δὲ τὴν Οἰτην 0.428
διακατέχον.

15 Τὸ δ' ὄρος διατείνει ἀπὸ Θερμοπυλῶν καὶ τῆς 12
ἀνατολῆς μέχρι πρὸς τὸν κόλπον τὸν Ἀμβρακικὸν καὶ
τὴν ἐσπέραν· τρόπον δέ τινα καὶ πρὸς ὀρθὰς τέμνει
τὴν ἀπὸ τοῦ Παρνασσοῦ μέχρι Πίνδου καὶ τῶν ὑπερ-
κειμένων βαρβάρων ὀρεινὴν τὸ ὄρος τοῦτο. τούτου δὲ
20 τὸ μὲν πρὸς Θερμοπύλας νενευκὸς μέρος Οἰτη καλεῖ-
ται σταδίων διακοσίων τὸ μῆκος, τραχὺ καὶ ὑψηλόν,
ὑψηλότερον δὲ κατὰ τὰς Θερμοπύλας· κορυφοῦται γὰρ
ἐνταῦθα καὶ τελευτᾷ πρὸς ὄξεις καὶ ἀποτόμους μέχρι
τῆς θαλάττης κρημνούς, ὀλίγην δ' ἀπολείπει πάροδον
25 τοῖς ἀπὸ τῆς παραλίας ἐμβάλλουσιν εἰς τοὺς Λοκροὺς
ἐκ τῆς Θετταλίας.

Τὴν μὲν οὖν πάροδον Πύλας καλοῦσι καὶ στενὰ 13
καὶ Θερμοπύλας· ἔστι γὰρ καὶ θερμὰ πλησίον ὕδατα
τιμώμενα ὥς Ἡρακλέους λερά· τὸ δ' ὑπερκειμένον
30 ὄρος Καλλίδρομον· τινὲς δὲ καὶ τὸ λοιπὸν τὸ δι' Αἰτω-
λίας καὶ τῆς Ἀκαρνανίας διήκον μέχρι τοῦ Ἀμβρακι-
κοῦ κόλπου Καλλίδρομον προσαγορεύουσι. πρὸς δὲ

ταῖς Θερμοπύλαις ἐστὶ φρούρια ἐντὸς τῶν στενῶν, Νί-
 καια μὲν ἐπὶ θάλατταν Δοκρῶν, Τειχιούς δὲ καὶ Ἡρά-
 κλεια ὑπὲρ αὐτῆς, ἡ Τραχὶν καλουμένη πρότερον, Αα-
 κεδαιμονίων κτίσμα· διέχει δὲ τῆς ἀρχαίας Τραχίνος
 περὶ ἑξ σταδίων ἡ Ἡράκλεια· ἐξῆς δὲ ἡ Ῥοδουντία,⁵
 χωρίον ἐρυμνόν.

- 14 Ποιεῖ δὲ δυσείσβολα τὰ χωρία ταῦτα ἢ τε τραχύ-
 της καὶ τὸ πλῆθος τῶν ὑδάτων φάραγγας ποιούντων,
 αἷς διέξεισι. πρὸς γὰρ τῷ Σπερχεῖῳ τῷ παραρρέοντι
 τὴν Ἀντικύραν καὶ ὁ Δύρας ἐστίν, ὃν φασιν ἐπιχειρῇ- 10
 σαι τὴν Ἡρακλέους σβέσαι πυράν· καὶ ἄλλος Μέλας
 διέχων Τραχίνος εἰς πέντε σταδίων. πρὸς δὲ μεσημ-
 βρίαν τῆς Τραχίνος φησὶν Ἡρόδοτος εἶναι βαθεῖαν
 διασφάγα, δι' ἧς Ἀσωπός, ὁμώνυμος τοῖς εἰρημένοις
 Ἀσωποῖς, εἰς τὴν θάλατταν ἐκπίπτει τὴν ἐκτὸς Πυλῶν, 15
 παραλαβὼν καὶ τὸν Φοίνικα ἐκ τῆς μεσημβρίας συμ-
 βάλλοντα αὐτῷ, ὁμώνυμον τῷ ἥρῳι, οὗ καὶ τάφος
 πλησίον δείκνυται· στάδιοι δ' εἰσὶν ἐπὶ Θερμοπύλας
 ἀπὸ τοῦ Ἀσωποῦ πεντεκαίδεκα.

- 15 Τότε μὲν οὖν ἦν ἐνδοξότατα τὰ χωρία ταῦτα, 20
 ἡνίκα τῶν κλειθρῶν ἐκυρίευσεν τῶν περὶ τὰ στενά, καὶ
 τοῖς ἔξω τῶν στενῶν πρὸς τοὺς ἐντὸς ἦσαν ἀγῶνες
 πρωτείων· καθάπερ καὶ πέδας ἐκάλει Φίλιππος τῆς
 Ἑλλάδος τὴν Χαλκίδα καὶ τὴν Κόρινθον, πρὸς τὰς ἐκ
 τῆς Μακεδονίας ἀφορμὰς βλέπων· ἐπιδέσμους δ' οἱ 25
 ὕστερον προσηγόρευον ταύτας τε καὶ ἔτι τὴν Διμη-
 τριάδα· καὶ γὰρ αὕτη παρόδων ἦν κυρία τῶν περὶ τὰ
 0.429 Τέμπη, τό τε Πήλιον ἔχουσα καὶ τὴν Ὀσσαν. ὕστερον
 δὲ πάντων ὑπὸ μίαν ἐξουσίαν ὑπηγμένων, ἅπαντ' ἀτε-
 λεύεται πᾶσι καὶ ἀνέργε.

- 16 Περὶ δὲ τὰ στενά ταῦτα οἱ περὶ Λεωνίδα μετὰ
 ὀλίγων τῶν ὁμόρων τοῖς τόποις ἀντέσχον πρὸς τὰς το-

σαύτας τῶν Περσῶν δυνάμεις, μέχρι περιελθόντες δι' ἄτραπῶν τὰ ὄρη κατέκοψαν αὐτοὺς οἱ βάρβαροι. καὶ νῦν τὸ πολυάνδριον ἐκείνων ἐστὶ καὶ στήλαι καὶ ἡ θρυλουμένη ἐπιγραφὴ τῇ Λακεδαιμονίων στήλῃ οὕτως ἔχουσα „ὦ ξέν' ἀπάγγειλον Λακεδαιμονίοις ὅτι „τῇδε κείμεθα τοῖς κείνων πειθόμενοι νομίμοις.“

Ἔστι δὲ καὶ λιμὴν μέγας αὐτόθι καὶ Δήμητρος 16-
 ρόν, ἐν ᾗ κατὰ πᾶσαν Πυλαίαν θυσίαν ἐτέλουν οἱ Ἀμφικτύονες. ἐκ δὲ τοῦ λιμένος εἰς Ἡράκλειαν τὴν 10
 Τραχίνα περὶ στάδιοι τετταράκοντα, πλοῦς δ' ἐπὶ τὸ Κήναιον ἑβδομήκοντα. ἔξω δὲ Πυλῶν εὐθύς ὁ Σπερχειὸς ἐκδίδωσιν. ἐπὶ δὲ Πύλας ἀπὸ Εὐρίπου στάδιοι πεντακόσιοι τριάκοντα. καὶ ἡ μὲν Λοκρὶς τέλος ἔχει. τὰ δ' ἔξω Θετταλῶν ἐστὶ τὰ πρὸς ἔω καὶ τὸν Μαλιακὸν 15
 κόλπον, τὰ δὲ πρὸς δύσιν Αἰτωλῶν καὶ Ἀκαρνανῶν. Ἀθαμᾶνες δὲ καὶ αὐτοὶ ἐκκληοίπασιν.

Μέγιστον δὲ καὶ παλαιότατον τῶν Θετταλῶν σύ- 18
 στημα, ὧν τὰ μὲν Ὀμηρος εἴρηκε τὰ δ' ἄλλοι πλείους. Αἰτωλοὺς δ' Ὀμηρος μὲν αἰεὶ ἐνὶ ὀνόματι λέγει, πόλεις 20
 οὐκ ἔθνη τάττων ὑπ' αὐτοῖς, πλὴν εἰ τοὺς Κουρήτας, οὓς ἐν μέρει τακτέον Αἰτωλικῶν. ἀπὸ Θετταλῶν δ' ἀρ-
 κτέον, τὰ μὲν σφόδρα παλαιὰ καὶ μυθώδη καὶ οὐχ ὁμο-
 λογούμενα τὰ πολλὰ ἑῶντες, καθάπερ καὶ ἐν τοῖς ἄλλοις ἐποιήσαμεν, τὰ δὲ φαινόμενα ἡμῖν καίρια λέ- 25
 γοντες.

Ἔστι δ' αὐτῆς πρὸς θαλάττῃ μὲν ἡ ἀπὸ Θερμοπυ- 3
 λῶν μέχρι τῆς ἐκβολῆς τοῦ Πηνειοῦ καὶ τῶν ἄκρων τοῦ Πηλίου παραλία βλέπουσα πρὸς ἔω καὶ πρὸς τὰ ἄκρα τῆς Εὐβοίας τὰ βόρεια. ἔχουσι δὲ τὰ μὲν πρὸς Εὐ-
 30 βοίᾳ καὶ Θερμοπύλαις Μαλιεῖς καὶ οἱ Φθιώται Ἀχαιοί, τὰ δὲ πρὸς τῇ Πηλῷ Μάγνητες. αὕτη μὲν οὖν ἡ πλευ-
 ρὰ τῆς Θετταλίας ἐνῶ λεγέσθω καὶ παραλία. ἐκατέρω-

θεν δ' ἀπὸ μὲν Πηλίου καὶ Πηνειοῦ πρὸς τὴν μεσό-
 γαιαν Μακεδόνες παράκεινται μέχρι Παιονίας καὶ τῶν
 Ἑπειρωτικῶν ἐθνῶν, ἀπὸ δὲ τῶν Θερμοπυλῶν τὰ πα-
 ράλληλα τοῖς Μακεδόσιν ὄρη τὰ Οἰταῖα καὶ Αἰτωλικά,
 τοῖς Δωριεῦσι καὶ τῷ Παρνασσῷ συνάπτοντα. καλεῖ- 5
 σθαι δὲ τὸ μὲν πρὸς τοῖς Μακεδόσι πλευρὸν ἀρκτικόν,
 τὸ δ' ἕτερον νότιον. λοιπὸν δ' ἐστὶ τὸ ἐσπέριον, ὃ πε-
 ρικκίλουσιν Αἰτωλοὶ καὶ Ἀκαρνανες καὶ Ἀμφίλοχοι
 C.430 καὶ τῶν Ἑπειρωτῶν Ἀθαμᾶνες καὶ Μολοττοὶ καὶ ἡ
 τῶν Αἰθίων ποτὲ λεγομένη γῆ καὶ ἀπλῶς ἡ περὶ Πίν- 10
 δον πλὴν τοῦ Πηλίου καὶ τῆς Ὀσσης. ταῦτ' ἐξηρ-
 ται μὲν ἱκανῶς, οὐ μὴν γε πολλὴν περιλαμβάνει κύκλω
 χώραν, ἀλλ' εἰς τὰ πεδία τελευτᾷ.

2 Ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ μέσα τῆς Θετταλίας, εὐδαιμονε-
 στάτη χώρα πλὴν ὅση ποταμόκλυστός ἐστιν. ὁ γὰρ 15
 Πηνειὸς διὰ μέσης ῥέων καὶ πολλοὺς δεχόμενος ποτα-
 μοὺς ὑπερχεῖται πολλάκις· τὸ δὲ παλαιὸν καὶ ἐλιμνά-
 ξετο, ὡς λόγος, τὸ πεδίου ἐκ τε τῶν ἄλλων μερῶν ὅρεσι
 περιειργόμενον καὶ τῆς παραλίας μετεωρότερα τῶν πε-
 δίων ἐχούσης τὰ χωρία. ὑπὸ δὲ σεισμῶν ῥήγματος γε- 20
 νομένου [κατὰ] τὰ νῦν καλούμενα Τέμπη καὶ τὴν Ὀσ-
 σαν ἀποσχίσαντος ἀπὸ τοῦ Ὀλύμπου, διεξέπεσε ταύτη
 πρὸς θάλατταν ὁ Πηνειὸς καὶ ἀνέψυξε τὴν χώραν ταύ-
 την. ὑπολείπεται δ' ὅμως ἡ τε Νεσσωνὶς λίμνη μεγάλη
 καὶ ἡ Βοιβηὶς ἐλάττων ἐκείνης καὶ πλησιεστέρα τῇ πα- 25
 ραλίᾳ.

3 Τοιαύτη δ' οὖσα εἰς τέτταρα μέρη διήρητο· ἐκα-
 λεῖτο δὲ τὸ μὲν Φθιωτὶς τὸ δὲ Ἑστιαιωτὶς τὸ δὲ Θεττα-
 λιῶτις τὸ δὲ Πελασγιῶτις. ἔχει δ' ἡ μὲν Φθιωτὶς τὰ
 νότια τὰ παρὰ τὴν Οἶτην ἀπὸ τοῦ Μαλιακοῦ κόλπου 30
 καὶ Πυλαϊκοῦ μέχρι τῆς Δολοπίας καὶ τῆς Πίνδου δια-
 τείνοντα, πλατυνόμενα δὲ μέχρι Φαρσάλου καὶ τῶν

πεδίων τῶν Θετταλικῶν· ἡ δ' Ἑστιαϊῶτις τὰ ἐσπέρια καὶ τὰ μεταξὺ Πίνδου καὶ τῆς ἄνω Μακεδονίας· τὰ δὲ λοιπὰ οἱ τε ὑπὸ τῇ Ἑστιαϊῶτιδι νεμόμενοι τὰ πεδία, καλούμενοι δὲ Πελασγιῶται, συνάπτοντες ἤδη τοῖς 5 κάτω Μακεδόσι, καὶ οἱ ἐφεξῆς τὰ μέχρι Μαγνητικῆς παραλίας ἐκπληροῦντες χωρία. κἀνταῦθα δ' ἐνδοξῶν ὀνομάτων ἔσται ἀρίθμησις καὶ ἄλλως [καὶ] διὰ τὴν Ὀμήρου ποιήσιν· τῶν δὲ πόλεων ὀλίγαι σώζουσι τὸ πατριον ἀξίωμα, μάλιστα δὲ Λάρισα.

- 10 Ὁ δὲ ποιητὴς εἰς δέκα μέρη καὶ δυναστείας διελὼν 4 τὴν σύμπασαν γῆν ἣν νῦν Θετταλίαν προσαγορεύομεν, προσλαβὼν τινα καὶ τῆς Οἰταίας καὶ τῆς Λοκρικῆς, ὥς δ' αὐτῶς καὶ τῆς ὑπὸ Μακεδόσιν νῦν τεταγμένης, ὑπογράφει τι κοινὸν καὶ πάσῃ χώρᾳ συμβαῖνον, τὸ μετα- 15 βάλλεσθαι καὶ τὰ ὅλα καὶ τὰ καθ' ἕκαστα παρὰ τὰς τῶν ἐπικρατούντων δυνάμεις.

- Πρώτους δὴ καταλέγει τοὺς ὑπ' Ἀχιλλεῖ τοὺς τὸ 5 νότιον πλευρὸν κατέχοντας καὶ παρακειμένους τῇ τε Οἰτῇ καὶ τοῖς Ἐπικνημιδίοις Λοκροῖς „ὅσσοι τὸ Πελασ- 20 „γικὸν Ἄργος ἔναιον,“ „οἱ τ' Ἄλον οἱ τ' Ἀλόπην οἱ τε „Τρηχῆν' ἐνέμοντο,“ „οἱ τ' εἶχον Φθίην ἡδ' Ἑλλάδα „καλλιγύναικα,“ „Μυρμιδόνες δὲ καλεῦντο καὶ Ἑλλη- „νες καὶ Ἀχαιοί.“ συζεύγνυσσι δὲ τούτοις καὶ τοὺς ὑπὸ C.431 τῷ Φοίνικι καὶ κοινὸν ἀμφοῖν ποιεῖ τὸν στόλον. ὁ μὲν 25 οὖν ποιητὴς οὐδαμοῦ μέμνηται Δολοπικῆς στρατιᾶς κατὰ τοὺς περὶ Ἴλιον ἀγῶνας· οὐδὲ γὰρ αὐτῶν τὸν ἡγεμόνα Φοίνικα πεποίηκεν εἰς τοὺς κινδύνους ἐξιόντα, καθάπερ τὸν Νέστορα· ἄλλοι δ' εἰρήκασι, καθάπερ καὶ Πίνδαρος μνησθεὶς τοῦ Φοίνικος „ὅς Δολόπων 30 „ἄγαγε θρασὺν ὄμιλον σφενδονᾶσαι, ἵπποδάμων Δα-

„ναῶν βέλεσι πρόσφορον.“ τοῦτο δὴ καὶ παρὰ τῷ ποιητῇ κατὰ τὸ σιωπῶμενον, ὥς εἰώθασι λέγειν οἱ γραμματικοί, συνυπακουστέον. γελοῖον γὰρ τὸ τὸν βασιλέα μετέχειν τῆς στρατείας, τοὺς δ' ὑπηκόους μὴ παρεῖναι [αὐτῷ]. οὐδὲ γὰρ συστρατεύειν ἂν τῷ Ἀχιλλεῖ δόξειεν, 5 ἀλλὰ μόνον ἐπιστάτης καὶ ῥήτωρ ἔπρεσθαι, εἰ δ' ἄρα, σύμβουλος. τὰ δ' ἔπη βούλεται καὶ τοῦτο δηλοῦν· τοιοῦτον γὰρ τὸ „μῦθων τε ῥητῆρ' ἔμμεναι προηκτῆρά τε „ἔργων.“ ταῦτα λέγων.

- 6 Εἰρηται τό τε ὑπὸ τῷ Ἀχιλλεῖ [καὶ τῷ Φοί]νικι· 10 αὐτὰ δὲ λεχθέντα περὶ τῶν ὑπ' [Ἀχιλλεῖ] ἐν ἀντιλογίᾳ ἐστί. τό τε [γὰρ] Ἄργος τὸ Πελασγικὸν [οἱ μὲν] καὶ πόλιν δέχονται Θετταλικὴν περὶ Λάρισαν ἰδρυμένην ποτὲ νῦν δ' οὐκέτι οὔσαν· οἱ δ' οὐ πόλιν ἀλλὰ τὸ τῶν Θετταλῶν πεδῖον οὕτως ὀνομαστικῶς λεγόμενον, θεμένου 15 τοῦνομα Ἄβαντος ἐξ Ἄργους δεῦρ' ἀποικησάντος. Φθίαν τε οἱ μὲν τὴν αὐτὴν εἶναι τῇ Ἑλλάδι καὶ Ἀχαΐᾳ, ταύτας δ' εἶναι διατεμνομένης τῆς συμπάσης Θετταλίας θάτερον μέρος τὸ νότιον· οἱ δὲ διαιροῦσιν. ἔοικε δ' ὁ ποιητὴς δύο ποιεῖν τὴν τε Φθίαν καὶ τὴν Ἑλλάδα 20 ὅταν οὕτως φῇ „οἳ τ' εἶχον Φθίην ἢ δ' Ἑλλάδα,“ ὥς δυεῖν οὐσῶν· καὶ ὅταν οὕτως „φευ[γον] ἔπειτ' ἀπά- „νευθε δι' Ἑλλάδος εὐρυχόροιο, Φθίην δ' ἐξικόμην,“ καὶ ὅτι „πολλοὶ [Ἀχαιοὶ] εἰσὶν ἂν Ἑλλάδα τε Φθίην „τε.“ ὁ μὲν οὖν ποιητὴς δύο ποιεῖ, πότερον δὲ πόλεις 25 ἢ χώρας οὐ δηλοῖ. οἱ δ' ὕστερον τὴν Ἑλλάδα οἱ μὲν εἰπόντες χώραν διατετάσθαι φασὶν [εἰς] τὰς Θήβας τὰς Φθιώτιδας ἀπὸ Παλαιφαρσάλου (ἐν δὲ τῇ χώρᾳ ταύτῃ καὶ τὸ Θεττίδειον ἐστὶ πλησίον τῶν Φαρσάλων ἀμφοῖν τῆς τε παλαιᾶς καὶ τῆς νέας, καὶ τοῦ Θεττιδείου τεκμαι- 30

4. post στρατείας: ναῖον δ' ἑσχατιὴν Φθίης Δολόπεσσειν ἀνάσσειν 6. post μόνον: ὀλίγων ἐστίν

ρόμενοι τῆς ὑπὸ τῷ Ἀχιλλεῖ μέρος εἶναι καὶ τήνδε τὴν
 χώραν), οἱ δ' εἰπόντες πόλιν Φαρσάλιοι μὲν δεικνύ-
 ουσιν ἀπὸ ἐξήκοντα σταδίων τῆς ἑαυτῶν πόλεως κατε-
 σκαμμένην πόλιν ἣν πεπιστεύκασιν εἶναι τὴν Ἑλλάδα 0.432
 5 καὶ δύο κρήνας πλησίον Μεσσηλίδας καὶ Ὑπέρειαν, Μελι-
 ταιεῖς δ' ἄπωθεν ἑαυτῶν ὅσον δέκα σταδίους οἰκείσθαι
 τὴν Ἑλλάδα πέραν τοῦ Ἑνιπέως, ἥνικα ἡ ἑαυτῶν πό-
 λιν Πύρρα ὠνομάζετο, ἐκ δὲ τῆς Ἑλλάδος ἐν ταπεινῷ
 χωρίῳ κειμένης εἰς τὴν ἑαυτῶν μετοικῆσαι τοὺς Ἑλλη-
 10 νας· μαρτύριον δ' εἶναι τὸν ἐν τῇ ἀγορᾷ τῇ σφετέρᾳ
 τάφον τοῦ Ἑλλήνος τοῦ Δευκαλίωνος υἱοῦ καὶ Πύρ-
 ρας. ἱστορεῖται γὰρ ὁ Δευκαλίων τῆς Φθιώτιδος ἄρ-
 ξαι καὶ ἀπλῶς τῆς Θετταλίας· ὁ δ' Ἑνιπεὺς ἀπὸ τῆς
 Ὀθρυος παρὰ Φάρσαλον ῥυεῖς εἰς τὸν Ἀπιδανὸν παρα-
 15 βάλλει, ὁ δ' εἰς τὸν Πηνειόν. περὶ μὲν Ἑλλήνων ταῦτα.
 Φθῖοι δὲ καλοῦνται οἱ τε ὑπ' Ἀχιλλεῖ καὶ ὑπὸ 7
 Πρωτεσίλαφ καὶ Φιλοκτήτῃ· ὁ δὲ ποιητὴς τούτου μάρ-
 τυς. εἰπὼν γὰρ ἐν τῷ καταλόγῳ τῶν ὑπ' Ἀχιλλεῖ „οἱ
 „τ' εἶχον Φθίην,“ ἐν τῇ ἐπὶ ναυσὶ μάχῃ τούτους μὲν
 20 ὑπομένοντας ἐν ταῖς ναυσὶ πεποίηκε μετὰ τοῦ Ἀχιλ-
 λέως καὶ καθ' ἡσυχίαν ὄντας, τοὺς δ' ὑπὸ Φιλοκτή-
 τη μαχομένους ἔχοντας Μέδον[τα ἡγεμόνα] καὶ τοὺς
 ὑπὸ Πρωτεσίλαφ, Ποδάρκους περὶ ὧν κοι-
 νῶς μὲν οὕτω φησὶν „ἐνθα δὲ Βοιωτοὶ καὶ Ἰάονες
 25 „ἐλκεχίτωνες, Λοκροὶ καὶ Φθῖοι καὶ φαιδιμόεντες
 „Ἐπειοί·“ ἰδίως δὲ „πρὸ Φθίων δὲ Μέδων τε μενε-
 „πτόλεμός τε Ποδάρκης. οἱ μὲν πρὸ Φθίων μεγαθύ-
 „μων θωρηχθέντες ναῦφιν ἀμυνόμενοι [μετὰ Βοιω]-
 „τῶν ἐμάχοντο.“ τάχα δὲ καὶ οἱ σὺν Εὐρυπύλῳ Φθῖοι
 30 ἐλέγοντο, ὅμοροι τούτοις ὄντες· νῦν μέντοι Μαγνη-
 σίας νομίζουσι τῆς τε ὑπ' Εὐρυπύλῳ τὰ περὶ Ὀρμένιον
 καὶ τὴν ὑπὸ Φιλοκτήτῃ πᾶσαν, τὴν δ' ὑπὸ [Πρωτε-

σιλάῳ] τῆς Φθίας ἀπὸ Δολοπίας καὶ τῆς Πίνδου μέχρι τῆς Μαγνητικῆς θαλάττης· μέχρι δὲ τῆς ὑπὸ Πρωτεσιλάῳ πόλεως Ἀντρώωνος, ἣ νῦν πληθυντικῶς λέγεται, τὸ πλάτος ἀφορίζεται τῆς ὑπὸ Πηλεΐ καὶ Ἀχιλλεΐ γ[ῆς, ἀπὸ] τῆς Τραχινίας καὶ τῆς Οἰταίας ἀρξαμένοις· [τὸ] 5 δ' αὐτὸ σχεδόν τι μῆκός ἐστι τοῦ Μαλιακοῦ κ[όλπου].

- 8 Περὶ Ἄλου δὲ καὶ Ἀλόπης διαποροῦσι μὴ οὐ τούτους λέγει τοὺς τόπους οἳ νῦν ἐν τῷ Φθιωτικῷ τέλει φέρονται, ἀλλὰ τοὺς ἐν Δοκροῖς, μέχρι δεῦρο ἐπικρατοῦντος τοῦ Ἀχιλλέως, ὥσπερ καὶ μέχρι Τραχίνος 10 καὶ τῆς Οἰταίας. ἐστὶ γὰρ καὶ Ἄλος καὶ Ἀλιεὺς ἐν τῇ παραλίᾳ τῶν Δοκρῶν, καθάπερ καὶ Ἀλόπη. οἱ δὲ τὸν Ἀλιεῦντα ἀντὶ Ἀλόπης τιθέασιν καὶ γράφουσιν οὕτως „οἷ θ' Ἄλον οἷ θ' Ἀλιεῦνθ' οἷ τε Τρηχῖν' ἐνέ-
0.433 „μοντο.“ ὁ δὲ Φθιωτικὸς Ἄλος ὑπὸ τῷ πέρατι κεῖται 15 τῆς Ὀθρυος ὄρους πρὸς ἄρκτον κειμένου τῇ Φθιώτιδι, ὁμόρου δὲ τῷ Τυφρηστῷ καὶ τοῖς Δόλοψιν, κἀνθενδε παρατείνοντος εἰς τὰ πλησίον τοῦ Μαλιακοῦ κόλπου. ἀπέχει δὲ Ἰτάνου περὶ ἐξήκοντα σταδίους ὁ Ἄλος ἢ ἡ Ἄλος· λέγεται γὰρ ἀμφοτέρως. ᾤκισε δὲ ὁ Ἀθάμας τὴν 20 Ἄλον, ἀφανισθεῖσαν [δὲ] συνψ[κισαν Φαρσάλιοι] χρόνοις ὕστερον. ὑπέρκειται δὲ τοῦ Κροκίου πεδίου· ῥεῖ δὲ ποταμὸς Ἀμφρυσος πρὸς τῷ [ταίχει]. ὑπὸ δὲ τῷ Κροκίῳ Θῆβαι εἰσὶν αἱ Φθιώτιδες, καὶ ἡ Ἄλος δὲ Φθιώτις καλεῖται καὶ Ἀχαϊκή, συνάπτουσα τοῖς Μαλιεῦσιν, 25 ὥσπερ καὶ οἱ τῆς Ὀθρυος πρόποδες. καθάπερ δὲ ἡ Φυλάκη ἢ ὑπὸ Πρωτεσιλάῳ τῆς Φθιώτιδος ἐστὶ τῆς προσχώρου τοῖς Μαλιεῦσιν, οὕτω καὶ ἡ Ἄλος· διέχει δὲ Θηβῶν περὶ ἑκατὸν σταδίους, ἐν μέσῳ δ' ἐστὶ Φαρσάλου καὶ Φθιωτῶν· Φίλιππος μέντοι Φαρσαλίοις 30 προσένειμεν ἀφελόμενος τῶν Φθιωτῶν. οὕτω δὲ συμβαίνει τοὺς ὄρους καὶ τὰς συντάξεις τῶν τε ἐθνῶν καὶ

τῶν τόπων ἀλλάττεσθαι αἰεί, καθάπερ εἶπομεν. οὕτω
καὶ Σοφοκλῆς τὴν Τραχίνα Φθιωτὶν εἶρηκεν, Ἀρτε-
μίδωρος δὲ τὴν Ἄλουν ἐν τῇ παραλίᾳ τίθησι, ἔξω μὲν
τοῦ Μαλιακοῦ κόλπου κειμένην, Φθιωτὶν δέ. προῶν
5 γὰρ ἐνθύνδε ὥς ἐπὶ τὸν Πηνεῖον μετὰ τὸν Ἀντρωῖνα
τίθησι Πτελεόν, εἶτα τὸν Ἄλουν ἀπὸ τοῦ Πτελεοῦ διέ-
χοντα ἑκατὸν καὶ δέκα σταδίου. περὶ δὲ τῆς Τραχίνος
εἴρηται ὅποια τις· καὶ ὁ ποιητὴς κατονομάζει.

Τοῦ δὲ Σπερχεῖοῦ μεμνημένος πολλάκις ὥς ἐπι- 9
10 χωρίου ποταμοῦ, τὰς πηγὰς ἔχοντας ἐκ Τυφρηστοῦ
Δρυοπικοῦ ὄρους, τοῦ καλουμένου περ]ότερον,
ἐκδιδόντος δὲ πλησίον Θερμοπυλῶν μεταξὺ αὐτῶν
καὶ Λαμίας, δηλοῖ ὅτι καὶ τὰ ἐντὸς πυλῶν ὅσα τοῦ Μα-
λιακοῦ κόλπου καὶ τὰ ἐκτὸς ὑπ' ἐκείνῳ ἦν· ἀπέχει δὲ
15 Λαμίας ὁ Σπερχεῖος περὶ τριάκοντα σταδίους ὑπερκει-
μένης πεδίου τινὸς καθήκοντος ἐπὶ τὸν Μαλιακὸν κόλ-
πον· ὅτι δ' ὁ Σπερχεῖος ἐπιχώριος, ἐκ τε τοῦ τρέφειν
ἐκείνῳ τὴν κόμην φάσκειν καὶ τοῦ τὸν Μενέσθιον,
ἓνα τῶν λοχαγῶν αὐτοῦ, Σπερχεῖοῦ λέγεσθαι παῖδα
20 καὶ τῆς ἀδελφῆς τῆς Ἀχιλλέως. Μυρμιδόνας δ' εἰκὸς
καλεῖσθαι πάντας τοὺς ὑπὸ τῷ Ἀχιλλεῖ καὶ τῷ Πατρό-
κλῳ, οἳ συνηκολούθησαν ἐξ Αἰγίνης φεύγοντι τῷ Πη-
λεῖ. Ἀχαιοὶ δ' ἐκαλοῦντο οἱ Φθιωταὶ πάντες.

Διαριθμοῦνται δὲ τὰς ὑπὸ τῷ Φθιωτικῷ τέλει τῷ 10
25 ὑπ' Ἀχιλλεῖ κατοικίας [ἀπὸ] Μαλιέων ἀρξάμενοι πλεί-
ους μὲν, ἐν δ' αὐταῖς Θήβας τὰς Φθιώτιδας Ἐχίνον Ἀά-
μιαν, περὶ ἣν ὁ Λαμιακὸς συνέστη πόλεμος Μακεδόσι
καὶ Ἀντιπάτρῳ πρὸς Ἀθηναίους· ἐν ᾧ Λεωσθένης τε
ἔπεσε τῶν Ἀθηναίων στρατηγός, [καὶ Λεοννάτος] ὁ Ἀλε-
30 ξάνδρου τοῦ βασιλέως ἐταῖρος. [ἔτι δὲ Ναρθάκ]ιον Ἐρι-
νεὸν Κορώνειαν, ὁμώνυμον τῇ Βοιωτικῇ, Μελίταιαν
Θαυμακοὺς Πρόερναν Φάρσαλον Ἐρέτριαν, ὁμώνυμον

τῇ Εὐβοικῇ, Παραχελώϊτας καὶ τούτους ὁμωνύμους τοῖς Αἰτωλικοῖς· καὶ γὰρ ἐνταῦθά ἐστιν Ἀχελῷος ποταμός πλησίον Λαμίας, παρ' ὃν οἰκοῦσιν οἱ Παραχελώϊται. παρέτεινε δ' ἡ χάρα αὕτη πρὸς ἄρκτον μὲν πῇ τῶν Ἀσκληπ[ιαδῶν τῶν μάλιστα προσεσπερίων καὶ τῇ 5 Εὐρυπύλου καὶ [ἐτι τῇ] Πρωτεσιλάου, ταῖς πρὸς ἕω κεκλιμέναις, πρὸς νότον δὲ τῇ Οἰταίᾳ εἰς τετταρεσκαίδεκα δήμους διηρημένην, Ἡράκλειάν τε καὶ τὴν Δρυοπίδα, τετράπολιν γεγυυῖαν ποτε καθάπερ καὶ τὴν Δωρίδα, μητρόπολιν δὲ τῶν ἐν Πελοποννήσῳ Δρυό- 10 πων νομιζομένην. τῆς δ' Οἰτάας καὶ ὁ Ἀκύνφας ἐστὶ καὶ Παρασσωπιάς καὶ Οἰνείαδαι καὶ Ἀντικύρα, ὁμώνυμος τῇ ἐν Δοκροῖς τοῖς ἐσπερίοις. λέγω δὲ τὰς διατάξεις ταύτας οὐκ αἰεὶ μεμενηκυίας τὰς αὐτάς, ἀλλὰ ποικίλως μεταβεβλημένας· αἱ δ' ἐπισημόταται μάλιστα ἄξιαι 15 μνήμης εἰσὶ.

- 11 Τοὺς δὲ Δόλοπας φράζει καὶ ὁ ποιητὴς Ἰκανῶς ὅτι ἐπὶ ταῖς ἐσχατιαῖς εἰσὶ τῆς Φθίας, καὶ ὅτι ὑπὸ τῷ αὐτῷ ἡγεμόνι ἦσαν τῷ Πηλεΐ οὗτοί τε καὶ οἱ Φθιωταί· ἔναιον γάρ, φησὶν, ἐσχατιὴν Φθίης Δολόπεσσιν ἀνάσ- 20 σων, δόντος τοῦ Πηλέως. γειννᾷ δὲ τῇ Πίνδῳ καὶ τοῖς περὶ αὐτὴν χωρίοις Θετταλικοῖς οὖσι τοῖς πλείστοις. διὰ γὰρ τὴν ἐπιφάνειάν τε καὶ τὴν ἐπικράτειαν τῶν Θετταλῶν καὶ τῶν Μακεδόνων οἱ πλησιάζοντες αὐτοῖς μάλιστα τῶν Ἑπειρωτῶν, οἱ μὲν ἐκόντες οἱ δ' 25 ἄκοντες, μέρη καθίσταντο Θετταλῶν ἢ Μακεδόνων, καθάπερ Ἀθαμᾶνες καὶ Αἰθίκες καὶ Τάλαρες Θετταλῶν, Ὀρέσται δὲ καὶ Πελαγόνες καὶ Ἐλιμιῶται Μακεδόνων.

- 12 Ἡ δὲ Πίνδος ὄρος ἐστὶ μέγα, πρὸς ἄρκτον μὲν τὴν 30

Μακεδόνων, πρὸς ἐσπέραν δὲ Περραιβοὺς μετανάστας
 ἀνθρώπους [ἔχον], πρὸς δὲ μεσημβρίαν Δόλοπας,
 [πρὸς ἕω δὲ . . . αὕτη δ' ἐστὶ τῆς Θετταλίας· ἐπ' αὐτῇ
 δὲ πῇ Πίνδῳ ὥκουν Τάλαρες Μολοττικὸν φῦλον, τῶν
 5 περὶ τὸν Τόμαρον ἀπόσπασμα, καὶ Αἰθίαιες, [εἰς] οὓς
 ἐξελαθῆναι φησιν ὑπὸ Πειρίθου τοὺς Κενταύρους ὁ
 ποιητής· ἐκλελοιπέναι δὲ νῦν ἱστοροῦνται. τὴν δ'
 ἔκλειψιν διττῶς ἀκουστέον· ἡ γὰρ ἀφανισθέντων τῶν
 ἀνθρώπων καὶ τῆς χώρας τελέως ἡρημαμένης, ἡ τοῦ
 10 ὀνόματος τοῦ ἐθνικοῦ μηκέτι ὄντος, μηδὲ τοῦ συστή-
 ματος διαμένοντος τοιούτου. ὅταν οὖν ἄσημον τελέως C. 435
 ἦ τὸ λειπόμενον νυνὶ σύστημα, οὐκ ἄξιον μνήμης τί-
 θεμεν οὔτ' αὐτὸ οὔτε τοῦνομα τὸ μεταληφθέν, ὅταν
 δ' ἔχη τοῦ μεμνησθαι δικαίαν πρόφασιν, λέγειν ἀναγ-
 15 καίον τὴν μεταβολήν.

Λοιπὸν δ' εἰπεῖν τῆς παραλίας τὴν τάξιν τῆς ὑπὸ 13
 τῷ Ἀχιλλεῖ ἀπὸ Θερμοπυλῶν ἀρξαμένους· τὴν γὰρ
 Δοκρικὴν καὶ [τὴν Οἰταία]ν εἰρήκαμεν. αἱ τοίνυν
 Θερμοπύλαι τοῦ μὲν Κηναίου διεστήκασιν ἐβδομη-
 20 κοντασταδίῳ πορθμῷ, παραπλέοντι δ' ἕξω Πυλῶν τοῦ
 Σπερχειοῦ ὡς σταδίους * δέκα· ἐνθεν δ' εἰς Φάλαρα
 εἴκοσι· τῶν δὲ Φαλάρων ἀπὸ θαλάττης ὑπέρεκειται
 πεντήκοντα σταδίους ἢ τῶν [Λαμιέων πόλι]ς. εἰθ'
 ἐξῆς παραπλεύσαντι σταδίοις ἑκατὸν ὁ Ἑχῆνος ὑπέρ-
 25 κείται. τῆς δ' ἐξῆς παραλίας ἐν μεσογαίᾳ ἐστὶν ἡ Κρε-
 μαστὴ Λάρισα εἴκοσι σταδίους αὐτῆς διέχουσα, ἢ δ'
 αὐτὴ καὶ Πελασγία λεγομένη Λάρισα. εἰτα Μνόννη-
 σος νησίον, εἰτ' Ἀντρών· ἦν δὲ αὕτη ὑπὸ Πρωτεσιλάῳ.
 τοσαῦτα μὲν περὶ τῆς ὑπὸ τῷ Ἀχιλλεῖ με[ρίδος].

30 Ἐπεὶ δ' ὁ ποιητής εἰς πολλὰ καὶ γνώριμα μέρη 14
 διε[λὼν δι]ὰ τὸ ὀνομάζειν τοὺς τε ἡγεμόνας καὶ τὰς ὑπ'
 αὐτοῖς [πόλεις] τὸν σύμπαντα τῆς Θετταλίας κύκλον

διέταξεν, [ἡμεῖς ἀκολ]ουθοῦντες τούτῳ πάλιν ὥσπερ
 ἐν τοῖς ἐπάνω [προ]σεκπληρώσομεν τὴν λοιπὴν περιο-
 δεῖαν τῆς χώ[ρα]ς. καταλέγει τοίνυν ἐφεξῆς τοῖς ὑπ'
 Ἀχιλλεῖ τοὺς ὑπὸ Πρωτεσιλάῳ· οὗτοι δ' εἰσὶν οἱ καὶ
 ἐφεξῆς ὄντες τῇ ὑπὸ τῷ Ἀχιλλεῖ παραλία μέχρι Ἀν- 5
 τρώου. ὀριζομένη τοίνυν [τῆς ἐφ]εξῆς ἐστὶν ἡ ὑπὸ τῷ
 Πρωτεσιλάῳ, ἔξω μὲν οὕσα τοῦ [Μαλιακ]οῦ κόλπου,
 ἔτι δ' ἐντὸς τῆς Φθιώτιδος, οὐ μὴν τῆς [ὑπὸ τῷ Ἀχιλ-
 λεῖ]. ἡ μὲν οὖν Φυλάκη ἐγγὺς Θηβῶν ἐστὶ τῶν Φθιω-
 τίδων, αἵπερ εἰσὶ καὶ αὐταὶ ὑπὸ τῷ Πρωτεσιλάῳ· καὶ 10
 Ἄλος δὲ καὶ Δάρισα ἡ Κρεμαστὴ καὶ τὸ Δημήτριον ὑπ'
 ἐκείνῳ, πᾶσαι πρὸς ἕω τῆς Ὀθρυος. τὸ δὲ Δημήτριον
 Δημήτρος εἶρηκε τέμενος καὶ ἐκάλεσε Πύρασον. ἦν δὲ
 πόλις εὐλίμενος ἡ Πύρασος ἐν δυεῖ σταδίοις, ἔχουσα
 Δημήτρος ἄλσος καὶ ἱερὸν ἄγιον, διέχουσα Θηβῶν 15
 σταδίους εἴκοσι· ὑπέρχευνται δὲ Πυράσου μὲν αἱ Θῆ-
 βαι. τῶν Θηβῶν δὲ ἐν τῇ μεσογαίᾳ τὸ Κρόκιον πεδίον
 πρὸς τῷ καταλήγοντι τῆς Ὀθρυος, δι' οὗ ὁ Ἀμφρυσιος
 ῥεῖ. τούτου δ' ὑπέρχεται ὁ Ἴωνος, ὅπου τὸ τῆς Ἰω-
 νίας ἱερὸν, ἀφ' οὗ καὶ τὸ ἐν τῇ Βοιωτίᾳ, καὶ ὁ Κουά- 20
 ριος ποταμός· εἴρηται δὲ [περὶ τούτου καὶ] τῆς Ἀρνης
 ἐν τοῖς Βοιωτικοῖς. ταῦτα δ' ἐστὶ τῆς Θετταλιώτι-
 δος μιᾶς τῶν τεττάρων μερίδων τῆς συμπάσης Θεττα-
 λίας, ἥς καὶ τὰ ὑπ' Εὐρυπύλῳ καὶ ὁ Φύλλ[ος], ὅπου
 Ἀπόλλωνος τοῦ Φυλλίου ἱερὸν, καὶ Ἰχναί, ὅπου ἡ Θέ- 25
 μιν Ἰχναία τιμᾶται. καὶ Κίερος δ' εἰς αὐτὴν συντελεῖ
 καὶ [τᾶλλα μέχρι] τῆς Ἀθαμανίας. κατὰ δὲ τὸν Ἀν-
 τρώνα ἕρμα ὕφαλον ἐν τῷ πρὸς Εὐβοίᾳ ἐστὶ πόρῳ κα-
 λούμενον ὄνος Ἀντρώου. εἴτα Πτελεὸν καὶ ὁ Ἄλος·
 εἴτα τὸ τῆς Δημήτρος ἱερὸν καὶ ὁ Πύρασος κατεσκαμ- 30
 μένος, ὑπὲρ αὐτὸν δὲ αἱ Θῆβαι· εἴτα ἄκρα Πύρρα καὶ

δυό νησία πλησίον, ὧν το μὲν Πύρρα τὸ δὲ Λευκαλίον καλεῖται· ἐνταῦθα δὲ καὶ ἡ Φθιωτὶς πῶς τελευτᾷ.

C.436
15

Ἐξῆς δὲ τοὺς ὑπὸ τῷ Εὐμήλῳ καταλέγει, τὴν συν-
εχῇ παραλίαν, ἥπερ ἐστὶν ἡδὴ Μαγνησίας καὶ τῆς Πε-
15 λασγιάτιδος γῆς. Φεραὶ μὲν οὖν εἰσι πέρας τῶν Πε-
λασγικῶν πεδίων πρὸς τὴν Μαγνησίαν, ἃ παρατείνει
μέχρι τοῦ Πηλίου σταδίους ἑκατὸν ἐξήκοντα. ἐπίνειον
δὲ τῶν Φερῶν Παγασαὶ διέχον ἐνευήκοντα σταδίους
αὐτῶν, Ἰωλκοῦ δὲ εἴκοσιν. ἡ δ' Ἰωλκὸς κατέσκαπται
10 μὲν ἐκ παλαιοῦ, ἐντεῦθεν δ' ἔστειλε τὸν Ἰάσονα καὶ
τὴν Ἀργὴν Πελίας· ἀπὸ δὲ τῆς ναυπηγίας τῆς Ἀργούης
καὶ Παγασὰς λέγεσθαι μυθεύουσι τὸν τόπον, οἱ δὲ πι-
θανώτερον ἡγοῦνται τοῦνομα τῷ τόπῳ τεθῆναι τοῦτο
ἀπὸ τῶν πηγῶν αἱ πολλαὶ τε καὶ θαψιλεῖς ῥέουσιν· πλη-
15 σίον δὲ καὶ Ἀφείται ὡς ἂν ἀφετήριόν τι τῶν Ἀργοναυ-
τῶν. τῆς δὲ Δημητριάδος ἑπτὰ σταδίους ὑπέρεκται
τῆς θαλάττης Ἰωλκός. ἔκτισε δὲ Δημήτριος ὁ πολιορ-
κητῆς ἐπώνυμον ἑαυτοῦ τὴν Δημητριάδα μεταξὺ Νη-
λείας καὶ Παγασῶν ἐπὶ θαλάττῃ τὰς πλησίον πόλιν
20 εἰς αὐτὴν συνοικίσας, Νήλειάν τε καὶ Παγασὰς καὶ
Ὀρμένιον, ἔτι δὲ Ριζοῦντα Σηπιάδα Ὀλιζῶνα Βοίβην
Ἰωλκόν, αἱ δὲ νῦν εἰσι κῶμαι τῆς Δημητριάδος. καὶ
δὴ καὶ ναύσταθμον ἦν τοῦτο καὶ βασιλείον μέχρι πολ-
λοῦ τοῖς βασιλεῦσι τῶν Μακεδόνων, ἐπεκράτει δὲ καὶ
25 τῶν Τεμπῶν καὶ τῶν ὀρῶν ἀμφοῖν, ὥσπερ εἴρηται,
τοῦ τε Πηλίου καὶ τῆς Ὀσσης· νῦν δὲ συνέσταλται
μὲν, τῶν δ' ἐν τῇ Μαγνησίᾳ πασῶν ὅμως διαφέρει. ἡ
δὲ Βοιβῆς λίμνη πλησιάζει μὲν ταῖς Φεραῖς, συνάπτει
δὲ καὶ τοῖς ἀπολήγουσι τοῦ Πηλίου πέρασιν καὶ τῆς Μα-
30 γνησίας· Βοίβη δὲ χωρίον ἐπὶ τῇ λίμνῃ κείμενον. κα-
θάπερ δὲ τὴν Ἰωλκὸν ἀνέστησαν ἐπὶ πλέον κατέλυσαν
αἱ στάσεις καὶ αἱ τυραννίδες, οὕτως καὶ τὰς Φεράς

συνέστειλαν ἐξαρθείσας ποτὲ καὶ συγκαταλυθείσας τοῖς τυράννοις. πλησίον δὲ τῆς Δημητριάδος ὁ Ἄναυρος ῥεῖ. καλεῖται δὲ καὶ συνεχῆς αἰγιαλὸς Ἰωλκός· ἐνταῦθα δὲ καὶ τὴν * Πυλαϊκὴν πανήγυριν συνετέλουν. ὁ δ' Ἀρτεμίδωρος ἀπωτέρω τῆς Δημητριάδος τίθησι τὸν Παργασιτικὸν κόλπον εἰς τοὺς ὑπὸ Φιλοκτήτη τόπους· ἐν δὲ τῷ κόλῳ φησὶν εἶναι τὴν Κικύνηθον νῆσον καὶ πολίχνην ὁμώνυμον.

- 16 Ἐξῆς δ' αἱ ὑπὸ Φιλοκτήτη πόλεις καταλέγονται. ἡ μὲν οὖν Μηθώνη ἑτέρα ἐστὶ τῆς Θωρακίας Μεθώνης, 10 ἣν κατέσκαψε Φίλιππος· ἐμνήσθημεν δὲ καὶ πρότερον τῆς τῶν ὀνομάτων τούτων καὶ τῶν ἐν Πελοποννήσῳ ... τροπῆς· τᾶλλα δὲ [δι]ηρίθμηται, ἣ τε Θαυμακία καὶ [ὁ] Ὀλιζῶν καὶ ἡ Μελίβοια, [ἃ] τῆς ἐξῆς παραλίας ἐστίν. πρόκεινται δὲ τῶν Μαγνήτων νῆσοι συχναὶ μὲν, 15 αἱ δ' ἐν ὀνόματι Σκιάθος τε καὶ Πεπάρηθος καὶ Ἰκός Ἀλόνησος τε καὶ Σκυῖρος, ὁμωνύμους ἔχουσαι πόλεις. μάλιστα δ' ἐστὶν ἐν ὀνόματι Σκυῖρος διὰ τὴν Λυκομήδους πρὸς Ἀχιλλέα οἰκειότητα καὶ τὴν Νεοπτολέμου

C.437 τοῦ Ἀχιλλέως ἐνταῦθα γένεσιν τε καὶ ἐκτροφήν. ὅστε- 20 ρον δὲ Φίλιππος ἀνέστης, ὁρῶν Ἀθηναίους ἐπικρατοῦντας τῆς θαλάττης καὶ τῶν νήσων ἄρχοντας καὶ τούτων καὶ τῶν ἄλλων, ἐποίησε τὰς πλησίον ἑαυτοῦ μάλιστα ἐνδόξους. πολέμων γὰρ περὶ τῆς ἡγεμονίας ἐπαχείρει πρῶτοις αἰ τοῖς ἐγγύθεν, καὶ καθάπερ ἀν- 25 τῆς τῆς Μαγνήτιδος τὰ πολλὰ μέρη Μακεδονίαν ἐποίησε καὶ τῆς Θωρακίας καὶ τῆς ἄλλης τῆς κύκλῳ γῆς, οὕτω καὶ τὰς πρὸ τῆς Μαγνησίας νήσους ἀφηροῖτο, καὶ τὰς ὑπ' οὐδενὸς γνωριζομένας πρότερον περιμαχήτους καὶ γνωρίμους ἐποίησε. τὴν δ' οὖν Σκυῖρον καὶ μάλιστα μὲν 30 αἱ ἀρχαιολογίαι συνιστῶσιν, ἀλλὰ καὶ τὰ τοιαῦτα θρυλεῖσθαι ποιεῖ, οἷον αἱ τῶν αἰγῶν ἀρεταὶ τῶν Σκυρίων,

καὶ τὰ μέταλλα τῆς ποικίλης λίθου τῆς Σκυρίας, καθάπερ τῆς Καρυστίας καὶ τῆς * Λευκαλλίας καὶ τῆς Συνναδικῆς * Ἰεραπολιτικῆς. μονολίθους γὰρ κίονας καὶ πλάκας μεγάλας ὁρᾶν ἔστιν ἐν τῇ Ῥώμῃ τῆς ποικί-
 5 λης λιθείας, ἀφ' ἧς ἡ πόλις κοσμεῖται δημοσίᾳ τε καὶ ἰδίᾳ, πεποιήκέ τε τὰ λευκόλιθα οὐ πολλοῦ ἄξια.

Ὁ δ' οὖν ποιητὴς μέχρι δεῦρο προελθὼν τῆς Μα- 17
 γνητικῆς παραλίας ἐπάνεισιν ἐπὶ τὴν ἄνω Θεττάλιαν·
 καὶ γὰρ τὰ παρατείνοντα τῇ Φ[θιώτιδι], ἀρξάμενος
 10 ἀπὸ τῆς Δολοπίας καὶ τῆς Πίνδου, [μέχρι τῆς] κάτω
 Θεττάλιᾳ διέξεισιν „οἱ δ' εἶχον Τρίκκην καὶ Ἰθώμην
 „κλωμακόεσσαν.“ ταῦτα τὰ χωρία ἔστι μὲν τῆς Ἰστια-
 ώτιδος, ἐκαλεῖτο δ', ὥς φασι, πρότερον Δωρίς· κατα-
 σχόντων δὲ τῶν Περραιβῶν αὐτήν, οἱ καὶ τῆς Εὐβοίας
 15 τὴν Ἰστιαίῳτιν κατεστρέψαντο καὶ τοὺς ἀνθρώπους
 εἰς τὴν ἡπειρον ἀνέσπασαν, διὰ τὸ πλῆθος τῶν ἐποι-
 κησάντων Ἰστιαίων τὴν χώραν ἀπ' ἐκείνων οὕτως ἐκά-
 λεσαν. καλοῦσι δὲ καὶ [αὐτὴν καὶ] τὴν Δολοπίαν τὴν
 ἄνω Θεττάλιαν, ἐπ' εὐθείας οὕσα[ν τῇ ἄνω] Μακεδο-
 20 νίᾳ, καθάπερ καὶ τὴν κάτω τῇ κάτω. ἔστι δ' ἡ μὲν
 Τρίκκη, ὅπου τὸ ἱερὸν τοῦ Ἀσκληπιοῦ τὸ ἀρχαιότατον
 καὶ ἐπιφανέστατον, ὅμορος τοῖς τε Δόλοψιν καὶ τοῖς
 περὶ τὴν Πίνδον τόποις. τὴν δ' Ἰθώμην ὁμωνύμως τῇ
 Μεσσηνιακῇ λεγομένην οὐ φασι δεῖν οὕτως ἐκφέρειν,
 25 ἀλλὰ τὴν πρώτην συλλαβὴν ἀφαιρεῖν· οὕτω γὰρ κα-
 λείσθαι πρότερον, νῦν δὲ * Θαμαὶ μετωνομάσθαι, χω-
 ρίον ἐρυμνὸν καὶ τῷ ὄντι κλωμακόεν, ἰδρυμένον με-
 ταξὺ τεττάρων φρουρίων ὥσπερ ἐν τετραπλεύρῳ κει-
 μένων, Τρίκκης τε καὶ Μητροπόλεως καὶ Πελινναίου
 30 καὶ Γόμφων. τῆς δὲ δὴ Μητροπολιτῶν ἔστι χώρας ἡ
 Ἰθώμη. ἡ δὲ Μητρόπολις πρότερον μὲν ἐκ τριῶν συν-
 ῥκιστο πολιχνίων ἀσήμεων, ὕστερον δὲ καὶ πλείους

προσελήφθησαν, ὧν ἦν καὶ ἡ Ἰθάμη. Καλλίμαχος μὲν
 C.438 οὖν φησιν ἐν τοῖς ἰάμβοις τὰς Ἀφροδίτας (ἡ θεὸς γὰρ
 οὐ μία) τὴν Καστινήτιν ὑπερβάλλεσθαι πάσας τῷ φρο-
 νεῖν, ὅτι μόνη παραδέχεται τὴν τῶν ὕδων θυσίαν. καὶ
 μὴν πολυέστωρ, εἴ τις ἄλλος, καὶ πάντα τὸν βίον, ὥς 5
 αὐτὸς εἶρηκεν, ὃ ταῦτα * μυθεῖσθαι βουλόμενος. οἱ δ'
 ὕστερον ἤλεγξαν οὐ μίαν Ἀφροδίτην μόνον ἀλλὰ καὶ
 πλείους ἀποδεδεγμένας τὸ ἔθος τοῦτο, ὧν εἶναι καὶ
 τὴν ἐν τῇ Μητροπόλει· ταύτῃ δὲ μίαν τῶν συνοικι-
 σθεισῶν εἰς αὐτὴν πόλεων παραδοῦναι τὸ ἔθος Ὀνθύ- 10
 ριον. ἔστι δὲ καὶ Φαρκαδῶν ἐν τῇ Ἰστιαιωτίδι, καὶ ῥεῖ
 δι' αὐτῶν ὁ Πηνειὸς καὶ ὁ Κουράλιος· ὧν ὁ Κουράλιος
 ῥυεῖς παρὰ τὸ τῆς Ἰτωνίας Ἀθηνᾶς ἱερὸν εἰς τὸν Πη-
 νειὸν ἐξήλθιν, αὐτὸς δ' ὁ Πηνειὸς ἄρχεται μὲν ἐκ Πίν-
 δου, καθάπερ εἴρηται, ἐν ἀριστερᾷ δ' ἀφείς Τρίκκην 15
 τε καὶ Πελοποννήσου καὶ Φαρκαδόνα φέρεται παρὰ τε
 Ἀτρακκα καὶ Λάρισαν, καὶ τοὺς ἐν τῇ Θεσσαλιωτίδι δε-
 ξάμενος ποταμοὺς πρόεισι διὰ τῶν Τεμπῶν ἐπὶ τὰς
 ἐκβολάς. τὴν δ' Οἰχαλίαν πόλιν Εὐρύτου λεγομένην
 ἐν τε τοῖς τόποις τούτοις ἱστοροῦσι καὶ ἐν Εὐβοίᾳ καὶ 20
 ἐν Ἀρκαδίᾳ, καὶ μετονομάζουσιν [ἄλλοι] ἄλλως, ὃ καὶ
 ἐν τοῖς Πελοποννησιακοῖς εἴρηται. περὶ δὲ τούτων ζη-
 τοῦσι καὶ μάλιστα τίς ἦν ἡ ὑπὸ Ἡρακλέους ἀλοῦσα, καὶ
 περὶ τίνος συνέγραψεν ὁ ποιήσας τὴν Οἰχαλίας ἄλω-
 σιν. ταῦτα μὲν δὴ τὰ χωρία τοῖς Ἀσκληπιάδαις ὑπέ- 25
 ταξεν.

- 18 Ἐξῆς δὲ λέγει τὴν ὑπ' Εὐρυπύλῳ „οἱ δ' ἔχον Ὀρμέ-
 „νιον οἷ τε κρήνην Ὑπέρειαν, οἱ τ' ἔχον Ἀστέριον Τιτά-
 „νοιό τε λευκὰ κάρηνα.“ τὸ μὲν οὖν Ὀρμένιον νῦν Ὀρ-
 μίνιον καλεῖται, ἔστι δ' ὑπὸ τῷ Πηλῳ κώμη κατὰ τὸν 30
 Παγασιτικὸν κόλπον τῶν συνοικισμένων εἰς τὴν Δημη-
 τριάδα πόλεων, ὥς εἴρηται. ἀνάγκη δὲ καὶ τὴν Βοιβηίδα

λίμνην εἶναι πλησίον, ἐπειδὴ καὶ ἡ Βοίβη τῶν περιου-
 κίδων ἦν τῆς Δημητριάδος καὶ αὐτὸ τὸ Ὀρμένιον. τὸ
 μὲν οὖν Ὀρμένιον ἀπέχει τῆς Δημητριάδος πεξῆ στα-
 δίους ἑπτὰ καὶ εἰκοσιν, ὁ δὲ τῆς Ἰωλκοῦ τόπος ἐν ὁδῷ
 5 κείμενος τῆς μὲν Δημητριάδος ἑπτὰ σταδίου διέστηκε,
 τοῦ δ' Ὀρμενίου τοὺς λοιποὺς σταδίους εἰκοσι. φησὶ
 δ' ὁ Σκήψιος ἐκ τοῦ Ὀρμενίου τὸν Φοίνικα εἶναι, καὶ
 φεύγειν αὐτὸν ἐνθ' ἐνδε παρὰ τοῦ „πατρὸς Ἀμύντορος
 „Ὀρμενίδαο“ εἰς τὴν Φθίαν „εἰς Πηλῆαν ἄνακτα.“ ἐκτί-
 10 σθαι γὰρ ὑπὸ Ὀρμένου τὸ χωρίον τοῦτο τοῦ * Κερφίου
 τοῦ Αἰόλου· παῖδας δὲ τοῦ Ὀρμένου γενέσθαι τὸν τε
 Ἀμύντορα καὶ Εὐαίμονα, ὧν τοῦ μὲν εἶναι Φοίνικα τοῦ 0.439
 δ' Εὐρύπυλον· φυλαχθῆναι δὲ τῷ Εὐρύπυλῳ τὴν δια-
 δοχὴν κοινὴν, ἅτε ἂν ἀπελθόντος τοῦ Φοίνικος ἐκ τῆς
 15 οἰκείας· καὶ δὴ καὶ γράφει οὕτως „οἶον ὅτε πρῶτον λί-
 „πον Ὀρμένιον πολύμηλον“, ἀντὶ τοῦ „λίπον Ἑλλάδα
 „καλλιγύναικα.“ Κράτης δὲ Φωκέα ποιεῖ τὸν Φοίνικα,
 τεκμαιρόμενος ἐκ τοῦ κράνους τοῦ Μέγητος ᾧ ἐχρή-
 σατο ὁ Ὀδυσσεὺς κατὰ τὴν νυκτεγεροσίαν, περὶ οὗ φη-
 20 σιν ὁ ποιητὴς ὅτι „ἐξ Ἑλεῶνος Ἀμύντορος Ὀρμενίδαο
 „ἐξέλετ' Αὐτόλυκος, πνικινὸν δόμον ἀντιτορήσας.“ τὸν
 τε γὰρ Ἑλεῶνα ἐν τῷ Παρνασσῷ πολίχνην εἶναι, τὸν
 τε Ὀρμενίδην Ἀμύντορα οὐκ ἄλλον τινὰ λέγεσθαι ἢ
 τὸν τοῦ Φοίνικος πατέρα, καὶ τὸν Αὐτόλυκον οἰκοῦντα
 25 ἐν τῷ Παρνασσῷ τοιχωρυχεῖν τὰ τῶν γειτόνων, ὅπερ
 κοινόν ἐστι τοιχωρύχου παντός, οὐ τὰ τῶν πόρρωθεν.
 ὁ δὲ Σκήψιος φησι μήτε Ἑλεῶνα μηδένα τόπον τοῦ
 Παρνασσοῦ δείκνυσθαι, ἀλλὰ Νεῶνα, καὶ ταύτην οἰ-
 κισθεῖσαν μετὰ τὰ Τρωικά, μῆτ' ἐκ γειτόνων τὰς τοι-
 30 χωρυχίας γίνεσθαι μόνον. καὶ ἄλλα δ' ἐστὶν ἃ λέγοι
 τις ἂν, ἀλλ' οὖν ὁκνῶ διατρίβειν ἐπὶ πλεόν. ἄλλοι δὲ
 γράφουσιν ἐξ Ἑλεῶνος· Ταναγρικὴ δὲ ἐστὶν αὕτη· καὶ

μᾶλλον ἐλέγχοι ἀτόπως ἂν λεγόμενον τό „φεῦγον ἔπειτ’
 „ἀπάνευθε δι’ Ἑλλάδος, Φθίην δ’ ἐξικόμην.“ ἡ δ’
 Ὑπέραια κρήνη ἐν μέσῃ ἐστὶ τῇ Φεραίων πόλει Εὐμήλου
 οὕσῃ· ἄτοπον τοίνυν [δοῦναι Εὐρυπύ]λῳ. Τίτανος
 δ’ ἀπὸ τοῦ συμβεβηκότος ὠνομάσθη· λευκόγεων γάρ 5
 ἐστὶ τὸ χωρίον Ἀρνης πλησίον καὶ [τῶν Ἀφε]τῶν· καὶ
 τὸ Ἀστέριον δ’ οὐκ ἄπωθεν τούτων ἐστί.

- 19 Συνεχεῖς δὲ τῇ μερίδι ταύτῃ λέγονται οἱ ὑπὸ τῷ
 Πολυποίτῃ „οἱ δ’ Ἀργισσαν ἔχον καὶ Γυρτώνην ἐνέ-
 „μοντο, Ὀρθὴν Ἠλώνην τε πόλιν τ’ Ὀλοοσσόνα λευ- 10
 „κὴν.“ ταύτην τὴν χώραν πρότερον μὲν ὄκουν Περ-
 ραιβοί, τὸ πρὸς θαλάττῃ μέρος νεμόμενοι καὶ τῷ Πη-
 νειῷ μέχρι τῆς ἐκβολῆς αὐτοῦ καὶ Γυρτῶνος πόλεως
 Περραιβίδος. εἴτα ταπεινώσαντες ἐκείνους Λαπίθαι
 κατέσχον αὐτοὶ τὰ χωρία, Ἰξίω καὶ ὁ υἱὸς Πειρίθους, 15
 ὃς καὶ τὸ Πήλιον κατεκτήσατο βιασάμενος τοὺς κατα-
 σχόντας Κενταύρους, ἄγριόν τι φῦλον. τούτους μὲν
 οὖν „ἐκ Πηλίου ᾧσε καὶ Αἰθίκεσσι πέλασσε,“ τοῖς δὲ

C.440 Λαπίθαις τὰ πεδία παρέδωκε· τινὰ δ’ αὐτῶν καὶ οἱ
 Περραιβοὶ κατεῖχον, τὰ πρὸς τῷ Ὀλύμπῳ· ἔστι δ’ ὅπου 20
 καὶ ὅλοι ἀναμῖξ τοῖς Λαπίθαις ὄκουν. ἡ μὲν οὖν Ἀρ-
 γισσα, ἡ νῦν Ἀργουρα, ἐπὶ τῷ Πηνειῷ κεῖται· ὑπέρκει-
 ται δ’ αὐτῆς Ἀτραξ ἐν τετταράκοντα σταδίοις, τῷ πο-
 ταμῷ πλησιάζουσα καὶ αὕτῃ· τὴν δ’ ἀνὰ μέσον ποτα-
 μίαν εἶχον Περραιβοί. Ὀρθὴν δὲ τινὲς τὴν ἀκρόπολιν 25
 τῶν Φαλανναίων εἰρήκασιν· ἡ δὲ Φάλαννα Περραι-
 βικὴ πόλις πρὸς τῷ Πηνειῷ πλησίον τῶν Τεμπῶν. οἱ
 μὲν οὖν Περραιβοὶ καταδυναστευθέντες ὑπὸ τῶν Λα-
 πιθῶν εἰς τὴν ὀρεινὴν ἀπανέστησαν οἱ πλείους τὴν
 περὶ Πίνδον καὶ Ἀθαμᾶνας καὶ Δόλοπας, τὴν δὲ χώραν 30

14. post ἐκείνους: εἰς τὴν ἐν τῇ μεσογαίᾳ ποταμίαν

- καὶ τοὺς ὑπολειφθέντας τῶν Περραιβῶν κατέσχον Λα-
 ρισαῖοι, πλησίον μὲν οἰκοῦντες τοῦ Πηνειοῦ, γαιτνιδῶν-
 τες δ' ἐκείνοις, νεμόμενοι δὲ τὰ εὐδαιμονέστατα μέρη
 τῶν πεδίων, πλὴν εἴ τι σφόδρα κοῖλον πρὸς τῇ λίμνῃ
 5 τῇ Νεσσωνίδι, εἰς ἣν ὑπερκλύζων ὁ ποταμὸς ἀφηρεῖτό
 τι τῆς ἀροσίμου τοὺς Λαρισαίους· ἀλλ' ὕστερον παρα-
 χόμασιν ἐπηνώρθωσαν Λαρισαῖοι. οὗτοι δ' οὖν κα-
 τεῦχον τέως τὴν Περραιβίαν καὶ φόρους ἐπράττοντο,
 ἕως Φίλιππος κατέστη κύριος τῶν τόπων. Λάρισα δ'
 10 ἐστὶ καὶ ἐν τῇ Ὀσση χωρίον· καὶ ἡ Κρεμαστή, ὑπό τι-
 νων δὲ Πελασγία λεγομένη· καὶ ἐν τῇ Κρήτῃ πόλις ἡ
 νῦν εἰς Ἱεράπυτταν συνοικισθεῖσα, ἀφ' ἧς καὶ τὸ ὑπο-
 κείμενον πεδῖον νῦν Λαρίσιον καλεῖται· καὶ ἐν Πελο-
 ποννήσῳ ἡ τε τῶν Ἀργείων ἄκρα καὶ ὁ τὴν Ἥλειαν ἀπὸ
 15 Δύμης διορίζων Λάρισος ποταμός. Θεόπομπος δὲ καὶ
 πόλιν λέγει ἐν τῇ αὐτῇ μεθορίᾳ κειμένην Λάρισαν· καὶ
 ἐν τῇ Ἀσίᾳ ἡ τε Φρικωνὶς ἡ περὶ τὴν Κύμην καὶ ἡ κατὰ
 Ἀμαξιτὸν τῆς Τρωάδος· καὶ ἡ Ἐφεσία Λάρισά ἐστι καὶ
 ἐν Συρίᾳ· τῆς δὲ Μιτυλήνης ἀπὸ πεντήκοντα σταδίων
 20 εἰς Λαρισαῖαι πέτραι κατὰ τὴν ἐπὶ Μηθύμνης ὁδόν·
 καὶ ἐν τῇ Ἀττικῇ δ' ἐστὶ Λάρισα· καὶ τῶν Τράλλεων
 διέχουσα κόμῃ τριάκοντα σταδίους ὑπὲρ τῆς πόλεως
 ἐπὶ Καῦστρου πεδῖον διὰ τῆς Μεσσηνίδος ἰόντων κατὰ
 τὸ τῆς Ἰσοδρόμης Μητρὸς ἱερὸν, ὁμοίαν τὴν θέσιν καὶ
 25 τὴν ἀρετὴν ἔχουσα τῇ Κρεμαστῇ Λαρίσῃ· καὶ γὰρ εὐ-
 υδρὸς καὶ ἀμπελόφυτος· ἴσως δὲ καὶ ὁ Λαρίσιος Ζεὺς
 ἐκεῖθεν ἐπωνόμασται· καὶ ἐν τοῖς ἀριστεροῖς δὲ τοῦ
 Πόντου κόμῃ τις καλεῖται Λάρισα μετὰ ξὺν Ναυλόχου
 καὶ Ὀδησσοῦ] πλησίον τῶν ἄκρων τοῦ Ἀἰμου.
- 30 Καὶ Ὀλοσσῶν δὲ λευκὴ προσαγορευθεῖσα ἀπὸ
 τοῦ λευκάργιλος εἶναι, καὶ Ἡλώνῃ Περραιβικαὶ πόλεις,
 καὶ Γόννος. ἡ δ' Ἡλώνῃ μετέβαλε τοῦνομα Λειμώνῃ

μετονομασθεῖσα· κατέσκαπται δὲ νῦν· ἄμφω δ' ὑπὸ
C.441 τῷ Ὀλύμπῳ κεύνται οὐ πολὺ ἄπωθεν τοῦ Εὐρώπου
ποταμοῦ, ὃν ὁ ποιητὴς Τιταρήσιον καλεῖ.

- 20 Λέγει δὲ καὶ περὶ τούτου καὶ περὶ τῶν Περραιβῶν
ἐν τοῖς ἐξῆς ὁ ποιητὴς ὅταν φῇ „Γουνεὺς δ' ἐκ Κύφου 5
„ἦγε δὺω καὶ εἴκοσι νῆας. τῷ δ' Ἐνιῆνες ἔποντο με-
„νεπτόλεμοί τε Περραιβοί, οἱ περὶ Δωδώνην δυσχείμε-
„ρον οἰκί' ἔθεντο, [οἷ τ'] ἄμφ' ἱμερτὸν Τιταρήσιον
„ἔργ' ἐνέμοντο.“ λέγει μὲν οὖν τούτους τοὺς τόπους
τῶν Περραιβῶν, ἀπὸ μέρους τῆς Ἑστιάϊτιδος ἐπειλη- 10
φότας· ἦσαν δὲ καὶ ὑπὸ τῷ Πολυποίτῃ ἐκ μέρους Περ-
ραιβικαί, τοῖς μέντοι Λαπίθαις προσένειμε διὰ τὸ ἀνα-
μιξ οἰκεῖν καὶ τὰ μὲν πεδία κατέχειν τοὺς Λαπίθας καὶ
τὸ ἐνταῦθα Περραιβικὸν ὑπὸ τούτοις τετάχθαι ὥς ἐπὶ
πλέον, τὰ δ' ὀρεινότερα χωρία πρὸς τῷ Ὀλύμπῳ καὶ 15
τοῖς Τέμπεσι τοὺς Περραιβοὺς, καθάπερ τὸν Κύφον
καὶ τὴν Δωδώνην καὶ τὰ περὶ τὸν Τιταρήσιον, ὃς ἐξ
ὄρους Τιταρίου συμφυοῦς τῷ Ὀλύμπῳ ῥέων εἰς τὰ
πλησίον τῶν Τεμπῶν χωρία τῆς Περραιβίας αὐτοῦ που
τὰς συμβολὰς ποιεῖται πρὸς τὸν Πηνειόν. τὸ μὲν οὖν 20
τοῦ Πηνειοῦ καθαρὸν ἔστιν ὕδωρ, τὸ δὲ τοῦ Τιταρη-
σίου λιπαρὸν ἐκ τινος ὕλης ὥστ' οὐ συμμίσγεται „ἀλλὰ
„τέ μιν καθύπερθεν ἐπιτρέχει ἡύτ' ἔλαιον.“ διὰ δὲ τὸ
ἀναμιξ οἰκεῖν Σιμωνίδης Περραιβοὺς καὶ Λαπίθας κα-
λεῖ τοὺς Πελασγίωτας ἅπαντας, τοὺς τὰ ἐϋῶ κατέχον- 25
τας τὰ περὶ Γυρτώνα καὶ τὰς ἐκβολὰς τοῦ Πηνειοῦ καὶ
Οσσαν καὶ Πήλιον καὶ τὰ περὶ Δημητριάδα καὶ τὰ ἐν
τῷ πεδίῳ, Λάρισαν Κραννώνα Σκοτοῦσσαν Μόψιον
Ατράκα, καὶ τὰ περὶ τὴν Νεσσωνίδα λίμνην καὶ [τὴν]
Βοιβηίδα· ὧν ὁ ποιητὴς ὀλίγων μέμνηται διὰ τὸ μὴ οἰ- 30
κισθῆναι πῶ τἄλλα ἢ φανύλως οἰκισθῆναι διὰ τοὺς κα-
τακλυσμοὺς ἄλλοτ' ἄλλους γινομένους· ἐπεὶ οὐδὲ τῆς

Νεσσωνίδος μέμνηται λίμνης, ἀλλὰ τῆς Βοιβηίδος μόνον πολὺ ἐλάττονος οὔσης, ταύτης δὲ μόνης μενούσης, ἐκείνης δὲ ὡς εἰκὸς τοτὲ μὲν πληρουμένης ἀτάκτως, τοτὲ δ' ἐκλειπομένης. τῆς δὲ Σκοτούσσης ἐμνή-
 5 σθημεν καὶ ἐν τοῖς περὶ Δωδώνης λόγοις καὶ τοῦ μαντείου τοῦ ἐν Θετταλίᾳ, διότι περὶ τοῦτον ὑπῆρξε τὸν τόπον. ἔστι δ' ἐν τῇ Σκοτούσσει χωρίον τι Κυνὸς κεφαλαὶ καλούμενον, περὶ ὃ Ῥωμαῖοι μετ' Αἰτωλῶν καὶ Τίτος Κοῖντιος ἐνίκων μάχῃ μεγάλη Φίλιππον τὸν Δη-
 10 μητρίου, Μακεδόνων βασιλέα.

Πέπονθε δέ τι τοιοῦτο καὶ ἡ Μαγνητὶς· κατη- 21
 ριθμυμένων γὰρ ἤδη πολλῶν αὐτῆς τόπων οὐδένας τούτων ὠνόμακε Μάγνητας Ὀμηρος, ἀλλ' ἐκείνους 0.442
 μόνους οὓς τυφλῶς καὶ οὐ γνωρίμως διασαφεῖ „οἱ περὶ
 15 „Πηνειὸν καὶ Πήλιον εἰνοσίφυλλον ναίεσκον.“ ἀλλὰ μὴν περὶ τὸν Πηνειὸν καὶ τὸ Πήλιον οἰκοῦσι καὶ οἱ τὴν Γυρτῶνα ἔχοντες, οὓς ἤδη κατέλεξε, καὶ τὸ Ὀρμένιον καὶ ἄλλοι πλείους, καὶ ἔτι ἀπατέρω τοῦ Πηλίου ὅμως Μάγνητες ἦσαν ἀρξάμενοι ἀπὸ τῶν ὑπ' Εὐμήλῳ,
 20 κατὰ γε τοὺς ὕστερον ἀνθρώπους. εἰκάσιν οὖν διὰ τὰς συνεχεῖς μεταστάσεις καὶ ἐξαλλάξεις τῶν πολιτειῶν καὶ ἐπιμῖξεις συγγεῖν καὶ τὰ ὀνόματα καὶ τὰ ἔθνη, ὥστε τοῖς νῦν ἔσθ' ὅτε ἀπορίαν παρέρχειν, καθάπερ τοῦτο τὸ πρῶτον μὲν ἐπὶ Κραννῶνος καὶ τῆς Γυρτῶνος γεγέ-
 25 νηται. τοὺς μὲν γὰρ Γυρτωνίους Φλεγύας πρότερον ἐκάλουν ἀπὸ Φλεγύου τοῦ Ἰξίονος ἀδελφοῦ, τοὺς δὲ Κραννωνίους Ἐφύρους, ὥστε διαπορεῖν, ὅταν φῇ ὁ ποιητὴς „τῶ μὲν ἄρ' ἐκ Θρήκης Ἐφύρους μετὰ θω-
 „ρήσσοντο ἡ μετὰ Φλεγύας μεγαλήτορας,“ τίνας ποτὲ
 30 βούλεται λέγειν· ἔπειτα τοῦτο καὶ ἐπὶ τῶν Πεορραιβῶν 22 καὶ τῶν Αἰνιάνων συνέβη· Ὀμηρος μὲν γὰρ συνέξευ-
 ξεν αὐτοὺς ὡς πλησίον ἀλλήλων οἰκοῦντας· καὶ δὴ
 15*

καὶ λέγεται ὑπὸ τῶν ὕστερον ἐπὶ χρόνον συχνὸν ἢ οἰκησας τῶν Αἰνιάνων ἐν τῷ Δωτίῳ γενέσθαι πεδίῳ, τοῦτο δ' ἐστὶ πλησίον τῆς ἄρτι λεχθείσης Περραιβίας καὶ τῆς Ὀσσης καὶ ἔτι τῆς Βοιβηίδος λίμνης, ἐν μέσῃ μὲν πως τῇ Θετταλίᾳ λόφοις δὲ ἰδίῳις περικλειόμενον, 5 περὶ οὗ Ἡσίοδος οὕτως εἴρηκεν „ἢ οἷη Διδύμους λε- „ροὺς ναίουσα κολωνοὺς Δωτίῳ ἐν πεδίῳ, πολυβό- „τρους ἄντ' Ἀμύριοι, νύφατο Βοιβιάδος λίμνης πόδα „παρθένος ἁδμής.“ οἱ μὲν οὖν Αἰνιᾶνες οἱ πλείους εἰς τὴν Οἰτην ἐξηλάθησαν ὑπὸ τῶν Λαπιθῶν, κἀνταῦθα 10 δὲ ἐδυνάστευσαν ἀφελόμενοι τῶν τε Δωριέων τινὰ μέρη καὶ τῶν Μαλιέων μέχρι Ἡρακλείας καὶ Ἐχίνου, τινὲς δ' αὐτῶν ἔμειναν περὶ Κύφον, Περραιβικὸν ὄρος ὁμώνυμον κατοικίαν ἔχον. οἱ δὲ Περραιβοὶ τινὲς μὲν συσταλέντες περὶ τὰ ἐσπέρια τοῦ Ὀλύμπου μέρη κατέ- 15 μενον αὐτόθι πρόσχωροι ὄντες Μακεδόσι, τὸ δὲ πολὺ μέρος εἰς τὰ περὶ τὴν Ἀθαμανίαν ὄρη καὶ τὴν Πίνδον ἐξέπεσε· νυνὶ δὲ μικρὸν ἢ οὐδὲν αὐτῶν ἔχνος σώζεται. τοὺς δ' οὖν ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λεχθέντας Μάγνητας ὑστάτους ἐν τῷ Θετταλικῷ καταλόγῳ νομιστέον τοὺς 20 0.443 ἐντὸς τῶν Τεμπῶν ἀπὸ τοῦ Πηνειοῦ καὶ τῆς Ὀσσης ἕως Πηλίου, Μακεδόνων τοῖς Περιώταις ὁμόρους τοῖς ἔχουσι τὴν τοῦ Πηνειοῦ περαιάν μέχρι τῆς θαλάττης. τὸ μὲν οὖν Ὀμόλιον ἢ τὴν Ὀμόλην (λέγεται γὰρ ἀμφο- 25 τέρως) ἀποδοτέον αὐτοῖς· εἴρηται δ' ἐν τοῖς Μακεδο- νικοῖς ὅτι ἐστὶ πρὸς τῇ Ὀσση κατὰ τὴν ἀρχὴν τῆς τοῦ Πηνειοῦ διὰ τῶν Τεμπῶν διεκβολῆς. εἰ δὲ καὶ μέχρι τῆς παραλλῆς προἰτέον τῆς ἐγγυτάτῳ τοῦ Ὀμολίου, λό- 30 γον ἔχει ὥστε [καὶ] τὸν Ῥίξοῦντα προσνέμειν καὶ Ἐρμυνὰς ἐν τῇ ὑπὸ Φιλοκτήτῃ παραλλῇ κειμένας καὶ τῇ 30 ὑπὸ Εὐμήλῳ. τοῦτο μὲν οὖν ἐν ἀσαφεὶ κείσθω. καὶ ἡ τάξις δὲ τῶν ἐφεξῆς τόπων μέχρι Πηνειοῦ οὐ διαφα-

νῶς λέγεται, ἀδόξων δ' ὄντων τῶν τόπων οὐδ' ἡμῖν
 περὶ πολλοῦ θετέον. ἡ μέντοι Σηπιάς ἀκτὴ καὶ τετραγώ-
 δηται μετὰ ταῦτα καὶ ἐξύμνηται διὰ τον ἐνταῦθα ἀφα-
 νισμόν τοῦ Περσικοῦ στόλου· ἔστι δ' αὕτη μὲν ἀκτὴ
 5 πετρώδης, μεταξὺ δ' αὐτῆς καὶ Κασθαναΐας κώμης
 ὑπὸ τῷ Πηλίου κειμένης αἰγιαλός ἐστιν, ἐν ᾧ ὁ Ξέρξου
 στόλος ναυλοχῶν ἀπηλιώτου πολλοῦ πνεύσαντος ὁ
 μὲν εὐθύς αὐτοῦ πρὸς τὸ ξηρὸν ἐξώκειλε καὶ διελύθη
 παραχρῆμα, ὁ δ' εἰς Ἴπνους τόπον τραχὺν τῶν περὶ τὸ
 10 Πήλιον παρενεχθεὶς ὁ δ' εἰς Μελίβοιαν ὁ δ' εἰς τὴν
 Κασθαναΐαν διεφθάρη. τραχὺς δ' ἐστὶν ὁ παράπλους
 πᾶς ὁ τοῦ Πηλίου ὅσον σταδίων ὀρδοήκοντα· τοσοῦ-
 τος δ' ἐστὶ καὶ τοιοῦτος καὶ ὁ τῆς Ὀσσης. μεταξὺ δὲ
 κόλπος σταδίων πλείονων ἢ διακοσίων, ἐν ᾧ ἡ Μελί-
 15 βοια. ὁ δὲ πᾶς ἀπὸ Ἀημητριάδος ἐγκολπιζοντι ἐπὶ τὸν
 Πηνειὸν μεῖζων τῶν χιλίων, [ἀπὸ δὲ Σπε]ρχεῖου καὶ
 ἄλλων ὀκτακοσίων, ἀπὸ δὲ Εὐρύππου δις χιλίων τριακο-
 σίων πεντήκοντα. Ἰερώννυμος δὲ τῆς πεδιάδος Θεττα-
 λίας καὶ Μαγνητιδος τὸν κύκλον τρισχιλίων ἀποφαί-
 20 νεται σταδίων, ᾧ κῆσθαι δ' ὑπὸ Πελασγῶν, ἐξελαθῆ-
 ναι δὲ τούτους εἰς τὴν Ἰταλίαν ὑπὸ Λαπιθῶν· εἶναι δὲ
 τὸ νῦν καλούμενον Πελασγικὸν πεδίον, ἐν [ᾧ] Λάρισα
 καὶ Γυρτώνη καὶ Φεραί καὶ Μόψιον καὶ Βοιβῆς καὶ
 Ὀσσα καὶ Ὀμόλη καὶ Πήλιον καὶ Μαγνητῆς· Μόψιον
 25 δ' ὠνόμασται οὐκ ἀπὸ Μόψου τοῦ Μαντοῦς τῆς Τει-
 ρεσίου, ἀλλ' ἀπὸ τοῦ Λαπίθου τοῦ συμπλεύσαντος
 τοῖς Ἀργοναύταις· ἄλλος δ' ἐστὶ Μόψοπος, ἀφ' οὗ ἡ
 Ἀττικὴ Μοψοπία.

Τὰ καθ' ἕκαστα μὲν ταῦτα περὶ Θετταλίας, καθ' 23
 30 ὅλου δ' ὅτι Πυρραία πρότερον ἐκαλεῖτο ἀπὸ Πύρρας
 τῆς Δευκαλίωνος γυναικός, Αἰμονία δὲ ἀπὸ Αἰμονος,
 Θετταλία δὲ ἀπὸ Θετταλοῦ τοῦ Αἰμονος. ἔνιοι δὲ διε-

λόντες δίχα τὴν μὲν πρὸς νότον λαχεῖν φασὶ Λευκα-
λίῳ καὶ καλέσαι Πανδώραν ἀπὸ τῆς μητρός, τὴν δ'
C.444 ἑτέραν Αἴμονι, ἅφ' οὗ Αἴμονιαν λεχθῆναι· μετωνο-
μάσθαι δὲ τὴν μὲν Ἑλλάδα ἀπὸ Ἑλληνος τοῦ Λευκα-
λίῳ, τὴν δὲ Θετταλίαν ἀπὸ τοῦ υἱοῦ Αἴμονος· τινὲς 5
δὲ ἀπὸ Ἐφύρας τῆς Θεσπρωτίδος ἀπογόνους Ἀντίφου
καὶ Φειδίππου, τῶν Θετταλοῦ τοῦ Ἡρακλέους, ἐπελθόν-
τας ἀπὸ Θετταλοῦ τοῦ ἐαυτῶν προγόνου τὴν χώραν
ὀνομάσαι. εἴρηται] δὲ καὶ Νεσσωνὶς ὀνομασθῆναι ποτε
ἀπὸ Νέσσωνος τοῦ Θετταλοῦ, καθάπερ καὶ ἡ λίμνη. 10

— I —

1 Ἐπεὶ δὲ ἡ Εὐβοία παρὰ πᾶσαν τὴν παραλίαν ταύ-
την παραβέβληται τὴν ἀπὸ Σουνίου μέχρι Θετταλίας,
πλὴν τῶν ἄκρων ἑκατέρωθεν, οἰκεῖον ἂν εἴη συνάψαι 15
τοῖς εἰρημένοις τὰ περὶ τὴν νῆσον, εἰδ' οὕτω μεταβῆ-
ναι πρὸς τε τὰ Αἰτωλικά καὶ τὰ Ἀκαρνανικά, ἅπερ
λοιπὰ ἐστὶ τῶν τῆς Εὐρώπης μερῶν.

2 Παραμῆκης μὲν τοίνυν ἐστὶν ἡ νῆσος ἐπὶ χιλίους
σχεδὸν τι καὶ διακοσίους σταδίους ἀπὸ Κηναίου πρὸς 20
Γεραιστόν, τὸ δὲ πλάτος ἀνώμαλος, κατὰ δὲ τὸ πλεόν
ὅσον πεντήκοντα καὶ ἑκατὸν σταδίων. τὸ μὲν οὖν Κή-
ναιον ἔστι κατὰ Θερμοπύλας καὶ τὰ ἔξω Θερμοπυλῶν
ἐπ' ὀλίγον, Γεραιστὸς δὲ καὶ Πεταλία πρὸς Σουνίῳ.
γίνεται οὖν ἀντίπορθμος τῇ τε Ἀττικῇ καὶ Βοιωτίᾳ καὶ 25
Λοκρίδι καὶ τοῖς Μαλιεῦσι. διὰ δὲ τὴν στενότητα καὶ
τὸ λεχθὲν μῆκος ὑπὸ τῶν παλαιῶν Μάκρις ὀνομάσθη.
C.445 συνάπτει δὲ τῇ ἡπείρῳ κατὰ Χαλκίδα μάλιστα, κυρτὴ
προπίπτουσα πρὸς τοὺς κατὰ τὴν Αὐλίδαν τόπους τῆς
Βοιωτίας καὶ ποιούσα τὸν Εὐρίπον, περὶ οὗ διὰ πλει- 30
όνων εἰρήκαμεν, σχεδὸν δέ τι καὶ περὶ τῶν ἀντιπόρθ-
μων ἀλλήλοις τόπων κατὰ τε τὴν ἡπείρον καὶ κατὰ

τὴν νῆσον ἔφ' ἐκάτερα τοῦ Εὐρύπου, τὰ τε ἐντὸς καὶ τὰ ἐκτός. εἰ δέ τι ἐλλέλειπται, νῦν προσδιασαφήσομεν. καὶ πρῶτον, ὅτι τῆς Εὐβοίας τὰ Κοῖλα λέγουσι τὰ μεταξὺ Αὐλίδος καὶ τῶν περὶ Γεραιστὸν τόπων· κολ-
 5 ποῦται γὰρ ἡ παραλία, πλησιάζουσα δὲ τῇ Χαλκίδι κυρτοῦται πάλιν πρὸς τὴν ἡπειρον.

Οὐ μόνον δὲ Μάκρις ἐκλήθη ἡ νῆσος, ἀλλὰ καὶ 3
 Ἀβαντίς. Εὐβοίαν γοῦν εἰπὼν ὁ ποιητὴς τοὺς ἀπ' αὐ-
 τῆς Εὐβοίας οὐδέποτε εἴρηκεν, ἀλλ' Ἀβαντας αἰεὶ „οἱ δ'
 10 „Εὐβοίαν ἔχον μένεα πνεύοντες Ἀβαντες.“ „τῷ δ' ἄμ'
 „Ἀβαντες ἔποντο.“ φησὶ δ' Ἀριστοτέλης ἐξ Ἀβας τῆς
 Φωκιῆς Θοῤῃκας ὀρμηθέντας ἐποικῆσαι τὴν νῆσον καὶ
 ἐπονομάσαι Ἀβαντας τοὺς ἔχοντας αὐτήν· οἱ δ' ἀπὸ
 ἡρώος φασι, καθάπερ καὶ Εὐβοίαν ἀπὸ ἡρωίνης. τάχα
 15 δ' ὥσπερ βοὸς αὐλὴ λέγεται τι ἄντρον ἐν τῇ πρὸς [τὸν]
 Αἰγαῖον τετραμμένη παραλία, ὅπου τὴν Ἰώ φασι τεκεῖν
 Ἐπαφον, καὶ ἡ νῆσος ἀπὸ τῆς αὐτῆς αἰτίας ἔσχε τοῦτο
 τοῦνομα. καὶ Ὀχη δὲ ἐκαλεῖτο ἡ νῆσος, καὶ ἔστιν ὁμώ-
 νυμον αὐτῇ τὸ μέγιστον τῶν ἐνταῦθα ὄρων. καὶ Ἐλ-
 20 λοπία δ' ὠνομάσθη ἀπὸ Ἑλλοπος τοῦ Ἰωνος· οἱ δὲ Ἀλ-
 κλον καὶ Κόθου ἀδελφόν φασιν, ὃς καὶ τὴν Ἑλλοπίαν
 κτίσαι λεγεται, χωρίον ἐν τῇ Ὠρεῖᾳ καλουμένη τῆς
 Ἰστιαιώτιδος πρὸς τῷ Τελεθρίῳ ὄρει, καὶ τὴν Ἰστίαίαν
 προσκτῆσασθαι καὶ τὴν πεδιάδα καὶ Κήρινθον καὶ Αἰ-
 25 δηψὸν καὶ Ὀροβίας, ἐν ᾧ μαντεῖον ἦν ἀψευδέστατον·
 ἦν δὲ μαντεῖον τοῦ Σελινουντίου Ἀπόλλωνος· μετῴ-
 κησαν δ' εἰς τὴν Ἰστίαίαν οἱ Ἑλλοπιεῖς, καὶ ἠΰξησαν
 τὴν πόλιν Φιλισιτίδου τοῦ τυράννου βιασαμένου μετα-
 τὰ Λευκτρικά. Δημοσθένης δ' ὑπὸ Φιλίππου κατα-
 30 σταθῆναι τύραννόν φησι καὶ τῶν Ὠρειτῶν τὸν Φιλι-

στιδην· οὕτω γὰρ ὠνομασθησαν ὕστερον οἱ Ἰστιαί-
 εῖς, καὶ ἡ πόλις ἀντὶ Ἰστιαίας Ὠρεός· ἔνιοι δ' ὑπ' Ἀθη-
 ναίων ἀποικισθῆναί φασι τὴν Ἰστιαίαν ἀπὸ τοῦ δήμου
 τοῦ Ἰστιαίων, ὡς καὶ ἀπὸ τοῦ Ἑρετριέων τὴν Ἑρέ-
 τριαν. Θεόπομπος δὲ φησι Περικλέους χειρουμένου 5
 Εὐβοίαν τοὺς Ἰστιαεῖς καθ' ὁμολογίας εἰς Μακεδονίαν
 μεταστῆναι, δισχιλλίους δ' ἐξ Ἀθηναίων ἐλθόντας τὸν
 Ὠρεὸν οἰκῆσαι, δῆμον ὄντα πρότερον τῶν Ἰστιαίων.

4 κεῖται δ' ὑπὸ τῷ Τελεθρίῳ ὄρει ἐν τῷ Δρυμῷ κα-
 C.446λουμένῳ παρὰ τὸν Κάλλαντα ποταμὸν ἐπὶ πέτρας 10
 ὑψηλῆς, ὥστε τάχα καὶ διὰ τὸ τοὺς Ἑλλοπιεῖς ὄρειους
 εἶναι τοὺς προοικήσαντας ἐτέθη τοῦνομα τοῦτο τῇ πό-
 λει· δοκεῖ δὲ καὶ ὁ Ὠρίων ἐνταῦθα τραφεῖς οὕτως ὀνο-
 μασθῆναι· ἔνιοι δὲ τοὺς Ὠρεῖτας πόλιν ἔχοντας ἰδίαν
 φασὶ πολεμουμένους ὑπὸ τῶν Ἑλλοπιέων μεταβῆναι 15
 καὶ συνοικῆσαι τοῖς Ἰστιαιεῦσι, μίαν δὲ γεννηθεῖσαν πό-
 λιν ἀμφοτέροις χρήσασθαι τοῖς ὀνόμασι, καθάπερ Λα-
 κεδαίμων τε καὶ Σπάρτη ἡ αὐτή. εἴρηται δ' ὅτι καὶ ἐν
 Θετταλίᾳ Ἰστιαιωτὶς ἀπὸ τῶν ἀνασπασθέντων ἐνθενδε
 ὑπὸ Περραιβῶν ὠνόμασται. 20

5 Ἐπεὶ δ' ἡ Ἑλλοπία τὴν ἀρχὴν ἀπὸ τῆς Ἰστιαίας
 καὶ τοῦ Ὠρεοῦ προσηγάγετο ἡμᾶς ποιήσασθαι, τὰ συν-
 εχῇ λέγωμεν τοῖς τόποις τούτοις. ἔστι δ' ἐν τῷ Ὠρεῷ
 τούτῳ τό τε Κήναιον πλησίον καὶ ἐπ' αὐτῷ τὸ Δίον καὶ
 Ἀθῆναι αἱ Διάδες, κτίσμα Ἀθηναίων, ὑπερκείμενον 25
 τοῦ ἐπὶ Κῦνον πορθμοῦ· ἐκ δὲ τοῦ Δίου Κάναι τῆς
 Αἰολίδος ἀπφκίσθησαν· ταῦτά τε δὴ τὰ χωρία περὶ
 τὴν Ἰστιαίαν ἔστι καὶ ἔτι Κήρινθος πολίδιον ἐπὶ τῇ θα-
 λάττῃ· ἐγγὺς δὲ Βούδορος ποταμὸς ὁμώνυμος τῷ κατὰ
 τὴν Σαλαμίνα ὄρει τῷ πρὸς τῇ Ἀττικῇ. 30

6 Κάρυστος δὲ ἔστιν ὑπὸ τῷ ὄρει τῇ Ὀχῃ· πλησίον
 δὲ τὰ Στύρα καὶ τὸ Μαρμάριον, ἐν ᾧ τὸ λατόμιον τῶν

Καρυστίων κίωνων, ἱερὸν ἔχον Ἀπόλλωνος Μαρμαρί-
 νου, ὃθεν διάπλους εἰς Ἀλὰς τὰς Ἀραφηνίδας. ἐν δὲ τῇ
 Καρύστῳ καὶ ἡ λίθος φύεται ἡ ξαινομένη καὶ ὑφαινο-
 μένη, ὥστε τὰ ὕψη χειρόμακτρα γίνεσθαι, ὑπωθέντα
 5 δ' εἰς φλόγα βάλλεσθαι καὶ ἀποκαθαίρεσθαι τῇ πλύσει
 τῶν λίνων παραπλησίως· ᾠκίσθαι δὲ τὰ χωρία ταυτά
 φασιν ὑπὸ τῶν ἐκ τετραπόλεως τῆς περὶ Μαραθῶνα καὶ
 Στειριέων· κατεστράφη δὲ τὰ Στύρα ἐν τῷ Λαμιακῷ
 πολέμῳ ὑπὸ Φαίδρον τοῦ Ἀθηναίων στρατηγοῦ· τὴν
 10 δὲ χώραν ἔχουσιν Ἑρετριεῖς. Κάρυστος δὲ ἐστὶ καὶ ἐν
 τῇ Λακωνικῇ τόπος τῆς Αἴγνος πρὸς Ἀρκαδίαν, ἀφ'
 οὗ Καρύστιον οἶνον Ἀλκμὰν εἴρηκε.

Γεραιστὸς δ' ἐν μὲν τῷ καταλόγῳ τῶν νεῶν οὐκ 7
 εἴρηται, μέμνηται δ' ὁ ποιητὴς ὅμως αὐτοῦ „ἐς δὲ Γε-
 , 15 ραιστὸν ἐννύχιοι κατάγοντο,“ καὶ δημοὶ διότι τοῖς
 διαίρουσιν ἐκ τῆς Ἀσίας εἰς τὴν Ἀττικὴν ἐπικαιρίως
 κεῖται τῷ Σουνίῳ πλησιάζον τὸ χωρίον· ἔχει δ' ἱερὸν
 Ποσειδῶνος ἐπισημότατον τῶν ταύτῃ καὶ κατοικίαν
 ἀξιόλογον.

20 Μετὰ δὲ τὸν Γεραιστὸν Ἑρέτρια πόλις μεγίστη τῆς 8
 Εὐβοίας μετὰ Χαλκίδα, ἔπειθ' ἡ Χαλκὶς μητρόπολις
 τῆς νήσου τρόπον τινά, ἐπ' αὐτῷ τῷ Εὐρείῳ ἰδρυ-
 μένη· ἀμφοτέραι δὲ πρὸ τῶν Τρωικῶν ὑπ' Ἀθηναίων 0.447
 ἐκτίσθαι λέγονται, καὶ μετὰ τὰ Τρωικά Ἀϊκλος καὶ Κό-
 25 θος ἐξ Ἀθηναίων ὀρμηθέντες ὁ μὲν τὴν Ἑρέτριαν ᾠκισε
 Κόθος δὲ τὴν Χαλκίδα· καὶ τῶν Αἰολέων δὲ τινες ἀπὸ
 τῆς Πενθίλου στρατιᾶς κατέμειναν ἐν τῇ νήσῳ, τὸ δὲ
 παλαιὸν καὶ Ἄραβες οἱ Κάδμῳ συνδιαβάντες. αἱ δ'
 οὖν πόλεις αὗται διαφερόντως αὐξηθεῖσαι καὶ ἀποι-
 30 κίας ἔστειλαν ἀξιολόγους εἰς Μακεδονίαν· Ἑρέτρια
 μὲν γὰρ συνᾠκισε τὰς περὶ Παλλήνην καὶ τὸν Ἄθω
 πόλεις, ἡ δὲ Χαλκὶς τὰς ὑπὸ Ὀλύνθῳ, ἃς Φίλιππος

διελυμήνατο. καὶ τῆς Ἰταλίας δὲ καὶ Σικελίας πολλὰ χωρία Χαλκιδέων ἐστίν· ἐστάλησαν δὲ αἱ ἀποικίαι αὐταί, καθάπερ εἰρηκεν Ἀριστοτέλης, ἥνικα ἡ τῶν Ἰπποβοτῶν καλουμένη ἐπεκράτει πολιτεία· προέστησαν γὰρ αὐτῆς ἀπὸ τιμημάτων ἄνδρες ἀριστοκρατικῶς ἄρχοντες. κατὰ δὲ τὴν Ἀλεξάνδρου διάβασιν καὶ τὸν περὶ βόλον τῆς πόλεως ᾗξῃσαν, ἐντὸς τείχους λαβόντες τὸν τε Κάνηθον καὶ τὸν Εὐρύπον, ἐπιστήσαντες τῇ γερύρᾳ πύργους καὶ πύλας καὶ τεῖχος.

- 9 Ὑπέρκειται δὲ τῆς τῶν Χαλκιδέων πόλεως τὸ Αἴ- 10
λαντον καλούμενον πεδίον. ἐν δὲ τούτῳ θερμοῦν τε ὑδάτων εἰσὶν ἐκβολαὶ πρὸς θεραπείαν νόσων εὐφυνεῖς, οἷς ἐχρήσατο καὶ Σύλλας Κορνήλιος ὁ τῶν Ῥωμαίων ἡγεμὼν· καὶ μέταλλον δ' ὑπῆρχε θαυμαστὸν χαλκοῦ καὶ σιδήρου κοινόν, ὅπερ οὐχ ἱστοροῦσιν ἄλλαχοῦ 15
συμβαῖνον· νυνὶ μέντοι ἀμφοτέρω ἐκκλείουπεν, [ὥσπερ καὶ Ἀθήνησι τὰργυρεῖα.] ἔστι δὲ καὶ ἅπασα μὲν ἡ Εὐβοία εὖσειστος, μάλιστα δ' ἡ περὶ τὸν πορθμόν, καὶ δεχομένη πνευμάτων ὑποφοράς, καθάπερ καὶ ἡ Βοιωτία καὶ ἄλλοι τόποι, περὶ ὧν ἐμνήσθημεν διὰ πλειόνων 20
πρότερον. ὑπὸ τοιοῦδε πάθους καὶ ἡ ὁμώνυμος τῇ νήσῳ πόλις καταποθῆναι λέγεται, ἣς μέμνηται καὶ Αἰσχύλος ἐν τῷ Ποντίῳ Γλαύκῳ „Εὐβοῖδα καμπτὴν ἀμφὶ „Κηναίου Διὸς ἀκτὴν, κατ' αὐτὸν τύμβον ἀθλίου „Αἶχα.“ Χαλκίς δ' ὁμωνύμως λέγεται καὶ ἐν Αἰτωλίᾳ 25
„Χαλκίδα τ' ἀργίαλον, Καλυδῶνά τε πετρήεσσιν,“ καὶ ἐν τῇ νῦν Ἠλείᾳ „βὰν δὲ παρὰ Κρουνοῦς καὶ Χαλκίδα πετρήεσσιν“ οἱ περὶ Τηλέμαχον ἀπιόντες παρὰ Νέστορος εἰς τὴν οἰκίαν.

- 10 Ἐρετρίαν δ' οἱ μὲν ἀπὸ Μακίστου τῆς Τριφυλίας 30
ἀποικισθῆναί φασιν ὑπ' Ἐρετριέως, οἱ δ' ἀπὸ τῆς Ἀθήνησιν Ἐρετρίας, ἣ νῦν ἐστὶν ἀγορά· ἔστι δὲ καὶ

- περὶ Φάρσαλον Ἐρέτρια, ἰερὰ τοῦ Ἀπόλλωνος. Ἀδμη-
του δ' ἰδρυμα λέγεται τὸ ἱερόν, παρ' ᾧ θητεῦσαι λέ-
γουσι τὸν θεὸν * αὐτόν. Μελανηὶς δ' ἐκαλεῖτο πρότε-
ρον ἢ Ἐρέτρια καὶ Ἀρότρια· ταύτης δ' ἐστὶ κώμη ἢ C.448
- 5 Ἀμάρυνθος ἄφ' ἑπτά σταδίων τοῦ τείχους. τὴν μὲν
οὖν ἀρχαίαν πόλιν κατέσκαψαν Πέρσαι, σαγηνεύσαν-
τες, ὥς φησιν Ἡρόδοτος, τοὺς ἀνθρώπους τῷ πλήθει,
περιχυθέντων τῶν βαρβάρων τῷ τείχει· καὶ δεικνύου-
σιν ἔτι τοὺς θεμελίους, καλοῦσι δὲ παλαιὰν Ἐρέ-
10 τριαν, ἣ δὲ νῦν ἐπέκτισται. τὴν δὲ δύναμιν τὴν Ἐρε-
τρίων ἦν ἔσχον ποτὲ μαρτυρεῖ ἡ στήλη, ἣν ἀνέθε-
σάν ποτε ἐν τῷ ἱερῷ τῆς Ἀμαρυνθίας Ἀρτέμιδος· γέ-
γραπται δ' ἐν αὐτῇ τρισχιλίοις μὲν ὀπλίταις ἑξακο-
σίοις δ' ἱππεῦσιν ἐξήκοντα δ' ἄρμασι ποιεῖν τὴν πομ-
15 πὴν· ἐπήρχον δὲ καὶ Ἀνδρίων καὶ Τηνίων καὶ Κείων
καὶ ἄλλων νήσων. ἐποίκους δ' ἔσχον ἀπ' Ἑλιδος, ἄφ'
οὗ καὶ τῷ γράμματι τῷ ῥῶ πολλῷ χρησάμενοι οὐκ ἐπὶ
τέλει μόνον τῶν δημάτων ἀλλὰ καὶ ἐν μέσῳ κεκωμῶ-
δηνται. ἐν δὲ τῇ Ἐρετρικῇ πόλιν ἦν Τάμνυαι πλησίον
20 τοῦ πορθμοῦ. ἔστι δὲ καὶ Οἰχαλία κώμη τῆς Ἐρετρι-
κῆς, λείψανον τῆς ἀναιρεθείσης πόλεως ὑπὸ Ἑρα-
κλέους, ὁμώνυμος τῇ Τραχινίᾳ καὶ τῇ περὶ Τρίκκην
καὶ τῇ Ἀρκαδικῇ, ἣν Ἀνδανίαν οἱ ὕστερον ἐκάλεσαν,
καὶ τῇ ἐν Αἰτωλίᾳ περὶ τοὺς Εὐρυτάνας.
- 25 Νυλὴ μὲν οὖν ὁμολογουμένως ἡ Χαλκὶς φέρεται 11
τὰ πρωτεῖα καὶ μητροπόλις αὕτη λέγεται τῶν Εὐβοέων,
δευτερεύει δ' ἡ Ἐρέτρια. ἀλλὰ καὶ πρότερον αὐταὶ
μέγα εἶχον ἀξίωμα καὶ πρὸς πόλεμον καὶ πρὸς εἰρήνην,
ὥστε καὶ φιλοσόφοις ἀνδράσι παρασχεῖν διαγωγὴν
30 ἥδειαν καὶ ἀθόρυβον. μαρτυρεῖ δ' ἡ τε τῶν Ἐρε-
τρικῶν φιλοσόφων σχολὴ τῶν περὶ Μενέδημον ἐν τῇ
Ἐρετρίᾳ γενομένη, καὶ ἔτι πρότερον ἢ Ἀριστοτέλους

ἐν τῇ Χαλκίδι διατριβή, ὅς γε κάκει κατέλυσε τὸν βίον.

- 12 Τὸ μὲν οὖν πλεον ὁμολόγουν ἀλλήλαις αἱ πόλεις αὐται, περὶ δὲ Ἀηλάντου διενεχθεῖσαι οὐδ' οὕτω τελέως ἐπαύσαντο ὥστ' ἐν τῷ πολέμῳ κατὰ αὐ- 5
θάδειαν δρᾶν ἕκαστα, ἀλλὰ συνέθεντο ἐφ' οἷς συστή-
σονται τὸν ἀγῶνα. δηλοῖ δὲ καὶ τοῦτο ἐν τῷ Ἀμαρυν-
θίῳ στήλῃ τις φράζουσα μὴ χρῆσθαι τηλεβόλοις.
- 13 Οἱ δ' Εὐβοεῖς ἀγαθοὶ πρὸς μάχην ὑπῆρξαν τὴν σταδίαν, ἣ καὶ συστάδην λέγεται καὶ ἐκ χειρός. δόρασι 10
δ' ἐχρῶντο τοῖς ὀρεκτοῖς, ὥς φησιν ὁ ποιητής „αἰχμη-
C.449, ταὶ μεμαῶτες ὀρεκτῇσι μελήησι θῶρηκας ῥήσσειν.“ ἀλλοίων Ἰσως ὄντων τῶν παλτῶν, οἷαν εἰκὸς εἶναι τὴν Πηλιάδα μελήν ἣν, ὥς φησιν ὁ ποιητής „οἶος ἐπί-
„στατο πῆλαι Ἀχιλλεύς“ καὶ ὁ εἰπὼν „δοῦρὶ δ' ἄκον- 15
„τίξω, ὅσον οὐκ ἄλλος τις ὀιστῶ“, τῷ παλτῷ λέγει δό-
ρατι. καὶ οἱ μονομαχοῦντες τοῖς παλτοῖς χρώμενοι δό-
ρασιν εἰσάγονται πρότερον, εἴτα ἐπὶ τὰ ξίφη βαδίζον-
τες· ἀγχέμαχοι δ' εἰσὶν οὐχ οἱ ξίφει χρώμενοι μόνον, ἀλλὰ καὶ δόρατι ἐκ χειρός, ὥς φησιν „οὔτησε ξυστῶ 20
„χαλκήρεϊ, λῦσε δὲ γυῖα.“ τοὺς μὲν οὖν Εὐβοέας τούτῳ τῷ τρόπῳ χρωμένους εἰσάγει, περὶ δὲ Λοκρῶν τὰναντία λέγει ὥς „οὗ σφιν σταδίας ὑσμίνης ἔργα μέμηλεν,
„ἀλλ' ἄρα τόξοισι καὶ ξυστροφῇ οἷος ἁώτῳ Ἴλιον εἰς
„ἄμ' ἔποντο.“ περιφέρεται δὲ καὶ χρησμός ἐκδοθεὶς 25

R. καὶ γὰρ δὴ καὶ τῶν πολεμικῶν ἐθνῶν καὶ ἔστιν οὗτ' ἣν ἔθος· ἀλλ' οἱ μὲν τη-
λεβολοὶς χρωνται, καθάπερ οἱ τοξόται καὶ οἱ σφενδονῆται καὶ οἱ ἀκοντισταί, οἱ δ' ἄλλοι ἐκ χειρός· τῷ ὀρεκτῷ χρώμενοι· δ' ἐκ χειρός ἢ δ' ὥς παλτοῖς, καθάπερ καὶ ὁ κοντὸς ἀμφοτέρως τὰς χρεῖας ἀποδίδωσι· καὶ γὰρ συστ' ἔδην καὶ κοντοβολούντων· ὅπερ καὶ ἡ σάρισσα δύναται καὶ ὁ ὑσσός.

Αἰγιεῦσιν „ἵππον Θεσσαλικόν, Λακεδαιμονίαν δὲ γυναικα, ἄνδρας θ' οἱ πίνουσιν ὕδωρ ἱερῆς Ἀρεθούσης,“ τοὺς Χαλκιδέας λέγων ὡς ἀρίστους· ἐκεῖ γὰρ ἡ Ἀρεθούσα.

- 5 Εἰσὶ δὲ νῦν Εὐβοῖται ποταμοὶ Κηρεὺς καὶ Νηλεύς, 14 ὧν ἅφ' οὗ μὲν πίνοντα τὰ πρόβατα λευκὰ γίνεται, ἅφ' οὗ δὲ μέλανα· καὶ περὶ τὸν Κραῖθιν δὲ εἴρηται τοιοῦτόν τι συμβαῖνον.

- Τῶν δ' ἐκ Τροίας ἐπανιόντων Εὐβοέων τινὲς εἰς 15 10 Ἰλλυριοὺς ἐκπεσόντες, ἀποβαίνοντες οἴκαδε διὰ τῆς Μακεδονίας περὶ Ἑδεσσαν ἔμειναν συμπολεμήσαντες τοῖς ὑποδεξαμένοις, καὶ ἔκτισαν πόλιν Εὐβοίαν· ἣν δὲ καὶ ἐν Σικελίᾳ Εὐβοία Χαλκιδέων τῶν ἐκεῖ κτίσμα, ἣν Γέλων ἐξανέστησε, καὶ ἐγένετο φρούριον Συρακου- 15 σίων· καὶ ἐν Κερκύρᾳ δὲ καὶ ἐν Αἴμνῳ τόπος ἦν Εὐβοία καὶ ἐν τῇ Ἀργείᾳ λόφος τις.

- Ἐπεὶ δὲ τοῖς Θετταλοῖς καὶ Οἰταίοις πρὸς ἑσπέραν 16 Αἰτωλοὶ καὶ Ἀκαρνανεὲς εἰσι καὶ Ἀθαμᾶνες, εἰ χρὴ καὶ τούτους Ἑλληνας εἰπεῖν, λοιπὸν ἐξηγήσασθαι περὶ τού- 20 των, ἵν' ἔχωμεν τὴν περίοδον ἅπασαν τὴν τῆς Ἑλλάδος· προσθεῖναι δὲ καὶ τὰς νήσους τὰς προσχώρους μάλιστα τῇ Ἑλλάδι καὶ οἰκουμένας ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων ὅσας μὴ περιωδεύκαμεν.

- Αἰτωλοὶ μὲν τοίνυν καὶ Ἀκαρνανεὲς ὁμοροῦσιν 2 25 ἀλλήλοις, μέσον ἔχοντες τὸν Ἀχελῶον ποταμὸν ῥέοντα ἀπὸ τῶν ἄρκτων καὶ τῆς Πίνδου πρὸς νότον διὰ τε Ἀργαίων Αἰτωλικοῦ ἔθνους καὶ Ἀμφιλόχων, Ἀκαρ- 0.450 νᾶνες μὲν τὸ πρὸς ἑσπέραν μέρος ἔχοντες τοῦ ποταμοῦ μέχρι τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου τοῦ κατὰ Ἀμφιλόχους 30 καὶ τὸ ἱερὸν τοῦ Ἀκτίου Ἀπόλλωνος, Αἰτωλοὶ δὲ τὸ πρὸς ἑω μέχρι τῶν Ὀξολῶν Λοκρῶν καὶ τοῦ Παρνασσοῦ καὶ τῶν Οἰταίων. ὑπέρκεινται δ' ἐν τῇ μεσογαίᾳ

καὶ τοῖς προσβορείοις μέρεσι τῶν μὲν Ἀκαρνάνων Ἀμφίλοχοι, τούτων δὲ Δόλοπες καὶ ἡ Πίνδος, τῶν δ' Αἰτωλῶν Περραιβοὶ τε καὶ Ἀθαμᾶνες καὶ Αἰνιάνων τι μέρος τῶν τὴν Οἰτην ἐχόντων· τὸ δὲ νότιον πλευρόν, τό τε Ἀκαρνανικὸν ὁμοίως καὶ τὸ Αἰτωλικόν, κλύζε-
ται τῇ ποιούσῃ θαλάττῃ τὸν Κορινθιακὸν κόλπον, εἰς
ὃν καὶ ὁ Ἀχελῷος ποταμὸς ἐξέησιν, ὀρίζων τὴν τῶν
Αἰτωλῶν παραλίαν καὶ τὴν Ἀκαρνανικὴν· ἐκαλεῖτο δὲ
Θόας ὁ Ἀχελῷος πρότερον. ἔστι δὲ καὶ ὁ παρὰ Δύμην
ὁμώνυμος τούτῳ, καθάπερ εἴρηται, καὶ ὁ περὶ Λάμειαν.
εἴρηται δὲ καὶ ὅτι ἀρχὴν τοῦ Κορινθιακοῦ κόλπου τὸ
στόμα τοῦδε τοῦ ποταμοῦ φασι.

- 2 Πόλεις δ' εἰσὶν ἐν μὲν τοῖς Ἀκαρνανῶσιν Ἀνακτόριον τε ἐπὶ χερρονήσου ἰδρυμένον Ἀκτίου πλησίον, ἐμ-
πόριον τῆς νῦν ἐκτισμένης ἐφ' ἡμῶν Νικοπόλεως, καὶ 15
Στράτος, ἀνάπλουν ἔχουσα τῷ Ἀχελῷῳ πλειόνων ἢ
διακοσίαν σταδίων, καὶ Οἰνειαῖδαι, καὶ αὐτὴ ἐπὶ τῷ πο-
ταμῷ, ἥ μὲν παλαιὰ οὐ κατοικουμένη, ἔσον ἀπέχουσα
τῆς τε θαλάττης καὶ τοῦ Στράτου, ἥ δὲ νῦν ὅσον ἐβδο-
μήκοντα σταδίους ὑπὲρ τῆς ἐκβολῆς διέχουσα· καὶ ἄλ- 20
λαι δ' εἰσὶ, Πάλαιρός τε καὶ Ἀλυζία καὶ Λευκάς καὶ Ἀρ-
γος τὸ Ἀμφιλοχικὸν καὶ Ἀμβρακία, αἷν αἱ πλεῖσται πε-
ριοικίδες γεγόνασιν ἢ καὶ πάσαι τῆς Νικοπόλεως· κεῖ-
ται δ' ὁ Στράτος κατὰ μέσσην τὴν ἐξ Ἀλυζίας ὁδὸν εἰς
Ἀνακτόριον.

25

- 3 Αἰτωλῶν δ' εἰσὶ Καλυδῶν τε καὶ Πλευρών, νῦν
μὲν τεταπεινωμένοι, τὸ δὲ παλαιὸν πρόσχημα τῆς
Ἑλλάδος ἦν ταῦτα τὰ κτίσματα. καὶ δὴ καὶ διηρησθαι
συνέβαινε δίχα τὴν Αἰτωλίαν, καὶ τὴν μὲν ἀρχαίαν λέ-
γεσθαι τὴν δ' ἐπίκτητον· ἀρχαίαν μὲν τὴν ἀπὸ τοῦ 30
Ἀχελῷου μέχρι Καλυδῶνος παραλίαν ἐπὶ πολὺ καὶ τῆς
μεσογαίας ἀνήκουσαν εὐκάρπου τε καὶ πεδιάδος, ἢ

ἔστι καὶ Στράτος καὶ τὸ Τριχώνιον ἀρίστην ἔχον γῆν·
ἐπικτήτου δὲ τὴν τοῖς Λοκροῖς συνάπτουσιν ὡς ἐπὶ
Ναύπακτον τε καὶ Εὐπάλιον, τραχυτέραν τε οὖσαν
καὶ λυπροτέραν, μέχρι τῆς Οἰταίας καὶ τῆς Ἀθαμάνων
5 καὶ τῶν ἐφεξῆς ἐπὶ τὴν ἄρκτον ἤδη περισταμένων
ὄρων τε καὶ ἔθνων.

Ἔχει δὲ καὶ ἡ Αἰτωλία ὄρος μέγιστον μὲν τὸν Κό- 4
ρακα, συνάπτουσα τῇ Οἰτῇ, τῶν δ' ἄλλων ἐν μέσῳ
μὲν μᾶλλον τὸν Ἀράκυνθον, περὶ ὃν τὴν νεωτέραν 0.451
10 Πλευρῶνα συνώκισαν ἀφέντες τὴν παλαιὰν ἐγγὺς κει-
μένην Καλυδῶνος οἱ οἰκήτορες, εὐκαρπον οὖσαν καὶ
πεδιάδα, πορθοῦντος τὴν χώραν Δημητρίου τοῦ ἐπι-
κληθέντος Αἰτωλικοῦ· ὑπὲρ δὲ τῆς Μολυκρείας Τα-
φιασσὸν καὶ Χαλκίδα, ὄρη ἱκανῶς ὑψηλά, ἐφ' οἷς πο-
15 λίχνια Ἰδρυτο Μακυνία τε καὶ Χαλκίς, ὁμώνυμος τῷ
ὄρει, ἣν καὶ Ἰπποχαλκίδα καλοῦσι· Κούριον δὲ πλη-
σίον τῆς παλαιᾶς Πλευρῶνος, ἀφ' οὗ τοὺς Πλευρω-
νίους Κουρητὰς ὀνομασθῆναί τινες ὑπέλαβον.

Ὁ δ' Εὐήνος ποταμὸς ἄρχεται μὲν ἐκ Βωμιέων 5
20 τῶν ἐν Ὀφειῦσιν Αἰτωλικῷ ἔθνει (καθάπερ καὶ οἱ Εὐ-
ρυτᾶνες καὶ Ἀργαῖοι καὶ Κουρητὰς καὶ ἄλλοι), ὅστις δ'
οὐ διὰ τῆς Κουρητικῆς κατ' ἀρχάς, ἥτις ἐστὶν ἡ αὐτὴ
τῇ Πλευρωνίᾳ, ἀλλὰ διὰ τῆς προσεφῆς μᾶλλον παρὰ
τὴν Χαλκίδα καὶ Καλυδῶνα· εἰτ' ἀνακάμψας ἐπὶ τὰ
25 τῆς Πλευρῶνος πεδία τῆς παλαιᾶς καὶ παραλλάξας εἰς
δύσιν ἐπιστρέφει πρὸς τὰς ἐκβολὰς καὶ τὴν μεσημ-
βρίαν· ἐκαλεῖτο δὲ Λυκόρμας πρότερον· καὶ ὁ Νέσσος
ἐνταῦθα λέγεται πορθμεὺς ἀποδεδειγμένος ὑφ' Ἡρα-
κλέους ἀποθανεῖν, ἐπεὶ δὲ πορθμεῶν τὴν Δηϊάνειραν
30 ἐπεχειρεῖ βιάσασθαι.

Καὶ Ὡλενον δὲ καὶ Πυλὴννῃν ὀνομάζει πόλεις ὁ 6
ποιητὴς Αἰτωλικᾶς, αἷν τὴν μὲν Ὡλενον ὁμωνύμως τῇ

Ἀχαϊκῇ λεγομένην Αἰολεῖς κατέσκαψαν, πλησίον οὖσαν τῆς νεωτέρας Πλευρωῶνος, τῆς δὲ χώρας ἡμφισβήτουν Ἀκαρυνᾶνες· τὴν δὲ Πυλὴν νην μετενέγκαντες εἰς τοὺς ἀνώτερον τόπους ἥλλαξαν αὐτῆς καὶ τοῦνομα Πρόσχιον καλέσαντες. Ἑλλάνικος δ' οὐδὲ τὴν περὶ ταύτας ἱστορίαν οἶδεν, ἀλλ' ὥς ἔτι καὶ αὐτῶν οὐσῶν ἐν τῇ ἀρχαίᾳ καταστάσει μέμνηται, τὰς δ' ὕστερον καὶ τῆς τῶν Ἡρακλειδῶν καθόδου κτισθείσας Μακυνίαν καὶ Μολύκρειαν ἐν ταῖς ἀρχαίαις καταλέγει, πλείστην εὐχέρειαν ἐπιδεικνύμενος ἐν πάσῃ σχεδὸν τι τῇ γραφῇ. 10

7 Καθόλου μὲν οὖν ταῦτα περὶ τῆς χώρας ἐστὶ τῆς τῶν Ἀκαρυνᾶνων καὶ τῶν Αἰτωλῶν, περὶ δὲ τῆς παραλίας καὶ τῶν προκειμένων νήσων ἔτι καὶ ταῦτα προσληπτέον· ἀπὸ γὰρ τοῦ στόματος ἀρξαμένοις τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου προῶτόν ἐστιν Ἀκαρυνᾶνων χωρίον τὸ 15 Ἄκτιον. ὁμωνύμως δὲ λέγεται τό τε ἱερὸν τοῦ Ἀκτίου Ἀπόλλωνος καὶ ἡ ἄκρα ἣ ποιοῦσα τὸ στόμα τοῦ κόλπου, ἔχουσα καὶ λιμένα ἐκτός. τοῦ δ' ἱεροῦ τετταράκοντα μὲν σταδίους ἀπέχει τὸ Ἀνακτόριον ἐν τῷ κόλπῳ ἰδρυμένον, διακοσίους δὲ καὶ τετταράκοντα ἡ Λευκάς. 20

8 Αὕτη δ' ἦν τὸ παλαιὸν μὲν χειρρόνησος τῆς Ἀκαρυνᾶνων γῆς, καλεῖ δ' ὁ ποιητὴς αὐτὴν ἄκτῃν ἡπίροιο, τὴν περὶ τὴν τῆς Ἰθάκης καὶ τῆς Κεφαλληνίας ἡπείρου καλῶν· αὕτη δ' ἐστὶν ἡ Ἀκαρνανία· ὥστε, ὅταν φῇ 0.452 ἄκτῃν ἡπίροιο, τῆς Ἀκαρνανίας ἄκτῃν δέχεσθαι δεῖ. 25 τῆς δὲ Λευκάδος ἢ τε Νήριτος, ἣν φησὶν ἐλεῖν ὁ Λαέρτης „ἢ μὲν Νήριτον εἶλον ἐνκτίμενον πτολίεθρον, „ἄκτῃν ἡπίροιο, Κεφαλλήνεςσιν ἀνάσσων,“ καὶ ἃς ἐν καταλόγῳ φησί „καὶ Κροκύλει' ἐνέμοντο καὶ Αἰγίλιπα „τροχηῖαν.“ Κορίνθιοι δὲ πεμφθέντες ὑπὸ Κυψέλου 30 καὶ Γόργου αὐτὴν τε κατέσχον τὴν ἄκτῃν καὶ μέχρι τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου προῆλθον, καὶ ἦ τε Ἀμβρακία

συνωκίσθη καὶ Ἀνακτόριον, καὶ τῆς χειρρονήσου διο-
 ρύξαντες τὸν ἰσθμὸν ἐποίησαν νῆσον τὴν Λευκάδα,
 καὶ μετενέγκαντες τὴν Νήριτον ἐπὶ τὸν τόπον, ὃς ἦν
 ποτὲ μὲν ἰσθμὸς νῦν δὲ πορθμὸς γεφύρα ζευκτός, με-
 5 τωνόμασαν Λευκάδα, ἐπώνυμον δοκῶ μοι τοῦ Λευ-
 κάτα· πέτρα γάρ ἐστι λευκὴ τὴν χροάν, προκειμένη
 τῆς Λευκάδος εἰς τὸ πέλαγος καὶ τὴν Κεφαλληνίαν, ὡς
 ἐντεῦθεν τοῦνομα λαβεῖν.

Ἔχει δὲ τὸ τοῦ Λευκάτα Ἀπόλλωνος ἱερὸν καὶ τὸ 9
 10 ἄλμα τὸ τοὺς ἔρωτας παύειν πεπιστευμένον· „οὗ δὴ λέ-
 „γεται πρώτη Σαπφώ“ ὥς φησιν ὁ Μένανδρος „τὸν
 „ὑπέροκμον θηρῶσα Φάων“ οἰστρῶντι πόθῳ ῥῆσαι
 „πέτρας ἀπὸ τηλεφانوῦς ἄλμα κατ' εὐχὴν σὴν, δέ-
 „σποτ' ἄναξ.“ ὁ μὲν οὖν Μένανδρος πρώτην ἀλέσθαι
 15 λέγει τὴν Σαπφώ, οἱ δ' ἔτι ἀρχαιολογικώτεροι Κέφα-
 λὸν φασιν ἐρασθέντα Πτερέλα τὸν Δηιονέως. ἦν δὲ
 καὶ πάτριον τοῖς Λευκαδίοις κατ' ἐνιαυτὸν ἐν τῇ θυσίᾳ
 τοῦ Ἀπόλλωνος ἀπὸ τῆς σκοπῆς ῥιπτεῖσθαι τινα τῶν
 ἐν αἰτίαις ὄντων ἀποτροπῆς χάριν, ἐξαπτομένων ἐξ
 20 αὐτοῦ παντοδαπῶν πτερῶν καὶ ὀρνέων ἀνακουφίζειν
 δυναμένων τῇ πτήσει τὸ ἄλμα, ὑποδέχεσθαι δὲ κάτω
 μικραῖς ἀλιάσι κύκλῳ περιεστῶτας πολλοὺς καὶ περι-
 σῶζειν εἰς δύναμιν τῶν ὄρων ἕξω τὸν ἀναληφθέντα.

Ὁ δὲ τὴν Ἀλκμαιονίδα γράψας, Ἰκαρίου τοῦ Πη-
 25 νελόπης πατρὸς υἱεῖς γενέσθαι δύο, Ἀλυξία καὶ Λευ-
 κάδιον, δυναστεῦσαι δ' ἐν τῇ Ἀκαρνανίᾳ τούτους μετὰ
 τοῦ πατρὸς· τούτων οὖν ἐπωνύμους τὰς πόλεις Ἐφο-
 ρος λέγεσθαι δοκεῖ.

Κεφαλλῆνας δὲ νῦν μὲν τοὺς ἐκ τῆς νήσου τῆς 10
 30 Κεφαλληνίας λέγουσιν, Ὅμηρος δὲ πάντας τοὺς ὑπὸ
 τῷ Ὀδυσσεῖ, ὧν εἰσὶ καὶ οἱ Ἀκαρνανεῖς· εἰπὼν γάρ
 „αὐτὰρ Ὀδυσσεὺς ἦγε Κεφαλλῆνας, οἳ δ' Ἰθάκην εἶχον

„καὶ Νήριτον εἰνοσίφυλλον“ (τὸ ἐν ταύτῃ ὄρος ἐπιφα-
 C.453 νές, ὡς καὶ „οἱ δ' ἐκ Δουλιχίου Ἐχινάων θ' ἱερῶν“
 καὶ αὐτοῦ τοῦ Δουλιχίου τῶν Ἐχινάδων ὄντος· καὶ
 „οἱ δ' ἄρα Βουπράσιόν τε καὶ Ἥλιδα“ καὶ τοῦ Βου-
 πρασίου ἐν Ἥλιδι ὄντος· [καί] „οἱ δ' Εὐβοίαν ἔχον καὶ 5
 „Χαλκίδα τ' Εἰρέτριάν τε“ καὶ τούτων ἐν Εὐβοίᾳ οὖ-
 σῶν· καὶ „Τρωῆς καὶ Αὐκιοὶ καὶ Δάρδανοι“ ὡς καὶ
 ἐκείνων Τρώων ὄντων)· πλὴν μετὰ γε Νήριτον φησί
 „καὶ Κροκύλει' ἐνέμοντο καὶ Αἰγίλιπα τροχηῖαν, οἳ τε
 „Ζάκυνθον ἔχον ἡδ' οἱ Σάμον ἀμφενέμοντο, οἳ τ' 10
 „ἡπείρου ἔχον ἡδ' ἀντιπέραι' ἐνέμοντο.“ ἡπείρου μὲν
 οὖν τὰ ἀντιπέρα τῶν νήσων βούλεται λέγειν, ἅμα τῇ
 Λευκάδι καὶ τὴν ἄλλην Ἀκαρνανίαν συμπεριλαβεῖν
 βουλόμενος, περὶ ἧς καὶ οὕτω λέγει „δῶδεκ' ἐν ἡπείρῳ
 ἀγέλαι, τόσα πᾶσα μέλων,“ τάχα τῆς Ἠπειρώτιδος τὸ 15
 παλαιὸν μέχρι δεῦρο διατεινούσης καὶ ὀνόματι κοινῇ
 ἡπείρου λεγομένης· Σάμον δὲ τὴν νῦν Κεφαλληνίαν,
 ὡς καὶ ὅταν φῇ „ἐν πορθμῷ Ἰθάκης τε Σάμοιό τε παι-
 „παλοέσσης.“ τῷ γὰρ ἐπιθέτω τὴν ὁμωνυμίαν διέ-
 σταλται, ὡς οὐκ ἐπὶ τῆς πόλεως ἀλλ' ἐπὶ τῆς νήσου τι- 20
 θεῖς τοῦνομα. τετραπόλεως γὰρ οὔσης τῆς νήσου μία
 τῶν τεττάρων ἐστὶν ἢ καὶ Σάμος καὶ Σάμη καλουμένη
 καθ' ἑκάτερον τοῦνομα, ὁμωνυμοῦσα τῇ νήσῳ. ὅταν
 δ' εἴπῃ „ὅσσοι γὰρ νήσοισιν ἐπικρατέουσιν ἄριστοι
 „Δουλιχίῳ τε Σάμῃ τε καὶ ὕληεντι Ζακύνθῳ,“ τῶν 25
 νήσων ἀριθμὸν ποιῶν δηλὸς ἐστὶ καὶ Σάμην καλῶν
 τὴν νήσον, ἣν πρότερον Σάμον ἐκάλεσεν. Ἀπολλόδω-
 ρος δὲ τότε μὲν τῷ ἐπιθέτω λέγων διεστάλθαι τὴν ἀμ-
 φιβολίαν εἰπόντα „Σάμοιό τε παιπαλοέσσης,“ ὡς τὴν
 νήσον λέγοντα, τότε δὲ γράφεσθαι δεῖν „Δουλιχίῳ τε 30
 „Σάμῳ τε“ ἀλλὰ μὴ „Σάμῃ τε“ δηλὸς ἐστὶ τὴν μὲν
 πόλιν Σάμην καὶ Σάμον συνωνύμως ὑπολαμβάνων

ἐκφέρεσθαι, τὴν δὲ νῆσον Σάμου μόνον· ὅτι γὰρ Σάμη λέγεται ἢ πόλις δῆλον εἶναι ἔκ τε τοῦ διαριθμούμενον τοὺς ἐξ ἐκάστης πόλεως μνηστῆρας φάναι „ἐκ δὲ Σάμης πίσυρές τε καὶ εἰκοσι φῶτες ἕασι,“ καὶ ἐκ τοῦ 5 περὶ τῆς Κτιμένης λόγου „τὴν μὲν ἔπειτα Σάμηνδ’ „ἔδοσαν.“ ἔχει δὲ ταῦτα λόγον. οὐ γὰρ εὐκρινῶς ἀπο-C.45½ δίδωσιν ὁ ποιητὴς οὔτε περὶ τῆς Κεφαλληνίας οὔτε περὶ τῆς Ἰθάκης καὶ τῶν ἄλλων πλησίον τόπων, ὥστε καὶ οἱ ἐξηγούμενοι διαφέρονται καὶ οἱ ἱστοροῦντες.

- 10 *Αὐτίκα γὰρ ἐπὶ τῆς Ἰθάκης ὅταν φῇ „οἳ δ’ Ἰθά-*
„κην εἶχον καὶ Νήριτον εἰνοσίφυλλον,“ ὅτι μὲν τὸ
Νήριτον ὄρος λέγει τῷ ἐπιθέτῳ δημοτῷ. ἐν ἄλλοις δὲ
καὶ δημοτῶς ὄρος „ναιετάω δ’ Ἰθάκην εὐδείελον· ἐν δ’
„ὄρος αὐτῇ, Νήριτον εἰνοσίφυλλον ἀριπρεπές.“ Ἰθά-
 15 *κην δ’* εἶτε τὴν πόλιν εἶτε τὴν νῆσον λέγει, οὐ δῆλον
ἐν τούτῳ γε τῷ ἔπει „οἳ δ’ Ἰθάκην εἶχον καὶ Νήριτον.“
κυρίως μὲν γὰρ ἀκούων τις τὴν πόλιν δέξαιτ’ ἄν, ὥς
καὶ Ἀθήνας καὶ Λυκαβηττὸν εἰ τις λέγοι, καὶ Ρόδον
καὶ Ἀτάβυριν, καὶ ἔτι Λακεδαιμόνα καὶ Ταῦγετον·
 20 *ποιητικῶς δὲ τοῦναντίον. ἐν μέντοι τῷ „ναιετάω δ’*
„Ἰθάκην εὐδείελον· ἐν δ’ ὄρος αὐτῇ Νήριτον“ [δη-
λον]· ἐν γὰρ τῇ νήσῳ οὐκ ἐν τῇ πόλει τὸ ὄρος. ὅταν
δὲ οὕτω φῇ „ἡμεῖς ἐξ Ἰθάκης ὑπὸ Νηίου εἰλήλουθ-
„μεν,“ ἄδηλον, εἶτε τὸ αὐτὸ τῷ Νηρίτῳ λέγει τὸ Νή-
 25 *ιον εἶτε ἕτερον ἢ ὄρος ἢ χωρίον.*

Καὶ τοῦτο δὲ δοκεῖ ὑπερναντιότητά τινα δηλοῦν. 12
 „αὐτὴ δὲ χθαμαλὴ πανυπερτάτη εἶναι ἄλλῃ κεῖται.“ χθα-
 μαλὴ μὲν γὰρ ἢ ταπεινὴ καὶ χαμηλὴ, πανυπερτάτη δὲ

25. post χωρίον : ὁ μέντοι ἀντὶ Νηρίτου γράφων Νήρικον, ἢ ἀνάπαλιν, παραπαλεῖ τελείως· τὸ μὲν γὰρ εἰνοσίφυλλον καλεῖ ὁ ποιητὴς, τὸ δ’ ἐνκτιμένον πολλοῖς ἔθρον, καὶ τὸ μὲν ἐν Ἰθάκῃ, τὸ δ’ ἀκτὴν ἠπεύροιο.

ἡ ὑψηλή, οἷαν διὰ πλειόνων σημαίνει, Κραναήν κα-
 λῶν· καὶ τὴν ὁδὸν τὴν ἐκ τοῦ λιμένος, τρηχεῖαν ἀταρ-
 ,,πὸν χῶρον ἄν' ὑλήεντα“ καὶ ,,οὐ γὰρ τις νήσων εὐ-
 ,,θεῖλος, οὐδ' εὐλείμων, αἷθ' ἄλλ' κεκλιάται· Ἰθάκη
 ,,δέ τε καὶ περὶ πασέων.“ ἔχει μὲν οὖν ἀπεμφάσεις τοι- 5
 αὐτας ἢ φράσις, ἐξηγοῦνται δὲ οὐ κακῶς· οὔτε γὰρ
 χθαμαλὴν δέχονται ταπεινὴν ἐνταῦθα, ἀλλὰ πρόσχω-
 ρον τῇ ἡπείρῳ ἐγγυτάτῳ οὔσαν αὐτῆς· οὔτε πανυπερ-
 τάτην ὑψηλοτάτην ἀλλὰ πανυπερτάτην πρὸς ζόφον,
 οἷον ὑπὲρ πάσας ἐσχάτην τετραμμένην πρὸς ἄρκτον· 10
 τοῦτο γὰρ βούλεται λέγειν τὸ πρὸς ζόφον, τὸ δ' ἐναν-
 0.455 τλον πρὸς νότον, αἶ δέ τ' ἄνευθε πρὸς ἡῶ τ' ἡέλιόν τε.“
 τὸ γὰρ ἄνευθε πόρρω καὶ χωρὶς ἔστιν, ὥς τῶν μὲν ἄλ-
 λων πρὸς νότον κεκλιμένων καὶ ἀπωτέρω τῆς ἡπείρου,
 τῆς δ' Ἰθάκης ἐγγύθεν καὶ πρὸς ἄρκτον. ὅτι δ' οὕτω 15
 λέγει τὸ νότιον μέρος καὶ ἐν τοῖσδε φανερόν, „εἰτ' ἐπὶ
 ,,δεξι' ἴωσι, πρὸς ἡῶ τ' ἡέλιόν τε, εἰτ' ἐπ' ἀριστερὰ τοίγε,
 ,,ποτὶ ζόφον ἡερόεντα“ καὶ ἔτι μᾶλλον ἐν τοῖσδε „ὦ φί-
 ,,λοι, οὐ γὰρ τ' ἰδμεν, ὅπη ζόφος, οὐδ' ὅπη ἡώς, οὐδ' ὅπη
 ,,ἡέλιος φασείμβροτος εἰς' ὑπὸ γαῖαν, οὐδ' ὅπη ἄννευ- 20
 ,,ται.“ ἔστι μὲν γὰρ δέξασθαι τὰ τέτταρα κλίματα τὴν
 ἡῶ δεχομένους τὸ νότιον μέρος, ἔχει τέ τινα τοῦτ' ἐμ-
 φασιν· ἀλλὰ βέλτιον τὸ κατὰ τὴν πάροδον τοῦ ἡέλιου
 νοεῖν ἀντιτιθέμενον τῷ ἀρκτικῷ μέρει· ἐξάλλαξιν γὰρ
 τινα τῶν οὐρανίων πολλὴν βούλεται σημαίνειν ὁ λό- 25
 γος, οὐχὶ ψιλὴν ἐπίκρουψιν τῶν κλιμάτων. δεῖ γὰρ κατὰ
 πάντα συννεφεῖν καιρόν, ἅν θ' ἡμέρας ἅν τε νύκτωρ
 συμβῇ, παρακολουθεῖν· τὰ δ' οὐράνια ἐξαλλάττει ἐπὶ
 πλέον τῷ πρὸς μεσημβρίαν μᾶλλον ἢ ἥττον παραχω-
 ρεῖν ἡμᾶς ἢ εἰς τοῦναντίον. τοῦτο δὲ οὐ δύσεως καὶ 30
 ἀνατολῆς ἐγκαλύψεις ποιεῖ (καὶ γὰρ αἰθρίας οὔσης
 συμβαίνει), ἀλλὰ μεσημβρίας καὶ ἄρκτου. μάλιστα

γὰρ ἀρκτικός ἐστὶν ὁ πόλος· τούτου δὲ κινουμένου, καὶ ποτὲ μὲν κατὰ κορυφὴν ἡμῶν γινομένου ποτὲ δὲ ὑπὸ γῆς ὄντος, καὶ οἱ ἀρκτικοὶ συμεταβάλλουσι, ποτὲ δὲ συνεκλείπουσι κατὰ τὰς τοιαύτας παραχωρήσεις, 5 ὥστε οὐκ ἂν εἰδείης ὅπου ἐστὶ τὸ ἀρκτικὸν κλίμα, οὐδ' εἰ ἀρχὴν ἐστίν· εἰ δὲ τοῦτο, οὐδὲ τούναντίου ἂν γνοίης.

Κύκλος δὲ τῆς Ἰθάκης ἐστὶν ὡς ὀγδοήκοντα σταδίων. περὶ μὲν Ἰθάκης ταῦτα.

Τὴν δὲ Κεφαλληνίαν τετράπολιν οὕσαν οὕτ' αὖ- 13
10 τὴν εἰρηκε τῷ νῦν ὀνόματι οὕτε τῶν πόλεων οὐδεμίαν, πλὴν μιᾶς εἴτε Σάμης εἴτε Σάμου, ἣ νῦν μὲν οὐκέτ' ἐστίν, ἔχνη δ' αὐτῆς δείκνυται κατὰ μέσον τὸν πρὸς Ἰθάκῃ πορθμόν· οἱ δ' ἀπ' αὐτῆς Σαμαῖοι καλοῦνται· αἱ δ' ἄλλαι καὶ νῦν εἶδεν ἔτι μικρὰ πόλεις τινές, [Πα- 15 λείς] Πρωάνησος καὶ Κράνιοι. ἐφ' ἡμῶν δὲ καὶ ἄλλην προσέκτισε Γάιος Ἀντώνιος, ὁ θεῖος Μάρκου Ἀντωνίου, ἡνίκα φυγὰς γενόμενος μετὰ τὴν ὑπατείαν, ἣν συνῆρξε Κικέρωνι τῷ ῥήτορι, ἐν τῇ Κεφαλληνίᾳ διέτριψε καὶ τὴν ὅλην νῆσον ὑπήκοον ἔσχευ ὡς ἰδίου 20 κτῆμα· οὐκ ἔφθη μέντοι συνοικίσας, ἀλλὰ καθόδου τυχὼν πρὸς ἄλλοις μεῖζοσιν ὧν κατέλυσε τὸν βίον.

Οὐκ ᾤκησαν δέ τινες τὴν Κεφαλληνίαν τὴν αὖ- 14
τὴν τῷ Δουλιχίῳ φάναι, οἱ δὲ τῇ Τάφῳ, καὶ Ταφίους C.456
τοὺς Κεφαλληνίους, τοὺς δ' αὐτοὺς καὶ Τηλεβόας, καὶ 25 τὸν Ἀμφιπρύωνα δεῦρο στρατεῦσαι μετὰ Κεφάλου τοῦ Διονέως ἐξ Ἀθηναίων φυγάδος παραληφθέντος, κατασχόντα δὲ τὴν νῆσον παραδοῦναι τῷ Κεφάλῳ, καὶ ταύτην μὲν ἐπάνυμον ἐκείνου γενέσθαι τὰς δὲ πόλεις τῶν παιδῶν αὐτοῦ. ταῦτα δ' οὐχ ὁμηρικά· οἱ μὲν 30 γὰρ Κεφαλλῆνες ὑπὸ Ὀδυσσεὶ καὶ Λαέρτῃ, ἣ δὲ Τάφος ὑπὸ τῷ Μέντῃ „Μέντης Ἀγχιάλοιο δαΐφρονος εὐχομαι „εἶναι υἱός, ἀτὰρ Ταφίοισι φιληρέτμοισιν ἀνάσσω.“

καλεῖται δὲ νῦν Ταφριάς ἢ Τάφος. οὐδ' Ἑλλάνικος ὁμη-
 ρικὸς Δουλίχιον τὴν Κεφαλληνίαν λέγων. τὸ μὲν γὰρ
 ὑπὸ Μέργητι εἴρηται καὶ αἱ λοιπαὶ Ἐχινάδες, οἳ τε ἐνοι-
 κοῦντες Ἐπειοὶ ἐξ Ἡλίδος ἀφιγμένοι· διόπερ καὶ τὸν
 Ὄττον τὸν Κυλλήνιον „Φυλείδew ἔταρον μεγαθύμων 5
 „ἀρχὸν Ἐπειῶν“ καλεῖ. „αὐτὰρ Ὀδυσσεὺς ἦγε Κεφαλ-
 „λήνας μεγαθύμους.“ οὗτ' οὖν Δουλίχιον ἢ Κεφαλ-
 ληνία καθ' Ὅμηρον οὔτε τῆς Κεφαλληνίας τὸ Δουλί-
 χιον, ὥς Ἀνδρῶν φησί· τὸ μὲν γὰρ Ἐπειοὶ κατεῖχον,
 τὴν δὲ Κεφαλληνίαν ὅλην Κεφαλλῆνες ὑπὸ Ὀδυσσεῖ, 10
 οἱ δ' ὑπὸ Μέργητι. οὐδὲ Παλεῖς Δουλίχιον ὑφ' Ὀμήρου
 λέγονται, ὥς γράφει Φερεκύδης. μάλιστα δ' ἐναντι-
 οὔται Ὀμήρῳ ὁ τὴν Κεφαλληνίαν τὴν αὐτὴν τῷ Δου-
 λιχίῳ λέγων, εἶπερ τῶν μνηστήρων „ἐκ μὲν Δουλιχίῳ
 „δύω καὶ πεντήκοντα“ ἦσαν, ἐκ δὲ Σάμης „πίσυρές τε 15
 „καὶ εἰκοσιν.“ οὐ γὰρ τοῦτ' ἂν εἴη λέγων, ἐξ ὅλης μὲν
 τόσους ἐκ δὲ μιᾶς τῶν τεττάρων παρὰ δύο τοὺς ἡμί-
 σεις. εἰ δ' ἄρα τοῦτο δώσει τις, ἐρησόμεθα τίς ἂν εἴη ἢ
 Σάμη, ὅταν οὕτω φῇ „Δουλίχιόν τε Σάμην τ' ἦδ'
 „ὕληντα Ζάκυνθον.“

20

- 15 Κεῖται δ' ἡ Κεφαλληνία κατὰ Ἀκαρνανίαν, διέ-
 χουσα τοῦ Λευκάτα περὶ πεντήκοντα (οἱ δὲ τετταρά-
 κοντά φασι) σταδίους, τοῦ δὲ Χελωνάτα περὶ ὀγδοή-
 κοντα. αὐτὴ δ' ἐστὶν ὥς τριακοσίων τὴν περίμετρον,
 μακρὰ δ' ἀνήκουσα πρὸς εὖρον, ὀρεινὴ· μέγιστον δ' 25
 ὄρος ἐν αὐτῇ ἐν ᾧ τὸ Διὸς Αἰνησίῳ ἱερόν· καθ' ὃ δὲ
 στενωπάτη ἐστὶν ἡ νῆσος, ταπεινὸν ἰσθμὸν ποιεῖ ὥσθ'
 ὑπερκλύζεσθαι πολλάκις ἐκ θαλάττης εἰς θάλατταν·
 πλησίον δ' εἰσὶ τῶν στενωῶν ἐν κόλπῳ Κράνιοι τε καὶ
 Παλεῖς.

30

Μεταξὺ δὲ τῆς Ἰθάκης καὶ τῆς Κεφαλληνίας ἡ 16
 Ἀστερία νησίον (Ἀστερίς δ' ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λέγεται)
 ἦν ὁ μὲν Σκῆψιος μὴ μένειν τοιαύτην οἶαν φησὶν ὁ
 ποιητὴς „λιμένες δ' ἐνὶ ναύλοχοι αὐτῇ ἀμφίδυμοι.“ ὁ
 5 δὲ Ἀπολλόδωρος μένειν καὶ νῦν, καὶ πολίχνην λέγειC.457
 ἐν αὐτῇ Ἀλαλκομενᾶς τὸ ἐπ' αὐτῷ τῷ ἰσθμῷ κείμενον.

Καλεῖ δ' ὁ ποιητὴς Σάμον καὶ τὴν Θρακίαν, ἣν 17
 νῦν Σαμοθράκην καλοῦμεν. τὴν δ' Ἰωνικὴν οἶδε μὲν,
 ὥς εἰκός· καὶ γὰρ τὴν Ἰωνικὴν ἀποικίαν εἰδέναι φαί-
 10 νεται· οὐκ [ἂν] ἀντιδιέστειλε δὲ τὴν ὁμωνυμίαν, περὶ
 τῆς Σαμοθράκης λέγων, τοτὲ μὲν τῷ ἐπιθέτῳ „ὑψοῦ
 „ἐπ' ἀκροτάτης κορυφῆς Σάμου ὑληέσσης, Θρηκίης“
 τοτὲ δὲ τῇ συζυγίᾳ τῶν πλησίον νήσων „ἐς Σάμον ἐς
 „τ' Ἴμβρον καὶ Αἴμνον ἀμιχθαλόεσσαν“ καὶ πάλιν
 15 „μεσσηγύς τε Σάμοιο καὶ Ἴμβρου παιπαλοέσσης.“ ἥδει
 μὲν οὖν, οὐκ ὠνόμακε δ' αὐτήν· οὐδ' ἐκαλεῖτο τῷ
 αὐτῷ ὀνόματι πρότερον, ἀλλὰ Μελάμφυλλος, εἴτ' Ἀν-
 θεμῖς, εἶτα Παρθενία ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Παρθε-
 νίου, ὃς Ἰμβρασος μετωνομάσθη. ἐπεὶ οὖν κατὰ τὰ
 20 Τρωικὰ Σάμος μὲν καὶ ἡ Κεφαλληνία ἐκαλεῖτο καὶ ἡ
 Σαμοθράκη (οὐ γὰρ ἂν Ἑκάβη εἰσήγετο λέγουσα ὅτι
 τοὺς παῖδας αὐτῆς „πέρνασχ' ὅν κε λάβοι ἐς Σάμον ἐς
 „τ' Ἴμβρον“), Ἰωνικὴ δ' οὐκ ἀπώκιστό πω, δῆλον ὅτι
 ἀπὸ τῶν προτέρων τινὸς τὴν ὁμωνυμίαν ἔσχεν· ἐξ ὧν
 25 κἀκεῖνο δῆλον, ὅτι παρὰ τὴν ἀρχαίαν ἱστορίαν ὃ λέ-
 γουσιν οἱ φήσαντες, μετὰ τὴν Ἰωνικὴν ἀποικίαν καὶ
 τὴν Τεμβρίωνος παρουσίαν ἀποίκους ἐλθεῖν ἐκ Σάμου
 καὶ ὀνομάσαι Σάμον τὴν Σαμοθράκην, ὥς οἱ Σάμοιο
 τοῦτ' ἐπλάσαντο δόξης χάριν. πιθανώτεροι δ' εἰσὶν
 30 [οἱ] ἀπὸ τοῦ Σάμου καλεῖσθαι τὰ ὕψη φήσαντες εὐρη-
 σθαι τοῦτο τοῦνομα τὴν νῆσον· ἐντεῦθεν γάρ „ἐφαί-
 „νετο πᾶσα μὲν Ἰδη, φαίνεται δὲ Πριάμοιο πόλις καὶ

„νῆες Ἀχαιῶν.“ τινὲς δὲ Σάμον καλεῖσθαι φασιν ἀπὸ Σαῖων, τῶν οἰκούντων Θρακῶν πρότερον, οἳ καὶ τὴν ἡπειρον ἔσχον τὴν προσεχῆ, εἴτε οἱ αὐτοὶ τοῖς Σαπαίοις ὄντες ἢ τοῖς Σιντοῖς, οὓς Σίντιας καλεῖ ὁ ποιητής, εἰθ' ἕτεροι. μέμνηται δὲ τῶν Σαῖων Ἀρχίλοχος „ἀσπί-
5
„δα μὲν Σαῖων τίς ἀνείλετο, τὴν παρὰ θάμνῳ ἔντος
„ἀμώμητον κάλλιπον οὐκ ἐθέλων.“

18 Δοιπὴ δ' ἐστὶ τῶν ὑπὸ τῷ Ὀδυσσεῖ τεταγμένων
νῆσων ἡ Ζάκυνθος, μικρῷ πρὸς ἐσπέραν μᾶλλον τῆς
458 Κεφαλληνίας κεκλιμένη τῆς Πελοποννήσου, συνά- 10
πτουσα δ' αὐτῇ πλέον. ἔστι δ' ὁ κύκλος τῆς Ζακύνθου
σταδίων ἑκατὸν ἐξήκοντα· διέχει δὲ καὶ τῆς Κεφαλλη-
νίας ὅσον ἐξήκοντα σταδίους, ὑλώδης μὲν εὐκαρπος
δὲ· καὶ ἡ πόλις ἀξιόλογος, ὁμώνυμος. ἐντεῦθεν εἰς
'Εσπερίδας τῆς Αἰβύης στάδιοι τρισχίλιοι ἑξακόσιοι. 15

19 Καὶ ταύτης δὲ καὶ τῆς Κεφαλληνίας πρὸς ἑω τὰς
'Εχινάδας ἰδρῦσθαι νήσους συμβέβηκεν, ὧν τό τε Δου-
λίχιόν ἐστι (καλοῦσι δὲ νῦν Δολίχαν) καὶ αἱ Ὁξεῖαι κα-
λούμεναι, ἃς Θοὰς ὁ ποιητής εἶπε· καὶ ἡ μὲν Δολίχα
κεῖται κατὰ Οἰνιάδας καὶ τὴν ἐκβολὴν τοῦ Ἀχελώου, 20
διέχουσα Ἀράξου τῆς τῶν Ἡλείων ἄκρας ἑκατόν, αἱ
λοιπαὶ δ' Ἐχινάδες (πλείους δ' εἰσὶ, πᾶσαι λυπραὶ καὶ
τραχεῖαι) πρὸ τῆς ἐκβολῆς τοῦ Ἀχελώου, πεντεκαίδεκα
σταδίους ἀφ'esτῶσα ἡ ἀπωτάτω, ἡ δ' ἐγγυτάτω πέντε,
πελαγίζουσαι πρότερον, ἀλλ' ἡ χοῦς τὰς μὲν ἐξηπε- 25
ρωκεν αὐτῶν ἡδη, τὰς δὲ μέλλει πολλὴ καταφερομένη·
ἥπερ καὶ τὴν Παραχελωῖτιν καλουμένην χώραν, ἣν
ὁ ποταμὸς ἐπικλύζει, περιμάχητον ἐποίει τὸ παλαιὸν.
τοὺς ὄρους συγγέουσα αἰεὶ τοὺς ἀποδεικνυμένους τοῖς
'Ακαρναῶσι καὶ τοῖς Αἰτωλοῖς· ἐκρίνοντο γὰρ τοῖς ὅπλοις 30

10. ante τῆς: καὶ 21. ante αἱ: καὶ 23. ante πρὸ: καὶ

οὐκ ἔχοντες διαιτητάς, ἐνίκων δ' οἱ πλέον δυνάμενοι·
 ἀφ' ἧς αἰτίας καὶ μῦθος ἐπλάσθη τις, ὥς Ἡρακλέους
 καταπολεμήσαντος τὸν Ἀχελῶον καὶ ἐνεγκαμένου τῆς
 νίκης ἄθλον τὸν Δηιανείρας γάμον τῆς Οἰνέως θυ-
 5 γατρός, ἣν πεποίηκε Σοφοκλῆς τοιαῦτα λέγουσαν
 „μνηστὴρ γὰρ ἦν μοι ποταμός, Ἀχελῶον λέγω, ὃς μ'
 „ἐν τρισὶν μορφαῖσιν ἐξήτει πατρός, φοιτῶν ἐναργῆς
 „ταῦρος, ἄλλοτ' αἰόλος δράκων ἐλκτός, ἄλλοτ' ἀν-
 δρεῖω κύτει βούπρωρος.“ προστιθέασι δ' ἐνιοι καὶ
 10 τὸ τῆς Ἀμαλθείας τοῦτ' εἶναι λέγοντες κέρας, ὃ ἀπέ-
 κλασεν ὁ Ἡρακλῆς τοῦ Ἀχελῶου καὶ ἔδωκεν Οἰνεῖ τῶν
 γάμων ἔδνον· οἱ δ' εἰκάζοντες ἐξ αὐτῶν τάληθες ταύ-
 ρω μὲν εἰκότα λέγεσθαι τὸν Ἀχελῶόν φασι, καθάπερ
 καὶ τοὺς ἄλλους ποταμούς, ἀπὸ τε τῶν ἡχων καὶ τῶν
 15 κατὰ τὰ ρεῖθρα καμπῶν, ὥς καλοῦσι κέρατα, δράκοντι
 δὲ διὰ τὸ μῆκος καὶ τὴν σκολιότητα, βούπρωρον δὲ διὰ
 τὴν αὐτὴν αἰτίαν δι' ἣν καὶ ταυρωπὸν· τὸν Ἡρακλέα
 δὲ καὶ ἄλλως εὐεργετικὸν ὄντα καὶ τῷ Οἰνεῖ κηδεύ-
 σοντα παραχῶμασί τε καὶ διοχετείαις βιάσασθαι τὸν
 20 ποταμὸν πλημμελῶς ῥέοντα καὶ πολλὴν τῆς Παραχε-
 λωίτιδος ἀναψύξαι χαριζόμενον τῷ Οἰνεῖ· καὶ τοῦτ'
 εἶναι τὸ τῆς Ἀμαλθείας κέρας. τῶν μὲν οὖν Ἐχινάδων
 καὶ τῶν Ὀξειῶν κατὰ τὰ Τρωικὰ Μέρητα ἄρχειν φησὶν
 Ὅμηρος „ὃν τίκτε Διὶ φίλος ἱππότη Φυλεύς, ὃς ποτε
 25 „Δουλίχιόνδ' ἀπενάσσαστο, πατρὶ χολωθεῖς.“ πατὴρ δ'
 ἦν Αὐγέας ὁ τῆς Ἡλείας καὶ τῶν Ἐπειῶν ἄρχων· ὥστ'
 Ἐπειοὶ τὰς νήσους ταύτας εἶχον οἱ συνεξάραντες εἰς τὸ
 Δουλίχιον τῷ Φυλεῖ.

Αἱ δὲ τῶν Ταφίων νῆσοι, πρότερον δὲ Τηλεβοῶν, 20
 30 ὧν ἦν καὶ ἡ Τάφος νῦν δὲ Ταφιάς καλουμένη, χωρὶς
 ἦσαν τούτων οὐ τοῖς διαστήμασιν (ἐγγὺς γὰρ κεῖνται)
 ἀλλὰ ὅφ' ἑτέροις ἡγεμόσι ταττόμεναι, Ταφίοις καὶ

Τηλεβόαις· πρότερον μὲν οὖν Ἀμφιτρύων ἐπιστρα-
τεύσας αὐτοῖς μετὰ Κεφάλου τοῦ Διονέως ἐξ Ἀθη-
νῶν φυγάδος, ἐκείνῳ τὴν ἀρχὴν παρέδωκεν αὐτῶν·
ὁ δὲ ποιητὴς ὑπὸ Μέντῃ τετάχθαι φησὶ ληστὰς καλῶν
αὐτούς, καθάπερ καὶ τοὺς Τηλεβόας ἅπαντάς φασι. 5
τὰ μὲν περὶ τὰς νήσους τὰς πρὸ τῆς Ἀκαρνανίας ταῦτα.

- 21 Μεταξὺ δὲ Λευκάδος καὶ τοῦ Ἀμβρακικοῦ κόλπου
λιμνοθάλαττά ἐστι Μυρτούντιον λεγομένη. ἀπὸ δὲ
Λευκάδος ἐξῆς Πάλαιρος καὶ Ἀλυζία τῆς Ἀκαρνανίας
εἰσὶ πόλεις, ὧν ἡ Ἀλυζία πεντεκαίδεκα ἀπὸ θαλάττης 10
διέχει σταδίους, καθ' ἣν ἐστι λιμὴν Ἡρακλέους ἱερὸς
καὶ τέμενος, ἐξ οὗ τοὺς Ἡρακλέους ἄθλους, ἔργα Ἀν-
σίππου, μετήνεγκεν εἰς Ῥώμην τῶν ἡγεμόνων τις,
παρὰ τόπον κειμένους διὰ τὴν ἐρημίαν. εἶτα ἄκρα Κρι-
θώτῃ καὶ [αἰ] Ἐχινάδες καὶ πόλις Ἀστακός, ὁμώνυμος 15
τῇ περὶ Νικομήδειαν καὶ τὸν Ἀστακηνὸν κόλπον (καὶ
ἡ Κριθώτῃ δ' ὁμώνυμος πολίχνη τῶν ἐν τῇ Θρακίᾳ
Χερρονήσῳ)· πάντα δ' εὐλίμενα τὰ μεταξὺ· εἴτ' Οἶ-
νιάδαι καὶ ὁ Ἀχελῷος· εἶτα λίμνη τῶν Οἰνιάδων Με-
λίτῃ καλουμένη, μῆκος μὲν ἔχουσα τριάκοντα σταδίων 20
πλάτος δὲ εἴκοσι, καὶ ἄλλη Κυνία διπλασία ταύτης
καὶ μῆκος καὶ πλάτος, τρίτῃ δ' Οὐρία πολλῷ τούτων
μικροτέρα· ἡ μὲν οὖν Κυνία καὶ ἐκδίδωσιν εἰς τὴν θά-
λατταν, αἱ λοιπαὶ δ' ὑπέρκεινται ὅσον ἡμιστάδιον·
εἴθ' ὁ Εὐῆνος, εἰς ὃν ἀπὸ τοῦ Ἀκτίου στάδιοι ἑξακό- 25
σιοι ἐβδομήκοντα· μετὰ δὲ τὸν Εὐῆνον τὸ ὄρος ἡ Χαλ-
κίς, ἣν Χαλκίαν εἰρηκεν Ἀρτεμίδωρος· εἴθ' ἡ Πλευρών,
εἴθ' ἡ Ἀλίκυρνα κόμη, ἥς ὑπέρκειται Καλυδὼν ἐν τῇ
μεσογαίᾳ σταδίοις τριάκοντα· περὶ δὲ τὴν Καλυδωνά
ἐστὶ τὸ τοῦ Λαφροῦ Ἀπόλλωνος ἱερὸν· εἴθ' ὁ Ταφιασ- 30

16. post κόλπον : ἐνικῶς λεγομένη

σὸς τὸ ὄρος, εἶτα Μακυνία πόλις, εἶτα Μολύκρεια καὶ C.460
 πλησίον τὸ Ἀντίρριον τὸ τῆς Αἰτωλίας ὄριον καὶ τῆς
 Λοκρίδος, εἰς ὃ ἀπὸ τοῦ Εὐήνου στάδιοι περὶ ἑκατὸν εἰ-
 κοσιν. Ἀρτεμίδωρος μὲν [οὐχ] οὕτω περὶ τῆς εἴτε Χαλ-
 5 κίδος εἴτε Χαλκίας τοῦ ὄρους, μεταξὺ τοῦ Ἀχελώου καὶ
 τῆς Πλευρώνος ἰδρύων αὐτήν, Ἀπολλόδωρος δέ, ὡς
 πρότερον εἶπον, ὑπὲρ τῆς Μολυκρείας καὶ τὴν Χαλ-
 κίδα καὶ τὸν Ταφιασσόν· καὶ τὴν δὲ Καλυδῶνα με-
 ταξὺ ἰδρυσθαι φησι τῆς τε Πλευρώνος καὶ τῆς Χαλκί-
 10 δος· εἰ μὴ ἄρα ἕτερον θρῖσκον τὸ πρὸς Πλευρῶνι ὄρος
 Χαλκίαν καλούμενον, ἕτερον δὲ τὴν Χαλκίδα τὴν πρὸς
 Μολυκρείᾳ. ἔστι δέ τις καὶ πρὸς τῇ Καλυδῶνι λί-
 μνη μεγάλη καὶ εὖοφος, ἣν ἔχουσιν οἱ ἐν Πάτραις Ῥω-
 μαῖοι.
 15 Τῆς δὲ μεσογαίας κατὰ μὲν τὴν Ἀκαρνανίαν Ἐρυ- 22
 σιχαίους τινας φησιν Ἀπολλόδωρος λέγεσθαι, ὧν Ἀλ-
 κμᾶν μέμνηται „οὐδ' Ἐρυσιχαῖος, οὐδὲ ποιμήν, ἀλλὰ
 „Σαρδίων ἀπ' ἀκρᾶν.“ κατὰ δὲ τὴν Αἰτωλίαν ἦν Ὠλέ-
 νος, ἧς ἐν τῷ Αἰτωλικῷ καταλόγῳ μέμνηται Ὀμηρος,
 20 ἔχνη δ' αὐτῆς λείπεται μόνον ἐγγὺς τῆς Πλευρώνος
 ὑπὸ τῷ Ἀρακύνθῳ· ἦν δὲ καὶ Ἀνσιμάχεια πλησίον,
 ἠφανισμένη καὶ αὐτή, κειμένη πρὸς τῇ λίμνῃ τῇ νῦν
 μὲν Ἀνσιμαχείᾳ πρότερον δ' Ἰδρα, μεταξὺ Πλευρῶ-
 νος καὶ Ἀρσινόης πόλεως, ἣ κώμη μὲν ἦν πρότερον κα-
 25 λουμένη Κωνώπα, κτίσμα δ' ὑπῆρξεν Ἀρσινόης τῆς
 Πτολεμαίου τοῦ δευτέρου γυναικὸς ἅμα καὶ ἀδελφῆς,
 εὐφυῶς ἐπικειμένη πῶς τῇ τοῦ Ἀχελώου διαβάσει·
 παραπλήσιον δέ τι καὶ ἡ Πυλὴν τῷ Ὠλένῳ πέπονθεν.
 ὅταν δὲ φῇ τὴν Καλυδῶνα αἰπεῖάν τε καὶ πετροήεσσαν,
 30 ἀπὸ τῆς χώρας δεκτέον· εἴρηται γὰρ ὅτι τὴν χώραν

δίχα διελόντες τὴν μὲν ὄρεινὴν καὶ ἐπὶ κτήτον τῇ Καλυδῶνι προσένειμαν, τὴν πεδιάδα δὲ τῇ Πλευρῶνι.

23 Νυνὶ μὲν οὖν ἐκπεπόνηται καὶ ἀπηγόρευκεν ὑπὸ τῶν συνεχῶν πολέμων ἢ τ' Ἀκαρνανία καὶ Αἰτωλοί, καθάπερ καὶ πολλὰ τῶν ἄλλων ἔθνων· πλεῖστον μὲν-5 τοι χρόνον συνέμειναν Αἰτωλοὶ μετὰ τῶν Ἀκαρνανῶν πρὸς τε τοὺς Μακεδόνας καὶ τοὺς ἄλλους Ἕλληνας, ὅστατα δὲ καὶ πρὸς Ῥωμαίους περὶ τῆς αὐτονομίας ἀγωνιζόμενοι. ἐπεὶ δὲ καὶ Ὅμηρος αὐτῶν ἐπὶ πολὺ μέμνηται καὶ οἱ ἄλλοι ποιηταὶ τε καὶ συγγραφεῖς, τὰ μὲν 10 εὐσήμεως τε καὶ ὁμολογουμένως, τὰ δ' ἤττον γνωρίμως (καθάπερ τοῦτο καὶ ἐν τοῖς ἤδη λεχθεῖσι περὶ αὐτῶν ἀποδεδείκται), προσληπτέον καὶ τῶν παλαιοτέρων τινὰ τῶν ἀρχῆς ἔχόντων τάξιν ἢ διαπορουμένων.

Σ.461
24 Εὐθύς ἐπὶ τῆς Ἀκαρνανίας ὅτι μὲν αὐτὴν ὁ Λαέρ-15 της καὶ οἱ Κεφαλλῆνες κατεκτήσαντο εἰρηται ἡμῖν, τίνων δὲ κατεχόντων πρότερον πολλοὶ μὲν εἰρήκασιν· οὐχ ὁμολογούμενα δὲ εἰπόντων ἐπιφανῇ δέ, ἀπολείπεται τις λόγος ἡμῖν διαιτητικὸς περὶ αὐτῶν. φασὶ γὰρ τοὺς Ταφίους τε καὶ Τηλεβόας λεγομένους οἰκεῖν τὴν 20 Ἀκαρνανίαν πρότερον, καὶ τὸν ἡγεμόνα αὐτῶν Κέφαλον τὸν κατασταθέντα ὑπὸ Ἀμφιτρύωνος κύριον τῶν περὶ τὴν Τάφον νήσων κυριεῦσαι καὶ ταύτης τῆς χώρας· ἐντεῦθεν δὲ καὶ τὸ ἀπὸ τοῦ Λευκάτα νομιζόμενον ἄλμα τούτῳ πρῶτῳ προσμυθεύουσιν, ὥς προεί-25 ρηται. ὁ δὲ ποιητὴς ὅτι μὲν ἤρχον οἱ Τάφιοι τῶν Ἀκαρνανῶν πρὶν ἢ τοὺς Κεφαλλῆνας καὶ τὸν Λαέρτην ἐπελθεῖν οὐ λέγει, διότι δ' ἦσαν φίλοι τοῖς Ἰθακησί-οις λέγει, ὥστ' ἢ οὐδ' ὅλως ἐπῆρξαν τῶν τόπων κατ' αὐτόν, ἢ ἐκόντες παρεχώρησαν ἢ καὶ σύνοικοι ἐγέ-30 νοντο. φαίνονται δὲ καὶ ἐκ Λακεδαιμονός τινες ἐποικῆσαι τὴν Ἀκαρνανίαν, οἱ μετ' Ἰκαρίου τοῦ Πηνελό-

- πης πατρός· καὶ γὰρ τοῦτον καὶ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτῆς
 ζῶντας παραδίδωσιν ὁ ποιητὴς κατὰ τὴν Ὀδύσσειαν
 „οἱ πατὴρ μὲν ἐς οἶκον ἀπερρίγασι νέεσθαι Ἰκαρίου,
 „ὥς κ' αὐτὸς ἐδυνώσαιο θυγάτρα.“ καὶ περὶ τῶν
 5 ἀδελφῶν „ἦδη γὰρ ῥα πατήρ τε κασίγνητοί τε κέλου-
 „ται Εὐρυμάχῳ γήμασθαι.“ οὔτε γὰρ ἐν Λακεδαιμόνι
 πιθανὸν αὐτοὺς οἰκεῖν (οὐ γὰρ ἂν ὁ Τηλέμαχος παρὰ
 Μενελάῳ κατήγετο ἀφιγμένος ἐκεῖσε), οὔτ' ἄλλην οἰ-
 κησιν παρειλήφμεν αὐτῶν. φασὶ δὲ Τυνδάρεων καὶ
 10 τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ τὸν Ἰκάριον ἐκπεσόντας ὑπὸ Ἰπ-
 ποκόωντος τῆς οἰκείας ἐλθεῖν παρὰ Θέστιον τὸν τῶν
 Πλευρωνίων ἄρχοντα, καὶ συγκατακτῆσασθαι τὴν πέ-
 ραν τοῦ Ἀχελώου πολλὴν ἐπὶ μέρει· τὸν μὲν οὖν Τυν-
 δάρεων ἐπανελθεῖν οἰκαδε γήμαντα Λήδαν τὴν τοῦ
 15 Θεστίου θυγατέρα, τὸν δ' Ἰκάριον ὑπομεῖναι τῆς Ἀκαρ-
 ναυίας ἔχοντα μέρος, καὶ τεκνοποιήσασθαι τὴν τε Πη-
 νελόπην ἐκ Πολυκάστης τῆς Λυγαίου θυγατρὸς καὶ
 τοὺς ἀδελφοὺς αὐτῆς. ἡμεῖς μὲν οὖν ἀπεδείξαμεν ἐν
 τῷ καταλόγῳ τῶν νεῶν καὶ τοὺς Ἀκαρνανας καταριθ-
 20 μουμένους καὶ μετασχόντας τῆς ἐπὶ Ἴλιον στρατείας,
 ἐν οἷς κατωνομάζοντο οἱ τε τὴν ἀκτὴν οἰκοῦντες καὶ
 ἔτι „οἱ τ' ἥπειρον ἔχον ἢ δ' ἀντιπέραί ἐνέμοντο.“ οὔτε
 δ' ἡ ἥπειρος Ἀκαρνανία ὠνομάζετό πω οὔθ' ἡ ἀκτὴ
 Λευκάς.
- 25 Ἐφορος δ' οὗ φησι συστρατεῦσαι· Ἀλκμέωνα γὰρ C.462
25
 τὸν Ἀμφιάρεω στρατεύσαντα μετὰ Διομήδους καὶ τῶν
 ἄλλων Ἐπιγόνων καὶ κατορθώσαντα τὸν πρὸς Θηβαί-
 ουσ πόλεμον συνελθεῖν Διομήδει καὶ τιμωρῆσασθαι
 μετ' αὐτοῦ τοὺς Οἰνέως ἐχθρούς, παραδόντα δ' ἐκεῖ-
 30 νοις τὴν Αἰτωλίαν αὐτὸν εἰς τὴν Ἀκαρνανίαν παρελ-
 θεῖν καὶ ταύτην καταστρέφασθαι. Ἀγαμέμνονα δ' ἐν
 τούτῳ τοῖς Ἀργείοις ἐπιθέμενον κρατῆσαι ῥαδίως, τῶν

πλείστων τοῖς περὶ Διομήδῃ συνακολουθησάντων. μικρόν δ' ὕστερον ἐπιπεσούσης τῆς ἐπ' Ἴλιον ἐξόδου, δεισάντα μὴ ἀπόντος αὐτοῦ κατὰ τὴν στρατείαν ἐπανελθόντες οἴκαδε οἱ περὶ τὸν Διομήδῃ (καὶ γὰρ ἀκούεσθαι μεγάλην περὶ αὐτὸν συνεστραμμένην δύναμιν) κατὰ- 5
 σχοιεν τὴν μάλιστα προσήκουσαν αὐτοῖς ἀρχὴν (τὸν μὲν γὰρ Ἀδράστου τὸν δὲ τοῦ πατρὸς εἶναι κληρονόμον), ταῦτα δὲ διανοηθέντα καλεῖν αὐτοὺς ἐπὶ τε τὴν τοῦ Ἀργούς ἀπόληψιν καὶ τὴν κοινωνίαν τοῦ πολέμου· τὸν μὲν οὖν Διομήδῃ πεισθέντα μετασχεῖν τῆς στρα- 10
 τείας, τὸν δὲ Ἀλκμέωνα ἀγανακτοῦντα μὴ φροντίσαι· διὰ δὲ τοῦτο μὴδὲ κοινωνῆσαι τῆς στρατείας μόνους τοὺς Ἀκαρναῖνας τοῖς Ἑλλήσι· τούτοις δ', ὥς εἰκός, τοῖς λόγοις ἐπακολουθήσαντες οἱ Ἀκαρναῖνες σοφίσασθαι λέγονται Ῥωμαίους καὶ τὴν αὐτονομίαν παρ' 15
 αὐτῶν ἐξανύσασθαι, λέγοντες ὥς οὐ μετὰσχοιεν μόνοι τῆς ἐπὶ τοὺς προγόνους τοὺς ἐκείνων στρατείας· οὔτε γὰρ ἐν τῷ Αἰτωλικῷ καταλόγῳ φράζονται οὔτε ἰδίᾳ· οὐδὲ γὰρ ὅλως τοῦνομα τοῦτ' ἐμφέροιο ἐν τοῖς
 ἔπεσιν.

20

26 Ὁ μὲν οὖν Ἐφορος πρὸ τῶν Τρωικῶν ἤδη τὴν Ἀκαρνανίαν ὑπὸ τῷ Ἀλκμέωνι ποιήσας, τό τε Ἀργος τὸ Ἀμφιλοχικὸν ἐκείνου κτίσμα ἀποφαίνει, καὶ τὴν Ἀκαρνανίαν ὠνομάσθαι φησὶν ἀπὸ τοῦ παιδὸς αὐτοῦ Ἀκαρναῖνος, Ἀμφιλόχους δὲ ἀπὸ τοῦ ἀδελφοῦ Ἀμφιλόχου· 26
 ὥστε ἐκπίπτει εἰς τὰ παρὰ τὴν ὁμηρικὴν ἱστορίαν λεγόμενα. Θουκυδίδης δὲ καὶ ἄλλοι τὸν Ἀμφίλοχον ἀπὸ τῆς στρατείας τῆς Τρωικῆς ἐπανιόντα, οὐκ ἀρεσκόμενον τοῖς ἐν Ἀργεί, ταύτην οἰκῆσαι φασὶ τὴν χώραν, οἱ μὲν κατὰ διαδοχὴν ἦκοντα τῆς τοῦ ἀδελφοῦ δυναστείας, οἱ 30
 δ' ἄλλως. καὶ ἰδίᾳ μὲν περὶ Ἀκαρνανῶν ταῦτα λέγοντ' ἄν, κοινῇ δ' ὅσα καὶ τοῖς Αἰτωλικοῖς ἐπιπλέκεται νῦν

ἐροῦμεν, τὰ Αἰτωλικά λέγοντες ἐφεξῆς ὅσα προσλαβεῖν τοῖς εἰρημένοις ἔγνωμεν.

Τοὺς δὲ Κουρήτας τῶν μὲν Ἀκαρναῶσι τῶν δ' Αἰ- 3
τωλοῖς προσνεμόντων, καὶ τῶν μὲν ἐκ Κρήτης τῶν δ'
5 ἐξ Εὐβοίας τὸ γένος εἶναι φασκόντων, ἐπειδὴ καὶ Ὀμη-
ρος αὐτῶν μέμνηται, τὰ παρ' ἐκείνου πρῶτον ἐπίσκει- C.463
πτεόν. οἴονται δ' αὐτὸν λέγειν Αἰτωλοὺς μᾶλλον ἢ
Ἀκαρναῶνας, εἶπερ οἱ Πορθαονίδαι ἦσαν „Ἀργίος ἡδὲ
„Μέλας, τρίτατος δ' ἦν ἱππότης Οἰνεύς· ὥκεον δ' ἐν
10 „Πλευρῶνι καὶ αἰπεινῇ Καλυδῶνι.“ αὐταὶ δ' εἰσὶν
Αἰτωλικάι πόλεις ἀμφοτέραι καὶ φέρονται ἐν τῷ Αἰτω-
λικῷ καταλόγῳ ὥστε, ἐπεὶ τὴν Πλευρῶνα οἰκοῦντες
φαίνονται καὶ κατ' αὐτὸν οἱ Κουρήτες, Αἰτωλοὶ ἂν
εἶεν. οἱ δ' ἀντιλέγοντες τῷ τρόπῳ τῆς φράσεως παρά-
15 γονται ὅταν φῇ „Κουρήτές τ' ἐμάχοντο καὶ Αἰτωλοὶ
„μενεχάρμαι ἀμφὶ πόλιν Καλυδῶνα.“ οὐδὲ γὰρ ἂν
κυρίως εἶπεν οὕτως „ἐμάχοντο Βοιωτοὶ καὶ Θηβαῖοι
πρὸς ἀλλήλους“ οὐδ' „Ἀργεῖοι καὶ Πελοποννήσιοι.“
ἐδείχθη δ' ἐν τοῖς ἐμπροσθεν ὅτι ἐστὶ καὶ ὁμηρικὸν τὸ
20 ἔθος τοῦτο τῆς φράσεως καὶ ὑπὸ τῶν ἄλλων ποιητῶν
τετριμμένον· τοῦτο μὲν οὖν εὐαπολόγητον. ἐκεῖνοι δὲ
λεγέτωσαν πῶς ἂν μὴ ὁμοεθνεῖς ὄντας μὴδ' Αἰτωλοὺς
τοὺς Πλευρωνίους ἐν τοῖς Αἰτωλοῖς κατέλεγεν.

Ἐφορος δὲ τοὺς Αἰτωλοὺς εἰπὼν ἔθνος εἶναι μη- 2
25 δεπώποτε γεγεννημένον ὑφ' ἑτέροις, ἀλλὰ πάντα τὸν
μνημονευόμενον χρόνον μεμενηκὸς ἀπόρρητον διὰ τε
τὰς δυσχωρίας τῶν τόπων καὶ διὰ τὴν περὶ τὸν πόλε-
μον ἄσκησιν, ἐξ ἀρχῆς μὲν φησὶν ἅπασαν τὴν χώραν
Κουρήτας κατασχεῖν, ἀφικομένου δ' ἐξ Ἑλιδος Αἰτω-
30 λοῦ τοῦ Ἐνδυμῖωνος καὶ τοῖς πολέμοις κρατοῦντος αὐ-
τῶν, τοὺς μὲν Κουρήτας εἰς τὴν νῦν καλουμένην Ἀκαρ-
νανίαν ὑποχωρῆσαι, τοὺς δ' Αἰτωλοὺς συγκατελθόν-

τας Ἐπειοῖς τὰς ἀρχαιοτάτας κτίσαι τῶν ἐν Αἰτωλίᾳ πόλεων, δεκάτῃ δ' ὕστερον γενεᾷ τὴν Ἥλιν ὑπὸ Ὁξύλου τοῦ Αἴμονος συνοικισθῆναι περαιωθέντος ἐκ τῆς Αἰτωλίας. παρατίθησι δὲ τούτων μαρτύρια τὰ ἐπιγράμματα, τὸ μὲν ἐν Θέρμοις τῆς Αἰτωλίας, ὅπου τὰς 5 ἀρχαιρεσίας ποιεῖσθαι πάτριον αὐτοῖς ἐστίν, ἐγκεχαργμένον τῇ βάσει τῆς Αἰτωλοῦ εἰκόνης „χώρης οἰκιστήρα, παρ' Ἀλφειοῦ ποτε δίναις θρεφθέντα, σταδίων γείτον' Ὀλυμπιάδος, Ἐνδυμίωνος παῖδ' Αἰτωλὸν τόνδ' ἀνέσθηκαν Αἰτωλοί, σφετέρας μνημ' ἄρε- 10 τῆς ἐσορᾶν.“ τὸ δ' ἐν τῇ ἀγορᾷ τῶν Ἥλείων ἐπὶ τῷ Ὁξύλου ἀνδριάντι „Αἰτωλὸς ποτε τόνδε λιπῶν αὐτόχθονα δῆμον κτήσατο Κουρῆτιν γῆν δορὶ πολλὰ κα- C.464 „μών· τῆς δ' αὐτῆς γενεᾶς δεκατόσπορος Αἴμονος υἱὸς „Ὁξύλος ἀρχαίην ἐκτίσε τήνδε πόλιν.“ 15

3 Τὴν μὲν οὖν συγγένειαν τὴν πρὸς ἀλλήλους τῶν τε Ἥλείων καὶ τῶν Αἰτωλῶν ὀρθῶς ἐπισημαίνεται διὰ τῶν ἐπιγραμμάτων, ἐξομολογουμένων ἀμφοῖν οὐ τὴν συγγένειαν μόνον ἀλλὰ καὶ τὸ ἀρχηγέτας ἀλλήλων εἶναι· δι' οὗ καλῶς ἐξελέγχει ψευδομένους τοὺς φάσκον- 20 τας τῶν μὲν Αἰτωλῶν ἀποίκους εἶναι τοὺς Ἥλείους, μὴ μέντοι τῶν Ἥλείων τοὺς Αἰτωλοὺς. τὴν δ' ἀνομολογίαν τῆς γραφῆς καὶ τῆς ἀποφάσεως φαίνεται τὴν αὐτὴν ἐπιδεδειγμένους ἀνταῦθα ἦν περ ἐπὶ τοῦ μαντείου τοῦ ἐν Δελφοῖς παρεστήσαμεν. εἰπὼν γὰρ ἀπόρ- 25 θητον ἐκ τοῦ μνημονευομένου χρόνου παντὸς τὴν Αἰτωλίαν, εἰπὼν δὲ καὶ ἐξ ἀρχῆς τὴν χώραν ταύτην τοὺς Κουρῆτας κατασχεῖν ὥφειλε μὲν τοῖς εἰρημένοις ἀκόλουθον τοῦτο [ἐπι]φέρειν, ὅτι οἱ Κουρῆτες διέμειναν ἕως εἰς αὐτὸν κατέχοντες τὴν Αἰτωλίαν γῆν· οὕτω γὰρ 30

ἔμελλεν ἀπόρθητός τε καὶ οὐδέποτε ὑπ' ἄλλοις γε-
 νυῖα ὀρθῶς λεχθήσεσθαι· ὁ δ' ἐκλαθόμενος τῆς ὑπο-
 σχέσεως οὐ τοῦτ' ἐπιφέρει ἀλλὰ τοῦναντίον, ὡς ἀφι-
 κομένου ἐξ Ἡλιδος Αἰτωλοῦ καὶ τοῖς πολέμοις κρα-
 5 τοῦντος αὐτῶν οἱ Κουρήτες ἀπῆλθον εἰς τὴν Ἀκαρνα-
 νίαν· τί οὖν ἄλλο πορθήσεως ἰδιον ἢ τῷ πολέμῳ
 κρατηθῆναι καὶ τὴν χώραν ἐκλιπεῖν; τοῦτο δὲ καὶ τὸ
 ἐπίγραμμα μυρτυρεῖ τὸ παρὰ τοῖς Ἡλείοις· ὁ γὰρ „Αἰ-
 τωλός“ φησί „κτῆσατο Κουρήτιν γῆν δορὶ πολλὰ κα-
 10 „μῶν.“

Ἴσως δὴ τις ἂν φαίη λέγειν αὐτὸν ἀπόρθητον τὴν 4
 Αἰτωλίαν ἀφ' οὗ τοῦνομα τοῦτ' ἔσχε μετὰ τὴν Αἰτω-
 λοῦ παρουσίαν· ἀλλ' ἀφῆρηται καὶ [τούτου] τοῦ νοή-
 ματος τὸν λόγον, φήσας ἐν τοῖς ἐφεξῆς τὸ μὲν πλεῖστον
 15 τοῦ λαοῦ τοῦ διαμένοντος ἐν τοῖς Αἰτωλοῖς τοῦτο εἶ-
 ναι τὸ τῶν Ἐπειῶν, συμμιχθέντων δ' αὐτοῖς ὕστερον
 Αἰολέων τῶν ἅμα Βοιωτοῖς ἐκ Θετταλίας ἀναστάντων
 κοινῇ μετὰ τούτων τὴν χώραν κατασχέειν. ἃρ' οὖν ἔστι
 [πιστὸν] χωρὶς πολέμου τὴν ἀλλοτρίαν ἐπελθόντας
 20 συγκαταναεῖμασθαι τοῖς ἔχουσι μηδὲν δεομένοις κοινω-
 νίας τοιαύτης; ἢ τοῦτο μὲν οὐ πιστόν, τὸ δὲ κρατου-
 μένοις τοῖς ὅπλοις ἐπ' ἴσοις συμβῆναι πιστόν; τί οὖν
 ἄλλο πόρθησις ἢ τὸ κρατεῖσθαι τοῖς ὅπλοις; καὶ Ἀπολ-
 λόδωρος δ' εἰρηκεν ἐκ τῆς Βοιωτίας ἐπελθόντας Ἰαν-
 25 τας ἱστορεῖσθαι καὶ ἐποίκους τοῖς Αἰτωλοῖς γενομέ-
 νους· ὁ δ' ὥσπερ καταρθωκὸς ἐπιλέγει διότι ταῦτα
 καὶ τὰ τοιαῦτα διακριβοῦν εἰδῶθαμεν, ὅταν ἢ τι τῶν
 πραγμάτων ἢ παντελῶς ἀπορούμενον ἢ ψευδῇ δό-
 ξαν ἔχον.

30 Τοιοῦτος δ' ὢν Ἐφορος ἐτέρων ὅμως κρείττων ^{C.465}₅

ἐστί· καὶ αὐτὸς ὁ ἐσπουδασμένως οὕτως ἐπαινέσας αὐ-
 τὸν Πολύβιος καὶ φήσας περὶ τῶν Ἑλληνικῶν καλῶς
 μὲν Εὐδοξον, κάλλιστα δ' Ἐφορον ἐξηγεῖσθαι περὶ
 κτίσεων συγγενειῶν μεταναστάσεων ἀρχηγετῶν, ἡμεῖς
 „δέ“ φησί „τὰ νῦν ὄντα δηλώσομεν καὶ περὶ θέσεως 5
 „τόπων καὶ διαστημάτων· τοῦτο γάρ ἐστιν οἰκειότα-
 „τον χωρογραφία.“ ἀλλὰ μὴν σύ γε, ὦ Πολύβιε, ὁ τὰς
 λαοδογματικὰς ἀποφάσεις περὶ τῶν διαστημάτων εἰς-
 ἄγων οὐκ ἐν τοῖς ἔξω τῆς Ἑλλάδος μόνον, ἀλλὰ καὶ ἐν
 τοῖς Ἑλληνικοῖς, * καὶ διδοῖς εὐθύνας τὰς μὲν Ποσει- 10
 δωνίῳ τὰς δ' Ἀρτεμιδώρῳ τὰς δ' ἄλλοις πλείοσι. καὶ
 ἡμῖν οὖν συγγνώμην . . . καὶ οὐ δυσχεραίνειν δεῖ παρὰ
 τῶν τοιούτων μεταφέρουσι τὴν πολλὴν ἱστορίαν ἐάν
 τι πταίωμεν, ἀλλ' ἀγαπᾶν ἐὰν τὰ πλείω τῶν εἰρημέ-
 νων ἑτέροις ἄμεινον λέγωμεν ἢ τὰ παραλειφθέντα κατ' 15
 ἄγνοιαν προστιθῶμεν.

- 6 Περὶ δὲ Κουρήτων ἔτι καὶ τοιαῦτα λέγεται, τὰ μὲν
 ἐγγυτέρω ὄντα τῆς περὶ Αἰτωλῶν καὶ Ἀκαρνάνων
 ἱστορίας τὰ δ' ἀπωτέρω· ἐγγυτέρω μὲν τὰ τοιαῦτα
 οἷα προεῖρηται, ὅτι τὴν χώραν ἣ νῦν Αἰτωλία καλεῖται 20
 Κουρήτες ὥκουν, ἐλθόντες δ' οἱ Αἰτωλοὶ μετὰ Αἰτω-
 λοῦ τούτους ἐξέβαλον εἰς τὴν Ἀκαρνανίαν· καὶ ἔτι τὰ
 τοιαῦτα, ὅτι τὴν Πλευρωνίαν ὑπὸ Κουρήτων οἰκουμέ-
 νην καὶ Κουρήτιν προσαγορευομένην Αἰολεῖς ἐπελ-
 θόντες ἀφείλοντο, τοὺς δὲ κατέχοντας ἐξέβαλον. Ἀρ- 25
 χέμαχος δ' ὁ Εὐβοεύς φησι τοὺς Κουρήτας ἐν Χαλκίδι
 συνοικῆσαι, συνεχῶς δὲ περὶ τοῦ Αἰγλήντου πεδίου
 πολεμοῦντας, ἐπειδὴ οἱ πολέμιοι τῆς κόμης ἐδράτ-
 τουτο τῆς ἔμπροσθεν καὶ κατέσπων αὐτούς, ὅπισθεν
 κομῶντας γενέσθαι, τὰ δ' ἔμπροσθεν κείρεσθαι· διὸ 30
 καὶ Κουρήτας ἀπὸ τῆς κουρᾶς κληθῆναι· μετοικῆσαι
 δ' εἰς τὴν Αἰτωλίαν, καὶ κατασχόντας τὰ περὶ Πλευ-

ρῶνα χωρία τοὺς πέραν οἰκοῦντας τοῦ Ἀχελώου διὰ τὸ
 ἀκούρους φυλάττειν τὰς κεφαλὰς Ἀκαρνανας καλέσαι·
 ἐνιοι δ' ἀπὸ ἥρωος τοῦνομα σχεῖν ἐκάτερον τὸ φῦλον·
 οἱ δ' ἀπὸ τοῦ ὄρους τοῦ Κουρίου τοὺς Κουρήτας ὀνο-
 5 μασθῆναι τοῦ ὑπερκειμένου τῆς Πλευρωῶνος, εἶναι τε
 φῦλόν τι Αἰτωλικὸν τοῦτο, ὥς Ὅφριες καὶ Ἀγραίους
 καὶ Εὐρυτᾶνας καὶ ἄλλα πλείω. ὥς δ' εἴρηται, τῆς Αἰ-
 τωλίας δίχᾳ διηρημένης τὰ μὲν περὶ Καλυδῶνα τὸν
 Οἰνέα ἔχειν φασί, τῆς δὲ Πλευρωνίας μέρος μὲν τι καὶ
 10 τοὺς Πορθαονίδας ἔχειν τοὺς περὶ τὸν Ἄργιον, εἶπερ
 „ᾧκεον ἐν Πλευρωῶνι καὶ αἰπεινῇ Καλυδῶνι.“ ἐπι-C.466
 κρατεῖν μέντοι Θεστίου τῆς Πλευρωνίας, τὸν πενθε-
 ρὸν τοῦ Οἰνέως Ἀλθαίας δὲ πατέρα, ἡγούμενον τῶν
 Κουρήτων· πολέμου δ' ἐμπεσόντος τοῖς Θεστιάδαις
 15 πρὸς Οἰνέα καὶ Μελέαγρον, ὥς μὲν ὁ ποιητής „ἀμφι
 σὺδὸς κεφαλῇ καὶ δέσματι“ κατὰ τὴν περὶ τοῦ κᾶπρου
 μυθολογίαν, ὥς δὲ τὸ εἰκὸς περὶ μέρος τῆς χώρας,
 οὕτω δὴ λέγεται „Κουρήτες τ' ἐμάχοντο καὶ Αἰτωλοὶ
 „μενεχάρμαι.“ ταῦτα μὲν τὰ ἐγγυτέρω.
 20 Τὰ δ' ἀπωτέρω τῆς ὑποθέσεως ταύτης, ἄλλως δὲ 7
 διὰ τὴν ὁμωνυμίαν εἰς ταὐτὸν ὑπὸ τῶν ἱστορικῶν ἀγό-
 μενα, ἅπερ Κουρητικὰ μὲν καὶ περὶ Κουρήτων λέγε-
 ται, ὁμοίως ὥσπερ καὶ τὰ περὶ τῶν τὴν Αἰτωλίαν καὶ
 τὴν Ἀκαρνανίαν οἰκησάντων, ἐκείνων μὲν διαφέρει,
 25 ἔοικε δὲ μᾶλλον τῷ περὶ Σατύρων καὶ Σειληνῶν καὶ
 Βακχῶν καὶ Τιτύρων λόγῳ· τοιοῦτους γάρ τινας δαι-
 μονας ἢ προπόλους θεῶν τοὺς Κουρήτας φασιν οἱ πα-
 ραδόντες τὰ Κρητικὰ καὶ τὰ Φρυγία, ἱερουργίαις τισὶν
 ἐμπεπλεγμένα ταῖς μὲν μυστικαῖς ταῖς δ' ἄλλαις περὶ
 30 τε τὴν τοῦ Διὸς παιδοτροφίαν τὴν ἐν Κρήτῃ καὶ τοὺς
 τῆς μητρὸς τῶν θεῶν ὀργιασμοὺς ἐν τῇ Φρυγίᾳ καὶ
 τοῖς περὶ τὴν Ἰθὴν τὴν Τρωικὴν τόποις. τοσαύτη δ'

ἐστὶν ἐν τοῖς λόγοις τούτοις ποικιλία, τῶν μὲν τοὺς αὐ-
 τοὺς τοῖς Κουρήσι τοὺς Κορύβαντας καὶ Καβαίρους
 καὶ Ἰδαίους δακτύλους καὶ Τελχίνας ἀποφαινόντων,
 τῶν δὲ συγγενεῖς ἀλλήλων καὶ μικράς τινὰς αὐτῶν
 πρὸς ἀλλήλους διαφορὰς διαστελλομένων, ὥς δὲ τύπῳ 5
 εἰπεῖν καὶ κατὰ τὸ πλεόν; ἅπαντας ἐνθουσιαστικούς
 τινὰς καὶ βακχικούς καὶ ἐνοπλίῳ κινήσει μετὰ θο-
 ρύβου καὶ ψόφου καὶ κυμβάλων καὶ τυμπάνων καὶ
 ὄπλων, ἔτι δ' αὐλοῦ καὶ βοῆς ἐκπλήττοντας κατὰ τὰς
 ἱερουργίας ἐν σχήματι διακόνων, [ᾧς]τε καὶ τὰ ἱερὰ 10
 τρόπον τινὰ κοινοποιεῖσθαι ταῦτά τε καὶ τῶν Σαμο-
 θράκων καὶ τὰ ἐν Ἀθήνῃ καὶ ἄλλα πλείω διὰ τὸ τοὺς
 προπόλους λέγεσθαι τοὺς αὐτούς. ἔστι μὲν οὖν θεο-
 λογικὸς πᾶς ὁ τοιοῦτος τρόπος τῆς ἐπισκέψεως καὶ οὐκ
 ἀλλότριος τῆς τοῦ φιλοσόφου θεωρίας.

15

8 Ἐπεὶ δὲ δι' ὁμωνυμίαν τῶν Κουρήτων καὶ οἱ ἱστο-
 ρικοὶ συνήγαγον εἰς ἓν τὰ ἀνόμοια, οὐδ' ἂν αὐτὸς
 ὀκνήσαιμ' ἂν εἰπεῖν περὶ αὐτῶν ἐπὶ πλεόν ἐν παραβά-
 σει, προσθεὶς τὸν οἰκεῖον τῇ ἱστορίᾳ φυσικὸν λόγον.
 καίτοι τινὲς καὶ συνοικειοῦν βούλονται ταῦτ' ἐκαίνοις, 20
 καὶ τυχὸν ἴσως ἔχονται τινος πιθανοῦ· θηλυστολοῦν-
 τας γὰρ ὥς αἱ κόραι τοῦνομα σχεῖν τοῦτο τοὺς περὶ
 τὴν Αἰτωλίαν φασίν· εἶναι γὰρ καὶ τινὰ τοιοῦτον ξη-
 λον ἐν τοῖς Ἑλλήσι, καὶ Ἰάονας ἐλκεχίτωνας εἰρῆσθαι
 C.467[καὶ κρώβυλον καὶ τέττιγα ἐμπλέκεσθαι], καὶ τοὺς περὶ 25
 Λεωνίδα κτενιζομένους, ὅτ' ἐξήεσαν εἰς τὴν μάχην,
 καταφρονηθῆναι λέγουσιν ὑπὸ τῶν Περσῶν, ἐν δὲ τῇ
 μάχῃ θανυμασθῆναι. ἀπλῶς δ' ἡ περὶ τὰς κόμας φιλο-
 τεχνία συνέστηκε περὶ τε θρόψιν καὶ κουράν τριχός,
 ἄμφω δὲ κόραις καὶ κόροις ἐστὶν οἰκεία, ὥστε πλεονα- 30
 χῶς τὸ ἐτυμολογεῖν τοὺς Κουρήτας ἐν εὐπόρῳ κεῖται.
 εἰκὸς δὲ καὶ τὴν ἐνόπλιον ὄρχησιν ὑπὸ τῶν ἡσκημένων

οὕτω περὶ κόμην καὶ στολὴν πρῶτον εἰσαχθεῖσαν, ἐκεῖ-
νων Κουρήτων καλουμένων, παρασχεῖν πρόφασιν καὶ
τοῖς στρατιωτικωτέροις ἐτέρων καὶ τὸν βίον ἐνόπλιον
ἔχουσιν, ὥσθ' ὁμωνύμως καὶ αὐτοὺς Κουρήτας λεχθῇ-
5 ναι, τοὺς ἐν Εὐβοίᾳ λέγων καὶ Αἰτωλίᾳ καὶ Ἀκαρνανίᾳ.
καὶ Ὅμηρος δὲ τοὺς νέους στρατιώτας οὕτω προσηγό-
ρευσε, „κρινάμενος κούρητας ἀριστήας Παναχαιῶν, δῶ-
„ρα θοῆς παρὰ νηὸς ἐνεγκεῖν, ὅσς' Ἀχιλλῇ χθιζοὶ ὑπέ-
„στημεν“ καὶ πάλιν „δῶρα φέρον κούρητες Ἀχαιοί.“
10 περὶ μὲν οὖν τῆς τῶν Κουρήτων ἐτυμολογίας ταῦτα.

Τὸ δ' εἰς ἐν συμφέρεσθαι τὰ τοσαῦτα ὀνόματα καὶ 9
τὴν ἐνοῦσαν θεολογίαν ἐν τῇ περὶ αὐτῶν ἱστορίᾳ νῦν
ἐπισκεπτέον. κοινὸν δὴ τοῦτο καὶ τῶν Ἑλλήνων καὶ
τῶν βαρβάρων ἐστὶ τὸ τὰς ἱεροποιίας μετὰ ἀνέσεως
15 ἑορταστικῆς ποιεῖσθαι, τὰς μὲν σὺν ἐνθουσιασμῷ τὰς
δὲ χωρὶς, καὶ τὰς μὲν μετὰ μουσικῆς τὰς δὲ μὴ, καὶ τὰς
μὲν μυστικῶς τὰς δὲ ἐν φανερῷ· καὶ τοῦθ' ἡ φύσις
οὕτως ὑπαγορεύει. ἢ τε γὰρ ἄνεσις τὸν νοῦν ἀπάγει
ἀπὸ τῶν ἀνθρωπικῶν ἀσχολημάτων, * τὸν δὲ ὄντως
20 νοῦν τρέπει πρὸς τὸ θεῖον· ὃ τε ἐνθουσιασμός ἐπὶ-
πνευστὶν τινα θείαν ἔχειν δοκεῖ καὶ τῷ μαντικῷ γένει
πλησιάζειν· ἢ τε κρύψις ἡ μυστικὴ τῶν ἱερῶν σεμνο-
ποιεῖ τὸ θεῖον, μιμουμένη τὴν φύσιν αὐτοῦ φεύγου-
σαν ἡμῶν τὴν αἰσθησιν· ἢ τε μουσικὴ περὶ τε ὄρχησιν
25 οὔσα καὶ ὀρθμὸν καὶ μέλος ἡδονῇ τε ἅμα καὶ καλλι-
τεχνίᾳ πρὸς τὸ θεῖον ἡμᾶς συνάπτει κατὰ τοιαύτην
αἰτίαν. εὖ μὲν γὰρ εἴρηται καὶ τοῦτο, τοὺς ἀνθρώπους
τότε μάλιστα μιμεῖσθαι τοὺς θεοὺς ὅταν εὐεργετῶσιν·
ἅμεινον δ' ἂν λέγοι τις, ὅταν εὐδαιμονῶσι· τοιοῦτον

10. post ταῦτα: ἡ δὲ ἐνόπλι· ὅ. ἡ πυρρίχη δηλοῖ καὶ ὁ Πύρριχος, αὐτῆς ἀσκήσεως τῶν νέων καὶ τὰ στρατιωτικά.

δὲ τὸ χαίρειν καὶ τὸ ἐορτάζειν καὶ τὸ φιλοσοφεῖν καὶ μουσικῆς ἄπτεσθαι· μὴ γὰρ εἴ τις ἐκπτώσεις πρὸς τὸ χεῖρον [γε]γένηται, τῶν μουσικῶν εἰς ἡδυπαθείας τρε-
C.468 πόντων τὰς τέχνας ἐν τοῖς συμποσίοις καὶ θυμέλαις καὶ σκηναῖς καὶ ἄλλοις τοιούτοις, διαβαλλέσθω τὸ πρᾶγμα, 5 ἄλλ' ἢ φύσις ἢ τῶν παιδευμάτων ἐξεταζέσθω τὴν ἀρχὴν ἐνθ' ἐνδεέχουσα.

10 Καὶ διὰ τοῦτο μουσικὴν ἐκάλεσε Πλάτων καὶ ἔτι πρότερον οἱ Πυθαγόρειοι τὴν φιλοσοφίαν, καὶ καθ' ἁρμονίαν τὸν κόσμον συνεστάναι φασί, πᾶν τὸ μουσι- 10 κὸν εἶδος θεῶν ἔργον ὑπολαμβάνοντες. οὕτω δὲ καὶ αἱ Μοῦσαι θεαὶ καὶ Ἀπόλλων μουσηγέτης καὶ ἡ ποιητικὴ πᾶσα ὑμνητικὴ. ὡσαύτως δὲ καὶ τὴν τῶν ἡθῶν κατασκευὴν τῇ μουσικῇ προσνέμουσιν, ὥς πᾶν τὸ ἐπανορθωτικὸν τοῦ νοῦ τοῖς θεοῖς ἐγγὺς ὂν. οἱ μὲν οὖν 15 Ἕλληνες οἱ πλεῖστοι τῷ Διονύσῳ προσέθεσαν καὶ τῷ Ἀπόλλωνι καὶ τῇ Ἑκάτῃ καὶ ταῖς Μούσαις καὶ Δήμητρι, νῆ Δία, τὸ ὀργιαστικὸν πᾶν καὶ τὸ βακχικὸν καὶ τὸ χορικὸν καὶ τὸ περὶ τὰς τελετὰς μυστικόν, Ἰακχόν τε καὶ τὸν Διόνυσον καλοῦσι καὶ τὸν ἀρχηγέτην τῶν 20 μυστηρίων, τῆς Δήμητρος δαίμονα· δένδροφορίαι τε καὶ χορεῖαι καὶ τελεταὶ κοινὰ τῶν θεῶν εἰσι τούτων· αἱ δὲ Μοῦσαι καὶ ὁ Ἀπόλλων αἱ μὲν τῶν χορῶν προε-
σταῖσιν ὁ δὲ καὶ τούτων καὶ τῶν κατὰ μαντικὴν· πρό-
πολοι δὲ τῶν Μουσῶν οἱ πεπαιδευμένοι πάντες, καὶ 25 ἰδίως οἱ μουσικοί, τοῦ δ' Ἀπόλλωνος οὗτοί τε καὶ οἱ περὶ μαντικὴν, Δήμητρος δὲ οἷ τε μύσται καὶ δαδούχοι καὶ ἱεροφάνται, Διονύσου δὲ Σειληνοί τε καὶ Σάτυροι καὶ Τίτυροι καὶ Βάκχαι, Αἰῆναι τε καὶ Θυῖαι καὶ Μι-
μαλλόνες καὶ Ναῖδες καὶ Νύμφαι προσαγορευόμεναι. 30

11 Ἐν δὲ τῇ Κρήτῃ καὶ ταῦτα καὶ τὰ τοῦ Διὸς ἱερὰ ἰδίως ἐπετελεῖτο μετ' ὀργιασμοῦ καὶ τοιούτων προπό-

λων οἱοι περὶ τὸν Διόνυσόν εἰσιν οἱ Σάτυροι· τούτους
 δ' ὠνόμαζον Κουρῆτας, νέους τινας ἐνόπλιον κίνησιν
 μετ' ὀρχήσεως ἀποδιδόντας, προστησάμενοι μῦθον
 τὸν περὶ τῆς τοῦ Διὸς γενέσεως, ἐν ᾧ τὸν μὲν Κρόνον
 5 εἰσάγουσιν εἰδισμένον καταπίνειν τὰ τέκνα ἀπὸ τῆς
 γενέσεως εὐθύς, τὴν δὲ Ῥέαν πειρωμένην ἐπικρύπτε-
 σθαι τὰς ὠδῖνας καὶ τὸ γεννηθὲν βρέφος ἐκποδῶν ποι-
 εῖν καὶ περισώζειν εἰς δύναμιν, πρὸς δὲ τοῦτο συνε-
 γοὺς λαβεῖν τοὺς Κουρῆτας, οἳ μετὰ τυμπάνων καὶ
 10 τοιούτων ἄλλων ψόφων καὶ ἐνοπλίου χορείας καὶ θο-
 ρύβου περιέποντες τὴν θεὸν ἐκπλήξειν ἔμελλον τὸν
 Κρόνον καὶ λήσειν ὑποσπάσαντες αὐτοῦ τὸν παῖδα, τῇ
 δ' αὐτῇ ἐπιμελείᾳ καὶ τρεφόμενον ὑπ' αὐτῶν παραδί-
 δοσθαι· ὥσθ' οἱ Κουρῆτες ἦτοι διὰ τὸ νέοι καὶ κόροι
 15 ὄντες ὑπουργεῖν ἢ διὰ τὸ κουροτροφεῖν τὸν Δία (λέγε-
 ται γὰρ ἀμφοτέρως) ταύτης ἡξιώθησαν τῆς προσηγο-
 ρίας, οἷονεὶ Σάτυροί τινες ὄντες περὶ τὸν Δία. οἱ μὲν C. 469
 οὖν Ἕλληνες τοιοῦτοι περὶ τοὺς ὀργιασμούς.

Οἱ δὲ Βερέκυντες Φρυγῶν τι φῦλον καὶ ἀπλῶς οἱ 12
 20 Φρύγες καὶ τῶν Τρώων οἱ περὶ τὴν Ἰδην κατοικοῦντες
 Ῥέαν μὲν καὶ αὐτοὶ τιμῶσι καὶ ὀργιάζουσι ταύτῃ, μη-
 τέρα καλοῦντες θεῶν καὶ Ἀγδιστιν καὶ Φρυγίαν θεὸν
 μεγάλην, ἀπὸ δὲ τῶν τόπων Ἰδαίαν καὶ Δινδυμήνην
 καὶ Σιπυληνὴν καὶ Πεσσινουντίδα καὶ Κυβέλην [καὶ
 25 Κυβήβην]. οἱ δ' Ἕλληνες τοὺς προπόλους αὐτῆς ὁμο-
 νύμως Κουρῆτας λέγουσιν, οὐ μὴν γε ἀπὸ τῆς αὐτῆς
 μυθοποιίας, ἀλλ' ἑτέρους ὡς ἂν ὑπουργοὺς τινας, τοῖς
 Σατύροις ἀνὰ λόγον· τοὺς δ' αὐτοὺς καὶ Κορύβαντας
 καλοῦσι.

30 Μάρτυρες δ' οἱ ποιηταὶ τῶν τοιούτων ὑπονοειῶν· 13
 ὅ τε γὰρ Πίνδαρος ἐν τῷ διθυράμβῳ οὗ ἡ ἀρχή „πρὶν
 „μὲν εἶρπε σχοινοτένεια τ' αἰοιδὰ διθυράμβων,“ μνη-

σθεῖς τῶν περὶ τὸν Διόνυσον ὕμνων τῶν τε παλαιῶν
καὶ τῶν ὕστερον, μεταβὰς ἀπὸ τούτων φησί, „σοὶ μὲν
„κατάρχειν, μαῖτερ' μεγάλα, πᾶρα ῥόμβοι κυμβάλων,
„ἐν δὲ κεχλάδειν κρόταλ', αἰθομένα τε δᾶς ὑπὸ ξαν-
„θαῖσι πεύκαις,“ τὴν κοινωνίαν τῶν περὶ τὸν Διόνυ- 5
σον ἀποδειχθέντων νομίμων παρὰ τοῖς Ἑλλησι καὶ τῶν
παρὰ τοῖς Φρυγῇ περὶ τὴν μητέρα τῶν θεῶν συνοί-
κειῶν ἀλλήλοις. Εὐριπίδης τε ἐν ταῖς Βάκχαις τὰ πα-
ραπλήσια ποιεῖ, τοῖς Φρυγίοις ἅμα καὶ τὰ Λύδια συμ-
φέρων διὰ τὸ ὁμορον „ἀλλ' ὧ λιποῦσαι Τρωῶλον, ἔρυμα 10
„Λυδίας, θίλασος ἐμὸς γυναιῖκες, [ἄς ἐκ βαρβάρων ἐκό-
„μισα παρέδρους καὶ ξυνεμπόρους ἐμοί, αἰρεσθε τὰ-
„πιχῶρι' ἐν πόλει Φρυγῶν τύμπανα, ῥέας τε μητρὸς
„ἐμὰ δ' εὐρήματα.“] καὶ πάλιν „ὦ μάκαρ, ὅστις εὐδαί-
„μων [τελετὰς θεῶν εἰδώς], βιοτὰν ἀγιστεύει. τὰ τε 15
„ματρὸς μεγάλας ὄργια Κυβέλας θεμιστεύων ἀνὰ θύρ-
„σον τε τινάσσων, κισσῶ [τε] στεφανωθεὶς [Διόνυ-
„σον] θεραπένει. ἴτε Βάκχαι, [ἴτε Βάκχαι,] βρόμιον
„παῖδα θεὸν θεοῦ Διόνυσον κατάγουσαι Φρυγίων ἐξ
„ὀρέων Ἑλλάδος εἰς εὐρυχόρους ἀγνιάς.“ πάλιν δ' 20
ἐν τοῖς ἐξῆς καὶ τὰ Κρητικὰ συμπλέκει τούτοις „ὦ θα-
„λάμευμα Κουρήτων, ξάθεοί τε Κρήτας διογενέτορες
„ἔναυλοι, ἐνθα τρικόρυθες ἄντροις βυρσότονον κύ-
C.470 „κλωμα τόδε μοι Κορύβαντες εὐρον. ἀνὰ δὲ βακχεῖα
„συντόνῳ κέρασαν ἀδυβόα Φρυγίων ἀνλῶν πνεύματι, 25
„ματρὸς τε ῥέας εἰς χέρα θῆκαν κτύπον εὐάσμασι
„Βακχᾶν, παρὰ δὲ μαινόμενοι Σάτυροι ματέρος ἐξα-
„νύσαντο ῥέας. εἰς δὲ χορεύματα προσήψαν τριετη-
„ρίδων, αἷς χαίρει Διόνυσος.“ καὶ ἐν Παλαμήδει φη-
σὶν ὁ χορὸς „οὐ σὺν Διονύσῳ * κωμᾶν, ὅς ἄν' Ἰδαν 30
„τέρπεται σὺν ματρὶ φίλα τυμπάνων ἰάκχοις.“

γοντες εἰς ἕν καὶ εὐρετὰς αὐλῶν ἱστοροῦντες πάλιν
καὶ οὕτως τὰ Διονυσιακὰ καὶ Φρυγία εἰς ἕν συμφέ-
ρουσι, τὴν τε Ἰδην καὶ τὸν Ὀλυμπον συγκεχυμένως
πολλάκις ὥς τὸ αὐτὸ ὄρος κτυποῦσιν. εἰσὶ μὲν οὖν λό-
5 φοι τέτταρες Ὀλυμποὶ καλούμενοι τῆς Ἰδης κατὰ τὴν
Ἀντανδρίαν, ἔστι δὲ καὶ ὁ Μυσὸς Ὀλυμπος, ὁμορος
μὲν οὐχ ὁ αὐτὸς δὲ τῇ Ἰδῇ. ὁ δ' οὖν Σοφοκλῆς ποιή-
σας τὸν Μενέλαον ἐκ τῆς Τροίας ἀπαίρειν σπεύδοντα
ἐν τῇ Πολυξένῃ, τὸν δ' Ἀγαμέμνονα μικρὸν ὑπολει-
10 πθεῖναι βουλόμενον τοῦ ἐξιλάσασθαι τὴν Ἀθηναῖαν χά-
ριν, εἰσάγει λέγοντα τὸν Μενέλαον „σὺ δ' αὖθι μί-
„μνων που κατ' Ἰθαίαν χθόνα ποίμνας Ὀλύμπου συν-
„αγαγὼν θνηπόλει.“

Τῷ δ' αὐλῷ καὶ κτύπῳ κροτάλων τε καὶ κυμβά- 15
λων καὶ τυμπάνων καὶ ταῖς ἐπιβοήσεσι καὶ εὐασμοῖς
καὶ ποδοκρουστίαις οἵκετα ἐξεύροντο καὶ τινα τῶν
ὀνομάτων, ἃ τοὺς προπόλους καὶ χορευτὰς καὶ θερα-
πευτὰς τῶν ἱερῶν ἐκάλουν, Καβείρους καὶ Κορύβαν-
τας καὶ Πᾶνας καὶ Σατύρους καὶ Τιτύρους καὶ τὸν
20 θεὸν Βάκχον καὶ τὴν Πέαν Κυβέλην καὶ Κυβήβην καὶ
Δινδυμήνην κατὰ τοὺς τόπους αὐτούς. καὶ ὁ Σαβά-
ξιος δὲ τῶν Φρυγιακῶν ἔστι καὶ τρόπον τινὰ τῆς μη-
τροῦς τὸ παιδίον παραδοὺς τὰ τοῦ Διονύσου καὶ αὐτός.

Τούτοις δ' ἔοικε καὶ τὰ παρὰ τοῖς Ὁραξὶ τὰ τε Κο- 16
25 τύττια καὶ τὰ Βενδίθεια, παρ' οἷς καὶ τὰ Ὀρφικά τὴν
καταρχὴν ἔσχε. τῆς μὲν οὖν Κότυος τῆς ἐν τοῖς Ἥδω-
νοῖς Αἰσχύλος μέμνηται καὶ τῶν περὶ αὐτὴν ὀργάνων.
εἰπὼν γάρ „σεμνὰ Κότυς“ ἐν τοῖς Ἥδωνοῖς „ὄρεια δ'
„ὄργαν' ἔχοντες,“ τοὺς περὶ τὸν Διόνυσον εὐθέως
30 ἐπιφέρει „ὁ μὲν ἐν χερσὶν βόμβυκας ἔχων, τύρνου
„κάματον, δακτυλόδικτον πῶμπλησι μέλος, μανίας
„ἐπαγωγὸν ὁμοκλάν· ὁ δὲ χαλκοδέτοις κοτύλαις ὀτο-

- C.471, βε. “καὶ πάλιν „ψαλμὸς δ’ ἀλαλάζει· ταυρόφθογγοι
 „δ’ ὑπομυκῶνται ποθὲν ἐξ ἀφανοῦς φοβεροὶ μῆμοι,
 „τυπάνου δ’ εἰκὼν ὥσθ’ ὑπογαίου βροντῆς φέρεται
 „βαρυταρβής.“ ταῦτα γὰρ ἔοικε τοῖς Φρυγίοις· καὶ
 οὐκ ἀπεικός γε, ὥσπερ αὐτοὶ οἱ Φρύγες Θρακῶν ἄποι- 5
 κοὶ εἰσιν, οὕτω καὶ τὰ λερά ἐκείθεν μετενηνέχθαι. καὶ
 τὸν Διόνυσον δὲ καὶ τὸν Ἡδωνὸν Ἀνκουργον συνά-
 γοντες εἰς ἓν τὴν ὁμοιοτροπίαν τῶν λερῶν αἰνίττονται.
- 17 Ἀπὸ δὲ τοῦ μέλους καὶ τοῦ ῥυθμοῦ καὶ τῶν ὀρ-
 γάνων καὶ ἡ μουσικὴ πᾶσα Θρακία καὶ Ἀσιᾶτις νενό- 10
 μισται. δῆλον δ’ ἐκ τε τῶν τόπων ἐν οἷς αἱ Μοῦσαι
 τετίμηνται· Πιερία γὰρ καὶ Ὀλυμπος καὶ Πίμπλα καὶ
 Λεῖβηθρον τὸ παλαιὸν ἦν Θράκεια χωρία καὶ ὄρη, νῦν
 δὲ ἔχουσι Μακεδόνες· τὸν τε Ἐλικῶνα καθιέρωσαν
 ταῖς Μούσαις Θραῖκες οἱ τὴν Βοιωτίαν ἐποικῆσαντες, 15
 οἵπερ καὶ τὸ τῶν Λεῖβηθριάδων νυμφῶν ἄντρον κα-
 θιέρωσαν. οἳ τ’ ἐπιμεληθέντες τῆς ἀρχαίας μουσικῆς
 Θραῖκες λέγονται, Ὀρφεὺς τε καὶ Μουσαῖος καὶ Θάμυ-
 ρις, καὶ τῷ Εὐμόλπῳ δὲ τοῦνομα ἐνθένδε, καὶ οἱ τῷ
 Διονύσῳ τὴν Ἀσίαν ὅλην καθιερώσαντες μέχρι τῆς 20
 Ἰνδικῆς ἐκείθεν καὶ τὴν πολλὴν μουσικὴν μεταφέρου-
 σι· καὶ ὁ μὲν τίς φησὶν „κιδάραν Ἀσιᾶτιν ῥάσσων,“ ὁ
 δὲ τοὺς αὐλοὺς Βερεκυντίους καλεῖ καὶ Φρυγίους· καὶ
 τῶν ὀργάνων ἕνια βαρβάρως ὠνόμασται νάβλας καὶ
 σαμβύκη καὶ βάρβιτος καὶ μαγάδις καὶ ἄλλα πλείω. 25
- 18 Ἀθηναῖοι δ’ ὥσπερ περὶ τὰ ἄλλα φιλοξενοῦντες
 διατελοῦσιν, οὕτω καὶ περὶ τοὺς θεοὺς. πολλὰ γὰρ
 τῶν ξενικῶν λερῶν παρεδέξαντο ὥστε καὶ ἐκωμωδή-
 θησαν· καὶ δὴ καὶ τὰ Θράκεια καὶ τὰ Φρύγια. τῶν μὲν
 γὰρ Βενδιδείων Πλάτων μέμνηται, τῶν δὲ Φρυγίων 30
 Δημοσθένους διαβάλλων τὴν Αἰσχίνου μητέρα καὶ αὐ-
 τὸν ὡς τελούσῃ τῇ μητρὶ συνόντα καὶ συνδιασεύοντα

καὶ ἐπιφθεγγόμενον „εὐοῖ σαβοῦ“ πολλάκις καὶ „ῥης
„ἄττης [ἄττης] ῥης.“ ταῦτα γὰρ ἐστὶ σαβάζια καὶ
μητροῶα.

Ἔτι δ' ἂν τις καὶ ταῦτα [εὔροι] περὶ τῶν δαιμόνων 19
5 τούτων καὶ τῆς τῶν ὀνομάτων ποικιλίας, καὶ ὅτι οὐ
πρόπολοι θεῶν μόνον ἀλλὰ καὶ αὐτοὶ θεοὶ προσηγο-
ρεύθησαν. Ἡσίودος μὲν γὰρ *Ἐκτέρω καὶ τῆς Φο-
ρωνέως θυγατρὸς πέντε γενέσθαι θυγατέρας φησὶν
„ἔξ ὧν οὔρειαι Νύμφαι θεαὶ [ἔξ]εγένοντο, καὶ γένος
10 „οὔτιδανῶν Σατύρων καὶ ἀμμηανοεργῶν, Κουρῆτες
„τε θεοὶ φιλοπαίγμονες ὀρχηστῆρες.“ ὁ δὲ τὴν Φο-
ρωνίδα γράψας αὐλητὰς καὶ Φρύγας τοὺς ΚουρῆταςC.472
λέγει, ἄλλοι δὲ γηγενεῖς καὶ χαλκάσπιδας· οἱ δ' οὐ
τοὺς Κουρῆτας, ἀλλὰ τοὺς Κορύβαντας Φρύγας, ἐκεί-
15 νους δὲ Κρηῆτας, περιθέσθαι δ' ὅπλα χαλκᾶ πρώτους
ἐν Εὐβοίᾳ· διὸ καὶ Χαλκιδέας αὐτοὺς κληθῆναι· οἱ
δ' ὑπὸ Τιτάνων Ῥέα δοθῆναι προπόλους ἐνόπλους
τοὺς Κορύβαντας ἐκ τῆς Βακτριανῆς ἀφιγμένους, οἱ
δ' ἐκ Κόλχων φασὶν. ἐν δὲ τοῖς Κρητικοῖς λόγοις οἱ
20 Κουρῆτες Διὸς τροφεῖς λέγονται καὶ φύλακες, εἰς
Κρήτην ἐκ Φρυγίας μεταπεμφθέντες ὑπὸ τῆς Ῥέας· οἱ
δὲ Τελχίνων ἐν Ῥόδῳ ἐννέα ὄντων τοὺς Ῥέα συνακο-
λουθήσαντας εἰς Κρήτην καὶ τὸν Δία κουροτροφήσαν-
τας Κουρῆτας ὀνομασθῆναι· Κύρβαντα δὲ τούτων
25 ἑταῖρον Ἱεραπύτνης ὄντα κτίστην παρὰ τοῖς Ῥοδίοις
παρασχεῖν πρόφασιν τοῖς Πρασίοις ὥστε λέγειν, ὡς
εἶεν Κορύβαντες δαίμονες τινες Ἀθηναῖς καὶ Ἥλιου
παῖδες. ἔτι δὲ Κρόνου τινές, ἄλλοι δὲ Διὸς καὶ Καλ-
λιόπης φασὶ τοὺς Κορύβαντας τοὺς αὐτοὺς τοῖς Κα-
30 βείοις ὄντας, ἀπελθεῖν δὲ τούτους εἰς Σαμοθράκην

28. post τινές: τοὺς Κορύβαντας

καλουμένην πρότερον *Μελίτην*, τὰς δὲ πράξεις αὐτῶν μυστικὰς εἶναι.

- 20 Ταῦτα δ' οὐκ ἀπόδεξάμενος ὁ Σκήψιος ὁ τοὺς μύθους συναγαγὼν τούτους, ὥς μηδενὸς ἐν Σαμοθράκῃ μυστικοῦ λόγου περὶ Καβείρων λεγομένου, παρατίθη- 5 σιν ὁμοίως καὶ Στησιμβρότου τοῦ Θασίου δόξαν, ὥς τὰ ἐν Σαμοθράκῃ ἱερὰ τοῖς Καβείροις ἐπιτελοῖτο· καλεῖσθαι δέ φησιν αὐτοὺς ἐκαῖνος ἀπὸ τοῦ ὄρους τοῦ ἐν τῇ Βερεκυντία Καβείρου. οἱ δ' Ἐκάτης προπόλους νομίζουσι τοὺς Κουρήτας τοὺς αὐτοὺς τοῖς Κορύβα- 10 σιν ὄντας. φησὶ δὲ πάλιν ὁ Σκήψιος ἐν τῇ Κρήτῃ τὰς τῆς Ῥέας τιμὰς μὴ νομίζεσθαι μηδὲ ἐπιχωριά- ξειν, ὑπεναντιούμενος τῷ τοῦ Εὐριπίδου λόγῳ, ἀλλ' ἐν τῇ Φρυγίᾳ μόνον καὶ τῇ Τρωάδι, τοὺς δὲ λέγοντας μυθολογεῖν μᾶλλον ἢ ἱστορεῖν, πρὸς τοῦτο δὲ καὶ τὴν 15 τῶν τόπων ὁμωνυμίαν συμπράξει τυχὸν ἴσως αὐτοῖς· Ἰδη γὰρ τὸ ὄρος τό τε Τρωικὸν καὶ τὸ Κρητικόν, καὶ Δίκτη τόπος ἐν τῇ Σκηψίᾳ καὶ ὄρος ἐν Κρήτῃ· τῆς δὲ Ἰδης λόφος Πύτνα... ἀφ' οὗ Ἱεράπυτνα ἢ πόλις, Ἱποκόρωνα τε τῆς Ἀδραμυττηνῆς καὶ Ἱπποκορώνιον ἐν 20 Κρήτῃ, Σαμῳνιόν τε τὸ ἐσθινὸν ἀκρωτήριον τῆς νήσου καὶ πεδῖον ἐν τῇ Νεανδρίδι καὶ τῇ Ἀλεξανδρέων.

- 21 Ἀκουσίλαος δ' ὁ Ἀργεῖος ἐκ Καβειροῦς καὶ Ἡφαίστου Κάμιλλον λέγει, τοῦ δὲ τρεῖς Καβείρους, * οἷς νύμφας Καβειρίδας· Φερεκύδης δ' ἐξ Ἀπόλλωνος καὶ 25 Ῥητίας Κύρβαντας ἐννέα, οἰκῆσαι δ' αὐτοὺς ἐν Σαμοθράκῃ· ἐκ δὲ Καβειροῦς τῆς Πρωτέως καὶ Ἡφαίστου Καβείρους τρεῖς καὶ νύμφας τρεῖς Καβειρίδας, C.473 ἐκατέρους δ' ἱερὰ γίνεσθαι. μάλιστα μὲν οὖν ἐν Ἰμβρῳ καὶ Ἀήμνῳ τοὺς Καβείρους τιμᾶσθαι συμβέβη- 30 κεν, ἀλλὰ καὶ ἐν Τροίᾳ κατὰ πόλεις· τὰ δ' ὀνόματα αὐτῶν ἐστὶ μυστικά. Ἡρόδοτος δὲ καὶ ἐν Μέμφει λέ-

γει τῶν Καβείρων ἱερὰ καθάπερ καὶ τοῦ Ἡφαίστου, διαφθεῖραι δ' αὐτὰ Καμβύσην. ἔστι δ' αἰοίκητα τὰ χωρία τῆς τῶν δαιμόνων τούτων τιμῆς, τό τε Κορυβαντεῖον τὸ ἐν τῇ Ἀμαξιτίᾳ τῆς νῦν Ἀλεξανδρέων χώρας ἐγγὺς τοῦ Σμινθίου, καὶ ἡ Κορύβισσα ἐν τῇ Σκηψίᾳ περὶ ποταμὸν Εὐρῆεντα καὶ κώμην ὁμώνυμον καὶ ἔτι χείμαρρον Αἰθαλόεντα. πιθανὸν δὲ φησιν ὁ Σκήψιος, Κουρῆτας μὲν καὶ Κορύβαντας εἶναι τοὺς αὐτούς, οἱ περὶ τὰς τῆς μητρὸς τῶν θεῶν ἀγιστείας πρὸς
 5 ἐνόπλιον ὀρχησιν ἦθροι καὶ κόροι τυγχάνουσι παρρηλημμένοι. καὶ Κορύβαντες δὲ ἀπὸ τοῦ κορύπτοντας βαλνῆναι ὀρχηστικῶς, οὓς καὶ βητάρμονας λέγει ὁ ποιητής „δεῦτ' ἄγε Φαιήκων βητάρμονες, ὅσσοι ἄριστοι.“ τῶν δὲ Κορυβάντων ὀρχηστικῶν καὶ ἐνθουσιαστικῶν
 10 ὄντων καὶ τοὺς μανικῶς κινουμένους κορυβαντιᾶν φραμεν.

Δακτύλους δ' Ἰθαίους φασί τινες κεκλησθαι τοὺς 22 πρῶτους οἰκήτορας τῆς κατὰ τὴν Ἰδην ὑπωρείας· πόδας μὲν γὰρ λέγεσθαι τὰς ὑπωρείας, κορυφὰς δὲ τὰ
 20 ἄκρα τῶν ὄρων· αἱ οὖν κατὰ μέρος ἐσχατιαὶ καὶ πᾶσαι τῆς μητρὸς τῶν θεῶν ἱερὰ περὶ τὴν Ἰδην..... Σοφοκλῆς δὲ οἶεται πέντε τοὺς πρῶτους ἄρσενας γενέσθαι, οἱ σίδηρόν τε ἐξεῦρον καὶ εἰργάσαντο πρῶτοι
 * καὶ ἄλλα πολλὰ τῶν πρὸς τὸν βίον χρησίμων, πέντε
 25 δὲ καὶ ἀδελφὰς τούτων, ἀπὸ δὲ τοῦ ἀριθμοῦ δακτύλους κληθῆναι. ἄλλοι δ' ἄλλως μυθεύουσιν ἀπόροις ἄπορα συνάπτοντες, διαφοροῖς δὲ καὶ τοῖς ὀνόμασι καὶ τοῖς ἀριθμοῖς χρῶνται, ὧν Κέλμιν ὀνομάζουσι
 30 τίνα καὶ Δαμναμενέα καὶ Ἡρακλέα καὶ Ἀκμονα· καὶ οἱ μὲν ἐπιχωρίους τῆς Ἰδης οἱ δὲ ἐποίκους, πάντες δὲ σίδηρον εἰργάσθαι ὑπὸ τούτων ἐν Ἰδῇ πρῶτόν φασι, πάντες δὲ καὶ γόητας ὑπειλήφασιν καὶ περὶ τὴν μητέρα

τῶν θεῶν καὶ ἐν Φρυγίᾳ ᾠκηκότας περὶ τὴν Ἰδην, Φρυγίαν τὴν Τρωάδα καλοῦντες διὰ τὸ τοὺς Φρύγας ἐπικρατῆσαι πλησιοχώρους ὄντας τῆς Τροίας ἐκπεπορημένης. ὑπονοοῦσι δὲ τῶν Ἰδαίων δακτύλων ἐκρό-
 νους εἶναι τοὺς τε Κουρῆτας καὶ τοὺς Κορύβαντας· 5
 τοὺς γοῦν πρώτους γεννηθέντας ἐν Κρήτῃ ἑκατὸν ἄν-
 δρας Ἰδαίους δακτύλους κληθῆναι, τούτων δ' ἀπο-
 γόνους φασὶ Κουρῆτας ἐννέα γενέσθαι, τούτων δ'
 ἕκαστον δέκα παῖδας τεκνωῖσαι τοὺς Ἰδαίους καλουμέ-
 νους δακτύλους.

C.474

10

23

Προήχθημεν δὲ διὰ πλειόνων εἰπεῖν περὶ τούτων καίπερ ἥκιστα φιλομυθοῦντες, ὅτι τοῦ θεολογικοῦ γένους ἐφάπτεται τὰ πράγματα ταῦτα. πᾶς δὲ ὁ περὶ τῶν θεῶν λόγος ἀρχαίας ἐξετάζει δόξας καὶ μύθους, αἰνιττομένων τῶν παλαιῶν ἃς εἶχον ἐννοίας φυσικὰς 15 περὶ τῶν πραγμάτων καὶ προστιθέντων αἰετοῖς λόγοις τὸν μῦθον. ἅπαντα μὲν οὖν τὰ αἰνίγματα λύειν ἐπ' ἀκριβὲς οὐ ῥάδιον, τοῦ δὲ πλήθους τῶν μυθευομένων ἐκτεθέντος εἰς τὸ μέσον, τῶν μὲν ὁμολογούντων ἀλλήλοις τῶν δ' ἐναντιουμένων, εὐπορώτερον 20 ἂν τις δύναιτο εἰκάξειν ἐξ αὐτῶν ἀληθές· οἷον τὰς ὀρειβασίας τῶν περὶ τὸ θεῖον σπουδαζόντων καὶ αὐτῶν τῶν θεῶν καὶ τοὺς ἐνθουσιασμοὺς εἰκότως μυθεύουσι κατὰ τὴν αὐτὴν αἰτίαν καθ' ἣν καὶ οὐρανίους· νομίζουσι τοὺς θεοὺς καὶ προνοητικούς τῶν τε ἄλλων 25 καὶ τῶν προσημασιῶν· τῇ μὲν οὖν ὀρειβασίᾳ τὸ μεταλλευτικὸν καὶ τὸ θηρευτικὸν [καὶ] ζητητικὸν τῶν πρὸς τὸν βίον χρησίμων ἐφάνη συγγενές, τῶν δ' ἐνθουσιασμῶν καὶ θρησκείας καὶ μαντικῆς τὸ ἀγυρτικὸν καὶ γοητεία ἐγγύς. τοιοῦτον δὲ καὶ τὸ φιλότεχνον μά- 30 λιστα τὸ περὶ τὰς Διονυσιακὰς τέχνας καὶ τὰς Ὀρφικάς. ἀλλ' ἀπόκρη περὶ αὐτῶν.

Ἐπεὶ δὲ πρῶτον περὶ τῶν τῆς Πελοποννήσου νή- 4
 σων τῶν τε ἄλλων διηλθον καὶ τῶν ἐν τῷ Κορινθιακῷ
 κόλπῳ καὶ τῶν πρὸ αὐτοῦ, περὶ τῆς Κρήτης ἐφεξῆς
 ῥητέον (καὶ γὰρ αὕτη τῆς Πελοποννήσου ἐστί) καὶ εἴ
 5 τις περὶ τὴν Κρήτην· ἐν δὲ ταύταις αἱ τε Κυκλάδες
 εἰσι καὶ αἱ Σποράδες, αἱ μὲν ἄξιαί μνήμης αἱ δ' ἀση-
 μότεραι.

Νυνὶ δὲ περὶ τῆς Κρήτης πρῶτον λέγωμεν. Εὖ- 2
 δοξος μὲν οὖν ἐν τῷ Αἰγαίῳ φησὶν αὐτὴν ἰδρῦσθαι·
 10 δεῖ δὲ μὴ οὕτως, ἀλλὰ κεῖσθαι μὲν μεταξὺ τῆς Κυρη-
 ναίας καὶ τῆς Ἑλλάδος τῆς ἀπὸ Σουνίου μέχρι τῆς Λα-
 κωνικῆς, ἐπὶ μῆκος ταύταις ταῖς χώραις παράλληλον
 ἀπὸ τῆς ἐσπέρας ἐπὶ τὴν ἕω· κλύζεσθαι δὲ ἀπὸ μὲν
 τῶν ἄρκτων τῷ Αἰγαίῳ πελάγει καὶ τῷ Κρητικῷ, ἀπὸ
 15 δὲ τοῦ νότου τῷ Αἰβυκῷ τῷ συνάπτουντι πρὸς τὸ Αἰ-
 γύπτιον πέλαγος. τῶν δὲ ἄκρων τὸ μὲν ἐσπερίον ἐστί
 τὸ περὶ Φαλάσαρνα, πλάτος ἔχον διακοσίων ποντα-
 δίων καὶ εἰς δύο ἄκρωτήρια μεριζόμενον (ὧν τὸ μὲν
 νότιον καλεῖται Κριοῦ μέτωπον τὸ δ' ἄρκτικὸν Κίμα-
 20 ρος), τὸ δ' ἑῷον τὸ Σαμῶνιόν ἐστιν ὑπερπίπτον τοῦ
 Σουνίου οὐ πολὺ πρὸς ἕω.

Μέγεθος δὲ Σωσικράτης μὲν, ὅν φησιν ἀκριβοῦν 3
 Ἀπολλόδωρος τὰ περὶ τὴν νῆσον, ἀφορίζειται μήκει
 . μὲν πλειόνων ἢ δισχιλίων σταδίων καὶ τριακοσίων, 0.475
 25 πλάτει δὲ *ὑπὸ τὸ μέγεθος, ὥσθ' ὁ κύκλος κατὰ τοῦ-
 τον γίνοιτ' ἂν πλέον ἢ πεντακισχίλιοι στάδιοι· Ἀρτε-
 μίδωρος δὲ τετρακισχιλίους καὶ ἑκατὸν φησιν. Ἰερῶ-
 νυμος δὲ μῆκος δισχιλίων φήσας τὸ δὲ πλάτος ἀνώμα-
 λον, πλειόνων ἂν εἴη λέγων τὸν κύκλον ἢ ὅσων Ἀρ-
 30 τεμίδωρος. κατὰ δὲ τὸ τρίτον μέρος τοῦ μήκους. . .

τὸ δὲ ἐνθεν ἰσθμὸς ἐστὶν ὥς ἑκατὸν σταδίων ἔχων κα-

τοικιαν πρὸς μὲν τῇ βορείῳ θαλάττῃ Ἀμφίμαλλαν, πρὸς δὲ τῇ νοτίῳ Φοίνικα τὸν Λαμπέων· πλατυτάτῃ δὲ κατὰ τὸ μέσον ἐστὶ, πάλιν δ' ἐντεῦθεν εἰς στενω-
τερον τοῦ προτέρου συμπέπτουσιν ἰσθμὸν αἱ ῥόες περὶ ἐξήκοντα σταδίων, τὸν ἀπὸ Μινώας τῆς Ἀντιίων 5
εἰς Ἰεράπυτναν καὶ τὸ Αἰβυκὸν πέλαγος· ἐν κόλπῳ δ' ἐστὶν ἡ πόλις. εἴτα πρόεισιν εἰς ὃξὺ ἀκρωτήριον τὸ Σα-
μώνιον ἐπὶ τὴν Αἴγυπτον νεῦον καὶ τὰς Ῥοδίων νήσους.

- 4 "Ἔστι δ' ὀρεινὴ καὶ δασεῖα ἡ νῆσος, ἔχει δ' αὐλῶ-
νας εὐκάρπους. τῶν δ' ὀρῶν τὰ μὲν πρὸς δύσιν κα- 10
λεῖται Λευκά, οὐ λειπόμενα τοῦ Ταῦρέτου κατὰ τὸ
ὕψος, ἐπὶ τὸ μῆκος δ' ἐκτεταμένα ὅσον τριακοσίων
σταδίων καὶ ποιοῦντα ῥάχιν τελευτῶσάν πως ἐπὶ τὰ
στενά. ἐν μέσῳ δ' ἐστὶ κατὰ τὸ εὐρυχωρότατον τῆς
νῆσου τὸ Ἰδαῖον ὄρος ὑψηλότατον τῶν ἐκεῖ, περιφε- 15
ρὲς δ' ἐν κύκλῳ σταδίων ἑξακοσίων· περιρικεῖται δ'
ὑπὸ τῶν ἀρίστων πόλεων. ἄλλα δ' ἐστὶ πάρισα τοῖς
Λευκοῖς, τὰ μὲν ἐπὶ νότον τὰ δ' ἐπὶ τὴν ἑω λήγοντα.

- 5 "Ἔστι δ' ἀπὸ τῆς Κυρηνάας ἐπὶ τὸ Κριοῦ μέτω-
πον δυεῖν ἡμερῶν καὶ νυκτῶν πλοῦς, ἀπὸ δὲ Κιμάρου 20
[ἐπὶ Ταίναρον] εἰςὶ στάδιοι ἑπτακόσιοι (μεταξὺ δὲ Κύ-
θηρα), ἀπὸ δὲ τοῦ Σαμωνίου πρὸς Αἴγυπτον τεττά-
ρων ἡμερῶν καὶ νυκτῶν πλοῦς, οἱ δὲ τριῶν φασὶ
σταδίων δ' εἶναι τοῦτόν τινες πεντακισχλίων εἰρήκα-
σιν, οἱ δὲ ἔτι ἐλάττωνων. Ἐρατοσθένης δ' ἀπὸ μὲν 25
τῆς Κυρηνάας μέχρι Κριοῦ μετώπου δισχιλίους φη-
σὶν, ἐνθεν δ' εἰς Πελοπόννησον ἐλάττους. . . .

- 6 „Ἀλλῃ δ' ἄλλων γλῶσσα μεμιγμένη“ φησὶν ὁ
ποιητής „ἐν μὲν Ἀχαιοί, ἐν δ' Ἑπεσόκητες μεγαλήτο-
„ρες, ἐν δὲ Κύδωνες, Δωριεὲς τε τριχάικες διότι τε 30
„Πελαγοί.“ τούτων φησὶ Στάφυλος τὸ μὲν πρὸς ἑω
Δωριεὺς κατέχειν, τὸ δὲ δυσμικὸν Κύδωνας, τὸ [δὲ]

νότιον Ἐτεόκρητας, ὧν εἶναι πολίχνιον Προῶσον, ὅπου
 τὸ τοῦ Δικταίου Διὸς ἱερόν· τοὺς δ' ἄλλους ἰσχύον-
 τας πλέον οἰκῆσαι τὰ πεδία. τοὺς μὲν οὖν Ἐτεόκρητας
 καὶ τοὺς Κύδωνας αὐτόχθονας ὑπάρξει εἰκός, τοὺς δὲ
 5 λοιποὺς ἐπήλυδας, οὓς ἐκ Θετταλίας φησὶν ἔλθειν Ἀν-
 δρων τῆς Δωριίδος μὲν πρότερον νῦν δὲ Ἑστιαιωτίδος
 λεγομένης· ἐξ ἧς ὠρμήθησαν, ὥς φησιν, οἱ περὶ τὸν
 Παρνασσὸν οἰκῆσαντες Δωριεῖς καὶ ἔκτισαν τὴν τε 0.476
 Ἐρινεὸν καὶ Βοιὸν καὶ Κυτίνιον, ἀφ' οὗ καὶ τριχάικες
 10 ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ λέγονται. οὐ πάνυ δὲ τὸν τοῦ Ἀν-
 δρωνος λόγον ἀποδέχονται, τὴν μὲν τετράπολιν Δω-
 ρίδα τρίπολιν ἀποφαίνοντος, τὴν δὲ μητρόπολιν τῶν
 Δωριέων ἀποικον Θετταλῶν· τριχάικας δὲ δέχονται
 ἦτοι ἀπὸ τῆς τριλοφίας ἢ ἀπὸ τοῦ τριχίνους εἶναι τοὺς
 15 λόφους.

Πόλεις δ' εἶδεν ἐν τῇ Κρήτῃ πλείους μὲν, μέγι- 7
 σται δὲ καὶ ἐπιφανέσταται τρεῖς, Κνωσσὸς Γόρτυνα
 Κυδωνία. διαφερόντως δὲ τὴν Κνωσσὸν καὶ Ὅμηρος
 ὑμνεῖ μεγάλην καλῶν καὶ βασίλειον τοῦ Μίνω καὶ οἱ
 20 ὕστερον. καὶ δὴ καὶ διετέλεσε μέχρι πολλοῦ φερομένη
 τὰ πρῶτα, εἶτα ἐταπεινώθη καὶ πολλὰ τῶν νομίμων
 ἀφηρέθη, μετέστη δὲ τὸ ἀξίωμα εἰς τε Γόρτυναν καὶ
 Ἀύττον, ὕστερον δ' ἀνέλαβε πάλιν τὸ παλαιὸν σχῆμα
 τὸ τῆς μητροπόλεως. κεῖται δ' ἐν πεδίῳ κύκλον ἔχουσα
 25 ἡ Κνωσσὸς τὸν ἀρχαῖον τριάκοντα σταδίων, μεταξὺ
 τῆς Λυκτίας καὶ τῆς Γορτυνίας, [διέχουσα τῆς μὲν Γορ-
 τύνης] σταδίους διακοσίους, τῆς δὲ Ἀύττου, ἣν ὁ ποιη-
 τῆς Ἀύκτον ὠνόμασεν, ἑκατὸν εἴκοσι· τῆς δὲ θαλάτ-
 τος Κνωσσὸς μὲν τῆς βορείου πέντε καὶ εἴκοσι, Γόρ-
 30 τυνα δὲ τῆς Διβυκῆς ἐνενηκοντα, Ἀύττος δὲ καὶ αὐτὴ

15. post λόφους: εὐαμισολόφος.
 STRABO II.

τῆς Λιβυκῆς ὀγδοήκοντα. ἔχει δ' ἐπίνειον τὸ Ἡρα-
κλειον ἢ Κνωσσός.

8 Μίνω δέ φασιν ἐπινείῳ χρήσασθαι τῷ Ἀμνισῷ,
ὅπου τὸ τῆς Εἰλειθυίας ἱερὸν. ἐκαλεῖτο δ' ἡ Κνωσσός
Καίρατος πρότερον ὁμώνυμος τῷ παραρρέοντι πο- 5
ταμῷ. ἰστόρηται δ' ὁ Μίνως νομοθέτης γενέσθαι
σπουδαῖος θαλαττοκρατῆσαί τε πρῶτος, τριχῇ δὲ διε-
λὼν τὴν νῆσον ἐν ἐκάστῳ τῷ μέρει κτίσαι πόλιν, τὴν
μὲν Κνωσσὸν ἐν τῷ

10

καταντικρὺ τῆς Πελοποννήσου· καὶ αὐτὴ δ' ἐστὶ προσ-
βόρειος. ὥς δ' εἴρηκεν Ἐφορος, ζηλωτῆς ὁ Μίνως
ἀρχαίου τινὸς Ῥαδαμάνθυος δικαιοτάτου ἀνδρὸς ὁμο-
νύμου τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, ὃς πρῶτος τὴν νῆσον ἐξη- 15
μερῶσαι δοκεῖ νομίμοις καὶ συνοικισμοῖς πόλεων καὶ
πολιτείαις, σκηψάμενος παρὰ Διὸς φέρειν ἕκαστα τῶν
τιθεμένων δογμάτων εἰς μέσον. τοῦτον δὲ μιμούμε-
νος καὶ ὁ Μίνως δι' ἐννέα ἐτῶν, ὥς ἔοικεν, ἀναβαί-
νων ἐπὶ τὸ τοῦ Διὸς ἄντρον καὶ διατρέβων ἐνθάδε, 20
ἀπῆει συντεταγμένα ἔχων παραγγέλματά τινα, ἃ ἔφα-
σκεν εἶναι προστάγματα τοῦ Διὸς· ἀφ' ἧς αἰτίας καὶ
τὸν ποιητὴν οὕτως εἰρηκέναι „ἐνθάδε Μίνως ἐννέω-
„ρος βασίλευε Διὸς μεγάλου ὀαριστῆς.“ τοιαῦτα δ'
εἰπόντος οἱ ἀρχαῖοι περὶ αὐτοῦ πάλιν ἄλλους εἰρήκασι 25
λόγους ὑπεναντίους τούτοις, ὥς τυραννικός τε γέ-

Ο.477 νοιτο καὶ βίαιος καὶ δασμολόγος, τραγῶδοντες τὰ
περὶ τὸν Μινώταυρον καὶ τὸν λαβύρινθον καὶ τὰ
Θησεῖ συμβάντα καὶ Δαιδάλῳ.

9 Ταῦτα μὲν οὖν ὁποτέρως ἔχει χαλεπὸν εἰπεῖν· 30
ἔστι δὲ καὶ ἄλλος λόγος οὐχ ὁμολογούμενος, τῶν μὲν
ξένων τῆς νῆσου τὸν Μίνω λεγόντων τῶν δ' ἐπιχώριον.

ὁ μέντοι ποιητὴς τῇ δευτέρᾳ δοκεῖ μᾶλλον συνηγορεῖν ἀποφάσει, ὅταν φῇ ὅτι [Ζεὺς] „πρῶτον Μίνωα τέκε „Κρήτη ἐπίουρον.“ ὑπὲρ τῆς Κρήτης ὁμολογεῖται διότι κατὰ τοὺς παλαιοὺς χρόνους ἐτύγγανεν εὐνομου-
 5 μένη καὶ ξηλωτὰς ἑαυτῆς τοὺς ἀρίστους τῶν Ἑλλήνων ἀπέφηνεν, ἐν δὲ τοῖς πρώτοις Λακεδαιμονίους, καθάπερ Πλάτων τε ἐν τοῖς νόμοις δηλοῖ καὶ Ἔφορος ἐν τῇ Εὐρώπῃ ἀναγράφει· ὕστερον δὲ πρὸς τὸ χεῖρον μετέβαλεν ἐπὶ πλείστον. μετὰ γὰρ τοὺς Τυρρηνοὺς, οἱ
 10 μάλιστα ἐδήλωσαν τὴν καθ' ἡμᾶς θάλατταν, οὗτοί εἰσιν οἱ διαδεξάμενοι τὰ ληστήρια· τούτους δ' ἐπόρθησαν ὕστερον οἱ Κίλικες· κατέλυσαν δὲ πάντας Ῥωμαῖοι τὴν τε Κρήτην ἐκπολεμήσαντες καὶ τὰ πειρατικὰ τῶν Κιλικῶν φρούρια. νῦν δὲ Κνωσσὸς καὶ Ῥωμαίων
 15 ἀποικίαν ἔχει.

Περὶ μὲν οὖν Κνωσσοῦ ταῦτα, πόλεως οὐκ ἄλλο- 10
 τρίας ἡμῖν, διὰ δὲ τὰνθρώπινα καὶ τὰς ἐν αὐτοῖς μεταβολὰς καὶ συντυχίας ἐκλειμμένων τῶν συμβολαίων τῶν ὑπαρξάντων ἡμῖν πρὸς τὴν πόλιν. Δορύ-
 20 λας γὰρ ἦν ἀνὴρ τακτικός, τῶν Μιθριδάτου τοῦ Εὐεργέτου φίλων· οὗτος διὰ τὴν ἐν τοῖς πολεμικοῖς ἐμπειρίαν ξενολογεῖν ἀποδειχθεὶς πολὺς ἦν ἐν τε τῇ Ἑλλάδι καὶ τῇ Θράκῃ, πολὺς δὲ καὶ τοῖς παρὰ τῆς Κρήτης ἰοῦσιν, οὐπω τὴν νῆσον ἐχόντων Ῥωμαίων,
 25 συχνοῦ δὲ ὄντος ἐν αὐτῇ τοῦ μισθοφορικοῦ καὶ στρατιωτικοῦ πλήθους, ἐξ οὗ καὶ τὰ ληστήρια πληροῦσθαι συνέβαινεν. ἐπιδημοῦντος δὲ τοῦ Δορυλάου κατὰ τύχην ἐνέστη πολεμος τοῖς Κνωσσίοις πρὸς τοὺς Γορτυνίους· αἰρεθεὶς δὲ στρατηγὸς καὶ κατορθώσας διὰ τα-
 30 χέων ἤρατο τιμὰς τὰς μεγίστας, καὶ ἐπειδὴ μικρὸν

8. post Εὐρώπη: τῇ πολιτείᾳ 19. ante τῶν: καὶ

- ὕστερον ἐξ ἐπιβουλῆς δολοφονηθέντα ἔγνω τὸν Εὐεργέτην ὑπὸ τῶν φίλων ἐν Σινώπῃ, τὴν διαδοχὴν δὲ εἰς γυναικαὶ καὶ παιδιά ἤκουσαν, ἀπογνοὺς τῶν ἐκεῖ κατέμεινεν [ἐν] τῇ Κνωσσῷ· τεκνοποιεῖται δ' ἐκ Μακέτιδος γυναικὸς Στερόπης τοῦνομα δύο μὲν υἱεῖς Λαγέ- 5
 ταν καὶ Στρατάρχαν, ὧν τὸν Στρατάρχαν ἐσχατόγηρων καὶ ἡμεῖς ἤδη εἶδομεν, θυγατέρα δὲ μίαν. δυεῖν δὲ ὄντων υἱῶν τοῦ Εὐεργέτου διεδέξατο τὴν βασιλείαν Μιθριδάτης ὁ προσαγορευθεὶς Εὐπάτωρ ἔνδεκα ἔτη γεγυνώς· τούτῳ σύντροφος ὑπῆρξεν ὁ τοῦ Φιλεταί- 10
 C.478ρου Δορύλαος· ἦν δ' ὁ Φιλέταιρος ἀδελφὸς τοῦ τακτικοῦ Δορυλαίου. ἀνδρωθεὶς δ' ὁ βασιλεὺς ἐπὶ τοσοῦτο ἤρητο τῇ συντροφίᾳ τῇ πρὸς τὸν Δορύλαον ὥστ' οὐκ ἐκείνουν μόνον εἰς τιμὰς ἤγε τὰς μεγίστας, ἀλλὰ καὶ τῶν συγγενῶν ἐπεμελεῖτο καὶ τοὺς ἐν Κνωσσῷ μετε- 15
 πέμπετο· ἦσαν δ' οἱ περὶ Λαγέταν, τοῦ μὲν πατρὸς ἤδη τετελευτηκότος, αὐτοὶ δ' ἡνδρωμένοι, καὶ ἤκον ἀφέντες τὰ ἐν Κνωσσῷ· τοῦ δὲ Λαγέτα θυγάτηρ ἦν ἡ μήτηρ τῆς ἐμῆς μητρός. εὐτυχοῦντος μὲν δὴ ἐκείνου συνευτυχεῖν καὶ τούτοις συνέβαινε, καταλυθέντος δὲ 20
 (ἐφωράθη γὰρ ἀφιστὰς τοῖς Ῥωμαίοις τὴν βασιλείαν ἐφ' ᾧ αὐτὸς εἰς τὴν ἀρχὴν καταστήσεται) συγκατελύθη καὶ τὰ τούτων καὶ ἐταπεινώθησαν· ὀλιγωρήθη δὲ καὶ τὰ πρὸς τοὺς Κνωσσίους συμβόλαια καὶ αὐτοὺς μν-
 ρίας μεταβολὰς δεξαμένους. 25
 11 Ἀλλὰ γὰρ ὁ μὲν περὶ τῆς Κνωσσοῦ λόγος τοιοῦ-
 τος. μετὰ δὲ ταύτην δευτερεῦσαι δοκεῖ κατὰ τὴν δύ-
 ναμιν ἢ τῶν Γορτυνίων πόλεις. συμπράττουσαί τε γὰρ ἀλλήλαις ἅπαντας ὑπηκόους εἶχον αὗται τοὺς ἄλλους, στασιάσασαί τε διέστησαν τὰ κατὰ τὴν νῆσον· προσ- 30
 θήκη δ' ἦν ἡ Κυδωνία μεγίστη ὁποτέροις προσγέ-
 νοιτο. καίται δ' ἐν πεδίῳ καὶ ἡ τῶν Γορτυνίων πόλις,

τὸ παλαιὸν μὲν ἴσως τετειχισμένη (καθάπερ καὶ Ὀμη-
 ρος εἶρηκε „Γόρτυνά τε τειχήεσσαν“), ὕστερον δ' ἀπο-
 βαλοῦσα τὸ τεῖχος ἐκ θεμελίων καὶ πάντα τὸν χρόνον
 μείνασα ἀτείχιστος· καὶ γὰρ ὁ Φιλοπάτωρ Πτολε-
 5 μαῖος ἀρξάμενος τειχίζειν ὅσον ἐπὶ ὀγδοήκοντα στα-
 δίους παρῆλθε μόνον· ἀξιόλογον δ' οὖν ἐξεπλήρου
 ποτὲ κύκλον ἢ οἰκησις ὅσον πεντήκοντα σταδίων· διέ-
 χει δὲ τῆς Λιβυκῆς θαλάττης κατὰ Λεβήνα τὸ ἐμπόριον
 αὐτῆς ἐνευήκοντα· ἔχει δέ τι καὶ ἄλλο ἐπίνειον τὸ Μά-
 10 ταλον, διέχει δ' αὐτῆς ἑκατὸν τριάκοντα. διαρρεῖ δ'
 αὐτὴν ὅλην ὁ Αἰθαῖος ποταμός.

Ἐκ δὲ Λεβήνος ἦν Λευκοκόμας τε καὶ ὁ ἐραστῆς 12
 αὐτοῦ Εὐξύνθετος, οὓς ἱστορεῖ Θεόφραστος ἐν τῷ
 περὶ ἔρωτος λόγῳ, ἄθλων αὖν ὁ Λευκοκόμας τῷ Εὐ-
 15 ξυνθέτῳ προσέταξεν ἕνα φήσας εἶναι τοῦτον, τὸν ἐν
 Πράσῳ κύνα ἀναγαγεῖν αὐτῷ· ὅμοροι δ' εἰσὶν αὐτοῖς
 οἱ Πράσιοι, τῆς μὲν θαλάττης ἑβδομήκοντα Γόρτυνος
 δὲ διέχοντες ἑκατὸν καὶ ὀγδοήκοντα. εἴρηται δὲ ὅτι
 τῶν Ἑτεοκρήτων ὑπῆρχεν ἡ Πραῖσος καὶ διότι ἐνταῦθα
 20 τὸ τοῦ Δικταίου Διὸς ἱερόν· καὶ γὰρ ἡ Δίκτη πλη-
 σίον, οὐχ ὥς Ἀρατος „ὄρεος σχεδὸν Ἰθαίοιο.“ καὶ γὰρ
 χιλίους ἡ Δίκτη τῆς Ἰδῆς ἀπέχει, πρὸς ἀνίσχοντα
 ἥλιον ἀπ' αὐτῆς κειμένη, τοῦ δὲ Σαμωνίου ἑκατόν.
 μεταξὺ δὲ τοῦ Σαμωνίου καὶ τῆς Χερρονήσου ἡ Πραῖ-
 25 σος ἰδρυτο ὑπὲρ τῆς θαλάττης ἑξήκοντα σταδίοις· κα-
 τέσκαψαν δ' Ἰεραπύτνιοι. οὐκ εὖ δὲ οὐδὲ τὸν Καλλί-
 μαχον λέγειν φασίν, ὥς ἡ Βριτόμαρτις φεύγουσα τὴν
 Μίνω βίαν ἀπὸ τῆς Δίκτης ἄλοιτο εἰς ἀλίων δίκτυα,
 καὶ διὰ τοῦτο αὐτὴ μὲν Δίκτυννα ὑπὸ τῶν Κυδωνια-
 30 τῶν προσαγορευθεῖη, Δίκτη δὲ τὸ ὄρος· οὐδὲ γὰρ
 ὅλως ἐκ γειτόνων ἐστὶ τοῖς τόποις τούτοις ἡ Κυδωνία,
 πρὸς δὲ τοῖς ἐσπερίοις κεῖται τῆς νήσου πέρασι. τῆς

μέντοι Κυδωνίας ὄρος ἐστὶ Τίτυρος, ἐν ᾧ ἱερόν ἐστιν οὐ Δικταῖον ἀλλὰ Δικτύνναιον.

- 13 Κυδωνία δ' ἐπὶ θαλάττῃ μὲν ἴδρυται βλέπουσα πρὸς τὴν Λακωνικὴν, διέχει δ' ἑκατέρας τὸ ἴσον τῆς τε Κνωσσοῦ καὶ τῆς Γόρτυνος οἶον ὀκτακοσίους στα- 5 δίους, Ἀπτέρας δὲ ὀγδοήκοντα, τῆς ταύτῃ δὲ θαλάττης τετταράκοντα. Ἀπτέρας δ' ἐπίνειόν ἐστι Κίσαμος· πρὸς ἐσπέραν δ' ὁμοροῖ τοῖς Κυδωνιάταις Πολυρρήνιοι, παρ' οἷς ἐστι τὸ τῆς Δικτύννης ἱερόν· ἀπέχουσι δὲ τῆς θαλάττης ὥς τριάκοντα σταδίου, Φαλασάρης δὲ 10 ἐξήκοντα. κωμηδὸν δ' ὄκουν πρότερον· εἴτ' Ἀχαιοὶ καὶ Λάκωνες συνώκησαν τειχίσαντες ἐρυμνὸν χωρίον βλέπον πρὸς μεσημβρίαν.

- 14 Τῶν δ' ὑπὸ Μίνω συνοικισμένων τριῶν τὴν λοιπὴν (Φαιστός δ' ἦν αὕτη) κατέσκαψαν Γορτύνιοι, τῆς 15 μὲν Γόρτυνος διέχουσιν ἐξήκοντα, τῆς δὲ θαλάττης εἰκοσι, τοῦ δὲ Ματάλου τοῦ ἐπινείου τετταράκοντα· τὴν δὲ χώραν ἔχουσιν οἱ κατασκάψαντες. Γορτυνίων δ' ἐστὶ καὶ τὸ Ῥύτιον σὺν τῇ Φαιστῷ „Φαιστόν τε Ῥύτιόν τε.“ ἐκ δὲ τῆς Φαιστοῦ τὸν τοὺς καθαρμοὺς ποιή- 20 σαντα διὰ τῶν ἐπῶν Ἐπιμενίδην φασὶν εἶναι. καὶ ὁ Λισσὴν δὲ τῆς Φαιστίας. Αὐττοῦ δέ, ἧς ἐμνήσθημεν καὶ πρότερον, ἐπίνειόν ἐστιν ἡ λεγομένη Χερρόνησος, ἐν ᾗ τὸ τῆς Βριτομάρτεως ἱερόν· αἱ δὲ συγκαταλεχθεῖσαι πόλεις οὐκέτ' εἰσὶ Μίλητός τε καὶ Λύκαστος, τὴν 25 δὲ χώραν τὴν μὲν ἐνείμαντο Αὐττιοὶ τὴν δὲ Κνώσσιοι κατασκάψαντες τὴν πόλιν.

- 15 Τοῦ δὲ ποιητοῦ τὸ μὲν ἑκατόμπολιν λέγοντος τὴν Κρήτην τὸ δὲ ἐνενηκοντάπολιν, Ἐφορος μὲν ὕστερον ἐπικτισθῆναι τὰς δέκα φησὶ μετὰ τὰ Τρωικὰ ὑπὸ τῶν 30

Ἀλθαιμένει τῷ Ἀργείῳ συνακολουθησάντων Δωρι-
 έων· τὸν μὲν οὖν Ὀδυσσεύα λέγει ἐνενηκοντάπολιν ὀνο-
 μάσαι· οὗτος μὲν οὖν πιθανός ἐστιν ὁ λόγος. ἄλλοι δ'
 ὑπὸ τῶν Ἰδομενέως ἐχθρῶν κατασκαφῆναί φασι τὰς
 5 δέκα· ἀλλ' οὔτε κατὰ τὰ Τρωικά φησιν ὁ ποιητῆς ἐκα-
 τοντάπολιν ὑπάρχει τὴν Κρήτην, ἀλλὰ μᾶλλον κατ'
 αὐτόν (ἐκ γὰρ τοῦ ἰδίου προσώπου λέγει· εἰ δ' ἐκ τῶν
 τότε ὄντων τινὸς ἦν ὁ λόγος, καθάπερ ἐν τῇ Ὀδυσσειᾳ, C. 480
 ἡνίκα ἐνενηκοντάπολιν φράζει, καλῶς εἶχεν [ἄν] οὕτω
 10 δέχεσθαι), οὔτ' εἰ συγχωρήσαιμεν τοῦτό γε, ὁ ἐξῆς λα-
 γος σώζοιτ' ἄν. οὔτε γὰρ κατὰ τὴν στρατείαν οὔτε
 μετὰ τὴν ἐπάνοδον τὴν ἐκεῖθεν τοῦ Ἰδομενέως εἰκός
 ἐστὶν ὑπὸ τῶν ἐχθρῶν αὐτοῦ τὰς πόλεις ἡφανίσθαι
 ταύτας· ὁ γὰρ ποιητῆς φήσας „πάντας δ' Ἰδομενεὺς
 15 „Κρήτην εἰσήγαγ' ἐταίρους, οἳ φύγον ἐκ πολέμου,
 „πόντος δέ οἱ οὔτιν' ἀπηύρα,“ καὶ τούτου τοῦ πάθους
 ἐμέμνητ' ἄν· οὐ γὰρ δήπου Ὀδυσσεὺς μὲν ἔγνω τὸν
 ἀφανισμόν τῶν πόλεων ὁ μὴδενὶ συμμῖξας τῶν Ἑλλή-
 νων μήτε κατὰ τὴν πλάνην μήθ' ὕστερον, ὁ δὲ καὶ συ-
 20 στρατεύσας τῷ Ἰδομενεὶ καὶ συνανασσώθεις οὐκ ἔγνω
 τὰ συμβάντα οἱκοὶ αὐτῷ. ἀλλὰ μὴν οὐδὲ μετὰ τὴν ἐπά-
 νοδον· εἰ γὰρ μετὰ πάντων ἐσώθη τῶν ἐταίρων, ἰσχυ-
 ρὸς ἐπανῆλθεν, ὥστ' οὐκ ἔμελλον ἰσχύσειν οἱ ἐχθροὶ
 τοσοῦτον ὅσον δέκα ἀφαιρεῖσθαι πόλεις αὐτόν.
 25 Τῆς μὲν οὖν χώρας τῶν Κρητῶν τοιαύτη τις ἡ πε- 16
 ριοδεία. τῆς δὲ πολιτείας ἥς Ἐφορος ἀνέγραψε τὰ κυ-
 ριώτατα ἐπιδραμεῖν ἀποχρώντως ἄν ἔχοι. δοκεῖ δὲ, φη-
 σὶν, ὁ νομοθέτης μέγιστον ὑποθέσθαι ταῖς πόλεσιν
 ἀγαθὸν τὴν ἐλευθερίαν· μόνην γὰρ ταύτην ἰδία ποιεῖν
 30 τῶν κτησαμένων τὰ ἀγαθὰ, τὰ δ' ἐν δουλείᾳ τῶν ἀρ-

12. ante εἰκός· ὡς 21. post αὐτῷ· κατὰ τὴν στρατείαν
 οὔτε τὴν ἐπάνοδον τὴν ἐκεῖθεν.

χόντων ἀλλ' οὐχὶ τῶν ἀρχομένων εἶναι· τοῖς δ' ἔχουσι
ταύτην φυλακῆς δεῖν· τὴν μὲν οὖν ὁμόνοιαν διχοστα-
σίας αἰρομένης ἀπαντᾶν, ἣ γίνεται διὰ πλεονεξίαν καὶ
τροφὴν· σωφρόνως γὰρ καὶ λιτῶς ζῶσιν ἅπανσιν οὔτε
φθόνον οὔθ' ὕβριν οὔτε μῖσος ἀπαντᾶν πρὸς τοὺς 5
ὁμοίους· διόπερ τοὺς μὲν παῖδας εἰς τὰς ὀνομαζομέ-
νας ἀγέλας κελεῦσαι φοιτᾶν, τοὺς δὲ τελείους ἐν τοῖς
συσσιτίοις ἃ καλοῦσιν ἀνδρεῖα συσσιτεῖν, ὅπως τῶν
ἴσων μετὰσχοιεν τοῖς εὐπόροις οἱ πενέστεροι δημοσίᾳ
τρέφόμενοι· πρὸς δὲ τὸ μὴ δειλίαν ἀλλ' ἀνδρείαν κρα- 10
τεῖν ἐκ παιδῶν ὅπλοις καὶ πόνοις συντρέφειν, ὥστε
καταφρονεῖν καύματος καὶ ψύχους καὶ τραχείας ὁδοῦ
καὶ ἀνάντους καὶ πληγῶν τῶν ἐν γυμνασίοις καὶ μά-
χαις ταῖς κατὰ σύνταγμα· ἀσκεῖν δὲ καὶ τοξικῇ καὶ ἐνο-
πλίῳ ὀρχήσει, ἣν καταδεῖξαι Κουρήτα πρῶτον, ὥστε- 15
ρον δὲ καὶ συντάξαντα τὴν κληθεῖσαν ἀπ' αὐτοῦ πυρ-
ρίχην, ὥστε μὴδὲ τὴν παιδιὰν ἄμοιρον εἶναι τῶν πρὸς
πόλεμον χρησίμων· ὥς δ' αὐτῶς καὶ τοῖς ῥυθμοῖς Κρη-
τικοῖς χρῆσθαι κατὰ τὰς ῥῥὰς συντονωτάτοις οὖσιν
C.481 οὓς Θάλητα ἀνευρεῖν, ᾧ καὶ τοὺς παιᾶνας καὶ τὰς ἄλ- 20
λας τὰς ἐπιχωρίους ῥῥὰς ἀνατιθέασι καὶ πολλὰ τῶν
νομίμων· καὶ ἐσθῆτι δὲ καὶ ὑποδέσει πολεμικῇ χρῆ-
σθαι, καὶ τῶν δώρων τιμιώτατα αὐτοῖς εἶναι τὰ ὅπλα.

17 Λέγεσθαι δ' ὑπὸ τινων ὡς Λακωνικὰ εἶη τὰ πολλὰ
τῶν νομιζομένων Κρητικῶν, τὸ δ' ἀληθὲς εὐρήσθαι 25
μὲν ὑπ' ἐκείνων, ἡκριβωκέναι δὲ τοὺς Σπαρτιάτας,
τοὺς δὲ Κρήτας ὀλιγωρῆσαι, κακωθεισῶν τῶν πόλεων
καὶ μάλιστα τῆς Κνωσσίων, τῶν πολεμικῶν· μεῖναι δέ
τινα τῶν νομίμων παρὰ Ἀντιόις καὶ Γορτυνίοις καὶ
ἄλλοις τισὶ πολιχνίοις μᾶλλον ἢ παρ' ἐκείνοις· καὶ δὴ 30
καὶ τὰ Ἀντιῶν νόμιμα ποιεῖσθαι μαρτύρια τοὺς τὰ
Λακωνικὰ πρεσβύτερα ἀποφαίνοντας· ἀποίκους γὰρ

ὄντας φυλάττειν τὰ τῆς μητροπόλεως ἔθνη, ἐπεὶ ἄλλως
 γε εὐήθεις εἶναι τὸ τοὺς βέλτιον συνεστώτας καὶ πολι-
 τευομένους τῶν χειρόνων ζηλωτὰς ἀποφαίνειν· οὐκ
 εὖ δὲ ταῦτα λέγεσθαι· οὔτε γὰρ ἐκ τῶν νῦν καθεστη-
 5 κότων τὰ παλαιὰ τεκμηριοῦσθαι δεῖν, εἰς τάναντία
 ἑκατέρων μεταπεπτωκότων· καὶ γὰρ ναυκρατεῖν πρό-
 τερον τοὺς Κρητας, ὥστε καὶ παρομιιάζεσθαι πρὸς
 τοὺς προσποιουμένους μὴ εἰδέναι ἃ ἴσασιν „ὁ Κρῆς
 „ἄγνωστὴν θάλατταν,“ νῦν δ' ἀποβεβληκέναι τὸ
 10 ναυτικόν· [οὔτε] ὅτι ἄποικοί τινες τῶν πόλεων γεγό-
 νασι τῶν ἐν Κρήτῃ Σπαρτιατῶν, ἐν τοῖς ἐκείνων νο-
 μίμοις διαμένειν ἐπηναγκάσθαι· πολλὰς γοῦν τῶν
 ἀποικίδων μὴ φυλάττειν τὰ πάτρια, πολλὰς δὲ καὶ
 τῶν μὴ ἀποικίδων ἐν Κρήτῃ τὰ αὐτὰ ἔχειν τοῖς ἀποί-
 15 κοῖς ἔθνη.

Τῶν τε Σπαρτιατῶν τὸν νομοθέτην Λυκοῦργον 18
 πέντε γενεαῖς νεώτερον Ἀλθαιμένους εἶναι τοῦ στεί-
 λαντος τὴν εἰς Κρήτην ἀποικίαν· τὸν μὲν γὰρ ἱστορεῖ-
 σθαι Κίσσου παῖδα τοῦ τὸ Ἄργος κτίσαντος περὶ τὸν
 20 αὐτὸν χρόνον ἤνικα Προκλῆς τὴν Σπάρτην συνήκισε,
 Λυκοῦργον δ' ὁμολογεῖσθαι παρὰ πάντων ἕκτον ἀπὸ
 Προκλέους γεγονέναι· τὰ δὲ μιμήματα μὴ εἶναι πρό-
 τερα τῶν παραδειγμάτων μηδὲ τὰ νεώτερα τῶν πρε-
 σβυτέρων· τὴν τε ὄρχησιν τὴν παρὰ τοῖς Λακεδαιμο-
 25 νίοις ἐπιχωριάξουσαν καὶ τοὺς θυθμοὺς καὶ παιᾶνας
 τοὺς κατὰ νόμον ἄδομένους καὶ ἄλλα πολλὰ τῶν νομί-
 μων Κρητικὰ καλεῖσθαι παρ' αὐτοῖς ὥς ἂν ἐκεῖθεν ὁρ-
 μώμενα· τῶν δ' ἀρχαίων τὰ μὲν καὶ τὰς διοικήσεις
 ἔχειν τὰς αὐτὰς καὶ τὰς ἐπωνυμίας, ὥσπερ καὶ τὴν τῶν
 30 γερόντων ἀρχὴν καὶ τὴν τῶν ἱππέων (πλὴν ὅτι τοὺς
 ἐν Κρήτῃ ἱππέας καὶ ἵππους κερτῆσθαι συμβέβηκεν· C.482
 ἐξ οὗ τεκμαίρονται πρεσβυτέραν εἶναι τῶν ἐν Κρήτῃ

ἰππέων τὴν ἀρχήν· σώζειν γὰρ τὴν ἐτυμότητα τῆς προσηγορίας· τοὺς δὲ μὴ ἱπποτροφεῖν), τοὺς ἐφόρους δὲ τὰ αὐτὰ τοῖς ἐν Κρήτῃ κόσμοις διοικοῦντας ἑτέρως ὠνομάσθαι· τὰ δὲ συσσίτια ἀνδρεῖα παρὰ μὲν τοῖς Κρησὶν καὶ νῦν ἐτι καλεῖσθαι, παρὰ δὲ τοῖς Σπαρτιάταις μὴ διαμεῖναι καλούμενα ὁμοίως πρότερον· παρ' Ἀλκμᾶνι γοῦν οὕτω κεῖσθαι „φοῖναις δὲ καὶ ἐν θιάσοισιν ἀνδρεῶν παρὰ δαιτυμόνεσσι πρέπει παιᾶνα „κατάρχειν.“

- 19 *Λέγεσθαι δ' ὑπὸ τῶν Κρητῶν ὡς καὶ παρ' αὐτοὺς 10*
ἀφίκοιτο Λυκοῦργος κατὰ τοιαύτην αἰτίαν· ἀδελφὸς
ἦν πρεσβύτερος τοῦ Λυκούργου Πολυδέκτης· οὗτος
τελευτῶν ἔγκυον κατέλιπε τὴν γυναῖκα· τέως μὲν οὖν
ἐβασίλευεν ὁ Λυκοῦργος ἀντὶ τοῦ ἀδελφοῦ, γενομένου
δὲ παιδὸς ἐπετρόπευεν ἐκείνον, εἰς ὃν ἡ ἀρχὴ καθή- 15
κουσα ἐτύγγανε· λαιδορούμενος δὴ τις αὐτῷ σαφῶς
εἶπεν εἰδέναι διότι βασιλεύσοι· λαβὼν δ' ὑπόνοιαν
ἐκεῖνος ὡς ἐκ τοῦ λόγου τούτου διαβάλλοιτο ἐπιβουλῇ
ἐξ αὐτοῦ τοῦ παιδός, δείσας μὴ ἐκ τύχης ἀποθανόν-
τος αἰτίαν αὐτὸς ἔχοι παρὰ τῶν ἐχθρῶν, ἀπῆρεν εἰς 20
Κρήτην. ταύτην μὲν δὴ λέγεσθαι τῆς ἀποδημίας αἰ-
τίαν· ἐλθόντα δὲ πλησιάσαι Θάλητι μελοποιῷ ἀνδρὶ
καὶ νομοθετικῷ, ἱστορήσαντα δὲ παρ' αὐτοῦ τὸν τρό-
πον ὃν Ῥαδάμανθός τε πρότερον καὶ ὕστερον Μί-
νης, ὡς παρὰ τοῦ Διὸς, τοὺς νόμους ἐκφέρει εἰς ἀν- 25
θρώπους, γενόμενον δὲ καὶ ἐν Αἰγύπτῳ καὶ κατα-
μαθόντα καὶ τὰ ἐκεῖ νόμιμα, ἐντυχόντα δ', ὥς φασί
τινες, καὶ Ὀμήρῳ διατρίβοντι ἐν Χίῳ, κατάρραι πάλιν
εἰς τὴν οἰκίαν, καταλαβεῖν δὲ τὸν τοῦ ἀδελφοῦ υἱὸν
τὸν Πολυδέκτου Χαρίλαον βασιλεύοντα· εἶθ' ὁρμῆσαι 30
διαθεῖναι τοὺς νόμους φοιτῶντα ὡς τὸν θεὸν τὸν ἐν
Δελφοῖς, κακείθεν κομίζοντα τὰ προστάγματα, καθά-

περ οἱ περὶ Μίνω ἐκ τοῦ ἄντρου τοῦ Διὸς παραπλήσια
ἐκείνοις τὰ πλείω.

Τῶν Κρητικῶν τὰ κυριώτατα τῶν καθ' ἕκαστα 20
τοιαῦτα εἶρηκε. γαμεῖν μὲν ἅμα πάντες ἀναγκάζονται
5 παρ' αὐτοῖς οἱ κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον ἐκ τῆς τῶν παί-
δων ἀγέλης ἐκκριθέντες, οὐκ εὐθὺς δ' ἄγονται παρ'
ἑαυτοὺς τὰς γαμηθείσας παῖδας, ἀλλ' ἐπὶ ἡδὴ διοι-
κεῖν ἱκαναὶ ὧσι τὰ περὶ τοὺς οἴκους· φερνὴ δ' ἐστίν,
ἂν ἀδελφοὶ ὧσι, τὸ ἥμισυ τῆς τοῦ ἀδελφοῦ μερίδος·
10 παῖδας δὲ γράμματά τε μαυθάνειν καὶ τὰς ἐκ τῶν νό-
μων ῥῶδὰς καὶ τινα εἶδη τῆς μουσικῆς. τοὺς μὲν οὖν ἐτι 483
νεωτέρους εἰς τὰ συσσίτια ἄγουσι τὰ ἀνδρεῖα· χαμαὶ
δὲ καθήμενοι διαιτῶνται μετ' ἀλλήλων ἐν φράυλοις
τριβωνίοις καὶ χειμῶνος καὶ θέρους τὰ αὐτά, διακο-
15 νοῦσί τε καὶ ἑαυτοῖς καὶ τοῖς ἀνδράσι· συμβάλλουσι
δ' εἰς μάχην καὶ οἱ ἐκ τοῦ αὐτοῦ συσσιτίου πρὸς ἀλλή-
λους, καὶ πρὸς ἕτερα συσσίτια· καθ' ἕκαστον δὲ ἀν-
δρεῖον ἐφέστηκε παιδονόμος· οἱ δὲ μείζους εἰς τὰς ἀγέ-
λας ἄγονται· τὰς δ' ἀγέλας συνάγουσιν οἱ ἐπιφανέ-
20 στατοι τῶν παίδων καὶ δυνατώτατοι ἕκαστος ὅσους
πλείστους οἷός τέ ἐστιν ἀθροίζων· ἐκάστης δὲ τῆς ἀγέ-
λης ἄρχων ἐστίν ὥς τὸ πολὺ ὁ πατὴρ τοῦ συναγαγόν-
τος, κύριος ὢν ἐξάγειν ἐπὶ θήραν καὶ δρόμους, τὸν δ'
ἀπειθοῦντα κολάζειν· τρέφονται δὲ δημοσίᾳ· τακταῖς
25 δέ τισιν ἡμέραις ἀγέλη πρὸς ἀγέλην συμβάλλει μετὰ
αὐλοῦ καὶ λύρας εἰς μάχην ἐν ῥυθμῷ, ὥσπερ καὶ ἐν
τοῖς πολεμικοῖς εἰώθασιν, ἐκφέρουσι δὲ καὶ τὰς πλη-
γὰς τὰς μὲν διὰ χειρὸς τὰς δὲ καὶ δι' ὅπλων σιδηρῶν.

Ἴδιον δ' αὐτοῖς τὸ περὶ τοὺς ἔρωτας νόμιμον· οὐ 21
30 γὰρ πειθοὶ κατεργάζονται τοὺς ἐρωμένους ἀλλ' ἄρ-
παγῇ· προλέγει τοῖς φίλοις πρὸ τριῶν ἢ πλειόνων ἡμε-
ρῶν ὁ ἐραστὴς ὅτι μέλλει τὴν ἀρπαγὴν ποιῆσθαι· τοῖς

δ' ἀποκρύπτειν μὲν τὸν παῖδα ἢ μὴ εἶν πορεύεσθαι
 τὴν τεταγμένην ὁδὸν τῶν αἰσχύστων ἐστίν, ὥς ἐξομο-
 λογουμένοις ὅτι ἀνάξιος ὁ παῖς εἴη τοιούτου ἐραστοῦ
 τυγχάνειν· συνιόντες δ', ἂν μὲν τῶν ἴσων ἢ τῶν ὑπερ-
 εχόντων τις ἢ τοῦ παιδὸς τιμῇ καὶ τοῖς ἄλλοις ὁ ἀρπά- 5
 ζων, ἐπιδιώκοντες ἀνθήψαντο μόνον μετρίως τὸ νό-
 μιμον ἐκπληροῦντες, τᾶλλα δ' ἐπιτρέπουσιν ἄγειν χαί-
 ροντες· ἂν δ' ἀνάξιος, ἀφαιροῦνται· πέρας δὲ τῆς
 ἐπιδιώξεως ἐστὶν ἕως ἂν ἀχθῇ ὁ παῖς εἰς τὸ τοῦ ἀρπά-
 σαντος ἀνδρείον. ἐράσμιον δὲ νομίζουσιν οὐ τὸν κάλ- 10
 λει διαφέροντα, ἀλλὰ τὸν ἀνδρεῖα καὶ κοσμιώτητι
 καὶ ὠρησάμενος ἀπάγει τὸν παῖδα τῆς χώρας εἰς ὃν
 βούλεται τόπον· ἐπακολουθοῦσι δὲ τῇ ἀρπαγῇ οἱ πα-
 ραγενόμενοι, ἐστιαθέντες δὲ καὶ συνθηρεύσαντες δι-
 μνηνον (οὐ γὰρ ἔξεστι πλείω χρόνον κατέχειν τὸν παῖδα) 15
 εἰς τὴν πόλιν καταβαίνουσιν. ἀφίσταται δ' ὁ παῖς δῶρα
 λαβὼν στολὴν πολεμικὴν καὶ βοῦν καὶ ποτήριον. ταῦτα
 μὲν τὰ κατὰ τὸν νόμον δῶρα καὶ ἄλλα πλείω
 καὶ πολυτελῆ, ὥστε συνερανίζειν τοὺς φίλους διὰ τὸ
 πληῆθος τῶν ἀναλωμάτων. τὸν μὲν οὖν βοῦν θύει τῷ 20
 Διὶ καὶ ἐστιᾷ τοὺς συγκαταβαίνοντας, εἰτ' ἀποφαίνε-
 ται περὶ τῆς πρὸς τὸν ἐραστὴν ὁμιλίας εἰτ' ἀσμενίζων
 C.484 τετύχηκεν εἰτε μὴ, τοῦ νόμου τοῦτ' ἐπιτρέψαντος, ἵν'
 εἴ τις αὐτῷ βία προσενήνεκται κατὰ τὴν ἀρπαγὴν, ἐν-
 ταῦθα παρῇ τιμωρεῖν ἑαυτῷ καὶ ἀπαλλάττεσθαι. τοῖς 25
 δὲ καλοῖς τὴν ἰδέαν καὶ προγόνων ἐπιφανῶν [αἰσχρὸν]
 ἐραστῶν μὴ τυχεῖν, ὥς διὰ τὸν τρόπον τοῦτο παθοῦ-
 σιν. ἔχουσι δὲ τιμὰς οἱ παρασταθέντες (οὕτω γὰρ κα-
 λοῦσι τοὺς ἀρπαγέντας)· ἐν τε γὰρ τοῖς χοροῖς καὶ τοῖς
 δρόμοις ἔχουσι τὰς ἐντιμοτάτας χώρας, τῇ τε στολῇ 30
 κοσμεῖσθαι διαφερόντως τῶν ἄλλων ἐφίεται τῇ δο-
 θείσῃ παρὰ τῶν ἐραστῶν, καὶ οὐ τότε μόνον ἀλλὰ καὶ

τέλειοι γενόμενοι διάσημον ἐσθῆτα φέρουσιν, ἀφ' ἧς
 γνωσθήσεται ἕκαστος κλεινὸς γενόμενος· τὸν μὲν γὰρ
 ἐρώμενον καλοῦσι κλεινὸν τὸν δ' ἐραστὴν φιλήτορα.
 ταῦτα μὲν τὰ περὶ τοὺς ἔρωτας νόμιμα. ἄρχοντας δὲ 22
 5 δέκα αἰροῦνται· περὶ δὲ τῶν μεγίστων συμβούλοις
 χρῶνται τοῖς γέρονσι καλουμένοις· καθίστανται δ' εἰς
 τοῦτο τὸ συνέδριον οἱ τῆς τῶν κόσμων ἀρχῆς ἡξιώμε-
 νοι καὶ τᾶλλα δόκιμοι κρινόμενοι. ἄξιαν δ' ἀναγρα-
 φῆς τὴν τῶν Κρητῶν πολιτείαν ὑπέλαβον διὰ τε τὴν
 10 ιδιότητα καὶ τὴν δόξαν· οὐ πολλὰ δὲ διαμένει τούτων
 τῶν νομίμων, ἀλλὰ τοῖς Ῥωμαίων διατάγμασι τὰ πλεῖ-
 στα διοικεῖται, καθάπερ καὶ ἐν ταῖς ἄλλαις ἐπαρχίαις
 συμβαίνει.

Περὶ δὲ τὴν Κρήτην εἰσὶ νῆσοι, Θήρα μὲν ἡ τῶν 3
 15 Κυρηναίων μητρόπολις, ἄποικος Λακεδαιμονίων, καὶ
 πλησίον ταύτης Ἀνάφη, ἐν ἣ τὸ τοῦ Αἰγλήτου Ἀπόλ-
 λωνος ἱερόν. λέγει δὲ καὶ Καλλίμαχος τοτὲ μὲν οὕτως
 „Αἰγλήτην Ἀνάφην τε Λακωνίδι γείτονα Θήρη“, τοτὲ
 δὲ τῆς Θήρας μνησθεὶς „μήτηρ εὐίππου πατρίδος ἡμε-
 20 „τέρης.“ ἔστι δὲ μακρὰ ἡ Θήρα, διακοσίων οὔσα τὴν
 περιμέτρον σταδίων, κειμένη δὲ κατὰ Δίαν νῆσον τὴν
 πρὸς Ἡρακλείῳ τῷ Κνωσσίῳ, διέχει δὲ τῆς Κρήτης εἰς
 ἑπτακοσίους· πλησίον δ' αὐτῆς ἡ τε Ἀνάφη καὶ Θηρα-
 σία. ταύτης δ' εἰς ἑκατὸν ἀπέχει νησίδιον Ἴος, ἐν ᾧ
 25 κεκηδεῦσθαί τινές φασι τὸν ποιητὴν Ὀμηρον· ἀπὸ δὲ
 τῆς Ἴου πρὸς ἐσπέραν ἰόντι Σίκινος καὶ Λάγουσα καὶ
 Φολέγανδρος, ἣν Ἄρατος σιδηρεῖην ὀνομάζει διὰ τὴν
 τραχύτητα· ἐγγὺς δὲ τούτων Κίμωλος, ὅθεν ἡ γῆ ἡ
 Κιμωλία· ἔνθεν ἡ Σίφνος ἐν ὅψει ἐστίν, ἐφ' ἣ λέγουσι
 30 Σίφνιον ἀστράγαλον διὰ τὴν εὐτέλειαν. ἔτι δ' ἐγγυ-
 τέρω καὶ τῆς Κιμώλου καὶ τῆς Κρήτης ἡ Μήλος ἄξιο-
 λογωτέρα τούτων, διέχουσα τοῦ Ἑρμιονικοῦ ἀκρωτη-

ρίου τοῦ Σκυλλαίου σταδίους ἑπτακοσίους· τοσούτους δὲ σχεδόν τι καὶ τοῦ Δικτυνναίου· Ἀθηναῖοι δὲ ποτε πέμψαντες στρατεῖαν ἡβηδὸν κατέσφαξαν τοὺς πλείους. αὐταὶ μὲν οὖν ἐν τῷ Κρητικῷ πελάγει, ἐν δὲ τῷ Αἰγαίῳ μᾶλλον αὐτῇ τε ἢ Δῆλος καὶ αἱ περὶ αὐτὴν Κυ- 5 κλάδες καὶ αἱ ταύταις προσκείμεναι Σποράδες, ὧν εἰσι καὶ αἱ λεχθεῖσαι περὶ τὴν Κρήτην.

2 Ἡ μὲν οὖν Δῆλος ἐν πεδίῳ κειμένην ἔχει τὴν πόλιν καὶ τὸ ἱερὸν τοῦ Ἀπόλλωνος καὶ τὸ Ἀητῶν· ὑπέρεκται δὲ τῆς πόλεως ὄρος ψιλὸν ὃ Κύνθος καὶ τραχύ, 10 ποταμὸς δὲ διαρρεῖ τὴν νῆσον Ἰνωπὸς οὐ μέγας· καὶ γὰρ ἡ νῆσος μικρά· τετίμηται δὲ ἐκ παλαιοῦ διὰ τοὺς θεοὺς ἀπὸ τῶν ἡρωικῶν χρόνων ἀρξαμένη· μυθεύεται γὰρ ἐνταῦθα ἡ Ἀητὼ τὰς ᾠδῖνας ἀποθέσθαι τοῦ τε Ἀπόλλωνος καὶ τῆς Ἀρτεμίδος. „ἦν γὰρ τοπάροιθε 15 „φορητά“ φησὶν ὁ Πίνδαρος „κυμάτεσσιν παντοδα- „πῶν τ’ ἀνέμων ῥιπαῖσιν· ἀλλ’ ἃ Κοιογενῆς ὀπότης „ᾠδίνεσσι θύοισ’ ἀγχιτόκοις ἐπέβα νιν, δὴ τότε τέσ- „σαρες ὀρθαὶ πρέμνων ἀπώρουσαν χθονίων, ἂν δ’ „ἐπικράνοις σχέθον πέτραν ἄδαμαντοπέδιλοι κίονες· 20 „ἐνθα τεκοῖς’ εὐδαίμον’ ἐπόψατο γένναν.“ ἐνδοξον δ’ ἐποίησαν αὐτὴν αἱ περιοικίδες νῆσοι, καλούμεναι Κυκλάδες, κατὰ τιμὴν πέμπουσai δημοσίᾳ θεωροὺς τε καὶ θυσίας καὶ χοροὺς παρθένων πανηγύρεις τε ἐν αὐτῇ συνάγουσαι μεγάλας.

25

3 Κατ’ ἀρχὰς μὲν οὖν δώδεκα λέγονται· προσεγέ- νοντο δὲ καὶ πλείους. Ἀρτεμίδωρος γοῦν [πεντεκαίδε- 30 κα] διαριθμεῖται, περὶ τῆς Ἑλένης εἰπὼν ὅτι ἀπὸ Θορίκου μέχρι Σουνίου παράκειται μακρὰ σταδίων ὅσον ἐξή- χοντα τὸ μῆκος, ἀπὸ ταύτης γὰρ, φησὶν, αἱ καλούμεναι 30 Κυκλάδες εἰσὶν· ὀνομάζει δὲ Κέω τὴν ἐγγυτάτω τῇ Ἑλένῃ, καὶ μετὰ ταύτην Κύθνον καὶ Σέριφον καὶ Μῆ-

λον καὶ Σίφνον καὶ Κίμωλον καὶ Πρεπέσινθον καὶ
 Ὠλίαρον, καὶ πρὸς ταύταις Πάρον Νάξον Σύρον Μύ-
 κονον Τήνον Ἄνδρον Γύαρον. τὰς μὲν οὖν ἄλλας τῶν
 δώδεκα νομίζω, τὴν δὲ Πρεπέσινθον καὶ Ὠλίαρον καὶ
 5 Γύαρον ἦττον· ὧν τῇ Γυάρῳ προσορμισθεὶς ἔγνων
 κωμίον ὑπὸ Ἀλίων συνοικούμενον· ἀπαίροντες δ' ἔδε-
 ξάμεθα πρεσβευτὴν ἐνθένδε ὡς Καίσαρα προκεχειρι-
 σμένον τῶν Ἀλίων τινά (ἦν δ' ἐν Κορίνθῳ Καῖσαρ
 βαδίζων ἐπὶ τὸν θρίαμβον τὸν Ἀκτιακόν)· συμπλέων
 10 δὴ ἔλεγε πρὸς τοὺς πνυθόμενους ὅτι πρεσβεῦοι περὶ
 κουφισμοῦ τοῦ φόρου· τελοῖεν γὰρ δραχμὰς ἑκατὸν
 πεντήκοντα καὶ τὰς ἑκατὸν χαλεπῶς ἂν τελοῦντες. δη-
 486
 λοῖ δὲ τὰς ἀπορίας αὐτῶν καὶ Ἄρατος ἐν τοῖς κατὰ λε-
 πτόν „ὦ Ἀητοῖ, σὺ μὲν ἢ με σιδηρεῖν Φολεγάνδρῳ
 15 „δειλὴν ἢ Γυάρῳ παρελεύσεαι αὐτίχ' ὁμοίην.“

Τὴν μὲν οὖν Ἀῆλον ἐνδοξον γενομένην οὕτως ἐτι 4
 μᾶλλον ἠϋΐησε κατασκαφείσα ὑπὸ Ῥωμαίων Κόριν-
 θος· ἐκεῖσε γὰρ μετεχώρησαν οἱ ἔμποροι, καὶ τῆς ἀτε-
 λείας τοῦ ἱεροῦ προκαλουμένης αὐτοὺς καὶ τῆς εὐκαι-
 20 ρίας τοῦ λιμένος· ἐν καλῷ γὰρ κεῖται τοῖς ἐκ τῆς Ἰτα-
 λίας καὶ τῆς Ἑλλάδος εἰς τὴν Ἀσίαν πλέουσιν· ἢ τε πα-
 νήγυρις ἐμπορικόν τι πρᾶγμα ἐστὶ, καὶ συνήθεις ἦσαν
 αὐτῇ καὶ Ῥωμαῖοι τῶν ἄλλων μάλιστα, καὶ ὅτε συνειστή-
 κει ἡ Κόρινθος· Ἀθηναῖοί τε λαβόντες τὴν νῆσον καὶ
 25 τῶν ἱερῶν ἅμα καὶ τῶν ἐμπορῶν ἐπεμελοῦντο ἱκανῶς·
 ἐπελθόντες δ' οἱ τοῦ Μιθριδάτου στρατηγοὶ καὶ ὁ ἀπο-
 στήσας τύραννος αὐτὴν διελυμῆναντο πάντα, καὶ πα-
 ρέλαβον ἐρήμην οἱ Ῥωμαῖοι πάλιν τὴν νῆσον, ἀναχω-
 ρήσαντος εἰς τὴν οἰκίαν τοῦ βασιλέως, καὶ διετέλεσε
 30 μέχρι νῦν ἐνδεῶς πράττουσα. ἔχουσι δ' αὐτὴν Ἀθη-
 ναῖοι. Ῥήναια δ' ἐρημον νησιδίον ἐστὶν ἐν τέτταρσι 5
 τῆς Δήλου σταδίοις, ὅπου τὰ μνήματα τοῖς Ἀηλίοις

ἐστίν. οὐ γὰρ ἔξεστιν ἐν αὐτῇ τῇ Δήλῳ θάπτειν οὐδὲ καίειν νεκρόν. οὐκ ἔξεστι δὲ οὐδὲ κύναι ἐν Δήλῳ τρέφειν. ὠνομάζετο δὲ καὶ Ὀρτυγία πρότερον.

6 Κέως δὲ τετράπολις μὲν ὑπῆρξε, λείπονται δὲ δύο, ἣ τε Ἰουλις καὶ ἡ Καρθαία, εἰς αἷς συνεπολιόσθησαν αἱ 5
λοιπαί, ἡ μὲν Ποιήεσσα εἰς τὴν Καρθαίαν ἡ δὲ Κορη-
σία εἰς τὴν Ἰουλίδαν. ἐκ δὲ τῆς Ἰουλίδος ὅ τε Σιμωνίδης
ἦν ὁ μελοποιὸς καὶ Βακχυλίδης ἀδελφιδοῦς ἐκείνου,
καὶ μετὰ ταῦτα Ἐρασίστρατος ὁ ἰατρὸς καὶ τῶν ἐκ τοῦ
περιπάτου φιλοσόφων Ἀρίστων ὁ τοῦ Βορυσθενίτου 10
Βίωνος ζηλωτής. παρὰ τούτοις δὲ δοκεῖ τεθῆναι ποτε
νόμος, οὗ μέμνηται καὶ Μένανδρος „καλὸν τὸ Κείων
„νόμιμόν ἐστι, Φανία· ὁ μὴ δυνάμενος ξῆν καλῶς οὐ
„ξῆ κακῶς.“ προσέταττε γάρ, ὡς ἔοικεν, ὁ νόμος τοὺς
ὑπὲρ ἐξήκοντα ἔτη γεγονότας κωνειάζεσθαι καὶ τοῦ 15
διαρκεῖν τοῖς ἄλλοις τὴν τροφήν· καὶ πολιορκουμέ-
νους δὲ ποτε ὑπ' Ἀθηναίων ψηφίσασθαι φάσι τοὺς
πρεσβυτάτους ἐξ αὐτῶν ἀποθανεῖν, ὀρισθέντος πλή-
θους ἐτῶν, τοὺς δὲ παύσασθαι πολιορκοῦντας. κεῖται
δ' ἐν ὄρει τῆς θαλάττης διέχουσα ἡ πόλις ὅσον πέντε 20
καὶ εἴκοσι σταδίους, ἐπίνειον δ' ἐστὶν αὐτῆς τὸ χωρίον
ἐν ᾧ ἴδρυτο ἡ Κορησία κατοικίαν οὐδὲ κώμης ἔχουσα.

C.487 ἐστὶ δὲ καὶ πρὸς τῇ Κορησίᾳ Σμινθαίου Ἀπόλλωνος
ιερόν καὶ πρὸς Ποιήεσση, μεταξὺ δὲ τοῦ ἱεροῦ καὶ τῶν
τῆς Ποιήεσσης ἐρειπίων τὸ τῆς Νεδουσίας Ἀθηνᾶς 25
ιερόν, ἰδρυσαμένου Νέστορος κατὰ τὴν ἐκ Τροίας
ἐπάνοδον. ἔστι δὲ καὶ Ἐλιξος ποταμὸς περὶ τὴν Κο-
ρησίαν.

7 Μετὰ δὲ ταύτην Νάξος καὶ Ἄνδρος ἀξιόλογοι καὶ
Πάρος· ἐντεῦθεν ἦν Ἀρχίλοχος ὁ ποιητής. ὑπὸ δὲ Πα- 30
ρίων ἐκτίσθη Θάσος καὶ Πάριον ἐν τῇ Προποντίδι πό-
λις. ἐν ταύτῃ μὲν οὖν ὁ βωμὸς λέγεται θείας ἄξιος, στα-

διαίτας ἔχων τὰς πλευράς· ἐν δὲ τῇ Πάρῳ ἢ Παρία λίθος λεγομένη ἀρίστη πρὸς τὴν μαρμαρογλυφίαν.

Σῦρος δ' ἐστὶ μηκύνουσι τὴν πρώτην συλλαβὴν, 8
ἐξ ἧς Φερεκύδης ὁ Βάβυος ἦν· νεώτερος δ' ἐστὶν ὁ
5 Ἀθηναῖος ἐκείνου. ταύτης δοκεῖ μνημονεύειν ὁ ποιη-
τῆς Συρίην καλῶν „νησὸς τις Συρίη κικλήσκεται Ὀρ-
„τυγίης καθύπερθε.“

Μύκονος δ' ἐστὶν ὕφ' ἣ μυθεύουσι κεῖσθαι τῶν 9
γιγάντων τοὺς ὑστάτους ὕφ' Ἡρακλέους καταλυθέν-
10 τας, ἀφ' ὧν ἡ παροιμία „πάνθ' ὑπὸ μίαν Μύκονον“
ἐπὶ τῶν ὑπὸ μίαν ἐπιγραφὴν ἀγόντων καὶ τὰ διηρ-
τημένα τῇ φύσει. καὶ τοὺς φαλακροὺς δέ τινες Μυκο-
νόους καλοῦσιν ἀπὸ τοῦ τὸ πάθος τοῦτο ἐπιχωριάζειν
τῇ νήσῳ.

15 Σέριφος δ' ἐστὶν ἐν ἣ τὰ περὶ τὸν Δίκτυν μεμύ- 10
θευται τὸν ἀνελκύσαντα τὴν λάρνακα τοῖς δικτύοις
τὴν περιέχουσαν τὸν Περσέα καὶ τὴν μητέρα Δανάην,
καταπεποντωμένους ὑπ' Ἀκρισίου τοῦ πατρὸς τῆς Δα-
νάης· τραφῆναι τε γὰρ ἐνταῦθα τὸν Περσέα φασί, καὶ
20 κομίσαντα τὴν τῆς Γοργόνης κεφαλὴν, δελξάντα τοῖς
Σεριφίοις ἀπολιθῶσαι πάντας· τοῦτο δὲ πρᾶξι τιμω-
ροῦντα τῇ μητρί, ὅτι αὐτὴν Πολυδέκτης ὁ βασιλεὺς
ἄκουσαν ἄγεσθαι προείλετο πρὸς γάμον συμπραττόν-
των ἐκείνων. οὕτω δ' ἐστὶ πετρῶδης ἡ νῆσος ὥστε ὑπὸ
25 τῆς Γοργόνης τοῦτο παθεῖν αὐτὴν φασιν οἱ κωμω-
δοῦντες.

Τῆνος δὲ πόλιν μὲν οὐ μεγάλην ἔχει, τὸ δ' ἱερὸν 11
τοῦ Ποσειδῶνος μέγα ἐν ἄλλει τῆς πόλεως ἔξω θέας
ἄξιον, ἐν ᾧ καὶ ἐστιατόρια πεποιήται μεγάλα, σημεῖον
30 τοῦ συνέρχεσθαι πλῆθος ἱκανὸν τῶν συνθιγόντων αὐ-
τοῖς ἀστυγειτόνων τὰ Ποσειδῶνια.

Ἔστι δὲ καὶ Ἀμοργὸς τῶν Σποράδων, ὅθεν ἦν 12
STRABO II.

Σιμωνίδης ὁ τῶν ἰάμβων ποιητής, καὶ Λέβινθος καὶ
 Λέρος „καὶ τόδε Φωκυλίδου· Λέριοι κακοί, οὐχ
 „ὁ μὲν ὃς δ' οὐ, πάντες, πλὴν Προκλέους, καὶ Προ-
 C.488, κλέης Λέριος.“ διεβέβληντο γὰρ ὥς κακοήθεις οἱ ἐν-
 θένδε ἄνθρωποι.

13 Πλησίον δ' ἐστὶ καὶ ἡ Πάτμος καὶ Κορασσίαι πρὸς
 δύσιν κείμεναι τῇ Ἰκαρίᾳ, αὕτη δὲ Σάμῳ. ἡ μὲν οὖν
 Ἰκαρία ἔρημός ἐστι, νομάς δ' ἔχει καὶ χρῶνται αὐταῖς
 Σάμιοι· τοιαύτη δ' οὐσα ἐνδοξος ὅμως ἐστὶ, καὶ ἀπ'
 αὐτῆς Ἰκάριον καλεῖται τὸ προκείμενον πέλαγος, ἐν ᾧ 10
 καὶ αὕτη καὶ Σάμος καὶ Κῶς ἐστὶ καὶ αἱ ἄρτι λεχθεῖσαι
 Κορασσίαι καὶ Πάτμος καὶ Λέρος. συνάπτει δὲ τῷ Ἰκα-
 ρίῳ τὸ Καρπάδιον πέλαγος πρὸς νότον, τούτῳ δὲ τὸ
 Αἰγύπτιον, πρὸς δὲ δύσιν τὸ τε Κρητικὸν καὶ τὸ Λι-
 βυκόν.

14 Καὶ ἐν τῷ Καρπαθίῳ δ' εἰσὶν πολλαὶ τῶν Σποράδων
 μεταξὺ τῆς Κῶς μάλιστα καὶ Ῥόδου καὶ Κρήτης· ὧν εἰσιν
 Ἀστυπάλαιά τε καὶ Τήλος καὶ Χαλκία καὶ ἄς Ὀμηρος
 ὀνομάζει ἐν τῷ καταλόγῳ „οἱ δ' ἄρα Νίσυρόν τ' εἶχον
 „Κράπαθόν τε Κάσον τε καὶ Κῶν, Εὐρυπύλοιο πό- 20
 „λιν, νήσους τε Καλύδνας.“ ἔξω γὰρ τῆς Κῶς καὶ τῆς
 Ῥόδου, περὶ ὧν ἐροῦμεν ὕστερον, τὰς τε ἄλλας ἐν ταῖς
 Σποράσι τίθεμεν καὶ δὴ καὶ ἐνταῦθα μεμνήμεθα αὐ-
 τῶν, καίπερ τῆς Ἀσίας οὐ τῆς Εὐρώπης ἐγγὺς οὐσῶν,
 ἐπειδὴ τῇ Κρήτῃ καὶ ταῖς Κυκλάσι καὶ τὰς Σποράδας 25
 συμπεριλαβεῖν ἡπείρετό πως ὁ λόγος· ἐν δὲ τῇ τῆς
 Ἀσίας περιοδείᾳ τὰς προσεχεῖς αὐτῇ τῶν ἀξιολόγων
 νήσων προσπεριοδεύσομεν, Κύπρον καὶ Ῥόδον καὶ
 Κῶν καὶ τὰς ἐν τῇ ἐφεξῆς παραλίᾳ κειμένας, Σάμον

12. post Λέρος: ἐνδοξον δὲ καὶ τὸ ἐν αὐτῇ ὄρος ὁ Κερκε-
 τεύς, μᾶλλον τῆς Ἀμπέλου· αὕτη δ' ὑπέρεκται τῆς Σαμίων
 πόλεως.

Χίον Λέσβον Τένεδον· νῦν δὲ τὰς Σποράδας ὧν ἄξιον
μνησθῆναι λοιπὸν ἐπιμεν.

Ἡ μὲν οὖν Ἀστυπάλαια Ικανῶς ἐστὶ πελαγία, πό- 15
λιν ἔχουσα. ἡ δὲ Τήλος ἐκτίτταται παρὰ τὴν Κνιδίαν
5 μακρὰ ὑψηλὴ στενὴ, τὴν περίμετρον ὅσον ἑκατὸν καὶ
τετταράκοντα σταδίων, ἔχουσα ὕψορμον. ἡ δὲ Χαλκία
τῆς Τήλου διέχει σταδίους ὀγδοήκοντα, Καρπάθου δὲ
τετρακοσίου, Ἀστυπαλαίας δὲ περὶ διπλασίους· ἔχει
δὲ καὶ κατοικίαν ὁμώνυμον καὶ ἱερὸν Ἀπόλλωνος καὶ
10 λιμένα.

Νίσυρος δὲ πρὸς ἄρκτον μὲν ἐστὶ Τήλου διέχουσα 16
αὐτῆς ὅσον ἐξήκοντα σταδίους ὅσους καὶ Κῶ διέχει,
στρογγύλη δὲ καὶ ὑψηλὴ καὶ πετρῶδης τοῦ μυλίου λ-
θου· τοῖς γοῦν ἀστυγέιτοσιν ἐκεῖθεν ἐστὶν ἡ τῶν μύλων
15 εὐπορία. ἔχει δὲ καὶ πόλιν ὁμώνυμον καὶ λιμένα καὶ
θερμὰ καὶ Ποσειδῶνος ἱερὸν· περίμετρον δὲ αὐτῆς
ὀγδοήκοντα στάδιοι. ἔστι δὲ καὶ νησία πρὸς αὐτῇ Νισυ- C.489
ρίων λεγόμενα. φασὶ δὲ τὴν Νίσυρον ἀποθραύσασθαι εἰ-
ναι τῆς Κῶ, προσθίνετες καὶ μῦθον, ὅτι Ποσειδῶν διώ-
20 κων ἕνα τῶν γιγάντων Πολυβώτην ἀποθραύσας τῇ τρι-
αίνῃ τρύφος τῆς Κῶ ἐπ' αὐτὸν βάλοι, καὶ γένοιτο νῆσος
τὸ βληθὲν ἡ Νίσυρος ὑποκείμενον ἔχουσα ἐν αὐτῇ τὸν
γίγαντα· τινὲς δὲ αὐτὸν ὑποκείσθαι τῇ Κῶ φασιν.

Ἡ δὲ Κάρπαθος, ἣν Κράπαθον εἶπεν ὁ ποιητής, 17
25 ὑψηλὴ ἐστὶ, κύκλον ἔχουσα σταδίων διακοσίων. τε-
τράπολις δ' ὑπῆρξε καὶ ὄνομα εἶχεν ἀξιόλογον, ἀφ'
οὗ καὶ τῷ πελάγει τοῦνομα ἐγένετο. μίᾳ δὲ τῶν πό-
λεων ἐκαλεῖτο Νίσυρος ὁμώνυμος τῇ τῶν Νισυρίων
νήσῳ. κεῖται δὲ τῆς Αἰβύης κατὰ Λευκὴν ἀκτὴν, ἡ τῆς
30 μὲν Ἀλεξανδρείας περὶ χιλίους διέχει σταδίους, τῆς δὲ
Καρπαθοῦ περὶ τετρακισχιλίου.

Κάσος δὲ ταύτης μὲν ἀπὸ ἐβδομήκοντά ἐστι στα- 18

δίῳ, τοῦ δὲ Σαμωνίου τοῦ ἄκρου τῆς Κρήτης διακοσίῳ πεντήκοντα· κύκλον δὲ ἔχει σταδίων ὀγδοήκοντα. ἔστι δ' ἐν αὐτῇ καὶ πόλις ὁμώνυμος, καὶ Κασίων νῆσοι καλούμεναι πλείους περὶ αὐτήν.

- 19 Νήσους δὲ Καλύδνας τὰς Σποράδας λέγειν φασὶ τὸν ποιητὴν, ὃν μίαν εἶναι Κάλυμναν· εἰκὸς δ' ὥς ἐκ τῶν Νισυρίων λέγονται καὶ Κασίων αἱ ἐγγυὲς καὶ ὑπήκοοι, οὕτως καὶ τὰς τῇ Καλύμνῃ περικειμένους ἴσως τότε λεγομένην Καλύδνην· τινὲς δὲ δύο εἶναι Καλύδνας φασὶ Λέρον καὶ Κάλυμναν, ἅσπερ καὶ λέγειν τὸν ποιητὴν. 10 ὁ δὲ Σκήψιος πληθυντικῶς ὠνομάσθαι τὴν νήσον Καλύμνας φησὶν, ὥς Ἀθήνας καὶ Θήβας, δεῦν δὲ ὑπερβατῶς δέξασθαι τὸ τοῦ ποιητοῦ· οὐ γὰρ νήσους Καλύδνας λέγειν, ἀλλ' „οἱ δ' ἄρα νήσους Νίσυρόν τ' „εἶχον Κράπαθόν τε Κάσον τε καὶ Κῶν, Εὐρυπύλοιο 15 „πόλιν, Καλύδνας τε.“ ἅπαν μὲν οὖν τὸ νησιωτικὸν μέλι ὥς ἐπὶ τὸ πολὺν ἄσπετον ἔστι καὶ ἐνάμιλλον τῷ Ἀττικῷ, τὸ δ' ἐν ταῖς νήσοις διαφερόντως, μάλιστα δὲ τὸ Καλύμνιον.

- 1 Τῇ δ' Εὐρώπῃ συνεχῆς ἔστιν ἡ Ἀσία κατὰ τὸν Τάναϊν συνάπτουσα αὐτῇ· περὶ ταύτης οὖν ἐφεξῆς ῥητέον διελόντας φυσικοῖς τισιν ὅροις τοῦ σαφοῦς χάριν. ὅπερ οὖν Ἐρατοσθένους ἐφ' ὅλης τῆς οἰκουμένης 25 ἐποίησε, τοῦθ' ἡμῖν ἐπὶ τῆς Ἀσίας ποιητέον.
- 2 Ὁ γὰρ Ταῦρος μέσην πῶς διέζωκε ταύτην τὴν ἡπειρον ἀπὸ τῆς ἐσπέρας ἐπὶ τὴν ἑω τεταμένος, τὸ μὲν αὐτῆς ἀπολείπων πρὸς βορρᾶν τὸ δὲ μεσημβρινόν. καλοῦσι δὲ αὐτῶν οἱ Ἕλληνες τὸ μὲν ἐντὸς τοῦ Ταύρου 30 τὸ δὲ ἐκτός· εἰρηται δὲ ταῦθ' ἡμῖν καὶ πρότερον, ἀλλ' εἰρήσθω καὶ νῦν ὑπομνήσεως χάριν.

Πλάτος μὲν οὖν ἔχει τὸ ὄρος πολλαχοῦ καὶ τρισχι- 3
λίων σταδίων, μῆκος δ' ὅσον καὶ τὸ τῆς Ἀσίας, τετ-
τάρων πον μυριάδων καὶ πεντακισχιλίων, ἀπὸ τῆς
Ῥοδίων περαίας ἐπὶ τὰ ἄκρα τῆς Ἰνδικῆς καὶ Σκυθίας
5 πρὸς τὰς ἀνατολάς.

Λήγεται δ' εἰς μέρη πολλὰ καὶ ὀνόματα περιγρα- 4
φαῖς καὶ μείζοσι καὶ ἐλάττοσιν ἀφωρισμένα. ἐπεὶ δ' ἐν
τῷ τοσοῦτῳ πλάτει τοῦ ὄρους ἀπολαμβάνεται τινα
ἔθνη, τὰ μὲν ἀσημότερα τὰ δὲ καὶ παντελῶς γινώριμα 0.491
10 (καθάπερ ἡ Παρθυαία καὶ Μηδία καὶ Ἀρμενία καὶ
Καππαδοκῶν τινες καὶ Κίλικες καὶ Πισίδαι), τὰ μὲν
* πλεονάζοντα τοῖς προσβόροις μέρεσιν ἐνταῦθα τα-
κτέον, τὰ δ' ἐν τοῖς νοτίοις εἰς τὰ νότια, καὶ τὰ ἐν
μέσῳ δὲ τῶν ὁρῶν κείμενα διὰ τὰς τῶν ἀέρων ὁμοιό-
15 τητας πρὸς βορρᾶν πῶς θετέον· ψυχροὶ γὰρ εἰσιν, οἱ
δὲ νότιοι θερμοί. καὶ τῶν ποταμῶν δὲ αἱ ῥύσεις ἐν-
θένδε ἰοῦσαι πᾶσαι σχεδόν τι εἰς τὰναντία αἱ μὲν εἰς τὰ
βόρεια αἱ δ' εἰς τὰ νότια μέρη (τά γε πρῶτα, καὶ ὅστε-
ρόν τινες ἐπιστρέφωσι πρὸς ἀνατολὰς ἢ δύσεις), ἔχουσι
20 τι εὐφυνὲς πρὸς τὸ τοῖς ὄρεσιν ὁρίοις χρῆσθαι κατὰ τὴν
εἰς δύο μέρη διαίρεσιν τῆς Ἀσίας· καθάπερ καὶ ἡ θά-
λαττα ἢ ἐντὸς στηλῶν, ἐπ' εὐθείας πῶς οὕσα ἢ πλεί-
στη τοῖς ὄρεσι τούτοις, ἐπιτηδεῖα γεγέννηται πρὸς τὸ
δύο ποιεῖν ἡπείρους, τὴν τε Εὐρώπην καὶ τὴν Αι-
25 βύην, ὅριον ἀμφοῖν οὕσα ἀξιόλογον.

Τοῖς δὲ μεταβαίνουσιν ἀπὸ τῆς Εὐρώπης ἐπὶ τὴν 5
Ἀσίαν ἐν τῇ γεωγραφίᾳ τὰ πρὸς βορρᾶν ἐστὶ πρῶτα
τῆς εἰς δύο διαιρέσεως, ὥστε ἀπὸ τούτων ἀρκτέον.
αὐτῶν δὲ τούτων πρῶτά ἐστὶ τὰ περὶ τὸν Τάναϊν, ὅν-
30 περ τῆς Εὐρώπης καὶ τῆς Ἀσίας ὅριον ὑπεθέμεθα.
ἐστὶ δὲ ταῦτα τρόπον τινὰ χερρονησιζόντα· περιέχεται
γὰρ ἐκ μὲν τῆς ἐσπέρας τῷ ποταμῷ τῷ Ταναΐδι καὶ τῇ

Μαιώτιδι μέχρι τοῦ Βοσπόρου καὶ τῆς τοῦ Εὐξείνου
 παραλίας τῆς τελευτώσης εἰς τὴν Κολχίδα· ἐκ δὲ τῶν
 ἄρκτων τῷ Ὠκεανῷ μέχρι τοῦ στόματος τῆς Κασπίας
 θαλάττης· ἔωθεν δὲ αὐτῇ ταύτῃ τῇ θαλάττῃ μέχρι
 τῶν μεθορίων τῆς τε Ἀλβανίας καὶ τῆς Ἀρμενίας, καθ' 5
 ἃ ὁ Κῦρος καὶ ὁ Ἀράξης ἐκδιδούσι ποταμοί, ῥέοντες ὁ
 μὲν διὰ τῆς Ἀρμενίας Κῦρος δὲ διὰ τῆς Ἰβηρίας καὶ
 τῆς Ἀλβανίας· ἐκ νότου δὲ τῇ ἀπὸ τῆς ἐκβολῆς τοῦ
 Κύρου μέχρι τῆς Κολχίδος, ὅσον τρισχιλίων οὔση στα-
 δίων ἀπὸ θαλάττης ἐπὶ θάλατταν, δι' Ἀλβανῶν καὶ 10
 Ἰβήρων, ὥστε ἰσθμοῦ λόγον ἔχειν. οἱ δ' ἐπὶ τοσοῦ-
 τον συναγαγόντες τὸν ἰσθμὸν ἐφ' ὅσον Κλείταρχος,
 ἐπικλυστον φήσας ἕξ ἑκατέρου τοῦ πελάγους, οὐδ' ἂν
 λόγου ἀξιοῖντο. Ποσειδώνιος δὲ χιλίων καὶ πεντακο-
 σίων εἴρηκε τὸν ἰσθμὸν, ὅσον καὶ τὸν ἀπὸ Πηλουσίου 15
 ἰσθμὸν εἰς τὴν Ἐρυθράν. „δοκῶ δέ“ φησί, „μὴ πολὺ δια-
 φέρειν μὴδὲ τὸν ἀπὸ τῆς Μαιώτιδος εἰς τὸν Ὠκεανόν.“

6 Οὐκ οἶδα δὲ πῶς ἂν τις περὶ τῶν ἀδήλων αὐτῷ
 πιστεύσειε μὴδὲν εἰκὸς ἔχοντι εἰπεῖν περὶ αὐτῶν,
 ὅταν περὶ τῶν φανερῶν οὕτω παραλόγως λέγῃ, καὶ 20
 ταῦτα φίλος Πομπηῖω γεγονῶς τῷ στρατεύσαντι ἐπὶ
 C.492 τοὺς Ἰβήρας καὶ τοὺς Ἀλβανοὺς μέχρι τῆς ἐφ' ἑκάτε-
 ρα θαλάττης τῆς τε Κασπίας καὶ τῆς Κολχικῆς. φασὶ
 γοῦν ἐν Ῥόδῳ γενόμενον τὸν Πομπήιον, ἡνίκα ἐπὶ
 τὸν ληστρικὸν πόλεμον ἐξῆλθεν (εὐθύς δ' ἔμελλε καὶ 25
 ἐπὶ Μιθριδάτην ὀρμήσειν καὶ τὰ μέχρι τῆς Κασπίας
 ἔσθῃ), παρατυχεῖν διαλεγομένῳ τῷ Ποσειδωνίῳ, ἀπι-
 όντα δ' ἐρέσθαι εἴ τι προστάττει, τὸν δ' εἰπεῖν „αἶεν
 ἀριστεύειν καὶ ὑπείροχον ἔμμεναι ἄλλων.“ προστίθει
 δὲ τούτοις ὅτι καὶ τὴν ἱστορίαν συνέγραψε τὴν περὶ 30
 αὐτόν. διὰ δὲ ταῦτα ἐχρῆν φροντίσαι τὰ ληθούσ
 πλέον τι.

Δεύτερον δ' ἂν εἴη μέρος τὸ ὑπὲρ τῆς Ἰσθμίας 7
 θαλάττης, ἣν [καὶ] Κασπίαν καλοῦμεν, μέχρι τῶν κατ'
 Ἰνδοὺς Σκυθῶν. τρίτον δὲ μέρος τὸ συνεχὲς τῷ λε-
 χθέντι ἰσθμῷ καὶ τὰ ἐξῆς τούτῳ καὶ ταῖς Κασπίαις πύ-
 5 λαις, τῶν ἐντὸς τοῦ Ταύρου καὶ τῆς Εὐρώπης ἐγγυ-
 τάτω· ταῦτα δ' ἐστὶ Μηδία καὶ Ἀρμενία καὶ Καππα-
 δοκία καὶ τὰ μεταξύ. τέταρτον δ' ἡ ἐντὸς Ἄλυσος γῆ
 καὶ τὰ ἐν αὐτῇ τῷ Ταύρῳ καὶ ἐκτὸς ὅσα εἰς τὴν χειροῦ-
 νησον ἐμπίπτει, ἣν ποιεῖ ὁ διείργων ἰσθμὸς τὴν τε
 10 Ποντικὴν καὶ τὴν Κιλικίαν θάλατταν. τῶν δὲ ἄλλων
 τῶν ἔξω τοῦ Ταύρου τὴν τε Ἰνδικὴν τίθεμεν καὶ τὴν
 Ἀριανὴν μέχρι τῶν ἐθνῶν τῶν καθηκόντων πρὸς τε
 τὴν κατὰ Πέρσας θάλατταν καὶ τὸν Ἀράβιον κόλπον
 καὶ τὸν Νεῖλον καὶ πρὸς τὸ Αἰγύπτιον πέλαγος καὶ τὸ
 15 Ἰσσικόν.

Οὕτω δὲ διακειμένων τὸ πρῶτον μέρος οἰκοῦσιν 2
 ἐκ μὲν τῶν πρὸς ἄρκτον μερῶν καὶ τὸν Ὠκεανὸν Σκυ-
 θῶν τινὲς νομάδες καὶ ἀμάξιοι, ἐνδοτέρῳ δὲ τούτων
 Σαρμάται, καὶ οὗτοι Σκύθαι, Ἀορσοὶ καὶ Σιρακοὶ
 20 μέχρι τῶν Καυκασίων ὄρων ἐπὶ μεσημβρίαν τείνου-
 ντες, οἱ μὲν νομάδες οἱ δὲ καὶ σκηνῖται καὶ γεωργοί,
 περὶ δὲ τὴν λίμνην Μαιῶται· πρὸς δὲ τῇ θαλάττῃ τοῦ
 Βοσπόρου τὰ κατὰ τὴν Ἀσίαν ἐστὶ καὶ ἡ Σινδική·
 μετὰ δὲ ταύτην Ἀχαιοὶ καὶ Ζυγοὶ καὶ Ἠνίοχοι Κερκέται
 25 τε καὶ Μακροπῶγνες. ὑπέρεκειται δὲ τούτων καὶ
 τὰ τῶν Φθειροφάγων στενὰ· μετὰ δὲ τοὺς Ἠνιόχους
 ἡ Κολχὴς ὑπὸ τοῖς Καυκασίοις ὄρεσι κειμένη καὶ τοῖς
 Μοσχικοῖς. ἐπεὶ δ' ὄριον ὑπόκειται τῆς Εὐρώπης καὶ
 τῆς Ἀσίας ὁ Τάναϊς ποταμός, ἐντεῦθεν ἀρξάμενοι τὰ
 30 καθ' ἕκαστα ὑπογράφομεν.

2 Φέρεται μὲν οὖν ἀπὸ τῶν ἄρκτικῶν μερῶν, οὗ μὴν ὥς ἂν κατὰ διάμετρον ἀντίρρους τῷ Νείλῳ, καθάπερ νομίζουσιν οἱ πολλοί, ἀλλὰ ἐωθινώτερος ἐκεῖ-
 493νου, παραπλησίως ἐκείνῳ τὰς ἀρχὰς ἀδήλους ἔχων· ἀλλὰ τοῦ μὲν πολὺ τὸ φανερὸν χῶραν διεξιόντος πᾶ- 5
 σαν εὐεπίμικτον καὶ μακροὺς ἀνάπλους ἔχοντος, τοῦ δὲ Ταναΐδος τὰς μὲν ἐκβολὰς ἴσμεν (δύο δ' εἰσὶν εἰς τὰ ἄρκτικώτατα μέρη τῆς Μαιωτίδος ἐξήκοντα σταδίου ἀλλήλων διέχουσαι), τοῦ δ' ὑπὲρ τῶν ἐκβολῶν ὀλίγον τὸ γινώριμόν ἐστι διὰ τὰ ψύχην καὶ τὰς ἀπορίας τῆς χῶ- 10
 ρας, ἃς οἱ μὲν ἀντόχθονες δύνανται φέρειν σαφῆ καὶ γάλακτι τρεφόμενοι νομαδικῶς, οἱ δ' ἄλλοεθνεῖς οὐχ ὑπομένουσιν. ἄλλως τε οἱ νομάδες δυσεπίμικτοι τοῖς ἄλλοις ὄντες καὶ πλήθει καὶ βίᾳ διαφέροντες ἀποκε-
 * κλείκασιν εἰ καὶ τι πορεύσιμον τῆς χῶρας ἐστὶν ἢ εἰ 15
 τινὰς τετύχηκεν ἀνάπλους ἔχων ὁ ποταμός. ἀπὸ δὲ τῆς αἰτίας ταύτης οἱ μὲν ὑπέλαβον τὰς πηγὰς ἔχειν αὐ-
 τὸν ἐν τοῖς Κανκασίοις ὄρεσι, πολὺν δ' ἐνεχθέντα ἐπὶ τὰς ἄρκτους εἶτ' ἀναστρέψαντα ἐκβάλλειν εἰς τὴν Μαιωτίν (τούτοις δὲ ὁμοδοξεῖ καὶ Θεοφάνης ὁ Μιτυ- 20
 ληναιος), οἱ δ' ἀπὸ τῶν ἄνω μερῶν τοῦ Ἰστροῦ φέρεσθαι· σημεῖον δὲ φέρουσιν οὐδὲν τῆς πόρρωθεν οὕτω ρύσεως καὶ ἀπ' ἄλλων κλιμάτων, ὥσπερ οὐ θυ-
 νατὸν ὃν καὶ ἐγγύθεν καὶ ἀπὸ τῶν ἄρκτων.

3 Ἐπὶ δὲ τῷ ποταμῷ καὶ τῇ λίμνῃ πόλις ὁμώνυμος 25
 οἰκεῖται Τάναϊς, κτίσμα τῶν τὸν Βόσπορον ἐχόντων Ἑλλήνων. νεωστὶ μὲν οὖν ἐξεπόρθησεν αὐτὴν Πολέ-
 μων ὁ βασιλεὺς ἀπειθοῦσαν, ἣν δ' ἐμπόριον κοινὸν τῶν τε Ἀσιανῶν καὶ τῶν Εὐρωπαϊῶν νομάδων καὶ τῶν ἐκ τοῦ Βοσπόρου τὴν λίμνην πλεόντων, τῶν μὲν 30
 ἀνδράποδα ἀγόντων καὶ δέρματα καὶ εἰ τι ἄλλο τῶν νομαδικῶν, τῶν δ' ἐσθῆτα καὶ οἶνον καὶ τᾶλλα ὅσα

τῆς ἡμέρου διαίτης οἰκεία ἀντιφορτιζομένων. πρόκει-
ται δ' ἐν ἑκατὸν σταδίοις τοῦ ἐμπορίου νῆσος Ἀλωπε-
κία, κατοικία μιγάδων ἀνθρώπων· ἔστι δὲ καὶ ἄλλα
νησίδια πλησίον ἐν τῇ λίμνῃ. διέχει δὲ τοῦ στόματος
5 τῆς Μαιώτιδος εὐθυπλοοῦσιν ἐπὶ τὰ βόρεια δισχιλίους
καὶ διακοσίους σταδίους ὁ Τάναϊς, οὐ πολὺ δὲ πλείους
εἰς παραλεγομένῳ τὴν γῆν.

Ἐν δὲ τῷ παράπλῳ τῷ παρὰ γῆν πρῶτον μὲν 4
ἔστιν ἀπὸ τοῦ Ταναΐδος προϋσιν ἐν ὀκτακοσίοις στα-
10 δίοις ὁ μέγας καλούμενος Ῥομβίτης, ἐν ᾧ τὰ πλείστα
ἀλιεύματα τῶν εἰς ταριχεύσεως ἰχθύων· ἔπειτα ἐν ἄλλοις
ὀκτακοσίοις ὁ ἐλάττων Ῥομβίτης [καὶ] ἄκρα ἔχουσα καὶ
αὐτὴ ἀλιείας ἐλάττους· ἔχουσι δὲ οἱ μὲν πρό-
τερον νησία ὀρμητήρια, οἱ δ' ἐν τῷ μικρῷ Ῥομβίτῃ
15 αὐτοὶ εἰσιν οἱ Μαιῶται ἐργαζόμενοι· οἰκοῦσι γὰρ ἐν
τῷ παράπλῳ τούτῳ παντὶ οἱ Μαιῶται, γεωργοὶ μὲν 0.494
οὐχ ἦττον δὲ τῶν νομάδων πολεμισταί. διήρηνται δὲ
εἰς ἔθνη πλείω τὰ μὲν πλησίον τοῦ Ταναΐδος ἀγριώ-
τερα, τὰ δὲ συνάπτοντα τῷ Βοσπόρῳ χειροσῆθη μᾶλλον.
20 ἀπὸ δὲ τοῦ μικροῦ Ῥομβίτου στάδιοι εἰσιν ἑξακόσιοι
ἐπὶ Τυράμβην καὶ τὸν Ἀντικείμενον ποταμόν· εἰδ' ἑκα-
τὸν καὶ εἰκοσιν ἐπὶ τὴν κώμην τὴν Κιμμερικὴν, ἣτις
ἔστιν ἀφετήριον τοῖς τὴν λίμνην πλέουσιν· ἐν δὲ τῷ
παράπλῳ τούτῳ καὶ σκοπαὶ τινες λέγονται Κλαζο-
25 μενίων.

Τὸ δὲ Κιμμερικὸν πόλις ἦν πρότερον ἐπὶ χειρο- 5
νῆσου ἰδρυμένη, τὸν ἰσθμὸν τάφρῳ καὶ χώματι κλείου-
σα· ἐκέκτηντο δ' οἱ Κιμμέριοι μεγάλην ποτὲ ἐν τῷ
Βοσπόρῳ δύναμιν, διόπερ καὶ Κιμμερικὸς Βόσπορος
30 ὠνομάσθη. οὗτοι δ' εἰσὶν οἱ τοὺς τὴν μεσόγαιαν οἰ-
κοῦντας ἐν τοῖς δεξιοῖς μέρεσι τοῦ Πόντου μέχρι Ἰω-
νίας ἐπιδραυόντες. τούτους μὲν οὖν ἐξήλασαν ἐκ τῶν

τόπων Σκύθαι, τοὺς δὲ Σκύθας Ἕλληνες οἱ Παντι-
κάπαιον καὶ τὰς ἄλλας οἰκίσαντες πόλεις τὰς ἐν Βοσ-
πόρῳ.

- 6 Εἴτ' ἐπὶ τὴν Ἀχίλλειον κώμην εἴκοσιν, ἐν ἣ τὸ
Ἀχιλλέως ἱερὸν· ἐνταῦθα δ' ἐστὶν ὁ στενωπὸς πορθ- 5
μὸς τοῦ στόματος τῆς Μαιώτιδος ὅσον εἴκοσι στα-
δίων ἢ πλειόνων, ἔχων ἐν τῇ περαιοῖα κώμην τὸ Μυρ-
μήκιον (πλησίον δ' ἐστὶ τοῦ Ἡρακλείου) καὶ τὸ Παρ-
θένιον.
- 7 Ἐντεῦθεν δ' ἐπὶ τὸ Σατύρου μνημα ἐνενήκοντα 10
σταδίοι· τοῦτο δ' ἐστὶν ἐπ' ἄκρας τινὸς χωστὸν ἀν-
δρὸς τῶν ἐπιφανῶς δυναστευσάντων τοῦ Βοσπόρου.
- 8 Πλησίον δὲ κώμῃ Πατραεύς, ἀφ' ἧς ἐπὶ κώμην
Κοροκονδάμην ἑκατὸν τριάκοντα· αὕτη δ' ἐστὶ τοῦ
Κιμμερικοῦ καλουμένου Βοσπόρου πέρας. καλεῖται 15
δὲ οὕτως ὁ στενωπὸς ἐπὶ τοῦ στόματος τῆς Μαιώτιδος
ἀπὸ τῶν κατὰ τὸ Ἀχίλλειον καὶ τὸ Μυρμήκιον στε-
νωὶν διατείνων μέχρι πρὸς τὴν Κοροκονδάμην καὶ τὸ
ἀντικείμενον αὐτῇ κωμίον τῆς Παντικαπαίων γῆς
ὄνομα Ἀκραν ἐβδομήκοντα σταδίων διειργόμενον 20
πορθμῷ· μέχρι γὰρ δεῦρο καὶ ὁ κρύσταλλος διατείνει,
πηττομένης τῆς Μαιώτιδος κατὰ τοὺς κρυμοὺς ὥστε
πεξεύεσθαι. ἅπας δ' ἐστὶν εὐλίμενος ὁ στενωπὸς
οὗτος.
- 9 Ὑπέρκειται δὲ τῆς Κοροκονδάμης εὐμεγέθης λί- 25
μνη, ἣν καλοῦσιν ἀπ' αὐτῆς Κοροκονδαμίτιν· ἐκδί-
δωσι δ' ἀπὸ δέκα σταδίων τῆς κώμης εἰς τὴν θάλατ-
ταν· ἐμβάλλει δὲ εἰς τὴν λίμνην ἀπορροῶς τις τοῦ Ἀν-
τικείου ποταμοῦ, καὶ ποιεῖ νῆσον περίκλυστον τινα
ταύτη τε τῇ λίμνῃ καὶ τῇ Μαιώτιδι καὶ τῷ ποταμῷ. 30
τινὲς δὲ καὶ τοῦτον τὸν ποταμὸν Ὑπανιν προσαγορεύ-
ουσι, καθάπερ καὶ τὸν πρὸς τῷ Βορυσθένει.

Εἰσπλεύσαντι δ' εἰς τὴν Κοροκονδαμίτιν ἢ τε Φα- 10
 ναγόρειά ἐστι πόλις ἀξιόλογος καὶ Κῆποι καὶ Ἑρμῶ-C.495
 νασσα καὶ τὸ Ἀπάτουρον τὸ τῆς Ἀφροδίτης ἱερὸν ὧν
 ἡ Φαναγόρεια καὶ οἱ Κῆποι κατὰ τὴν λεχθεῖσαν νῆσον
 5 ἵδρυνται εἰσπλέοντι ἐν ἀριστερᾷ, αἱ δὲ λοιπαὶ πόλεις
 ἐν δεξιᾷ πέραν Ἑπάνιος ἐν τῇ Σινδικῇ. ἔστι δὲ καὶ
 Γοργιπία ἐν τῇ Σινδικῇ, τὸ βασιλείον τῶν Σινδῶν
 πλησίον θαλάττης, καὶ Ἀβοράκη. τοῖς δὲ τοῦ Βοσπό-
 ρου δυνάσταις ὑπήκοοι ὄντες ἅπαντες Βοσπορανοὶ
 10 καλοῦνται· καὶ ἔστι τῶν μὲν Εὐρωπαϊῶν Βοσπορα-
 νῶν μητρόπολις τὸ Παντικάπαιον, τῶν δ' Ἀσιανῶν
 τὸ Φαναγόρειον (καλεῖται γὰρ καὶ οὕτως ἡ πόλις), καὶ
 δοκεῖ τῶν μὲν ἐκ τῆς Μαιώτιδος καὶ τῆς ὑπερκειμένης
 βαρβάρου κατακομιζομένων ἐμπόριον εἶναι τὰ Φανα-
 15 γόρεια, τῶν δ' ἐκ τῆς θαλάττης ἀναφερομένων ἐκείσε
 τὸ Παντικάπαιον. ἔστι δὲ καὶ ἐν τῇ Φαναγορείᾳ τῆς
 Ἀφροδίτης ἱερὸν ἐπίσημον τῆς Ἀπατούρου· ἐνυμολο-
 γοῦσι δὲ τὸ ἐπιθέτον τῆς θεοῦ μῦθόν τινα προστη-
 σάμενοι, ὥς ἐπιθεμένων ἐνταῦθα τῇ θεῷ τῶν γιγάν-
 20 των ἐπικαλεσαμένη τὸν Ἡρακλέα κρύψειεν ἐν κευθ-
 μῶνί τινι, εἶτα τῶν γιγάντων ἕκαστον δεχομένη καθ'
 ἓνα τῷ Ἡρακλεῖ παραδιδοίη δολοφονεῖν ἐξ ἀπάτης.

Τῶν Μαιωτῶν δ' εἰσὶν αὐτοί τε οἱ Σινδοὶ καὶ 11
 Δανδάριοι καὶ Τορέται καὶ Ἄγροι καὶ Ἀρρηχοί, ἔτι δὲ
 25 Τάρπητες Ὀβιδιακηνοὶ Σιττακηνοὶ Δόσκοι, ἄλλοι
 πλείους· τούτων δ' εἰσὶ καὶ οἱ Ἀσπουργιανοὶ μεταξὺ
 Φαναγορείας οἰκοῦντες καὶ Γοργιπίας ἐν πεντακοσίοις
 σταδίοις, οἷς ἐπιθέμενος Πολέμων ὁ βασιλεὺς ἐπὶ προσ-
 ποιήσει φιλίας οὐ λαθὼν ἀντεστρατηγήθη καὶ ζωγρία
 30 ληφθεὶς ἀπέθανε. τῶν τε συμπάντων Μαιωτῶν τῶν
 Ἀσιανῶν οἱ μὲν ὑπήκουον τῶν τὸ ἐμπόριον ἐχόντων
 τὸ ἐν τῷ Τανάιδι οἱ δὲ τῶν Βοσπορανῶν· τοτὲ δ' ἀφί-

στάντο ἄλλοτ' ἄλλοι. πολλάκις δ' οἱ τῶν Βοσπορανῶν ἡγεμόνες καὶ τὰ μέχρι τοῦ Τανάιδος κατεῖχον καὶ μάλιστα οἱ ὕστατοι, Φαρνάκης καὶ Ἄσανδρος καὶ Πολέμων. Φαρνάκης δέ ποτε καὶ τὸν Ὑπανιν τοῖς Λανδαρίοις ἐπαγαγεῖν λέγεται διὰ τινος παλαιᾶς διώρυγος 5 ἀνακαθάρας αὐτὴν [καὶ] κατακλύσαι τὴν χώραν.

12 Μετὰ δὲ τὴν Σινδικὴν καὶ τὴν Γοργιπίαν ἐπὶ τῇ θαλάττῃ ἢ τῶν Ἀχαιοῶν καὶ Ζυγῶν καὶ Ἠνιόχων παραλία τὸ πλεόν ἀλλόμενος καὶ ὀρεινῇ, τοῦ Κανκάσου μέρος οὖσα. ζῶσι δὲ ἀπὸ τῶν κατὰ θάλατταν λησθη- 10 ρίων, ἀκάτια ἔχοντες λεπτὰ στενὰ καὶ κοῦφα, ὅσον ἀνθρώπους πέντε καὶ εἴκοσι δεχόμενα, σπάνιον δὲ τριάκοντα δέξασθαι τοὺς πάντας δυνάμενα· καλοῦσι δ' αὐτὰ οἱ Ἕλληνες καμάρας. φασὶ δ' ἀπὸ τῆς Ἰάσονος στρατιᾶς τοὺς μὲν Φθιώτας Ἀχαιοὺς τὴν ἐνθάδε 15 C.496 Ἀχαΐαν οἰκίσαι, Λάκωνας δὲ τὴν Ἠνιοχίαν, ὧν ἡρχον Κρέκας καὶ Ἀμφίστρατος οἱ τῶν Διοσκούρων ἡνίοχοι, καὶ τοὺς Ἠνιόχους ἀπὸ τούτων εἰκὸς ὠνομάσθαι. τῶν δ' οὖν καμαρῶν στόλους κατασκευαζόμενοι καὶ ἐπιπλέοντες τοτὲ μὲν ταῖς ὀλκάσι τοτὲ δὲ 20 χώρα τινὶ ἢ καὶ πόλει θαλαττοκρατοῦσι. προσλαμβάνουσι δ' ἔσθ' ὅτε καὶ οἱ τὸν Βόσπορον ἔχοντες ὑφόρους χορηγοῦντες καὶ ἀγορὰν καὶ διάθεσιν τῶν ἀρπαζομένων· ἐπανιόντες δὲ εἰς τὰ οἰκεῖα χωρία, ναυλοχεῖν οὐκ ἔχοντες, ἀναθέμενοι τοῖς ὅμοις τὰς καμάρας 25 ἀναφέρουσιν ἐπὶ τοὺς δρυμοὺς ἐν οἷσπερ καὶ οἰκοῦσι, λυπρὰν ἀροῦντες γῆν· καταφέρουσι δὲ πάλιν ὅταν ἢ καιρὸς τοῦ πλεῖν. τὸ δ' αὐτὸ ποιοῦσι καὶ ἐν τῇ ἄλλοτρίᾳ γνώριμα ἔχοντες ὑλώδη χωρία, ἐν οἷς ἀποκρύψαντες τὰς καμάρας αὐτοὶ πλανῶνται πεζῇ νύκτωρ 30 καὶ μεθ' ἡμέραν ἀνδραποδισμοῦ χάριν. ἃ δ' ἂν λάβωσιν ἐπὶ λυτρά ποιοῦσι ῥαδίως μετὰ τοὺς ἀνάπλους

μηνύοντες τοῖς ἀπολέσασιν. ἐν μὲν οὖν τοῖς δυνα-
στευομένοις τόποις ἐστὶ τις βοήθεια ἐκ τῶν ἡγεμόνων
τοῖς ἀδικουμένοις· ἀντεπιτίθενται γὰρ πολλάκις καὶ
κατάγουσιν αὐτάνδρους τὰς καμάρας· ἡ δ' ὑπὸ Ῥω-
5 μαίοις ἀβοηθητοτέρα ἐστὶ διὰ τὴν ὀλιγορρίαν τῶν πεμ-
πομένων.

Τοιοῦτος μὲν ὁ τούτων βίος· δυναστεύονται δὲ 13
καὶ οὗτοι ὑπὸ τῶν καλουμένων Σκηπτούχων· καὶ
αὐτοὶ δὲ οὗτοι ὑπὸ τυράννοις ἢ βασιλεῦσιν εἰσιν. οἱ
10 γοῦν Ἡνίοχοι τέτταρας εἶχον βασιλέας, ἡνίκα Μιθρι-
δάτης ὁ Εὐπάτωρ φεύγων ἐκ τῆς προγονικῆς εἰς Βόσ-
πορον διῆει τὴν χώραν αὐτῶν· καὶ αὕτη μὲν ἦν πο-
ρεύσιμος αὐτῷ, τῆς δὲ τῶν Ζυγῶν ἀπογνοῦς διὰ τε
δυσχερείας καὶ ἀγριότητος τῇ παραλίᾳ χαλεπῶς ἦει, τὰ
15 πολλὰ ἐμβαίνων ἐπὶ τὴν θάλατταν, ἕως ἐπὶ τὴν τῶν
Ἀχαιῶν ἦκε· καὶ προσλαβόντων τούτων ἐξετέλεσε
τὴν ὁδὸν τὴν ἐκ Φάσιδος οὐ πολὺ τῶν τετρακισχιλίων
λείπουσαν σταδίων.

Εὐθὺς δ' οὖν ἀπὸ τῆς Κοροκονδάμης πρὸς ἕω 14
20 μὲν ὁ πλοῦς ἐστίν. ἐν δὲ σταδίοις ἑκατὸν ὀγδοήκοντα
ὁ Σινδικός ἐστι λιμὴν καὶ πόλις, εἴτα ἐν τετρακοσίοις
τὰ καλούμενα Βατὰ κώμη καὶ λιμὴν, καθ' ὃ μάλιστα
ἀντικεῖσθαι δοκεῖ πρὸς νότον ἢ Σινώπη ταύτῃ τῇ πα-
ραλίᾳ, καθάπερ ἡ Κάραμβις εἴρηται τοῦ Κριοῦ με-
25 τώπῳ· ἀπὸ δὲ τῶν Βατῶν ὁ μὲν Ἀρτεμίδωρος τὴν
Κερκετῶν λέγει παραλίαν ὑφόρμους ἔχουσαν καὶ κώ-
μας ὅσον ἐπὶ σταδίους ὀκτακοσίους καὶ πεντήκοντα,
εἴτα τὴν τῶν Ἀχαιῶν σταδίων πεντακοσίων, εἴτα τὴν
τῶν Ἡνιόχων χιλίων, εἴτα τὸν Πιτυοῦντα τὸν μέγαν
30 τριακοσίων ἐξήκοντα μέχρι Διοσκουριάδος· οἱ δὲ τὰ C.497
Μιθριδατικά συγγράψαντες, οἷς μᾶλλον προσεκτέον,
Ἀχαιοὺς λέγουσι πρώτους, εἴτα Ζυγούς, εἴτα Ἡνιό-

χους, εἶτα Κερκέτας καὶ Μόσχους καὶ Κόλχους καὶ τοὺς ὑπὲρ τούτων Φθειροφάγους καὶ Σοάνας καὶ ἄλλα μικρὰ ἔθνη τὰ περὶ τὸν Καύκασον. κατ' ἀρχὰς μὲν οὖν ἡ παραλία, καθάπερ εἶπον, ἐπὶ τὴν ἕω τείνει καὶ βλέπει πρὸς νότον, ἀπὸ δὲ τῶν Βατῶν ἐπιστροφὴν 5 λαμβάνει κατὰ μικρόν, εἰτ' ἀντιπρὺσωπος γίνεται τῇ δύσει καὶ τελευτᾷ πρὸς τὸν Πιτυοῦντα καὶ τὴν Διοσκουριάδα· ταῦτα γὰρ τὰ χωρία τῆς Κολχίδος συνάπτει τῇ λεχθείσῃ παραλίᾳ. μετὰ δὲ τὴν Διοσκουριάδα ἡ λοιπὴ τῆς Κολχίδος ἐστὶ παραλία καὶ ἡ συνεχὴς Τραπεζοῦς καμπὴν ἀξιόλογον ποιήσασα, εἶτα εἰς εὐθείαν ταθεῖσά πως πλευρὰν τὴν τὰ δεξιὰ τοῦ Πόντου ποιοῦσαν τὰ βλέποντα πρὸς ἄρκτον. ἅπασα δ' ἡ τῶν Ἀχαιῶν καὶ τῶν ἄλλων παραλία μέχρι Διοσκουριάδος καὶ τῶν ἐπ' εὐθείας πρὸς νότον ἐν τῇ μεσογαίᾳ τόπων 15 ὑποπέπτωκε τῷ Καυκάσῳ.

- 15 "Ἔστι δ' ὄρος τοῦτο ὑπερκείμενον τοῦ πελάγους ἑκατέρου τοῦ τε Ποντικοῦ καὶ τοῦ Κασπίου, διατειχίζον τὸν ἰσθμὸν τὸν διείργοντα αὐτά. ἀφορίζει δὲ πρὸς νότον μὲν τὴν τε Ἀλβανίαν καὶ τὴν Ἰβηρίαν, πρὸς 20 ἄρκτον δὲ τὰ τῶν Σαρματῶν πεδία· εὐδενδρον δ' ἐστὶν ὕλη παντοδαπὴ τῇ τε ἄλλῃ καὶ τῇ ναυπηγησίμῳ. φησὶ δ' Ἐρατοσθένης ὑπὸ τῶν ἐπιχωρίων καλεῖσθαι Κάσπιον τὸν Καύκασον, ἴσως ἀπὸ τῶν Κασπίων παρονομασθέντα. ἀγκῶνες δὲ τινες αὐτοῦ προπίπτου- 25 σιν ἐπὶ τὴν μεσημβρίαν, οἱ τὴν τε Ἰβηρίαν περιλαμβάνουσι μέσην καὶ τοῖς Ἀρμενίων ὄρεσι συνάπτουσι καὶ τοῖς Μοσχικοῖς καλουμένοις, ἔτι δὲ τῷ Σκυδίσῃ καὶ τῷ Παρυάδρῃ· ταῦτα δ' ἐστὶ μέρη τοῦ Ταύρου πάντα τοῦ ποιοῦντος τὸ νότιον τῆς Ἀρμενίας πλευ- 30 ρόν, ἀπερρωγότα πως ἐκείθεν πρὸς ἄρκτον καὶ προσπίπτοντα μέχρι τοῦ Καυκάσου καὶ τῆς τοῦ Εὐξείνου

παραλλίως τῆς ἐπὶ Θεμίσκυραν διατεινούσης ἀπὸ τῆς Κολχίδος.

Ἡ δ' οὖν Διοσκουριάς ἐν κόλπῳ τοιούτῳ κειμένη 16
καὶ τὸ ἑωθινώτατον σημεῖον ἐπέχουσα τοῦ σύμπαντος
5 πελάγους, μυχὸς τε τοῦ Εὐξείνου λέγεται καὶ ἔσχατος
πλοῦς· τό τε παροιμιακῶς λεχθὲν οὕτω δεῖ δέξασθαι
„εἰς Φᾶσιν ἔνθα ναυσὶν ἔσχατος δρόμος,“ οὐχ ὥς τὸν
ποταμὸν λέγοντος τοῦ ποιήσαντος τὸ ἱαμβεῖον, οὐδὲ
δὴ ὥς τὴν ὁμώνυμον αὐτῇ πόλιν κειμένην ἐπὶ τῷ πο-
10 ταμῷ, ἀλλ' ὥς τὴν Κολχίδα ἀπὸ μέρους, ἐπεὶ ἀπὸ γε
τοῦ ποταμοῦ καὶ τῆς πόλεως οὐκ ἐλάττων ἑξακοσίων
σταδίων λείπεται πλοῦς ἐπ' εὐθείας εἰς τὸν μυχόν. ἡ
δ' αὕτη Διοσκουριάς ἐστι καὶ ἀρχὴ τοῦ ἰσθμοῦ τοῦ C. 498
μεταξὺ τῆς Κασπίας καὶ τοῦ Πόντου καὶ ἐμπόριον τῶν
15 ὑπερκειμένων καὶ σύνεγγυς ἔθνῶν κοινόν· συνέρ-
χεσθαι γοῦν εἰς αὐτὴν ἑβδομήκοντα, οἳ δὲ καὶ τρια-
κόσια ἔθνη φασίν, οἷς οὐδὲν τῶν ὄντων μέλει, πάντα
δὲ ἑτερόγλωττα διὰ τὸ σποράδην καὶ ἀμίκτως οἰκεῖν
ὑπὸ αὐθαδείας καὶ ἀγριότητος· Σαρμάται δ' εἰσὶν οἱ
20 πλείους, πάντες δὲ Κανκάσιοι. ταῦτα μὲν δὴ τὰ περὶ
τὴν Διοσκουριάδα.

Καὶ ἡ λοιπὴ δὲ Κολχὶς ἐπὶ τῇ θαλάττῃ ἡ πλείων 17
ἐστὶ· διαρρεῖ δ' αὐτὴν ὁ Φᾶσις, μέγας ποταμὸς ἐξ Ἀρ-
μενίας τὰς ἀρχὰς ἔχων, δεχόμενος τὸν τε Γλαῦκον καὶ
25 τὸν Ἴππον ἐκ τῶν πλησίον ὁρῶν ἐκκίπτοντας· ἀνα-
πλεῖται δὲ μέχρι Σαραπανῶν ἐρύματος δυναμένου δέ-
ξασθαι καὶ πόλεως συνοικισμόν, ὅθεν πεξεύουσιν ἐπὶ
τὸν Κύρον ἡμέραις τέτταρσι δι' ἁμαξιοῦ. ἐπικεῖται
δὲ τῷ Φάσιδι ὁμώνυμος πόλις, ἐμπόριον τῶν Κόλχων,
30 τῇ μὲν προβεβλημένη τὸν ποταμὸν τῇ δὲ λίμνην τῇ δὲ
τὴν θάλατταν. ἐντεῦθεν δὲ πλοῦς ἐπ' Ἀμισοῦ καὶ
Σινώπης * τριῶν ἡμερῶν ἢ δύο διὰ τὸ τοὺς αἰγιάλους

μαλακούς εἶναι καὶ τὰς τῶν ποταμῶν ἐκβολάς. ἀγαθὴ δ' ἐστὶν ἡ χώρα καὶ καρποῖς πλήν τοῦ μέλιτος (πικριζει γὰρ τὸ πλεόν) καὶ τοῖς πρὸς ναυπηγίαν πᾶσιν· ὕλην τε γὰρ καὶ φύει καὶ ποταμοῖς κατακομίζει, λίνον τε ποιεῖ πολὺ καὶ κάνναβιν καὶ κηρὸν καὶ πίτταν. ἡ δὲ λινουρ- 5 γία καὶ τεθρύληται· καὶ γὰρ εἰς τοὺς ἔξω τόπους ἔξε- κόμιζον, καί τινες βουλόμενοι συγγένειάν τινα τοῖς Κόλ- χοις πρὸς τοὺς Αἰγυπτίους ἐμφανίζειν ἀπὸ τούτων πι- στοῦνται. ὑπέρεκειται δὲ τῶν λεχθέντων ποταμῶν ἐν τῇ Μοσχικῇ τὸ τῆς Λευκοθέας ἱερὸν Φοῖβου ἵδρυμα, 10 καὶ μαντεῖον ἐκείνου, ὅπου κριὸς οὐ θύεται, πλούσιόν ποτε ὑπάρξαν, συληθὲν δὲ ὑπὸ Φαρνάκου καθ' ἡμᾶς καὶ μικρὸν ὕστερον ὑπὸ Μιθριδάτου τοῦ Περγαμηνοῦ. κακωθείσης γὰρ χώρας „νοσεῖ τὰ τῶν θεῶν οὐδὲ τι- „μᾶσθαι θέλει,“ φησὶν Εὐριπίδης.

15

18 Τὸ μὲν γὰρ παλαιὸν ὅσῃ ἐπιφάνειαν ἔσχευ ἡ χώ- ρα αὕτη δηλοῦσιν οἱ μῦθοι, τὴν Ἰάσονος στρατεῖαν αἰ- νιττόμενοι προσελθόντος μέχρι καὶ Μηδίας, ἔτι δὲ πρό- τερον τὴν Φοῖβου. μετὰ δὲ ταῦτα διαδεξάμενοι βασι- λεῖς εἰς σκηπτουχίας διηρημένην ἔχοντες τὴν χώραν 20 μέσως ἔπραττον· αὐξηθέντος δὲ ἐπὶ πολὺ Μιθριδάτου τοῦ Εὐπάτορος, εἰς ἐκεῖνον ἡ χώρα περιέστη· ἐπέμ- 0.499πετο δ' αἰεὶ τις τῶν φίλων ὑπαρχος καὶ διοικητὴς τῆς χώρας. τούτων δὲ ἦν καὶ Μοαφέρνης, ὁ τῆς μητρὸς ἡμῶν θεὸς πρὸς πατρός· ἦν δ' ἐνθεν ἡ πλείστη τῷ 25 βασιλεῖ πρὸς τὰς ναυτικὰς δυνάμεις ὑπουργία. κατα- λυθέντος δὲ Μιθριδάτου συγκατελύθη καὶ ἡ ὑπ' αὐ- τῷ πᾶσα καὶ διενεμήθη πολλοῖς· ὕστατα δὲ Πολέμων ἔσχε τὴν Κολχίδα, κάκεινον τελευτήσαντος ἡ γυνὴ Πυ- θοδώρις κρατεῖ, βασιλεύουσα καὶ Κόλχων καὶ Τραπε- 30 ζοῦντος καὶ Φαρνακίας καὶ τῶν ὑπερκειμένων βαρβά- ρων, περὶ ὧν ἐροῦμεν ἐν τοῖς ὕστερον. ἡ δ' οὖν Μο-

σχηκή, ἐν ᾗ τὸ ἱερόν, τριμερὴς ἐστὶ· τὸ μὲν γὰρ ἔχουσιν αὐτῆς Κόλχοι τὸ δὲ Ἰβηρες τὸ δὲ Ἀρμένιοι. ἐστὶ δὲ καὶ πολίχνιον ἐν τῇ Ἰβηρίᾳ Φριζίου πόλις ἣ νῦν Ἰδή-
εσσα, εὐεργετὴς χωρίον ἐν μεθορίοις τῆς Κολχίδος.

- 5 Τῶν δὲ συνερχομένων ἔθνων εἰς τὴν Διοσκουρι-
άδα καὶ οἱ Φθειροφάγοι εἰσὶν, ἀπὸ τοῦ ἀνχμοῦ καὶ τοῦ
πίνου λαβόντες τοῦνομα. πλησίον δὲ καὶ οἱ Σοάνες,
οὐδὲν βελτίους τούτων τῷ πίνῳ δυνάμει δὲ βελτίους,
σχεδὸν δέ τι καὶ κράτιστοι κατὰ ἀλκὴν καὶ δύνανται·
10 δυναστεύουσι γοῦν τῶν κύκλῳ τὰ ἄκρα τοῦ Καυκάσου
κατέχοντες τὰ ὑπὲρ τῆς Διοσκουριάδος· βασιλέα δ'
ἔχουσι καὶ συνέδριον ἀνδρῶν τριακοσίων, συνάγουσι
δ' ὥς φασι στρατιὰν καὶ εἴκοσι μυριάδων· ἅπαν γὰρ
ἐστὶ τὸ πλῆθος μάχιμον, οὐ συντεταγμένον [δὲ]. παρὰ
15 τούτοις δὲ λέγεται καὶ χρυσὸν καταφέρειν τοὺς χει-
μάρρους, ὑποδέχεσθαι δ' αὐτὸν τοὺς βαρβάρους φάτ-
ναις κατατετρημέναις καὶ μαλλωταῖς δοραῖς· ἂφ' οὗ
δὴ μεμυθεῦσθαι καὶ τὸ χρυσόμαλλον δέρος· * εἰ μὴ
καὶ Ἰβηρας ὁμωνύμως τοῖς ἑσπερίοις καλοῦσιν ἀπὸ
20 τῶν ἐκατέρωθι χρυσείων. χρῶνται δ' οἱ Σοάνες φαρ-
μάκοις πρὸς τὰς ἀκίδας * θαυμαστῶς καὶ τοὺς ἀφαρ-
μάκτοις τετρωμένους βέλεσι λυπεῖ κατὰ τὴν ὁσμήν. τὰ
μὲν οὖν ἄλλα ἔθνη τὰ πλησίον τὰ περὶ τὸν Καύκασον
λυπρὰ καὶ μικρόχωρα, τὸ δὲ τῶν Ἀλβανῶν ἔθνος καὶ
25 τὸ τῶν Ἰβήρων, ἃ δὴ πληροῦ μάλιστα τὸν λεχθέντα
ἰσθμόν, Καυκάσια [μὲν] καὶ αὐτὰ λέγοιτ' ἄν, εὐδαί-
μονα δὲ χώραν ἔχει καὶ σφόδρα καλῶς οἰκεῖσθαι δυ-
ναμένην.

Καὶ δὴ κ' ἡ γε Ἰβηρία κατοικεῖται καλῶς τὸ πλέον 3
30 πόλεσί τε καὶ ἐποικίοις, ὥστε καὶ κεραμωτὰς εἶναι στέ-

4. post Κολχίδος: περὶ τὴν Διοσκουριάδα δεῖ ὁ Χάρις πο-
ταμός.

γας καὶ ἀρχιτεκτονικὴν τὴν τῶν οἰκήσεων κατασκευὴν καὶ ἀγορὰς καὶ τᾶλλα κοινά.

2 Τῆς δὲ χώρας τὰ μὲν κύκλῳ τοῖς Καυκασίοις ὄρεσι C.500 περιέχεται· προπεπτῶκασι γάρ, ὥς εἶπον, ἀγκῶνες ἐπὶ τὴν μεσημβρίαν εὐκαρποι, περιλαμβάνοντες τὴν σύμ- 5 πασαν Ἰβηρίαν καὶ συνάπτοντες πρὸς τε τὴν Ἀρμενίαν καὶ τὴν Κολχίδα· ἐν μέσῳ δ' ἐστὶ πεδῖον ποταμοῖς διάρρυτον, μεγίστῳ δὲ τῷ Κύρῳ, ὃς τὴν ἀρχὴν ἔχων ἀπὸ τῆς Ἀρμενίας, εἰσβαλὼν εὐθὺς εἰς τὸ πεδῖον τὸ λεχθέν, παραλαβὼν καὶ τὸν Ἀραγον ἐκ τοῦ Καυκάσου 10 ῥέοντα καὶ ἄλλα ὕδατα διὰ στενῆς ποταμίας εἰς τὴν Ἀλβανίαν ἐκπίπτει· μεταξὺ δὲ ταύτης τε καὶ τῆς Ἀρμενίας ἐνεχθεῖς πολὺς διὰ πεδίων εὐβοτουμένων σφόδρα, δεξιόμενος καὶ [ἄλλους] πλείους ποταμούς, ὧν ἐστὶν ὁ τε Ἀλαζόνιος καὶ ὁ Σανδοβάνης καὶ ὁ Ροιτάκης 15 καὶ Χάνης πλωτοὶ πάντες εἰς τὴν Κασπίαν ἐμβάλλει θάλατταν. ἐκαλεῖτο δὲ πρότερον Κόρος.

3 Τὸ μὲν οὖν πεδῖον τῶν Ἰβήρων οἱ γεωργικώτεροι καὶ πρὸς εἰρήνην νευενκότες οἰκοῦσιν ἀρμενιστί τε καὶ 20 μηδιστί ἐσκευασμένοι, τὴν δ' ὄρεινὴν οἱ πλείους καὶ μάχιμοι κατέχουσι Σκυθῶν δίκην ζῶντες καὶ Σαρματῶν, ὧν περ καὶ ὄμοροι καὶ συγγενεῖς εἰσιν· ἄπτονται δ' ὅμως καὶ γεωργίας, πολλὰς τε μυριάδας συνάγουσιν καὶ ἐξ ἑαυτῶν καὶ ἐξ ἐκείνων, ἐπειδάν τι συμπέσῃ θορυβῶδες. 25

4 Τέτταρες δ' εἰσὶν εἰς τὴν χώραν εἰσβολαί· μία μὲν διὰ Σαραπανῶν φρουρίου Κολχικοῦ καὶ τῶν κατ' αὐτὸ στενῶν, δι' ὧν ὁ Φᾶσις γεφύραις ἑκατὸν καὶ εἴκοσι περατὸς γινόμενος διὰ τὴν σχολιότητα καταρρεῖ τρα- 30 χὺς καὶ βίαιος εἰς τὴν Κολχίδα, πολλοὺς χειμάρροις κατὰ τὰς ἐπομβρίας ἐκχαραδρουμένων τῶν τόπων. γεννᾶται δ' ἐκ τῶν ὑπερκειμένων ὀρῶν πολλαῖς συμ-

πληρούμενος πηγαῖς, ἐν δὲ τοῖς πεδίοις καὶ ἄλλους
 προσλαμβάνει ποταμούς, ὧν ἐστὶν ὁ τε Γλαῦκος καὶ
 ὁ Ἴππος· πληρωθεὶς δὲ καὶ γενόμενος πλωτὸς ἐξέρχεται
 εἰς τὸν Πόντον καὶ ἔχει πόλιν ὁμώνυμον ἐφ' αὐτῷ καὶ
 5 λίμνην πλησίον. ἡ μὲν οὖν ἐκ τῆς Κολχίδος εἰς τὴν
 Ἰβηρίαν ἐμβολὴ τοιαύτη, πέτραις καὶ ἐρύμασι καὶ πο-
 ταμοῖς χαράδρῳδεσι διακεκλεισμένη.

Ἐκ δὲ τῶν πρὸς ἄρκτον νομάδων ἐπὶ τρεῖς ἡμέρας 5
 ἀνάβασις χαλεπή, καὶ μετὰ ταύτην ποταμία στενὴ ἐπὶ
 10 τοῦ Ἀράγου ποταμοῦ τεττάρων ἡμερῶν ὁδὸν ἔχουσα
 ἐφ' ἑνα, φρουρεῖ δὲ τὸ πέρας τῆς ὁδοῦ τεῖχος δύσμα-
 χον· ἀπὸ δὲ τῆς Ἀλβανίας διὰ πέτρας πρῶτον λατο-
 μητὴ εἰσοδος, εἶτα διὰ τέλματος ὃ ποιεῖ ὁ ποταμὸς
 [Ἀλαξόνιος] ἐκ τοῦ Κανκάσου καταπίπτων. ἀπὸ δὲ τῆς
 15 Ἀρμενίας τὰ ἐπὶ τῷ Κύρῳ στενὰ καὶ τὰ ἐπὶ τῷ * Ἀρά-
 γῳ· πρὶν γὰρ εἰς ἀλλήλους συμπεσεῖν, ἔχουσιν ἐπικει-
 μένας πόλεις ἐρυμνὰς ἐπὶ πέτραις διεχούσαις ἀλλήλων 501
 ὅσον ἐκκαίδεκα σταδίους, ἐπὶ μὲν τῷ Κύρῳ τὴν Ἀρμο-
 ξικὴν ἐπὶ δὲ θατέρῳ Σευσάμορα. ταύταις δὲ ἐχρήσατο
 20 ταῖς εἰσβολαῖς πρότερον Πομπήιος ἐκ τῶν Ἀρμενίων
 ὁρμηθεὶς, καὶ μετὰ ταῦτα Κανίδιος.

Τέτταρα δὲ καὶ γένη τῶν ἀνθρώπων οἰκεῖ τὴν 6
 χώραν· ἐν μὲν καὶ πρῶτον ἐξ οὗ τοὺς βασιλέας καθι-
 στᾶσι κατ' ἀγχιστείαν τε καὶ ἡλικίαν τὸν πρεσβύτα-
 25 τον, ὃ δὲ δεύτερος δικαιοδοτεῖ καὶ στρατηλατεῖ. δεύ-
 τερον δὲ τὸ τῶν ἱερέων οἱ ἐπιμελοῦνται καὶ τῶν πρὸς
 τοὺς ὁμόρους δικαίων. τρίτον δὲ τὸ τῶν στρατενομέ-
 νων καὶ γεωργούντων. τέταρτον δὲ τὸ τῶν λαῶν, οἱ βα-
 σιλικοὶ δοῦλοὶ εἰσι καὶ πάντα διακονοῦνται τὰ πρὸς τὸν
 30 βίον. κοιναὶ δ' εἰσὶν αὐτοῖς αἱ κτήσεις κατὰ συγγένει-
 αν, ἄρχει δὲ καὶ ταμιεύει ἐκάστην ὁ πρεσβύτατος. τοι-
 οῦτοι μὲν οἱ Ἰβηρες καὶ ἡ χώρα αὐτῶν.

1 Ἀλβανοὶ δὲ ποιμενικώτεροι καὶ τοῦ νομαδικοῦ γένους ἐγγυτέρω, πλὴν ἄλλ' οὐκ ἄγριοι· ταύτη δὲ καὶ πολεμικοὶ μετρίως. οἰκοῦσι δὲ μεταξὺ τῶν Ἰβήρων καὶ τῆς Κασπίας θαλάττης, πρὸς ἕω μὲν ἀπτόμενοι τῆς θαλάττης, πρὸς δύσιν δὲ ὁμοροῦντες τοῖς Ἰβηρσι· τῶν 5 δὲ λοιπῶν πλευρῶν τὸ μὲν βόρειον φρουρεῖται τοῖς Κανκασίοις ὄρεσι (ταῦτα γὰρ ὑπέρκειται τῶν πεδίων, καλεῖται δὲ τὰ πρὸς τῇ θαλάττῃ μάλιστα Κεραύνια), τὸ δὲ νότιον ποιεῖ ἡ Ἀρμενία παρήκουσα, πολλή μὲν πεδιάς πολλή δὲ καὶ ὄρεινῇ, καθάπερ ἡ Καμβυσηνῇ, 10 καθ' ἣν ἅμα καὶ τοῖς Ἰβηρσι καὶ τοῖς Ἀλβανοῖς οἱ Ἀρμένιοι συνάπτουσιν.

2 Ὁ δὲ Κῦρος ὁ διαρρέων τὴν Ἀλβανίαν καὶ οἱ ἄλλοι ποταμοὶ οἱ πληροῦντες ἐκείνον ταῖς μὲν τῆς γῆς ἀρεταῖς προσλαμβάνουσι, τὴν δὲ θάλατταν ἀλλοτρι- 15 οῦσιν. ἡ γὰρ χοῦς προσπίπτουσα πολλή πληροῖ τὸν πόρον, ὥστε καὶ τὰς ἐπικειμένας νησιδας ἐξηπειροῦσθαι καὶ τενάγῃ ποιεῖν ἀνώμαλα καὶ δυσφύλακτα· τὴν δ' ἀνωμαλίαν ἐπιτείνουσιν αἱ ἐκ τῶν πλημμυρίδων ἀνακοπαί. καὶ δὴ καὶ εἰς στόματα δώδεκά φασι μεμε- 20 ρίσθαι τὰς ἐκβολάς, τὰ μὲν τυφλά τὰ δὲ παντελῶς * ἐπιγελῶντα καὶ μηδὲ ὑφορμον ἀπολείποντα· ἐπὶ πλείους γοῦν ἢ ἐξήκοντα σταδίους ἀμφικλύστου τῆς ἥονος οὔσης τῇ θαλάττῃ καὶ τοῖς ποταμοῖς, ἅπαν εἶναι μέρος αὐτῆς ἀπροσπέλαστον, τὴν δὲ χοῦν καὶ μέχρι πεντα- 25 κοσίων παρήκειν σταδίων θινώδη ποιοῦσαν τὸν αἰγιάλόν. πλησίον δὲ καὶ ὁ Ἀράξης ἐμβάλλει τραχὺς ἐκ τῆς Ἀρμενίας ἐκπίπτων· ἣν δὲ ἐκείνος προωθεῖ χοῦν πορευτὸν ποιῶν τὸ ρεῖθρον, ταύτην ὁ Κῦρος ἀναπληροῖ.

3 Τάχα μὲν οὖν τῷ τοιοῦτῳ γένει τῶν ἀνθρώπων 30 C.502 οὐδὲν δεῖ θαλάττης· οὐδὲ γὰρ τῇ γῇ χρῶνται κατ' ἀξίαν, πάντα μὲν ἐκφερούσῃ καρπὸν καὶ τὸν ἡμερώτατον,

πᾶν δὲ φυτόν· καὶ γὰρ τὰ ἀειθαλῇ φέρει· τυγχάνει δ'
 ἐπιμελείας οὐδὲ μικρᾶς „ἀλλὰ τάγ' ἄσπαρτα καὶ ἀνή-
 „ροτα πάντα φύονται,“ καθάπερ οἱ στρατεύσαντές
 φασι, Κυκλώπειόν τινα διηγούμενοι βίον· πολλαχοῦ
 5 γὰρ σπαρεῖσαν ἅπαξ δις ἐκφέρειν καρπὸν ἢ καὶ τρίς,
 τὸν δὲ πρῶτον καὶ πεντηκοντάχουν, ἀνέαστον καὶ
 ταῦτα οὐδὲ σιδήρῳ τμηθεῖσαν ἀλλ' αὐτοξύλῳ ἀρότρῳ.
 ποτίζεται δὲ πᾶν τὸ πεδλίον τοῦ Βαβυλωνίου καὶ τοῦ
 Αἰγυπτίου μᾶλλον τοῖς ποταμοῖς καὶ τοῖς ἄλλοις ὕδα-
 10 σιν ὥστ' αἰὶ ποώδῃ φυλάττειν τὴν ὄψιν· διὰ δὲ τοῦτο
 καὶ εὐβοτόν ἐστι· πρόσεστι δὲ καὶ τὸ εὐάερον ἐκείνων
 μᾶλλον. ἄσκαφοι δ' αἱ ἄμπελοι μένουσαι διὰ τέλους,
 τεμνόμεναι δὲ διὰ πενταετηρίδος, νέαι μὲν διετεῖς ἐκ-
 φέρουσιν ἤδη καρπὸν, τέλειαι δ' ἀποδιδόασιν τοσοῦτον
 15 ὥστ' ἀφιαῖσιν ἐν τοῖς κλήμασι πολὺ μέρος. εὐερνῇ δ'
 ἐστὶ καὶ τὰ βοσκήματα παρ' αὐτοῖς τὰ τε ἡμέρα καὶ τὰ
 ἄγρια.

Καὶ οἱ ἄνθρωποι κάλλει καὶ μεγέθει διαφέροντες, 4
 ἄπλοὶ δὲ καὶ οὐ καπηλικοί· οὐδὲ γὰρ νομίσματι τὰ
 20 πολλὰ χρῶνται, οὐδὲ ἀριθμὸν ἴσασι μείζω τῶν ἑκατόν,
 ἀλλὰ φορτίοις τὰς ἀμοιβὰς ποιοῦνται· καὶ πρὸς τᾶλλα
 δὲ τὰ τοῦ βίου ῥαθυμῶς ἔχουσιν. ἄπειροι δ' εἰσὶ καὶ
 μέτρων τῶν ἐπ' ἀκριβὲς καὶ σταθμῶν, καὶ πολέμου δὲ
 καὶ πολιτείας καὶ γεωργίας ἀπρονοήτως ἔχουσιν· ὅμως
 25 δὲ καὶ πεζοὶ καὶ ἄφ' ἵππων ἀγωνίζονται, ψилоὶ τε καὶ
 κατάφρακτοι, καθάπερ Ἀρμένιοι. στέλλουσιν δὲ μείζω 5
 τῆς Ἰβήρων στρατιάν. ὀπλίζουσι γὰρ καὶ ἕξ μυριάδας
 πεζῶν, ἱππέας δὲ μυρίους καὶ δισχιλίους, ὅσοις πρὸς
 Πομπήιον διεκινδύνευσαν. καὶ τούτοις δὲ συμπολε-
 30 μοῦσιν οἱ νομάδες πρὸς τοὺς ἕξωθεν, ὥσπερ τοῖς Ἰβηρ-
 σι, κατὰ τὰς αὐτὰς αἰτίας. ἄλλως δ' ἐπιχειροῦσι τοῖς ἀν-
 θρώποις πολλάκις ὥστε καὶ γεωργεῖν κωλύουσιν. ἀκον-

τισται δὲ εἰσι καὶ τοξόται, θώρακας ἔχοντες καὶ θυρεοὺς, περίκρανα δὲ θήρεια παραπλησίως τοῖς Ἰβηρσιν.

Ἔστι δὲ τῆς Ἀλβανῶν χώρας καὶ ἡ Κασπιανή, τοῦ Κασπίου ἔθνους ἐπάνυμος, οὗπερ καὶ ἡ θάλαττα, ἀφανοῦς ὄντος νυνί. ἡ δ' ἐκ τῆς Ἰβηρίας εἰς τὴν Ἀλβανίαν εἰσβολή διὰ τῆς Καμβυσηνῆς ἀνύδρου τε καὶ τραχείας ἐπὶ τὸν Ἀλαξόνιον ποταμόν.

* Θηρευτικοὶ δὲ καὶ αὐτοὶ καὶ οἱ κύνες αὐτῶν εἰς ὑπερβολήν, οὐ τέχνη μᾶλλον ἢ σπουδῇ τῇ περὶ τοῦτο.

C.503 Διαφέρουσι δὲ καὶ οἱ βασιλεῖς· νυνὶ μὲν οὖν εἰς 10
6 ἀπάντων ἄρχει, πρότερον δὲ καὶ καθ' ἑκάστην γλῶτταν ἰδίᾳ ἐβασιλεύοντο ἕκαστοι. γλῶτται δ' εἰσὶν ἕξ καὶ εἰκοσιν αὐτοῖς διὰ τὸ μὴ εὐεπίμικτον πρὸς ἀλλήλους.

Φέρει δ' ἡ γῆ καὶ τῶν ἐρπετῶν ἔνια τῶν θανασίμων καὶ σκορπίους καὶ φαλάγγια· τῶν δὲ φαλαγγίων 15 τὰ μὲν ποιεῖ γελῶντας ἀποθνήσκειν, τὰ δὲ κλαίοντας πόθῳ τῶν οἰκείων.

7 Θεοὺς δὲ τιμᾶσιν ἥλιον καὶ δία καὶ σελήνην, διαφερόντως δὲ τὴν σελήνην. ἔστι δ' αὐτῆς τὸ ἱερὸν τῆς Ἰβηρίας πλησίον· ἱερᾶται δ' ἀνὴρ ἐντιμότητος 20 μετὰ γε τὸν βασιλέα, προσεστὼς τῆς ἱερᾶς χώρας, πολλῆς καὶ εὐάνδρου, καὶ αὐτῆς καὶ τῶν ἱεροδούλων, ὧν ἐνθουσιῶσι πολλοὶ καὶ προφητεύουσιν· ὃς δ' ἂν αὐτῶν ἐπὶ πλέον κατάσχετος γενόμενος πλανᾶται κατὰ τὰς ὕλας μόνος, τοῦτον συλλαβὼν ὁ ἱερεὺς ἀλύσει δῆ- 25 σας ἱερᾷ τρέφει πολυτελῶς τὸν ἐνιαυτὸν ἐκεῖνον, ἔπειτα προαχθεὶς εἰς τὴν θυσίαν τῆς θεοῦ, σὺν ἄλλοις ἱερείοις θύεται μυρισθεῖς. τῆς δὲ θυσίας ὁ τρόπος οὗτος· ἔχων τις ἱερὰν λόγχην ἥπερ ἔστι νόμος ἀνθρωποθνεῖν, παρελθὼν ἐκ τοῦ πλήθους παίει διὰ τῆς 30 πλευρᾶς εἰς τὴν καρδίαν, οὐκ ἄπειρος τοιούτου· πεσόντος δὲ σημειοῦνται μαντεῖά τινα ἐκ τοῦ πτώματος

καὶ εἰς τὸ κοινὸν ἀποφαίνουσι, κομισθέντος δὲ τοῦ σώματος εἰς τι χωρίον ἐπιβαίνουσιν ἅπαντες καθαρσίῳ χρώμενοι.

Ὑπερβαλλόντως δὲ τὸ γῆρας τιμῶσιν Ἀλβανοὶ καὶ 8
5 τὸ τῶν ἄλλων, οὐ τῶν γονέων μόνον· τεθνηκότων δὲ οὐχ ὅσιον φροντίζειν οὐδὲ μεμνησθαι. συγκατορῦ-
τουσι μέντοι τὰ χρήματα αὐτοῖς, καὶ διὰ τοῦτο πένη-
τες ζῶσιν οὐδὲν πατρῶον ἔχοντες. ταῦτα μὲν περὶ
Ἀλβανῶν.

10 Λέγεται δ' Ἰάσονα μετὰ Ἀρμένου τοῦ Θετταλοῦ
κατὰ τὸν πλοῦν τὸν ἐπὶ τοὺς Κόλχους ὁρμῆσαι μέχρι
τῆς Κασπίας θαλάττης, καὶ τὴν τε Ἰβηρίαν καὶ τὴν Ἀλ-
βανίαν ἐπελθεῖν καὶ πολλὰ τῆς Ἀρμενίας καὶ τῆς Μη-
δίας, ὥς μαρτυρεῖ τὰ τε Ἰασόνια καὶ ἄλλα ὑπομνήματα
15 πλείω. τὸν δὲ Ἀρμενον εἶναι ἐξ Ἀρμενίου πόλεως τῶν
περὶ τὴν Βοιβηίδα λίμνην μεταξὺ Φερῶν καὶ Λαρίσης,
τοὺς σὺν αὐτῷ τε οἰκίσαι τὴν τε Ἀκιλισηνὴν καὶ τὴν
Συσπιρίτιν ἕως Καλαχανῆς καὶ Ἀδιαβηνῆς, καὶ δὴ καὶ
τὴν Ἀρμενίαν ἐπῶνυμον καταλιπεῖν.

20 Ἐν δὲ τοῖς ὑπὲρ τῆς Ἀλβανίας ὄρεσι καὶ τὰς Ἀμα- 5
ζόνας οἰκεῖν φασί. Θεοφάνης μὲν οὖν ὁ συστρατεύσας
τῷ Πομπηίῳ καὶ γενόμενος ἐν τοῖς Ἀλβανοῖς, μεταξὺ
τῶν Ἀμαζόνων καὶ τῶν Ἀλβανῶν φησι Γήλας οἰκεῖν
καὶ Λήγας Σκύθας, καὶ ὄρεϊν ἐνταῦθα τὸν Μερμάδαλιν
25 ποταμὸν τούτων τε καὶ τῶν Ἀμαζόνων ἀνὰ μέσον. ἄλ-0.504
λοι δέ, ὧν καὶ ὁ Σκήψιος Μητροδωρος καὶ Ὑψικράτης,
οὐδὲ αὐτοὶ ἄπειροι τῶν τόπων γεγονόνες, Γαργαρεῦ-
σιν ὁμόρους αὐτὰς οἰκεῖν φασιν ἐν ταῖς ὑπωρεῖαις ταῖς
πρὸς ἄρκτον τῶν Κανκασίων ὁρῶν ἃ καλεῖται Κεραύ-
30 νια, τὸν μὲν ἄλλον χρόνον καθ' αὐτάς, αὐτουργούσας
ἕκαστα τὰ τε πρὸς ἄροτον καὶ φυτουργίαν καὶ τὰ πρὸς

τὰς νομὰς καὶ μάλιστα τῶν ἱππων, τὰς δ' ἀλκιμωτάτας
 κυνηγεσίαις πλεονάζειν καὶ τὰ πολέμια ἀσκεῖν· ἀπά-
 σας δ' ἐπικεκαῦσθαι τον δεξιὸν μαστὸν ἐκ νηπίων,
 ὥστε εὐπετῶς χρῆσθαι τῷ βραχίονι πρὸς ἐκάστην χρεΐ-
 αν, ἐν δὲ τοῖς πρώτοις πρὸς ἀκοντισμόν· χρῆσθαι δὲ 6
 καὶ τόξῳ καὶ σαγάρει καὶ πέλτῃ, δορὰς δὲ θηρίων ποι-
 εῖσθαι περὶ κρανὰ τε καὶ σκεπάσματα καὶ διαζώματα·
 δύο δὲ μῆνας ἐξαιρέτους ἔχειν τοῦ ἔαρος, καθ' οὓς ἀνα-
 βαίνουσιν εἰς τὸ πλησίον ὄρος τὸ διορίζον αὐτάς τε καὶ
 τοὺς Γαργαρέας. ἀναβαίνουσι δὲ ἀκκεῖνοι κατὰ ἔθος 10
 τι παλαιόν, συνθύσοντές τε καὶ συνεσόμενοι ταῖς γυ-
 ναιξὶ τεκνοποιίας χάριν ἀφανῶς τε καὶ ἐν σκότει, ὃ τυ-
 χὼν τῇ τυχούσῃ, ἐγκύμονας δὲ ποιήσαντες ἀποπέμ-
 πουσιν· αἱ δ' ὅτι μὲν ἂν θῆλυ τέκωσι κατέχουσιν αὐ-
 ταί, τὰ δ' ἄρρενα κομίζουσιν ἐκείνοις ἐκτρέφειν· ὥκει- 15
 ωται δ' ἕκαστος πρὸς ἕκαστον νομίζων υἱὸν διὰ τὴν
 ἄγνοϊαν.

- 2 Ὁ δὲ Μερμόδας καταράττων ἀπὸ τῶν ὄρων διὰ
 τῆς τῶν Ἀμαζόνων καὶ τῆς Σιρακηνῆς καὶ ὅση μεταξὺ
 ἔρημος, εἰς τὴν Μαιῶτιν ἐκδίδωσι. τοὺς δὲ Γαργαρέας 20
 συναναβῆναι μὲν ἐκ Θειμισκύρας φασὶ ταῖς Ἀμαζόσιν
 εἰς τοὺςδε τοὺς τόπους, εἰτ' ἀποστάντας αὐτῶν πολε-
 μεῖν μετὰ Θρακῶν καὶ Εὐβοέων τινῶν πλανηθέντων
 μέχρι δεῦρο πρὸς αὐτάς, ὕστερον δὲ καταλυσαμένους
 τὸν πρὸς αὐτάς πόλεμον ἐπὶ τοῖς λεχθεῖσι ποιήσασθαι 25
 συμβάσεις, ὥστε τέκνων συγκοινωνεῖν μόνον, ζῆν δὲ
 καθ' αὐτοὺς ἐκατέρους.

- 3 Ἴδιον δέ τι συμβέβηκε τῷ λόγῳ [τῷ] περὶ τῶν Ἀμα-
 ζόνων· οἱ μὲν γὰρ ἄλλοι τὸ μυθώδες καὶ τὸ ἱστορικὸν
 διωρισμένον ἔχουσι· τὰ γὰρ παλαιὰ καὶ ψευδῆ καὶ τε- 30

1. post ἀλκιμωτάτας : τῶν ἱππων

ρατώδη μῦθοι καλοῦνται, ἡ δ' ἱστορία βούλεται τᾶλη-
 θές, ἃν τε παλαιὸν ἃν τε νέον, καὶ τὸ τερατώδες ἢ οὐκ
 ἔχει ἢ σπάνιον· περὶ δὲ τῶν Ἀμαζόνων τὰ αὐτὰ λέγε-
 ται καὶ νῦν καὶ πάλαι, τερατώδη τε ὄντα καὶ πίστεως
 5 πόρρω. τίς γὰρ ἂν πιστεύσειεν, ὥς γυναικῶν στρατὸς
 ἢ πόλις ἢ ἔθνος συσταίῃ ἂν ποτε χωρὶς ἀνδρῶν; καὶ οὐ
 μόνον γε συσταίῃ, ἀλλὰ καὶ ἐφόδους ποιήσαιο ἐπὶ τὴν
 ἄλλοτριαν καὶ κρατήσειεν οὐ τῶν ἐγγὺς μόνον ὥστε
 καὶ μέχρι τῆς νῦν Ἰωνίας προελθεῖν, ἀλλὰ καὶ διαπόν- 0.500
 10 τιον στείλαιο στρατείαν μέχρι τῆς Ἀττικῆς; τοῦτο γὰρ
 ὅμοιον ὥς ἂν εἴ τις λέγοι, τοὺς μὲν ἄνδρας γυναικας
 γεγονέναι τοὺς τότε τὰς δὲ γυναικας ἄνδρας. ἀλλὰ μὴν
 ταῦτά γε αὐτὰ καὶ νῦν λέγεται περὶ αὐτῶν. ἐπιτείνει
 δὲ τὴν ιδιότητα καὶ τὸ πιστεῦσθαι τὰ παλαιὰ μᾶλλον
 15 ἢ τὰ νῦν· κτίσεις γοῦν πόλεων καὶ ἐπωνυμίαι λέγον- 4
 ται, καθάπερ Ἐφέσου καὶ Σμύρνης καὶ Κύμης καὶ
 Μυρίνης, καὶ τάφοι καὶ ἄλλα ὑπομνήματα· τὴν δὲ Θε-
 μίσκυραν καὶ τὰ περὶ τὸν Θερμῶδοντα πεδία καὶ τὰ
 ὑπερκειμένα ὄρη ἅπαντες Ἀμαζόνων καλοῦσι, καὶ φα-
 20 σιν ἐξελαθῆναι αὐτὰς ἐνθενδε. ὅπου δὲ νῦν εἰσίν, ὀλί-
 γοι τε καὶ ἀναποδείκτως καὶ ἀπίστως ἀποφαίνονται·
 καθάπερ καὶ περὶ Θαληστρίας, ἣν Ἀλεξάνδρῳ συμμῆ-
 ξαί φασιν ἐν τῇ Ἰρκανίᾳ καὶ συγγενέσθαι τεκνοποιίας
 χάριν, δυναστεύουσαν τῶν Ἀμαζόνων· οὐ γὰρ ὁμο-
 25 λογεῖται τοῦτο· ἀλλὰ τῶν συγγραφέων τοσοῦτων ὄν-
 των οἱ μάλιστα τῆς ἀληθείας φροντίσαντες οὐκ εἰρή-
 κασιν, οὐδ' οἱ πιστευόμενοι μάλιστα οὐδενὸς μέμνηνται
 τοιούτου, οὐδ' οἱ εἰπόντες τὰ αὐτὰ εἰρήκασιν· Κλεί-
 ταρχος δὲ φησι τὴν Θαληστρίαν ἀπὸ Κασπίων πυλῶν
 30 καὶ Θερμῶδοντος ὁρμηθεῖσαν· ἐλθεῖν πρὸς Ἀλέξαν-
 δρον· εἰσὶ δ' ἀπὸ Κασπίας εἰς Θερμῶδοντα στάδιοι
 πλείους ἑξακισχιλίων.

- 5 Καὶ τὰ πρὸς τὸ ἐνδοξον θρυληθέντα οὐκ ἀνωμο-
 λόγηται παρὰ πάντων, οἱ δὲ πλάσαντες ἦσαν οἱ κολα-
 κείας μᾶλλον ἢ ἀληθείας φροντίζοντες· οἷον τὸ τὸν
 Καύκασον μετενεγκεῖν εἰς τὰ Ἰνδικὰ ὄρη καὶ τὴν πλη-
 σιάζουσιν ἐκείνοις ἐφ' ἃν θάλατταν ἀπὸ τῶν ὑπερκει- 5
 μένων τῆς Κολχίδος καὶ τοῦ Εὐξείνου ὁρῶν· ταῦτα
 γὰρ οἱ Ἕλληνες καὶ Καύκασον ὠνόμαζον, διέχοντα τῆς
 Ἰνδικῆς πλείους ἢ τρισμυρίους σταδίους, καὶ ἐνταῦθα
 ἐμύθευσαν τὰ περὶ Προμηθεῖα καὶ τὸν δεσμὸν αὐτοῦ·
 ταῦτα γὰρ τὰ ὕστατα πρὸς ἧν ἐγνώριζον οἱ τότε. ἡ δὲ 10
 ἐπὶ Ἰνδοῦς στρατεία Διονύσου καὶ Ἡρακλέους ὅστε-
 ρογενῇ τὴν μυθοποιίαν ἐμφαίνει, ὅτε τοῦ Ἡρακλέ-
 ουσ καὶ τὸν Προμηθεῖα λῦσαι λεγομένου χιλιάσιν ἐτῶν
 ὕστερον. καὶ ἦν μὲν ἐνδοξότερον τὸ τὸν Ἀλέξανδρον
 μέχρι τῶν Ἰνδικῶν ὁρῶν καταστρέφασθαι τὴν Ἀσίαν 15
 ἢ μέχρι τοῦ μυχοῦ τοῦ Εὐξείνου καὶ τοῦ Καυκάσου·
 ἀλλ' ἡ δόξα τοῦ ὅρους καὶ τοῦνομα καὶ τὸ τοὺς περὶ
 Ἰάσονα δοκεῖν μακροτάτην στρατείαν τελέσαι τὴν μέ-
 C.506 χρι τῶν πλησίον Καυκάσου καὶ τὸ τὸν Προμηθεῖα πα-
 ραδεδόσθαι δεδεμένον ἐπὶ τοῖς ἐσχάτοις τῆς γῆς ἐν τῇ 20
 Καυκάσῳ χαριεῖσθαι τι τῇ βασιλεῖ ὑπέλαβον
 τοῦνομα τοῦ ὅρους μετενέγκαντες εἰς τὴν Ἰνδικήν.
- 6 Τὰ μὲν οὖν ὑψηλότατα τοῦ ὄντως Καυκάσου τὰ
 νοτιώτατά ἐστι τὰ πρὸς Ἀλβανίαν καὶ Ἰβηρίαν καὶ Κόλ-
 χους καὶ Ἡνιόχους· οἰκοῦσι δὲ οὓς εἶπον τοὺς συνερχο- 25
 μένους εἰς τὴν Διοσκουριάδα· συνέρχονται δὲ τὸ πλεῖ-
 στον ἁλῶν χάριν. τούτων δ' οἱ μὲν τὰς ἀκρωρείας κα-
 τέχουσιν, οἱ δὲ ἐν νάπαις αὐλίζονται καὶ ζῶσιν ἀπὸ
 θηρείων σαρκῶν τὸ πλεόν καὶ καρπῶν ἄγριων καὶ γά-
 λακτος. αἱ δὲ κορυφαὶ χειμῶνος μὲν ἄβατοι, θέρους 30
 δὲ προσβαίνουσιν ὑποδούμενοι κεντρωτὰ ὤμοβόινα
 δίκην τυμπάνων πλατεῖα διὰ τὰς χιόνας καὶ τοὺς κρυ-

στάλλους. καταβαίνουνσι δ' ἐπὶ δορᾶς κείμενοι σὺν τοῖς φορτίοις καὶ κατολισθαίνοντες, ὅπερ καὶ κατὰ τὴν Ἀτροπατίαν Μηδίαν καὶ κατὰ τὸ Μάσιον ὄρος τὸ ἐν Ἀρμενίᾳ συμβαίνει· ἐνταῦθα δὲ καὶ τροχίσκοι ξύλινοι 5 κεντρωτοὶ τοῖς πέλμασιν ὑποτίθενται. τοῦ γοῦν Καυκάσου τὰ μὲν ἄκρα τοιαῦτα. καταβαίνουντι δ' εἰς τὰς 7 ὑπωρείας ἀρκτικώτερα μὲν ἐστὶ τὰ κλίματα, ἡμερώτερα δέ· ἥδη γὰρ συνάπτει τοῖς πεδίοις τῶν Σιράκων. εἰσὶ δὲ καὶ τρωγλοδύται τινὲς ἐν φωλεοῖς οἰκοῦντες 10 διὰ τὰ ψύχη, παρ' οἷς ἥδη καὶ ἀλφίτων ἐστὶν εὐπορία· μετὰ δὲ τοὺς τρωγλοδύτας καὶ χαμαικοῦται καὶ πολυφάγοι τινὲς καλούμενοι καὶ αἱ τῶν Εἰσαδίκων κῶμαι, δυναμένων γεωργεῖν διὰ τὸ μὴ παντελῶς ὑποπεπτω- κέναι ταῖς ἄρκτοις.

15 Οἱ δ' ἐφεξῆς ἥδη νομάδες οἱ μεταξὺ τῆς Μαιώτι- 8 δος καὶ τῆς Κασπίας Ναβιανοὶ καὶ * Πανξανοὶ καὶ ἥδη τὰ τῶν Σιράκων καὶ Ἀόρσων φύλα. δοκοῦσι δ' οἱ Ἄορσοι καὶ οἱ Σίρακες φυγάδες εἶναι τῶν ἀνωτέρω . . . καὶ προσάρκτιοι μᾶλλον Ἀόρσων. Ἀβέακος μὲν οὖν ὁ τῶν 20 Σιράκων βασιλεὺς, ἡνίκα Φαρνάκης τὸν Βόσπορον εἶχε, δύο μυριάδας ἱππέων ἐστελλε, Σπαδίνης δ' ὁ τῶν Ἀόρσων καὶ * εἴκοσιν, οἱ δὲ ἄνω Ἄορσοι καὶ πλείονας· καὶ γὰρ ἐπεκράτουν πλείονος γῆς καὶ σχεδόν τι τῆς Κασπίων παραλίας τῆς πλείστης ἥρχον, ὥστε καὶ ἐνε- 25 πορεύοντο καμήλοις τὸν Ἰνδικὸν φόρτον καὶ τὸν Βαβυλώνιον παρὰ τε Ἀρμενίων καὶ Μήδων διαδεχόμενοι· ἐχρυσοφόρουν δὲ διὰ τὴν εὐπορίαν. οἱ μὲν οὖν Ἄορσοι τὸν Τάναϊν παροικοῦσιν, οἱ Σίρακες δὲ τὸν Ἀχαρδέον, ὃς ἐκ τοῦ Καυκάσου ῥέων ἐκδίδωσιν εἰς τὴν 30 Μαιῶτιν.

Ἡ δὲ δευτέρα μερὶς ἄρχεται μὲν ἀπὸ τῆς Κασπίας 6 θαλάττης, εἰς ἣν κατέπανεν ἡ προτέρα· καλεῖται δ' ἡ C.507

αὐτὴ θάλαττα καὶ Ὅρκανία. δεῖ δὲ περὶ τῆς θαλάττης εἰπεῖν πρότερον ταύτης καὶ τῶν προσοίκων ἐθνῶν. ἔστι δ' ὁ κόλπος ἀνέχων ἐκ τοῦ ὠκεανοῦ πρὸς μεσημβρίαν κατ' ἀρχὰς μὲν ἱκανῶς στενός, ἐνδοτέρω δὲ πλατύνεται προΐων, καὶ μάλιστα κατὰ τὸν μυχὸν ἐπὶ σταδίου 5 πον καὶ πεντακισχιλίους· ὁ δ' εἰσπλους μέχρι τοῦ μυχοῦ μικρῶ πλειόνων ἂν εἴη συνάπτων πως ἥδη τῇ ἀοικήτῳ. φησὶ δ' Ἐρατοσθένης τὸν ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων γνωριζόμενον περίπλου τῆς θαλάττης ταύτης τὸν μὲν παρὰ τοὺς Ἀλβανούς καὶ τοὺς Καδουσίους εἶναι πεν- 10 τακισχιλίων καὶ τετρακοσίων, τὸν δὲ παρὰ τὴν Ἀναρϊακῶν καὶ Μάρδων καὶ Ὅρκανῶν μέχρι τοῦ στόματος τοῦ Ὠέου ποταμοῦ τετρακισχιλίων καὶ ὀκτακοσίων· ἐνθεν δ' ἐπὶ τοῦ Ἰαξάρτου διςχιλίων τετρακοσίων. δεῖ δὲ περὶ τῶν ἐν τῇ μερίδι ταύτῃ καὶ τοῖς ἐπὶ τοσοῦτον 5 ἐκτετοπισμένοις ἀπλούστερον ἀκούειν, καὶ μάλιστα περὶ τῶν διαστημάτων.

- 2 Εἰσπλέοντι δ' ἐν δεξιᾷ μὲν τοῖς Εὐρωπαίοις οἱ συνεχεῖς Σκύθαι νέμονται καὶ Σαρμάται οἱ μεταξὺ τοῦ Τανάιδος καὶ τῆς θαλάττης ταύτης, νομάδες οἱ πλεί- 20 ουσ, περὶ ὧν εἰρήκαμεν· ἐν ἀριστερᾷ δ' οἱ πρὸς ἑω Σκύθαι, νομάδες καὶ οὗτοι, μέχρι τῆς ἐφ' αὐτὴν θαλάττης καὶ τῆς Ἰνδικῆς παρατείνοντες. ἅπαντας μὲν δὴ τοὺς προσβόρους κοινῶς οἱ παλαιοὶ τῶν Ἑλλήνων συγ- γραφεῖς Σκύθας καὶ Κελτοσκύθας ἐκάλουν· οἱ δ' ἔτι 25 πρότερον διελόντες τοὺς μὲν ὑπὲρ τοῦ Εὐξείνου καὶ Ἰστροῦ καὶ τοῦ Ἀδρίου κατοικοῦντας Ὑπερβορέους ἔλεγον καὶ Σαυρομάτας καὶ Ἀριμασπούς, τοὺς δὲ πέ- ραν τῆς Κασπίας θαλάττης τοὺς μὲν Σάκας τοὺς δὲ Μασσαγέτας ἐκάλουν, οὐκ ἔχοντες ἀκριβὲς λέγειν περὶ 30 αὐτῶν οὐδέν, καίπερ πρὸς Μασσαγέτας τοῦ Κύρου πόλεμον ἱστοροῦντες. ἀλλ' οὔτε περὶ τούτων οὐδέν

ἠκρίβωτο πρὸς ἀλήθειαν, οὔτε τὰ παλαιὰ τῶν Περσικῶν οὔτε τῶν Μηδικῶν ἢ Συριακῶν ἐς πίστιν ἀφικνεῖτο μεγάλην διὰ τὴν τῶν συγγραφέων ἀπλότητα καὶ τὴν φιλομυθίαν.

- 5 Ὅρωντες γὰρ τοὺς φανερωῶς μυθογράφους εὐδο-
κιμοῦντας ᾧήθησαν καὶ αὐτοὶ παρέξεσθαι τὴν γραφὴν
ἡδεῖαν, ἐὰν ἐν ἱστορίας σχήματι λέγωσιν ἃ μηδέποτε
[μήτε] εἶδον μήτε ἤκουσαν ἢ οὐ παρὰ γε ἰδόντων, σκο-
ποῦντες δὲ αὐτὸ μόνον τοῦτο ὅτι ἀκρόασιν ἡδεῖαν ἔχει
10 καὶ θαυμαστήν. ῥᾶον δ' ἄν τις Ἡσιόδῳ καὶ Ὀμήρῳ πι-0.508
στεύσειεν ἠρωολογοῦσι καὶ τοῖς τραγικοῖς ποιηταῖς ἢ
Κτησίᾳ τε καὶ Ἡροδότῳ καὶ Ἑλλανίκῳ καὶ ἄλλοις τοι-
ούτοις. οὐδὲ τοῖς περὶ Ἀλεξάνδρου δὲ συγγράψασιν 4
ῥᾷδιον πιστεύειν τοῖς πολλοῖς· καὶ γὰρ οὗτοι ῥᾷδιον
15 γοῦσι διὰ τε τὴν δόξαν τὴν Ἀλεξάνδρου καὶ διὰ τὸ τὴν
στρατείαν πρὸς τὰς ἐσχατίας γεγενῆσθαι τῆς Ἀσίας πόρ-
ρω ἄφ' ἡμῶν· τὸ δὲ πόρρω δυσέλεγκτον. ἢ δὲ τῶν
Ῥωμαίων ἐπικράτεια καὶ ἡ τῶν Παρθυαίων πλεῖον τι
προσεκκαλύπτει τῶν παραδεδομένων πρότερον· οἱ γὰρ
20 περὶ ἐκείνων συγγράφοντες καὶ τὰ χωρία καὶ τὰ ἔθνη,
ἐν οἷς αἱ πράξεις, πιστότερον λέγουσιν ἢ οἱ πρὸ αὐτῶν·
μᾶλλον γὰρ κατωπτεύκασιν.

- Τοὺς δ' οὖν ἐν ἀριστερᾷ εἰσπλέοντι τὸ Κάσπιον 7
πέλαγος παροικοῦντας νομάδας Δάας οἱ νῦν προσαγο-
25 ρεῦνουν τοὺς ἐπονομαζομένους Πάρνους· εἴτ' ἔρημος
πρόκειται μεταξὺ, καὶ ἐφεξῆς ἡ Ἵρκανία, καθ' ἣν ἡδη
πελαγίζει μέχρι τοῦ συνάψαι τοῖς Μηδικοῖς ὄρεσι καὶ
τοῖς Ἀρμενίων. τούτων δ' ἐστὶ μηχανοειδὲς τὸ σχῆμα
κατὰ τὰς ὑπωρείας, αἱ τελευτῶσαι πρὸς θάλατταν ποι-
30 οῦσι τὸν μυχὸν τοῦ κόλπου. οἰκεῖ δὲ τὴν παρώρειαν

ταύτην μέχρι τῶν ἄκρων ἀπὸ θαλάττης ἀρξαμένοις ἐπὶ μικρὸν μὲν τῶν Ἀλβανῶν τι μέρος καὶ τῶν Ἀρμενίων, τὸ δὲ πλεόν Γῆλαι καὶ Καδούσιοι καὶ Ἀμαρδοὶ καὶ Οὐτίοι καὶ Ἀναριάκαι. φασὶ δὲ Παρρασίων τινὰς συννοικῆσαι τοῖς Ἀναριάκαις, οὓς καλεῖσθαι νῦν Παρσίους· 5 Αἰνιᾶνας δ' ἐν τῇ Οὐτίᾳ τειχίσαι πόλιν ἣν * Αἰνιάννα καλεῖσθαι, καὶ δείκνυσθαι ὅπλα τε Ἑλληνικὰ ἐνταῦθα καὶ σκευὴ χαλκᾷ καὶ ταφάς· ἐνταῦθα δὲ καὶ πόλιν Ἀναριάκην, ἐν ἣ, φασί, δείκνυνται μαντεῖον ἐγκοιμωμένων καὶ ἄλλα τινὰ ἔθνη ληστρικὰ καὶ μάχιμα 10 μάλλον ἢ γεωργικά· ποιεῖ δὲ τοῦτο ἡ τραχύτης τῶν τόπων. τὸ μέντοι πλεόν τῆς περὶ τὴν ὀρεινὴν παραλίας Καδούσιοι νέμονται, σχεδὸν δέ τι ἐπὶ πεντακιςχιλίους σταδίους, ὥς φησι Πατροκλῆς, ὃς καὶ πάρισον ἡγεῖται τὸ πέλαγος τοῦτο τῷ Ποντικῷ. ταῦτα μὲν οὖν τὰ χω- 15 ρία λυπρά.

- 2 Ἡ δ' Ὑρκανία σφόδρα εὐδαίμων καὶ πολλὴ καὶ τὸ πλεόν πεδιάς πόλεσί τε ἀξιολόγοις διειλημμένη, ᾧν ἔστι Ταλαβρόκη καὶ Σαμαριανὴ καὶ Κάρτα καὶ τὸ βασιλῆιον Τάπη, ὃ φασὶ μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης ἰδρυν- 20 μένου διέχειν τῶν Κασπίων πυλῶν σταδίους χιλίους τετρακοσίους. σημεῖα δὲ τῆς εὐδαιμονίας· ἡ μὲν γὰρ ἄμπελος μετρητὴν οἴνου φέρει, ἡ δὲ συκὴ μεδίμνους ἐξήκοντα, ὃ δὲ σῖτος ἐκ τοῦ ἐκπεσόντος καρ- C.509ποῦ τῆς καλᾶμης φύεται, ἐν δὲ τοῖς δένδροις σμηνοῦρ- 25 γεῖται καὶ τῶν φύλλων ἀπορρεῖ μέλι· τοῦτο δὲ γίνεται καὶ τῆς Μηθίας ἐν τῇ Ματιανῇ καὶ τῆς Ἀρμενίας ἐν τῇ Σακασηνῇ καὶ τῇ Ἀραξηνῇ. τῆς μέντοι προσηκούσης ἐπιμελείας οὐκ ἔτυχεν οὔτε αὐτὴ οὔτε ἡ ἐπ' αὐτῇ θάλαττα ἄπλους τε οὔσα καὶ ἀργός· νῆσοί τε εἰσιν 30 οἰκείσθαι δυνάμεναι, ὥς δ' εἰρήκασί τινες καὶ χροσῆτιν ἔχουσαι γῆν. αἴτιον δ' ὅτι καὶ οἱ ἡγεμόνες οἱ τ' ἐξ

ἀρχῆς ἐτύγχανον βάρβαροι ὄντες οἱ τῶν Ἑρκανῶν,
 Μηδοί τε καὶ Πέρσαι καὶ οἱ ὕστατοι Παρθυαῖοι, χεί-
 ρους ἐκείνων ὄντες, καὶ ἡ γείτων ἅπανσα χώρα ληστῶν
 καὶ νομάδων μεστή καὶ ἐρημίας. Μακεδόνες δ' ὀλίγον
 5 μὲν χρόνον ἐπῆρξαν, ἀλλ' ἐν πολέμοις ὄντες καὶ τὰ
 πόρρω σκοπεῖν οὐ δύναμενοι. φησὶ δ' Ἀριστόβουλος
 ὑλώδη οὖσαν τὴν Ἑρκανίαν δρῦν ἔχειν, πεύκην δὲ
 καὶ ἐλάτην καὶ πίτυν μὴ φύειν, τὴν δ' Ἰνδικὴν πλη-
 θύνειν τούτοις. τῆς δὲ Ἑρκανίας ἐστὶ καὶ ἡ Νησαία· τι-
 10 νες δὲ καὶ καθ' αὐτὴν τιθέασιν τὴν Νησαίαν.

Διαρρεῖται δὲ καὶ ποταμοῖς ἡ Ἑρκανία τῷ τε Ὄρχῳ 3
 καὶ Ὄξῳ μέχρι τῆς εἰς θάλατταν ἐκβολῆς, ὣν ὁ Ὄρχος
 καὶ διὰ τῆς Νησαίας ῥεῖ· ἐνιοὶ δὲ τὸν Ὄρχον εἰς τὸν
 Ὄξον ἐμβάλλειν φασίν. Ἀριστόβουλος δὲ καὶ μέγιστον
 15 ἀποφαίνει τὸν Ὄξον τῶν ἑωραμένων ὑφ' αὐτοῦ κατὰ
 τὴν Ἀσίαν πλὴν τῶν Ἰνδικῶν· φησὶ δὲ καὶ εὐπλοῦν
 εἶναι καὶ οὗτος καὶ Ἑρατοσθένης παρὰ Πατροκλέους
 λαβών, καὶ πολλὰ τῶν Ἰνδικῶν φορτίων κατάγειν εἰς
 τὴν Ἑρκανίαν θάλατταν, ἐντεῦθεν δ' εἰς τὴν Ἀλβα-
 20 νίαν περαιοῦσθαι καὶ διὰ τοῦ Κύρου καὶ τῶν ἐξῆς τό-
 πων εἰς τὸν Εὐξείνιον καταφέρεσθαι. οὐ πάνυ δὲ ὑπὸ
 τῶν παλαιῶν ὁ Ὄρχος ὀνομάζεται· Ἀπολλόδωρος μέν-
 τοι ὁ τὰ Παρθικὰ γράψας συνεχῶς αὐτὸν ὀνομάζει ὡς
 ἐγγυτάτω τοῖς Παρθυαίοις ῥέοντα.

25 Προσεδοξάσθη δὲ καὶ περὶ τῆς θαλάττης ταύτης 4
 πολλὰ ψευδῆ διὰ τὴν Ἀλεξάνδρου φιλοτιμίαν· ἐπειδὴ
 γὰρ ὁμολόγητο ἐκ πάντων ὅτι διείργει τὴν Ἀσίαν ἀπὸ
 τῆς Εὐρώπης ὁ Τάναϊς ποταμός, τὸ δὲ μεταξὺ τῆς θα-
 λάττης καὶ τοῦ Τανάιδος πολὺ μέρος τῆς Ἀσίας ὃν
 30 οὐχ ὑπέπιπτε τοῖς Μακεδόσι, στρατηγεῖν δ' ἔγνωστο
 ὥστε τῇ φήμῃ γε ἀκείνων δόξαι τῶν μερῶν κρατεῖν

τὸν Ἀλέξανδρον, εἰς ἔν συνήγον τήν τε Μαιῶτιν λίμνην τήν δεχομένην τὸν Τάναϊν καὶ τὴν Κασπίαν θάλατταν, λίμνην καὶ ταύτην καλοῦντες καὶ συντετρῆσθαι φάσκοντες πρὸς ἀλλήλας ἀμφοτέρως, ἑκατέραν δὲ εἶναι μέρος τῆς ἑτέρας. Πολύκλειτος δὲ καὶ πίστει 5 προφέρεται περὶ τοῦ λίμνην εἶναι τὴν θάλατταν ταύτην, ὅφεις τε γὰρ ἐκτρέφειν καὶ ὑπόγλυκν εἶναι τὸ ὕδωρ· ὅτι δὲ καὶ οὐχ ἑτέρα τῆς Μαιώτιδος ἐστὶ, τεκμαιρόμενος ἐκ τοῦ τὸν Τάναϊν εἰς αὐτὴν ἐμβάλλειν· ἐκ γὰρ τῶν αὐτῶν ὁρῶν τῶν Ἰνδικῶν ἐξ ὧν ὁ τε Ὠχος 10 καὶ ὁ Ὠξος καὶ ἄλλοι πλείους φέρεται καὶ ὁ Ἰαξάρτης ἐκδίδωσί τε ὁμοίως ἐκείνοις εἰς τὸ Κάσπιον πέλαγος πάντων ἀρκικώτατος. τοῦτον οὖν ὠνόμασαν Τάναϊν, καὶ προσέθεσάν γε τούτῳ πίστιν, ὥς εἴη Τάναϊς ὃν εἶρηκεν ὁ Πολύκλειτος· τὴν γὰρ περαιάν τοῦ 15 ποταμοῦ τούτου φέρειν ἐλάτην καὶ οἰστοῖς ἐλατίνοις χρῆσθαι τοὺς ταύτῃ Σκύθας· τοῦτο δὲ καὶ τεκμήριον τοῦ τὴν χώραν τὴν πέραν τῆς Εὐρώπης εἶναι, μὴ τῆς Ἀσίας· τὴν γὰρ Ἀσίαν τὴν ἄνω καὶ τὴν πρὸς ἑω μὴ φύειν ἐλάτην. Ἐρατοσθένης δὲ φησι καὶ ἐν τῇ Ἰνδικῇ 20 φύεσθαι ἐλάτην καὶ ἐντεῦθεν ναυπηγήσασθαι τὸν στόλον Ἀλέξανδρον· πολλὰ δὲ καὶ ἄλλα τοιαῦτα συγκροοῦν Ἐρατοσθένης πειράται, ἡμῖν δ' ἀποχρώντως εἰρησθῶ περὶ αὐτῶν.

5 Καὶ τοῦτο δ' ἐκ τῶν κατὰ τὴν Ἱερκανίαν ἱστορου- 25 μένων παραδόξων ἐστὶν ὑπὸ Εὐδόξου καὶ ἄλλων, ὅτι πρόκεινται τινες ἀκταὶ τῆς θαλάττης ὕπαντροι, τούτων δὲ μεταξὺ καὶ τῆς θαλάττης ὑπόκειται ταπεινὸς αἰγιαλός, ἐκ δὲ τῶν ὑπερθευ κρημνῶν ποταμοὶ ῥέοντες τοσαύτῃ προφέρονται βία ὥστε ταῖς ἀκταῖς συνά- 30

ψαντες εξακοντίζουσι τὸ ὕδωρ εἰς τὴν θάλατταν, ἄρ-
ραντον φυλάττοντες τὸν αἰγιαλὸν ὥστε καὶ στρατοπέ-
δοις ὁδεύσιμον εἶναι σκεπαζομένοις τῷ ρεύματι, οἱ δ'
ἐπιχώριοι κατάγονται πολλάκις εὐωχίας καὶ θυσίας
5 χάριν εἰς τὸν τόπον, καὶ ποτὲ μὲν ὑπὸ τοῖς ἄντροις
κατακλίνονται, ποτὲ δ' ὑπ' αὐτῷ τῷ ρεύματι ἡλια-
ζόμενοι ἄλλως ἄλλοι τέρπονται, παραφαινομένης ἅμα
καὶ τῆς θαλάττης ἐκατέρωθεν καὶ τῆς ἡόνος ποώδους
καὶ ἀνθηρᾶς οὔσης διὰ τὴν ἰκμάδα.

- 10 Ἀπὸ δὲ τῆς Ὀρκανίας θαλάττης προϊόντι ἐπὶ τὴν **8**
ἕω δεξιὰ μὲν ἐστὶ τὰ ὄρη μέχρι τῆς Ἰνδικῆς θαλάττης
παρατείνοντα, ἅπερ οἱ Ἕλληνες ὀνομάζουσι Ταῦρον,
ἀρξάμενα ἀπὸ τῆς Παμφυλίας καὶ τῆς Κιλικίας καὶ
μέχρι δεῦρο προϊόντα ἀπὸ τῆς ἐσπέρας συνεχῇ καὶ
15 τυγχάνοντα ἄλλων καὶ ἄλλων ὀνομάτων. προσοικουῖσι
δ' αὐτοῦ τὰ προσάρκτια μέρη πρῶτοι μὲν οἱ Γῆλαι
καὶ Καδούσιοι καὶ Ἀμαρδοί, καθάπερ εἴρηται, καὶ
τῶν Ὀρκανίων τινές, ἔπειτα τὸ τῶν Παρθυαίων ἔθνος
καὶ τὸ τῶν Μαργιανῶν καὶ τῶν Ἀρίων καὶ ἡ ἔρημος,
20 ἣν ἀπὸ τῆς Ὀρκανίας ὀρίζει ὁ Σάρνιος ποταμὸς πρὸς **511**
ἕω βαδίζουσι καὶ ἐπὶ τὸν Ὄχον. καλεῖται δὲ τὸ μέχρι
δεῦρο ἀπὸ τῆς Ἀρμενίας διατεῖνον ἢ μικρὸν ἀπολει-
πον Παραχοάθρας. ἐστὶ δὲ ἀπὸ τῆς Ὀρκανίας θαλάτ-
της εἰς τοὺς Ἀρίους περὶ ἑξακισχιλίους σταδίους· εἰδ'
25 ἡ Βακτριανὴ ἐστὶ καὶ ἡ Σογδιανή, τελευταῖοι δὲ Σκύ-
θαι νομάδες. τὰ δ' ὄρη Μακεδόνες μὲν ἅπαντα τὰ
ἐφεξῆς ἀπὸ Ἀρίων Κούκασον ἐκάλεσαν, παρὰ δὲ τοῖς
βαρβάροις * τὰ τε ἄκρα καὶ τοῦ Παροπαμίσον τὰ προσ-
βόρεια καὶ τὰ Ἡμωδὰ καὶ τὸ Ἰμαον καὶ ἄλλα τοιαῦτα
30 ὀνόματα ἐκάστοις μέρεσιν ἐπέκειτο.

Ἐν ἀριστερᾷ δὲ τούτοις ἀντιπαράκειται [τὰ] Σκυ- 2
θικὰ ἔθνη καὶ τὰ νομαδικὰ ἅπασαν ἐκπληροῦντα τὴν

βόρειον πλευράν. οἱ μὲν δὴ πλείους τῶν Σκυθῶν ἀπὸ τῆς Κασπίας θαλάττης ἀρξάμενοι Δαῖα προσαγορεύονται, τοὺς δὲ προσεφούς τούτων μᾶλλον Μασσαγέτας καὶ Σάκας ὀνομάζουσιν, τοὺς δ' ἄλλους κοινῶς μὲν Σκύθας ὀνομάζουσιν ἰδίᾳ δ' ὥς ἐκάστους· 5 ἅπαντες δ' ὥς ἐπὶ τὸ πολὺ νομάδες. μάλιστα δὲ γνώριμοι γεγόνασιν τῶν νομάδων οἱ τοὺς Ἑλληνας ἀφελόμενοι τὴν Βακτριανήν, Ἀσιοὶ καὶ * Πασιανοὶ καὶ Τόχαροι καὶ Σακάραυλοι, ὁρμηθέντες ἀπὸ τῆς περσείας τοῦ Ἰαξάρτου τῆς κατὰ Σάκας καὶ Σογδιανούς, ἣν 10 κατεῖχον Σάκαι. καὶ τῶν Δαῶν οἱ μὲν προσαγορεύονται Ἀπαρνοὶ οἱ δὲ Ξάνθιοι οἱ δὲ Πίσσουροι. οἱ μὲν οὖν Ἀπαρνοὶ πλησιαίτατα τῇ Τρκανίᾳ παράκεινται καὶ τῇ κατ' αὐτὴν θαλάττῃ, οἱ δὲ λοιποὶ διατείνουσι καὶ μέχρι τῆς ἀντιπαρηκούσης τῇ Ἀρίᾳ. 15

3 Μεταξὺ δ' αὐτῶν καὶ τῆς Τρκανίας καὶ τῆς Παρθυαίας μέχρι Ἀρίων ἔρημος πρόκειται πολλή καὶ ἄνυδρος, ἣν διεξιόντες μακραῖς ὁδοῖς κατέτρεχον τὴν τε Τρκανίαν καὶ τὴν Νησαίαν καὶ τὰ τῶν Παρθυαίων πεδία· οἱ δὲ συνέθεντο φόρους· φόρος δ' ἦν τὸ ἐπι- 20 τρέπειν τακτοῖς τισι χρόνοις τὴν χώραν κατατρέχειν καὶ φέρεσθαι λείαν. ἐπιπολαζόντων δ' αὐτῶν παρὰ τὰ συγκεῖμενα ἐπολεμεῖτο, καὶ πάλιν διαλύσεις καὶ ἀναπολεμήσεις ὑπῆρχον. τοιοῦτος δὲ καὶ ὁ τῶν ἄλλων νομάδων βίος, αἰετὸς τοῖς πλησίον ἐπιτιθεμένων 25 τοτὲ δ' αὖ διαλλαττομένων.

4 Σάκαι μέντοι παραπλησίας ἐφόδους ἐποιήσαντο τοῖς Κιμμερίοις καὶ Τρήρεσι, τὰς μὲν μακροτέρας τὰς δὲ καὶ ἐγγύθεν· καὶ γὰρ τὴν Βακτριανήν κατέσχον καὶ τῆς Ἀρμενίας κατεκτήσαντο τὴν ἀρίστην γῆν, ἣν καὶ 30 ἐπώνυμον ἑαυτῶν κατέλιπον τὴν Σακασηνήν, καὶ μέ-

C.512 χοὶ Καππαδόκων καὶ μάλιστα τῶν πρὸς Εὐξείνῳ οὖς

- Ποντικούς νῦν καλοῦσι, προῆλθον. ἐπιθέμενοι δ' αὐτοῖς πανηγυρίζουσιν ἀπὸ τῶν λαφύρων οἱ ταύτῃ τότε τῶν Περσῶν στρατηγοὶ νύκτωρ ἄρδην αὐτοὺς ἠφάνισαν. ἐν δὲ τῷ πεδίῳ πέτραν τινὰ προσχώματι
 5 συμπληρώσαντες εἰς βουνοειδὲς σχῆμα ἐπέθηκαν τεῖχος καὶ τὸ τῆς Ἀναΐτιδος καὶ τῶν συμβῶμων θεῶν ἱερὸν ἰδρύσαντο, Ὁμανοῦ καὶ Ἀναδάτου Περσικῶν δαιμόνων, ἀπέδειξάν τε πανήγυριν κατ' ἔτος ἱερᾶν, τὰ Σάκαια, ἣν μέχρι νῦν ἐπιτελοῦσιν οἱ τὰ Ζῆλα ἔχον-
 10 τες· οὕτω γὰρ καλοῦσι τὸν τόπον· ἔστι δὲ ἱεροδούλων πόλισμα τὸ πλεόν· Πομπήιος δὲ προσθεὶς χώραν ἀξιόλογον καὶ τοὺς ἐν αὐτῇ συνοικίσας εἰς τὸ τεῖχος μίαν τῶν πόλεων ἀπέφηνεν ὧν διετάξε μετὰ τὴν Μιθριδάτου κατὰλυσιν.
- 15 Οἱ μὲν [οὖν] οὕτω λέγουσι περὶ τῶν Σακῶν, οἱ δ' ὅτι Κῦρος ἐπιστρατεύσας τοῖς Σάκαις ἠττηθεὶς τῇ μάχῃ φεύγει, στρατοπεδευσάμενος δ' ἐν ᾧ χωρίῳ τὰς παρασκευὰς ἀπολελοίπει πλήρεις ἀφθονίας ἀπάσης καὶ μάλιστα οἴνου, διαναπαύσας μικρὰ τὴν στρατιάν,
 20 ἤλανεν ἀφ' ἐσπέρας ὡς φεύγων, πλήρεις ἀφελὺς τας σκηνάς· προελθὼν δ' ὅσον ἐδόκει συμφέρειν ἰδρύθη· ἐπιόντες δ' ἐκεῖνοι καὶ καταλαβόντες ἔρημον ἀνδρῶν τὸ στρατόπεδον τῶν δὲ πρὸς ἀπόλυσιν μεστόν, ἀνέδην ἐνεπίμπλαντο· ὁ δ' ὑποστρέψας ἐξοίνους κατέλαβε
 25 καὶ παραπλήγας, ὥσθ' οἱ μὲν ἐν κάρῳ κείμενοι καὶ ὕπνῳ κατεκόπτοντο, οἱ δ' ὄρχούμενοι καὶ βακχεύοντες γυμνοὶ περιέπιπτον τοῖς τῶν πολεμίων ὅπλοις, ὀλίγου δ' ἀπώλουντο ἅπαντες. ὁ δὲ θεὸν νομίσας τὸ εὐτύχημα, τὴν ἡμέραν ἐκείνην ἀνιερώσας τῇ πατρίῳ
 30 θεῷ προσηγόρευσε Σάκαια· ὅπου δ' αὖν ἦ τῆς θεοῦ ταύτης ἱερὸν, ἐνταῦθα νομίζεται καὶ ἡ τῶν Σακαίων ἐορτὴ βακχεία τις μεθ' ἡμέραν καὶ νύκτωρ, διέσκεν-

ασμένων σκυθιστί, πινόντων ἅμα καὶ πληκτιζομένων
πρὸς ἀλλήλους ἅμα τε καὶ τὰς συμπινούσας γυναῖκας.

6 Μασσαγέται δ' ἐδήλωσαν τὴν σφετέραν ἀρετὴν
ἐν τῷ πρὸς Κύρον πολέμῳ, περὶ οὗ θρυλοῦσι πολλοί,
καὶ δεῖ πυνθάνεσθαι παρ' ἐκείνων. λέγεται δὲ καὶ 5
τοιαῦτα περὶ τῶν Μασσαγетῶν, ὅτι κατοικοῦσιν οἱ
μὲν ὄρη τινὲς δ' αὐτῶν πεδία οἱ δὲ ἔλη ἃ ποιοῦσιν
οἱ ποταμοί, οἱ δὲ τὰς ἐν τοῖς ἔλεσι νήσους. μάλιστα δέ
φασι τὸν Ἀράξην ποταμὸν κατακλύζειν τὴν χώραν
πολλαχῇ σχιζόμενον, ἐκπίπτοντα δὲ τοῖς μὲν ἄλλοις 10

C.513 στόμασιν εἰς τὴν ἄλλην τὴν πρὸς ἄρκτοις θάλατταν,
ἐνὶ δὲ μόνῳ πρὸς τὸν κόλπον τὸν Τρκάνιον. θεὸν δὲ
ἥλιον μόνον ἡγοῦνται, τούτῳ δὲ ἱποθυτοῦσι· γαμεῖ
δ' ἕκαστος μίαν, χρῶνται δὲ καὶ ταῖς ἀλλήλων οὐκ
ἀφανῶς, ὁ δὲ μιννύμενος τῇ ἀλλοτριᾷ τὴν φαρ- 15
τραν ἐξαρετήσας ἐκ τῆς ἀμάξης φανερῶς μίγνυται·
θάνατος δὲ νομίζεται παρ' αὐτοῖς ἄριστος, ὅταν γη-
ράσαντες κατακοπῶσι μετὰ προβατείων κρεῶν καὶ
ἀναμῖξ βρωθῶσι· τοὺς δὲ νόσφ' θανόντας δρίπτουσιν
ὥς ἀσεβεῖς καὶ ἄξιους ὑπὸ θηρίων βεβρωῆσθαι. ἀγα- 20
θοὶ δὲ ἱππόται καὶ πεξοί, τόξοις δὲ χρῶνται καὶ μαχαί-
ραις καὶ θώραξι καὶ σαγάρεσι χαλκαῖς, ζῶναι δὲ αὐ-
τοῖς εἰσι χρυσαὶ καὶ διαδήματα ἐν ταῖς μάχαις· οἳ τε
ἵπποι χρυσοχάλινοι, καὶ μασχαλιστήρες δὲ χρυσοῦ· ἄρ-
γυρος δ' οὐ γίνεται παρ' αὐτοῖς, σίδηρος δ' ὀλίγος, 25
χαλκὸς δὲ καὶ χρυσὸς ἄφθονος.

7 Οἱ μὲν οὖν ἐν ταῖς νήσοις οὐκ ἔχοντες σπόριμα
ῥιζοφαγοῦσι καὶ ἀγρίοις χρῶνται καρποῖς, ἀμπέχονται
δὲ τοὺς τῶν δένδρων φλοιούς (οὐδὲ γὰρ βοσκήματα
ἔχουσι), πίνουσι δὲ τὸν ἐκ τῶν δένδρων καρπὸν ἐκ- 30
θλίβοντες· οἱ δ' ἐν τοῖς ἔλεσιν ἰχθυοφαγοῦσιν, ἀμπέ-
χονται δὲ τὰ τῶν φωκῶν δέρματα τῶν ἐκ θαλάττης

ἀνατρεχουσῶν· οἱ δ' ὄρειοι τοῖς ἀγρίοις τρέφονται
καὶ αὐτοὶ καρποῖς· ἔχουσι δὲ καὶ πρόβατα ὀλίγα ὥστ'
οὐδὲ κατακόπτουσι φειδόμενοι τῶν ἐρίων χάριν καὶ
τοῦ γάλακτος· τὴν δ' ἐσθῆτα ποικίλλουσιν ἐπιχρί-
5 στοῖς φαρμάκοις δυσεξίτηλον ἔχουσι τὸ ἄνθος. οἱ δὲ
πεδῖνοι καίπερ ἔχοντες χώραν οὐ γεωργοῦσιν, ἀλλὰ
ἀπὸ προβάτων καὶ ἰχθύων ζῶσι νομαδικῶς καὶ Σκυ-
θικῶς. ἔστι γάρ τις καὶ κοινὴ δίαίτα πάντων τῶν τοι-
ούτων ἣν πολλάκις λέγω, καὶ ταφαὶ δ' εἰσὶ παραπλή-
10 σιαι καὶ ἦθη καὶ ὁ σύμπας βίος, αὐθέκαστος μὲν σκαι-
ὸς τε καὶ ἄγριος καὶ πολεμικός, πρὸς δὲ τὰ συμβό-
λαια ἀπλοῦς καὶ ἀκάνηλος.

Τοῦ δὲ τῶν Μασσαγετῶν καὶ τῶν Σακῶν ἔθνους 8
καὶ οἱ Ἀττάσιοι καὶ οἱ Χωράσμιοι, εἰς οὓς ἀπὸ τῶν
15 Βακτριανῶν καὶ τῶν Σογδιανῶν ἐφυγε Σπιταμένης,
εἰς ἐκ τῶν ἀποδράντων Περσῶν τὸν Ἀλέξανδρον, κα-
θάπερ καὶ Βῆσσος· καὶ ὕστερον δὲ Ἀρσάκης τὸν Καλ-
λίνικον φεύγων Σέλευκον εἰς τοὺς Ἀπασιάκας ἐχώ-
ρησε. φησὶ δ' Ἐρατοσθένης τοὺς Ἀραχωτοὺς καὶ Μασ-
20 σαγέτας τοῖς Βακτρίοις παρακεῖσθαι* πρὸς δύσιν παρὰ
τὸν Ὠξον, καὶ Σάκας μὲν καὶ Σογδιανούς τοῖς ὅλοις
ἐδάφεσιν ἀντικεῖσθαι τῇ Ἰνδικῇ, Βακτρίους δ' ἐπ' ὀλί-
γον· τὸ γὰρ πλεον τῷ Παροπαμισῷ παρακεῖσθαι· δι-
C.514
εἰργεῖν δὲ Σάκας μὲν καὶ Σογδιανούς τὸν Ἰαξάρτην,
25 καὶ Σογδιανούς δὲ καὶ Βακτριανούς τὸν Ὠξον, μεταξὺ
δὲ Ὑρκανῶν καὶ Ἀρίων Ταπύρους οἰκεῖν· κύκλῳ δὲ
περὶ τὴν θάλατταν μετὰ τοὺς Ὑρκανοὺς Ἀμάρδους τε
καὶ Ἀναριάκας καὶ Καδουσίους καὶ Ἀλβανούς καὶ
Κασπίους καὶ Οὐτιτίους, τάχα δὲ καὶ ἑτέρους μέχρι
30 Σκνθῶν, ἐπὶ θάτερα δὲ μέρη τῶν Ὑρκανῶν Δέρβικας,
τοὺς δὲ Καδουσίους συμψάψειν Μήδων καὶ Ματιανῶν
ὑπὸ τὸν Παραχοάθραν.

9 Τὰ δὲ διαστήματα οὕτω λέγει· ἀπὸ μὲν τοῦ Κασπίου ἐπὶ τὸν Κῦρον ὡς χιλίους ὀκτακοσίους σταδίους, ἐνθεν δ' ἐπὶ Κασπίας πύλας πεντακισχιλίους ἑξακοσίους, εἴτ' εἰς Ἀλεξάνδρειαν τὴν ἐν Ἀρίοις ἑξακισχιλίους τετρακοσίους, εἴτ' εἰς Βάκτραν τὴν πόλιν, ἣ καὶ 5 Ζαριάσπα καλεῖται, τρισχιλίους ὀκτακοσίους ἑβδομήκοντα, εἴτ' ἐπὶ τὸν Ἰαξάρτην ποταμόν, ἐφ' ὃν Ἀλέξανδρος ἦκεν, ὡς πεντακισχιλίους· ὁμοῦ δισμύριοι δισχίλιοι ἑξακόσιοι ἑβδομήκοντα. λέγει δὲ καὶ οὕτω τὰ διαστήματα ἀπὸ Κασπίων πυλῶν εἰς Ἰνδούς· εἰς 10 μὲν Ἑκατόμπυλον χιλίους ἑνακοσίους ἐξήκοντά φασιν, εἰς δ' Ἀλεξάνδρειαν τὴν ἐν Ἀρίοις τετρακισχιλίους πεντακοσίους τριάκοντα, εἴτ' εἰς Προφθασίαν τὴν ἐν Δραγγῇ χιλίους ἑξακοσίους, οἱ δὲ πεντακοσίους, εἴτ' εἰς Ἀραχωτοὺς τὴν πόλιν τετρακισχιλίους ἑκατὸν εἴκο- 15 σιν, εἴτ' εἰς Ὀρτόσπανα ἐπὶ τὴν ἐκ Βάκτρων τρίοδον δισχίλιους, εἴτ' εἰς τὰ ὄρια τῆς Ἰνδικῆς χιλίους· ὁμοῦ μύριοι πεντακισχίλιοι τριακόσιοι. ἐπ' εὐθείας δὲ τῷ διαστήματι τούτῳ τὸ συνεχὲς δεῖ νοεῖν, τὸ ἀπὸ τοῦ Ἰνδοῦ μέχρι τῆς ἐφάς θαλάττης μῆκος τῆς Ἰνδικῆς. 20 ταῦτα μὲν τὰ περὶ τοὺς Σάκας.

9 Ἡ δὲ Παρθυαία πολλή μὲν οὐκ ἔστι· συνετέλει γοῦν μετὰ τῶν Ὀρκανῶν [κατὰ] τὰ Περσικὰ καὶ μετὰ ταῦτα τῶν Μακεδόνων κρατούντων ἐπὶ χρόνον πολύν. πρὸς δὲ τῇ σμικρότητι δασεῖα καὶ ὄρεινή ἐστι καὶ ἄπο- 25 ρος, ὥστε διὰ τοῦτο δρόμῳ διεξιᾶσι τὸν ἑαυτῶν οἱ βασιλεῖς ὄχλον, οὐ δυναμένης τρέφειν τῆς χώρας οὐδ' ἐπὶ μικρόν· ἀλλὰ νῦν ἡϋξῆται. μέρη δ' ἐστὶ τῆς Παρθυηνῆς ἥ τε Κωμισσηνὴ καὶ ἡ Χωρήνη, σχεδὸν δέ τι καὶ τὰ μέχρι πυλῶν Κασπίων καὶ Ῥαγῶν καὶ Ταπύρων 30 ὄντα τῆς Μηθίας πρότερον. ἔστι δ' Ἀπάμεια καὶ Ἡράκλεια, πόλεις περὶ τὰς Ῥάγας. εἰσὶ δ' ἀπὸ Κασπίων

πυλῶν εἰς μὲν Ῥάγας στάδιοι πεντακόσιοι, ὥς φησιν
 Ἀπολλόδωρος, εἰς δ' Ἑκατόμπυλον τὸ τῶν Παρθυαίων
 βασιλείου χίλιοι διακόσιοι ἐξήκοντα· τοῦνομα δὲ ταῖς
 Ῥάγαις ἀπὸ τῶν γενομένων σεισμῶν γενέσθαι φασίν,
 5 ὅφ' ὧν πόλεις τε συχνὰ καὶ κῶμαι δισχίλιναι, ὥς Ποσει-
 δώνιος φησι, ἀνετράπησαν. τοὺς δὲ Ταπύρους οἰκεῖν
 φασι μεταξὺ Δερβίκων τε καὶ Ὑρκανῶν. ἱστοροῦσι δὲ
 περὶ τῶν Ταπύρων ὅτι αὐτοῖς εἰηνόμιμον τὰς γυναῖκας
 ἐκδιδόναι τὰς γαμετὰς ἑτέροις ἀνδράσιν, ἐπειδὴν ἐξ
 10 αὐτῶν ἀνέλωνται δύο ἢ τρία τέκνα, καθάπερ καὶ Κά-
 των Ὀρτησίῳ δεηθέντι ἐξέδωκε τὴν Μαρκίαν ἐφ' ἡμῶν
 κατὰ παλαιὸν Ῥωμαίων ἔθος.

Νεωτερισθέντων δὲ τῶν ἔξω τοῦ Ταύρου διὰ τὸ 2
 πρὸς ἄλλοις εἶναι τοὺς τῆς Συρίας καὶ τῆς Μηδίας βα-
 15 σιλέας τοὺς ἔχοντας καὶ ταῦτα, πρῶτον μὲν τὴν Βακ-
 τριανὴν ἀπέστησαν οἱ πεπιστευμένοι καὶ τὴν ἐγγὺς
 αὐτῆς πᾶσαν οἱ περὶ Εὐθύδημον. ἐπειτ' Ἀρσάκης
 ἀνὴρ Σκύθης τῶν Δαῶν τινὰς ἔχων τοὺς Πάρνους
 καλουμένους νομάδας παροικοῦντας τὸν Ὀχον, ἐπὶ ἡλ-
 20 θεν ἐπὶ τὴν Παρθυαίαν καὶ ἐκράτησεν αὐτῆς. κατ' ἀρ-
 χὰς μὲν οὖν ἀσθενὴς ἦν διαπολεμῶν πρὸς τοὺς ἀφαι-
 ρεθέντας τὴν χώραν καὶ αὐτὸς καὶ οἱ διαδεξάμενοι
 ἐκείνου, ἐπειδ' οὕτως ἴσχυσαν ἀφαιρούμενοι τὴν πλη-
 σίον αἰὶ διὰ τὰς ἐν τοῖς πολέμοις κατορθώσεις ὥστε
 25 τελευτῶντες ἀπάσης τῆς ἐντὸς Εὐφράτου κύριοι κα-
 τέστησαν. ἀφείλοντο δὲ καὶ τῆς Βακτριανῆς μέρος
 βιασάμενοι τοὺς Σκύθας καὶ ἔτι πρότερον τοὺς περὶ
 Εὐκρατίδαν, καὶ νῦν ἐπάρχουσι τοσαύτης γῆς καὶ το-
 σούτων ἔθνων ὥστε ἀντίπαλοι τοῖς Ῥωμαίοις τρόπον
 30 τινὰ γέγονασι κατὰ μέγεθος τῆς ἀρχῆς. αἴτιος δ' ὁ
 βίος αὐτῶν καὶ τὰ ἔθνη τὰ ἔχοντα πολὺ μὲν τὸ βάρβα-

ρον καὶ τὸ Σκυθικόν, πλέον μέντοι τὸ χρήσιμον πρὸς ἡγεμονίαν καὶ τὴν ἐν τοῖς πολέμοις κατορθώσιν.

- 3 Φασὶ δὲ τοὺς Πάρνους Δάας μετανάστας εἶναι ἐκ τῶν ὑπὲρ τῆς Μαιώτιδος Δαῶν, οὓς Ξανδίους ἢ Παρίους καλοῦσιν· οὐ πάννυ δ' ὠμολόγηται Δάας εἶ-
5 ναί τινας τῶν ὑπὲρ τῆς Μαιώτιδος Σκυθῶν· ἀπὸ τούτων δ' οὖν ἔλκειν φασὶ τὸ γένος τὸν Ἀρσάκην, οἱ δὲ Βακτριανὸν λέγουσιν αὐτόν, φεύγοντα δὲ τὴν αὐ-
ξησιν τῶν περὶ Διόδοτον ἀποστῆσαι τὴν Παρθυαίαν. εἰρηκότες δὲ πολλὰ περὶ τῶν Παρθικῶν νομίμων ἐν 10
τῇ ἕκτῃ τῶν ἱστορικῶν ὑπομνημάτων βίβλῳ, δευτέρᾳ δὲ τῶν μετὰ Πολύβιον, παραλείψομεν ἐνταῦθα μὴ ταυτολογεῖν δόξωμεν, τοσοῦτον εἰπόντες μόνον ὅτι τῶν Παρθυαίων συνέδριόν φησιν εἶναι Ποσειδώνιος διττόν, τὸ μὲν συγγενῶν τὸ δὲ σοφῶν καὶ μάγων, ἐξ 15
ᾧ ἀμφοῖν τοὺς βασιλεῖς καθίστασθαι.

- 10 Ἡ δ' Ἀρία καὶ ἡ Μαργιανὴ κράτιστα χωρία ἐστὶ ταύτῃ, τῇ μὲν ὑπὸ τῶν ὀρῶν ἐγκλειόμενα τῇ δ' ἐν πε-
δίοις τὰς οἰκήσεις ἔχοντα. τὰ μὲν οὖν ὄρη νέμονται σκηνῆται τινες, τὰ δὲ πεδία ποταμοῖς διαρρεῖται· πο- 20
τίξουσιν δ' αὐτὰ τὰ μὲν τῷ Ἀρίῳ τὰ δὲ Μάρῳ. ὁμορεῖ
0.516 δὲ ἡ Ἀρία τῇ Βακτριανῇ * καὶ τὴν ὑποστᾶσαν ὄρει τῷ ἔχοντι τὴν Βακτριανήν· διέχει δὲ τῆς Ἰρκανίας περὶ ἑξακισχιλίους σταδίους. συντελής δ' ἦν αὐτῇ καὶ ἡ Δραγγιανὴ μέχρι Καρμανίας, τὸ μὲν πλέον τοῖς νο- 25
τίοις μέρεσι τῶν ὀρῶν ὑποπεπτωκυῖα, ἔχουσα μέντοι τινὰ τῶν μερῶν καὶ τοῖς ἀρκτικοῖς πλησιάζοντα τοῖς κατὰ τὴν Ἀρίαν· καὶ ἡ Ἀραχωσία δὲ οὐ πολὺ ἄπωθεν ἐστὶ, καὶ αὕτη τοῖς νοτίοις μέρεσι τῶν ὀρῶν ὑποπε-
πτωκυῖα καὶ μέχρι τοῦ Ἰνδοῦ ποταμοῦ τεταμένη, μέ- 30
ρος οὖσα τῆς Ἀριανῆς. μῆκος δὲ τῆς Ἀρίας ὅσον δις-
χίλιοι στάδιοι, πλάτος δὲ τριακόσιοι τοῦ πεδίου· πό-

λεις δὲ Ἀρτακάηνα καὶ Ἀλεξάνδρεια καὶ Ἀχαῖα, ἐπώ-
 νυμοι τῶν κτισάντων. εὐοινεῖ δὲ σφόδρα ἡ γῆ· καὶ
 γὰρ εἰς τριγούριαν παραμένει ἐν ἀπιττώτοις ἄγγεσι.

Παραπλησία δ' ἐστὶ καὶ ἡ Μαργιανή, ἐρημίαις δὲ 2
 5 περιέχεται τὸ πεδῖον. θαυμάσας δὲ τὴν εὐφύαν ὁ
 Σωτὴρ Ἀντίοχος τεῖχει περιέβαλε κύκλον ἔχοντι χιλίων
 καὶ πεντακοσίων σταδίων, πόλιν δὲ ἔκτισεν Ἀντιό-
 χειαν. εὐάμπελος δὲ καὶ αὕτη ἡ γῆ· φασὶ γοῦν τὸν
 πυθμένα εὐρίσκεσθαι πολλάκις θυσὶν ἀνδράσι περι-
 10 ληπτόν, τὸν δὲ βότρυν δίπληχυν.

Τῆς δὲ Βακτρίας μέρη μὲν τινα τῇ Ἀρίᾳ παραβέ- 11
 βληται πρὸς ἄρκτον, τὰ πολλὰ δ' ὑπέρκειται πρὸς ἕω·
 πολλὴ δ' ἐστὶ καὶ πάμφορος πλὴν ἐλαίου. τοσοῦτον
 δὲ ἴσχυσαν οἱ ἀποστήσαντες Ἕλληνες αὐτὴν διὰ τὴν
 15 ἄρετὴν τῆς χώρας ὥστε τῆς τε Ἀριανῆς ἐπεκράτουν
 καὶ τῶν Ἰνδῶν, ὥς φησιν Ἀπολλόδωρος ὁ Ἀρταμιτη-
 νός, καὶ πλείω ἔθνη κατεστρέψαντο ἢ Ἀλέξανδρος,
 καὶ μάλιστα Μένανδρος (εἰ γε καὶ τὸν Ὑπαννιν διέβη
 πρὸς ἕω καὶ μέχρι τοῦ Ἰμάου προῆλθε) τὰ μὲν αὐτὸς
 20 τὰ δὲ Δημήτριος ὁ Εὐθυδήμου υἱὸς τοῦ Βακτρίων βα-
 σιλέως· οὐ μόνον δὲ τὴν Παταληνὴν κατέσχον ἀλλὰ
 καὶ τῆς ἄλλης παραλίας τὴν τε Σαραόστου καλουμέ-
 νην καὶ τὴν Σιγέρδιδος βασιλείαν. καθ' ὅλου δὲ φησιν
 ἐκεῖνος τῆς συμπάσης Ἀριανῆς πρόσχημα εἶναι τὴν
 25 Βακτριανήν· καὶ δὴ καὶ μέχρι Σηρῶν καὶ Φρυνῶν
 ἐξέτεινον τὴν ἀρχήν.

Πόλεις δ' εἶχον τὰ τε Βάκτρα ἥνπερ καὶ Ζαριά- 2
 σπαν καλοῦσιν, ἣν διαρρεῖ ὁμώνυμος ποταμὸς ἐκ-
 βάλλων εἰς τὸν Ὠξον, καὶ Ἀδραφα καὶ ἄλλας πλείους·
 30 τουτων δ' ἦν καὶ ἡ Εὐκρατίδεια τοῦ ἄρξαντος ἐπώνυ-

μος. οἱ δὲ κατασχόντες αὐτήν Ἕλληνες καὶ εἰς σατρα-
 0.517 πείας διηγήκασιν, ὧν τὴν τε Ἀσπιώνου καὶ τὴν Τα-
 πυρίαν ἀφῆρηντο Εὐκρατίδην οἱ Παρθυαῖοι. ἔσχον
 δὲ καὶ τὴν Σογδιανὴν ὑπερκειμένην πρὸς ἕω τῆς Βακ-
 τριανῆς μεταξὺ τοῦ τε Ὠξου ποταμοῦ, ὃς ὀρίζει τὴν 5
 τε τῶν Βακτριῶν καὶ τὴν τῶν Σογδιῶν, καὶ τοῦ Ἰα-
 ξάρτου· οὗτος δὲ καὶ τοὺς Σογδίους ὀρίζει καὶ τοὺς
 νομάδας.

3 Τὸ μὲν οὖν παλαιὸν οὐ πολὺ διέφερον τοῖς βίοις
 καὶ τοῖς ἔθουσι τῶν νομάδων οἳ τε Σογδιανοὶ καὶ οἱ 10
 Βακτριανοί, μικρὸν δ' ὅμως ἡμερώτερα ἦν τὰ τῶν Βακ-
 τριανῶν, ἀλλὰ καὶ περὶ τούτων οὐ τὰ βέλτιστα λέ-
 γουσιν οἱ περὶ Ὀνησίκριτον· τοὺς γὰρ ἀπειρηκότας
 διὰ γῆρας ἢ νόσον ζῶντας παραβάλλεσθαι τρεφομέ-
 νοις κυσὶν ἐπίτηδες πρὸς τοῦτο, οὓς ἐνταφιαστὰς κα- 15
 λείσθαι τῇ πατρὶά γλώττῃ, καὶ ὀραῖσθαι τὰ μὲν ἕξω
 τείχους τῆς μητροπόλεως τῶν Βάκτρων καθαρὰ, τῶν
 δ' ἐντὸς τὸ πλεον ὀστέων πλήρες ἀνθρωπίνων· κατα-
 λῦσαι δὲ τὸν νόμον Ἀλέξανδρον. τοιαῦτα δὲ πως καὶ
 τὰ περὶ τοὺς Κασπίους ἱστοροῦσι· τοὺς γὰρ γονέας, 20
 ἐπειδὴν ὑπὲρ ἑβδομήκοντα ἔτη γεγονότες τυγχάνωσιν,
 ἐγκλεισθέντας λιμοκτονεῖσθαι. τοῦτο μὲν οὖν ἀνε-
 κτότερον καὶ τῷ Κείων νόμῳ παραπλήσιον καίπερ
 ὃν σκυθικόν, πολὺ μέντοι σκυθικώτερον τὸ τῶν
 Βακτριανῶν. καὶ δὴ διαπορεῖν ἄξιον ἦν, ἥνίκα Ἀλέ- 25
 ξανδρος τοιαῦτα κατελάμβανε τὰνταῦθα, τί χρὴ * ποι-
 εῖν τὰ ἐπὶ τῶν πρώτων Περσῶν καὶ τῶν ἔτι πρότε-
 ρον ἡγεμόνων ὅποια εἰκὸς ἦν παρ' αὐτοῖς νευομίσθαι.

4 Φασὶ δ' οὖν ὀκτὼ πόλεις τὸν Ἀλέξανδρον ἐν τε
 τῇ Βακτριανῇ καὶ τῇ Σογδιανῇ κτίσαι, τινὰς δὲ κατα- 30
 σκάψαι, ὧν Καριάτας μὲν τῆς Βακτριανῆς, ἐν ᾗ Καλλι-
 σθένης συνελήφθη καὶ παρεδόθη φυλακῇ, Μαράκανδα

δὲ τῆς Σογδιανῆς καὶ τὰ Κῦρα, ἔσχατον δὲ Κύρου
κτίσμα ἐπὶ τῷ Ἰαξάρτῃ ποταμῷ κείμενον, ὅπερ ἦν
ὄριον τῆς Περσῶν ἀρχῆς· κατασκάψαι δὲ τὸ κτίσμα
τοῦτο καίπερ ὄντα φιλόκυρον διὰ τὰς πυκνάς ἀπο-
5 στάσεις· ἔλειν δὲ καὶ πέτρας ἐρυμνάς σφόδρα ἐκ προ-
δοσίας τὴν τε ἐν τῇ Βακτριανῇ τὴν Σισιμίδρου ἐν
ἣ ἔῖχεν Ὀξυάρτης τὴν θυγατέρα Ῥωξάνην, καὶ τὴν ἐν
τῇ Σογδιανῇ τὴν τοῦ Ὄξου, οἱ δ' Ἀριαμάρχου φασί.
τὴν μὲν οὖν Σισιμίδρου πεντεκαίδεκα σταδίων ἴστο-
10 ροῦσι τὸ ὕψος, ὀγδοήκοντα δὲ τὸν κύκλον, ἄνω δ'
ἐπίπεδον καὶ εὐγεων ὅσον πεντακοσίους ἄνδρας τρέ-
φειν δυναμένην, ἐν ἣ καὶ ξυλίας τυχεῖν πολυτελοῦς
καὶ γάμους ἀγαγεῖν Ῥωξάνης τῆς Ὀξυάρτου θυγατρὸς
τὸν Ἀλέξανδρον· τὴν δὲ τῆς Σογδιανῆς διπλασίαν τὸ
15 ὕψος φασί. περὶ τούτους δὲ τοὺς τόπους καὶ τὸ τῶν
Βραγχιδῶν ἄστει ἀνελεῖν, οὓς ἔβρεξεν μὲν ἰδρῦσαι C.518
αὐτόθι συναπάραντας αὐτῷ ἐκόντας ἐκ τῆς οἰκείας διὰ
τὸ παραδοῦναι τὰ χρήματα τοῦ θεοῦ τὰ ἐν Διδύμοις
καὶ τοὺς θησαυρούς, ἐκαῖνον δ' ἀνελεῖν μυσαττόμα-
20 νον τὴν ἱεροσυλίαν καὶ τὴν προδοσίαν.

Τὸν δὲ διὰ τῆς Σογδιανῆς ῥέοντα ποταμὸν * καὶ 5
..... Πολυτίμητον Ἀριστόβουλος, τῶν Μακεδόνων
[τοῦνομα] θεμένων, καθάπερ καὶ ἄλλα πολλὰ τὰ μὲν
καινὰ ἔθεσαν τὰ δὲ παρωνόμασαν· ἄρδοντα δὲ τὴν χά-
25 ραν ἐκπίπτειν εἰς ἔρημον καὶ ἁμμώδη γῆν καταπίνε-
σθαι τε εἰς τὴν ἅμμον, ὥς καὶ τὸν Ἄριον τὸν δι'
Ἀρίων ῥέοντα. τοῦ δὲ Ὄχου ποταμοῦ πλησίον ὀρύτ-
τοντας εὔρεῖν ἐλαίου πηγὴν λέγουσιν· εἰκὸς δέ, ὥσπερ
νιτρῶδη τινὰ καὶ στύφοντα ὕγρα καὶ ἀσφαλτώδη καὶ
30 θειώδη διαρρεῖ τὴν γῆν, οὕτω καὶ λιπαρὰ εὔρισκε-
σθαι, τὸ δὲ σπάνιον ποιεῖ τὴν παραδοξίαν. ῥεῖν δὲ
τὸν Ὄχον οἱ μὲν διὰ τῆς Βακτριανῆς φασιν οἱ δὲ παρ'

αὐτήν, καὶ οἱ μὲν ἕτερον τοῦ Ὁξου μέχρι τῶν ἐκβο-
λῶν νοτιώτερον ἐκείνου, ἀμφοτέρων δ' ἐν τῇ Ἱρ-
κανίᾳ τὰς εἰς τὴν θάλατταν ὑπάρχειν ἐκρύψεις, οἱ δὲ
κατ' ἀρχὰς μὲν ἕτερον συμβάλλειν δ' εἰς ἓν τὸ τοῦ
Ὁξου ρεῖθρον, πολλαχοῦ καὶ ἕξ καὶ ἑπτὰ σταδίων 5
ἔχοντα τὸ πλάτος. ὁ μὲντοι Ἰαξάρτης ἀπ' ἀρχῆς μέχρι
τέλους ἕτερός ἐστι τοῦ Ὁξου, καὶ εἰς μὲν τὴν αὐτὴν
τελευτῶν θάλατταν, αἱ δ' ἐμβολαὶ διέχουσιν ἀλλήλων,
ὥς φησι Πατροκλῆς, παρασάγγας ὡς ὀγδοήκοντα· τὸν
δὲ παρασάγγην τὸν περσικὸν οἱ μὲν ἐξήκοντα στα- 10
δίων φασίν, οἱ δὲ τριάκοντα ἢ τετραράκοντα. ἀνα-
πλέοντων δ' ἡμῶν τὸν Νεῖλον ἄλλοτ' ἄλλοις μέτροις
χρῶμενοι τὰς σχολίους ὠνόμαζον ἀπὸ πόλεως ἐπὶ πό-
λιν, ὥστε τὸν αὐτὸν τῶν σχολίων ἀριθμὸν ἀλλαχοῦ
μὲν μείζω παρέχειν πλοῦν ἀλλαχοῦ δὲ βραχύτερον· 15
οὕτως ἕξ ἀρχῆς παραδεδομένον καὶ φυλαττόμενον μέ-
χρι νῦν.

- 6 Μέχρι μὲν δὴ τῆς Σογδιανῆς πρὸς ἀνίσχοντα
ἥλιον ἰόντι ἀπὸ τῆς Ἱρκανίας γνώριμα ὑπῆρξε τὰ ἔθνη
καὶ τοῖς Πέρσαις πρότερον τὰ εἶσω τοῦ Ταύρου καὶ 20
τοῖς Μακεδόσι μετὰ ταῦτα καὶ τοῖς Παρθυαίοις. τὰ δ'
ἐπέκεινα ἐπ' εὐθείας ὅτι μὲν Σκυθικά ἐστιν, ἐκ τῆς
ὁμοειδεῖας εἰκάζεται, στρατεῖαι δ' οὐ γεγόνασιν ἐπ' αὐ-
τοὺς ἡμῖν γνώριμοι, καθάπερ οὐδὲ ἐπὶ τοὺς βορειο-
τάτους τῶν νομάδων, ἐφ' οὓς ἐπεχείρησε μὲν ὁ Ἀλέ- 25
ξανδρος ἄγειν στρατεῖαν, ὅτε τὸν Βῆσσον μετήει καὶ
τὸν Σπιταμένην, ζωγρία δ' ἀναχθέντος τοῦ Βῆσσου,
τοῦ δὲ Σπιταμένους ὑπὸ τῶν βαρβάρων διαφθαρέν-
τος, ἐπαύσατο τῆς ἐπιχειρήσεως. οὐχ ὁμολογοῦσι δ'
ὅτι περιέπλευσάν τινες ἀπὸ τῆς Ἰνδικῆς ἐπὶ τὴν Ἱρ- 30
κανίαν· ὅτι δὲ δυνατόν, Πατροκλῆς εἰρηκε.

καλοῦσιν Ἰμαιον, τῇ Ἰνδικῇ θαλάττῃ ξυνάπτον, οὐδὲν οὔτε προὔχει πρὸς ἕω τῆς Ἰνδικῆς μᾶλλον οὔτ' εἰσέχει· παριόντι δ' εἰς τὸ βόρειον πλευρὸν αἰέ τι τοῦ μή-
 5 κους ὑφαιρεῖ καὶ τοῦ πλάτους ἢ θάλαττα, ὥστ' ἀπο-
 φαίνειν μύουρον πρὸς ἕω τὴν νῦν ὑπογραφομένην
 μερίδα τῆς Ἀσίας, ἣν ὁ Ταῦρος ἀπολαμβάνει πρὸς τὸν
 ὠκεανὸν τὸν πληροῦντα τὸ Κάσπιον πέλαγος. μῆκος
 δ' ἐστὶ ταύτης τῆς μερίδος τὸ μέγιστον ἀπὸ τῆς Ἰνδα-
 νίας θαλάττης ἐπὶ τὸν ὠκεανὸν τὸν κατὰ τὸ Ἰμαιον
 10 τρισμυρίων πον σταδίων, παρὰ τὴν ὀρεινὴν τοῦ Ταύ-
 ρου τῆς πορείας οὔσης, πλάτος δ' ἔλαττον τῶν μυρίων.
 εἴρηται γὰρ ὅτι περὶ τετρακισμυρίους σταδίους ἐστὶ
 τὸ ἀπὸ τοῦ Ἰστικοῦ κόλπου μέχρι τῆς ἐφίας θαλάττης
 τῆς κατὰ Ἰνδούς, ἐπὶ δ' Ἰσθὸν ἀπὸ τῶν ἐσπερίων ἄκρων
 15 τῶν κατὰ στήλας ἄλλοι τρισμύριοι· ἐστὶ δὲ ὁ μυχὸς τοῦ
 Ἰστικοῦ κόλπου μικρὸν ἢ οὐδὲν Ἀμισοῦ ἐωθινώτερος,
 τὸ δὲ ἀπὸ Ἀμισοῦ ἐπὶ τὴν Ἰνδανίαν γῆν περὶ μυρίους
 ἐστὶ σταδίους, παράλληλον ὃν τῷ ἀπὸ τοῦ Ἰσθοῦ λε-
 χθέντι ἐπὶ τοὺς Ἰνδούς. λείπεται δὴ τὸ λεχθὲν μῆκος
 20 ἐπὶ τὴν ἕω τῆς περιωδευμένης νυνὶ μερίδος οἱ τρισμύ-
 ριοι στάδιοι. πάλιν δὲ τοῦ πλάτους τοῦ μεγίστου τῆς
 οἰκουμένης ὅντος περὶ τρισμυρίους σταδίους, χλαμυ-
 δοειδοὺς οὔσης, τὸ διάστημα τοῦτο ἐγγὺς ἂν εἴη τοῦ
 μεσημβρινοῦ τοῦ διὰ τῆς Ἰνδανίας θαλάττης γραφο-
 25 μένου καὶ τῆς Περσικῆς, εἴπερ ἐστὶ τὸ μῆκος τῆς οἰ-
 κουμένης ἐπὶ μυριάδες· εἰ οὖν ἀπὸ τῆς Ἰνδανίας ἐπὶ
 Ἀρτεμίταν τὴν ἐν τῇ Βαβυλωνίᾳ στάδιοι εἰσὶν ὀκτα-
 κισχίλιοι, καθάπερ εἴρηκεν Ἀπολλόδωρος ὁ ἐκ τῆς Ἀρ-
 τεμίτας, ἐκεῖθεν δ' ἐπὶ τὸ στόμα τῆς κατὰ Πέρσας θα-
 30 λάττης ἄλλο τοσοῦτόν ἐστι, καὶ πάλιν τοσοῦτον ἢ
 μικρὸν ἀπολείπον εἰς τὰ ἀνταίροντα τοῖς ἄκροις τῆς
 Αἰθιοπίας, λοιπὸν ἂν εἴη τοῦ πλάτους τῆς οἰκουμένης

τοῦ λεχθέντος ἀπὸ τοῦ μυχοῦ τῆς Ἰρκανίας θαλάττης ἐπὶ τοῦ στόματος αὐτῆς ὅσον εἰρήκαμεν. μυούρου δ' ὄντος τοῦ τμήματος τούτου τῆς γῆς ἐπὶ τὰ πρὸς ἕω μέρη, γίνοιτ' ἂν τὸ σχῆμα προσόμοιον μαγειρικῇ κοπίδι, τοῦ μὲν ὅρους ἐπ' εὐθείας ὄντος καὶ νοουμένου 5 κατὰ τὴν ἀκμὴν τῆς κοπίδος, τῆς δ' ἀπὸ τοῦ στόματος τοῦ Ἰρκανίου παραλλῆλως ἐπὶ Τάμαρον κατὰ θάτερον πλευρὸν εἰς περιφερῆ καὶ μύουρον γραμμὴν ἀπολῆγον.

- 8 Ἐπιμνηστέον δὲ καὶ τῶν παραδόξων ἐνίων ἃ θρυ- 10
λουῖσι περὶ τῶν τελείως βαρβάρων, οἷον τῶν περὶ τὸν
Καύκασον καὶ τὴν ἄλλην ὀρεινὴν. τοῖς μὲν γὰρ νόμι-
C.520μον εἶναι φασὶ τὸ τοῦ Εὐριπίδου „τὸν φύντα θρηνεῖν
„εἰς ὃς' ἔρχεται κακὰ, τὸν δ' αὖ θανόντα καὶ πόνων
„πεπαυμένον χαίροντας εὐφημοῦντας ἐκπέμπειν δό- 15
„μυν.“ ἑτέροις δὲ μηδὲνα ἀποκτείνειν τῶν ἑξαμαρ-
τόντων τὰ μέγιστα, ἀλλ' ἐξορίζειν μόνον μετὰ τῶν τέ-
κνων, ὑπεναντίως τοῖς Δέρβιξι· καὶ γὰρ ἐπὶ μικροῖς
οὔτοι σφάττουσι. σέβονται δὲ γῆν οἱ Δέρβικες· θύ-
ουσι δ' οὐδὲν θῆλυ οὐδὲ ἐσθίουσι· τοὺς δὲ ὑπὲρ ἑβδο- 20
μήκοντα ἔτη γεγονότας σφάττουσιν, ἀναλίσκουσι δὲ
τὰς σάρκας οἱ ἄγχιστα γένους· τὰς δὲ γράϊας ἀπάγχου-
σιν, εἴτα θάπτουσι· τοὺς δὲ ἐντὸς ἑβδομήκοντα ἐτῶν
ἀποθανόντας οὐκ ἐσθίουσιν ἀλλὰ θάπτουσι. Σίγιννοι
δὲ τᾶλλα μὲν περσιζουσιν, ἱππαρίοις δὲ χρῶνται μι- 25
κροῖς δασέσιν, ἅπερ ἱππότην ὀχεῖν μὲν οὐ δύναται,
τέθριππα δὲ ξευγνύουσιν· ἡνιοχοῦσι δὲ γυναῖκες ἐκ
παίδων ἡσκημέναι, ἥ δ' ἄριστα ἡνιοχοῦσα συνοικεῖ ᾧ
βούλεται· τινὰς δ' ἐπιτηδεύειν φασὶν ὅπως ὥς μακρο-
κεφαλώτατοι φανοῦνται καὶ προπεπτωκότες τοῖς με- 30
τώποις ὥσθ' ὑπερκύπτειν τῶν γενείων. Ταπύρων δ'
ἔστι καὶ τὸ τους μὲν ἄνδρας μελανειμονεῖν καὶ μακρο-

κομῆν, τὰς δὲ γυναῖκας λευχειμονεῖν καὶ βραχυκομῆν. καὶ ὁ ἀνδρειότατος κριθεὶς γαμεῖ ἢν βούλεται. Κάσπιοι δὲ τοὺς ὑπὲρ ἐβδομήκοντα ἔτη λιμοκτονήσαντες εἰς τὴν ἐρημίαν ἐκτιθέασιν, ἅπωθεν δὲ σκοπεύουσιν 5 *τες* ἂν μὲν ὑπ' ὀρνίθων κατασπωμένους ἀπὸ τῆς κλί-
νης ἴδωσιν, εὐδαιμονίζουσιν, ἂν δὲ ὑπὸ θηρίων ἢ κυ-
νῶν, ἦττον, ἂν δ' ὑπὸ μηδενός, κακοδαιμονίζουσι.

Ἐπεὶ δὲ τὰ βόρεια μέρη τῆς Ἀσίας ποιεῖ ὁ Ταῦρος, 12
ἃ δὴ καὶ ἐντὸς τοῦ Ταύρου καλοῦσιν, εἰπεῖν προσιλό-
10 *μεθα* πρῶτον [περὶ τούτων]· τούτων δ' ἐστὶ καὶ τὰ ἐν
τοῖς ὄρεσιν αὐτοῖς ἢ ὅλα ἢ τὰ πλεῖστα. ὅσα μὲν [οὖν]
τῶν Κασπίων πυλῶν ἐωθινώτερά ἐστιν, ἀπλουστέραν
ἔχει τὴν περὶήγησιν διὰ τὴν ἀγριότητα, οὐ πολὺ τε ἂν
διαφέρει τοῦδε ἢ τοῦδε τοῦ κλίματος συγκαταλεχθέν-
15 *τα*· τὰ δ' ἐσπέρια πάντα δίδωσιν εὐπορίαν τοῦ λέγειν
περὶ αὐτῶν, ὥστε δεῖ προάγειν ἐπὶ τὰ παρακείμενα
ταῖς Κασπίαις πύλαις. παράκειται δὲ ἡ Μηδία πρὸς
δύσιν, χῶρα καὶ πολλὴ καὶ δυναστεύσασά ποτε καὶ ἐν
μέσῳ τῷ Ταύρῳ κειμένη, πολυσχιδεῖ κατὰ ταῦτα ὑπάρ-
20 *χοντι* τὰ μέρη καὶ ἀνύλωνας ἐμπεριλαμβάνοντι μεγά-
λους, καθάπερ καὶ τῇ Ἀρμενίᾳ τοῦτο συμβέβηκε.

Τὸ γὰρ ὅρος τοῦτο ἄρχεται μὲν ἀπὸ τῆς Καρίας 2
καὶ Λυκίας, ἀλλ' ἐνταῦθα μὲν οὔτε πλάτος οὔτε ὕψος
ἀξιόλογον δείκνυσιν· ἐξαίρεται δὲ πολὺ πρῶτον κατὰ
25 *τὰς* Χελιδονίας (αὗται δ' εἰσὶ νῆσοι κατὰ τὴν ἀρχὴν
τῆς Παμφύλων παραλίας), ἐπὶ δὲ τὰς ἀνατολὰς ἐκτεῖ-0.521
νόμενον ἀνύλωνας μακροὺς ἀπολαμβάνει τοὺς τῶν Κι-
λίκων· εἴτα τῇ μὲν τὸ Ἀμανὸν ἀπ' αὐτοῦ σχίζεται τῇ
δὲ ὁ Ἀντίταυρος, ἐν ᾧ τὰ Κόμανα ἴδρυνται τὰ ἐν τοῖς
30 *ἄνω* λεγομένοις Καππάδοξιν. οὗτος μὲν οὖν ἐν τῇ Κα-

2. post βραχυκομῆν: οἰκοῦσι δὲ μεταξὺ Λεβετικών καὶ Τρ-
κανῶν

ταονία τελευτᾷ, τὸ δὲ Ἀμανὸν ὄρος μέχρι τοῦ Εὐφράτου καὶ τῆς Μελιτηνῆς πρόεισι, καθ' ἣν ἡ Κομμαγηνὴ τῇ Καππαδοκίᾳ παράκειται· ἐκδέχεται δὲ τὰ πέραν τοῦ Εὐφράτου ὄρη, συνεχῇ μὲν τοῖς προειρημένοις πλήν ὅσον διακόπτει ῥέων διὰ μέσων ὁ ποταμός, πολλὴν δ' ἐπίδοσιν λαμβάνει εἰς τὸ ὕψος καὶ τὸ πλάτος καὶ τὸ πολυσχιδές. τὸ δ' οὖν νοτιώτατον μάλιστα ἐστὶν ὁ Ταῦρος ὁρίζων τὴν Ἀρμενίαν ἀπὸ τῆς Μεσοποταμίας.

3 Ἐντεῦθεν δὲ ἀμφοτέροι οἱ ῥέουσιν οἱ τὴν Μεσοποταμίαν ἐγκυκλούμενοι ποταμοὶ καὶ συνάπτοντες ἀλλή-
λοις ἐγγὺς κατὰ τὴν Βαβυλωνίαν, εἴτα ἐκδιδόντες εἰς
τὴν κατὰ Πέρσας θάλατταν, ὃ τε Εὐφράτης καὶ Τί-
γρις. ἔστι δὲ καὶ μείζων ὁ Εὐφράτης καὶ πλείω διεξείσι
χώραν σκολιῶ τῷ ῥεῖθρῳ, τὰς πηγὰς ἔχων ἐν τῷ προσ-
βορεῖῳ μέρει τοῦ Ταύρου, ῥέων δ' ἐπὶ δύσιν διὰ τῆς 15
Ἀρμενίας τῆς μεγάλης καλουμένης μέχρι τῆς μικρᾶς,
ἐν δεξιᾷ ἔχων ταύτην ἐν ἀριστερᾷ δὲ τὴν Ἀκιλισηνήν·
εἴτ' ἐπιστρέφει πρὸς νότον, συνάπτει δὲ κατὰ τὴν ἐπι-
στροφὴν τοῖς Καππαδόκων ὁρίοις· δεξιᾷ δὲ ταῦτα
ἀφείδαι καὶ τὰ τῶν Κομμαγηνῶν, ἀριστερᾷ δὲ τὴν Ἀκι- 20
λισηνήν καὶ Σωφηνήν τῆς μεγάλης Ἀρμενίας πρόεισιν
ἐπὶ τὴν Συρίαν καὶ λαμβάνει πάλιν ἄλλην ἐπιστροφὴν
εἰς τὴν Βαβυλωνίαν καὶ τὸν Περσικὸν κόλπον. ὁ δὲ
Τίγρις ἐκ τοῦ νοτίου μέρους τοῦ αὐτοῦ ὄρους ἐνεχθεὶς
ἐπὶ τὴν Σελεύκειαν συνάπτει τῷ Εὐφράτῃ πλησίον 25
καὶ ποιεῖ τὴν Μεσοποταμίαν πρὸς αὐτόν, εἴτ' ἐκδίδωσι
καὶ αὐτὸς εἰς τὸν αὐτὸν κόλπον. διέχουσι δὲ ἀλλήλων
αἱ πηγαὶ τοῦ τε Εὐφράτου καὶ τοῦ Τίγριος περὶ δισχι-
λίους καὶ πεντακοσίους σταδίους.

4 Ἀπὸ δ' οὖν τοῦ Ταύρου πρὸς ἄρκτον ἀποσχίδες 30
πολλὰι γεγόνασιν, μία μὲν ἡ τοῦ καλουμένου Ἀντιταύ-
ρου· καὶ γὰρ ἐνταῦθα οὕτως ὠνομάζετο ὁ τὴν Σωφη-

νὴν ἀπολαμβάνων ἐν αὐλῶνι μεταξὺ κειμένῳ αὐτοῦ
 τε καὶ τοῦ Ταύρου. πέραν δὲ τοῦ Εὐφράτου κατὰ τὴν
 μικρὰν Ἀρμενίαν ἐφεξῆς τῷ Ἀντιταύρῳ πρὸς ἄρκτον
 ἐπεκτείνεται μέγα ὄρος καὶ πολυσχιδές· καλοῦσι δὲ τὸ
 5 μὲν αὐτοῦ Παρυάδρην τὸ δὲ Μοσχικὰ ὄρη τὸ δ' ἄλ-
 λους ὀνόμασι· ταῦτα δ' ἀπολαμβάνει τὴν Ἀρμενίαν
 ὅλην μέχρι Ἰβήρων καὶ Ἀλβανῶν. εἰτ' ἄλλ' ἐπανίστα-
 ται πρὸς ἕω, τὰ ὑπερκείμενα τῆς Κασπίας θαλάττης
 μέχρι Μηδίας τῆς τε Ἀτροπατίου καὶ τῆς μεγάλης· κα-
 10 λοῦσι δὲ καὶ ταῦτα τὰ μέρη πάντα τῶν ὀρῶν Παραχο-
 άθραν καὶ τὰ μέχρι τῶν Κασπίων πυλῶν καὶ ἐπέκεινα
 ἔτι πρὸς ταῖς ἀνατολαῖς τὰ συνάπτοντα τῇ Ἀρίᾳ. τὰ
 μὲν δὴ πρόσβορρα ὄρη οὕτω καλοῦσι, τὰ δὲ νότια τὰ
 πέραν τοῦ Εὐφράτου τῆς Καππαδοκίας καὶ τῆς Κομ-
 15 μαγηνῆς πρὸς ἕω τείνοντα κατ' ἀρχὰς μὲν αὐτὸ τοῦτο
 καλεῖται Ταῦρος, διορίζων τὴν Σωφηνὴν καὶ τὴν ἄλ-
 λην Ἀρμενίαν ἀπὸ τῆς Μεσοποταμίας· τινὲς δὲ Γορ-
 δυαῖα ὄρη καλοῦσιν. ἐν δὲ τούτοις ἐστὶ καὶ τὸ Μάσιον,
 τὸ ὑπερκείμενον τῆς Νισίβιος ὄρος καὶ τῶν Τιγρανο-
 20 κέρτων. ἔπειτα ἐξαίρεται πλέον καὶ καλεῖται Νιφάτης·
 ἐνταῦθα δὲ πον καὶ τοῦ Τίγριος πηγὰ κατὰ τὸ νότιον
 τῆς ὄρεινῆς πλευρόν· εἰτ' ἀπὸ τοῦ Νιφάτου μᾶλλον
 ἔτι καὶ μᾶλλον ἢ ῥάχης ἐκτεινομένη τὸ Ζάργριον ὄρος
 ποιεῖ τὸ διορίζον τὴν Μηδίαν καὶ τὴν Βαβυλωνίαν·
 25 μετὰ δὲ τὸ Ζάργριον ἐκδέχεται ὑπὲρ μὲν τῆς Βαβυλω-
 νίας ἢ τε τῶν Ἑλυμαίων ὄρεινῇ καὶ ἢ τῶν Παραϊτακη-
 νῶν, ὑπὲρ δὲ τῆς Μηδίας ἢ τῶν Κοσσαίων· ἐν μέσῳ
 δ' ἐστὶν ἡ Μηδία καὶ ἡ Ἀρμενία, πολλὰ μὲν ὄρη περι-
 λαμβάνουσα πολλὰ δὲ ὀροπέδια, ὡσαύτως δὲ πεδία καὶ
 30 αὐλῶνας μεγάλους, συχνὰ δὲ καὶ ἔθνη τὰ περιοικοῦν-
 τα, μικρὰ ὄρεινὰ καὶ ληστρικά τὰ πλείω. οὕτω μὲν τοί-

νυν τίθεμεν ἐντὸς τοῦ Ταύρου τὴν τε Μηδίαν, ἣς εἰσι
καὶ αἱ Κάσπιοι πύλαι, καὶ τὴν Ἀρμενίαν.

- 5 Καθ' ἡμᾶς μὲν τοίνυν προσάρκτια ἂν εἴη τὰ ἔθνη
ταῦτα, ἐπειδὴ καὶ ἐντὸς τοῦ Ταύρου, Ἐρατοσθένης δὲ
πεπονημένος τὴν διαίρεσιν εἰς τὰ νότια μέρη καὶ τὰ 5
προσάρκτια καὶ τὰς ὑπ' αὐτοῦ λεγομένας σφραγίδας,
τὰς μὲν βορείους καλῶν τὰς δὲ νοτίους, ὅρια ἀποφαί-
νει τῶν κλιμάτων ἀμφοῖν τὰς Κάσπιους πύλας· εἰκό-
τως οὖν τὰ νοτιώτερα τῶν Κασπίων πυλῶν νότια ἂν
ἀποφαίνοι, ὧν ἐστὶ καὶ ἡ Μηδία καὶ ἡ Ἀρμενία, τὰ δὲ 10
βορειότερα πρόσβορρα, κατ' ἄλλην καὶ ἄλλην διάτα-
ξιν τούτου συμβαίνοντος. τάχα δὲ οὐκ ἐπέβαλε τούτῳ,
διότι ἔξω τοῦ Ταύρου πρὸς νότον οὐδέν ἐστὶν οὔτε τῆς
Ἀρμενίας μέρος οὔτε τῆς Μηδίας.

- 13 Ἡ δὲ Μηδία δίχα διήρηται· καλοῦσι δὲ τὴν μὲν 15
μεγάλην, ἣς μητρόπολις τὰ Ἐκβάτανα, μεγάλη πόλις
καὶ τὸ βασιλείον ἔχουσα τῆς Μήδων ἀρχῆς· διατελοῦσι
δὲ καὶ νῦν οἱ Παρθυαῖοι τούτῳ χρώμενοι βασιλεύω,
καὶ θερίζουσί γε ἐνταῦθα οἱ βασιλεῖς· ψυχρὰ γὰρ ἡ
Μηδία· τὸ δὲ χειμάδιόν ἐστὶν αὐτοῖς ἐν Σελευκείᾳ τῇ 20
ἐπὶ τῷ Τίγριδι πλησίον Βαβυλῶνος. ἡ δ' ἑτέρα μερίς
C.523 ἐστὶν ἡ Ἀτροπάτις Μηδία· τοῦνομα δ' ἔσχεν ἀπὸ τοῦ
ἡγεμόνος Ἀτροπάτου, ὃς ἐκώλυσε ὑπὸ τοῖς Μακεδόσι
γίνεσθαι καὶ ταύτην μέρος οὔσαν μεγάλης Μηδίας·
καὶ δὴ καὶ βασιλεὺς ἀναγορευθεὶς ἰδίᾳ συνέταξε καθ' 25
αὐτὴν τὴν χώραν ταύτην, καὶ ἡ διαδοχὴ σώζεται μέχρι
νῦν ἐξ ἐκείνου, πρὸς τε τοὺς Ἀρμενίων βασιλέας ποιη-
σαμένων ἐπιγαμίας τῶν ὕστερον καὶ Σύρων καὶ μετὰ
2 ταῦτα Παρθυαίων. κεῖται δὲ ἡ χώρα τῇ μὲν Ἀρμενίᾳ

9. post νοτιώτερα: πρὸς ἔω τείνοντα 29. post Ἀρμενίᾳ:
καὶ τῇ Ματιανῇ

πρὸς ἕω τῇ δὲ μεγάλη Μηδία πρὸς δύσιν, πρὸς ἄρκτον
 δ' ἀμφοτέραις· τοῖς δὲ περὶ τὸν μυχὸν τῆς Ὑρκανίας
 θαλάττης καὶ τῇ Ματιανῇ ἀπὸ νότου παράκειται. ἔστι
 δ' οὐ μικρὰ κατὰ τὴν δύναμιν, ὥς φησιν Ἀπολλωνί-
 5 δης, ἥ γε καὶ * κατὰ μυρίους ἱππέας δύναται παρέχε-
 σθαι, πεζῶν δὲ τέτταρας μυριάδας. λίμνην δ' ἔχει τὴν
 * Σπαῦταν, ἐν ἣ ἅλεις ἐπανθοῦντες πῆττονται· εἰς δὲ
 κνησμῶδεις καὶ ἐπαλγεῖς· ἔλαιον δὲ τοῦ πάθους ἄκος,
 ὕδωρ δὲ γλυκὺ τοῖς καπυρωθεῖσιν ἱματίοις, εἴ τις κατ'
 10 ἄγνοιαν βάψειεν εἰς αὐτὴν πλύσεως χάριν. ἔχουσι δ'
 ἰσχυροὺς γείτονας τοὺς Ἀρμενίους καὶ τοὺς Παρθυαί-
 οὺς, ὑφ' ὧν περικόπτονται πολλάκις· ἀντέχουσι δ'
 ὅμως καὶ ἀπολαμβάνουσι τὰ ἀφαιρεθέντα, καθάπερ
 τὴν Συμβάκην ἀπέλαβον παρὰ τῶν Ἀρμενίων ὑπὸ Ῥω-
 15 μαίοις γεγονότων, καὶ αὐτοὶ προσεληλύθασιν τῇ φιλίᾳ
 τῇ πρὸς Καίσαρα· θεραπεύουσι δ' ἅμα καὶ τοὺς Παρ-
 θυαίους.

Βασίλειον δ' αὐτῶν θερρινὸν μὲν ἐν πεδίῳ ἰδρυμέ- 3
 νον Γάξακα, [χειμερινὸν δὲ] ἐν φρουρίῳ ἐρυμνῷ ὄρεα,
 20 ὅπερ Ἀντώνιος ἐπολιόρησε κατὰ τὴν ἐπὶ Παρθυαίους
 στρατείαν. διέχει δὲ τοῦτο τοῦ Ἀράξου ποταμοῦ τοῦ
 ὀρίζοντος τὴν τε Ἀρμενίαν καὶ τὴν Ἀτροπατηνὴν στα-
 δίους δισχιλίους καὶ τετρακοσίους, ὥς φησιν ὁ Δέλλιος
 ὁ τοῦ Ἀντωνίου φίλος, συγγράψας τὴν ἐπὶ Παρθυαί-
 25 οὺς αὐτοῦ στρατείαν ἐν ἣ παρῆν καὶ αὐτὸς ἡγεμονίαν
 ἔχων. ἔστι δὲ τῆς χώρας ταύτης τὰ μὲν ἄλλα εὐδαίμονα
 χωρία, ἡ δὲ προσάρκτιος ὄρεινὴ καὶ τραχεῖα καὶ ψυχρά,
 Καδουσίων κατοικία τῶν ὀρεινῶν καὶ Ἀμάρδων καὶ
 Ταπύρων καὶ Κυρτίων καὶ ἄλλων τοιούτων, οἳ μετα-
 30 νάσται εἰς καὶ ληστρικοί. καὶ γὰρ ὁ Ζάγρος καὶ ὁ Νι-
 φάτης κατεσπαρμένα ἔχουσι τὰ ἔθνη ταῦτα, καὶ οἱ ἐν
 τῇ Περσίδι Κύρτιοι καὶ Μάρδοι (καὶ γὰρ οὕτω λέγον-
 22*

ται οἱ Ἀμαρδοὶ) καὶ οἱ ἐν τῇ Ἀρμενίᾳ μέχρι νῦν ὁμω-
νύμως προσαγορευόμενοι τῆς αὐτῆς εἰδὸν ἰδέαζ.

¶ Οἱ δ' οὖν Καδούσιοι πλήθει τῷ πεζῷ μικρὸν ἀπο-
λείπονται τῶν Ἀριανῶν, ἀκοντισταὶ δ' εἰσὶν ἄριστοι,
ἐν δὲ τοῖς τραχέσιν ἀνθ' ἱππέων πεζοὶ διαμάχονται. 5
C.524 Ἀντωνίῳ δὲ χαλεπὴν τὴν στρατείαν ἐποίησεν οὐχ ἡ τῆς
χωρᾶς φύσις, ἀλλ' ὁ τῶν ὁδῶν ἡγεμών, ὁ τῶν Ἀρμε-
νίων βασιλεὺς Ἀρταξάσδης, ὃν εἰκὴ ἐκεῖνος ἐπιβου-
λεύοντα αὐτῷ σύμβουλον ἐποιεῖτο καὶ κύριον τῆς περι-
τοῦ πολέμου γνώμης· ἐτιμωρήσατο μὲν οὖν αὐτόν, 10
ἀλλ' ὅψε', ἥνίκα πολλῶν αἷτιος κατέστη κακῶν Ῥωμαί-
οις καὶ αὐτὸς καὶ ἐκεῖνος, ὅστις τὴν ἀπὸ τοῦ Ζεύγμα-
τος ὁδὸν τοῦ κατὰ τὸν Εὐφράτην μέχρι τοῦ ἄψασθαι
τῆς Ἀτροπατηνῆς ὀκτακισχιλίων σταδίων ἐποίησε,
πλέον ἢ διπλασίαν τῆς εὐθείας, διὰ ὁρῶν καὶ ἀνοδιῶν 15
καὶ κυκλοπορίας.

5 Ἡ δὲ μεγάλη Μηθία τὸ μὲν παλαιὸν τῆς Ἀσίας
ἡγήσατο πάσης καταλύσασα τὴν τῶν Σύρων ἀρ-
χήν· ὕστερον δ' ὑπὸ Κύρου καὶ Περσῶν ἀφαιρεθεῖ-
σα τὴν τοσαύτην ἐξουσίαν ἐπὶ Ἀστυάγου διεφύλαττεν 20
ὅμως πολὺ τοῦ πατρίου ἀξιώματος, καὶ ἦν τὰ Ἐκβά-
τανα * χειμάδιον τοῖς Πέρσαις· ὁμοίως δὲ καὶ τοῖς ἐκεῖ-
νους καταλύσασι Μακεδόσι τοῖς τὴν Συρίαν ἔχουσι,
καὶ νῦν ἔτι τοῖς Παρθυαίων βασιλεῦσι τὴν αὐτὴν πα-
ρέχεται χρεῖαν τε καὶ ἀσφάλειαν. 25

6 Ὁρίζεται δ' ἀπὸ μὲν τῆς ἑω τῇ τε Παρθυαίᾳ καὶ
τοῖς Κοσσαίων ὄρεσι ληστρικῶν ἀνθρώπων, οἳ τοξότας
μυρίους καὶ τρισχιλίους παρέσχοντό ποτε Ἑλυμαίοις
συμμαχοῦντες ἐπὶ Σουσίους καὶ Βαβυλωνίους. Νέαρχος
δὲ φησι τεττάρων ὄντων ληστρικῶν ἔθνων, ὧν Μάρ- 30
δοι μὲν Πέρσαις προσεχεῖς ἦσαν, Οὔριοι δὲ καὶ Ἑλυ-
μαῖοι τοῦτοις τε καὶ Σουσίοις, Κοσσαῖοι δὲ Μηδοῖς, πάν-

τας μὲν φόρους πράττεσθαι τοὺς βασιλέας, Κοσσαίους
 δὲ καὶ δῶρα λαμβάνειν, ἥνίκα ὁ βασιλεὺς θερίσας ἐν
 Ἐκβατάνοις εἰς τὴν Βαβυλωνίαν καταβαίνοι· καταλῦ-
 σαι δ' αὐτῶν τὴν πολλὴν τόλμαν Ἀλέξανδρον ἐπιθέμε-
 5 νον χειμῶνος. τούτοις τε δὴ ἀφορίζεται πρὸς ξω καὶ ἐτι
 τοῖς Παραιτακηνοῖς, οἱ συνάπτουσι Πέρσαις ὀρεινοὶ
 καὶ αὐτοὶ καὶ ληστρικοί· ἀπὸ δὲ τῶν ἄρκτων τοῖς ὑπερ-
 οικοῦσι τῆς Ὑρκανίας θαλάττης Καδουσίοις καὶ τοῖς
 ἄλλοις, οὓς ἄρτι διήλθομεν· πρὸς νότον δὲ τῇ Ἀπολ-
 10 λωνιάτιδι, ἣν Σιτακηνὴν ἐκάλουν οἱ παλαιοί, καὶ τῷ
 Ζάγγω, καθ' ὃ ἡ Μασσαβατικὴ κεῖται τῆς Μηδίας
 οὔσα, οἱ δὲ τῆς Ἑλυμαίας φασί· πρὸς δύσιν δὲ τοῖς
 Ἀτροπατίοις καὶ τῶν Ἀρμενίων τισίν. εἰσὶ δὲ καὶ Ἑλ-
 ληνίδες πόλεις κτίσματα τῶν Μακεδόνων ἐν τῇ Μη-
 15 δίᾳ, ὧν Λαοδίκειά τε καὶ Ἀπάμεια καὶ ἡ πρὸς Ῥάγαις
 [Ἡράκλεια] καὶ αὐτὴ Ῥάγα, τὸ τοῦ Νικάντορος κτίσμα,
 ὃ ἐκεῖνος μὲν Εὐρωπὸν ὠνόμασε, Πάρθοι δὲ Ἀρσα-
 κίαν, νοτιωτέραν οὔσαν τῶν Κασπίων πυλῶν πεντα-
 κοσίοις πού σταδίοις, ὥς φησιν Ἀπολλόδωρος Ἀρτε-0.525
 20 μιτηνός.

Ἡ πολλὴ μὲν οὖν ὑψηλὴ ἐστὶ καὶ ψυχρά· τοιαῦτα 7
 δὲ καὶ τὰ ὑπερκείμενα τῶν Ἐκβατάνων ὄρη καὶ τὰ περὶ
 τὰς Ῥάγας καὶ τὰς Κασπίους πύλας καὶ καθόλου τὰ
 προσάρκτια μέρη τὰ ἐντεῦθεν μέχρι πρὸς τὴν Ματια-
 25 νὴν καὶ τὴν Ἀρμενίαν. ἡ δ' ὑπὸ ταῖς Κασπίοις πύλαις
 ἐν ταπεινοῖς ἐδάφεσι καὶ κοίλοις οὔσα εὐδαίμων σφό-
 δρα ἐστὶ καὶ πάμπορος πλὴν ἐλαίας· εἰ δὲ καὶ φύεται
 πού, ἀλιπῆς τέ ἐστὶ καὶ ξηρά· ἱππόβοτος δὲ καὶ αὕτη
 ἐστὶ διαφερόντως καὶ ἡ Ἀρμενία· καλεῖται δὲ τις καὶ
 30 λειμῶν ἱππόβοτος, ὃν καὶ διεξίασιν οἱ ἐκ τῆς Περσίδος
 καὶ Βαβυλῶνος εἰς Κασπίους πύλας ὁδεύοντες, ἐν ᾧ
 πέντε μυριάδας ἱππων θηλείων νέμεσθαι φασιν ἐπὶ

τῶν Περσῶν, εἶναι δὲ τὰς ἀγέλας ταύτας βασιλικάς. τοὺς δὲ Νησαίους ἵππους, οἷς ἐχρῶντο οἱ βασιλεῖς ἀρίστοις οὖσι καὶ μεγίστοις, οἱ μὲν ἐνθένδε λέγουσι τὸ γένος, οἱ δ' ἐξ Ἀρμενίας· ἰδιόμορφοι δέ εἰσιν, ὥσπερ καὶ οἱ Παρθικοὶ λεγόμενοι νῦν, παρὰ τοὺς Ἑλλαδικοὺς 5 καὶ τοὺς ἄλλους τοὺς παρ' ἡμῖν. καὶ τὴν βοτάνην δὲ τὴν μάλιστα τρέφουσιν τοὺς ἵππους ἀπὸ τοῦ πλεονάζειν ἐνταῦθα ἰδίως μηδικὴν καλοῦμεν. φέρει δὲ καὶ σίλφιον ἢ χῶρα, ἀφ' οὗ ὁ Μηδικὸς καλούμενος ὀπός, πολὺ λειπόμενος τοῦ Κυρηναικοῦ· ἔστι δ' ὅτε καὶ δια- 10 φέρων ἐκείνου, εἴτε παρὰ τὰς τῶν τόπων διαφορὰς εἴτε τοῦ φντοῦ κατ' εἶδος ἐξαλλάττοντος, εἴτε καὶ παρὰ τοὺς ὀπίζοντας καὶ σκευάζοντας ὥστε συμμένειν πρὸς τὴν ἀπόθεσιν καὶ τὴν χρεῖαν.

- 8 Τοιαύτη μὲν τις ἡ χῶρα· τὸ δὲ μέγεθος πάρισός 15 πῶς ἔστιν εἰς πλάτος καὶ μῆκος· δοκεῖ δὲ μέγιστον εἶναι μῆκος τῆς Μηδίας τὸ ἀπὸ τῆς τοῦ Ζάγρου ὑπερθέσεως, ἥπερ καλεῖται Μηδικὴ πύλη, εἰς Κασπίους πύλας διὰ τῆς Σιγριανῆς σταδίων τετρακισχιλίων ἑκατόν. τῷ δὲ μεγέθει καὶ τῇ δυνάμει τῆς χῶρας ὁμολογεῖ καὶ 20 ἡ περὶ τῶν φόρων ἱστορία· τῆς γὰρ Καππαδοκίας παρεχούσης τοῖς Πέρσαις κατ' ἐνιαυτὸν πρὸς τῷ ἀργυρικοῦ τέλει ἵππους χιλίους καὶ πεντακοσίους, ἡμιόνους δὲ διςχιλίους, προβάτων δὲ πέντε μυριάδας, διπλάσια σχεδόν τι τούτων ἐτέλουν οἱ Μῆδοι. 25

- 9 Ἐθῆ δὲ τὰ πολλὰ μὲν τὰ αὐτὰ τούτοις τε καὶ τοῖς Ἀρμενίοις διὰ τὸ καὶ τὴν χῶραν παραπλησίαν εἶναι. τοὺς μέντοι Μῆδους ἀρχηγέτας εἶναι φασι καὶ τούτοις καὶ ἔτι πρότερον Πέρσαις τοῖς ἔχουσιν αὐτοὺς καὶ δια- 30 δεξαμένοις τὴν τῆς Ἀσίας ἐξουσίαν. ἡ γὰρ νῦν λεγομένη Περσικὴ στολὴ καὶ ὁ τῆς τοξικῆς καὶ ἱππικῆς ζήλος καὶ ἡ περὶ τοὺς βασιλέας θεραπεία καὶ κόσμος καὶ

σεβασμὸς θεοπρεπὴς παρὰ τῶν ἀρχομένων εἰς τοὺς C.526
 Πέρσας παρὰ Μήδων ἀφίεται. καὶ ὅτι τοῦτ' ἀληθὲς ἐκ
 τῆς ἐσθῆτος μάλιστα δῆλον· τιάρα γάρ τις καὶ κίταρις
 καὶ πῖλος καὶ χειριδωτοὶ χιτῶνες καὶ ἀναξυρίδες ἐν μὲν
 5 τοῖς ψυχροῖς τόποις καὶ προσβόροισ ἐπιτήδειά ἐστι
 φορήματα, οἷοί εἰσιν οἱ Μηδικοί, ἐν δὲ τοῖς νοτίοις
 ἥκιστα· οἱ δὲ Πέρσαι τὴν πλείστην οἰκησιν ἐπὶ τῇ Ἐρυ-
 θρᾷ θαλάττῃ κέκτηνται, μεσημβρινώτεροι καὶ Βαβυ-
 λωνίων ὄντες καὶ Σουσίων· μετὰ δὲ τὴν κατάλυσιν
 10 τὴν τῶν Μήδων προσεκτήσαντό τινα καὶ τῶν προσ-
 απτομένων Μηδία. ἀλλ' οὕτως ἐφάνη σεμνὰ καὶ τοῦ
 βασιλικοῦ προσχήματος οἰκεία τὰ ἔθνη τοῖς νικήσασιν τὰ
 τῶν νικηθέντων, ὥστ' ἀντὶ γυμνητῶν καὶ ψιλῶν θη-
 λυστολεῖν ὑπέμειναν, καὶ κατηρεφεῖς εἶναι τοῖς σκε-
 15 πάσμασι.

Τινὲς δὲ Μήδειαν καταδείξαι τὴν ἐσθῆτα ταύτην 10
 φασὶ δυναστεύσασαν ἐν τοῖς τόποις, καθάπερ καὶ Ἰάσο-
 να, καὶ ἐπικρυπτομένην τὴν ὄψιν ὅτε ἀντὶ τοῦ βασιλέως
 ἐξίοι· τοῦ μὲν [οὔν] Ἰάσονος ὑπομνήματα εἶναι τὰ Ἰα-
 20 σόνια ἡρῶα τιμώμενα σφόδρα ὑπὸ τῶν βαρβάρων (ἐστι
 δὲ καὶ ὄρος μέγα ὑπὲρ τῶν Κασπίων πυλῶν ἐν ἀριστε-
 ρᾷ καλούμενον Ἰασόνιον), τῆς δὲ Μηδείας τὴν ἐσθῆτα
 καὶ τοῦνομα τῆς χώρας. λέγεται δὲ καὶ Μῆδος υἱὸς αὐ-
 τῆς διαδέξασθαι τὴν ἀρχὴν καὶ τὴν χώραν ἐπώνυμον
 25 αὐτοῦ καταλιπεῖν. ὁμολογεῖ δὲ τούτοις καὶ τὰ κατὰ
 τὴν Ἀρμενίαν Ἰασόνια καὶ τὸ τῆς χώρας ὄνομα καὶ
 ἄλλα πλείω περὶ ὧν ἐροῦμεν.

Καὶ τοῦτο δὲ Μηδικὸν τὸ βασιλεῖα αἰρεῖσθαι τὸν 11
 ἀνδρειότατον, ἀλλ' οὐ πᾶσιν ἀλλὰ τοῖς ὀρεοῖς· μᾶλ-
 30 λον δὲ τὸ τοῖς βασιλεῦσιν πολλὰς εἶναι γυναῖκας· τοῖς

δ' ὀρείοις τῶν Μήδων καὶ πᾶσιν ἔθους τοῦτο, ἐλάττους δὲ τῶν πέντε οὐκ ἔξεστιν· ὥς δ' αὐτως τὰς γυναικάς φασιν ἐν καλῷ τίθεσθαι ὅτι πλείστας * νέμειν ἄνδρας, τῶν πέντε δὲ ἐλάττους συμφορὰν ἡγεῖσθαι. τῆς δ' ἄλλης Μηδίας εὐδαιμονούσης τελέως λυπρὰ ἔστιν ἢ προσάρκτιος ὀρεινῇ· σιτοῦνται γοῦν ἀπὸ ἀκροδρύων, ἐκ τε μῆλων ξηρῶν κοπέντων ποιοῦνται μάζας, ἀπὸ δ' ἀμυγδάλων φωχθέντων ἄρτους, ἐκ δὲ ῥιζῶν τινων οἶνον ἐκθλίβουσι, κρέασι δὲ χρῶνται θηρείοις, ἡμερὰ δὲ οὐ τρέφουσι θρέμματα. τοσαῦτα καὶ 10 περὶ Μήδων φασιν· περὶ δὲ τῶν νομίμων κοινῇ τῆς συμπάσης Μηδίας, ἐπειδὴ ταῦτά τοις Περσικοῖς γεγένηται διὰ τὴν τῶν Περσῶν ἐπικράτειαν, ἐν τῷ περὶ ἐκείνων λόγῳ φήσομεν.

14 Τῆς δ' Ἀρμενίας τὰ μὲν νότια προβέβληται τὸν 15 Ταῦρον, διείργοντα αὐτὴν ἀφ' ὅλης τῆς μεταξὺ Εὐφράτου καὶ τοῦ Τίγριος, ἣν Μεσοποταμίαν καλοῦσι, τὰ δὲ ἑωθινὰ τῇ Μηδίᾳ συνάπτει τῇ μεγάλῃ καὶ τῇ Ἀτροπατηνῇ· προσάρκτια δὲ ἔστι τὰ ὑπερκειμένα τῆς Κασπίας θαλάττης ὅρη τὰ τοῦ Παραχοάθρα καὶ Ἀλβα- 20 νοὶ καὶ Ἰβηρες καὶ ὁ Καύκασος ἐγκυκλούμενος τὰ ἔθνη ταῦτα καὶ συνάπτων τοῖς Ἀρμενίοις, συνάπτων δὲ καὶ τοῖς Μοσχικοῖς ὄρεσι καὶ Κολχικοῖς μέχρι τῶν καλουμένων Τιβαρανῶν· ἀπὸ δὲ τῆς ἐσπέρας ταῦτά ἐστι τὰ ἔθνη καὶ ὁ Παρνάδρης καὶ ὁ Σκυθίσσης μέχρι τῆς μικρᾶς 25 Ἀρμενίας καὶ τῆς τοῦ Εὐφράτου ποταμίας, ἣ διείργει τὴν Ἀρμενίαν ἀπὸ τῆς Καππαδοκίας καὶ τῆς Κομμαγενῆς.

2 Ὁ γὰρ Εὐφράτης ἀπὸ τῆς βορείου πλευρᾶς τοῦ Ταύρου τὰς ἀρχὰς ἔχων τὸ μὲν πρῶτον δεῖ πρὸς δύσιν 30 διὰ τῆς Ἀρμενίας, εἴτ' ἐπιστρέφει πρὸς νότον καὶ διακόπτει τὸν Ταῦρον μεταξὺ τῶν Ἀρμενίων τε καὶ Καπ-

παδόκων καὶ Κομμαγηνῶν, ἐκπεσὼν δ' ἔξω καὶ γε-
 νόμενος κατὰ τὴν Συρίαν ἐπιστρέφει πρὸς χειμερι-
 νὰς ἀνατολὰς μέχρι Βαβυλῶνος καὶ ποιεῖ τὴν Μεσοπο-
 ταμίαν πρὸς τὸν Τίγρι· ἀμφοτέρωθεν δὲ τελευτῶσιν εἰς
 5 τὸν Περσικὸν κόλπον. τὰ μὲν δὴ κύκλῳ τοιαῦτα, ὁρει-
 νὰ σχεδὸν τι πάντα καὶ τραχέα πλὴν τῶν πρὸς τὴν
 Μηδίαν κεκλιμένων ὀλίγων. πάλιν δὲ τοῦ λεχθέντος
 Ταύρου τὴν ἀρχὴν λαμβάνοντος ἀπὸ τῆς περαιῆς τῶν
 Κομμαγηνῶν καὶ τῶν Μελιτηνῶν ἣν ὁ Εὐφράτης ποιεῖ,
 10 Μάσιον μὲν ἐστὶ τὸ ὑπερκείμενον ὄρος τῶν ἐν τῇ Με-
 σοποταμίᾳ Μυργδόνων ἐκ νότου, ἐν οἷς ἡ Νίσιβις ἐστίν·
 ἐκ δὲ τῶν πρὸς ἄρκτον μερῶν ἡ Σωφηνὴ κεῖται μεταξὺ
 τοῦ τε Μασίου καὶ τοῦ Ἀντιταύρου. οὗτος δ' ἀπὸ τοῦ
 Εὐφράτου καὶ τοῦ Ταύρου τὴν ἀρχὴν λαβὼν τελευτᾷ
 15 πρὸς τὰ ἑῷα τῆς Ἀρμενίας ἀπολαμβάνων μέσῃ τὴν
 Σωφηνήν, ἐκ θατέρου δὲ μέρους ἔχων τὴν Ἀχιλίσσην
 μεταξὺ ἰδρυμένην τοῦ Ταύρου τε καὶ τῆς τοῦ Εὐφρά-
 του ποταμίας πρὶν ἢ κάμπτειν αὐτὴν ἐπὶ νότον. βα-
 σίλειον δὲ τῆς Σωφηνῆς Καρκαθιόκερτα. τοῦ δὲ Μα-
 20 σίου ὑπέρεκειται πρὸς ἑῷ πολὺ κατὰ τὴν Γορδυνήν ὁ
 Νιφάτης, εἶδ' ὁ Ἄβος, ἀφ' οὗ καὶ ὁ Εὐφράτης ρεῖ καὶ
 ὁ Ἀράξης, ὁ μὲν πρὸς δύσιν ὁ δὲ πρὸς ἀνατολὰς· εἶδ'
 ὁ Νίβαρος μέχρι τῆς Μηδίας παρατείνει.

Ὁ μὲν οὖν Εὐφράτης εἴρηται ὃν τρόπον ρεῖ· ὁ δὲ 3
 25 Ἀράξης πρὸς τὰς ἀνατολὰς ἐνεχθεὶς μέχρι τῆς Ἀτρο-
 πατηνῆς κάμπτει πρὸς δύσιν καὶ πρὸς ἄρκτους καὶ πα-
 ραρρεῖ τὰ Ἄζαρα πρῶτον, εἴτ' Ἀρτάξατα, πόλεις Ἀρ-
 μενίων· ἔπειτα διὰ τοῦ Ἀραξηνοῦ πεδίου πρὸς τὸ Κά-
 σπιον ἐκδίδωσι πέλαγος.

30 Ἐν αὐτῇ δὲ τῇ Ἀρμενίᾳ πολλὰ μὲν ὄρη πολλὰ δὲ ^{C.528}
 ὄροπέδια, ἐν οἷς οὐδ' ἄμπελος φύεται ῥαδίως, πολλοὶ ⁴
 δ' αὐλῶνες οἱ μὲν μέσως οἱ δὲ καὶ σφόδρα εὐδαίμονες

καθάπερ τὸ Ἀραξηνὸν πεδίον, δι' οὗ ὁ Ἀράξης ποτα-
 μὸς ῥέων εἰς τὰ ἄκρα τῆς Ἀλβανίας καὶ τὴν Κασπίαν
 ἐκπίπτει θάλατταν, καὶ μετὰ ταῦτα ἡ Σακασηνὴ καὶ
 αὐτὴ τῇ Ἀλβανίᾳ πρόσχωρος καὶ τῷ Κύρῳ ποταμῷ,
 εἰδ' ἡ Γωγαρηνὴ· πᾶσα γὰρ ἡ χώρα αὕτη καρποῖς τε 5
 καὶ τοῖς ἡμέροις δένδροις καὶ τοῖς αἰιθαλέσι πληθύνει,
 φέρει δὲ καὶ ἐλαίαν. ἔστι δὲ καὶ ἡ * Φανηνὴ τῆς Ἀρμε-
 νίας ἐπαρχία καὶ ἡ Κωμισσηνὴ καὶ Ὀρχιστηνὴ πλείστην
 ἱππείαν παρέχουσα· ἡ δὲ Χορξηνὴ καὶ Καμβυσηνὴ
 προσβορρόταται εἰσι καὶ νιφόβολοι μάλιστα, συνά- 10
 πτουςαι τοῖς Κανκασίοις ὄρεσι καὶ τῇ Ἰβηρίᾳ καὶ τῇ
 Κολχίδι· ὅπου φασὶ κατὰ τὰς ὑπερβολὰς τῶν ὀρῶν
 πολλάκις καὶ συνοδίας ὅλας * τῶν ὀρῶν ἐν τῇ χιόνι κα-
 ταπίνεσθαι νιφετῶν γινομένων ἐπὶ πλέον· ἔχειν δὲ
 καὶ βακτηρίας πρὸς τοὺς τοιοῦτους κινδύνους, [ἀς] πα- 15
 ρεξαίροντας εἰς τὴν ἐπιφάνειαν ἀναπνοῆς τε χάριν καὶ
 τοῦ διαμηνύειν τοῖς ἐπιούσιν ὥστε βοηθείας τυγχά-
 νειν, ἀνορύττεσθαι καὶ σώζεσθαι. ἐν δὲ τῇ χιόνι βώ-
 λους πῆγνυσθαι φασὶ κίλλας περιεχούσας χρηστὸν
 ὕδωρ ὡς ἐν χιτῶνι, καὶ ξῶα δὲ ἐν αὐτῇ γενναῖσθαι· 20
 καλεῖ δὲ σκώληκας Ἀπολλωνίδης, Θεοφάνης δὲ θρι-
 πας· καὶ τούτοις ἀπολαμβάνεσθαι χρηστὸν ὕδωρ, πε-
 ρισχισθέντων δὲ τῶν χιτῶνων πίνεσθαι· τὴν δὲ γένεσιν
 τῶν ξῶων τοιαύτην εἰκάξουσιν οἷαν τὴν τῶν κωνώπων
 ἐκ τῆς ἐν τοῖς μετάλλοις φλογὸς καὶ τοῦ φεψάλου. 25

5 Ἰστοροῦσι δὲ τὴν Ἀρμενίαν μικρὰν πρότερον οὗ-
 σαν αὐξηθῆναι διὰ τῶν περὶ Ἀρταξίαν καὶ Ζαριάδριν,
 οἳ πρότερον μὲν ἦσαν Ἀντιόχου τοῦ μεγάλου στρατη-
 γοί, βασιλεύσαντες δ' ὕστερον μετὰ τὴν ἐκείνου ἡτ-
 ταν ὁ μὲν τῆς Σωφηνῆς καὶ τῆς * Ἀκισσηνῆς καὶ Ὀδο- 30
 μαντίδος καὶ ἄλλων τινῶν ὁ δὲ τῆς περὶ Ἀρτάξατα,
 συνηύξησαν ἐκ τῶν περικειμένων ἐθνῶν ἀποτεμόμενοι

μέρη, ἐκ Μήδων μὲν τήν τε Κασπιανήν καὶ Φανν-
τιν καὶ Βασοροπέδαν, Ἰβήρων δὲ τήν τε παρῳρείαν τοῦ
Παρνάδρου καὶ τήν Χορζηνήν καὶ Γωγαρηνήν, πέραν
οὖσαν τοῦ Κύρου, Χαλύβων δὲ καὶ Μοσυνοίκων Κα-
5 ρηνίτιν καὶ Ξερξήνην, ἃ τῇ μικρᾷ Ἀρμενίᾳ ἐστὶν ὁμοῖα
ἢ καὶ μέρη αὐτῆς ἐστὶ, Καταόνων δὲ Ἀκιλισηνήν καὶ
τὴν περὶ τὸν Ἀντίταυρον, Σύρων δὲ Ταρωνίτιν, ὥστε
πάντας ὁμογλώττους εἶναι.

Πόλεις δ' εἰσὶν τῆς Ἀρμενίας Ἀρτάξατά τε (ἦν 6
10 καὶ Ἀρταξιάσατα καλοῦσιν, Ἀννίβα κτίσαντος Ἀρταξία
τῷ βασιλεῖ) καὶ Ἀρξάτα, ἀμφοτέραι ἐπὶ τῷ Ἀράξῃ, ἢ 0.529
μὲν Ἀρξάτα πρὸς τοῖς ὄροις τῆς Ἀτροπατίας, ἢ δὲ Ἀρ-
τάξατα πρὸς τῷ Ἀραξηνῷ πεδίῳ συμφωκισμένη καλῶς
καὶ βασίλειον οὖσα τῆς χώρας. κεῖται δ' ἐπὶ χειρορουσι-
15 ἀζοντος ἀγκῶνος τὸ τεῖχος [ἔχουσα] κύκλῳ προβεβλη-
μένον τὸν ποταμὸν πλὴν τοῦ ἰσθμοῦ, τὸν ἰσθμὸν δ' ἔχει
τάφρος καὶ χάρακι κεκλεισμένον. οὐ πολὺ δ' ἄπωθεν
τῆς πόλεως ἐστὶ τὰ Τιγράνου καὶ Ἀρταξιάσδου γαζοφυ-
λάκια, φρούρια ἐρυμνά, Βάβυρσά τε καὶ Ὀλανή· ἦν δὲ
20 καὶ ἄλλα ἐπὶ τῷ Εὐφράτῃ. Ἀρτάγειρα δὲ ἀπέστησε μὲν
Ἄδων ὁ φρούραρχος, ἐξεῖλον δ' οἱ Καίσαρος στρατηγοὶ
πολιορκήσαντες πολὺν χρόνον, καὶ τὰ τεῖχη περιεῖλον.

Ποταμοὶ δὲ πλείους μὲν εἰσὶν ἐν τῇ χώρᾳ, γνωρι- 7
μώτατοι δὲ Φᾶσις μὲν καὶ Λύκος εἰς τὴν Ποντικὴν ἐκ-
25 πίπτοντες θάλατταν (Ἐρατοσθένης δ' ἀντὶ τοῦ Λύκου
τίθῃσι Θερμάδοντα οὐκ εὖ), εἰς δὲ τὴν Κασπίαν Κῦ-
ρος καὶ Ἀράξης, εἰς δὲ τὴν Ἐρυθρὰν ὃ τε Εὐφράτης
καὶ ὁ Τίγρις.

Εἰσὶ δὲ καὶ λίμναι κατὰ τὴν Ἀρμενίαν μεγάλαι, 8
30 μίᾳ μὲν ἡ Μαντιανή, Κυανῇ ἐρμηνευθεῖσα, μεγίστη,
ὥς φασι, μετὰ τὴν Μαιῶτιν, ἁλμυροῦ ὕδατος, διήκουσα
μέχρι τῆς Ἀτροπατίας, ἔχουσα καὶ ἄλοπῆγια· ἢ δὲ Ἀρ-

σηνή, ἣν καὶ *Θωπίτιν* καλοῦσιν· ἔστι δὲ νιτρῆτις, τὰς δ' ἐσθῆτας φήττει καὶ διαξαίνει· διὰ δὲ τοῦτο καὶ ἄπο-
τόν ἐστι τὸ ὕδωρ. φέρεται δὲ δι' αὐτῆς ὁ *Τίγρις* ἀπο-
τῆς κατὰ τὸν *Νιφάτην* ὀρεινῆς ὀρηθθεὶς, ἄμικτον φυ-
λάττων τὸ ρεῦμα διὰ τὴν ὀξύτητα, ἀφ' οὗ καὶ τοῦνομα, 5
Μήδων τίγριν καλοῦντων τὸ τόξευμα· καὶ οὗτος μὲν
ἔχει πολυειδεῖς ἰχθῦς, οἱ δὲ λιμναῖοι ἐνὸς εἶδους εἰσί·
κατὰ δὲ τὸν μυχὸν τῆς λίμνης εἰς βάρανθρον ἐμπεσὼν
ὁ ποταμὸς καὶ πολὺν τόπον ἐνεχθεὶς ὑπὸ γῆς ἀνατέλ-
λει κατὰ τὴν *Χαλωνίτιν*· ἐκεῖθεν δ' ἤδη πρὸς τὴν 10
᾽Ωπιν καὶ τὸ τῆς *Σεμιράμιδος* καλούμενον διατείχισμα
ἐκεῖνός τε καταφέρεται τοὺς *Γορδυαίους* ἐν δεξιᾷ
ἄφεις καὶ τὴν *Μεσοποταμίαν* ὅλην, καὶ ὁ *Εὐφράτης*
τοῦναντίον ἐν ἀριστερᾷ ἔχων τὴν αὐτὴν χώραν· πλη-
σιάσαντες δὲ ἀλλήλοις καὶ ποιήσαντες τὴν *Μεσοποτα*· 15
μίαν ὁ μὲν διὰ *Σελευκείας* φέρεται πρὸς τὸν *Περσικὸν*
κόλπον, ὁ δὲ διὰ *Βαβυλῶνος*, καθάπερ εἴρηται που ἐν
τοῖς πρὸς *Ἑρατοσθένην* καὶ *Ἰππαρχον* λόγοις.

9 *Μέταλλα* δ' ἐν μὲν τῇ *Συσπιρίτιδι* ἐστὶ χρυσοῦ
κατὰ τὰ *Κάβαλλα*, ἐφ' ἃ *Μένωνα* ἐπεμψεν *Ἀλέξανδρος* 20
μετὰ στρατιωτῶν, ἀπήγχθη δ' ὑπὸ τῶν ἐγχωρίων· καὶ
ἄλλα δ' ἐστὶ μέταλλα, καὶ δὴ τῆς σάνδικος καλουμένης,
ἣν δὴ καὶ *Ἀρμένιον* καλοῦσι χρῶμα, ὅμοιον κάλῃ·
οὕτω δ' ἐστὶν ἱπποβότος σφόδρα ἡ χώρα καὶ οὐχ ἥτ-
C. 530 τον τῆς *Μηδίας*, ὥστε οἱ *Νησαῖοι* ἵπποι καὶ ἐνταῦθα 25
γίνονται, οἷσπερ οἱ *Περσῶν* βασιλεῖς ἐχρῶντο, καὶ ὁ
σατραπῆς τῆς *Ἀρμενίας* τῷ *Πέρσῃ* κατ' ἔτος δισμυρί-
ους πάλους τοῖς * *Μιθρακίνοις* ἐπεμπευ. *Ἀρταξά-*
σδης δὲ *Ἀντωνίῳ* χωρὶς τῆς ἄλλης ἱππέας αὐτὴν τὴν
κατάφρακτον ἐξακισχιλίαν ἵππον ἐκτάξας ἐπέδειξεν, 30
ἥνικα εἰς τὴν *Μηδίαν* ἐνέβαλε σὺν αὐτῷ. ταύτης δὲ
τῆς ἱππέας οὐ *Μῆδοι* μόνοι καὶ *Ἀρμένιοι* ζηλωταί

γερόνασιν, ἀλλὰ καὶ Ἀλβανοί· καὶ γὰρ ἐκεῖνοι κατα-
φράκτοις χρῶνται.

Τοῦ δὲ πλούτου καὶ τῆς δυνάμεως τῆς χώρας ση- 10
μεῖον οὐ μικρὸν ὅτι Πομπηίου Τιγράνη τῷ πατρὶ τῷ
5 Ἀρταξάσδου τάλαντα ἐπιγράψαντος ἑξακισχίλια ἄρ-
γυρίου, διένειμεν αὐτίκα ταῖς δυνάμεσι τῶν Ῥωμαίων,
στρατιώτῃ μὲν κατ' ἄνδρα πεντήκοντα δραχμὰς ἑκα-
τοντάρχῃ δὲ χιλίας ἑκπάρχῃ δὲ καὶ χιλιάρχῃ τάλαντον.

Μέγεθος δὲ τῆς χώρας Θεοφάνης ἀποδίδωσιν εὐ- 11
10 ρος μὲν σχοίνων ἑκατὸν μῆκος δὲ διπλάσιον, τιθεὶς τὴν
σχοῖνον τετταράκοντα σταδίων· πρὸς ὑπερβολὴν δ'
εἰρηκεν· ἐγγυτέρω δ' ἐστὶ τῆς ἀληθείας μῆκος μὲν θί-
σθαι τὸ ὑπ' ἐκείνου λεχθὲν [εὐρος], εὐρος δὲ τὸ ἥμισυ
ἢ μικρῷ πλεον. ἢ μὲν δὴ φύσις τῆς Ἀρμενίας καὶ δύ-
15 ναμὶς τοιαύτη.

Ἀρχαιολογία δὲ τίς ἐστὶ περὶ τοῦ ἔθνους τοῦδε 12
τοιαύτη· Ἀρμενος ἐξ Ἀρμενίου πόλεως Θετταλικῆς,
ἢ κεῖται μεταξὺ Φερῶν καὶ Λαρίσης ἐπὶ τῇ Βοίβῃ, κα-
θάπερ εἰρηται, συνεστράτευσεν Ἰάσονι εἰς τὴν Ἀρμε-
20 νίαν· τούτου φασὶν ἐπώνυμον τὴν Ἀρμενίαν οἱ περὶ
Κυρσίλον τὸν Φαρσάλιον καὶ Μήδιον τὸν Λαρισαῖον,
ἄνδρες συνεστρατευκότες Ἀλεξάνδρῳ· τῶν δὲ μετὰ
τοῦ Ἀρμένου τοὺς μὲν τὴν Ἀκισσηνὴν οἰκῆσαι τὴν
ὑπὸ τοῖς Σωφηνοῖς πρότερον οὖσαν, τοὺς δὲ ἐν τῇ Συ-
25 σπιρίτιδι ἕως τῆς Καλαχηνῆς καὶ τῆς Ἀδιαβηνῆς ἕξω
τῶν Ἀρμενικῶν ὄρων. καὶ τὴν ἐσθῆτα δὲ τὴν Ἀρμε-
νικὴν Θετταλικὴν φασιν, οἷον τοὺς βαθεῖς χιτῶνας
οὓς καλοῦσιν Θετταλικοὺς ἐν ταῖς τραγωδίαις, καὶ ζων-
νύουσι περὶ τὰ στήθη καὶ ἐφαπτίδας, ὥς καὶ τῶν τρα-
30 γωδῶν μιμησαμένων τοὺς Θετταλούς· ἔδει μὲν γὰρ

αὐτοῖς ἐπιθέτου κόσμου τοιούτου τινός, οἱ δὲ Θετταλοὶ
 μάλιστα βαθυστολοῦντες, ὥς εἰκός, διὰ τὸ πάντων εἶ-
 ναι Ἑλλήνων βορειοτάτους καὶ ψυχροτάτους νέμεσθαι
 τόπους ἐπιτηδειοτάτην παρέσχοντο μέμησιν τῇ τῶν
 ὑποκριτῶν διασκευῇ ἐν τοῖς ἀναπλάσμασιν· καὶ τὸν 5
 C.531 τῆς ἱπικῆς ξηλὸν φασιν εἶναι Θετταλικὸν καὶ τούτοις
 ὁμοίως καὶ Μήδοις. τὴν δὲ Ἰάσονος στρατείαν καὶ τὰ
 Ἰασόνια μαρτυρεῖ, ὃν τινα οἱ δυνάσται κατεσκεύασαν
 παραπλησίως ὥσπερ τὸν ἐν Ἀβδήροις νεῶν τοῦ Ἰάσο-
 νος Παρμενίων. 10

13. Τὸν δὲ Ἀράξην κληθῆναι νομίζουσι κατὰ τὴν
 ὁμοιότητα τὴν πρὸς τὸν Πηνειὸν ὑπὸ τῶν περὶ τὸν
 Ἀρμενον ὁμωνύμως ἐκείνῳ· καλεῖσθαι γὰρ Ἀράξην
 κἀκεῖνον διὰ τὸ ἀπαράξαι τὴν Ὅσσαν ἀπὸ τοῦ Ὀλύμ-
 που ῥήξαντα τὰ Τέμπε· καὶ τὸν ἐν Ἀρμενίᾳ δὲ ἀπὸ 15
 τῶν ὀρῶν καταβάντα πλατύνεσθαι φασὶ τὸ παλαιόν,
 καὶ πελαγίζειν ἐν τοῖς ὑποκειμένοις πεδίοις οὐκ ἔχοντα
 διέξοδον, Ἰάσονα δὲ μιμησάμενον τὰ Τέμπε ποιῆσαι
 τὴν διασφάγα, δι' ἧς καταράττει νυνὶ τὸ ὕδωρ εἰς τὴν
 Κασπίαν θάλατταν· ἐκ δὲ τούτου γυμνωθῆναι τὸ 20
 Ἀράξηνδον πεδίον, δι' οὗ τυγχάνει ῥέων ἐπὶ τὸν κα-
 ταράκτην ὁ ποταμός. οὗτος μὲν οὖν ὁ λόγος περὶ τοῦ
 Ἀράξου ποταμοῦ λεγόμενος ἔχει τι πιθανόν, ὃ δὲ Ἡρο-
 δότειος οὐ πάνυ· φησὶ γὰρ ἐκ Ματινηῶν αὐτὸν ῥέον-
 τα εἰς τετταράκοντα ποταμοὺς σχίζεσθαι, μερίζειν δὲ 25
 Σκύθας καὶ Βακτριανούς· καὶ Καλλισθένης δὲ ἡκο-
 λούθησεν αὐτῷ.

14. Λέγονται δὲ καὶ τῶν Αἰνιάνων τινὲς οἱ μὲν τὴν
 Οὐιτίαν οἰκῆσαι οἱ δ' ὑπερθε τῶν Ἀρμενίων ὑπὲρ
 τὸν Ἄβον καὶ τὸν Νίβαρον (μέρη δ' ἐστὶ τοῦ Ταύρου 30
 ταῦτα), ὃν ὁ Ἄβος ἐγγύς ἐστι τῆς ὁδοῦ τῆς εἰς Ἐκβάτα-
 να φερούσης παρὰ τὸν τῆς Βάριδος νεῶν. φασὶ δὲ καὶ

Θρακῶν τινας, τοὺς προσαγορευομένους Σαραπάρας οἷον κεφαλοτόμους, οἰκῆσαι ὑπὲρ τῆς Ἀρμενίας πλησίον Γουρανίων καὶ Μήδων, θηριώδεις ἀνθρώπους καὶ ἀπειθεῖς ὀρεινούς περισκυθιστάς τε καὶ ἀποκε-
 5 φαλιστάς· τοῦτο γὰρ δηλοῦσιν οἱ Σαραπάραι. εἰρηται δὲ καὶ τὰ περὶ τῆς Μηδείας ἐν τοῖς Μηδικοῖς· ὥστ' ἐκ πάντων τούτων εἰκάξουσι καὶ τοὺς Μήδους καὶ Ἀρμενίους συγγενεῖς πως τοῖς Θετταλοῖς εἶναι καὶ τοῖς ἀπὸ Ἰάσονος καὶ Μηδείας.

- 10 Ὁ μὲν δὴ παλαιὸς λόγος οὗτος, ὁ δὲ τούτου νεώ- 15
 τερος καὶ κατὰ Πέρσας εἰς τὸ ἐφεξῆς μέχρι εἰς ἡμᾶς ὥς ἐν κεφαλαίῳ πρόποι ἂν μέχρι τοσούτου λεχθεὶς, ὅτι κατέειχον τὴν Ἀρμενίαν Πέρσαι καὶ Μακεδόνες, μετὰ ταῦτα οἱ τὴν Συρίαν ἔχοντες καὶ τὴν Μηδίαν· τελευ-
 15 ταῖος δ' ὑπῆρξεν Ὀρόντης ἀπόγονος Ὑδάρνου τῶν ἐπὶ Περσῶν ἐνός· εἶθ' ὑπὸ τῶν Ἀντιόχου τοῦ μεγάλου στρατηγῶν τοῦ πρὸς Ῥωμαίους πολεμήσαντος διηγερέθη δίχα, Ἀρταξίου τε καὶ Ζαριάδριος· καὶ ἦρχον οὗτοι τοῦ βασιλέως ἐπιτρέψαντος· ἡττηθέντος δ' ἐκεί-
 20 νου προσθέμενοι Ῥωμαίοις καθ' αὐτοὺς ἐτάττοντο βασιλεῖς προσαγορευθέντες. τοῦ μὲν οὖν Ἀρταξίου 532
 Τιγράνης ἦν ἀπόγονος καὶ εἶχε τὴν ἰδίως λεγομένην Ἀρμενίαν (αὕτη δ' ἦν προσεχὴς τῇ τε Μηδίᾳ καὶ Ἀλβανοῖς καὶ Ἰβηρσι μέχρι Κολχίδος καὶ τῆς ἐπὶ τῷ Εὐ-
 25 ξείνῳ Καππαδοκίας), τοῦ δὲ Ζαριάδριος ὁ Σωφηνὸς Ἀρτάνης ἔχων τὰ νότια μέρη καὶ τούτων τὰ πρὸς δύ-
 σιν μᾶλλον. κατελύθη δ' οὗτος ὑπὸ τοῦ Τιγράνου, καὶ πάντων κατέστη κύριος ἐκεῖνος. τύχαις δ' ἐχρή-
 30 ρὰ Πάρθοις, ἔπειτα δι' ἐκείνων ἔτυχε καθόδου, λαβόντων μισθὸν ἑβδομήκοντα αὐλῶνας τῆς Ἀρμενίας· αὐξηθεὶς δὲ καὶ ταῦτα ἀπέλαβε τὰ χωρία καὶ τὴν ἐκεί-

νων ἐπόρθησε τήν τε περὶ Νίνον καὶ τήν περὶ Ἀρβηλα ὑπηκόους δ' ἔσχε καὶ τὸν Ἀτροπατηνὸν καὶ τὸν Γορδουαῖον, μεθ' ὧν καὶ τήν λοιπὴν Μεσοποταμίαν, ἐτι δὲ τήν Συρίαν αὐτὴν καὶ Φοινίκην διαβάς τὸν Εὐφράτην ἀνὰ κράτος εἶλεν. ἐπὶ τοσοῦτον δ' ἔξαρθεις 5 καὶ πόλιν ἔκτισε πλησίον τῆς * Ἰβηρίας μεταξὺ ταύτης τε καὶ τοῦ κατὰ τὸν Εὐφράτην Ζεύγματος, ἣν ὠνόμασε Τυγρανόκερτα, ἐκ δώδεκα ἐρημωθεῖσων ὑπ' αὐτοῦ πόλεων Ἑλληνίδων ἀνθρώπους συναγαγών. ἔφθη δ' ἐπελθὼν Λεύκολλος ὁ τῷ Μιθριδάτῃ πολεμήσας 10 καὶ τοὺς μὲν οἰκήτορας εἰς τὴν οἰκίαν ἐκάστου ἀπέλυσε, τὸ δὲ κτίσμα ἡμιτελὲς ἐτι ὃν κατέσπασε προσβαλὼν καὶ μικρὰν κώμην κατέλιπεν, ἐξήλασε δὲ καὶ τῆς Συρίας αὐτὸν καὶ τῆς Φοινίκης. διαδεξάμενος δ' Ἀρτακασίδης ἐκείνους τέως μὲν ἡντύχει φίλος ὧν Ῥω- 15 μαίοις, Ἀντώνιον δὲ προδιδούς Παρθυαίοις ἐν τῷ πρὸς αὐτοὺς πολέμῳ δίκας ἔτισεν· ἀναχθεὶς γὰρ εἰς Ἀλεξάνδρειαν ὑπ' αὐτοῦ, δέσμιος πομπευθεὶς διὰ τῆς πόλεως τέως μὲν ἐφρουρεῖτο, ἔπειτ' ἀνηρέθη συνάπτουτος τοῦ Ἀκτιακοῦ πολέμου. μετ' ἐκείνους δὲ πλείους 20 ἐβασίλευσαν ὑπὸ Καίσαρι καὶ Ῥωμαίοις ὄντες· καὶ νῦν ἐτι συνέχεται τὸν αὐτὸν τρόπον.

- 16 Ἄπαντα μὲν οὖν τὰ τῶν Περσῶν ἱερὰ καὶ Μῆδοι καὶ Ἀρμένιοι τετιμήνασι, τὰ δὲ τῆς Ἀναϊτιδος διαφερόντως Ἀρμένιοι, ἐν τε ἄλλοις ἰδρυσάμενοι τόποις 25 καὶ δὴ καὶ ἐν τῇ Ἀκιλισηνῇ. ἀνατιθέασι δ' ἐνταῦθα δούλους καὶ δούλας· καὶ τοῦτο μὲν οὐ θαυμαστόν, ἀλλὰ καὶ θυγατέρας οἱ ἐπιφανέστατοι τοῦ ἔθνους ἀνιερουσί παρθένους, αἷς νόμος ἐστὶ καταπορνευθεῖσαις πολὺν χρόνον παρὰ τῇ θεῷ μετὰ ταῦτα δίδοσθαι πρὸς 30 γάμον, οὐκ ἀπαξιούντος τῇ τοιαύτῃ συνοικεῖν οὐδε-
C.533νός. τοιοῦτον δέ τι καὶ Ἡρόδοτος λέγει τὸ περὶ τὰς

Λυδάς· πορνεύειν γὰρ ἀπάσας. οὕτω δὲ φιλοφρόνως
 χρῶνται τοῖς ἐρασταῖς ὥστε καὶ ξενίαν παρέχουσι καὶ
 δῶρα ἀντιδιδόασιν πλείω πολλάκις ἢ λαμβάνουσιν, ἅτ'
 ἐξ εὐπόρων οἰκῶν ἐπιχορηγούμεναι· δέχονται δὲ οὐ
 5 τοὺς τυχόντας τῶν ξένων, ἀλλὰ μάλιστα τοὺς ἀπὸ
 ἴσου ἀξιώματος.

— IB —

- 10 καὶ ἡ Καππαδοκία δ' ἐστὶ πολυμερὴς τε **1**
 καὶ συχνὰς δεδεγμένη μεταβολάς. οἱ δ' οὖν ὁμόγλωτ-
 τοι μάλιστα εἰσιν οἱ ἀφοριζόμενοι πρὸς νότον μὲν τῷ
 Κιλικίῳ λεγομένῳ Ταύρῳ, πρὸς ἑω δὲ τῇ Ἀρμενίᾳ καὶ
 τῇ Κολχίδι καὶ τοῖς μεταξὺ ἑτερογλώττοις ἔθνεσιν, πρὸς
 15 ἄρκτον δὲ τῷ Εὐξείνῳ μέχρι τῶν ἐκβολῶν τοῦ Ἄλυσος,
 πρὸς δύσιν δὲ τῷ τε τῶν Παφλαγόνων ἔθνει καὶ Γα-
 λατῶν τῶν τὴν Φρυγίαν ἐποικησάντων μέχρι Λυκαό-
 νων καὶ Κιλικίων τῶν τὴν τραχεῖαν Κιλικίαν νεμο-
 μένων.
- 20 Καὶ αὐτῶν δὲ τῶν ὁμογλώττων οἱ παλαιοὶ τοὺς 2
 Κατάοντας καθ' αὐτοὺς ἔταττον, ἀντιδιαιροῦντες τοῖς
 Καππάδοξιν ὡς ἑτεροεθνέσι, καὶ ἐν τῇ διαριθμήσει
 τῶν ἐθνῶν μετὰ τὴν Καππαδοκίαν ἐτίθεσαν τὴν Κα-
 ταονίαν, εἴτα τὸν Εὐφράτην καὶ τὰ πέραν ἔθνη, ὥστε
 25 καὶ τὴν Μελιτηνὴν ὑπὸ τῇ Καταονίᾳ τάττειν, ἢ με-
 ταξὺ κεῖται ταύτης τε καὶ τοῦ Εὐφράτου συνάπτουσα
 τῇ Κομμαγενῇ, μέρος τε τῆς Καππαδοκίας ἐστὶ δέ-
 κατον κατὰ τὴν εἰς δέκα στρατηγίας διαίρεσιν τῆς χώ-
 ρας. οὕτω γὰρ δὴ οἱ καθ' ἡμᾶς βασιλεῖς οἱ πρὸ Ἀρ-
 30 χέλου διατεταγμένην εἶχον τὴν ἡγεμονίαν τῆς Καπ-
 παδοκίας· δέκατον δ' ἐστὶ μέρος καὶ ἡ Καταονία. καθ'
 ἡμᾶς δὲ εἶχε στρατηγὸν ἑκατέρω ἰδιον· οὔτε δ' ἐκ τῆς

διαλέκτου διαφορᾶς τινος ἐν τούτοις πρὸς τοὺς ἄλλους Καππαδόκας ἐμφαινομένης οὕτε ἐκ τῶν ἄλλων ἐθνῶν, θαυμαστὸν πῶς ἡφάνισται τελέως τὰ σημεῖα τῆς ἄλλοεθνίας. ἦσαν δ' οὖν διωρισμένοι, προσεκτήσατο δ' αὐτοὺς Ἀριαράθης ὁ πρῶτος προσαγορευθεὶς 5 Καππαδόκων βασιλεύς.

- 3 "Ἔστι δ' ὥσπερ χερρονήσου μεγάλης ἰσθμὸς οὗτος, σφιγγόμενος θαλάτταις δυεὶ τῇ τε τοῦ Ἰσσυκοῦ κόλπου μέχρι τῆς τραχείας Κιλικίας καὶ τῇ τοῦ Εὐξείνου μεταξὺ Σινώπης τε καὶ τῆς τῶν Τιβαρηνῶν παρα- 10 λίας· ἐντὸς δὲ τοῦ ἰσθμοῦ λέγομεν χερρόνησον τὴν προσεσπέριον τοῖς Καππαδόξιν ἄπασαν, ἣν Ἡρόδοτος μὲν ἐντὸς Ἄλνους καλεῖ· αὕτη γὰρ ἔστιν ἥς ἤρξεν ἀπάσης Κροῖσος· λέγει δ' αὐτὸν ἐκεῖνος τύραννον ἐθνέων τῶν ἐντὸς Ἄλνους ποταμοῦ. οἱ δὲ νῦν τὴν ἐντὸς 15 τοῦ Ταύρου καλοῦσιν Ἀσίαν, ὁμωνύμως τῇ ὅλῃ ἡπείρῳ ταύτην Ἀσίαν προσαγορεύοντες. περιέχεται δ' ἐν αὐτῇ πρῶτα μὲν ἔθνη τὰ ἀπὸ τῆς ἀνατολῆς Παφλαγόνες τε καὶ Φρύγες καὶ Λυκάονες, ἔπειτα Βιθυνοὶ καὶ Μυσοὶ καὶ ἡ Ἐπίκτητος, ἔτι δὲ Τρῶες καὶ Ἑλλησ- 20 ποντία, μετὰ δὲ τούτους ἐπὶ θαλάττῃ μὲν Ἑλλήνων οἷ τε Αἰολεῖς καὶ Ἴωνες τῶν δ' ἄλλων Κᾶρες τε καὶ Λύκιοι, ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ Λυδοί.

- 4 Περὶ μὲν οὖν τῶν ἄλλων ἐροῦμεν ὕστερον. τὴν δὲ Καππαδοκίαν εἰς δύο σατραπείας μερισθεῖσαν ὑπὸ 25 τῶν Περσῶν παραλαβόντες Μακεδόνες περιεῖδον τὰ μὲν ἐκόντες τὰ δ' ἄκοντες εἰς βασιλείας ἀντὶ σατραπειῶν περιστᾶσαν· ὧν τὴν μὲν ἰδίως Καππαδοκίαν ὠνόμασαν καὶ πρὸς τῷ Ταύρῳ καὶ νῇ Δία μεγάλην Καππαδοκίαν, τὴν δὲ Πόντον, οἱ δὲ τὴν πρὸς τῷ 30

Πόντῳ Καππαδοκίαν. τῆς δὲ μεγάλης Καππαδοκίας
 νῦν μὲν οὐκ ἴσμεν πῶς τὴν διάταξιν· τελευτήσαντος
 γὰρ τὸν βίον Ἀρχελαίου τοῦ βασιλεύσαντος, ἔγνω Καί-
 σάρ τε καὶ ἡ σύγκλητος ἐπαρχίαν εἶναι Ῥωμαίων ἀν-
 5 τήν. ἐπ' ἐκείνου δὲ καὶ τῶν πρὸ αὐτοῦ βασιλέων εἰς
 δέκα στρατηγίας διηρημένης τῆς χώρας, πέντε μὲν
 ἐξετάζοντο αἱ πρὸς τῷ Ταύρῳ, Μελιτηνὴ Καταονία
 Κιλικία Τυαννίτις Γαρσαυρίτις, πέντε δὲ λοιπαὶ Λασι-
 ανσηνὴ Σαργαραυσηνὴ Σαρασηνὴ Χαμαννηνὴ Μορι-
 10 μηνή. προσεγένετο δ' ὕστερον παρὰ Ῥωμαίων ἐκ τῆς
 Κιλικίας τοῖς πρὸ Ἀρχελαίου καὶ ἐνδεκάτῃ στρατηγία,
 ἡ περὶ Καστάβαλά τε καὶ Κύβιστρα μέχρι τῆς Ἀντιπᾶ-0.535
 τρου τοῦ ληστοῦ Δέρβης, τῷ δὲ Ἀρχελάῳ καὶ ἡ τρα-
 χεῖα περὶ Ἐλαιοῦσαν Κιλικία καὶ πᾶσα ἡ τὰ πειρατή-
 15 ρια συστήσαμένη.

Ἔστι δ' ἡ μὲν Μελιτηνὴ παραπλησία τῇ Κομμα- 2
 γηνῇ· πᾶσα γάρ ἐστι τοῖς ἡμέροις δένδροις κατάφυ-
 τος, μόνῃ τῆς ἄλλης Καππαδοκίας, ὥστε καὶ ἔλαιον
 φέρειν καὶ τὸν Μοναρίτην οἶνον τοῖς Ἑλληνικοῖς ἐνά-
 20 μίλλον· ἀντίκειται δὲ τῇ Σωφηνῇ, μέσον ἔχουσα τὸν
 Εὐφράτην ποταμὸν καὶ αὐτὴ [καὶ] ἡ Κομμαγηνὴ ὁμο-
 ρος οὖσα. ἔστι δὲ φρούριον ἀξιόλογον τῶν Καππαδό-
 κων ἐν τῇ περαίᾳ Τόμισα· τοῦτο δ' ἐπράθη μὲν τῷ
 Σωφηνῷ ταλάντων ἑκατόν, ὕστερον δὲ ἐδωρήσατο
 25 Λεύκολλος τῷ Καππαδόκι συστρατεύσαντι ἀριστεῖον
 κατὰ τὸν πρὸς Μιθριδάτην πόλεμον.

Ἡ δὲ Καταονία πλατὺ καὶ κοῖλόν ἐστι πεδίον πάμ- 2
 φορον πλὴν τῶν αἰεθάλων. περὶκειται δ' ὄρη ἄλλα τε
 καὶ Ἀμανὸς ἐκ τοῦ πρὸς νότον μέρους ἀπόσπασμα ὃν
 30 τοῦ Κιλικίου Ταύρου, καὶ ὁ Ἀντίταυρος εἰς τὰναντία
 ἀπερρωγῶς. ὁ μὲν γὰρ Ἀμανὸς ἐπὶ τὴν Κιλικίαν καὶ
 τὴν Συριακὴν ἐκτείνεται θάλατταν πρὸς τὴν ἐσπέραν

ἀπὸ τῆς Καταονίας καὶ τὸν νότον· τῇ δὲ τοιαύτῃ διαστάσει περικλείει τὸν Ἰσικὸν κόλπον ἅπαντα καὶ τὰ μεταξὺ τῶν Κιλίκων πεδία πρὸς τὸν Ταῦρον· ὁ δ' Ἀντίταυρος ἐπὶ τὰς ἄρκτους ἐγκέκλιται καὶ μικρὸν ἐπιλαμβάνει τῶν ἀνατολῶν, εἴτ' εἰς τὴν μεσόγαιαν τε- 5 λευτᾷ.

- 3 Ἐν δὲ τῷ Ἀντιταύρῳ τούτῳ βαθεῖς καὶ στενοὶ εἰσιν αὐλῶνες, ἐν οἷς ἴδρυται τὰ Κόμᾶνα καὶ τὸ τῆς Ἐννοῦς ἱερὸν ἦν ἐκεῖνοι Μᾶ ὀνομάζουσι· πόλις δ' ἐστὶν ἀξιόλογος, πλεῖστον μέντοι τὸ τῶν θεοφορήτων 10 πληθὺς καὶ τὸ τῶν ἱεροδούλων ἐν αὐτῇ. Κατάουες δὲ εἰσιν οἱ ἐνοικοῦντες, ἄλλως μὲν ὑπὸ τῷ βασιλεῖ τεταγμένοι, τοῦ δὲ ἱερέως ὑπακούοντες τὸ πλεόν· ὁ δὲ τοῦ θ' ἱεροῦ κύριός ἐστι καὶ τῶν ἱεροδούλων, οἱ κατὰ τὴν ἡμετέραν ἐπιδημίαν πλείους ἦσαν τῶν ἑξακισχιλίων, 15 ἄνδρες ὁμοῦ γυναιξί. πρόσκειται δὲ τῷ ἱερῷ καὶ χώρα πολλή, καρποῦται δ' ὁ ἱερεὺς τὴν πρόσοδον, καὶ ἔστιν οὗτος δεύτερος κατὰ τιμὴν [ἐν] τῇ Καππαδοκίᾳ μετὰ τὸν βασιλέα· ὥς δ' ἐπὶ τὸ πολὺ τοῦ αὐτοῦ γένους ἦσαν οἱ ἱερεῖς τοῖς βασιλεῦσι. τὰ δὲ ἱερὰ ταῦτα 20 δοκεῖ Ὀρέστης μετὰ τῆς ἀδελφῆς Ἰφιγενείας κομίσαι δεῦρο ἀπὸ τῆς Ταυρικῆς Σκυθίας, τὰ τῆς Ταυροπόλου Ἀρτέμιδος, ἐνταῦθα δὲ καὶ τὴν πένθιμον κόμην ἀποθέσθαι, ἅφ' ἧς καὶ τοῦνομα τῇ πόλει. διὰ μὲν οὖν C.536 τῆς πόλεως ταύτης ὁ Σάρος ρεῖ ποταμός, καὶ διὰ τῶν 25 συναγκειῶν τοῦ Ταύρου διεκπεραιοῦται πρὸς τὰ τῶν
- 4 Κιλίκων πεδία καὶ τὸ ὑποκείμενον πέλαγος. διὰ δὲ τῆς Καταονίας ὁ Πύραμος, πλωτός, ἐκ μέσου τοῦ πεδίου τὰς πηγὰς ἔχων· ἔστι δὲ βόθρος ἀξιόλογος, δι' οὗ καθορᾶν ἔστι τὸ ὕδωρ ὑποφερόμενον κρυπτῶς μέ- 30 χρι πολλοῦ διαστήματος ὑπὸ γῆς, εἴτ' ἀνατέλλον εἰς τὴν ἐπιφάνειαν· τῷ δὲ καθιέντι ἀκόντιον ἄνωθεν εἰς

τὸν βόθρον ἢ βία τοῦ ὕδατος ἀντιπράττει τοσοῦτον
 ὥστε μόλις βαπτίζεσθαι· ἀπλὲς δὲ βάθει καὶ πλάτει
 πολὺς ἐνεχθεὶς ἐπειδὴν συνάγῃ τῷ Ταύρῳ, παράδο-
 ξον λαμβάνει τὴν συναγωγὴν· παράδοξος δὲ καὶ ἡ δια-
 5 κοπὴ τοῦ ὅρους ἐστὶ δι' ἧς ἄγεται τὸ ρεῖθρον· καθάπερ
 γὰρ ἐν ταῖς ῥήγμα λαβούσαις πέτραις καὶ σχισθείσαις
 δίχα τὰς κατὰ τὴν ἑτέραν ἐξοχὰς ὁμολόγους εἶναι
 συμβαίνει ταῖς κατὰ τὴν ἑτέραν εἰσοχαῖς ὥστε καὶ συν-
 αρμοσθῆναι δύνασθαι, οὕτως εἶδομεν καὶ τὰς ὑπερ-
 10 κειμένας τοῦ ποταμοῦ πέτρας ἐκατέρωθεν σχεδὸν τι
 μέχρη τῶν ἀκρωρειῶν ἀνατεινούσας ἐν διαστάσει δυ-
 εῖν ἢ τριῶν πλέθρων ἀντικείμενα ἐχούσας τὰ κοῖλα
 ταῖς ἐξοχαῖς· τὸ δὲ ἕδαφος τὸ μεταξὺ πᾶν πέτρινον,
 βαθύ τι καὶ στενὸν τελέως, ἔχον διὰ μέσου ῥήγμα ὥστε
 15 καὶ κύναι καὶ λαγὼ διάλλεσθαι. τοῦτο δ' ἐστὶ τὸ ρεῖ-
 θρον τοῦ ποταμοῦ ἄχρι χείλους πληρῆς, ὅχετ' ὡς πλατεῖ
 προσεικός, διὰ δὲ τὴν σκολιότητα καὶ τὴν ἐκ τοσοῦ-
 του συναγωγὴν καὶ τὸ τῆς φάραγγος βάθος εὐθὺς
 τοῖς πόρρωθεν προσιοῦσιν ὁ ψόφος βροντῇ προσπί-
 20 πτει παραπλήσιος· διεκβαίνων δὲ τὰ ὄρη τοσαύτην κα-
 τάγει χοῦν ἐπὶ θάλατταν, τὴν μὲν ἐκ τῆς Καταονίας
 τὴν δὲ ἐκ τῶν Κιλικίων πεδίων, ὥστε ἐπ' αὐτῷ καὶ
 χρησμὸς ἐκπεπτωκὸς φέρεται τοιοῦτος „ἔσσειται ἐς-
 „σομένοις, ὅτε Πύραμος ἀργυροδίνης ἡϊόνα προχέων
 25 „λερὴν ἐς Κύπρον ἵκηται.“ παραπλήσιον γάρ τι καὶ καὶ
 συμβαίνει καὶ ἐν Αἰγύπτῳ, τοῦ Νείλου προσεξηπει-
 ροῦντος αἰετὶ τὴν θάλατταν τῇ προσχώσει· καθὼ καὶ
 Ἡρόδοτος μὲν δῶρον τοῦ ποταμοῦ τὴν Αἰγυπτον εἶ-
 πεν, ὁ ποιητὴς δὲ τὴν Φάρον πελαγίαν ὑπάρχειν πρό-
 30 τερον οὐχ ὡς νυνὶ πρόσγειον οὔσαν τῇ Αἰγύπτῳ.

C.537

5

Πόλιν δ' οὔτε τὸ τῶν Καταόνων ἔχει πεδίον οὔθ' ἢ Μελιτηνῇ, φρούρια δ' ἐρυμνὰ ἐπὶ τῶν ὄρων τὰ τε Ἀξάμορα καὶ τὸ Δάσταρkon, ὃ περιρρεῖται τῷ Καρμάλα ποταμῷ. ἔχει δὲ καὶ ἱερὸν τὸ τοῦ Κατάονος Ἀπόλλωνος καθ' ὅλην τιμώμενον τὴν Καππαδοκίαν, 5 ποιησαμένων ἀφιδρύματα ἀπ' αὐτοῦ. οὐδὲ αἱ ἄλλαι στρατηγίαι πόλεις ἔχουσι πλὴν δυεῖν· τῶν δὲ λοιπῶν στρατηγιῶν ἐν μὲν τῇ Σαργαραυσηνῇ πολίχμιον ἐστὶν Ἡρκα καὶ ποταμὸς Καρμάλας, ὃς καὶ αὐτὸς εἰς τὴν Κιλικίαν ἐκδίδωσιν· ἐν δὲ ταῖς ἄλλαις ὃ τε Ἄργος ἐρυ- 10 μα ὑψηλὸν πρὸς τῷ Ταύρῳ, καὶ τὰ Νῶρα δ' νῦν καλεῖται Νηροασσός, ἐν ᾧ Εὐμένης πολιορκούμενος ἀντέσχε πολὺν χρόνον· καθ' ἡμᾶς δὲ Σισίνου ὑπῆρξε χρηματοφυλάκιον τοῦ ἐπιτεμένου τῇ Καππαδόκῳ ἀρχῇ. τούτου δ' ἦν καὶ τὰ Κάδηναι, βασιλείον καὶ πό- 15 λεως κατασκευὴν ἔχον· ἔστι δὲ καὶ ἐπὶ τῶν ὄρων τῶν Λυκαονικῶν τὰ Γαρσαύρια καμπόπολις· λέγεται δ' ὑπάρχει ποτὲ καὶ αὕτη μητρόπολις τῆς χώρας. ἐν δὲ τῇ Μοριμηνῇ τὸ ἱερὸν τοῦ ἐν' Ὀηνάσοις Διὸς, ἱεροδούλων κατοικίαν ἔχον τρισχίλιον σχεδόν τι καὶ χώραν 20 ἱερὰν εὐκαρπον, παρέχουσαν πρόσδοτον ἐνιαύσιον τάλαντων πεντεκαίδεκα τῷ ἱερῷ· καὶ οὗτος δ' ἐστὶ διὰ βίου, καθάπερ καὶ ὁ ἐν Κομάνοις, καὶ δευτερεύει κα- 6 τὰ τιμὴν μετ' ἐκείνον. τρίτη δ' ἐστὶν ἱερωσύνη Διὸς Ἀσβαμαίου λειπομένη ταύτης, ἀξιόλογος δ' ὅμως. ἐν- 25 ταῦθα δ' ἐστὶ λάκκος ἀλμυροῦ ὕδατος, ἀξιολόγου λίμνης ἔχων περίμετρον, ὁφρῦσι κλειόμενος ὑψηλαῖς τε καὶ ὀρθαῖς ὥστ' ἔχειν κατάβασιν κλιμακώδη· τὸ δ' ὕδωρ οὔτ' αὖξισθαί φασιν οὔτ' ἀπόρρυσιν ἔχειν οὐ- 30 δαμοῦ φανεράν.

30

7

Δύο δὲ μόναι στρατηγίαι πόλεις ἔχουσιν, ἡ μὲν Τυαντίς τὰ Τύανα ὑποπεπτωκυῖαν τῷ Ταύρῳ τῷ κα-

τὰ τὰς Κιλικίας πύλας, καθ' ἃς εὐπετέσταται καὶ κοι-
 νόταται πᾶσιν εἰσιν αἱ εἰς τὴν Κιλικίαν καὶ τὴν Συ-
 ρίαν ὑπερβολαί· καλεῖται δὲ Εὐσέβεια ἡ πρὸς τῷ
 Ταύρῳ..... ἀγαθὴ δὲ καὶ πεδιάς ἡ πλείστη. τὰ δὲ
 5 Τύανα ἐπικεῖται χώματι Σεμιράμιδος τετειχισμένῳ
 καλῶς. οὐ πολὺ δ' ἄπωθεν ταύτης ἐστὶ τὰ τε Καστά-
 βαλα καὶ τὰ Κύβιστρα, ἔτι μᾶλλον τῷ ὄρει πλησιά-
 ζοντα πόλιστα· ὧν ἐν τοῖς Κασταβάλοις ἐστὶ τὸ τῆς
 Περσσίας Ἀρτέμιδος ἱερὸν, ὅπου φασὶ τὰς ἱερεῖας γυ-
 10 μνοῖς τοῖς ποσὶ δι' ἀνθρακιᾶς βαδίζειν ἀπαθεῖς· κἀν-
 ταῦθα δὲ τινες τὴν αὐτὴν θρυλοῦσιν ἱστορίαν τὴν
 περὶ τοῦ Ὁρέστου καὶ τῆς Ταυροπόλου, Περσσίαν
 κεκληῖσθαι φάσκοντες διὰ τὸ πέραθεν κομισθῆναι. ἐν
 μὲν δὴ τῇ Τυανίτιδι στρατηγία τῶν λεχθεῖσῶν δέκα
 15 ἐστὶ πόλισμα τὰ Τύανα (τὰς δ' ἐπικτήτους οὐ συνα-
 ριθμῶ ταύταις, τὰ Καστάβαλα καὶ τὰ Κύβιστρα καὶ
 τὰ ἐν τῇ τραχείᾳ Κιλικίᾳ, ἐν ἣ τὴν Ἑλαιοῦσσαν νησίον
 εὐκαρπον συνέκτισεν Ἀρχέλαος ἀξιολόγως, καὶ τὸ
 πλεόν ἐνταῦθα διέτριβεν), ἐν δὲ τῇ Κιλικίᾳ καλου-
 20 μένη τὰ Μάξακα ἡ μητρόπολις τοῦ ἔθνους· καλεῖται 0.538
 δ' Εὐσέβεια καὶ αὕτη ἐπικλησιν ἡ πρὸς τῷ Ἀργαίῳ·
 κεῖται γὰρ ὑπὸ τῷ Ἀργαίῳ ὄρει πάντων ὑψηλοτάτῳ
 καὶ ἀνέκλειπτον χιόνι τὴν ἀκρώρειαν ἔχοντι, ἀφ' ἧς
 φασιν οἱ ἀναβαίνοντες (οὗτοι δ' εἰσὶν ὀλίγοι) κατο-
 25 πτεύεσθαι ταῖς αἰθρῇσι ἄμφω τὰ πελάγη τό τε Πον-
 τικὸν καὶ τὸ Ἰσσικόν. τὰ μὲν οὖν ἄλλα ἀφυῆ πρὸς συν-
 οικισμόν ἔχει πόλεως· ἀνυδρὸς τε γὰρ ἐστὶ καὶ ἀνώ-
 χυρος διὰ τὴν ὀλιγωρίαν τῶν ἡγεμόνων καὶ ἀτείχιστος,
 τάχα δὲ καὶ ἐπίτηδες, ἵνα μὴ ὥς ἐρύματι πεποιδότες
 30 τῷ τείχει σφόδρα ληστεύοιεν πεδίον οἰκοῦντες λόφους
 ὑπερδεξιούς ἔχον* καὶ ἐμβελεῖς. καὶ τὰ κύκλῳ δὲ χω-
 ρία ἔχει τελέως ἄφορα καὶ ἀγεώργητα καίπερ ὄντα πε-

δινά, ἀλλ' ἔστιν ἀμμώδη καὶ ὑπόπετρα. μικρὸν δ' ἔτι προλοῦσι καὶ πυρίληπτα πεδία καὶ μεστὰ βόθρων πυρὸς ἐπὶ σταδίους πολλοὺς ὥστε πόρρωθεν ἢ κοιμὴ τῶν ἐπιτηδείων, καὶ τὸ δοκοῦν δὲ πλεονέκτημα παρακείμενον ἔχει κίνδυνον· ἀξύλου γὰρ ὑπαρχούσης σχεδόν τι τῆς συμπάσης Καππαδοκίας ὁ Ἀργαῖος ἔχει περικείμενον δρυμὸν ὥστε ἐγγύθεν ὁ ξυλισμὸς πάρεστιν, ἀλλ' οἱ ὑποκείμενοι τῷ δρυμῷ τόποι καὶ αὐτοὶ πολλαχοῦ πυρὰ ἔχουσιν, ἅμα δὲ καὶ ὕψυδροί εἰσι ψυχρῷ ὕδατι, οὔτε τοῦ πυρὸς οὔτε τοῦ ὕδατος εἰς τὴν ἐπιφάνειαν ἐκκύπτοντος, ὥστε καὶ ποιάζειν τὴν πλείστην· ἔστι δ' ὅπου καὶ ἐλῶδές ἐστι τὸ ἔδαφος καὶ νύκτωρ ἐξάπτονται φλόγες ἀπ' αὐτοῦ. οἱ μὲν οὖν ἔμπειροι φυλαττόμενοι τὸν ξυλισμὸν ποιοῦνται, τοῖς δὲ πολλοῖς κίνδυνός ἐστι, καὶ μάλιστα τοῖς κτήνεσιν ἐμπίπτουσιν εἰς ἀδήλους βόθρους πυρὸς.

- 8 "Ἔστι δὲ καὶ ποταμὸς ἐν τῷ πεδίῳ τῷ πρὸ τῆς πόλεως Μέλας καλούμενος, ὅσον τετταράκοντα σταδίους διέχων τῆς πόλεως, ἐν ταπεινότητι τῆς πόλεως χωρίῳ τὰς πηγὰς ἔχων. ταύτῃ μὲν οὖν ἄχρηστος αὐτοῖς ἐστὶν οὐχ ὑπερδέξιον ἔχων τὸ ῥεῦμα, εἰς ἔλη δὲ καὶ λίμνας διαχρόμενος κακοῖ τὸν ἄερα τοῦ θέρους τὸν περὶ τὴν πόλιν, καὶ τὸ λατομεῖον δὲ ποιεῖ δύσχρηστον καίπερ εὐχρηστον ὄν· πλαταμῶνες γὰρ εἰσὶν, ἀφ' ὧν τὴν λιθείαν ἔχειν ἄφθονον συμβαίνει τοῖς Μαζακηνοῖς πρὸς τὰς οἰκοδομίας, καλυπτόμεναι δ' ὑπὸ τῶν ὑδάτων αἱ πλάκες ἀντιπράττουσι. καὶ ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ ἔλη πανταχοῦ πυρίληπτα. Ἀριαράθης δ' ὁ βασιλεὺς τοῦ Μέλανος κατὰ τινα στενὰ ἔχοντος τὴν εἰς τὸν Ἄλυν διέξοδον ἐμφράξας ταῦτα λίμνην πελαγίαν ἀπέδειξε τὸ πλησίον πεδίον, ἐνταῦθα δὲ νησιδᾶς τινὰς ὥς τὰς Κυκλάδας ἀπολαβόμενος διατριβὰς ἐν αὐταῖς

ἐποιεῖτο μειριακιώδεις· ἐκραγὲν δ' ἀθρόως τὸ ἔμφραγ-0.539
μα ἐξέκλυσε πάλιν τὸ ὕδωρ, πληρωθεὶς δ' ὁ Ἄλυσ
τῆς τε τῶν Καππαδόκων πολλὴν παρέσυρε καὶ κατοικίας
καὶ φυτείας ἠφάνισε πολλὰς τῆς τε τῶν Γαλα-
5 τῶν τῶν τὴν Φρυγίαν ἐχόντων οὐκ ὀλίγην ἐλυμήνατο·
ἀντὶ δὲ τῆς βλάβης ἐπράξαντο ζημίαν αὐτὸν τάλαντα
τριακόσια Ῥωμαίοις ἐπιτρέψαντες τὴν κρίσιν. τὸ δ'
αὐτὸ συνέβη καὶ περὶ Ἡρπα· καὶ γὰρ ἐκεῖ τὸ τοῦ Καρ-
μάλα ρεῦμα ἐνέφραξεν, εἴτ' ἐκραγέντος τοῦ στομίου
10 καὶ τῶν Κιλικίων τινὰ χωρία τὰ περὶ Μαλλὸν διαφθεί-
ραντος τοῦ ὕδατος, δίκας ἔτισεν τοῖς ἀδικηθεῖσιν.

Ἀφυσὲς δ' οὖν κατὰ πολλὰ τὸ τῶν Μαζακηνῶν χω- 9
ρίον ὃν πρὸς κατοικίαν μάλιστα οἱ βασιλεῖς ἐλέσθαι
δοκοῦσιν, ὅτι τῆς χώρας ἀπάσης τόπος ἦν μεσαίτατος
15 οὗτος τῶν ξύλα ἐχόντων ἅμα καὶ λίθον πρὸς τὰς οἰκο-
δομίας καὶ χόρτον, οὗ πλεῖστον ἐδέοντο κτηνοτρο-
φοῦντες· τρόπον γάρ τινα στρατόπεδον ἦν αὐτοῖς ἡ
πόλις. τὴν δ' ἄλλην ἀσφάλειαν τὴν αὐτῶν τε καὶ σω-
μάτων καὶ τῶν χρημάτων εἶχον ἐν τοῖς φρουρίοις, ἃ
20 πολλὰ ὑπάρχει τὰ μὲν βασιλικὰ τὰ δὲ τῶν φίλων. ἀφέ-
στηκε δὲ τὰ Μάξακα τοῦ μὲν Πόντου περὶ ὀκτακοσίου
σταδίου πρὸς νότον, τοῦ δ' Εὐφράτου μικρὸν ἐλάτ-
τους ἢ διπλασίους, τῶν Κιλικίων δὲ πυλῶν ὁδὸν ἡμε-
ρῶν ἕξ καὶ τοῦ Κύρου στρατοπέδου διὰ Τυάνων· κατὰ
25 μέσσην δὲ τὴν ὁδὸν κεῖται τὰ Τύανα, διέχει δὲ Κυβίσ-
τρων τριακοσίους σταδίους. χρωῶνται δὲ οἱ Μαζακη-
νοὶ τοῖς Χαρώνδα νόμοις, αἰρουμένοι καὶ νομφόον,
ὅς ἐστιν αὐτοῖς ἐξηγητὴς τῶν νόμων, καθάπερ οἱ πα-
ρὰ Ῥωμαίοις νομικοί. διέθηκε δὲ φανύως αὐτοὺς Τι-
30 γράνης ὁ Ἀρμένιος, ἥνίκα τὴν Καππαδοκίαν κατέδρα-
μεν· ἅπαντας γὰρ ἀναστάτους ἐποίησεν εἰς τὴν Μεσο-
ποταμίαν, καὶ τὰ Τιγρανόκερτα ἐκ τούτων συνώκισε

τὸ πλέον· ὕστερον δ' ἐπανῆλθον οἱ δυνάμενοι μετὰ τὴν τῶν Τιγρανοκέρτων ἄλωσιν.

10 Μέγεθος δὲ τῆς χώρας κατὰ πλάτος μὲν τὸ ἀπὸ τοῦ Πόντου πρὸς τὸν Ταῦρον ὅσον χίλιοι καὶ ὀκτακόσιοι στάδιοι, μῆκος δὲ ἀπὸ τῆς Λυκαονίας καὶ Φρυγίας μέχρι Εὐφράτου πρὸς τὴν ἕω καὶ τὴν Ἀρμενίαν περὶ τρισχιλίους. ἀγαθὴ δὲ καρποῖς, μάλιστα δὲ σίτῳ καὶ βοσκήμασι παντοδαποῖς· νοτιωτέρα δ' οὕσα τοῦ Πόντου ψυχροτέρα ἐστίν· ἡ δὲ Βαγαδανία καίπερ πεδιάς οὕσα καὶ νοτιωτάτη πασῶν (ὑποπέπτωκε γὰρ 10 τῷ Ταύρῳ) μόλις τῶν καρπίμων τι φέρει δένδρων, ὀναγροβότος δ' ἐστὶ καὶ αὕτη καὶ ἡ πολλὴ τῆς ἄλλης, C.540 καὶ μάλιστα ἡ περὶ Γαρσαύιρα καὶ Λυκαονίαν καὶ Μοριμνηνῇ. ἐν δὲ τῇ Καππαδοκίᾳ γίνεται καὶ ἡ λεγομένη Σινωπικὴ μίλτος ἀρίστη τῶν πασῶν· ἐνάμιλλος δ' 15 ἐστὶν αὐτῇ καὶ ἡ Ἰβηρικὴ· ὠνομάσθη δὲ Σινωπικὴ διότι κατάγειν ἐκείσε εἰώθεσαν οἱ ἔμποροι πρὶν ἢ τὸ τῶν Ἐφεσίων ἐμπόριον μέχρι τῶν ἐνθάδε ἀνθρώπων διῆχθαι. λέγεται δὲ καὶ κρυστάλλου πλάκας καὶ ὀνυχίτου λίθου πλησίον τῆς τῶν Γαλατῶν ὑπὸ τῶν Ἀρ- 20 χελάου μεταλλευτῶν εὐρεῖσθαι. ἦν δέ τις τόπος καὶ λίθου λευκοῦ τῷ ἐλέφαντι κατὰ τὴν χροάν ἐμφεροῦς ὥσπερ ἄκοντας τινὰς οὐ μεγάλας ἐκφέρων, ἐξ ὧν τὰ λαβία τοῖς μαχαιρίοις κατεσκευάζον· ἄλλος δὲ εἰς διόπτρας βώλους μεγάλας ἐκδιδούς, ὥστε καὶ ἕξω κομί- 25 ξεσθαι. ὄριον δ' ἐστὶ τοῦ Πόντου καὶ τῆς Καππαδοκίας ὄρεινὴ τις παράλληλος τῷ Ταύρῳ, τὴν ἀρχὴν ἔχουσα ἀπὸ τῶν ἐσπερίων ἄκρων τῆς Χαμμανηνῆς, ἐφ' ἧς ἰδρυταὶ φρούριον ἀπότομον Δασμένδα, μέχρι τῶν ἐωθινῶν τῆς Λασιανσηνῆς. στρατηγλαὶ δ' εἰσὶ τῆς Καπ- 30 παδοκίας ἡ τε Χαμμανηνὴ καὶ ἡ Λασιανσηνή.

11 Συνέβη δέ, ἡνίκα πρῶτον Ῥωμαῖοι τὰ κατὰ τὴν

- Ἀσίαν διώκουν νικήσαντες Ἀντίοχον, καὶ φιλίας καὶ
 συμμαχίας ἐποιοῦντο πρὸς τε τὰ ἔθνη καὶ τοὺς βασι-
 λέας, τοῖς μὲν ἄλλοις βασιλεῦσιν αὐτοῖς καθ' ἑαυτοὺς
 δοθῆναι τὴν τιμὴν ταύτην, τῷ δὲ Καππάδοκι καὶ
 5 αὐτῷ δὲ τῷ ἔθνει κοινῇ. ἐκλιπόντος δὲ τοῦ βασιλικοῦ
 γένους οἱ μὲν Ῥωμαῖοι συνεχώρουν αὐτοῖς αὐτονο-
 μεῖσθαι κατὰ τὴν συγκειμένην φιλίαν τε καὶ συμμα-
 χίαν πρὸς τὸ ἔθνος, οἱ δὲ πρεσβευσάμενοι τὴν μὲν
 ἐλευθερίαν παρηγοῦντο (οὐ γὰρ δύνασθαι φέρειν αὐ-
 10 τὴν ἔφασαν), βασιλεῖα δ' ἡξίουν αὐτοῖς ἀποδειχθῆναι.
 οἱ δὲ θαυμάσαντες εἴ τινες οὕτως εἴεν ἀπειρηκότες
 πρὸς τὴν ἐλευθερίαν ἐπέτρεψαν δ' οὖν αὐτοῖς ἐξ
 ἑαυτῶν ἐλέσθαι κατὰ χειροτονίαν ὃν ἂν βούλωνται· καὶ
 εἵλοντο Ἀριοβαρζάνην· εἰς τριγωνίαν δὲ προελθόντος
 15 τοῦ γένους ἐξέλιπε, κατεστάθη δ' ὁ Ἀρχέλαος οὐδὲν
 προσήκων αὐτοῖς Ἀντωνίου καταστήσαντος. ταῦτα
 καὶ περὶ τῆς μεγάλης Καππαδοκίας· περὶ δὲ τῆς τρα-
 χείας Κιλικίας τῆς προστεθείσης αὐτῇ βέλτιόν ἐστιν ἐν
 τῷ περὶ τῆς ὅλης Κιλικίας λόγῳ διελθεῖν.
- 20 Τοῦ δὲ Πόντου καθίστατο μὲν Μιθριδάτης ὁ Εὐ- 3
 πάτωρ βασιλεύς. εἶχε δὲ τὴν ἀφοριζομένην τῷ Ἄλνι
 μέχρι Τιβαρανῶν καὶ Ἀρμενίων καὶ τῆς ἐντὸς Ἄλνος
 τὰ μέχρι Ἀμάστρεως καὶ τιμῶν τῆς Παφλαγονίας με-0.541
 ρῶν. προσεκτέησατο δ' οὗτος καὶ τὴν μέχρι Ἡρακλείας
 25 παραλίαν ἐπὶ τὰ δυσμικὰ μέρη, τῆς Ἡρακλείδου τοῦ
 Πλατωνικοῦ πατρίδος, ἐπὶ δὲ τὰναντία μέχρι Κολχί-
 δος καὶ τῆς μικρᾶς Ἀρμενίας, ἃ δὴ καὶ προσέθηκε τῷ
 Πόντῳ. καὶ δὴ καὶ Πομπήιος καταλύσας ἐκεῖνον ἐν
 τούτοις τοῖς ὅροις οὔσαν τὴν χώραν ταύτην παρέλα-
 30 βε· τὰ μὲν πρὸς Ἀρμενίαν καὶ τὰ περὶ τὴν Κολχίδα
 τοῖς συναγωνισαμένοις δυνάσταις κατένειμε, τὰ δὲ
 λοιπὰ εἰς ἑνδεκα πολιτείας διεῖλε καὶ τῇ Βιθυνίᾳ προσ-

ἐδθηκεν ὥστ' ἐξ ἀμφοῖν ἐπαρχίαν γενέσθαι μίαν· μεταξὺ δὲ τῶν Παφλαγόνων τῶν μεσογαίων τινὰς βασιλεύεσθαι παρέδωκε τοῖς ἀπὸ Πυλαιμένους, καθάπερ καὶ τοὺς Γαλάτας τοῖς ἀπὸ γένους τετράρχαις. ὅστερον δ' οἱ τῶν Ῥωμαίων ἡγεμόνες ἄλλους καὶ ἄλλους 5 ἐποιήσαντο μερισμούς, βασιλέας τε καὶ δυνάστας καθιστάντες καὶ πόλεις τὰς μὲν ἐλευθεροῦντες τὰς δὲ ἐργχειρίζοντες τοῖς δυνάσταις τὰς δ' ὑπὸ τῷ δήμῳ τῷ Ῥωμαίων ἐῶντες. ἡμῖν δ' ἐπιούσι τὰ καθ' ἕκαστα ὡς νῦν ἔχει λεγέσθω, μικρὰ καὶ τῶν προτέρων ἐφαπτο- 10 μένοισι ὅπου τοῦτο χρήσιμον. ἀρξόμεθα δὲ ἀπὸ Ἡρακλείας, ἥπερ δυσμικωτάτη ἐστὶ τούτων τῶν τόπων.

2 Εἰς δὴ τὸν Εὐξείνιον πόντον εἰσπλέουσιν ἐκ τῆς Προποντίδος ἐν ἀριστερᾷ μὲν τὰ προσεχῇ τῷ Βυζαντίῳ κεῖται· Θρακῶν δ' ἐστὶ, καλεῖται δὲ τὰ ἀριστερὰ 15 τοῦ Πόντου· ἐν δεξιᾷ δὲ τὰ προσεχῇ Χαλκηδόνι· Βιθυνῶν δ' ἐστὶ τὰ πρῶτα, εἴτα Μαριανδυνῶν (τινὲς δὲ καὶ Καυκῶνων φασίν), εἴτα Παφλαγόνων μέχρι Ἄλνος, εἴτα Καππαδόκων τῶν πρὸς τῷ Πόντῳ καὶ τῶν ἐξῆς μέχρι Κολχίδος· ταῦτα δὲ πάντα καλεῖται τὰ δεξιὰ τοῦ 20 Εὐξείνου πόντου. ταύτης δὲ τῆς παραλίας ἀπάσης ἐπῆρξεν Εὐπάτωρ ἀρξάμενος ἀπὸ τῆς Κολχίδος μέχρι Ἡρακλείας, τὰ δ' ἐπέκεινα τὰ μέχρι τοῦ στόματος καὶ τῆς Χαλκηδόνος τῷ Βιθυνῶν βασιλεῖ συνέμενε. καταλυθέντων δὲ τῶν βασιλέων ἐφύλαξαν οἱ Ῥωμαῖοι 25 τοὺς αὐτοὺς ὅρους, ὥστε τὴν Ἡράκλειαν προσκειῖσθαι τῷ Πόντῳ, τὰ δ' ἐπέκεινα Βιθυνοῖς προσχωρεῖν.

3 Οἱ μὲν οὖν Βιθυνοὶ διότι πρότερον Μυσοὶ ὄντες μετωνομάσθησαν οὕτως ἀπὸ τῶν Θρακῶν τῶν ἐποικησάντων, Βιθυνῶν τε καὶ Θυνῶν, ὁμολογεῖται παρὰ 30 τῶν πλείστων, καὶ σημεῖα τίθενται τοῦ μὲν τῶν Βιθυνῶν ἔθνους τὸ μέχρι νῦν ἐν τῇ Θράκῃ λέγεσθαι τι-

νας Βιθυνούς, τοῦ δὲ τῶν Θυνῶν τὴν Θυνιάδα ἀκτὴν
τὴν πρὸς Ἀπολλωνίᾳ καὶ Σαλμυδησσῷ. καὶ οἱ Βέβρυ-
κες δὲ οἱ τούτων προεποιήσαντες τὴν Μυσίαν Ὠρε-
κες, ὡς εἰκάσω ἐγώ. εἴρηται δ' ὅτι καὶ αὐτοὶ οἱ Μυσοὶ C.54
5 Ὠρακῶν ἄποικοι εἰσι τῶν νῦν λεγομένων Μοισῶν.

Ταῦτα μὲν οὕτω λέγεται. τοὺς δὲ Μαριανδυνούς 4
καὶ τοὺς Καύκωνας οὐχ ὁμοίως ἅπαντες λέγουσι· τὴν
γὰρ δὴ Ἡράκλειαν ἐν τοῖς Μαριανδυνοῖς ἰδρῦσθαί φασι
Μιλησίων κτίσμα· τίνες δὲ καὶ πόθεν οὐδενὶ εἴρηται·
10 οὐδὲ διάλεκτος οὐδ' ἄλλη διαφορὰ ἐθνικὴ περὶ τοὺς ἀν-
θρώπους φαίνεται, παραπλήσιοι δ' εἰσὶ τοῖς Βιθυνοῖς·
ἔοικεν οὖν καὶ τοῦτο Ὠράκιον ὑπάρξει τὸ φύλον. Θεό-
πομπος δὲ Μαριανδυνόν φησι μέρους τῆς Παφλαγονίας
ἄρξαντα ὑπὸ πολλῶν δυναστευομένης, ἐπελθόντα τὴν
15 τῶν Βεβρύκων κατασχεῖν, ἣν δ' ἐξέλιπεν ἐπώνυμον
ἐαυτοῦ καταλιπεῖν. εἴρηται δὲ καὶ τοῦτο ὅτι πρῶτοι
τὴν Ἡράκλειαν κτίσαντες Μιλήσιοι τοὺς Μαριανδυ-
νοὺς εἰλωτεύειν ἠνάγκασαν τοὺς προκατέχοντας τὸν
τόπον, ὥστε καὶ πιπράσκεσθαι ὑπ' αὐτῶν, μὴ εἰς τὴν
20 ὑπερορίαν δέ (συμβῆναι γὰρ ἐπὶ τούτοις), καθάπερ
Κρησὶ μὲν ἐθήτευεν ἡ Μνῶα καλουμένη σύνοδος, Θετ-
ταλοῖς δὲ οἱ Πενέσται.

Τοὺς δὲ Καύκωνας, οὓς ἱστοροῦσι τὴν ἐφεξῆς οἰ- 5
κῆσαι παραλίαν τοῖς Μαριανδυνοῖς μέχρι τοῦ Παρθε-
25 νίου ποταμοῦ πόλιν ἔχοντας τὸ Τίειον, οἱ μὲν Σκύθας
φασὶν οἱ δὲ τῶν Μακεδόνων τινὰς οἱ δὲ τῶν Πελασγῶν·
εἴρηται δέ που καὶ περὶ τούτων πρότερον. Καλλισθέ-
νης δὲ καὶ ἔγραφε τὰ ἔπη ταῦτα εἰς τὸν διάκοσμον,
μετὰ τὸ „Κρωμνάν τ' Αἰγιαλὸν τε καὶ ὑψηλοὺς Ἐρυ-
30 „θίνους“ τιθεῖς „Καύκωνας δ' αὐτ' ἤγε Πολυκλέος
„υἱὸς ἀμύμων, οἱ περὶ Παρθένιον ποταμὸν κλυτὰ δώ-
„ματ' ἔναιον.“ παρήκειν γὰρ ἄφ' Ἡρακλείας καὶ Μα-

ριανδυνῶν μέχρι Λευκασύρων, οὓς ἡμεῖς Καππάδοκας προσαγορεύομεν, τό τε τῶν Καυκῶνων γένος τὸ περὶ τὸ Τίειον μέχρι Παρθενίου καὶ τὸ τῶν Ἑνετῶν τὸ συνεχές μετὰ τὸν Παρθένιον τῶν ἐχόντων τὸ Κύτωρον· καὶ νῦν δ' ἔτι Καυκωνίτας εἶναι τινὰς περὶ τὸν 5 Παρθένιον.

6 Ἡ μὲν οὖν Ἡράκλεια πόλις ἐστὶν εὐλίμενος καὶ ἄλλως ἀξιόλογος, ἥ γε καὶ ἀποικίας ἔστειλεν· ἐκείνης γὰρ ἡ τε Χερρόνησος ἀποικος καὶ ἡ Κάλλατις· ἦν τε αὐτόνομος, εἴτ' ἐτυραννήθη χρόνους τινάς, εἴτ' ἡλευθέ- 10 ρωσεν ἑαυτὴν πάλιν· ὕστερον δ' ἐβασιλεύθη γενομένη ὑπὸ τοῖς Ῥωμαίοις· ἐδέξατο δ' ἀποικίαν Ῥωμαίων ἐπὶ μέρει τῆς πόλεως καὶ τῆς χώρας. λαβὼν δὲ παρ' Ἀν- C.543 τωνίου τὸ μέρος τοῦτο τῆς πόλεως Ἀδιατόριξ ὁ Δομνε- κλείου τετράρχου Γαλατῶν υἱός, ὃ κατεῖχον οἱ Ἡρα- 15 κλειῶται, μικρὸν πρὸ τῶν Ἀκτιακῶν ἐπέθετο νύκτωρ τοῖς Ῥωμαίοις καὶ ἀπέσφαξεν αὐτούς, ἐπιτρέψαντος, ὥς ἔφασκεν ἐκεῖνος, Ἀντωνίου· θριαμβευθεὶς δὲ μετὰ τὴν ἐν Ἀκτίῳ νύκην ἐσφάγη μεθ' υἱοῦ· ἡ δὲ πόλις ἐστὶ τῆς Ποντικῆς ἐπαρχίας τῆς συντεταγμένης τῇ 20 Βιθυνίᾳ.

7 Μεταξὺ δὲ Χαλκηδόνος καὶ Ἡρακλείας ῥέουσι πο- ταμοὶ πλείους, ὧν εἰσιν ὃ τε Ψίλλις καὶ ὁ Κάλπας καὶ ὁ Σαγγάριος οὗ μέμνηται καὶ ὁ ποιητής. ἔχει δὲ τὰς πηγὰς κατὰ Σαγγίαν κόμην ἀφ' ἑκατὸν καὶ πεντήκον- 25 τὰ πού σταδίων οὗτος Πεσσινοῦντος· διέξεισι δὲ τῆς ἐπικτήτου Φρυγίας τὴν πλείω, μέρος δέ τι καὶ τῆς Βι- θυνίας ὥστε καὶ τῆς Νικομηδείας ἀπέχειν μικρὸν πλείους ἢ τριακοσίους σταδίους, καθ' ὃ συμβάλλει πο- ταμὸς αὐτῷ Γάλλος ἐκ Μόδρων τὰς ἀρχὰς ἔχων τῆς ἐφ' 30 Ἑλλησπόντῳ Φρυγίας. αὕτη δ' ἐστὶν ἡ αὐτὴ τῇ ἐπι- κτήτῳ, καὶ εἶχον αὐτὴν οἱ Βιθυνοὶ πρότερον. αὐξηθεὶς

δὲ καὶ γενόμενος πλωτός, καίπερ πάλαι ἄπλωτος ὢν, τὴν Βιθυνίαν ὁρίζει πρὸς ταῖς ἐκβολαῖς. πρόκειται δὲ τῆς παραλίας ταύτης καὶ ἡ Θυνία νῆσος. ἐν δὲ τῇ Ἡρακλειώτιδι γίνεται τὸ ἀκόνιτον· διέχει δὲ ἡ πόλις αὕτη τοῦ ἱεροῦ τοῦ Χαλκηδονίου σταδίου χιλίους πού καὶ πεντακοσίους, τοῦ δὲ Σαγγαρίου πεντακοσίους.

Τὸ δὲ Τίειόν ἐστι πολίχνιον οὐδὲν ἔχον μνήμης ἄξιον πλὴν ὅτι Φιλέταιρος ἐντεῦθεν ἦν, ὁ ἀρχηγέτης τοῦ τῶν Ἀτταλικῶν βασιλέων γένους· εἰδ' ὁ Παρθένιος ποταμὸς διὰ χωρίων ἀνθηρῶν φερόμενος καὶ διὰ τοῦτο τοῦ ὀνόματος τούτου τετυχηκώς, ἐν αὐτῇ τῇ Παφλαγονίᾳ τὰς πηγὰς ἔχων· ἔπειτα ἡ Παφλαγονία καὶ οἱ Ἑνετοί. ζητοῦσι δὲ τίνας λέγει τοὺς Ἑνετοὺς ὁ ποιητῆς ὅταν φῇ „Παφλαγόνων δ' ἡγετο Πυλαιμένεος, λᾶσιον κῆρ ἐξ Ἑνετῶν, ὅθεν ἡμιόνων γένος ἀγροτε-
 10 „ράων.“ οὐ γὰρ δείκνυσθαι φασι νῦν Ἑνετοὺς ἐν τῇ Παφλαγονίᾳ· οἱ δὲ κώμην ἐν τῷ Αἰγριαλῷ φασι δέκα σχοίνους ἀπὸ Ἀμάστρεως διέχουσιν. Ζηνόδοτος δὲ „ἐξ
 20 „Ἑνετῆς“ γράφει, καὶ φησὶ δηλοῦσθαι τὴν νῦν Ἀμισόν· ἄλλοι δὲ φύλόν τι τοῖς Καππάδοξιν ὁμορον στρατεῦσαι μετὰ Κιμμερίων, εἴτ' ἐκπεσεῖν εἰς τὸν Ἀδρίαν. τὸ δὲ μάλισθ' ὁμολογούμενόν ἐστιν ὅτι ἀξιολογώτατον ἦν τῶν Παφλαγόνων φύλον οἱ Ἑνετοί, ἐξ οὗ ὁ Πυλαι-
 25 μένης ἦν· καὶ δὴ καὶ συνεστράτευσαν οὗτοι αὐτῷ πλείστοι, ἀποβαλόντες δὲ τὸν ἡγεμόνα διέβησαν εἰς τὴν Θράκην μετὰ τὴν Τροίης ἄλωσιν, πλανώμενοι δ' εἰς τὴν νῦν Ἑνετικὴν ἀφίκοντο. τινὲς δὲ καὶ Ἀντήνορα καὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ κοινωνῆσαι τοῦ στόλου τούτου C.544
 30 φασι καὶ ἰδρυθῆναι κατὰ τὸν μυχὸν τοῦ Ἀδρίου, καθάπερ ἐμνήσθημεν ἐν τοῖς Ἰταλικοῖς. τοὺς μὲν οὖν

Ἐνετοὺς διὰ τοῦτ' ἐκλιπεῖν εἰκὸς καὶ μὴ δείκνυσθαι ἐν τῇ Παφλαγονίᾳ.

- 9 Τοὺς δὲ Παφλαγόνους πρὸς ἕω μὲν ὀρίζει ὁ Ἄλυσ ποταμός „[ὅς] ῥέων ἀπὸ μεσημβρίας μεταξὺ Σύρων „τε καὶ Παφλαγόνων ἐξίει“ κατὰ τὸν Ἡρόδοτον „ἔς 5 „τὸν Εὐξείνιον καλεόμενον πόντον,“ Σύρους λέγοντα τοὺς Καππάδοκας· καὶ γὰρ ἔτι καὶ νῦν Λευκόσυροι καλοῦνται, Σύρων καὶ τῶν ἕξω τοῦ Ταύρου λεγομένων· κατὰ δὲ τὴν πρὸς τοὺς ἐντὸς τοῦ Ταύρου σύγκρισιν, ἐκείνων ἐπικεκαυμένων τὴν χροάν τούτων δὲ 10 μὴ, τοιαύτην τὴν ἐπωνυμίαν γενέσθαι συνέβη· καὶ Πίνδαρός φησιν ὅτι αἱ Ἀμαζόνες „Σύριον εὐρυναίχμαν „δίεπον στρατόν,“ τὴν ἐν τῇ Θेमίσκυρα κατοικίαν οὕτω δηλῶν. ἡ δὲ Θेमίσκυρά ἐστιν τῶν Ἀμισηνῶν, αὕτη δὲ Λευκοσύρων τῶν μετὰ τὸν Ἄλυν. πρὸς ἕω 15 μὲν τοίνυν ὁ Ἄλυσ ὄριον τῶν Παφλαγόνων, πρὸς νότον δὲ Φρύγες καὶ οἱ ἐποικήσαντες Γαλάται, πρὸς δύσιν δὲ Βιθυννοὶ καὶ Μαριανδυνοὶ (τὸ γὰρ τῶν Κανκῶνων γένος ἐξέφθαρται τελέως πάντοθεν), πρὸς ἄρκτον δὲ ὁ Εὐξείνιος ἔστι. τῆς δὲ χώρας ταύτης διηρημένης 20 εἰς τε τὴν μεσόγαιαν καὶ τὴν ἐπὶ θαλάττῃ διατείνουσιν ἀπὸ τοῦ Ἄλως μέχρι Βιθυννίας, ἑκατέραν τὴν μὲν παραλίαν ἕως τῆς Ἡρακλείας εἶχεν ὁ Εὐπάτωρ, τῆς δὲ μεσογαίας τὴν μὲν ἐγγυτάτῳ ἔσχεν, ἧς τινα καὶ πέραν τοῦ Ἄλως διέτεινε (καὶ μέχρι δεῦρο τοῖς Ῥωμαίοις ἡ 25 Ποντικὴ ἐπαρχία ἀφώρισται), τὰ λοιπὰ δ' ἦν ὑπὸ δυνάσταις καὶ μετὰ τὴν Μιθριδάτου κατάλυσιν. περὶ μὲν δὴ τῶν ἐν τῇ μεσογαίᾳ Παφλαγόνων ἐροῦμεν ὕστερον τῶν μὴ ὑπὸ τῷ Μιθριδάτῃ, νῦν δὲ πρόκειται τὴν ὑπ' ἐκείνῳ χώραν, κληθεῖσαν δὲ Πόντον, διελθεῖν.

30

- Μετὰ δὴ τὸν Παρθένιον ποταμὸν ἔστιν Ἀμα- 10
στρις ὁμώνυμος τῆς συνφοικυίας πόλις· ἴδρυται δ'
ἐπὶ χειρρονήσου λιμένας ἔχουσα τοῦ ἰσθμοῦ ἐκατέρω-
θεν· ἦν δ' ἡ Ἀμαστρις γυνὴ μὲν Διονυσίου τοῦ Ἡρα- 5
κλείας τυράννου, θυγάτηρ δὲ Ὀξυάδρου τοῦ Δαρείου
ἀδελφοῦ τοῦ κατὰ Ἀλέξανδρον. ἐκείνη μὲν οὖν ἐκ τετ-
τάρων κατοικιῶν συνώκισε τὴν πόλιν, ἐκ τε Σησάμου
καὶ Κυτῶρου καὶ Κρωμνῆς (ὧν καὶ Ὅμηρος μέμνηται
ἐν τῷ Παφλαγονικῷ διακόσμῳ), τετάρτης δὲ τῆς Τίου· 10
ἀλλ' αὕτη μὲν ταχὺ ἀπέστη τῆς κοινωνίας, αἱ δὲ ἄλλαι
συνέμειναν, ὧν ἡ Σήσαμος ἀκρόπολις τῆς Ἀμάστρεως
λέγεται. τὸ δὲ Κυτῶρον ἐμπόριον ἦν ποτε Σινωπέων,
ὠνόμασται δ' ἀπὸ Κυτῶρου τοῦ Φοῖβου παιδός, ὡς
Ἐφορός φησι. πλείστη δὲ καὶ ἀρίστη πύξος φύεται κατὰ 15
τὴν Ἀμαστριανήν, καὶ μάλιστα περὶ τὸ Κυτῶρον. ὁ δὲ
Αἰγιαλὸς ἔστι μὲν ἡὼν μακρὰ πλειόνων ἢ ἑκατὸν στα-
δίων, ἔχει δὲ καὶ κώμην ὁμώνυμον, ἧς μέμνηται ὁ ποι-
ητὴς ὅταν φῇ „Κρωμνάν τ' Αἰγιαλόν τε καὶ ὑψηλοὺς
„Ἐρυθίνους.“ γράφουσι δὲ τινες „Κρωμναν Κωβίαλόν 20
„τε.“ Ἐρυθίνους δὲ λέγεσθαί φασι τοὺς νῦν Ἐρυθρί-
νους ἀπὸ τῆς χροῆς· δύο δ' εἰσὶ σκόπελοι. μετὰ δὲ Αἰ-
γιαλὸν Κάραμβις, ἄκρα μεγάλη πρὸς τὰς ἄρκτους ἀνα-
τεταμένη καὶ τὴν Σκυθικὴν χειρρόνησον. ἐμνήσθημεν
δ' αὐτῆς πολλάκις καὶ τοῦ ἀντικειμένου αὐτῇ Κριοῦ με- 25
τώπου, διθάλαττον ποιοῦντος τὸν Εὐξεῖνον πόντον.
μετὰ δὲ Κάραμβιν Κίνωλις καὶ Ἀντικίνωλις καὶ Ἀβώ-
νου τεῖχος πολίχνη, καὶ Ἀρμένη ἐφ' ἣ παροϊμιάζου-
ται „ὅστις ἔργον οὐδὲν εἶχεν Ἀρμένην ἐτείχισεν.“ ἔστι
δὲ κώμη τῶν Σινωπέων ἔχουσα λιμένα.
- 30 Εἴτ' αὐτῇ Σινώπη, σταδίου πεντήκοντα τῆς Ἀρ- 11

μένης διέχουσα, ἀξιολογωτάτη τῶν ταύτη πόλεων. ἔκτισαν μὲν οὖν αὐτὴν Μιλήσιοι, κατασκευασαμένη δὲ ναυτικὸν ἐπῆρχε τῆς ἐντὸς Κυανέων θαλάττης, καὶ ἔξω δὲ πολλῶν ἀγῶνων μετείχε τοῖς Ἑλλησιν· αὐτονομηθεῖσα δὲ πολὺν χρόνον οὐδὲ διὰ τέλους ἐφύλαξε 5 τὴν ἐλευθερίαν, ἀλλ' ἐκ πολιορκίας ἑάλω καὶ ἐδούλευσε Φαρνάκῃ πρῶτον, ἔπειτα τοῖς διαδεξαμένοις ἐκείνουν μέχρι τοῦ Εὐπάτορος καὶ τῶν καταλυσάντων Ῥωμαίων ἐκείνουν. ὁ δὲ Εὐπάτωρ καὶ ἐγεννήθη ἐκεῖ καὶ ἐτράφη· διαφερόντως δὲ ἐτίμησεν αὐτὴν μητρόπολιν 10 τε τῆς βασιλείας ὑπέλαβεν. ἔστι δὲ καὶ φύσει καὶ προνοίᾳ κατασκευασμένη καλῶς· Ἰδρυται γὰρ ἐπὶ αὐχένι χερρονήσου τινός, ἐκατέρωθεν δὲ τοῦ ἰσθμοῦ λιμένες καὶ ναύσταθμα καὶ πηλαμυδεῖα θαναμαστά, περὶ ὧν εἰρήκαμεν ὅτι δευτέραν θήραν οἱ Σινωπεῖς ἔχουσι, τρί- 15 την δὲ Βυζάντιοι· καὶ κύκλῳ δ' ἡ χερρόνησος προβέβληται ῥαχιώδεις ἀκτὰς ἐχούσας καὶ κοιλάδας τινὰς ὥστανεῖ βόθρους πετρίνους, οὓς καλοῦσι χοινικίδας· πληροῦνται δὲ οὗτοι μετεωρισθείσης τῆς θαλάττης, ὥς καὶ διὰ τοῦτο οὐκ εὐπρόσιτον τὸ χωρίον καὶ δια 20 τὸ πᾶσαν τὴν τῆς πέτρας ἐπιφάνειαν ἐχινώδη καὶ ἀνεπίβατον εἶναι γυμνῷ ποδί· ἄνωθεν μέντοι καὶ ὑπὲρ τῆς πόλεως εὐγεῶν ἔστι τὸ ἕδαφος καὶ ἀγροκηπίοις κε- C.546 κόσμηται πυκνοῖς, πολὺ δὲ μᾶλλον τὰ προάστεια. αὐτὴ δ' ἡ πόλις τετελείχεται καλῶς, καὶ γυμνασίῳ δὲ καὶ ἀγο- 25 ρᾷ καὶ στοαῖς κεκόσμηται λαμπρῶς. τοιαύτη δὲ οὖσα δις ὅμως ἑάλω, πρότερον μὲν τοῦ Φαρνάκου παρὰ δόξαν αἰφνιδίως ἐπιπεσόντος, ὕστερον δὲ ὑπὸ Λευκόλου καὶ τοῦ ἐγκαθημένου τυράννου καὶ ἐντὸς ἅμα καὶ ἐκτὸς πολιορκουμένη· ὁ γὰρ ἐγκατασταθεὶς ὑπὸ τοῦ 30 βασιλέως φρουράρχος Βακχίδης ὑπονοῶν αἰεὶ τινα προδοσίαν ἐκ τῶν ἐνδοθεν καὶ πολλὰς αἰκίας καὶ σφα-

γὰς ποιῶν, ἀπαγορεῦσαι τοὺς ἀνθρώπους ἐποίησε
 πρὸς ἄμφω μὴτ' ἀμύνασθαι δυναμένους γενναίως
 μήτε προσθέσθαι κατὰ συμβάσεις. ἐάλωσαν δ' οὖν·
 καὶ τὸν μὲν ἄλλον κόσμον τῆς πόλεως διεφύλαξεν ὁ
 5 Λεύκολλος, τὴν δὲ τοῦ Βιλλάρου σφαῖραν ἦρε καὶ τὸν
 Αὐτόλυκον, Σθένιδος ἔργον, ὃν ἐκεῖνοι οἰκιστὴν ἐνό-
 μιζον καὶ ἐτίμων ὡς θεόν· ἦν δὲ καὶ μαντεῖον αὐτοῦ·
 δοκεῖ δὲ τῶν Ἰάσονι συμπλευσάντων εἶναι καὶ κατα-
 σχεῖν τοῦτον τὸν τόπον. εἴθ' ὕστερον Μιλήσιοι τὴν
 10 εὐφυΐαν ἰδόντες καὶ τὴν ἀσθένειαν τῶν ἐνοικούντων
 ἐξιτιάσαντο καὶ ἐποίκους ἔστειλαν· νυνὶ δὲ καὶ Ῥω-
 μαίων ἀποικίαν δέδεκται, καὶ μέρος τῆς πόλεως καὶ τῆς
 χώρας ἐκείνων ἐστί. διέχει δὲ τοῦ μὲν Ἱεροῦ τρισχιλί-
 ους καὶ πεντακοσίους, ἀφ' Ἡρακλείας δὲ δισχιλίους,
 15 Καράμβεως δὲ ἑπτακοσίους σταδίους. ἄνδρας δὲ ἐξή-
 νεγκεν ἀγαθοὺς, τῶν μὲν φιλοσόφων Διογένη τὸν κυ-
 νικὸν καὶ Τιμόθεον τὸν Πατρίωνα, τῶν δὲ ποιητῶν
 Δίφιλον τὸν κωμικόν, τῶν δὲ συγγραφέων Βάτωνα
 τὸν πραγματευθέντα τὰ Περσικά.
 20 Ἐντεῦθεν δ' ἐφεξῆς ἡ τοῦ Ἄλως ἐκβολὴ ποτα- 12
 μοῦ· ὠνόμασται δ' ἀπὸ τῶν ἁλῶν ἃς παραρρεῖ· ἔχει
 δὲ τὰς πηγὰς ἐν τῇ μεγάλῃ Καππαδοκίᾳ τῆς Ποντικῆς
 πλησίον κατὰ τὴν Καμισσηνὴν, ἐνεχθεὶς δ' ἐπὶ δύσιν
 πολὺς, εἴτ' ἐπιστρέψας πρὸς τὴν ἄρκτον διὰ τε Γαλα-
 25 τῶν καὶ Παφλαγόνων ὁρίζει τούτους τε καὶ τοὺς Λευ-
 κοσύρους. ἔχει δὲ καὶ ἡ Σινωπῆτις καὶ πᾶσα ἡ μέχρι
 Βιθυνίας ὀρεινὴ ἡ ὑπερκειμένη τῆς λεχθείσης παρα-
 λίας ναυπηγήσιμον ὕλην ἀγαθὴν καὶ εὐκατακόμιστον.
 ἡ δὲ Σινωπῆτις καὶ σφένδαμνον φύει καὶ ὀροκάρυον,
 30 ἐξ ὧν τὰς τραπέζας τέμνουσιν· ἅπαντα δὲ καὶ ἐλαιόφυ-
 τὸς ἐστίν ἡ μικρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης γεωργουμένη.

Μετὰ δὲ τὴν ἐκβολὴν τοῦ Ἄλως ἡ Γαζηλωντίς 13
 24*

ἐστὶ μέχρι τῆς Σαραμηνῆς, εὐδαίμων χώρα καὶ πεδιάς
 πᾶσα καὶ πᾶμφορος· ἔχει δὲ καὶ προβατεῖαν ὑποδι-
 φθέρου καὶ μαλακῆς ἐρέας, ἥς καθ' ὅλην τὴν Καππα-
 δοκίαν καὶ τὸν Πόντον σφόδρα πολλὴ σπάνις ἐστί· γί-
 C.547νονται δὲ καὶ ζόρκες, ὧν ἀλλαχοῦ σπάνις ἐστί. ταύτης δ
 δὲ τῆς χώρας τὴν μὲν ἔχουσιν Ἀμισηνοί, τὴν δ' ἔδωκε
 Δηιοτάρῳ Πομπήιος, καθάπερ καὶ τὰ περὶ Φαρνακίαν
 καὶ τὴν Τραπεζουσίαν μέχρι Κολχίδος καὶ τῆς μικρᾶς
 Ἀρμενίας· καὶ τούτων ἀπέδειξεν αὐτὸν βασιλέα, ἔχοντα
 καὶ τὴν πατρῴαν τετραρχίαν τῶν Γαλατῶν, τοὺς Το- 10
 λιστοβωγίους. ἀποθανόντος δ' ἐκείνου πολλὰ διαδο-
 χαι τῶν ἐκείνου γεγόνασιν.

14 Μετὰ δὲ τὴν Γαζηλῶνα ἡ Σαραμηνὴ καὶ Ἀμισὸς
 πόλις ἀξιόλογος, διέχουσα τῆς Σινώπης περὶ ἑνακο-
 σίους σταδίους. φησὶ δ' αὐτὴν Θεόπομπος πρῶτους 15
 Μιλησίους κτίσαι. Καππαδόκων ἄρχοντα, τρί-
 τον δ' ὑπ' Ἀθηνοκλέους καὶ Ἀθηναίων ἐποικισθεῖσαν
 Πειραιᾶ μετονομασθῆναι. καὶ ταύτην δὲ κατέσχον οἱ
 βασιλεῖς, ὁ δ' Εὐπάτωρ ἐκόσμησεν ἱεροῖς καὶ προσέ-
 κτισε μέρος. Λεύκολλος δὲ καὶ ταύτην ἐπολιόρησεν, 20
 εἶθ' ὕστερον Φαρνάκης ἐκ Βοσπόρου διαβάς· ἔλευθε-
 ρωθείσαν δ' ὑπὸ Καίσαρος τοῦ θεοῦ παρέδωκεν Ἀν-
 τώνιος βασιλεῦσιν· εἶθ' ὁ τύραννος Στράτων κακῶς
 αὐτὴν διέθηκεν· εἶτ' ἡλευθερώθη πάλιν μετὰ τὰ Ἀκτι-
 ακὰ ὑπὸ Καίσαρος τοῦ Σεβαστοῦ, καὶ νῦν εὖ συνέ- 25
 στηκεν. ἔχει δὲ τὴν τε ἄλλην χώραν καλὴν καὶ τὴν Θε-
 μίσκυραν τὸ τῶν Ἀμαζόνων οἰκητήριον, καὶ τὴν Σι-
 δήνην.

15 Ἔστι δὲ ἡ Θεμίσκυρα πεδίον τῇ μὲν ὑπὸ τοῦ πε-
 λάγους κλυζόμενον, ὅσον ἐξήκοντα σταδίους τῆς πό- 30
 λεως διέχον, τῇ δ' ὑπὸ τῆς ὀρεινῆς εὐδένδρου καὶ δι-
 αρρύτου ποταμοῖς ἀντόθεν τὰς πηγὰς ἔχουσιν. ἐκ μὲν

- οὖν τούτων πληρουμένος ἀπάντων εἰς ποταμὸς δι-
 ἐξεισι τὸ πεδῖον Θερμαῶδων καλούμενος· ἄλλος δὲ τού-
 τῳ πᾶριςος ῥέων ἐκ τῆς καλουμένης Φαναροίας τὸ αὐτὸ
 διέξεισι πεδῖον· καλεῖται δὲ Ἴρις. ἔχει δὲ τὰς πηγὰς ἐν
 5 αὐτῷ τῷ Πόντῳ, ὅυεις δὲ διὰ πόλεως μέσης Κομάνων
 τῶν Ποντικῶν καὶ διὰ τῆς Λαζικωνίτιδος εὐδαίμονος
 πεδίου πρὸς δύσιν, εἴτ' ἐπιστρέφει πρὸς τὰς ἄρκτους
 παρ' αὐτὰ τὰ Γαζίουρα, παλαιὸν βασίλειον, νῦν δ'
 ἔρημον· εἴτα ἀνακάμπει πάλιν πρὸς ἕω παραλαβὼν
 10 τὸν τε Σκύλακα καὶ ἄλλους ποταμούς, καὶ παρ' αὐτὸ
 τὸ τῆς Ἀμασειας ἐνεχθεὶς τεῖχος, τῆς ἡμετέρας πατρί-
 δος, πόλεως ἐρυμνοτάτης, εἰς τὴν Φανάροϊαν πρόει-
 σιν· ἐνταῦθα δὲ συμβαλὼν ὁ Λύκος αὐτῷ τὰς ἀρχὰς
 ἐξ Ἀρμενίας ἔχων γίνεται καὶ αὐτὸς Ἴρις· εἴθ' ἡ Θε-
 15 μίσκυρα ὑποδέχεται τὸ ῥεῦμα καὶ τὸ Ποντικὸν πέλα-
 γος. διὰ δὲ τοῦτο ἐνδροσὸν ἐστὶ καὶ ποάξον ἀεὶ τὸ πε-
 δῖον τοῦτο τρέφειν ἀγέλας βοῶν τε ὁμοίως καὶ ἵππων
 δυνάμενον, σπόρον δὲ πλεῖστον δέχεται τὸν ἐκ τῆς ἐλύ-
 μου καὶ κέγχρου, μᾶλλον δὲ ἀνέκλειπτον· αὐχμοῦ γάρ
 20 ἐστὶ κρεῖττων ἢ εὐνδρία παντός, ὥστ' οὐδὲ λιμὸς κα-
 θικνεῖται τῶν ἀνθρώπων τούτων οὐδ' ἄπαξ· τοσαύ-
 την δ' ὁπώραν ἐκδίδωσιν ἢ παρόρειος τὴν αὐτοφυῆ
 καὶ ἀγρίαν σταφυλῆς τε καὶ ὄχνης καὶ μήλου καὶ τῶν
 καρπωδῶν ὥστε κατὰ πᾶσαν τοῦ ἔτους ὥραν ἀφθόνως
 25 εὐπορεῖν τοὺς ἐξιόντας ἐπὶ τὴν ὕλην, τοτὲ μὲν ἔτι κρε-
 μαμένων τῶν καρπῶν ἐν τοῖς δένδροις, τοτὲ δ' ἐν τῇ
 πεπτωκυῖα φυλλάδι καὶ ὑπ' αὐτῇ κειμένων βαθεία καὶ
 πολλῇ κεχυμένη. συχνὰ δὲ καὶ θήραι παντοίων ἀγρευ-
 μάτων διὰ τὴν εὐπορίαν τῆς τροφῆς.
- 30 Μετὰ δὲ τὴν Θεμίσκυράν ἐστὶν ἡ Σιδήνη, πεδῖον 16
 εὐδαιμον, οὐχ ὁμοίως δὲ κατάρρυντον, ἔχον χωρία
 ἐρυμνὰ ἐπὶ τῇ παραλίᾳ, τὴν τε Σίδην ἀφ' ἧς ὠνομά-

σθη Σιδήνην, καὶ Χάβακα καὶ Φάβδα· μέχρι μὲν δὴ δεῦρο Ἀμισσηνῇ. ἄνδρες δὲ γεγόνασιν ἄξιοι μνήμης κατὰ παιδείαν ἐνταῦθα μαθηματικοὶ μὲν Δημήτριος ὁ τοῦ Ῥαθηνοῦ καὶ Διονυσόδωρος ὁ μώνυμος τῷ Μηλίῳ γεωμέτρῃ, γραμματικὸς δὲ Τυραννίων οὗ ἡμεῖς 5 ἠκροασάμεθα.

- 17 Μετὰ δὲ τὴν Σιδήνην ἡ Φαρνακία ἐστὶν ἐρυμνὸν πόλισμα, καὶ μετὰ ταῦτα ἡ Τραπεζοῦς πόλις Ἑλληνίς, εἰς ἣν ἀπὸ τῆς Ἀμισοῦ περὶ δισχιλλοὺς καὶ διακοσίους σταδίους ἐστὶν ὁ πλοῦς· εἴτ' ἐνθεν εἰς Φᾶσιν χίλιοι 10 πον καὶ τετρακόσιοι, ὥστε οἱ σύμπαντες ἀπὸ τοῦ Ἱεροῦ μέχρι Φάσιδος περὶ ὀκτακισχιλλοὺς σταδίους εἰσὶν ἡ μικρῷ πλείους ἢ ἐλάττους. ἐν δὲ τῇ παραλίᾳ ταύτῃ ἀπὸ Ἀμισοῦ πλέουσιν ἡ Ἡράκλειος ἄκρα πρῶτον ἐστίν, εἴτ' ἄλλη ἄκρα Ἰασόνιον καὶ ὁ Γενήτης, εἴτα Κοτύωρα 15 πόλιν ἐξ ἧς συνωκίσθη ἡ Φαρνακία, εἴτ' Ἰσχύοπολις κατερηριμμένη, εἴτα κόλπος ἐν ᾧ Κερασσοὺς τε καὶ Ἑρμώνασσα κατοικίαι μέτραι, εἴτα τῆς Ἑρμωνάσσης πλησίον ἡ Τραπεζοῦς, εἴθ' ἡ Κολχίς· ἐνταῦθα δὲ πον ἐστὶ καὶ Ζυγόπολις τις λεγομένη κατοικία. περὶ μὲν 20 οὖν τῆς Κολχίδος εἰρηται καὶ τῆς ὑπερκειμένης παραλίας.

- 18 Τῆς δὲ Τραπεζοῦντος ὑπέρκεινται καὶ τῆς Φαρνακίας Τιβαρανοὶ τε καὶ Χαλδαῖοι καὶ Σάννοι, οὓς πρότερον ἐκάλουν Μάκρωνας, καὶ ἡ μικρὰ Ἀρμενία· 25 καὶ οἱ Ἀππᾶται δὲ πως πλησιάζουσι τοῖς χωρίοις τούτοις οἱ πρότερον Κερκίται. διήκει δὲ διὰ τούτων ὁ τε Σκυδίσσης ὄρος τραχύτατον συνάπτον τοῖς Μοσχικοῖς ὄρεσι τοῖς ὑπὲρ τῆς Κολχίδος, οὗ τὰ ἄκρα κατέχουσιν οἱ Ἑπτακωμήται, καὶ ὁ Παρναύθης ὁ μέχρι τῆς μικρᾶς 30 Ἀρμενίας ἀπὸ τῶν κατὰ Σιδήνην καὶ Θερμίσκυραν τόπων διατείνων καὶ ποιῶν τὸ ξωθινὸν τοῦ Πόντου πλε-

ρόν. εἰσὶ δ' ἅπαντες μὲν οἱ ὄρειοι τούτων ἄγριοι τε—C.549
 λέως, ὑπερβέβληνται δὲ τοὺς ἄλλους οἱ Ἑπτακωμήται·
 τινὲς δὲ καὶ ἐπὶ δένδρεσιν ἢ πυργίοις οἰκοῦσι, διὸ καὶ
 Μοσυνοίκους ἐκάλουν οἱ παλαιοί, τῶν πύργων μωσύ-
 5 νων λεγομένων. ζῶσι δ' ἀπὸ θηρίων σαρκῶν καὶ τῶν
 ἀκροδρύων, ἐπιτίθενται δὲ καὶ τοῖς ὁδοιποροῦσι κα-
 ταπηδήσαντες ἀπὸ τῶν ἰκρίων. οἱ δὲ Ἑπτακωμήται
 τρεῖς Πομπηίου σπείρας κατέκοψαν διεξιούσας τὴν
 ὄρεινὴν, κεράσαντες κρατῆρας ἐν ταῖς ὁδοῖς τοῦ μαι-
 10 νομένου μέλιτος, ὃ φέρουσιν οἱ ἀκρεμόνες τῶν δέν-
 δρων· πιοῦσι γὰρ καὶ παρακόψασιν ἐπιθήμενοι ῥα-
 δίως διεχειρίσαντο τοὺς ἀνθρώπους. ἐκαλοῦντο δὲ
 τούτων τινὲς τῶν βαρβάρων καὶ Βύζηρες.

Οἱ δὲ νῦν Χαλδαῖοι Χάλυβες τὸ παλαιὸν ὠνομά- 19
 15 ζοντο, καθ' οὓς μάλιστα ἡ Φαρνακία ἰδρυται, κατὰ
 θάλατταν μὲν ἔχουσα εὐφυΐαν τὴν ἐκ τῆς πηλαμυδείας
 (πρώτιστα γὰρ ἀλίσκεται ἐνταῦθα τὸ ὄψον τοῦτο), ἐκ
 δὲ τῆς γῆς τὰ μέταλλα νῦν μὲν σιδήρου πρότερον δὲ
 καὶ ἀργύρου. ὅλως δὲ κατὰ τοὺς τόπους τούτους ἡ πα-
 20 ραλία στενὴ τελέως ἐστίν· ὑπέρεκειται γὰρ εὐθύς τὰ
 ὄρη μετὰλλων πλήρη καὶ δρυμῶν, γεωργεῖται δ' οὐ
 πολλά· λείπεται δὴ τοῖς μὲν μεταλλευταῖς ἐκ τῶν με-
 τάλλων ὁ βίος, τοῖς δὲ θαλαττουργοῖς ἐκ τῆς ἀλιείας
 καὶ μάλιστα τῶν πηλαμύδων καὶ τῶν δελφίνων· ἐπακο-
 25 λουθοῦντες γὰρ ταῖς ἀγέλαις τῶν ἰχθύων, κορδύλης τε
 καὶ θύννης καὶ αὐτῆς τῆς πηλαμύδος, πιαίνονται τε καὶ
 εὐάλωτοι γίνονται διὰ τὸ πλησιάζειν τῇ γῇ προαλέστε-
 ρον δελεαζόμενοι * οὓς μόνοι οὗτοι κατακόπτουσι τοὺς
 δελφίνας καὶ τῷ στέατι πολλῷ χρῶνται πρὸς ἅπαντα.
 30 Τούτους οὖν οἶμαι λέγειν τὸν ποιητὴν Ἀλιζώνους ἅ
 ἐν τῷ μετὰ τοὺς Παφλαγόνας καταλόγῳ „αὐτὰρ Ἀλι-
 „ζώνων Ὀδῖος καὶ Ἐπίστροφος ἦρχον τηλόθεν ἐξ Ἀλύ-

„βῆς, ὅθεν ἀργύρου ἐστὶ γενέθλη.“ ἤτοι τῆς γραφῆς
 μετατεθείσης ἀπὸ τοῦ „τηλόθεν ἐκ Χαλύβης,“ ἢ τῶν
 ἀνθρώπων πρότερον Ἀλύβων λεγομένων ἀντὶ Χαλύ-
 βων· οὐ γὰρ νῦν μὲν δυνατὸν γέγονεν ἐκ Χαλύβων
 Χαλδαίους λεχθῆναι, πρότερον δ' οὐκ ἔνῃν ἀντὶ Ἀλύ- 5
 βων Χάλυβας, καὶ ταῦτα τῶν ὀνομάτων μεταπτώσεις
 πολλὰς δεχομένων καὶ μάλιστα ἐν τοῖς βαρβάροις·
 Σίντιες γὰρ ἐκαλοῦντο τινες τῶν Θρακῶν, εἶτα Σιντοί,
 εἶτα Σάιοι, παρ' οἷς φησιν Ἀρχίλοχος τὴν ἀσπίδα φῦ-
 ψαι „ἀσπίδα μὲν Σαίων τις ἀνείλετο, τὴν παρὰ θά- 10
 „μυρ ἔντος ἀμώμητον κάλλιπον οὐκ ἐθέλων.“ οἱ δ'
 C.550 αὐτοὶ οὗτοι Σαπαῖοι νῦν ὀνομάζονται· πάντες γὰρ
 οὗτοι περὶ Ἀβδηρα τὴν οἰκησιν εἶχον καὶ τὰς περὶ Αἴ-
 μνον νήσους· ὁμοίως δὲ καὶ Βρυῖοι καὶ Βρύγες καὶ
 Φρύγες οἱ αὐτοί, καὶ Μυσοὶ καὶ Μαίονες καὶ Μήονες· 15
 οὐ χρεῖα δὲ πλεονάζειν. ὑπονοεῖ δὲ καὶ ὁ Σκήψιος τὴν
 τοῦ ὀνόματος μετάπτωσιν ἐξ Ἀλύβων εἰς Χάλυβας, τὰ
 δ' ἐξῆς καὶ τὰ συνφθὰ οὐ νοῶν, καὶ μάλιστα ἐκ τίνος
 Ἀλιζώνους εἰρηκε τοὺς Χάλυβας, ἀποδοκιμάζει τὴν
 δόξαν· ἡμεῖς δ' ἀντιπαραθέντες τῇ ἡμετέρᾳ τὴν ἐκεῖ- 20
 21 νου καὶ τὰς τῶν ἄλλων ὑπολήψεις σκοπῶμεν. οἱ μὲν
 [οὖν] μεταγράφουσιν „Ἀλαζώνων“ οἱ δ' „Ἀμαζώνων“
 ποιοῦντες, τὸ δ' „ἐξ Ἀλύβης“ „ἐξ Ἀλόπης“ ἢ „ἐξ Ἀλό-
 „βῆς,“ τοὺς μὲν Σκύθας Ἀλαζῶνας φάσκοντες ὑπὲρ
 τὸν Βορυσθένη καὶ Καλλιπίδας καὶ ἄλλα ὀνόματα, 25
 ἅπερ Ἑλλάνικός τε καὶ Ἡρόδοτος καὶ Εὐδοξος κατε-
 φλυάρησαν ἡμῶν, τοὺς δ' Ἀμαζῶνας μεταξὺ Μυσίας
 καὶ Καρίας καὶ Αὐδίας, καθάπερ Ἐφορος νομίζει, πλη-
 σίον Κύμης τῆς πατρίδος αὐτοῦ· καὶ τοῦτο μὲν ἔχε-
 ταί τινος λόγου τυχὸν ἴσως· εἴη γὰρ ἂν λέγων τὴν ὑπὸ 30

τῶν Αἰολέων καὶ Ἰώνων οἰκισθεῖσαν ὕστερον, πρότερον δ' ὑπὸ Ἀμαζόνων, [ᾧν] καὶ ἐπωνύμους πόλεις τινὰς εἶναι φασι· καὶ γὰρ Ἐφεσον καὶ Σμύρναν καὶ Κύμην καὶ Μύριναν. ἡ δὲ Ἀλύβη ἢ ὥς τινες Ἀλόπη ἢ
 5 Ἀλόβη πῶς ᾧν ἐν τοῖς τόποις τούτοις ἐξητάζετο; πῶς δὲ τηλόθεν; πῶς δ' ἡ τοῦ ἀργύρου γενέσθλη;

Ταῦτα μὲν ἀπολύεται τῇ μεταγραφῇ· γράφει γὰρ 22 οὕτως „αὐτὰρ Ἀμαζόνων Ὀδῖος καὶ Ἐπίστροφος ἦρχον, ἐλθόντ' ἐξ Ἀλόπης, ὅθ' Ἀμαζονίδων γένος ἐστί.“
 10 ταῦτα δ' ἀπολυσάμενος εἰς ἄλλο ἐμπέπτωκε πλάσμα· οὐδαμοῦ γὰρ ἐνθάδε εὐρίσκεται Ἀλόπη· καὶ ἡ μεταγραφὴ δὲ παρὰ τὴν τῶν ἀντιγράφων τῶν ἀρχαίων πίστιν καινοτομουμένη ἐπὶ τοσοῦτον σχεδιασμῷ ἔοικεν. ὁ δὲ Σκήψιος οὔτε τὴν τούτου δόξαν ἔοικεν ἀποδεξά-
 15 μενος οὔτε τῶν περὶ τὴν Παλλήνην τοὺς Ἀλιζώνους ὑπολαβόντων, ᾧν ἐμνήσθημεν ἐν τοῖς Μακεδονικοῖς. ὁμοίως διαπορεῖ καὶ πῶς ἐκ τῶν ὑπὲρ τὸν Βορυσθίνην νομάδων ἀφῆχθαι συμμαχίαν τοῖς Τρωσὶ τις νομίσειεν, ἐπαινεῖ δὲ μάλιστα τὴν Ἑκαταίου τοῦ Μιλησίου καὶ
 20 Μενεκράτους τοῦ Ἐλαΐτου τῶν Ξενοκράτους γνωρίμων ἀνδρὸς δόξαν καὶ τὴν Παλαιφάτου, ᾧν ὁ μὲν ἐν γῆς περιόδῳ φησὶν „ἐπὶ δ' Ἀλαζία πόλι ποταμὸς Ὀδρύσης ῥέων διὰ Μυγδονίης πεδίου ἀπὸ δύσιος ἐκ τῆς „λίμνης τῆς Δασκυλίτιδος ἐς Πύνδακον ἐσβάλλει.“ ἔρη-C.551
 25 μόν δὲ εἶναι νῦν τὴν Ἀλαζίαν λέγει, κώμας δὲ πολλὰς τῶν Ἀλαζώνων οἰκεῖσθαι, δι' ᾧν Ὀδρύσης ῥεῖ, ἐν δὲ ταύταις τὸν Ἀπόλλωνα τιμᾶσθαι διαφερόντως, καὶ μάλιστα κατὰ τὴν ἐφορίαν τῶν Κυζικηνῶν. ὁ δὲ Μενεκράτης ἐν τῇ Ἑλλησποντιακῇ περιόδῳ ὑπερκεῖσθαι
 30 λέγει τῶν περὶ τὴν Μύρλειαν τόπων ὀρεινὴν συνεχῆ· ἣν κατῴκει τὸ τῶν Ἀλιζώνων ἔθνος· δεῖ δέ, φησί, γραφεῖν ἐν τοῖς δύο λάβδα, τὸν δὲ ποιητὴν ἐν τῷ ἐν

γράφειν διὰ τὸ μέτρον. ὁ δὲ Παλαίφατός φησιν ἐξ Ἀλα-
 ζώνων τῶν ἐν τῇ Ἀλόπῃ οἰκούντων, νῦν δὲ Ζελεία, τὸν
 Ὀδίων καὶ τὸν Ἐπίστροφον στρατεῦσαι. τί οὖν ἄξιον
 ἐπαινεῖν τὰς τούτων δόξας; χωρὶς γὰρ τοῦ τὴν ἀρχαίαν
 γραφὴν καὶ τούτους κινεῖν οὔτε τὰ ἀργυρεῖα δεικνύ- 5
 ουσιν, οὔτε ποῦ τῆς Μυρλεατίδος Ἀλόπη ἐστίν, οὔτε
 πῶς οἱ ἐνθενδε ἀφιγμένοι εἰς Ἴλιον τηλόθεν ἦσαν, εἰ
 καὶ δοθείη Ἀλόπην τινὰ γεγονέναι ἢ Ἀλαζίαν· πολὺ
 γὰρ δὴ ταῦτα ἐγγυτέρω ἐστὶ τῇ Τρωάδι ἢ τὰ περὶ Ἐφε-
 σον. ἀλλ' ὅμως τοὺς περὶ Πύγελα λέγοντας τοὺς Ἀμα- 10
 ζῶνας μεταξὺ Ἐφέσου καὶ Μαγνησίας καὶ Πριήνης
 φλυαρεῖν φησὶν ὁ Δημήτριος· τὸ γὰρ „τηλόθεν“ οὐκ
 ἐφαρμόττειν τῷ τόπῳ· πόσῳ οὖν μᾶλλον οὐκ ἐφαρ-
 μόττει τῷ περὶ Μυσίαν καὶ Τευθρανίαν;

- 23 Νῆ Δία, ἀλλὰ φησι δεῖν ἔνια καὶ ἀκύρως προστι- 15
 θέμενα δέχεσθαι, ὡς καὶ „τῇλ' ἐξ Ἀσκανίης“ καὶ „Ἀρ-
 „ναῖος δ' ὄνομ' ἔσκε, τὸ γὰρ θέτο πότνια μήτηρ,“ καὶ
 „ἔλπετο δὲ κλητὸν εὐκαμπέα χειρὶ παχείῃ Πηνελόπῃ.“
 δεδόσθω δὴ καὶ τοῦτο· ἀλλ' ἐκεῖνα οὐ δοτέα, οἷς προσ-
 ἔχων ὁ Δημήτριος οὐδὲ τοῖς ὑπολαβούσι δεῖν ἀκούειν 20
 „τηλόθεν ἐκ Χαλύβης“ πιθανῶς ἀντείρηκε. συγχωρή-
 σας γὰρ ὅτι, εἰ καὶ μὴ ἔστι νῦν ἐν τοῖς Χάλυσι τὰ ἀρ-
 γυρεῖα, ὑπάρξαι γε ἐνεδέχετο, ἐκεῖνό γε οὐ συγχωρεῖ
 ὅτι καὶ ἐνδοξα ἦν καὶ ἄξια μνήμης, καθάπερ τὰ σιδη-
 ρεῖα. τί δὲ κωλύει, φράη τις ἄν, καὶ ἐνδοξα εἶναι, καθά- 25
 περ καὶ τὰ σιδηρεῖα; ἢ σιδήρου μὲν εὐπορία τόπον ἐπι-
 φανῇ δύναται ποιεῖν, ἀργύρου δ' οὐ; τί δ' εἰ μὴ κατὰ
 τοὺς ἥρωας, ἀλλὰ καθ' Ὅμηρον εἰς δόξαν ἀφῆκτο τὰ
 ἀργυρεῖα, ἅρα μέμφαιτό τις ἄν τὴν ἀπόφασιν τοῦ ποι-
 ητοῦ; πῶς οὖν εἰς τὸν ποιητὴν ἢ δόξα ἀφίκετο; πῶς 30

- δ' ἡ τοῦ ἐν τῇ Τεμέσῃ χαλκοῦ τῇ Ἰταλιώτιδι; πῶς δ' ἡ τοῦ Θηβαϊκοῦ πλούτου τοῦ κατ' Αἴγυπτον; καίτοι διπλάσιον σχεδόν τι διέχοντα τῶν Αἰγυπτίων Θηβῶν ἢ τῶν Χαλδαίων. ἀλλ' οὐδ' οἷς συνηγορεῖ, τούτοις
 5 ὁμολογεῖ· τὰ γὰρ περὶ τὴν Σκῆψιν τοποθετῶν τὴν C.552
 ἑαυτοῦ πατρίδα, πλησίον τῆς Σκῆψεως καὶ τοῦ Αἰσῆ-
 που Νέαν κώμην καὶ Ἀργυρίαν λέγει καὶ Ἀλαξονίαν.
 ταῦτα μὲν οὖν εἰ καὶ ἔστι, πρὸς ταῖς πηγαῖς ἂν εἴη τοῦ
 Αἰσῆπου. ὁ δὲ Ἐκαταλὸς λέγει ἐπέκεινα τῶν ἐκβολῶν
 10 αὐτοῦ, ὃ τε Παλαίφατος πρότερον μὲν Ἀλόπην οἰκεῖν
 φήσας νῦν δὲ Ζέλειαν, οὐδὲν ὅμοιον λέγει τούτοις.
 εἰ δ' ἄρα ὁ Μενεκράτης, καὶ οὐδ' οὗτος τὴν Ἀλόπην ἢ
 Ἀλόβην ἢ ὅπως ποτὲ βούλονται γράφειν φράζει ἥτις
 ἐστίν, οὐδ' αὐτὸς ὁ Δημήτριος.
- 15 Πρὸς Ἀπολλόδωρον δὲ περὶ τῶν αὐτῶν ἐν τῷ 24
 Τρωικῷ διακόσμῳ διαλεγόμενον πολλὰ μὲν εἰρηται
 πρότερον, καὶ νῦν δὲ λεκτέον. οὐ γὰρ οἴεται δεῖν δέχε-
 σθαι τοὺς Ἀλιζώνους ἐκτὸς τοῦ Ἄλυσ· μηδεμίαν γὰρ
 συμμαχίαν ἀφ' ἔχθαι τοῖς Τρωσὶν ἐκ τῆς περαιοῦς τοῦ
 20 Ἄλυσ. πρῶτον τοίνυν ἀπαιτήσομεν αὐτὸν τίνες εἰσὶν
 οἱ ἐντὸς τοῦ Ἄλυσ Ἀλιζῶνοι, οἱ καὶ „τηλόθεν ἐξ Ἀλύ-
 „βης, ὅθεν ἀργύρου ἐστὶ γενέθλη.“ οὐ γὰρ ἔξει λέγειν·
 ἔπειτα τὴν αἰτίαν δι' ἣν οὐ συγχωρεῖ καὶ ἐκ τῆς περαιοῦς
 ἀφ' ἔχθαι τινα συμμαχίαν· καὶ γὰρ εἰ τὰς ἄλλας ἐντὸς εἰ-
 25 ναι τοῦ ποταμοῦ πάσας συμβαίνει πλὴν τῶν Θρακῶν,
 μίαν γε ταύτην οὐδὲν ἐκώλυε πέραθεν ἀφ' ἔχθαι ἐκ τῆς
 ἐπέκεινα τῶν Λευκοσύρων. ἡ πολεμήσοντας μὲν ἦν
 δυνατὸν διαβαίνειν ἐκ τῶν τόπων τούτων καὶ τῶν ἐπέ-
 κεινα, καθάπερ τὰς Ἀμαζόνας καὶ Τρηῆρας καὶ Κιμμε-
 30 ρίους φασί, συμμαχήσοντας δ' ἀδύνατον; αἱ μὲν οὖν
 Ἀμαζόνες οὐ συνεμάχουν διὰ τὸ τὸν Πρίαμον πολεμή-
 σαι πρὸς αὐτὰς συμμαχοῦντα τοῖς Φρυγῖν „ἡματι τῷ

„ὅτε τ' ἦλθον Ἀμαζόνες ἀντιάνειραι“ φησὶν ὁ Πρίαμος
 „καὶ γὰρ ἐγὼν ἐπίκουρος ἐὼν μετὰ τοῖσιν ἐλέγμην.“
 οἱ δ' ὁμοροῦντες αὐταῖς, οὐδ' οὕτως ἄπωθεν ὄντες
 ὥστε χαλεπὴν εἶναι τὴν ἐκείθεν μετὰπεμψιν οὗτ' ἐχ-
 θρας ὑποκειμένης, οὐδὲν ἐκωλύοντο οἶμαι συμμαχεῖν. 5

25 Ἀλλ' οὐδὲ δόξαν ἔχει τοιαύτην τῶν παλαιῶν εἰ-
 πεῖν ὥς συμφωνούντων ἀπάντων μηδένας ἐκ τῆς πε-
 ραίας τοῦ Ἄλως κοινανῆσαι τοῦ Τρωικοῦ πολέμου.
 πρὸς τὸνναντίον δὲ μῖλλον εὖροι τις ἂν μαρτυρίας·
 Μαιάνδριος γοῦν ἐκ τῶν Λευκοσύρων φησὶ τοὺς Ἑνε- 10
 τοὺς ὀρμηθέντας συμμαχῆσαι τοῖς Τρωσίν, ἐκείθεν
 δὲ μετὰ τῶν Θρακῶν ἀπᾶραι καὶ οἰκῆσαι περὶ τὸν τοῦ
 Ἀδρίου μυχόν, τοὺς δὲ μὴ μετασχόντας τῆς στρατείας
 Ἑνετοὺς Καππάδοκας γενέσθαι. συνηγορεῖν δ' ἂν
 δόξειε τῷ λόγῳ τούτῳ, διότι πᾶσα ἡ πλησίον τοῦ Ἄλ- 15

0.5530ς Καππαδοκία ὅση παρατείνει τῇ Παφλαγονίᾳ ταῖς
 δυοὶ χρῆται διαλέκτοις καὶ τοῖς ὀνόμασι πλεονάζει τοῖς
 Παφλαγονικοῖς, Βάγας καὶ Βιάσας καὶ Αἰνιάτης καὶ
 Ῥατώτης καὶ Ζαρδῶκης καὶ Τίβιος καὶ Γάσυς καὶ Ὀλί-
 γαςυς καὶ Μάνης· ταῦτα γὰρ ἐν τε τῇ Φαξημωνίτιδι 20
 καὶ τῇ Πιμωλίσίτιδι καὶ τῇ Γαξηλωνίτιδι καὶ Γαξακηνηῇ
 καὶ ἄλλαις πλείσταις χώραις ἐπιπολάζει τὰ ὀνόματα.
 αὐτὸς δὲ ὁ Ἀπολλόδωρος παρατίθῃσι τὸ τοῦ Ζηνοδό-
 του ὅτι γράφει „ἐξ Ἑνετῆς, ὅθεν ἡμιόνων γένος
 „ἀγροτεράων.“ ταύτην δὲ φησὶν Ἐκαταῖον τὸν Μι- 25
 λήσιον δέχεσθαι τὴν Ἀμισόν· ἡ δ' Ἀμισὸς εἴρηται διότι
 τῶν Λευκοσύρων ἐστὶ καὶ ἐκτὸς τοῦ Ἄλως.

26 Εἴρηται δ' αὐτῷ που καὶ διότι ὁ ποιητὴς ἱστορίαν
 εἶχε τῶν Παφλαγόνων τῶν ἐν τῇ μεσογαίᾳ παρὰ τῶν
 πεζῇ διελθόντων τὴν χώραν, τὴν παραλλαν δ' ἡγνόει, 30
 καθάπερ καὶ τὴν ἄλλην τὴν Ποντικήν· ὠνόμαξε γὰρ
 [ἂν] αὐτήν. τὸνναντίον δ' ἔστιν ἀναστρέψαντα εἰπεῖν

ἐκ τῆς περιοδείας ὁρμηθέντα τῆς ἀποδοθείσης νυνί,
 ὥς τὴν μὲν παραλίαν πᾶσαν ἐπελήλυθε καὶ οὐδὲν τῶν
 ὄντων τότε ἀξίων μνήμης παραλέλοιπεν· εἰ δ' Ἡρά-
 κλειαν καὶ Ἀμαστριν καὶ Σινώπην οὐ λέγει τὰς μήπω
 5 συνωκισμένας οὐδὲν θαυμαστόν· τὴν δὲ μεσόγαιαν
 οὐδὲν ἄτοπον εἰ μὴ εἴρηκε. καὶ τὸ μὴ ὀνομάζειν δὲ
 πολλὰ τῶν γνωρίμων οὐκ ἀγνοίας ἐστὶ σημεῖον, ὅπερ
 καὶ ἐν τοῖς ἔμπροσθεν ἐπεσημηνάμεθα· ἀγνοεῖν γὰρ
 αὐτὸν πολλὰ τῶν ἐνδόξων ἔφη περὶ τὸν Πόντον, οἷον
 10 ποταμοὺς καὶ ἔθνη· ὀνομάσαι γὰρ ἄν. τοῦτο δ' ἐπὶ
 μὲν τινων σφόδρα σημειωδῶν δοίη τις ἄν, οἷον Σκύ-
 θας καὶ Μαιῶτιν καὶ Ἰστρον. οὐ γὰρ διὰ σημείων μὲν
 τοὺς νομάδας εἴρηκε γαλακτοφάγους ἀβίους τε, δι-
 καιοτάτους ἀνθρώπους, καὶ ἔτι ἀγανοὺς ἱππημολγούς,
 15 Σκύθας δὲ οὐκ ἂν εἶπεν ἢ Σαυρομάτας ἢ Σαρμάτας, εἰ
 δὴ οὕτως ὠνομάζοντο [τότε] ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων· οὐδ'
 ἂν Θρακῶν τε καὶ Μυσιῶν μνησθεὶς τῶν πρὸς τῷ Ἰστρῷ
 αὐτὸν παρεσίγησε μέγιστον τῶν ποταμῶν ὄντα, καὶ ἄλ-
 λως ἐπιφόρως ἔχων πρὸς τὸ τοῖς ποταμοῖς ἀφορίζεσθαι
 20 τοὺς τόπους, οὐδ' ἂν Κιμμερίους λέγων παρῆκε τὸν
 Βόσπορον ἢ τὴν Μαιῶτιν.

Ἐπὶ δὲ τῶν μὴ οὕτω σημειωδῶν ἢ μὴ τότε ἢ μὴ 27
 πρὸς τὴν ὑπόθεσιν τί ἂν τις μέμφοιτο; οἷον τὸν Τά-
 ναϊν δι' οὐδὲν ἄλλο γνωριζόμενον ἢ διότι τῆς Ἀσίας
 25 καὶ τῆς Εὐρώπης ὄριόν ἐστιν· ἀλλ' οὔτε τὴν Ἀσίαν 0.554
 οὔτε τὴν Εὐρώπην ὠνόμαζόν πω οἱ τότε, οὐδὲ διή-
 ρητο οὕτως εἰς τρεῖς ἡπείρους ἢ οἰκουμένην· ὠνόμασε
 γὰρ ἄν που διὰ τὸ λίαν σημειῶδες, ὥς καὶ τὴν Αἰβύην
 καὶ τὸν λίβα τὸν ἀπὸ τῶν ἐσπερίων τῆς Αἰβύης πνέ-
 30 οντα· τῶν δ' ἡπείρων μήπω διωρισμένων οὐδὲ τοῦ
 Ταναΐδος ἔδει καὶ τῆς μνήμης αὐτοῦ. πολλὰ δὲ καὶ
 ἀξιολομημόνευτα μὲν, οὐχ ὑπέδραμε δέ· πολὺ γὰρ δὴ

καὶ τὸ ἐπελευστικὸν εἶδος ἐν τε τοῖς λόγοις καὶ ἐν ταῖς
 πράξεσιν ἐστίν. ἐκ πάντων δὲ [τούτων καὶ] τῶν τοι-
 ούτων δηλὸν ἐστίν ὅτι μοχθηρῷ σημείῳ χρῆται πᾶς ὁ
 ἐκ τοῦ μὴ λέγεσθαι τι ὑπὸ τοῦ ποιητοῦ τὸ ἀγνοεῖσθαι
 ἐκεῖνο ὑπ' αὐτοῦ τεκμαιρόμενος. καὶ δεῖ διὰ πλείο- 5
 νων παραδειγμάτων ἐξελέγχειν αὐτὸ μοχθηρὸν ὄν.
 πολλῷ γὰρ αὐτῷ κέχρηται πολλοί. ἀνακρουστέον
 οὖν αὐτοὺς προφέροντας τὰ τοιαῦτα, εἰ καὶ ταυτολο-
 γήσομεν· οἷον ἐπὶ τῶν ποταμῶν εἴ τις λέγοι τῷ μὴ
 ὠνομάσθαι ἀγνοεῖσθαι εὐήθῃ φήσομεν τὸν λόγον· 10
 ὅπου γε οὐδὲ Μέλητα τὸν παρὰ τὴν Σμύρναν ῥέοντα
 ὠνόμακε ποταμόν, τὴν ὑπὸ τῶν πλείστων λεγομένην
 αὐτοῦ πατρίδα, Ἑρμον ποταμόν καὶ Ἄλλον ὀνομάζων,
 οὐδὲ Πακτωλὸν τὸν εἰς ταῦτό τούτοις ρεῖθρον ἐμβά-
 λοντα, τὴν δ' ἀρχὴν ἀπὸ τοῦ Τρωάου ἔχοντα οὐ μέ- 15
 μνηται· οὐδ' αὐτὴν Σμύρναν λέγει, οὐδὲ τὰς ἄλλας
 τῶν Ἰώνων πόλεις καὶ τῶν Αἰολέων τὰς πλείστας, Μί-
 λητον λέγων καὶ Λέσβον καὶ Τένεδον, οὐδὲ Αἰθαῖον
 τὸν παρὰ Μαγνησίαν ῥέοντα οὐδὲ δὴ Μαρσύαν τοὺς
 εἰς τὸν Μαίανδρον ἐκδιδόντας, ἐκεῖνον ὀνομάζων καὶ 20
 πρὸς τούτοις „Ρῆσόν θ' Ἐπτάπορόν τε Κάρησόν τε
 „Ροδίον τε,“ καὶ τοὺς ἄλλους, ὧν οἱ πλείους ὀχρεῶν
 οὐκ εἰσι μείζους. πολλὰς τε χώρας ὀνομάζων καὶ πό-
 λεις τοτὲ μὲν καὶ τοὺς ποταμοὺς καὶ ὄρη συγκατα-
 λέγει τοτὲ δ' οὐ· τοὺς γοῦν κατὰ τὴν Αἰτωλίαν καὶ τὴν 25
 Ἀττικὴν οὐ λέγει οὐδ' ἄλλους πλείους· ἔτι δὲ καὶ τῶν
 πόρρω μεμνημένος τῶν ἐγγὺς σφόδρα οὐ μέμνηται,
 οὐ δῆπου ἀγνοῶν αὐτοὺς γνωρίμους τοῖς ἄλλοις ὄν-
 τας· οὐδὲ δὴ τοὺς ἐγγὺς ἐπίσης, ὧν τοὺς μὲν ὀνομά-
 ζει τοὺς δὲ οὐ, οἷον Ἀνκίους μὲν καὶ Σολύμους, Μι- 30

9. post ταυτολογήσομεν: τὸν λόγον· 18. post λέγων: καὶ
 Σάμον

λύας δ' οὐ, οὐδὲ Παμφύλους οὐδὲ Πισίδας· και Πα-
φλαγόνας μὲν και Φρύγας και Μυσούς, Μαριανδυ-
νούς δ' οὐ, οὐδὲ Θυνούς οὐδὲ Βιθυνούς οὐδὲ Βέ-
βρυκας· Ἀμαζόνων τε μέμνηται, Λευκοσύρων δ' οὐ,
5 οὐδὲ Σύρων οὐδὲ Καππαδόκων οὐδὲ Λυκαόνων, Φοί-
νικας και Αἰγυπτίους και Αἰθίοπας θρυλῶν· και Ἀλή-C.555
ιον μὲν πεδίον λέγει και Ἀρίμους, τὸ δὲ ἔθνος ἐν ᾧ
ταῦτα σιγᾷ. ὁ μὲν δὴ τοιοῦτος ἔλεγχος ψευδῆς ἐστίν,
ὁ δ' ἀληθῆς, ὅταν δείκνυνται ψεῦδος λεγόμενόν τι. ἀλλ'
10 οὐδ' ἐν τῷ τοιούτῳ κατορθῶν ἐδείχθη, ὅτε γε ἐθάρ-
ρησε πλάσματα λέγειν τοὺς ἀγανούς ἱππημολγούς
[και] γαλακτοφάγους. τοσαῦτα και πρὸς Ἀπολλόδω-
ρον· ἐπάνειμι δὲ ἐπὶ τὴν ἐξῆς περιήγησιν.

Ἦπερ μὲν δὴ τῶν περὶ Φαρνακίαν και Τραπε- 28
15 ζοῦντα τόπων οἱ Τιβαρηνοὶ και Χαλδαῖοι μέχρι τῆς μι-
κρᾶς Ἀρμενίας εἰσίν. αὕτη δ' ἐστὶν εὐδαίμων ἱκανῶς
χώρα· δυνασται δ' αὐτὴν κατεῖχον αἰεὶ, καθάπερ τὴν
Σωφηνήν, τοτὲ μὲν φίλοι τοῖς ἄλλοις Ἀρμενίοις ὄντες
τοτὲ δὲ ἰδιοπραγοῦντες· ὑπηκόους δ' εἶχον και τοὺς
20 Χαλδαίους και Τιβαρηνοὺς, ὥστε μέχρι Τραπεζοῦν-
τος και Φαρνακίας διατείνειν τὴν ἀρχὴν αὐτῶν. ἀνέ-
θεις δὲ Μιθριδάτης ὁ Εὐπάτωρ και τῆς Κολχίδος κα-
τέστη κύριος και τούτων ἀπάντων, Ἀντιπάτρου τοῦ
Σίσιδος παραχωρήσαντος αὐτῷ. ἐπεμελήθη δὲ οὕτω
25 τῶν τόπων τούτων ὥστε πέντε και ἑβδομήκοντα φρού-
ρια ἐν αὐτοῖς κατεσκευάσατο, οἷσπερ τὴν πλειστέην
γάξαν * ἐνεχείρισε. τούτων δ' ἦν ἀξιολογώτατα ταῦ-
τα, Ἦδαρα και Βασγοιδάριζα και Σινορία, ἐπιπεφυ-
κὸς τοῖς ὀρίοις τῆς μεγάλης Ἀρμενίας χωρίον, διόπερ
10 Θεοφάνης Σινορίαν παρωνόμασεν. ἡ γὰρ τοῦ Παρυ-
άδρου πᾶσα ὀρεινὴ τοιαύτας ἐπιτηδειότητας ἔχει πολ-
λὰς εὐνδρός τε οὖσα και ὑλώδης και ἀποτόμοις φά

ραγξι καὶ κρημνοῖς διειλημμένη πολλαχόθεν· ἐτετεί-
χιστο γοῦν ἐνταῦθα τὰ πλείστα τῶν γαζοφυλακίων,
καὶ δὴ καὶ τὸ τελευταῖον εἰς ταύτας κατέφυγε τὰς ἐσχα-
τίας τῆς Ποντικῆς βασιλείας ὁ Μιθριδάτης ἐπιόντος
Πομπήλου, καὶ τῆς Ἀκισσηνῆς κατὰ Δάστειρα εὖν- 5
δρον ὄρος καταλαβόμενος (πλησίον δ' ἦν καὶ ὁ Εὐ-
φράτης ὁ διορίζων τὴν Ἀκισσηνὴν ἀπὸ τῆς μικρᾶς
Ἀρμενίας) διέτριψε τέως ἕως πολιορκούμενος ἡναγ-
κάσθη φυγεῖν διὰ τῶν ὄρων εἰς Κολχίδα καὶ κειῖθεν εἰς
Βόσπορον. Πομπήιος δὲ περὶ τὸν τόπον τοῦτον πόλιν 10
ἔκτισεν ἐν τῇ μικρᾷ Ἀρμενίᾳ Νικόπολιν, ἣ καὶ νῦν
συμμένει καὶ οἰκεῖται καλῶς.

29 Τὴν μὲν οὖν μικρὰν Ἀρμενίαν ἄλλοτ' ἄλλων
ἐχόντων, ὥς ἐβούλοντο Ῥωμαῖοι, τὸ τελευταῖον εἶχεν
ὁ Ἀρχέλαος. τοὺς δὲ Τιβαρηνοὺς καὶ Χαλδαίους μέ- 15
χρι Κολχίδος καὶ Φαρνακίας καὶ Τραπεζοῦντος ἔχει
Πυθοδώρις, γυνὴ σώφρων καὶ δυνατὴ προῖστασθαι
πραγμάτων. ἔστι δὲ θυγάτηρ Πυθοδώρου τοῦ Τραλ-
C.556 λιανοῦ, γυνὴ δ' ἐγένετο Πολέμωνος καὶ συνεβασίλευ-
σεν ἐκείνῳ χρόνον τινα, εἴτα διεδέξατο τῇ· ἀρχήν, 20
τελευτήσαντος ἐν τοῖς Ἀσπουργιανοῖς καλουμένοις τῶν
περὶ τὴν Σινδικὴν βαρβάρων· θυεῖν δ' ἐκ τοῦ Πολέ-
μωνος ὄντων υἱῶν καὶ θυγατρὸς ἣ μὲν ἐδόθη Κότυϊ
τῷ Σαπαίῳ, δολοφονηθέντος δὲ ἐχέρευσεν παῖδας ἔχου-
σα ἐξ αὐτοῦ· δυναστεύει δ' ὁ πρεσβύτατος αὐτῶν· 25
τῶν δὲ τῆς Πυθοδωρίδος υἱῶν ὁ μὲν ἰδιώτης συνδιώ-
κει τῇ μητρὶ τὴν ἀρχήν, ὁ δὲ νεωστὶ καθέσταται τῆς
μεγάλης Ἀρμενίας βασιλεύς. αὐτὴ δὲ συνώκησεν Ἀρ-
χελάῳ καὶ συνέμεινεν ἐκείνῳ μέχρι τέλους, νῦν δὲ
χηρεύει, τὰ τε λεχθέντα ἔχουσα χωρία καὶ ἄλλα ἐκεί- 30
νων χαριέστερα, περὶ ὧν ἐφεξῆς ἐροῦμεν.

30 Τῇ γὰρ Φαρνακίᾳ συνεχρὴς ἐστὶν ἡ Σιδήνη καὶ ἡ

Θεμισκύρα. τούτων δ' ἡ Φανάροια ὑπέρεκειται μέρος
 ἔχουσα τοῦ Πόντου τὸ κράτιστον· καὶ γὰρ ἐλαιόφυτος
 ἐστὶ καὶ εὖοινος καὶ τὰς ἄλλας ἔχει πάσας ἀρετάς, ἐκ
 μὲν τῶν ἐφ' ὧν μερῶν προβεβλημένη τὸν Παρναύδρην
 5 παράλληλον αὐτῇ κατὰ μῆκος, ἐκ δὲ τῶν πρὸς δύσιν
 τὸν Αἰθρον καὶ τὸν Ὀφλιμον. ἔστι δ' αὐλῶν καὶ μῆ-
 κος ἔχων ἀξιόλογον καὶ πλάτος· διαρρεῖ δ' αὐτὴν ἐκ
 μὲν τῆς Ἀρμενίας ὁ Λύκος, ἐκ δὲ τῶν περὶ Ἀμάσειαν
 στενῶν ὁ Ἴρις· συμβάλλουσι δ' ἀμφοτέρω κατὰ μέ-
 10 σον πρὸς τὸν αὐλῶνα, ἐπὶ τῇ συμβολῇ δ' ἴδρυνται πόλεις,
 ἣν ὁ μὲν πρῶτος ὑποβεβλημένος Εὐπατορίαν ἀφ' αὐ-
 τοῦ προσηγόρευσε, Πομπήιος δ' ἡμιτελὴ καταλαβὼν,
 προσθεὶς χώραν καὶ οἰκήτορας Μαγνόπολιν προσεῖ-
 πεν. αὕτη μὲν οὖν ἐν μέσῳ κεῖται τῷ πεδίῳ, πρὸς
 15 αὐτῇ δὲ τῇ παρωρεῖα τοῦ Παρναύδρου Κάβειρα ἴδρυ-
 ται, σταδίοις ἑκατὸν καὶ πεντήκοντά που νοτιωτέρα
 τῆς Μαγνοπόλεως, ὅσον καὶ Ἀμάσεια δυσμικωτέρα
 αὐτῆς ἐστίν· ἐν δὲ τοῖς Καβείοις τὰ βασιλεία Μιθρι-
 δάτου κατεσκεύαστο καὶ ὁ ὑδραλέτης καὶ τὰ ζωγρεῖα
 20 καὶ αἱ πλησίον θῆραι καὶ τὰ μέταλλα.

Ἐνταῦθα δὲ καὶ τὸ Καινὸν χωρίον προσαγορευ- 31
 θέν, ἐρυμνὴ καὶ ἀπότομος πέτρα, διέχουσα τῶν Κα-
 βείων ἑλαττον ἢ διακοσίους σταδίους· ἔχει δ' ἐπὶ τῇ
 κορυφῇ πηγὴν ἀναβάλλουσαν πολὺ ὕδωρ, πρὸς τε
 25 τῇ ῥίξῃ ποταμὸν καὶ φάραγγα βαθειάν· τὸ δ' ὕψος
 ἑξαίσιον τῆς πέτρας ἐστὶ * τοῦ αὐχένος, ὥστ' ἀπολιόρ-
 κητός ἐστι· τετελείσται δὲ θαυμαστῶς πλὴν ὅσον οἱ
 Ῥωμαῖοι κατέσπασαν· οὕτω δ' ἐστὶν ἅπανα ἡ κύκλῳ
 κατάδρυμος καὶ ὄρεινὴ καὶ ἄνυδρος, ὥστ' ἐντὸς ἑκα-
 30 τὸν καὶ εἰκοσι σταδίων μὴ εἶναι δυνατόν στρατοπεδεύ-
 σασθαι. ἐνταῦθα μὲν ἦν τῷ Μιθριδάτῃ τὰ τιμιώτατα C.557
 τῶν κειμηλίων, ἃ νῦν ἐν τῷ Καπιτωλίῳ κεῖται Πομ-

πηλίου ἀναθέντος. ταύτην δὴ τὴν χώραν ἔχει πᾶσαν ἡ Πυθοδαῖς προσεχῇ οὖσαν τῇ βαρβάρῳ τῇ ὑπ' αὐτῆς κατεχομένη, καὶ τὴν Ζηλῆτιν καὶ Μεγαλοπολίτιν. τὰ δὲ Κάβειρα Πομπηίου σκευάσαντος εἰς πόλιν καὶ καλέσαντος Διοσπολιν, ἐκείνη προσκατεσκεύασε καὶ Σε- 5 βαστὴν μετωνόμασε, βασιλείῳ τε τῇ πόλει χρῆται. ἔχει δὲ καὶ τὸ ἱερὸν Μηνὸς Φαρνάκου καλούμενον, τὴν Ἀμερίαν κωμόπολιν πολλοὺς ἱεροδούλους ἔχουσιν καὶ χώραν ἱερὰν, ἣν ὁ ἱερῶμενος ἀεὶ καρποῦται. ἐτίμησαν δ' οἱ βασιλεῖς τὸ ἱερὸν τοῦτο οὕτως εἰς ὑπερβολὴν 10 ὥστε τὸν βασιλικὸν καλούμενον ὄρκον τοῦτον ἀπέφηναν „τύχην βασιλείας“ καὶ „Μῆνα Φαρνάκου.“ ἔστι δὲ καὶ τοῦτο τῆς σελήνης τὸ ἱερὸν, καθάπερ τὸ ἐν Ἀλβανοῖς καὶ τὰ ἐν Φρυγίᾳ, τό τε τοῦ Μηνὸς ἐν τῷ ὁμωνύμῳ τόπῳ καὶ τὸ τοῦ Ἀσκαίου τὸ πρὸς Ἀντιοχείᾳ τῇ 15 πρὸς Πισιδίᾳ καὶ τὸ ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Ἀντιοχέων.

32 Ὑπὲρ δὲ τῆς Φαναροίας ἔστι τὰ Κόμανα τὰ ἐν τῷ Πόντῳ, ὁμώνυμα τοῖς ἐν τῇ μεγάλῃ Καππαδοκίᾳ καὶ τῇ αὐτῇ θεῷ καθιερωμένα, ἀφιδρυθέντα ἐκείθεν, σχεδὸν δέ τι καὶ τῇ ἀγωγῇ παραπλησίᾳ κεχρημένα τῶν τε 20 ἱερουργιῶν καὶ τῶν θεοφοριῶν καὶ τῆς περὶ τοὺς ἱερέας τιμῆς, καὶ μάλιστα ἐπὶ τῶν πρὸ τοῦ βασιλέων, ἡνίκα δις τοῦ ἔτους κατὰ τὰς ἐξόδους λεγομένας τῆς θεοῦ διάδημα φορῶν ἐτύγχανεν ὁ ἱερεὺς, καὶ ἦν δευτερος κατὰ τιμὴν μετὰ τὸν βασιλέα. 25

33 Ἐμνήσθημεν δὲ πρότερον Δορυλάου τε τοῦ τακτικοῦ, ὃς ἦν πρόπαππος τῆς μητρὸς ἡμῶν, καὶ ἄλλου Δορυλάου, ὃς ἦν ἐκείνου ἀδελφιδοῦς υἱὸς δὲ Φιλεταίου, καὶ διότι ἐκεῖνος τῶν ἄλλων τιμῶν παρὰ τοῦ Εὐπάτορος τῶν μεγίστων τυχὼν καὶ δὴ καὶ τῆς ἐν 30 Κομάνοις ἱερωσύνης ἐφωράθη τὴν βασιλείαν ἀφιστὰς Ῥωμαίοις· καταλυθέντος δ' ἐκείνου συνδιεβλήθη καὶ

τὸ γένος. ὁπὲ δὲ Μοαφέρωνης ὁ θεῖος τῆς μητρὸς ἡμῶν
εἰς ἐπιφάνειαν ἦλθεν ἤδη πρὸς καταλύσει τῆς βασι-
λείας, καὶ πάλιν τῷ βασιλεῖ συνητύχησαν καὶ αὐτὸς
καὶ οἱ ἐκείνου φίλοι, πλὴν εἴ τινες ἔφθησαν προαπο-
5 στάντες αὐτοῦ, καθάπερ ὁ πάππος ἡμῶν ὁ πρὸς αὐ-
τῆς, ὅς ἰδὼν τὰ τοῦ βασιλέως κακῶς φερόμενα ἐν τῷ
πρὸς Λεύκολλον πολέμῳ, καὶ ἅμα ἡλλοτριωμένος αὐ-
τοῦ δι' ὀργήν, ὅτι ἀνεψιὸν αὐτοῦ Τίβιον καὶ νιὸν ἐκεί-
νου Θεόφιλον ἐτύγχανεν ἀπεκτονῶς νεωστί, ὥρμησε
10 τιμωρεῖν ἐκείνοις τε καὶ ἑαυτῷ, καὶ λαβὼν παρὰ τοῦ
Λευκόλλου πίστεις ἀφίστησιν αὐτῷ πεντεκαίδεκα φρού-C.558
ρια· καὶ ἐπαγγελίαι μὲν ἐγένοντο ἀντὶ τούτων μεγά-
λαι, ἐπελθὼν δὲ Πομπήιος ὁ διαδεξάμενος τὸν πόλε-
μον πάντας τοὺς ἐκείνῳ τι χαρισισμένους ἐχθροὺς ὑπέ-
15 λαβε διὰ τὴν γενομένην αὐτῷ πρὸς ἐκείνον ἀπέχθειαν,
διαπολεμήσας δὲ καὶ ἐπανελθὼν οἴκαδε ἐξεύκνησεν
ὥστε τὰς τιμὰς, ἃς ὑπέσχετο ὁ Λεύκολλος τῶν Ποντι-
κῶν τισι, μὴ κυρῶσαι τὴν σύγκλητον· ἄδικον γὰρ
εἶναι κατορθώσαντος ἐτέρου τὸν πόλεμον τὰ βρα-
20 βεῖα ἐπ' ἄλλῳ γενέσθαι καὶ τὴν τῶν ἀριστείων δια-
νομήν.

Ἐπὶ μὲν οὖν τῶν βασιλέων οὕτω τὰ Κόμανα διω- 34
κεῖτο ὥς εἴρηται, παραλαβὼν δὲ Πομπήιος τὴν ἐξου-
σίαν Ἀρχέλαον ἐπέστησεν ἱερέα καὶ προσώρισεν αὐτῷ
25 χώραν δίσχοινον κύκλῳ (τοῦτο δ' ἔστιν ἐξήκοντα στά-
διοι) πρὸς τῇ ἱερᾷ, προστάξας τοῖς ἐνοικοῦσι πειθαρ-
χεῖν αὐτῷ· τούτων μὲν οὖν ἡγεμῶν ἦν καὶ τῶν τὴν
πόλιν οἰκούντων ἱεροδούλων κύριος πλὴν τοῦ πιπρά-
σκειν· ἦσαν δὲ οὐκ ἐλάττους οὐδ' ἐνταῦθα τῶν ἐξα-
30 κισχιλίων. ἦν δ' οὗτος Ἀρχέλαος υἱὸς μὲν τοῦ ὑπὸ

Σύλλα καὶ τῆς συγκλήτου τιμηθέντος, φίλος δὲ Γά-
 βινίου τῶν ὑπατικῶν τινος. ἐκείνου δὲ πεμφθέντος
 εἰς Συρίαν ἦκε καὶ αὐτὸς ἐπ' ἐλπίδι τοῦ κοινωνήσκειν
 αὐτῷ παρασκευαζομένῳ πρὸς τὸν Παρθικὸν πόλεμον,
 οὐκ ἐπιτρεπούσης δὲ τῆς συγκλήτου ταύτην ἀφείλ τὴν δ
 ἐλπίδα ἄλλην εὔρατο μείζω. ἐτύγχανε γὰρ Πτολεμαῖος
 ὁ τῆς Κλεοπάτρας πατήρ ὑπὸ τῶν Αἰγυπτίων ἐκβε-
 βλημένος, θυγάτηρ δ' αὐτοῦ κατεῖχε τὴν βασιλείαν,
 ἀδελφὴ πρεσβυτέρα τῆς Κλεοπάτρας· ταύτῃ ζητου-
 μένου ἀνδρὸς βασιλικοῦ γένους ἐνεχείρισεν ἑαυτὸν 10
 τοῖς συμπράττουσι, προσποιησάμενος Μιθριδάτου τοῦ
 Εὐπάτορος υἱὸς [εἶναι], καὶ παραδεχθεὶς ἐβασίλευσεν
 ἕξ μῆνας. τοῦτον μὲν οὖν ὁ Γαβίνιος ἀνείλεν ἐν πα-
 35 ρατάξει κατὰγων τὸν Πτολεμαῖον. υἱὸς δ' αὐτοῦ
 τὴν ἱερωσύνην παρέλαβεν· εἰθ' ὕστερον Λυκομήδης, 15
 ᾧ καὶ τετράσχοινος ἄλλη προσετέθη· καταλυθέντος δὲ
 καὶ τούτου νῦν ἔχει Δύτευτος υἱὸς Ἀδιατόριγος, ὃς
 δοκεῖ ταύτης τυγχάνειν τῆς τιμῆς παρὰ Καίσαρος τοῦ
 Σεβαστοῦ δι' ἀρετὴν. ὁ μὲν γὰρ Καῖσαρ θριαμβεύ-
 σας τὸν Ἀδιατόριγα μετὰ παίδων καὶ γυναικὸς ἔγνω 20
 ἀναιρεῖν μετὰ τοῦ πρεσβυτάτου τῶν παίδων (ἦν δὲ
 πρεσβυτάτος οὗτος), τοῦ δὲ δευτέρου τῶν ἀδελφῶν
 αὐτοῦ φήσαντος εἶναι πρεσβυτάτου πρὸς τοὺς ἀπά-
 γοντας στρατιώτας, ἕρις ἦν ἀμφοτέροις πολλὴν χρό-
 C.559νον ἕως οἱ γονεῖς ἐπεισαν τὸν Δύτευτον παραχωρή- 25
 σαι τῷ νεωτέρῳ τῆς νίκης· αὐτὸν γὰρ ἐν ἡλικίᾳ μάλ-
 λον ὄντα ἐπιτηδειότερον κηδεμόνα τῇ μητρὶ ἔσεσθαι
 καὶ τῷ λειπομένῳ ἀδελφῷ· οὕτω δὲ τὸν μὲν συναπο-
 θανεῖν τῷ πατρὶ, τοῦτον δὲ σωθῆναι καὶ τυχεῖν τῆς
 τιμῆς ταύτης. αἰσθόμενος γάρ, ὥς ἔοικε, Καῖσαρ 30
 ἤδη τῶν ἀνθρώπων ἀνηρημένων ἡχθέσθη, καὶ τοὺς

γε σωζομένους εὐεργεσίας καὶ ἐπιμελείας ἀξίους ὑπέ-
λαβε δοὺς αὐτοῖς ταύτην τὴν τιμὴν.

Τὰ μὲν οὖν Κόμανα εὐανδρεῖ καὶ ἔστιν ἐμπόριον 36
τοῖς ἀπὸ τῆς Ἀρμενίας ἀξιόλογον· συνέρχονται δὲ κα-
5 τὰ τὰς ἐξόδους τῆς θεοῦ πανταχόθεν ἐκ τῶν πόλεων
καὶ τῆς χώρας ἄνδρες ὁμοῦ γυναιξὶν ἐπὶ τὴν ἐορτὴν·
καὶ ἄλλοι δὲ κατ' εὐχὴν αἰεὶ τινες ἐπιδημοῦσι θυσίας
ἐπιτελοῦντες τῇ θεῷ. καὶ εἰσιν ἄβροδίαιτοι οἱ ἐνοι-
κοῦντες, καὶ οἰνόφυτα τὰ κτήματα αὐτῶν ἐστὶ πάντα,
10 καὶ πληθὸς γυναικῶν τῶν ἐργαζομένων ἀπὸ τοῦ σώ-
ματος, ὧν αἱ πλείους εἰσὶν ἱεραί. τρόπον γὰρ δὴ τίνα
μικρὰ Κόρινθος ἐστὶν ἢ πόλις· καὶ γὰρ ἐκεῖ διὰ τὸ
πληθὸς τῶν ἐταίρων, αὐτῆς Ἀφροδίτης ἦσαν ἱεραί,
πολὺς ἦν ὁ ἐπιδημῶν καὶ ἐνεορτάζων τῷ τόπῳ· οἱ δ'
15 ἐμπορικοὶ καὶ στρατιωτικοὶ τελέως ἐξανηλίσκοντο, ὥστ'
ἐπ' αὐτῶν καὶ παροιμίαν ἐκπεσεῖν τοιαύτην „οὐ παν-
„τὸς ἄνδρὸς εἰς Κόρινθόν ἐσθ' ὁ πλοῦς.“ τὰ μὲν δὴ
Κόμανα τοιαῦτα.

Τὴν δὲ κύκλῳ πᾶσαν ἔχει Πυθιοδωρίς, ἥς ἢ τε 37
20 Φανάροια ἔστι καὶ ἡ Ζηλῆτις καὶ ἡ Μεγαλοπολίτις.
περὶ μὲν Φαναροίας εἴρηται· ἡ δὲ Ζηλῆτις ἔχει πόλιν
Ζῆλα ἐπὶ χώματι Σεμιράμιδος τετειχισμένην, ἔχουσαν
τὸ ἱερὸν τῆς Ἀναΐτιδος, ἣν περ καὶ οἱ Ἀρμένιοι σέβον-
ται. αἱ μὲν οὖν ἱεροποιαὶ μετὰ μείζονος ἀγιστείας
25 ἐνταῦθα συντελοῦνται, καὶ τοὺς ὄρκους περὶ τῶν με-
γίστων ἐνταῦθα Ποντικοὶ πάντες ποιοῦνται· τὸ δὲ
πληθὸς τῶν ἱεροδούλων καὶ αἱ τῶν ἱερέων τιμαὶ παρὰ
μὲν τοῖς βασιλεῦσι τὸν αὐτὸν εἶχον τύπον ὅν περ προ-
είπομεν, νυνὶ δὲ ἐπὶ τῇ Πυθιοδωρίδι πάντ' ἐστίν. ἐκά-
30 κωσαν δὲ πολλοὶ καὶ ἐμείωσαν τό τε πληθὸς τῶν ἱερο-
δούλων καὶ τὴν ἄλλην εὐπορίαν. ἐμειώθη δὲ καὶ ἡ
παρακειμένη χώρα μερισθεῖσα εἰς πλείους δυναστείας.

ἡ λεγομένη Ζηλῆτις. τὸ παλαιὸν μὲν γὰρ οἱ βασιλεῖς οὐχ ὥς πόλιν ἀλλ' ὥς ἱερὸν διώκουν τῶν Περσικῶν θεῶν τὰ Ζήλα, καὶ ἦν ὁ ἱερεὺς κύριος τῶν πάντων· ὠκεῖτο δ' ὑπὸ τοῦ πλήθους τῶν ἱεροδούλων καὶ τοῦ ἱερέως ὄντος ἐν περιουσίᾳ μεγάλη, καὶ * τοῖς περὶ αὐ- 5
 τὸν οὐκ ὀλίγοις χώρα τε ὑπέκειτο ἱερὰ καὶ ἦν τοῦ ἱε-
 C.560 ρέως. Πομπήιος δὲ πολλὰς ἐπαρχίας προσώρισε τῷ τόπῳ καὶ πόλιν ὠνόμασε καὶ ταύτην καὶ τὴν Μεγαλόπολιν, συνθεὶς ταύτην τε εἰς ἓν τὴν τε Κουλουπηνήν καὶ τὴν Καμισηνήν, ὁμόρους οὖσας τῇ τε μικρᾷ Ἀρμενίᾳ καὶ 10
 τῇ Λασιανσηνῇ, ἐχούσας ὄρνυκτοὺς ἄλλας καὶ ἔρυμα ἀρχαῖον τὰ Κάμισα νῦν κατεσπασμένον· οἱ δὲ μετὰ ταῦτα ἡγεμόνες τῶν Ῥωμαίων τῶν θυεῖν πολιτευμάτων τούτων τὰ μὲν τοῖς Κομάνων ἱερεῦσι προσένειμαν, τὰ δὲ τῷ Ζήλων ἱερεῖ, τὰ δ' Ἀτεπόριγι, δυνάστη τινὶ 15
 τοῦ τετραρχικοῦ γένους τῶν Γαλατῶν ἀνδρί· τελευτήσαντος δ' ἐκείνου ταύτην μὲν τὴν μερίδα οὐ πολλὴν οὖσαν ὑπὸ Ῥωμαίοις εἶναι συμβάλει καλουμένην ἐπαρχίαν (καὶ ἔστι σύστημα καθ' αὐτὸ τὸ πολίχνιον συνοικισάντων τὰ Κάρανα, ἀφ' οὗ καὶ ἡ χώρα Κάρα- 20
 νῆτις λέγεται), τὰ δὲ λοιπὰ ἔχει Πυθοδώρις καὶ ὁ Δύ-
 τευτος.

- 38 Αἰπεται δὲ τοῦ Πόντου [τὰ] μεταξὺ ταύτης τε τῆς χώρας καὶ τῆς Ἀμισηνῶν καὶ Σινωπέων, πρὸς τε τὴν Καππαδοκίαν συντείνοντα καὶ Γαλάτας καὶ Πα- 25
 φλαγόνας. μετὰ μὲν οὖν τὴν Ἀμισηνῶν μέχρι τοῦ Ἄλνους ἡ Φαξημωνῆτις ἔστιν, ἦν Πομπήιος Νεαπολί-
 τιν' ὠνόμασε κατὰ Φαξημῶνα κώμην, [πόλιν] ἀποδείξας τὴν κατοικίαν καὶ προσαγορεύσας Νεάπολιν. ταύτης δὲ τῆς χώρας τὸ μὲν προσάρκτιον πλευρὸν ἢ 30

1. post Ζηλῆτις: ἡ ἔχει πόλιν Ζήλα ἐπὶ χώματι

Γαζηλωνῖτις συγκλείει καὶ ἡ τῶν Ἀμισσηνῶν, τὸ δὲ ἐσπέριον ὁ Ἄλυσ, τὸ δ' ἐφ' ὃν ἡ Φανάροια, τὸ δὲ λοιπὸν ἡ ἡμετέρα χώρα ἡ τῶν Ἀμασέων, πολὺ πασῶν πλείστη καὶ ἀρίστη. τὸ μὲν οὖν πρὸς τῇ Φαναροίᾳ μέ-
 5 ρος τῆς Φαξημωνίτιδος λίμνη κατέχει πελαγία τὸ μέ-
 γεθος ἡ Στιφάνη καλουμένη, πολύοπος καὶ κύκλω
 νομάς ἀφθόνους ἔχουσα καὶ παντοδαπὰς· ἐπικείται δ'
 αὐτῇ φρούριον ἐρυμνὸν ἐρημον νῦν Ἰκίζαρι, καὶ
 πλησίον βασιλείου κατεσκαμμένον· ἡ δὲ λοιπὴ ψιλὴ τὸ
 10 πλέον καὶ σιτοφόρος χώρα. ὑπέρκειται δὲ τῆς τῶν Ἀμα-
 σέων τὰ τε θερμὰ ὕδατα τῶν Φαξημωνιτῶν ὑγρὴν ἀ-
 σφόδρα, καὶ τὸ Σαγύλιον ἐπὶ ὄρους ὀρθίου καὶ ὑψη-
 λοῦ πρὸς ὀξείαν ἀνατείνοντος ἄκραν ἔρυμα ἰδρυμένον
 ἔχον καὶ ὕδρεϊον θαψιλές, ὃ νῦν ὀλιγώρηται, τοῖς δὲ
 15 βασιλεῦσιν ἦν χρήσιμον εἰς πολλὰ. ἐνταῦθα δὲ ἐάλω
 καὶ διεφθάρη ὑπὸ τῶν Φαρνάκου τοῦ βασιλέως παλ-
 δων Ἀρσάκης, δυναστεύων καὶ νεωτερίζων, ἐπιτρέ-
 ψαντος οὐδενὸς τῶν ἡγεμόνων· ἐάλω δὲ οὐ βίᾳ τοῦ
 ἐρύματος ληφθέντος ὑπὸ Πολέμωνος καὶ Λυκομήδους,
 20 βασιλέων ἀμφοῖν, ἀλλὰ λιμῇ· ἀνέφυγε γὰρ εἰς τὸ
 ὄρος παρασκευῆς χωρὶς εἰργόμενος τῶν πεδίων, εὖρε
 δὲ καὶ τὰ ὕδρεϊα ἐμπεφραγμένα πέτραις ἡλιβάτοις·
 οὕτω γὰρ διετέτακτο Πομπήιος, κατασπᾶν κελεύσας
 τὰ φρούρια καὶ μὴ ἔαν χρήσιμα τοῖς ἀναφεύγειν εἰς
 25 αὐτὰ βουλομένοις λησθηρίων χάριν. ἐκεῖνος μὲν οὖν
 οὕτω διέταξε τὴν Φαξημωνίτιν, οἱ δ' ὕστερον βασι-
 λεῦσι καὶ ταύτην ἐνεῖμαν.

Ἡ δ' ἡμετέρα πόλις κεῖται μὲν ἐν φάραγγι βαθύᾳ 39
 καὶ μεγάλῃ, δι' ἧς ὁ Ἴρις φέρεται ποταμός, κατεσκενύ-
 30 ασται δὲ θαναμαστῶς προνοία τε καὶ φύσει, πόλεως τε
 ἅμα καὶ φρουρίου παρέχεσθαι χρειὰν δυναμένη· πέ-
 τρα γὰρ ὑψηλὴ καὶ περικρημνος κατεργωνυῖα ἐπὶ τὸν

ποταμόν, τῇ μὲν ἔχουσα τὸ τεῖχος ἐπὶ τῷ χεῖλει τοῦ ποταμοῦ καθ' ὃ ἡ πόλις συνήκισται, τῇ δ' ἀνατρέχον ἐκατέρωθεν ἐπὶ τὰς κορυφάς· δύο δ' εἰσὶ συμφυεῖς ἀλλήλαις πεφυρωμέναι παγκάλως· ἐν δὲ τῷ περιβόλῳ τούτῳ βασιλεία τ' ἐστὶ καὶ μνήματα βασιλέων· 5 αἱ κορυφαὶ δ' ἔχουσιν ἀνέχονα παντάπασιν στενόν, πέντε ἢ ἕξ σταδίων ἐκατέρωθεν τὸ ὕψος ἀπὸ τῆς ποταμίας ἀναβαίνουντι καὶ τῶν προαστείων· ἀπὸ δὲ τοῦ ἀνέχονος ἐπὶ τὰς κορυφάς ἄλλη σταδιαία λείπεται πρόσθασις ὀξεῖα καὶ πάσης βίας κρείττων· ἔχει δὲ καὶ ὕδρεϊα ἐν- 10 τὸς ἀναφαίρετα, συρίγγων τετμημένων δυεῖν, τῆς μὲν ἐπὶ τὸν ποταμόν τῆς δ' ἐπὶ τὸν ἀνέχονα· ἐπέξευ- κται δὲ γέφυρα τῷ ποταμῷ μία μὲν ἀπὸ τῆς πόλεως ἐπὶ τὸ προάστειον, ἄλλη δ' ἀπὸ τοῦ προαστείου πρὸς τὴν ἕξω χώραν· κατὰ γὰρ τὴν γέφυραν ταύτην ἀπο- 15 λήγει τὸ ὄρος τὸ τῆς πέτρας ὑπερκείμενον. αὐλὼν δ' ἐστὶν ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ διήκων οὐ πλατὺς τὸ πρῶτον τελέως, ἔπειτα πλατύνεται καὶ ποιεῖ τὸ Χιλιόκωμον καλούμενον πεδίον· εἰδ' ἡ Διακοπηνὴ καὶ ἡ Πιμω- λισηνὴ χώρα πᾶσα εὐδαίμων μέχρι τοῦ Ἄλως. ταῦτα 20 μὲν τὰ ἄρκτικὰ μέρη τῆς τῶν Ἀμασέων χώρας, μῆκος ὅσον πεντακοσίων σταδίων· ἔπειθ' ἕξῃς ἡ λοιπὴ πολὺ ταύτης ἐπιμηκεστέρα μέχρι τοῦ Βαβανόμου καὶ τῆς Ξιμήνης, ἥπερ καὶ αὐτὴ καθήκει μέχρι πρὸς τὸν Ἄλυν· τοῦτο μὲν δὴ τὸ μῆκος, πλάτος δὲ τὸ ἀπὸ τῶν 25 ἄρκτων πρὸς νότον ἐπὶ τε τὴν Ζηλῆτιν καὶ τὴν μεγάλην Καππαδοκίαν μέχρι τῶν Τροκμῶν. εἰσὶ δ' ἐν τῇ Ξιμήνῃ ἄλαι ὀρυκτῶν ἄλων, ἀφ' ὧν εἰκάξουσιν εἰ- ρῆσθαι Ἄλυν τὸν ποταμόν. ἔστι δὲ καὶ ἐρύματα πλείω κατεσκευασμένα ἐν τῇ ἡμετέρᾳ χώρᾳ καὶ ἔρημος γῆ πολ- 30 λὴ διὰ τὸν Μιθριδατικὸν πόλεμον. ἔστι μέντοι πᾶσα μὲν εὐδενδρος, ἡ δ' ἐκπόβητος καὶ τοῖς ἄλλοις θρεμ-

μασι προσφορος· ἅπασα δ' οἰκήσιμος καλῶς. ἐδόθη
δὲ καὶ ἡ Ἀμάσεια βασιλεῦσι, νῦν δ' ἐπαρχία ἐστίν.

Λοιπή δ' ἐστὶν ἡ ἐκτὸς Ἄλνως χώρα τῆς Ποντικῆς 40
ἐπαρχίας ἢ περὶ τὸν Ὀλγασσιν, συναφῆς τῇ Σινωπίδι. C. 562
5 ἔστι δ' ὁ Ὀλγασσιν ὄρος σφόδρα ὑψηλὸν καὶ δύσβα-
τον· καὶ ἰερὰ τοῦ ὄρους τούτου πανταχοῦ καθιδρυ-
μένα ἔχουσιν οἱ Παφλαγόνες. περικεῖται δ' ἱκανῶς
χώρα ἀγαθὴ ἢ τε Βλαηνή καὶ ἡ Δομανῆτις, δι' ἧς
Ἀμνίας ρεῖ ποταμός. ἐνταῦθα Μιθριδάτης ὁ Εὐπάτωρ
10 τὰς Νικομήδους τοῦ Βιθυννοῦ δυνάμεις ἄρδην ἠφάνι-
σεν, οὐκ αὐτὸς παρατυχὼν ἀλλὰ διὰ τῶν στρατηγῶν·
καὶ ὁ μὲν φεύγων μετ' ὀλίγων εἰς τὴν οἰκείαν ἐσώθη
κἀκεῖθεν εἰς Ἰταλίαν ἐπλευσεν, ὁ δ' ἠκολούθησε καὶ
τὴν τε Βιθυνίαν εἶλεν ἐξ ἐφόδου καὶ τὴν Ἀσίαν κατέ-
15 σχε μέχρι Καρίας καὶ Λυκίας. κἀνταῦθα δ' ἀπεδείχθη
πόλις ἡ Πομπηιοῦπολις· ἐν δὲ τῇ πόλει ταύτῃ τὸ σαν-
δαρακουργεῖον οὐ πολὺ ἄπωθεν Πιμωλίσων, φρου-
ρίου βασιλικοῦ κατεσκευασμένου, ἀφ' οὗ ἡ χώρα ἢ ἐκα-
τέρωθεν τοῦ ποταμοῦ καλεῖται Πιμωλισσηνή. τὸ δὲ
20 σανδαρακουργεῖον ὄρος κοῖλόν ἐστιν ἐκ τῆς μεταλλείας,
ὑπεληλυθότων αὐτὸ τῶν ἐργαζομένων διωρῶξε μεγά-
λαις· εἰργάζοντο δὲ δημοσιῶναι μεταλλευταῖς χρώ-
μενοι τοῖς ἀπὸ κακουργίας ἀγοραζομένοις ἀνδραπό-
δοις· πρὸς γὰρ τῷ ἐπιπόνῳ τοῦ ἔργου καὶ θανάσιμον
25 καὶ δύσοιστον εἶναι τὸν ἄερα φασὶ τὸν ἐν τοῖς μετάλ-
λοις διὰ τὴν βαρύτητα τῆς τῶν βάλων ὁσμῆς, ὥστε
ὠκύμορα εἶναι τὰ σώματα. καὶ δὴ καὶ ἐκλείπεσθαι
συμβαίνει πολλάκις τὴν μεταλλείαν διὰ τὸ ἀλυσιτελές,
πλειόνων μὲν ἢ διακοσίων ὄντων τῶν ἐργαζομένων,
30 συνεχῶς δὲ νόσοις καὶ φθοραῖς δαπανωμένων. τοσαῦ-
τα καὶ περὶ τοῦ Πόντου εἰρήσθω.

Μετὰ δὲ τὴν Πομπηιοῦπολιν ἡ λοιπὴ τῆς Παφλα- 41

γονίας ἐστὶ τῆς μεσογαίας μέχρι Βιθυνίας ἰούσι πρὸς
 δύοσιν. ταύτης δὲ καίπερ ὀλίγης οὔσης μικρὸν μὲν πρὸ
 ἡμῶν ἦρχον πλείους, νῦν δ' ἔχουσι Ῥωμαῖοι τοῦ γέ-
 νους τῶν βασιλέων ἐκλιπόντος. ὀνομάξουσιν δ' οὖν
 τὴν ὁμορον τῇ Βιθυνίᾳ Τιμωνεῖτιν καὶ τὴν Γεξατόριγος 5
 καὶ Μαρωλίτιν τε καὶ Σανιστηνὴν καὶ Ποταμίαν· ἣν
 δέ τις καὶ Κιμιατηνὴ, ἐν ἣ τὰ Κιμίατα, φρούριον ἐρυ-
 μνόν, ὑποκείμενον τῇ τοῦ Ὀλγάσσου ὄρεινῃ, ὃ χρη-
 σάμενος ὁρμητηρίῳ Μιθριδάτης ὁ κτίστης προσαγο-
 ρευθεὶς κατέστη τοῦ Πόντου κύριος, καὶ οἱ ἀπ' αὐτοῦ 10
 τὴν διαδοχὴν ἐφύλαξαν μέχρι τοῦ Εὐπάτορος. ὕστα-
 τος δὲ τῆς Παφλαγονίας ἦρξε Δηϊόταρος, Κάστορος
 υἱὸς ὁ προσαγορευθεὶς φιλάδελφος, τὸ Μορξέου βασι-
 λειον ἔχων τὰ Γάγγρα πολισμάτιον ἅμα καὶ φρούριον.

42 Εὐδοξος δ' ὀρυκτοὺς ἰχθυῖς ἐν Παφλαγονίᾳ λέ- 15
 C.563 γων ἐν ξηροῖς τόποις οὐ διορίζει τὸν τόπον, ἐν ὑγροῖς
 δὲ περὶ τὴν Ἀσκανίαν λίμνην φησὶ τὴν ὑπὸ Κίρῳ, λέ-
 γων οὐδὲν σαφές.

Ἐπεὶ δὲ καὶ τὴν ὁμορον τῷ Πόντῳ Παφλαγονίαν
 ἐκτιθέμεθα, τοῖς δὲ Παφλαγόσιν ὁμοροῦσιν οἱ Βιθυ- 20
 νοὶ πρὸς δύοσιν, πειρασόμεθα καὶ τὰ τούτων ἐπελθεῖν·
 ἔπειτα λαβόντες ἀρχὴν ἄλλην ἐκ τε τούτων καὶ τῶν
 Παφλαγόνων τὰ ἐξῆς τούτων τὰ πρὸς νότον μέχρι τοῦ
 Ταύρου συνυφανοῦμεν τὰ παράλληλα τῷ Πόντῳ καὶ
 τῇ Καππαδοκίᾳ· τοιαύτην γάρ τινα ὑπογράφει τάξιν 25
 καὶ μερισμὸν ἢ τῶν τόπων φύσις.

4 Τὴν δὲ Βιθυνίαν ἀπὸ μὲν τῆς ἀνατολῆς ὀρίζουσι
 Παφλαγόνες τε καὶ Μαριανδυνοὶ καὶ τῶν Ἐπικτήτων
 τινές, ἀπὸ δὲ τῶν ἄρκτων ἢ Ποντικῇ θάλαττα ἢ ἀπὸ
 τῶν ἐκβολῶν τοῦ Σαγγαρίου μέχρι τοῦ στόματος τοῦ 30
 κατὰ Βυζάντιον καὶ Χαλκηδόνᾳ, ἀπὸ δὲ δύσεως ἢ Προ-
 ποντίς, πρὸς νότον δ' ἢ τε Μυσία καὶ ἢ ἐπικτήτος κα-

λουμένη Φρυγία, ἣ δ' αὐτὴ καὶ Ἑλλησποντιακὴ Φρυγία καλουμένη.

Ταύτης δ' ἐπὶ μὲν τῷ στόματι τοῦ Πόντου Χαλ- 2
κηδὼν ἴδρυνται, Μεγαρέων κτίσμα, καὶ κόμη Χρυσό-
5 πολις καὶ τὸ ἱερὸν τὸ Χαλκηδόνιον, ἔχει δ' ἡ χώρα μι-
κρὸν ὑπὲρ τῆς θαλάττης κρήνην * Ἀζαριτίαν, τρέφου-
σαν κροκοδείλους μικρούς· ἔπειτ' ἐκδέχεται τὴν τῶν
Χαλκηδονίων ἡύονα ὁ Ἀστακηνὸς καλούμενος κόλπος,
μέρος ὦν τῆς Προποντίδος, ἐν ᾧ ἡ Νικομήδεια ἐκτι-
10 σται ἐπάνυμος ἐνὸς τῶν Βιθυνικῶν βασιλέων τοῦ
κτίσαντος αὐτήν· πολλοὶ δ' ὁμωνύμως ὠνομάσθησαν,
καθάπερ Πτολεμαῖοι διὰ τὴν τοῦ πρώτου δόξαν. ἦν δ'
ἐν αὐτῷ τῷ κόλπῳ καὶ Ἀστακὸς πόλις, Μεγαρέων κτί-
σμα καὶ Ἀθηναίων καὶ μετὰ ταῦτα Δοιδαλσοῦ, ἀφ'
15 ἧς καὶ ὁ κόλπος ὠνομάσθη· κατεσκάφη δ' ὑπὸ Λυσι-
μάχου· τοὺς δ' οἰκήτορας μετήγαγεν εἰς Νικομήδειαν
ὁ κτίσας αὐτήν.

Τῷ δ' Ἀστακηνῷ κόλπος ἄλλος συνεχῆς ἐστίν, 3
εἰσέχων μᾶλλον πρὸς ἀνίσχοιτα ἥλιον, ἐν ᾧ Προυσιάς
20 ἔστιν ἡ Κίος πρότερον ὠνομασθεῖσα· κατέσκαψε δὲ
τὴν Κίον Φίλιππος, ὁ Δημητρίου μὲν υἱὸς Περσέως
δὲ πατήρ, ἔδωκε δὲ Προυσίᾳ τῷ Ζήλᾳ, συγκατασκά-
ψαντι καὶ ταύτην καὶ Μύρλειαν ἀστυγείτονα πόλιν,
πλησίον δὲ καὶ Προύσης οὖσαν· ἀναλαβὼν δ' ἐκεῖνος
25 ἐκ τῶν ἐρειπίων αὐτὰς ἐπωνόμασεν ἀφ' ἑαυτοῦ μὲν
Προυσιάδα πόλιν τὴν Κίον, τὴν δὲ Μύρλειαν Ἀπά-
μειαν ἀπὸ τῆς γυναικὸς. οὗτος δ' ἔστιν ὁ Προυσίας
ὁ καὶ Ἀννίβαν δεξάμενος ἀναχωρήσαντα δεῦρο μετὰ
τὴν Ἀντιόχου ἦτταν, καὶ τῆς ἐφ' Ἑλλησπόντῳ Φρυγίας
30 ἀναστὰς κατὰ συμβάσεις τοῖς Ἀτταλικοῖς, ἦν οἱ μὲν
πρότερον ἐκάλουν μικρὰν Φρυγίαν, ἐκεῖνοι δ' ἐπί-
κτητον ὠνόμασαν· ὑπέρκειται δὲ τῆς Προυσιάδος ὄρος C.564

ὃ καλοῦσιν Ἀργανθώνιον. ἐνταῦθα δὲ μυθεύουσι τὸν Ἰλᾶν ἕνα τῶν Ἡρακλέους ἐταίρων συμπλεύσαντα ἐπὶ τῆς Ἀργοῦς αὐτῷ ἐξιόντα δὲ ἐπὶ ὑδρεῖαν ὑπὸ νυμφῶν ἀρπαγῆναι. Κίον δὲ καὶ τοῦτον Ἡρακλέους ἐταίρου καὶ σύμπλουν ἐπανελθόντα ἐκ Κόλχων αὐτόθι κατα- 5 μείναι καὶ κτίσαι τὴν πόλιν ἐπ' αὐνυμον αὐτοῦ. καὶ νῦν δ' ἔτι ἑορτὴ τις ἄγεται παρὰ τοῖς Προουσιεῦσιν καὶ ὀρεβασία θιασευόντων καὶ καλούντων Ἰλᾶν, ὥς ἂν κατὰ ξήτησιν τὴν ἐκείνου πεποιημένων τὴν ἐπὶ τὰς ὕλας ἔξοδον. πολιτευσάμενοι δὲ πρὸς Ῥωμαίους οἱ Προ- 10 σιεῖς εὐνοικῶς ἐλευθερίας ἔτυχον. οἱ δ' Ἀπαμειῖς ἀποικίαν ἐδέξαντο Ῥωμαίων. Προῦσα δὲ ἐπὶ τῷ Ὀλύμπῳ ἱδρύεται πρὸς τὴν Μυσίῳ, πόλις εὐνομουμένη, τοῖς τε Φρυγῖν ὁμορος καὶ τοῖς Μυσοῖς, κτίσμα Προυσίου τοῦ πρὸς * Κροῖσον πολεμήσαντος. 15

- 4 Διορίσαι δὲ τοὺς ὄρους χαλεπὸν τοῖς τε Βιθυνῶν καὶ Φρυγῶν καὶ Μυσῶν καὶ ἔτι Δολιόνων τῶν περὶ Κύνικον καὶ Μυγδόνων καὶ Τρώων· καὶ διότι μὲν εἶναι δεῖ ἕκαστον φύλον χωρὶς ὁμολογεῖται (καὶ ἐπὶ γε τῶν Φρυγῶν καὶ τῶν Μυσῶν καὶ παροιμιάζονται 20 „χωρὶς τὰ Μυσῶν καὶ Φρυγῶν ὁρίσματα“), διορίσαι δὲ χαλεπόν. αἴτιον δὲ τὸ τοὺς ἐπήλυδας βαρβάρους καὶ στρατιώτας ὄντας μὴ βεβαίως κατέχειν τὴν κρατηθεῖσαν, ἀλλὰ πλανήτας εἶναι τὸ πλεόν ἐκβάλλοντας καὶ ἐκβαλλομένους. ἅπαντα δὲ τὰ ἔθνη ταῦτα Θράκιά 25 τις εἰκάξει ἂν διὰ τὸ τὴν περαιάν νέμεσθαι τούτους καὶ διὰ τὸ μὴ πολὺ ἐξαλλάττειν ἀλλήλων ἑκατέρους.
- 5 Ὅμως δ' ἐφ' ὅσον εἰκάξειν οἷόν τε, τῆς μὲν Βιθυνίας μέσην ἂν τις θεῖη καὶ τῆς ἐκβολῆς τοῦ Αἰσῆπου τὴν Μυσίαν, ἀπτομένην τῆς θαλάττης καὶ διήκουσαν 30 μέχρι τοῦ Ὀλύμπου σχεδόν [τι] παντός· κύκλῳ δὲ τὴν Ἐπικτήτον κειμένην ἐν τῇ μεσογαίᾳ, θαλάττης οὐδα-

μοῦ ἀποτομένην διατεινουσαν δὲ μέχρι τῶν ἐσῶν με-
 ρῶν τῆς Ἀσκανίας λίμνης τε καὶ χώρας· ὁμωνύμως
 γὰρ τῇ λίμνῃ καὶ ἡ χώρα ἐλέγτο, καὶ ἦν αὐτῆς τὸ μὲν
 Φρύγιον τὸ δὲ Μύσιον ἀπωτέρω δὲ τῆς Τροίας τὸ Φρύ-
 5 γιον· καὶ δὴ καὶ οὕτω δεκτέον τὸ παρὰ τῷ ποιητῇ ὅταν
 φῇ „Φόρκυς δ' αὖ Φρύγας ἦγε καὶ Ἀσκάνιος θεοειδής,
 „τῇλ' ἐξ Ἀσκανίης,“ τῆς Φρυγιακῆς, ὥς οὔσης ἐγγυ-
 τέρω ἄλλης Ἀσκανίας Μυσιακῆς τῆς πρὸς τῇ νῦν Νι-
 καίᾳ, ἣς μέμνηται ὅταν φῇ „Πάλμυν τ' Ἀσκάνιον τε
 10 „Μόρυν δ', υἱ' Ἰπποτίωνος, Μυσῶν ἀρχεμάχων ἡγή- C.565
 „τορα, οἳ ῥ' ἐξ Ἀσκανίης ἐριβώλακος ἦλθον ἀμοι-
 „βολί.“ οὐ θαυμαστὸν δ' εἰ τῶν Φρυγῶν εἰπῶν τινα
 ἡγεμόνα Ἀσκάνιον καὶ ἐξ Ἀσκανίας ἦκοντα, καὶ Μυ-
 σῶν τινα λέγει ἡγεμόνα Ἀσκάνιον καὶ ἐξ Ἀσκανίας
 15 ἦκοντα· πολλὴ γὰρ ἡ ὁμωνυμία παρ' αὐτῷ καὶ ἡ ἀπὸ
 τῶν ποταμῶν καὶ λιμνῶν καὶ χωρίων ἐπίκλησις.

Καὶ τὸν Αἰσηπον δὲ τῶν Μυσῶν ὄριον παραδί- 6
 δωσιν αὐτὸς ὁ ποιητής· τὴν γὰρ ὑπὲρ τοῦ Ἰλίου πα-
 ρώρειαν τῆς Τροίας καταλέξας τὴν ὑπ' Αἰνείᾳ ἦν Δαρ-
 20 δανίαν ἐκάλεσε, τίθησιν ἐφεξῆς πρὸς ἄρκτον καὶ τὴν
 Δυκίαν τὴν ὑπὸ Πανδάρῳ ἐν ἣ ἡ Ζέλεια· καὶ φησὶν
 „οἳ δὲ Ζέλειαν ἐναιον ὑπὸ πόδα νείατον Ἰδης, ἀφνει-
 „οί, πίνοντες ὕδωρ μέλαν Αἰσήποιο Τρῶες.“ τῇ δὲ Ζε-
 λείᾳ ὑποπέπτωκε πρὸς θαλάττῃ ἐπίταδε τοῦ Αἰσήπου
 25 τὸ τῆς Ἀδραστείας πεδίου καὶ Τήρεια καὶ ἡ Πιτυὰ καὶ
 καθόλου ἡ νῦν Κυζικηνή ἡ πρὸς Πριάπῳ ἦν ἐφεξῆς
 καταλέγει, εἰτα ἀνὰκάμπει πάλιν ἐπὶ τὰ πρὸς ἕω μέρη
 καὶ τὰ ἐπέκεινα, ὥστε ἐμφαίνει τὴν μέχρι Αἰσήπου πέ-
 ρας ἡγούμενος τῆς Τρωάδος τὸ ἀρκτικὸν καὶ ἐϋον.
 30 ἀλλὰ μὴν μετὰ γε τὴν Τρωάδα ἡ Μυσία ἐστὶ καὶ ὁ
 Ὀλυμπος.

Ἡ μὲν οὖν παλαιὰ μνήμη τοιαύτην τινὰ ὑπαγο-

ρεύει τὴν τῶν ἐθνῶν θέσιν. αἱ δὲ νῦν μεταβολαὶ τα
πολλὰ ἐξήλλαξαν, ἄλλοτ' ἄλλων ἐπικρατούντων καὶ
τὰ μὲν συγγεόντων τὰ δὲ διασπῶντων. καὶ γὰρ Φρύ-
γες ἐπεκράτησαν καὶ Μυσοὶ μετὰ τὴν Τροίης ἄλωσιν,
εἰδ' ὅστερον Ἀνδοὶ καὶ μετ' ἐκείνων Αἰολεῖς καὶ Ἰω- 5
νες, ἔπειτα Πέρσαι καὶ Μακεδόνες, τελευταῖοι δὲ Ῥω-
μαῖοι, ἐφ' ὧν ἤδη καὶ τὰς διαλέκτους καὶ τὰ ὀνόματα
ἀποβαβλήκασιν οἱ πλείστοι, γεγονότος ἐτέρου τινὸς
μερισμοῦ τῆς χώρας, οὐ μᾶλλον φροντίσαι δεῖ τὰ νῦν
οἷ' ἔστι λέγοντας, τῇ δὲ ἱστοριολογίᾳ μετρίως προσ- 10
έχοντας.

7 Ἐν δὲ τῇ μεσογαίᾳ τῆς Βιθυνίας τό τε Βιθυνίον
ἔστιν ὑπερκείμενον τοῦ Τιτίου καὶ ἔχον τὴν περὶ Σά-
λωνα χώραν ἀρίστην βουβοσίοις, ὅθεν ἔστιν ὁ Σαλω-
νίτης τυρός, καὶ Νίκαια ἡ μητρόπολις τῆς Βιθυνίας 15
ἐπὶ τῇ Ἀσκανίᾳ λίμνῃ (περίκειται δὲ κύκλῳ πεδίου
μέγα καὶ σφόδρα εὐδαιμον, οὐ πάντῳ δὲ ὑγίεινόν τοῦ
θέρους), κτίσμα Ἀντιγόνου μὲν πρῶτον τοῦ Φιλίπ-
που, ὃς αὐτὴν Ἀντιγόνειαν προσεῖπεν, εἰτα Ἀνσιμά-
χου, ὃς ἀπὸ τῆς γυναικὸς μετωνόμασε Νίκαιαν· ἦν δ' 20
αὕτη θυγάτηρ Ἀντιπάτρου. ἔστι δὲ τῆς πόλεως ἑκα-
δεκαστάδιος ὁ περίβολος ἐν τετραγώνῳ σχήματι· ἔστι
δὲ καὶ τετράπυλος ἐν πεδίῳ κείμενος ἐρρυμοτομημένος
C.566 πρὸς ὀρθὰς γωνίας, ὥστ' ἀφ' ἐνὸς λίθου κατὰ μέσον
ἰδρυμένον τὸ γυμνάσιον τὰς τέτταρας ὀρθᾶσαι πύλας. 25
μικρὸν δ' ὑπὲρ τῆς Ἀσκανίας λίμνης Ὀτροία πόλιν ἔχουσαν
πρὸς τοῖς ὄροις ἤδη τῆς Βιθυνίας τοῖς πρὸς ἑω· εἰκά-
ζουσι δ' ἀπὸ Ὀτρέως Ὀτροίαν καλεῖσθαι * πρῶτερον.

8 Ὅτι δ' ἦν κατοικίᾳ Μυσῶν ἡ Βιθυνία πρῶτον
μαρτυρήσει Σκύλαξ ὁ Καρυανδεὺς φήσας περιοικεῖν 30
τὴν Ἀσκανίαν λίμνην Φρύγας καὶ Μυσούς, ἔπειτα
Διονύσιος ὁ τὰς κτίσεις συγγράψας, ὃς τὰ κατὰ Χαλ-

κηδόνα καὶ Βυζάντιον στενά, ἃ νῦν Θράκιος Βόσπορος καλεῖται, πρότερόν φησι Μύσιον Βόσπορον προσαγορεύεσθαι· τοῦτο δ' ἂν τις καὶ τοῦ Θράκας εἶναι τοὺς Μυσοὺς μαρτύριον θεῖη· ὃ τε Εὐφορίων „Μυσοῖο
 5 „παρ' ὕδασι ν' Ἀσκανίωιο“ λέγων, καὶ ὁ Αἰτωλὸς Ἀλέξανδρος „οἱ καὶ ἐπ' Ἀσκανίων δώματ' ἔχουσι ῥοῶν „λίμνης Ἀσκανίης ἐπὶ χεῖλεσιν, ἔνθα Δολίων νλὸς Σιληνοῦ νάσσατο καὶ Μελίης,“ τὸ αὐτὸ ἐκμαρτυροῦσιν, οὐδαμοῦ τῆς Ἀσκανίας λίμνης εὐρισκομένης ἀλλ' 10 ἐνταῦθα μόνον.

Ἄνδρες δ' ἀξιόλογοι κατὰ παιδείαν γεγόνασιν ἐν 9 τῇ Βιθυνίᾳ Ξενοκράτης τε ὁ φιλόσοφος καὶ Διονύσιος ὁ διαλεκτικὸς καὶ Ἰππαρχος καὶ Θεοδόσιος καὶ οἱ παῖδες αὐτοῦ μαθηματικοὶ Κλεοχάρης τε ῥήτωρ ὃ [τε]
 15 Μυρλεανὸς Ἀσκληπιάδης [γραμματικὸς] ἰατρός [τε] ὁ Προυσιεύς.

Πρὸς νότον δ' εἰσὶ τοῖς Βιθυνοῖς οἱ περὶ τὸν 10 Ὀλυμπον Μυσοὶ (οὓς Ὀλυμπηνοὺς καλοῦσιν τινες, οἱ δ' Ἑλλησποντίους) καὶ ἡ ἐφ' Ἑλλησπόντῳ Φρυγία, 20 τοῖς δὲ Παφλαγόσι Γαλάται· ἀμφοτέρων τε τούτων ἐτι πρὸς νότον ἡ μεγάλη Φρυγία καὶ Ἀνκαονία μέχρι τοῦ Ταύρου τοῦ Κιλικίου καὶ τοῦ Πισιδικοῦ. ἐπεὶ δὲ τὰ τῇ Παφλαγονίᾳ συνεχῇ παράκειται τῷ Πόντῳ καὶ τῇ Καππαδοκίᾳ καὶ τοῖς ἤδη περιωδευμένοις ἔθνεσιν, 25 οἰκεῖον ἂν εἴη τὰ τούτοις γειτονοῦντα μέρη προσαποδοῦναι πρῶτον, ἔπειτα τοὺς ἐξῆς τόπους παραδείξαι.

Πρὸς νότον τοίνυν εἰσὶ τοῖς Παφλαγόσι Γαλάται· 3 τούτων δ' ἐστὶν ἔθνη τρία, δύο μὲν τῶν ἡγεμόνων ἐπώνυμα, Τροκμοὶ καὶ Τολιστοβῳῆγιοι, τὸ τρίτον δ' 30 ἀπὸ τοῦ ἐν Κελτικῇ ἔθνους Τεκτόσαγες. κατέσχον δὲ τὴν χώραν ταύτην οἱ Γαλάται πλανηθέντες πολὺν χρόνον καὶ καταδραμόντες τὴν ὑπὸ τοῖς Ἀτταλικοῖς βασι-

λεῦσι χώραν καὶ τοῖς Βιθυνοῖς, ἕως παρ' ἐκόντων ἑλα-
 βον τὴν νῦν Γαλατίαν καὶ Γαλλογραικίαν λεγομένην.
 ἀρχηγὸς δὲ δοκεῖ μάλιστα τῆς περαιώσεως τῆς εἰς τὴν
 C.567 Ἀσίαν γενέσθαι Λεοννόριος. τριῶν δὲ ὄντων ἔθνων
 ὁμογλώττων καὶ κατ' ἄλλο οὐδὲν ἐξηλλαγμένων, ἕκα- 5
 στον διελόντες εἰς τέτταρας μερίδας τετραρχίαν ἐκά-
 στην ἐκάλεσαν, τετράρχην ἔχουσαν ἴδιον καὶ δικαστὴν
 ἕνα καὶ στρατοφύλακα ἕνα ὑπὸ τῷ τετράρχῃ τεταγμέ-
 νους, ὑποστρατοφύλακας δὲ δύο. ἡ δὲ τῶν δώδεκα
 τετραρχῶν βουλὴ ἄνδρες ἦσαν τριακόσιοι, συνήγοντο 10
 δὲ εἰς τὸν καλούμενον Δρυνέμετον. τὰ μὲν οὖν φονικὰ
 ἡ βουλὴ ἔκρινε, τὰ δὲ ἄλλα οἱ τετράρχαι καὶ οἱ δικα-
 σταί. πάλαι μὲν οὖν ἦν τοιαύτη τις ἡ διάταξις, καθ'
 ἡμᾶς δὲ εἰς τρεῖς, εἴτ' εἰς δύο ἡγεμόνας, εἴτα εἰς ἕνα
 ἦκεν ἡ δυναστεία, εἰς Δηϊόταρον, εἴτα ἔκεινον διεδέ- 15
 ξατο Ἀμύντας· νῦν δ' ἔχουσι Ῥωμαῖοι καὶ ταύτην καὶ
 τὴν ὑπὸ τῷ Ἀμύντᾳ γενομένην πᾶσαν εἰς μίαν συνα-
 γαγόντες ἐπαρχίαν.

- 2 Ἐχουσι δὲ οἱ μὲν Τροχμοὶ τὰ πρὸς τῷ Πόντῳ καὶ
 τῇ Καππαδοκίᾳ· ταῦτα δ' ἐστὶ τὰ κράτιστα ὧν νέμον- 20
 ται Γαλάται· φρούρια δ' αὐτοῖς τετείχισται τρία, Τά-
 σιον, ἐμπόριον τῶν ταύτῃ, ὅπου ὁ τοῦ Διὸς κολοσσὸς
 χαλκοῦς καὶ τέμενος αὐτοῦ ἄστυλον, καὶ Μιθριδάτιον,
 ὃ ἔδωκε Πομπήιος * Βογοδιατάρῳ τῆς Ποντικῆς βασι-
 λείας ἀφορίσας, τρίτον δὲ πῶ Δανάλα, ὅπου τὸν σύλ- 25
 λογον ἐποιήσαντο Πομπηϊὸς τε καὶ Λεύκολλος, ὁ μὲν
 ἦκων ἐπὶ τὴν τοῦ πολέμου διαδοχὴν ὁ δὲ παραδιδούς
 τὴν ἐξουσίαν καὶ ἀπαίρων ἐπὶ τὸν θρόμβον. Τροχμοὶ
 μὲν δὴ ταῦτ' ἔχουσι τὰ μέρη, Τεκτόσαγες δὲ τὰ πρὸς
 τῇ μεγάλῃ Φρυγίᾳ τῇ κατὰ Πεσσινοῦντα καὶ Ὀρκαόρ- 30
 κους· τούτων δ' ἦν φρούριον Ἄγκυρα ὁμώνυμος τῇ
 πρὸς Ἀνδία περὶ Βλαῦδον πολίχνῃ Φρυγιακῇ. Τολι-

στοβώγιοι δὲ ὄμοροι Βιθυνοῖς εἰσι καὶ τῇ Ἐπικτήτῳ
καλουμένῃ Φρύγῃ· φρούρια δ' αὐτῶν ἐστὶ τό τε
* Βλούκιον καὶ τὸ Πήιον, ὧν τὸ μὲν ἦν βασιλείον Δη-
ιοτάρου, τὸ δὲ γαζοφυλάκιον.

- 5 Πεσσινοῦς δ' ἐστὶν ἐμπόριον τῶν ταύτῃ μέγιστον, 3
λερὸν ἔχον τῆς μητρὸς τῶν θεῶν σεβασμοῦ μεγάλου
τυγγάνον· καλοῦσι δ' αὐτὴν Ἀγδιστιν. οἱ δ' ἑρεῖς τὸ
παλαιὸν μὲν θυνάσται τινὲς ἦσαν, ἑρωσύνην καρπού-
μενοι μεγάλην, νυνὶ δὲ τούτων μὲν αἱ τιμαὶ πολὺ με-
10 μείωνται, τὸ δὲ ἐμπόριον συμμένει· κατεσκευάσται
δ' ὑπὸ τῶν Ἀτταλικῶν βασιλέων ἑεροπρεπῶς τὸ τέμε-
νος ναῶ τε καὶ στοαῖς λευκολίδοις· ἐπιφανὲς δ' ἐποίη-
σαν Ῥωμαῖοι τὸ ἑρόν, ἀφίδρυμα ἐνθένδε τῆς θεοῦ με-
ταπεμψάμενοι κατὰ τοὺς τῆς Σιβύλλης χρησμούς, κα-
15 θάπερ καὶ τοῦ Ἀσκληπιοῦ τοῦ ἐν Ἐπιδαύρῳ. ἐστὶ δὲ
καὶ ὄρος ὑπερκείμενον τῆς πόλεως τὸ Δίνδυμον, ἀφ'
οὗ ἡ Δινδυμηνή, καθάπερ ἀπὸ τῶν Κυβέλων ἢ Κυ-
βέλη. πλησίον δὲ καὶ ὁ Σαγγάριος ποταμὸς ποιεῖται
τὴν ῥύσιν· ἐπὶ δὲ τούτῳ τὰ παλαιὰ τῶν Φρυγῶν οἱ-0.568
20 κητήρια Μίδου καὶ ἔτι πρότερον Γορδίου καὶ ἄλλων
τινῶν, οὐδ' ἔχνη σῶζοντα πόλεων, ἀλλὰ κῶμαι μικρῶ
μείζους τῶν ἄλλων, οἷόν ἐστι τὸ Γόρδιον καὶ Γορβε-
οῦς, τὸ τοῦ Κάστορος βασιλείον τοῦ Σαωκονδάρου,
ἐν ᾧ γαμβρὸν ὄντα τοῦτον ἀπέσφαξε Διηόταρος καὶ
25 τὴν θυγατέρα τὴν αὐτοῦ· τὸ δὲ φρούριον κατέσπασε
καὶ διελυμήνατο τὸ πλεῖστον τῆς κατοικίας.

- Μετὰ δὲ τὴν Γαλατίαν πρὸς νότον ἣ τε λίμνη 4
ἐστὶν ἡ Τάττα, παρακειμένη τῇ μεγάλῃ Καππαδοκίᾳ
τῇ κατὰ τοὺς Μοριμηνούς, μέρος δ' οὐσα τῆς μεγάλης
30 Φρυγίας, καὶ ἡ συνεχὴς ταύτῃ μέχρι τοῦ Ταύρου, ἧς
τὴν πλείστην Ἀμύντας εἶχεν. ἡ μὲν οὖν Τάττα ἀλοπή-
γιόν ἐστὶν αὐτοφυές, οὕτω δὲ περιπλήττεται ῥαδίως

τὸ ὕδωρ παντὶ τῷ βαπτισθέντι εἰς αὐτὸ ὥστε στεφάνους ἁλῶν ἀνέλκουσιν, ἐπειδὴν καθῶσι κύκλον σχολίνον, τὰ τε ὄρνεα ἀλλίσκεται τὰ προσαψάμενα τῷ πτερώματι τοῦ ὕδατος παραχρῆμα πίπτοντα διὰ τὴν περιπῆξιν τῶν ἁλῶν. 5

6 Ἡ τε δὴ Τάττα [τοιαύτη] ἐστὶ, καὶ τὰ περὶ Ὀρκαόρκους καὶ Πιτνισσὸν καὶ τὰ τῶν Λυκαόνων ὄροπέδια ψυχρὰ καὶ ψιλὰ καὶ ὀναγρόβοτα, ὑδάτων δὲ σπάνις πολλή· ὅπου δὲ καὶ εὐρεῖν δυνατόν, βαθύτατα φρέατα τῶν πάντων, καθάπερ ἐν Σοάτροις, ὅπου καὶ πν- 10 πράσκεται τὸ ὕδωρ (ἐστὶ δὲ κωμόπολις Γαρσαούρων πλησίον)· ὅμως δὲ καίπερ ἄνυδρος οὕσα ἡ χώρα πρόβατα ἐκτρέφει θανυμαστῶς, τραχείας δὲ ἐρέας, καὶ τίνες ἐξ αὐτῶν τούτων μερίστους πλούτους ἐκτήσαντο· Ἀμύντας δ' ὑπὲρ τριακοσίας ἔσχε ποιμένας ἐν τοῖς τό- 15 ποῖς τούτοις. εἰσὶ δὲ καὶ λίμναι, Κάραλις μὲν ἡ μείζων ἡ δ' ἐλάττω Τρωγίτις. ἐνταῦθα δέ που καὶ τὸ Ἰκόνιον ἐστὶ, πολίχνιον εὖ συνωκισμένον καὶ χώραν εὐτυχεστέραν ἔχον τῆς λεχθείσης ὀναγροβότου· τοῦτο δ' εἶχε Πολέμων. πλησιάζει δ' ἤδη τούτοις τοῖς τόποις ὁ Ταῦ- 20 ρος ὁ τὴν Καππαδοκίαν ὀρίζων καὶ τὴν Λυκαονίαν πρὸς τοὺς ὑπερκειμένους Κίλικας τοὺς Τραχειώτας. Λυκαόνων τε καὶ Καππαδόκων ὄριόν ἐστὶ τὸ μεταξὺ Κοροπασσοῦ κώμης Λυκαόνων, καὶ Γαρσαούρων πολίχνιου Καππαδόκων· ἐστὶ δὲ τὸ μεταξὺ διάστημα τῶν 25 φρουρίων τούτων ἑκατὸν εἴκοσί που στάδιοι.

2 Τῆς δὲ Λυκαονίας ἐστὶ καὶ ἡ Ἰσανρικὴ πρὸς αὐτῷ τῷ Ταύρῳ ἡ τὰ Ἰσανρα ἔχουσα κώμας δύο ὁμωνύμους, τὴν μὲν παλαιὰν καλουμένην, [τὴν δὲ νέαν,] εὐερκῇ· ὑπήκοοι δ' ἦσαν ταύταις καὶ ἄλλαι κῶμαι συχναί, λη- 30 στῶν δ' ἅπασαι κατοικίαι. παρέσχον δὲ καὶ Ῥωμαίοις πράγματα καὶ τῷ Ἰσανρικῷ προσαγορευθέντι Πουβλίῳ

Σερβιλίῳ, ὃν ἡμεῖς εἶδομεν, ὃς καὶ ταῦτα ὑπέταξε Ρω-
μαίοις καὶ τὰ πολλὰ τῶν πειρατῶν ἐρύματα ἐξεῖλε τὰ C. 569
ἐπὶ τῇ θαλάττῃ.

Τῆς δ' Ἰσαυρικῆς ἐστὶν ἐν πλευραῖς ἡ Δέρβη, μά- 3
5 λιστα τῇ Καππαδοκίᾳ ἐπιπεφυκὸς τοῦ Ἀντιπάτρου τυ-
ραννεῖον τοῦ Δερβήτου· τοῦ δ' ἦν καὶ τὰ Δάρανθα·
ἐφ' ἡμῶν δὲ καὶ τὰ Ἰσαυρα καὶ τὴν Δέρβην Ἀμύντας
εἶχεν, ἐπιθέμενος τῷ Δερβήτῃ καὶ ἀνελὼν αὐτόν, τὰ δ'
Ἰσαυρα παρὰ τῶν Ρωμαίων λαβὼν· καὶ δὴ βασιλείον
10 ἑαυτῷ κατεσκεύαζεν ἐνταῦθα, τὴν παλαιὰν Ἰσαυραν
ἀνατρέψας. ἐν δὲ τῷ αὐτῷ χωρίῳ καινὸν τεῖχος οἰκο-
δομῶν οὐκ ἔφθη συντελέσας, ἀλλὰ διέφθειραν αὐτόν
οἱ Κίλικες ἐμβαλόντα εἰς τοὺς Ὀμοναθεῖς καὶ ἐξ ἐνέ-
δρας ληφθέντα.

15 Τὴν γὰρ Ἀντιόχειαν ἔχων τὴν πρὸς τῇ Πισιδίᾳ 4
μέχρι Ἀπολλωνιάδος τῆς πρὸς Ἀπαμείᾳ τῇ Κιβωτῷ καὶ
τῆς παρωρείου τινὰ καὶ τὴν Ἀυκαουλίαν ἐπειρᾶτο τοὺς
ἐκ τοῦ Ταύρου κατατρέχοντας Κίλικας καὶ Πισίδας τὴν
χώραν ταύτην Φρυγῶν οὔσαν ἐξαιρεῖν, καὶ πολλὰ χω-
20 ρία ἐξεῖλεν ἀπόρθητα πρότερον ὄντα, ὧν καὶ Κρήμνα·
τὸ δὲ Σανδάλιον οὐδ' ἐνεχείρησε βίᾳ προσάγεσθαι,
μεταξὺ κείμενον τῆς τε Κρήμνης καὶ Σαγαλασσοῦ.

Τὴν μὲν οὖν Κρήμναν ἄποικοι Ρωμαίων ἔχουσιν, 5
ἡ Σαγαλασσὸς δ' ἐστὶν ὑπὸ τῷ αὐτῷ ἡγεμόνι τῶν Ρω-
25 μαίων ὑφ' ᾧ καὶ ἡ Ἀμύντου βασιλεία πᾶσα· διέχει δ'
Ἀπαμείας ἡμέρας ὁδόν, κατὰ βᾶσιν ἔχουσα σχεδόν τι
καὶ τριάκοντα σταδίων ἀπὸ τοῦ ἐρύματος· καλοῦσι δ'
αὐτὴν καὶ Σεληγησόν· ταύτην δὲ τὴν πόλιν καὶ Ἀλέ-
ξανδρος εἶλεν. ὁ δ' οὖν Ἀμύντας τὴν μὲν Κρήμναν
30 εἶλεν, εἰς δὲ τοὺς Ὀμοναθεῖς παρελθὼν, οἱ ἐνομίζοντο

ἀληπιότατοι, καὶ καταστάς ἤδη κύριος τῶν πλείστων χωρίων ἀνελὼν καὶ τὸν τύραννον αὐτῶν ἐξ ἀπάτης ἐλήφθη διὰ τῆς τοῦ τυράννου γυναικός. καὶ τοῦτον μὲν ἐκεῖνοι διέφθειραν, ἐκείνους δὲ Κυρίνιος ἐξεπόρθησε λιμῶ καὶ τετρακισχιλίους ἀνδρας ἐξώγρησε καὶ 5 συνώκισεν εἰς τὰς ἐγγὺς πόλεις, τὴν δὲ χώραν ἀπέλιπεν ἔρημον τῶν ἐν ἀκμῇ. ἔστι δὲ ἐν ὑψηλοῖς τοῦ Ταύρου μέρεσι, κρημνοῖς ἀποτόμοις σφόδρα καὶ τὸ πλεον ἁβάτοις, ἐν μέσῳ κοῖλον καὶ εὐγεων πεδῖον εἰς αὐλῶνας πλείους διηρημένον· τοῦτο δὲ γεωργοῦντες ὥκουν 10 ἐν ταῖς ὑπερκειμέναις ὄφρυσιν ἢ σπηλαίοις, τὰ πολλὰ δ' ἐνοπλοὶ ἦσαν καὶ κατέτρεχον τὴν ἀλλοτρίαν ἔχοντες ὄρη τειχίζοντα τὴν χώραν αὐτῶν.

7 Συναφεῖς δ' εἰσὶ τούτοις οἱ τε ἄλλοι Πισιδαὶ καὶ οἱ Σελγεῖς, οἵπερ εἰσὶν ἀξιολογώτατοι τῶν Πισιδῶν. 15 τὸ μὲν οὖν πλεον αὐτῶν μέρος τὰς ἀκρωρείας τοῦ Ταύρου κατέχει, τινὲς δὲ καὶ ὑπὲρ Σίδης καὶ Ἀσπένδου
C.570 Παμφυλικῶν πόλεων κατέχουσι γεῶλοφα χωρία ἐλαιόφυτα πάντα, τὰ δ' ὑπὲρ τούτων ἤδη ὀρεινά, Κατεννεῖς ὄμοροι Σελγεῦσι καὶ Ὀμοναδεῦσι, Σαγαλασσεῖς 20 δ' ἐπὶ τὰ ἐντὸς τὰ πρὸς τῇ Μιλυάδι.

2 Φησὶ δ' Ἀρτεμίδωρος τῶν Πισιδῶν πόλεις εἶναι Σέλγην Σαγαλασσὸν Πετνηλίσσον Ἀδαδα Τυμβριάδα Κρημναν Πιτνασσὸν Ἀμβλαδα Ἀνάβουρα Σίνδα Ἀρασσὸν Ταρβασσὸν Τερμησσόν· τούτων δ' οἱ μὲν εἰσὶ 25 τελέως ὀρεινοί, οἱ δὲ καὶ μέχρι τῶν ὑπωρείων καθήκοντες ἐφ' ἑκάτερα, ἐπὶ τε τὴν Παμφυλίαν καὶ τὴν Μιλυάδα, Φρυγί καὶ Λυδοῖς καὶ Καρσίν ὄμοροι, πᾶσιν εἰρηνικοῖς ἔθνεσι καίπερ προσβόρροις οὖσιν. οἱ δὲ Πάμφυλοι πολὺ τοῦ Κιλικίου φύλου μετέχοντες οὐ τελέως 30 ἀφείνται τῶν ληστρικῶν ἔργων, οὐδὲ τοὺς ὁμόρους ἐῷσι καθ' ἡσυχίαν ζῆν καίπερ τὰ νότια μέρη τῆς ὑπω-

ρείας τοῦ Ταύρου κατέχοντες. εἰσὶ δὲ τοῖς Φρυγῖν ὁμο-
ροι καὶ τῇ Καρίᾳ Τάβαι καὶ Σίνδα καὶ Ἀμβλαδα, ὅθεν
καὶ ὁ Ἀμβλαδεὺς οἶνος ἐκφέρεται πρὸς διαίτας ἰατρι-
κὰς ἐπιτήδειος.

- 5 Τῶν δ' οὖν ὄρεινῶν οὓς εἶπον Πισιδῶν οἱ μὲν ἄλ- 3
λοι κατὰ τυραννίδας μεμερισμένοι, καθάπερ οἱ Κίλι-
κες, ληστρικῶς ἤσκηνται· φασὶ δ' αὐτοῖς τῶν Δελέ-
γων συγκαταμιχθῆναι τινὰς τὸ παλαιόν, πλάνητας ἀν-
θρώπους, καὶ συμμεῖναι διὰ τὴν ὁμοιοτροπίαν αὐ-
10 τόθι. Σέλλῃ δὲ ἐξ ἀρχῆς μὲν ὑπὸ Λακεδαιμονίων ἐκτί-
σθη πόλις, καὶ ἔτι πρότερον ὑπὸ Κάλχαντος· ὕστε-
ρον δὲ καθ' αὐτὴν ἔμεινεν ἀνέξηθῆσα ἐκ τοῦ πολιτεύ-
εσθαι νομίμως, ὥστε καὶ δισμυριάνδρός ποτε εἶναι.
θαυμαστὴ δ' ἐστὶν ἡ φύσις τῶν τόπων· ἐν γὰρ ταῖς
15 ἀκρωρείαις τοῦ Ταύρου χώρα μυριάδας τρέφειν δυνα-
μένη σφόδρα εὐκαρπὸς ἐστίν, ὥστε καὶ ἐλαιόφυτα εἶ-
ναι πολλὰ χωρία καὶ εὐάμπελα, νομὰς τε ἀφθόνους
ἀνεῖσθαι παντοδαποῖς βοσκήμασι· κύκλω δ' ὑπέρκειν-
ται δρυμοὶ ποικίλης ὕλης. πλείστος δ' ὁ στύραξ φύεται
20 παρ' αὐτοῖς, δένδρον οὐ μέγα* ὀρθηλόν, ἀφ' οὗ καὶ
τὰ στυράκινα ἀκοντίσματα, εἰκότα τοῖς κρानεῖνοις·
ἐγγίνεται δ' ἐν τοῖς στελέχεσι ξυλοφάγον τι σκώληκος
εἶδος, ὃ μέχρι τῆς ἐπιφανείας διαφαγὸν τὸ ξύλον τὸ
μὲν πρῶτον πιτύροις ἢ πρίσμασιν εἰκότως τι ψῆγμα
25 προχεῖ, καὶ σωρὸς συνίσταται πρὸς τῇ ῥίζῃ, μετὰ δὲ
ταῦτα ἀπολείβεται τις ὑγρασία δεχομένη πῆξιν ῥαδίαν
παραπλησίαν τῇ κόμμει· ταύτης δὲ τὸ μὲν ἐπὶ τὸ ψῆγ-
μα πρὸς τῇ ῥίζῃ κατενεχθὲν ἀναμίγνυται τούτῳ τε
καὶ τῇ γῇ, πλὴν ὅσον ἐπιπολῆς συστὰν διαμένει κα-
30 θαρόν, τὸ δ' ἐν τῇ ἐπιφανείᾳ τοῦ στελέχους καθ' ἣν C.571

ρεῖ πῆττεται, καὶ τοῦτο καθαρὸν· ποιοῦσι δὲ καὶ ἐκ
 τοῦ μὴ καθαροῦ μῆγμα ξυλομιγές τι καὶ γεωμιγές, εὐ-
 ωδέστερον τοῦ καθαροῦ, τῇ δ' ἄλλῃ δυνάμει λειπόμε-
 νον (λανθάνει δὲ τοὺς πολλούς), ᾧ πλείεστω χρῶνται
 θυμιάματι οἱ δεισιδαίμονες. ἐπαινεῖται δὲ καὶ ἡ Σελ- 5
 γικὴ ἱοῖς καὶ τὸ ἀπ' αὐτῆς ἄλειμμα. ἔχει δ' ὀλίγας προσ-
 βάσεις [τὰ] περὶ τὴν πόλιν καὶ τὴν χώραν τὴν Σελ-
 γέων, ὁρεινὴν κρημνῶν καὶ χαραδρῶν οὕσαν πλήρη,
 ἃς ποιοῦσιν ἄλλοι τε ποταμοὶ καὶ ὁ Εὐρυμέδων καὶ ὁ
 Κέστρος ἀπὸ τῶν Σελγικῶν ὁρῶν εἰς τὴν Παμφυλίαν 10
 ἐκπίπτοντες θάλατταν· γέφυραι δ' ἐπὶ κείναις ταῖς
 ὁδοῖς. διὰ δὲ τὴν ἐρυμνότητα οὔτε πρότερον οὐδ' ὕστε-
 ρον οὐδ' ἅπαξ οἱ Σελγεῖς ἐπ' ἄλλοις ἐγένοντο, ἀλλὰ
 τὴν μὲν ἄλλην χώραν ἀδεῶς ἐκαρποῦντο, ὑπὲρ δὲ τῆς
 κάτω τῆς τε ἐν τῇ Παμφυλίᾳ καὶ τῆς ἐντὸς τοῦ Ταύρου 15
 διεμάχοντο πρὸς τοὺς βασιλεῖς αἰεὶ· πρὸς δὲ τοὺς Ῥω-
 μαίους ἐπὶ τακτοῖς τισι κατέειχον τὴν χώραν· πρὸς Ἀλέ-
 ξανδρον δὲ πρεσβευσάμενοι δέχεσθαι τὰ προστάγματα
 εἶπον κατὰ φιλίαν· νῦν δὲ ὑπήκοοι τελέως γεγόνασι,
 καὶ εἰσιν ἐν τῇ ὑπὸ Ἀμύντα τεταγμένη πρότερον. 20

8 Τοῖς δὲ Βιθυνοῖς ὁμοροῦσι πρὸς νότον, ὥς ἔφην,
 οἱ περὶ τὸν Ὀλυμπον τὸν Μύσιον προσαγορευόμενον
 Μυσοὶ τε καὶ Φρύγες· ἐκάτερον δὲ τὸ ἔθνος διττόν
 ἐστι. Φρυγία τε γὰρ ἡ μὲν καλεῖται μεγάλη, ἥς ὁ Μί-
 δας ἐβασίλευσε καὶ ἥς μέρος οἱ Γαλάται κατέσχον, ἡ δὲ 25
 μικρὰ ἡ ἐφ' Ἑλλησπόντῳ καὶ ἡ περὶ τὸν Ὀλυμπον ἡ
 καὶ Ἐπικτήτος λεγομένη. Μυσία τε ὁμοίως ἡ τε Ὀλυμ-
 πηνὴ συνεχρῆς οὕσα τῇ Βιθυνίᾳ καὶ τῇ Ἐπικτήτῳ, ἣν
 ἔφην Ἀρτεμίδωρος ἀπὸ τῶν πέραν Ἰστρου Μυσῶν ἀπρω-
 κίσθαι, καὶ ἡ περὶ τὸν Κάικον καὶ τὴν Περγαμηνὴν 30
 μέχρι Τευθρανίας καὶ τῶν ἐκβολῶν τοῦ ποταμοῦ.

2 Οὕτω δ' ἐνήλλακται ταῦτα ἐν ἀλλήλοις, ὥς πολ-

λάκις λέγομεν, ὥστε καὶ τὴν περὶ Σίπυλον Φρυγίαν
οἱ παλαιοὶ καλοῦσιν, ἄδηλον εἴτε τῆς μεγάλης εἴτε τῆς
μικρᾶς μέρος οὖσαν, ἣ καὶ τὸν Τάνταλον Φρύγα καὶ
τὸν Πέλοπα καὶ τὴν Νιόβην· ὅποτερός δ' ἂν ἔχη, ἣ
5 γε ἐπάλλαξις φανερά. ἡ γὰρ Περγαμηνή καὶ ἡ Ἐλαϊ-
τις, καθ' ἣν ὁ Κάικος ἐκπίπτει, καὶ ἡ μεταξὺ τούτων
Τευθρανία, ἐν ἣ Τεύθρας καὶ ἡ τοῦ Τηλέφου ἐκτρο-
φή, ἀνὰ μέσον ἐστὶ τοῦ τε Ἑλλησπόντου καὶ τῆς περὶ
Σίπυλον καὶ Μαγνησίαν τὴν ὑπ' αὐτῷ χώρας· ὥσθ'
10 ὅπερ ἔφην ἔργον διορίσαι, χωρὶς τὰ Μυσῶν καὶ Φρυ- C.572
γῶν ὁρίσματα.“

Καὶ οἱ Λυδοὶ καὶ οἱ Μαίονες, οὓς Ὅμηρος καλεῖ 3
Μήονας, ἐν συγχύσει πῶς εἰσι καὶ πρὸς τούτους καὶ
πρὸς ἀλλήλους, ὅτι οἱ μὲν τοὺς αὐτοὺς οἱ δ' ἑτέρους
15 φασί· πρὸς δὲ τούτους, ὅτι τοὺς Μυσοὺς οἱ μὲν Θρά-
κας οἱ δὲ Λυδοὺς εἰρήκασιν, κατ' αἰτίαν παλαιὰν ἱστο-
ροῦντες, ἣν Ξάνθος ὁ Λυδὸς γράφει καὶ Μενεκράτης
ὁ Ἐλαϊτης, ἐτυμολογοῦντες καὶ τὸ ὄνομα τὸ τῶν Μυ-
σῶν ὅτι τὴν ὀξύην οὕτως ὀνομάζουσιν οἱ Λυδοί· πολλή
20 δ' ἡ ὀξύη κατὰ τὸν Ὀλυμπον, ὅπου ἐκτεθῆναί φασιν
τοὺς δεκατευθέντας, ἐκείνων δὲ ἀπογόνους εἶναι τοὺς
ὑστερον Μυσοὺς, ἀπὸ τῆς ὀξύης οὕτω προσαγορευ-
θέντας· μαρτυρεῖν δὲ καὶ τὴν διάλεκτον· μιξολύδιον
γάρ πως εἶναι καὶ μιξοφρύγιον· τέως μὲν γὰρ οἰκεῖν
25 αὐτοὺς περὶ τὸν Ὀλυμπον, τῶν δὲ Φρυγῶν ἐκ τῆς
Θράκης περαιωθέντων [ἀν]ελόντων τε τῆς Τροίας ἄρ-
χοντα καὶ τῆς πλησίον γῆς, ἐκείνους μὲν ἐνταῦθα οἰ-
κῆσαι τοὺς δὲ Μυσοὺς ὑπὲρ τὰς τοῦ Καϊκου πηγὰς
πλησίον Λυδῶν.

30 Συνεργεῖ δὲ πρὸς τὰς τοιαύτας μυθοποιίας ἡ τε 4

σύγχυσις τῶν ἐνταῦθα ἐθνῶν καὶ ἡ εὐδαιμονία τῆς χώ-
 ρας τῆς ἐντὸς Ἄλφους, μάλιστα δὲ τῆς παραλίας, δι' ἣν
 ἐπιθέσεις ἐγένοντο αὐτῇ πολλαχόθεν καὶ διὰ παντὸς ἐκ
 τῆς περαίας, ἥ καὶ ἐπ' ἀλλήλους ἰόντων τῶν ἐγγύς.
 μάλιστα μὲν οὖν κατὰ τὰ Τρωικὰ καὶ μετὰ ταῦτα τὰς 5
 ἐφόδους γενέσθαι καὶ τὰς μεταναστάσεις συνέβη, τῶν
 τε βαρβάρων ἅμα καὶ τῶν Ἑλλήνων ὁρμῇ τινι χρησα-
 μένων πρὸς τὴν τῆς ἀλλοτρίας κατάκτησιν· ἀλλὰ καὶ
 πρὸ τῶν Τρωικῶν ἦν ταῦτα. τό τε γὰρ τῶν Πελασγῶν
 ἦν φύλον καὶ τὸ τῶν Κανκῶνων καὶ Λελέγων· εἴρη- 10
 ται δ' ὅτι πολλαχοῦ τῆς Εὐρώπης τὸ παλαιὸν ἐτύγ-
 χανε πλανώμενα, ἅπερ ποιεῖ τοῖς Τρωσὶ συμμαχοῦντα
 ὁ ποιητής, οὐκ ἐκ τῆς περαίας. τά τε περὶ τῶν Φρυγῶν
 καὶ τῶν Μυσῶν λεγόμενα πρεσβύτερα τῶν Τρωικῶν
 ἐστίν· οἱ δὲ διπτοὶ Λύκιοι τοῦ αὐτοῦ γένους ὑπόνοιαν 15
 παρέχουσιν, ἢ τῶν Τρωικῶν ἢ τῶν πρὸς Καρία τοὺς
 ἐτέρους ἀποικισάντων. τάχα δὲ καὶ ἐπὶ τῶν Κιλικίων
 τὸ αὐτὸ συνέβη· διπτοὶ γὰρ καὶ οὗτοι· οὐ μὲν ἔχομέν
 γε τοιαύτην λαβεῖν μαρτυρίαν ὅτι καὶ πρὸ τῶν Τρωι-
 κῶν ἦσαν ἤδη οἱ νῦν Κίλικες· ὃ τε Τήλεφος ἐκ τῆς 20
 Ἀρκαδίας ἀφίχθαι νομίζοιτ' ἂν μετὰ τῆς μητρὸς, γάμφ
 δὲ τῷ ταύτης ἐξοικειωσάμενος τὸν ὑποδεξάμενον αὐ-
 τὸν Τεύθραντα ἐνομίσθη τε ἐκείνου καὶ παρέλαβε τὴν
 Μυσῶν ἀρχήν.

6 Καὶ οἱ Κᾶρες δὲ νησιῶται πρότερον ὄντες καὶ Λέ- 25
 C.573 λεγες, ὥς φασιν, ἠπειρῶνται γεγονῶσι, προσλαβόντων
 Κρητῶν, οἱ καὶ τὴν Μίλητον ἔκτισαν ἐκ τῆς Κρητικῆς
 Μιλήτου Σαρπηδόνα λαβόντες κτίστην· καὶ τοὺς Τερ-
 μίλλας κατώκισαν ἐν τῇ νῦν Λυκίᾳ· τούτους δ' ἀγαγεῖν
 ἐκ Κρήτης ἀποίκους Σαρπηδόνα, Μίνω καὶ Ῥαδαμάν- 30
 θυος ἀδελφὸν ὄντα, καὶ ὀνομάσαι Τερμίλλας τοὺς πρό-
 τερον Μιλύας, ὥς φησιν Ἡρόδοτος, ἔτι δὲ πρότερον

Σολύμους, ἐπελθόντα δὲ τὸν Πανδίωνος Λύκον ἀφ' ἑαυτοῦ προσαγορεύσαι τοὺς αὐτοὺς Λυκίους. οὗτος μὲν οὖν ὁ λόγος ἀποφαίνει τοὺς αὐτοὺς Σολύμους τε καὶ Λυκίους, ὁ δὲ ποιητὴς χωρίζει· Βελλεροφόντης 5 γοῦν ὠρμημένος ἐκ τῆς Λυκίας „Σολύμοισι μαχέσσατο „κνυδαλίμοισι.“ Πείσανδρόν τε ὡσαύτως υἱὸν αὐτοῦ Ἄρης ὥς φησι „μαρνάμενον Σολύμοισι κατέκτανε.“ καὶ τὸν Σαρπηδόνα δὲ ἐπιχώριόν τινα λέγει.

Ἄλλὰ τό γε ἄθλον προκεῖσθαι κοινὸν τὴν ἀρετὴν 6 10 τῆς χώρας ἧς λέγω τοῖς ἰσχύουσιν ἐκ πολλῶν βεβαι- οῦται [καὶ πρὸ τῶν Τρωικῶν] καὶ μετὰ τὰ Τρωικά· ὅπου καὶ Ἀμαζόνες κατεθάρρησαν αὐτῆς, ἐφ' ἧς ὁ τε Πρίαμος στρατεῦσαι λέγεται καὶ ὁ Βελλεροφόντης· πόλεις τε παλαιαὶ ὁμολογοῦνται ἐπώνυμοι αὐτῶν· ἐν 15 δὲ τῷ Ἰλιακῷ πεδίῳ κολώνη τις ἔστιν „ἣν ἦτοι ἄνδρες „Βατίειαν κικλήσκουσιν, ἀθάνατοι δὲ τε σῆμα πολυ- „σκάρθμοιο Μυρίνης,“ ἣν ἱστοροῦσι μίαν εἶναι τῶν Ἀμαζόνων ἐκ τοῦ ἐπιθέτου τεκμαιρόμενοι· εὐσκάρθ- μους γὰρ ἵππους λέγεσθαι διὰ τὸ τάχος· κἄκείνην οὖν 20 πολὺσκαρθμον διὰ τὸ ἀπὸ τῆς ἡνιοχείας τάχος· καὶ ἡ Μύρινα οὖν ἐπώνυμος ταύτης λέγεται. καὶ αἱ ἐγγυὲς δὲ νῆσοι ταῦτ' ἔπαθον διὰ τὴν ἀρετὴν, ὧν Ῥόδος καὶ Κῶς ὅτι πρὸ τῶν Τρωικῶν ἤδη ὑφ' Ἑλλήνων ᾤκοῦν- το καὶ ὑφ' Ὀμήρου σαφῶς ἐκμαρτυρεῖται.

25 Μετὰ δὲ τὰ Τρωικά αἱ τε τῶν Ἑλλήνων ἀποικίαι 7 καὶ αἱ Τηρηῶν καὶ αἱ Κιμμερίων ἔφοδοι καὶ Λυδῶν καὶ μετὰ ταῦτα Περσῶν καὶ Μακεδόνων τό [τε] τελευταῖον Γαλατῶν ἐτάραξαν πάντα καὶ συνέχεαν. γέγονε δὲ ἡ ἀσάφεια οὐ διὰ τὰς μεταβολὰς μόνον ἀλλὰ καὶ διὰ τὰς 30 τῶν συγγραφέων ἀνομολογίας περὶ τῶν αὐτῶν οὐ τὰ αὐτὰ λεγόντων, τοὺς μὲν Τρωῆας καλούντων Φρύγας καθάπερ οἱ τραγικοί, τοὺς δὲ Λυκίους Κᾶρας καὶ

ἄλλους * οὕτως. οἱ δὲ Τρῶες οὕτως ἐκ μικρῶν ἀύξη-
 0.574 θέντες ὥστε καὶ βασιλεῖς βασιλέων εἶναι, παρέσχον
 καὶ τῷ ποιητῇ λόγον τίνα χρὴ καλεῖν Τροίαν, καὶ τοῖς
 ἐξηγουμένοις ἐκείνον. λέγει μὲν γὰρ καὶ κοινῶς ἅπαν-
 τας Τρῶας τοὺς συμπολεμήσαντας αὐτοῖς, ὥσπερ καὶ 5
 Δαναοὺς καὶ Ἀχαιοὺς τοὺς ἐναντίους· ἀλλ' οὐ δήπου
 Τροίαν καὶ τὴν Παφλαγονίαν ἐρουῖμεν· νῆ Δία, οὐδὲ
 τὴν Καρίαν ἢ τὴν Ὀμορον αὐτῇ Ἀνκίαν. λέγω δ' ὅταν
 οὕτω φῇ „Τρῶες μὲν κλαγγῇ τ' ἐνοπῇ τ' ἴσαν,“ ἐκ δὲ
 τῶν ἐναντίων „οἱ δ' ἄρ' ἴσαν σιγῇ μένεα πνείοντες Ἀχαι- 10
 οί.“ καὶ ἄλλως δὲ λέγει πολλαχῶς. ὅμως δὲ καί περ τοιού-
 των ὄντων πειρατέον διαιτᾶν ἕκαστα εἰς δύναμιν· ὅ-
 τι δ' ἂν διαφύγῃ τῆς παλαιᾶς ἱστορίας, τοῦτο μὲν ἐα-
 τέον (οὐ γὰρ ἐνταῦθα τὸ τῆς γεωγραφίας ἔργον), τὰ
 δὲ νῦν ὄντα λεκτέον.

15

- 8 Ἔστι τοίνυν ὄρη δύο ὑπερκείμενα τῆς Προποντι-
 δος ὃ τε Ὀλυμπος ὁ Μύσιος καὶ ἡ Ἴδη. τῷ μὲν οὖν
 Ὀλύμπῳ τὰ τῶν Βιθυνῶν ὑποπέπτωκε, τῆς δὲ Ἰδης με-
 ταξὺ καὶ τῆς θαλάττης ἡ Τροία κεῖται συνάπτουσα τῷ
 ὄρει· περὶ μὲν οὖν ταύτης ἐρουῖμεν ὕστερον καὶ τῶν 20
 συνεχῶν αὐτῇ πρὸς νότον, νῦν δὲ περὶ τῶν Ὀλυμπη-
 νῶν καὶ τῶν ἐφεξῆς μέχρι τοῦ Ταύρου παραλλήλων
 τοῖς προεφωδευμένοις λέγωμεν. ἔστι τοίνυν ὁ Ὀλυμ-
 πος κύκλῳ μὲν εὖ συνοικούμενος, ἐν δὲ τοῖς ὕψεσι
 δρυμοὺς ἐξαισίους ἔχων καὶ ληστήρια δυναμένους ἐκ- 25
 τρέφειν τόπους εὐερεῖς, ἐν οἷς καὶ τύραννοι συνί-
 στανται πολλάκις δυνάμενοι συμμεῖναι πολὺν χρόνον,
 καθάπερ Κλέων ὁ καθ' ἡμᾶς τῶν λησθηρίων ἡγεμῶν.
- 9 Οὗτος δ' ἦν μὲν ἐκ Γορδίου κόμης, ἦν ὕστερον
 ἀυξήσας ἐποίησε πόλιν καὶ προσηγόρευσεν Ἰουλιόπο- 30
 λιν· λησθηρίῳ δ' ἐχρήτο καὶ ὀρμητηρίῳ κατ' ἀρχὰς τῷ
 καρτερωτάτῳ τῶν χωρίων ὄνομα Καλλυδίῳ. ὑπῆρξε

δ' Ἀντωνίῳ μὲν χρήσιμος ἐπελθὼν ἐπὶ τοὺς ἀργυρο-
 λογοῦντας Λαβιηνῶ καθ' ὃν χρόνον ἐκεῖνος τὴν Ἀσί-
 αν κατέσχε, καὶ κωλύσας τὰς παρασκευάς· ἐν δὲ τοῖς
 Ἀκτιακοῖς ἀποστάς Ἀντωνίου τοῖς Καίσαρος προσέ-
 5 θετο στρατηγοῖς, καὶ ἐτιμήθη πλέον ἢ κατ' ἀξίαν
 προσλαβὼν τοῖς παρ' Ἀντωνίου δοθεῖσι καὶ τὰ παρα-
 τοῦ Καίσαρος, ὥστ' ἀντὶ ληστοῦ δυνάστου περιέκειτο
 σχῆμα, ἱερεὺς μὲν ὢν τοῦ Ἀβρεττηνοῦ Διός, Μυσίου
 θεοῦ, μέρος δ' ἔχων ὑπήκοον τῆς Μωρηνῆς (Μυσία
 10 δέ ἐστι καὶ αὕτη, καθάπερ ἡ Ἀβρεττηνὴ), λαβὼν δὲ
 ὕστατα καὶ τὴν ἐν τῷ Πόντῳ τῶν Κομάνων ἱερωσύνην,
 εἰς ἣν κατελθὼν ἐντὸς μηνιαίου χρόνου κατέστρεψε
 τὸν βίον· νόσος δ' ἐξήγαγεν αὐτὸν ὀξεῖα, εἰτ' ἄλλως C.575
 ἐπιπεσοῦσα ἐκ τῆς αἰθρῆς πλησμονῆς εἶθ', ὥς ἔφρασαν
 15 οἱ περὶ τὸ ἱερόν, κατὰ μῆνιν τῆς θεοῦ· ἐν γὰρ τῷ πέ-
 ριβόλῳ τοῦ τεμένους ἡ οἰκησὶς ἐστὶν ἢ τε τοῦ ἱερέως
 καὶ τῆς ἱερείας, τὸ δὲ τέμενος χωρὶς τῆς ἄλλης ἀγιστεί-
 ας διαφανέστατα τῆς τῶν ὑείων κρεῶν βρώσεως κα-
 θαρεύει, ὅπου γε καὶ ἡ ὅλη πόλις, οὐδ' εἰσάγεται εἰς
 20 αὐτὴν ὕς· ὁ δ' ἐν τοῖς πρώτοις τὸ ληστρικὸν ἥθος
 ἐπεδείξατο εὐθύς κατὰ τὴν πρώτην εἰσοδὸν τῇ παρα-
 βάσει τούτου τοῦ ἔθνους ὥσπερ οὐχ ἱερεὺς εἰσεληλυ-
 θὼς ἀλλὰ διαφθορεὺς τῶν ἱερῶν.

Ὁ μὲν δὲ Ὀλυμπος τοιόσδε, περιρικεῖται δὲ πρὸς 10
 25 ἄρκτον μὲν ὑπὸ τῶν Βιθυνῶν καὶ Μυγδόνων καὶ Δο-
 λιόνων, τὸ δὲ λοιπὸν ἔχουσι Μυσοὶ καὶ Ἐπίκτητοι.
 Δολιόνας μὲν οὖν μάλιστα καλοῦσι τοὺς περὶ Κύζικον
 ἀπὸ Αἰσῆπου ἕως Πυνθάκου καὶ τῆς Δασκυλίτιδος λί-
 μνης, Μυγδόνας δὲ τοὺς ἐφεξῆς τούτοις μέχρι τῆς
 30 Μυρλειασιανῶν χώρας· ὑπέρκεινται δὲ τῆς Δασκυλίτι-
 δος ἄλλαι δύο λίμναι μεγάλαι ἢ τε Ἀπολλωνιαῖτις ἢ
 τε Μιλητοπολίτις· πρὸς μὲν οὖν τῇ Δασκυλίτιδι Δα-

σκόλιον πόλις, πρὸς δὲ τῇ Μιλητοπολίτιδι Μιλητού-
πολις, πρὸς δὲ τῇ τρίτῃ Ἀπολλωνία ἢ ἐπὶ Πυνδάκῳ
λεγομένη· τὰ πλείστα δὲ τούτων ἐστὶ Κυζικηνῶν νυνί.

- 11 Ἔστι δὲ νῆσος ἐν τῇ Προποντίδι ἢ Κύζικος συνα-
πτομένη γεφύραις δυοὶ πρὸς τὴν ἡπειρον, ἀρετῇ μὲν 5
κρατίστῃ μεγέθει δὲ ὅσον πεντακοσίων σταδίων τὴν
περίμετρον· ἔχει δὲ ὁμώνυμον πόλιν πρὸς αὐταῖς ταῖς
γεφύραις καὶ λιμένας δύο κλειστοὺς καὶ νεωσοίκους
πλείους τῶν διακοσίων· τῆς δὲ πόλεως τὸ μὲν ἐστὶν
ἐν ἐπιπέδῳ τὸ δὲ πρὸς ὄρει· καλεῖται δ' Ἄρκτων ὄρος· 10
ὑπέρκειται δ' ἄλλο Δίνδυμον μονοφυές, ἱερὸν ἔχον
τῆς Δινδυμῆνης μητρὸς θεῶν, ἰδρυμα τῶν Ἀργόναυ-
τῶν. ἔστι δ' ἐνάμιλλος ταῖς πρώταις τῶν κατὰ τὴν
Ἀσίαν ἢ πόλις μεγέθει τε καὶ κάλλει καὶ εὐνομίᾳ πρὸς
τε εἰρήνην καὶ πόλεμον· ἔοικέ τε τῷ παραπλησίῳ τύ- 15
πῳ κοσμεῖσθαι ὥσπερ ἡ τῶν Ῥοδίων καὶ Μασσαλιω-
τῶν καὶ Καρχηδονίων τῶν πάλαι. τὰ μὲν οὖν πολλὰ
ἔω, τρεῖς δ' ἀρχιτέκτονας τοὺς ἐπιμελουμένους οἰκο-
δομημάτων τε δημοσίων καὶ ὀργάνων, τρεῖς δὲ καὶ
θησαυροὺς κέκτηται, τὸν μὲν ὀπλων τὸν δ' ὀργάνων 20
τὸν δὲ σίτου· ποιεῖ δὲ τὸν σῖτον ἄσηπτον ἢ Χαλκιδικῇ
γῇ μιγνυμένη. ἐπεδείξαντο δὲ τὴν ἐκ τῆς παρασκευῆς
ταύτης ὠφέλειαν ἐν τῷ Μιθριδατικῷ πολέμῳ. ἐπελ-
θόντος γὰρ αὐτοῖς ἀδοκήτως τοῦ βασιλέως πεντεκαί-
δεκα μυριάσι καὶ ἱππῶ πολλῇ καὶ κατασχόντος τὸ ἀν- 25
τικείμενον ὄρος ὃ καλοῦσιν Ἀδραστείας καὶ τὸ προά-
στειον, ἔπειτα καὶ διάραντος εἰς τὸν ὑπὲρ τῆς πόλεως
C.576 ἀνχένα καὶ προσμαχομένου πεζῇ τε καὶ κατὰ θάλατ-
ταν τετρακοσίαις ναυσίν, ἀντέσχον πρὸς ἅπαντα οἱ
Κυζικηνοί, ὥστε καὶ ἐγγὺς ἦλθον τοῦ ζωγράφου λαβεῖν 30
τὸν βασιλέα ἐν τῇ διώρυγι ἀντιδιορύττοντες, ἀλλ'
ἔφθη φυλαξάμενος καὶ ἀναλαβὼν ἑαυτὸν ἔξω τοῦ

ὀρύγματος· ὅψε δὲ ἰσχυσεν εἰσπένψαι τινὰς νύκτωρ
 ἐπικούρους ὁ τῶν Ῥωμαίων στρατηγὸς Λεύκολλος·
 ὤννησε δὲ καὶ λιμὸς τῷ τοσούτῳ πλήθει τῆς στρατιᾶς
 ἐπιπεσών, ὃν οὐ προείδετο ὁ βασιλεὺς, ὥς ἀπῆλθε
 5 πολλοὺς ἀποβαλάν. Ῥωμαῖοι δ' ἐτίμησαν τὴν πόλιν,
 καὶ ἔστιν ἐλευθέρα μέχρι νῦν καὶ χώραν ἔχει πολλήν
 τὴν μὲν ἐκ παλαιοῦ τὴν δὲ τῶν Ῥωμαίων προσθέντων.
 καὶ γὰρ τῆς Τροάδος ἔχουσι τὰ πέραν τοῦ Αἰσῆπου τὰ
 περὶ τὴν Ζέλειαν καὶ τὸ τῆς Ἀδραστείας πεδίου· καὶ
 10 τῆς Δασκυλίτιδος λίμνης τὰ μὲν ἔχουσιν ἐκείνοι τὰ δὲ
 Βυζάντιοι· πρὸς δὲ τῇ Δολιονίδι καὶ τῇ Μυγδονίδι
 νέμονται πολλήν μέχρι τῆς Μιλητοπολίτιδος λίμνης
 καὶ τῆς Ἀπολλωνιάτιδος αὐτῆς, δι' ἧν χωρίων καὶ ὁ
 Ῥύνδακος ρεῖ ποταμὸς τὰς ἀρχὰς ἔχων ἐκ τῆς Ἀξανί-
 15 τιδος, προσλαβὼν δὲ καὶ ἐκ τῆς Ἀβρεττηνῆς Μυσίας
 ἄλλους τε καὶ Μέγεστον ἀπ' Ἀγκύρας τῆς Ἀβαετίτιδος
 ἐκδίδωσιν εἰς τὴν Προποντίδα κατὰ Βέσβικον νῆσον.
 ἐν ταύτῃ δὲ τῇ νήσῳ τῶν Κυζικηνῶν ὄρος ἐστὶν εὐ-
 δενδρον Ἀρτάκη· καὶ νησίον ὁμώνυμον πρόκειται
 20 τούτου, καὶ πλησίον ἀκρωτήριον Μέλανος καλούμε-
 νον ἐν παράπλῳ τοῖς εἰς Πρίαπον κομιζομένοις ἐκ τῆς
 Κυζίκου.

Τῆς δ' ἐπικτήτου Φρυγίας Ἀξανοὶ τέ εἰσι καὶ Να- 12
 κολία καὶ Κοτιάειον καὶ Μιδάειον καὶ Δορυλάειον πό-
 25 λεις καὶ Κάδοι· τοὺς δὲ Κάδους ἔνιοι τῆς Μυσίας φα-
 σίν. ἡ δὲ Μυσία κατὰ τὴν μεσόγαιαν ἀπὸ τῆς Ὀλυμ-
 πηνῆς ἐπὶ τὴν Περγαμηνὴν καθήκει καὶ τὸ Καῖκου
 λεγόμενον πεδίου, ὥστε μεταξὺ κείσθαι τῆς τε Ἰδης
 καὶ τῆς Κατακεκαυμένης, ἣν οἱ μὲν Μυσίαν οἱ δὲ
 30 Μαιονίαν φασίν.

Ὑπὲρ δὲ τῆς Ἐπικτήτου πρὸς νότον ἐστὶν ἡ με- 13
 γάλῃ Φρυγία, λείπουσα ἐν ἀριστερᾷ τὴν Πεσσινοῦντα

καὶ τὰ περὶ Ὀρκαόρκους καὶ Λυκαονίαν, ἐν δεξιᾷ δὲ Μαίονας καὶ Λυδοὺς καὶ Κᾶρας· ἐν ἣ ἔστιν ἡ τε παρῳρεῖος λεγομένη Φρυγία καὶ ἡ πρὸς Πισιδίαν καὶ τὰ περὶ Ἀμόριον καὶ Εὐμένειαν καὶ Σύνναδα, εἴτα Ἀπάμεια ἡ Κιβωτὸς λεγομένη καὶ Λαοδίκεια, αἵπερ εἰσὶν 5 μέγιστα τῶν κατὰ τὴν Φρυγίαν πόλεων· περικείται δὲ ταύταις πολίσματα καὶ..... Ἀφροδισιάς Κολοσσαί Θεμισώνιον Σαναὸς Μητρόπολις Ἀπολλωνιάς, ἔτι δὲ ἀπωτέρω τούτων Πέλται Τάβαι Εὐκαρπία Λυσιάς.

C.577

10

14

Ἡ μὲν οὖν παρῳρεῖα ὄρεινήν τινα ἔχει ῥάχιν ἀπὸ τῆς ἀνατολῆς ἐκτεινομένην ἐπὶ δύοσιν· ταύτῃ δ' ἐκατέρωθεν ὑποπέπτωκέ τι πεδίον μέγα, καὶ πόλεις πλησίον αὐτῆς πρὸς ἄρκτον μὲν Φιλομήλιον, ἐκ θατέρου δὲ μέρους Ἀντιόχεια ἡ πρὸς Πισιδίαν καλουμένη, ἣ 15 μὲν ἐν πεδίῳ κειμένη πᾶσα ἡ δ' ἐπὶ λόφον ἔχουσα ἀποικίαν Ῥωμαίων· ταύτην δ' ὤκισαν Μάγνητες οἱ πρὸς Μαιάνδρῳ. Ῥωμαῖοι δ' ἡλευθέρωσαν τῶν βασιλέων, ἥνικα τὴν ἄλλην Ἀσίαν Εὐμένει παρέδοσαν τὴν ἐντὸς τοῦ Ταύρου· ἦν δὲ ἐνταῦθα καὶ ἱερωσύνη τις 20 Μηνὸς Ἀρκαίου, πλήθος ἔχουσα ἱεροδούλων καὶ χωρίων ἱερῶν· κατελύθη δὲ μετὰ τὴν Ἀμύντου τελευτήν ὑπὸ τῶν πεμφθέντων ἐπὶ τὴν ἐκείνου κληρονομίαν. Σύνναδα δ' ἐστὶν οὐ μεγάλη πόλις· πρόκειται δ' αὐτῆς ἐλαιόφυτον πεδίον ὅσον ἐξήκοντα σταδίων· ἐπέ- 25 κεινα δ' ἐστὶ Λοκιμία κώμη, καὶ τὸ λατόμιον Συναδικοῦ λίθου (οὕτω μὲν Ῥωμαῖοι καλοῦσιν, οἱ δ' ἐπιχώριοι Λοκιμίτην καὶ Λοκιμαῖον), κατ' ἀρχὰς μὲν μικροὺς βώλους ἐκδιδόντος τοῦ μετάλλου, διὰ δὲ τὴν νυνὶ πολυτέλειαν τῶν Ῥωμαίων κίονες ἐξαιροῦνται 30 μονόλιθοι μεγάλοι, πλησιάζοντες τῷ ἀλαβαστρίτῃ λίθῳ κατὰ τὴν ποικιλίαν, ὥστε καίπερ πολλῆς οὔσης

τῆς ἐπὶ θάλατταν ἀγωγῆς τῶν τηλικούτων φορτίων ὅμως καὶ κίονες καὶ πλάκες εἰς Ῥώμην κομίζονται θανάσται κατὰ τὸ μέγεθος καὶ κάλλος.

- Ἀπάμεια δ' ἐστὶν ἐμπορίον μέγα τῆς ἰδίας λεγο- 15
 5 μένης Ἀσίας, δευτερεῦον μετὰ τὴν Ἐφεσον· αὕτη γὰρ καὶ τῶν ἀπὸ τῆς Ἰταλίας καὶ τῆς Ἑλλάδος ὑποδοχείον κοινόν ἐστιν. Ἰδρυται δὲ ἡ Ἀπάμεια ἐπὶ ταῖς ἐκβολαῖς τοῦ Μαρσίου ποταμοῦ, καὶ δεῖ διὰ μέσης τῆς πόλεως ὁ ποταμὸς τὰς ἀρχὰς ἀπὸ τῆς πόλεως ἔχων· κατενε-
 10 χθεῖς δ' ἐπὶ τὸ προάστειον σφοδρῶ καὶ καταφερθεῖ τῷ ρεύματι συμβάλλει πρὸς τὸν Μαλιάνδρον, προσειληφότα καὶ ἄλλον ποταμὸν Ὀργᾶν δι' ὁμαλοῦ φερόμενον πρᾶον καὶ μαλακόν· ἐντεῦθεν δ' ἤδη γενόμενος Μαλιάνδρος τέως μὲν διὰ τῆς Φρυγίας φέρεται, ἔπειτα διο-
 15 ρίζει τὴν Καρίαν καὶ τὴν Λυδίαν κατὰ τὸ Μαλιάνδρου καλούμενον πεδίον, σκολιὸς ὢν εἰς ὑπερβολὴν ὥστε ἐξ ἐκείνου τὰς σκολιότητας ἀπάσας μαιάνδρους καλεῖσθαι· τελευτῶν δὲ καὶ τὴν Καρίαν αὐτὴν διαρρεῖ τὴν ὑπὸ τῶν Ἰώνων νῦν κατεχομένην, καὶ μεταξὺ
 20 Μιλήτου καὶ Πριήνης ποιεῖται τὰς ἐκβολὰς. ἄρχεται δὲ ἀπὸ Κελαινῶν, λόφου τινός, ἐν ᾧ πόλις ἦν ὁμῶνυμος τῷ λόφῳ· ἐντεῦθεν δ' ἀναστῆσας τοὺς ἀνθρώπους ὁ Σωτὴρ Ἀντίοχος εἰς τὴν νῦν Ἀπάμειαν τῆς C.578
 μητρὸς ἐπώνυμον τὴν πόλιν ἐπέδειξεν Ἀπάμας, ἡ
 25 θυγάτηρ μὲν ἦν Ἀρταβάζου δεδομένη δ' ἐτύγχανε πρὸς γάμον Σελεύκῳ τῷ Νικάτορι. ἐνταῦθα δὲ μυθεύεται τὰ περὶ τὸν Ὀλυμπον καὶ τὸν Μαρσίαν καὶ τὴν ἔριν ἣν ἤρισεν ὁ Μαρσύας πρὸς Ἀπόλλωνα. ὑέρεται δὲ καὶ λίμνη φύουσα κάλαμον τὸν εἰς τὰς γλάτ-
 30 τας τῶν αὐλῶν ἐπιτήδειον, ἐξ ἧς ἀπολείβεισθαι φασὶ τὰς πηγὰς ἀμφοτέρως τὴν τε τοῦ Μαρσίου καὶ τὴν τοῦ Μαλιάνδρου.

- 16 Ἡ δὲ Λαοδίκεια μικρὰ πρότερον οὕσα αὐξήσιν.
 ἔλαβεν ἐφ' ἡμῶν καὶ τῶν ἡμετέρων πατέρων, καίτοι
 κακωθεῖσα ἐκ πολιορκίας ἐπὶ Μιθριδάτου τοῦ Εὐπά-
 τορος· ἀλλ' ἡ τῆς χώρας ἀρετὴ καὶ τῶν πολιτῶν τινες
 εὐτυχήσαντες μεγάλην ἐποίησαν αὐτὴν, Ἰέρων μὲν 5
 πρότερον, ὃς πλειόνων ἢ δισχιλίων ταλάντων κληρο-
 νομίαν κατέλιπε τῷ δήμῳ πολλοῖς τ' ἀναθήμασιν ἐκό-
 σμησε τὴν πόλιν, Ζήνων δὲ ὁ ῥήτωρ ὕστερον καὶ ὁ
 υἱὸς αὐτοῦ Πολέμων, ὃς καὶ βασιλείας ἡξιώθη διὰ τὰς
 ἀνδραγαθίας ὑπ' Ἀντωνίου μὲν πρότερον ὑπὸ Καί- 10
 σαρος δὲ τοῦ Σεβαστοῦ μετὰ ταῦτα. φέρει δ' ὁ περὶ τὴν
 Λαοδίκειαν τόπος προβάτων ἀρετὰς οὐκ εἰς μαλακό-
 τητα μόνον τῶν ἐρίων, ἧ καὶ τῶν Μιλησίων διαφέ-
 ρει, ἀλλὰ καὶ εἰς τὴν κοραξὴν χροάν, ὥστε καὶ προσ-
 οδεύονται λαμπρῶς ἀπ' αὐτῶν, ὥσπερ καὶ οἱ Κολοσ- 15
 σηνοὶ ἀπὸ τοῦ ὁμωνύμου χρώματος πλησίον οἰκοῦν-
 τες. ἐνταῦθα δὲ καὶ ὁ Κάπρος καὶ ὁ Λύκος συμβάλλει
 τῷ Μαιάνδρῳ ποταμῷ, ποταμὸς εὐμεγέθης, ἀφ' οὗ
 καὶ ἡ πρὸς τῷ Λύκῳ Λαοδίκεια λέγεται. ὑπέρεκκεται
 δὲ τῆς πόλεως ὄρος Κάδμος, ἐξ οὗ καὶ ὁ Λύκος ρεῖ καὶ 20
 ἄλλος ὁμώνυμος τῷ ὄρει. τὸ πλεόν δ' οὗτος ὑπὸ γῆς
 ῥυεῖς εἶτ' ἀνακύψας συνέπεσεν εἰς ταὐτὸ τοῖς ἄλλοις
 ποταμοῖς, ἐμφαίνων ἅμα καὶ τὸ πολύτερητον τῆς χώ-
 ρας καὶ τὸ εὖσειστον· εἰ γάρ τις ἄλλη, καὶ ἡ Λαοδί-
 κεια εὖσειστος, καὶ τῆς πλησιοχώρου δὲ Κάρουρα. 25
- 17 Ὅριον δὲ ἐστὶ τῆς Φρυγίας καὶ τῆς Καρίας τὰ Κά-
 ρουρα· κώμη δ' ἐστὶν αὕτη πανδοχεῖα ἔχουσα καὶ ξε-
 στῶν ὑδάτων ἐκβολάς, τὰς μὲν ἐν τῷ ποταμῷ Μαιάν-
 δρῳ τὰς δ' ὑπὲρ τοῦ χεΐλους. καὶ δὴ ποτὲ φασὶ πορ-
 νοβοσκὸν αὐλισθέντα ἐν τοῖς πανδοχείοις σὺν πολλῷ 30
 πλήθει γυναικῶν νύκτωρ γενομένου σεισμοῦ συνα-
 φανισθῆναι πάσαις. σχεδὸν δὲ τι καὶ πᾶσα εὖσειστός

ἔστιν ἡ περὶ τὸν Μαίανδρον χώρα καὶ ὑπόνομος πυρί-
 τε καὶ ὕδατι μέχρι τῆς μεσογαίας. διατέτακε γὰρ ἀπὸ 0.579
 τῶν πεδίων ἀρξαμένη πᾶσα ἡ τοιαύτη κατασκευὴ τῆς
 χώρας εἰς τὰ Χαρώνια, τό τε ἐν Ἱερὰπόλει καὶ τὸ ἐν
 5 Ἀχαράκοις τῆς Νυσαίδος καὶ τὸ περὶ Μαγνησίαν καὶ
 Μυοῦντα· εὐθρυπτός τε γὰρ ἔστιν ἡ γῆ καὶ ψαθυρὰ
 πλήρης τε ἁλμυρίδων καὶ εὐεκπύρωτός ἐστι· τάχα δὲ
 καὶ ὁ Μαίανδρος διὰ τοῦτο σκολιὸς ὅτι πολλὰς μετα-
 πτώσεις λαμβάνει τὸ ρεῖθρον, καὶ πολλὴν χοῦν κατὰ-
 10 γων ἄλλοι· ἄλλω μέρει τῶν αἰγιαλῶν προστίθῃσι· τὸ δὲ
 πρὸς τὸ πέλαγος βιασάμενος ἔξωθῃ. καὶ δὴ καὶ τὴν
 Πριήνην ἐπὶ θαλάττῃ πρότερον οὖσαν μεσόγερων πε-
 ποίηκε τετταράκοντα σταδίῳ προσχάματι.

Καὶ ἡ Κατακεκαυμένη δέ, ἥ περ ὑπὸ Λυδῶν καὶ 18
 15 Μυσῶν κατέχεται, διὰ τοιαῦτά τινα τῆς προσηγορίας
 τετύχηκε ταύτης· ἥ τε Φιλαδέλφεια, ἡ πρὸς αὐτῇ πό-
 λιν, οὐδὲ τοὺς τοίχους ἔχει πιστούς, ἀλλὰ καθ' ἡμέ-
 ραν τρόπον τινὰ σαλεύονται καὶ δίστανται· διατε-
 λούσι δὲ προσέχοντες τοῖς πάθεσι τῆς γῆς καὶ ἀρχιτε-
 20 κτονοῦντες πρὸς αὐτά. καὶ τῶν ἄλλων δὲ πόλεων
 Ἀπάμεια μὲν καὶ πρὸ τῆς Μιθριδάτου στρατείας ἐσεί-
 σθη πολλάκις, καὶ ἔδωκεν ἐπελθὼν ὁ βασιλεὺς ἑκα-
 τὸν τάλαντα εἰς ἐπανόρθωσιν, ὁρῶν ἀνατετραμμένην
 τὴν πόλιν. λέγεται δὲ καὶ ἐπ' Ἀλεξάνδρου παραπλή-
 25 σια συμβῆναι· διόπερ εἰκὸς ἐστὶ καὶ τὸν Ποσειδῶ τι-
 μᾶσθαι παρ' αὐτοῖς καίπερ μεσογαίοις οὖσι, καὶ ἀπὸ
 Κελαινοῦ τοῦ Ποσειδῶνος ἐκ Κελαινοῦς, μιᾶς τῶν
 Δαναίδων, γενομένου κεκλησθαι τὴν πόλιν ἐπάνυ-
 μον, ἥ διὰ τῶν λίθων τὴν ἀπὸ τῶν ἐκπυρώσεων με-
 30 λανίαν. καὶ τὰ περὶ Σίπυλον δὲ καὶ τὴν ἀνατροπὴν
 αὐτοῦ μῦθον οὐ δεῖ τίθεσθαι· καὶ γὰρ νῦν τὴν Μα-
 γνησίαν τὴν ὑπ' αὐτῷ κατέβαλον σεισμοί, ἡνίκα καὶ
 Σάρδεις καὶ τῶν ἄλλων τὰς ἐπιφανεστάτας κατὰ πολ-
 λὰ μέρη διελυμήναντο· ἐπηνώρθωσε δ' ὁ ἡγεμὼν χρή-
 35 ματα ἐπιδούς, καθάπερ καὶ πρότερον ἐπὶ τῆς γενο-
 μένης συμφορᾶς Τραλλιανοῖς (ἡνίκα τὸ γυμνάσιον καὶ
 ἄλλα μέρη συνέπεσεν) ὁ πατὴρ αὐτοῦ καὶ τούτοις καὶ
 Λαοδικεῦσιν.

- 19 Ἀκούειν δ' ἔστι καὶ τῶν παλαιῶν συγγραφέων οἷά φησιν ὁ τὰ Λύδια συγγράψας Ξάνθος, διηγούμενος οἷαι μεταβολαὶ κατέσχον πολλὰκις τὴν χώραν ταύτην, ὧν ἐμνήσθημέν που καὶ ἐν τοῖς πρόσθεν. καὶ δὴ καὶ τὰ περὶ τὸν Τυφῶνα πάθη ἐνταῦθα μυθεύουσι 5 καὶ τοὺς Ἀρίμους, καὶ τὴν Κατακεκαυμένην ταύτην εἶναι φασιν· οὐκ ὀκνοῦσι δὲ καὶ τὰ μεταξὺ Μαιάνδρου καὶ Λυδῶν ἅπανθ' ὑπονοεῖν τοιαῦτα καὶ διὰ τὸ C.580 πλῆθος τῶν λιμνῶν καὶ ποταμῶν καὶ τοὺς πολλαχοῦ κευθμῶνας τῆς γῆς. ἡ δὲ μεταξὺ Λαοδικείας καὶ Ἀπα- 10 μείας λίμνη καὶ βορβορώδη καὶ ὑπονόμου τὴν ἀποφορὰν ἔχει πελαγία οὐσα· φασὶ δὲ καὶ δίκας εἶναι τῷ Μαιάνδρῳ μεταφέροντι τὰς χώρας ὅταν περικρουσθῶσιν οἱ ἀγκῶνες, ἀλόντος δὲ τὰς ζημίας ἐκ τῶν πορθμικῶν διαλύεσθαι τελευτῶν. 15
- 20 Μεταξὺ δὲ τῆς Λαοδικείας καὶ τῶν Καρούρων ἱερὸν ἔστι Μηνὸς Κάρου καλούμενον τιμώμενον ἀξιολόγως. συνέστη δὲ καθ' ἡμᾶς διδασκαλεῖον Ἡροφιλείων ἱατρῶν μέγα ὑπὸ Ζεύξιδος, καὶ μετὰ ταῦτα Ἀλεξάνδρου τοῦ Φιλαλήθους, καθάπερ ἐπὶ τῶν πα- 20 τέρων τῶν ἡμετέρων ἐν Σμύρνῃ τὸ τῶν Ἐρασιστρατείων ὑπὸ Ἰκεσίλῳ· νῦν δὲ οὐχ ὁμοίως ἔτι συμμένει.
- 21 Λέγεται δὲ τινα φῦλα Φρύγια οὐδαμοῦ δεικνύμενα, ὥσπερ οἱ Βερέκυντες. καὶ Ἀλκμὰν λέγει „Φρύ- 25 „γιον ἠΰλησε μέλος τὸ Κερβήσιον.“ καὶ βόθυνός τις λέγεται Κερβήσιος ἔχων ὀλεθροὺς ἀποφοράς· ἀλλ' οὗτός γε δεικνύται, οἱ δ' ἄνθρωποι οὐκέθ' οὕτω λέγονται. Αἰσχύλος δὲ συγγεῖ ἐν τῇ Νιόβῃ· φησὶ γὰρ ἐκείνη μνησθήσεσθαι τῶν περὶ Τάνταλον „οἷς ἐν Ἰδαίῳ „πάγω Διὸς πατρῷου βωμός ἐστι.“ καὶ πάλιν „Σί- 30 „πυλον Ἰδαίαν ἀνὰ χθόνα.“ καὶ ὁ Τάνταλος λέγει „σπείρω δ' ἄρουραν δῶδεχ' ἡμερῶν ὁδόν, Βερέκυντα „χῶρον, ἐνθ' Ἀδραστείας ἔδος Ἴδη τε μνηθηθμοῖσι καὶ „βρυχήμασι πρέπουσι μήλων, πᾶν δ' ἔρεχθεῖ πέδον.“

Wissenschaftliche Ausgaben griechischer und lateinischer Schriftsteller

im Verlage von

B. G. Teubner  in Leipzig.

Sammlung wissenschaftlicher Commentare
zu griechischen und römischen Schriftstellern.
Sophokles Elektra. Von G. Kaibel. geh. n. M 6.—, in Leinw.
geb. n. M 7.—
Lucretius Buch III. Von R. Heinze. geh. n. M 4.—, in Leinw.
geb. n. M 5.—
Aetna. Von S. Sudhaus. geh. n. M 6.—, in Leinw. geb.
n. M 7.—

Kritische und kommentierte Ausgaben.

Neue Erscheinungen 1895—1898.

Commentar zu der Hippo-
cratesausgabe von Her-
schfeldt. 4. n. M 10.—
Ed. II cur. K. Zacher.

"II." I: Iphigenia Taurica. n. M 2.40.
[Lucas.] Acta Apostolorum s. L. ad Theophilum lib. alter. Sec.
formam quae vid. Romanam rec. Fr. Blass. n. M 2.—
[—] Evangelium sec. Lucam s. L. ad Theoph. lib. prior. Sec.
formam quae vid. Romanam rec. Fr. Blass. n. M 4.—
Miscellanea Tironiana. A. d. Ood. Vat. Lat. Reg. Christ. 846
(fol. 99—114) brsg. v. W. Schmitz. Mit 32 Tafeln in Licht-
druck. 4. In Mappe. n. M 20.—
W. Christ. n. M 14.—
Illmer. n. M 16.—
v. d. Philol. Gesellsch.
I. n. M 10.—

Unter der Presse und in Vorbereitung befinden sich:
Didascaliae apostolorum Latine redditae fragmenta Veronensia
ed. E. Hauler.
Fabulae Aesopicae edd. Knöll et Hausrath.
Itineraria Romana edd. O. Cuntz et W. Kubitschek.

Neue Erscheinungen.

Aurelii Marci Epistolarum libri IX ed. v. d. Vliet. n. M 8.—
 Aristotelis Opera Graeco-Lat. W. Biehl. M 1.80.
 Augustini & Aurelii Sermonum l. XIII rec. P. Knöhl. M 2.70.
 Babrii fabulae rec. O. Crusius. Acc. fab. daet. et iamb. roll.
 Ignatii al. teistrast. rec. O. F. Müller. Ed. mai. n. M 8.40.
 ——— Ed. min. n. M 4.—

Uiceronis opera ed. O. F. W. Mueller. Pars III. Epistulae.
Vol. I, *M* 8.60. (= Nr. 19-22 & *M* —.90, Nr. 28 *M* —.60.)
— — — — — Vol. II, *M* 4.20. (= No. 24-27 & *M* 1.—, No. 28
M —.60.)

11. 1842. —
Firmicus Maternus edd. W. Kroll et F. Skutsch. Fasc. I. n. 14. —
Gemini elementa astronomiae rec. Manitius. n. 18. —
Heronis Alexandrini opera. Vol. I. Pneumatica. Automata ed.
W. Schmidt. [U. d. Pr.]

n. M. 5.—
 Lactantius Placidus: s. Statius. Vol. III.
 Lydi, Laurentii, 1. de ostentis et Calendaria Graeca omnia ed. C.
 Wachsmuth. Ed. II. n. M. 6.—
 Musici scriptores Graeci rec. G. Ianus. n. M. 9.—
 Mythographi Graeci. Vol. III. Fasc. I. Pseudo-Eratosthenis
 Catalogi n. M. 130.

iani, opus agriculturæ rec. J. C.
græce, latine, syriace, coptice,
H. Gelzer, H. Hilgenfeld.

O. Cuntz, n. M. 6.—
Pflanzl., n. M. 6.—
Pflanzl., n. M. 6.—
Pflanzl., n. M. 6.—
Pflanzl., n. M. 6.—
Pflanzl., n. M. 6.—
Pflanzl., n. M. 6.—



RECEIVED.

cat.
MOR 26/5/78
2

"A book that is shut is but a block"

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL LIBRARY

GOVT. OF INDIA
Department of Archaeology
NEW DELHI.

Please help us to keep the book
clean and moving.